खण्ड

1

फीचर लेखन के आधारभूत नियम

इकाई 1

फीचर लेखन : परिचय, अर्थ, स्वरूप एवं महत्व 6

इकाई 2

फीचर लेखन की विशिष्टताएँ 27

इकाई 3

विषय का चयन, सामग्री-निर्धारण एवं प्रस्तुति 46

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

श्री विष्णु प्रभाकर
दिल्ली

श्री गिरिराज किशोर
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर

श्री राजेन्द्र अवस्थी
संपादक, कादम्बिनी, नई दिल्ली

प्रो. इंद्रनाथ चौधरी
सचिव, साहित्य अकादमी
नई दिल्ली

प्रो. चंद्रकांत बांदिवडेकर
बंबई विश्वविद्यालय, बंबई

डॉ. असगर वजाहत
जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

सहयोग
प्रो. शिव के. कुमार
हैदराबाद

श्री ब्रजनारायण अग्रवाल
साप्ताहिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली

डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल
रीडर, हिंदू कॉलेज, दिल्ली

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

प्रो. बख्शीश सिंह
भूतपूर्व निदेशक, मानविकी विद्यापीठ
प्रो. बी.रा. जगन्नाथन (संयोजक)
डॉ. रीतारानी पालीवाल
डॉ. जवरीमल पारख
डॉ. शत्रुघ्न कुमार

सहयोग
डॉ. सुनयना कुमार
डॉ. शशिप्रभा कामरा

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक
डॉ. पूरनचंद टण्डन
व्याख्याता
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त
विश्वविद्यालय

पाठ्यक्रम सम्पादक
श्री राजेन्द्र अवस्थी
सम्पादक, कादम्बिनी
नई दिल्ली

संकाय सदस्य
डॉ. शत्रुघ्न कुमार
डॉ. सत्यकाम
डॉ. नीलम फारूखी
श्रीमती विमल खांडेकर

खंड संयोजक
डॉ. पूरन चन्द टण्डन

पाठ्यक्रम संयोजक एवं संपादक
डॉ. जवरीमल पारख

सामग्री निर्माण

श्री बालकृष्ण सेल्वराज
कुलसचिव
मुद्रण एवं प्रकाशन प्रभाग
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

जनवरी 1992

© इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1992

ISBN 81-7263-087-5

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अनुमति से पुनः मुद्रित। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद की ओर प्रो. जी.एस. शुक्ला कुलसचिव द्वारा पुनः मुद्रित एवं प्रकाशित, 2017
मुद्रकः चन्द्रकला युनिवर्सल प्रा. लि. 42/7 जवाहरर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद, 211002

पाठ्यक्रम का परिचय

हिन्दी में सृजनात्मक लेखन के डिप्लोमा कार्यक्रम के अंतर्गत यह फीचर लेखन का पाठ्यक्रम है। इसका उद्देश्य समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं के लिए विभिन्न विषयों पर आपकी लेखन क्षमता विकसित करना है। पत्र-पत्रिकाएं विभिन्न विषयों पर फीचर प्रकाशित करती हैं। इस पाठ्यक्रम में हम आपको फीचर लेखन से संबंधित कुछ सैद्धांतिक जानकारी देंगे। यह भी बतायेंगे कि लेखन, फीचर, समाचार आदि से फीचर किन अर्थों में भिन्न है तथा एक अच्छा फीचर लिखने के लिए किस तरह की योग्यता का होना आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम में हम कुछ विशेष क्षेत्रों में फीचर लेखन की विशिष्टता का परिचय भी देंगे। ये क्षेत्र हैं: महिला लेखन, पुस्तक समीक्षा, साक्षात्कार, यात्रा लेखन, खेल-कूद, ग्रामीण, सामाजिक, सांस्कृतिक, विज्ञान आदि।

इस पाठ्यक्रम में कुल 18 इकाइयाँ हैं जिन्हें चार खण्डों में विभाजित किया गया है। पहला खण्ड फीचर लेखन के आधारभूत नियमों से संबंधित है तथा इसमें कुल 3 इकाइयाँ हैं। इस खण्ड में फीचर लेखन का परिचय, अर्थ एवं स्वरूप, फीचर लेखन की विशिष्टताएँ तथा फीचर लेखन के लिए विषय चयन एवं प्रस्तुती के संबंध में बताया गया है। खण्ड-2 में कुल 6 इकाइयाँ हैं जिनमें सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, पर्यावरण, विज्ञान और खेल-कूद विषयों पर फीचर लेखन की जानकारी दी गई है। आप इन इकाइयों को पढ़कर यह जान सकेंगे कि उक्त क्षेत्रों में फीचर लेखन के लिए किन विशिष्ट योग्यताओं की आवश्यकता है। खण्ड-3 में रिपोर्ताज और यात्रा लेखन से संबंधित कुल 4 इकाइयाँ हैं। रिपोर्ताज पत्रकारिता की एक महत्वपूर्ण विधा है तथा यह फीचर लेखों से भिन्न भी है। इसकी दो इकाइयों में हम रिपोर्ताज के लेखन के बारे में आपको बतायेंगे। इस खण्ड की शेष दो इकाइयों में यात्रा लेखन पर विचार किया गया है। खण्ड-4 में पुस्तक समीक्षा और साक्षात्कार पर विचार किया गया है। पुस्तक समीक्षा पत्र-पत्रिकाओं का एक महत्वपूर्ण अंग है। एक अच्छी समीक्षा कैसे लिखी जाये इसकी विस्तृत जानकारी इस खण्ड की दो इकाइयों में दी गयी है। दो इकाइयों में पत्र-पत्रिकाओं के लिए साक्षात्कार लेने के बारे में भी विचार किया गया है। अंतिम इकाई में व्यक्ति-चित्र लेखन के बारे में बताया गया है।

पूरे पाठ्यक्रम में फीचर लेखन के कौशल को बढ़ाने के लिए व्यवहारिक लेखन पर बल दिया गया है। इसके लिए प्रत्येक इकाई में सैद्धांतिक चर्चा को उदाहरणों द्वारा पुष्ट किया गया है। इकाई में दिये गये विभिन्न अभ्यासों द्वारा आपको लेखन कौशलता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

इस पाठ्यक्रम से संबंधित कुछ ऑडियो और वीडियो पाठ भी तैयार किये जा रहे हैं। उनसे आपको फीचर लेखन को समझने और अपना कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी। बेहतर होगा कि आप समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले फीचर लेखों को नियमित रूप से पढ़ें। उनकी विशेषताओं और सीमाओं को पहचानें तथा विभिन्न विषय चुनकर स्वयं भी फीचर लेख तैयार करने का प्रयास करें और अपने परामर्शक, मित्रों आदि को दिखाते हुए उनकी सलाह पर गौर करें।

आभार

- **हिंदुस्तान समाचार फीचर सेवा**
- **मुद्रण**
  श्री ए. एस. चटवाल
- **टंकण**
  सुश्री मीना
  श्री नरेश कुमार

PGDCWH-02/3

खण्ड 1 का परिचय

सृजनात्मक लेखन कार्यक्रम से संबंधी फीचर लेखन पाठ्यक्रम का यह पहला खण्ड है। सृजनात्मक लेखन का एक अभिन्न अंग है, फीचर लेखन। पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखना आज के युग में एक महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य बन गया है। फीचर लेखन पत्रकारिता की वह रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं सरस विधा है जिसमें सृजनात्मकता का पुट भी है और कथात्मकता का स्पर्श भी। इस खण्ड में हमने फीचर लेखन के सैद्धांतिक पक्ष को प्रस्तुत किया है। इसमें कुल 3 इकाइयाँ हैं। पहली इकाई में फीचर लेखन का अर्थ उसके स्वरूप तथा उसके महत्व के बारे में बताया गया है। इस इकाई को पढ़कर आप फीचर लेखन की विधा से परिचित हो सकेंगे। दूसरी इकाई में हमने फीचर लेखन प्रक्रिया की विशिष्टता की विस्तृत व्याख्या की है तथा यह भी बताया है कि एक अच्छा फीचर लिखने के लिए किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए। पत्रकारिता से संबंधित कुछ अन्य विधाओं से तुलना करते हुए हमने इस इकाई में फीचर लेखन की विशिष्टता को भी दर्शाया है। दूसरी इकाई में फीचर लेखन के लिए विषय का चयन और उसकी प्रस्तुति के व्यवहारिक पक्ष पर विचार किया है। अच्छे फीचर के लिए विषय का चयन कैसे किया जाये तथा लेखन से पूर्व किस तरह की तैयारी की जाये, इसकी विस्तृत चर्चा इकाई में की गई है। हमने फीचर के आरंभ, मध्य (मुख्य कलेवर) और अंतिम भाग के लेखन पर भी प्रकाश डाला। एक फीचर के लिए किस तरह की भाषा और शैली आदर्श हो सकती है इस पर भी विचार किया गया है। फीचर लिखने के लिए जो सामग्री संकलित की जाये उनको किस तरह से संकलित और संपादित किया जाये इस पर भी इकाई में चर्चा की गई है।

इस प्रकार यह खण्ड फीचर लेखन के सैद्धांतिक पक्षों की व्यापक समीक्षा करता है। इस सैद्धांतिक आधार के स्पष्टीकरण से ही आप आगे की इकाइयों को सुविधा से समझ सकेंगे। आगे की इकाइयों में फीचर के विभिन्न आधारों पर अलग-अलग चर्चा की गई है।

इस खण्ड की प्रत्येक इकाई में स्थान-स्थान पर बोध प्रश्न तथा अभ्यास भी दिये गये हैं। प्रायः सभी उत्तर आपको इन्हीं इकाइयों में उपलब्ध होंगे। कहीं-कहीं अपेक्षित उत्तर एवं संकेत आदि भी अंत में दिये गये हैं। अभ्यासमूलक प्रश्न के उत्तर आपको स्वयं अपनी बुद्धि और कल्पना से लिखने हैं। इनके उत्तर से आपकी रचनात्मकता का विकास होगा। आप इनको अपने परामर्शक और मित्रों को दिखायें तथा उनकी सलाह पर विचार करें और अपने लेखन में सुधार करें। सृजनात्मक लेखन के इस पाठ्यक्रम के लिए यह भी आवश्यक है कि आप हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन एवं मनन करें। इससे आपको अपने लेखन में सहायता मिलेगी।

इकाई 1 फीचर लेखन : परिचय, अर्थ, स्वरूप एवं महत्व

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका एवं पद्धति
  1.2.1 पत्र-पत्रिकाओं की सामाजिक भूमिका
  1.2.2 पत्र-पत्रिकाओं की कार्य पद्धति
1.3 फीचर का अभिप्राय
  1.3.1 फीचर का अर्थ
  1.3.2 फीचर का महत्व
1.4 फीचर के विभिन्न पक्ष
  1.4.1 प्रेरक तत्व
  1.4.2 परिवेश
  1.4.3 आधार-सामग्री
  1.4.4 लेखकीय दृष्टिकोण
  1.4.5 भाषा और शैली
1.5 फीचर की विशेषताएँ
  1.5.1 गंभीरता एवं रोचकता
  1.5.2 संक्षिप्तता एवं सौद्देश्यता
  1.5.3 मौलिकता
  1.5.4 विश्वसनीयता
  1.5.5 सुसम्बद्धता
  1.5.6 सटीक शीर्षक
  1.5.7 भाषा लालित्य एवं उन्मुक्त शैली
1.6 फीचर के प्रकार
  1.6.1 विषय के आधार पर
  1.6.2 वर्ग के आधार पर
  1.6.3 प्रकाशन के आधार पर
  1.6.4 शैली के आधार पर
  1.6.5 माध्यम के आधार पर
1.7 फीचर लेखक के गुण
  1.7.1 विशेषज्ञता
  1.7.2 अध्ययनशीलता
  1.7.3 निष्पक्षता या तटस्थता
  1.7.4 पूर्वग्रह-मुक्तता
  1.7.5 सौद्देश्यता
  1.7.6 भाषिक दक्षता
1.8 सारांश
1.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

फीचर लेखन के पाठ्यक्रम में खंड एक की इस पहली इकाई के अध्ययन से आप–

- पत्र-पत्रिकाओं की सामाजिक भूमिका एवं कार्य पद्धति को समझा सकेंगे,
- फीचर के अर्थ एवं महत्व को बता सकेंगे,
- फीचर के प्रेरक तत्व, आधार सामग्री तथा परिवेश आदि विभिन्न महत्वपूर्ण पक्षों की व्याख्या कर सकेंगे,
- फीचर की रोचकता, सौद्देश्यता तथा मौलिकता तथा महत्वपूर्ण विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे,

- विषय वर्ग प्रकाशन तथा शैली आदि के आधार पर वर्गीकृत फीचर के प्रकारों की समपक्षा कर सकेंगे, तथा
- फीचर लेखक के अंन्यत महत्वपूर्ण गणों का उल्लेख कर सकेंगे

1.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन सृजनात्मक लेखन की अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट विधा है। पत्रकारिता में अपना अद्वितीय स्थान रखने वाली इस विधा का उद्देश्य ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक या अन्य क्षेत्रों के विविध पहलुओं की नई-नई जानकारी हासिल कराना है। पाठकों के मन को रंजित, मोहित एवं प्रभावित करने वाली यह विधा दृश्य-श्रव्य अथवा मुद्रित रूप में देखी जाती है। किसी भी समसामयिक, ऐतिहासिक या सांस्कृतिक घटना, स्थिति, वस्तु एवं परिवेश आदि के प्रति पाठक की दिलचस्पी बढ़ाकर उसमें उत्सुकता पैदा कर देना फीचर लेखक की प्रमुख विशेषता है।

फीचर लेखन के इस पाठ्यक्रम में आप पत्र-पत्रिकाओं की शोभा एवं शक्ति बनने वाली इसी विधा का विस्तृत एवं गहन तथा सूक्ष्म एवं गंभीर विश्लेषण करेंगे। फीचर लेखन के सभी सैद्धांतिक पक्षों का विवेचन करते हुए आप जान सकेंगे कि कैसे फीचर लेखन पत्रकारिता के अन्य लेखनों में वैशिष्ट्य का अधिकारी बनता है। फीचर लेखन क्या है, उसके विषय क्या और कैसे होते हैं तथा फीचर लेखक की उसमें क्या भूमिका होती है, इन सभी अहम् प्रश्नों का समाधान खोजते हुए आप फीचर की उपयोगिता, उसके महत्व तथा उसकी अप्रतिम देन के संदर्भ में भी जान सकेंगे। पुस्तक समीक्षा, साक्षात्कार, महिला एवं बच्चों के लिए लेखन, ग्रामीण समस्याएँ, यात्रा तथा सामाजिक विषय आदि पर लिखे जाने वाले फीचर किन-किन विशेषताओं एवं नियमों से संतुलित नियमित होते हैं इसकी गहन व्याख्या आप इस पाठ्यक्रम में कर सकेंगे।

फीचर आज शिक्षित समाज की वह महत्वपूर्ण विधा है जो सभाचार से ज्ञानवर्द्धन करती है और काल्पनिक तथा भाषात्मक स्पर्श से विषय को रोचक एवं मार्मिक बना कर पाठक के हृदय में घर कर लेती है। इस इकाई में फीचर के मूल अर्थ एवं स्वरूप को व्याख्यायित किया गया है। सर्वप्रथम पत्र-पत्रिकाओं के संदर्भ विशेष में फीचर को देखने-परखने और मूल्यांकन करने का प्रयास रहा है।

इकाई में पत्र-पत्रिकाओं की सामाजिक भूमिका एवं दायित्व को भी विश्लेषित किया गया है। इसी परिप्रेक्ष्य में उनकी कार्य व्यवस्था एवं पद्धति को भी स्पष्ट किया गया है। फीचर के अर्थ एवं विस्तार की चर्चा करते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। फीचर की पत्र-पत्रिकाओं में क्या भूमिका है तथा उसकी समाज को क्या देन है, स्पष्ट करते हुए फीचर के विभिन्न पक्षों का विवेचन किया गया है। फीचर के प्रेरक तत्व, उसकी आधार सामग्री, फीचर में परिवेश की अभिव्यक्ति, लेखक की दृष्टि एवं संदेश और फीचर की भाषा एवं शैली आदि पक्षों पर चर्चा करने के बाद फीचर की विशेषताओं का वर्णन किया गया है। इनमें गंभीरता, रोचकता, संक्षिप्तता, सौद्देश्यता, मौलिकता, विश्वसनीयता तथा शैलीगत उन्मुक्तता की समीक्षा करते हुए फीचर के प्रमुख प्रकार एवं उनके आधारों की व्याख्या भी की गई है।

अंत में आप फीचर लेखन के इस सैद्धांतिक विश्लेषण को समझते हुए यह भी बता सकेंगे कि फीचर लेखन के लिए विशेषज्ञता, अध्ययनशीलता, निष्पक्षता, पूर्वग्रह-मुक्तता तथा भाषिक दक्षता आदि गुणों की क्या महत्ता एवं आवश्यकता है। प्रस्तुत इकाई में फीचर के कुछ उदाहरण देकर सभी तत्वों, सोपानों एवं विशेषताओं को स्पष्ट करने का प्रयास भी रहा है। आगे की सभी इकाइयों में आप अन्य कई उदाहरणों को भी देखेंगे। वास्तव में फीचर सृजनात्मक अभ्यास की वह विधा है जिसकी दुनिया और फलक बहुत व्यापक, बहुआयामी एवं वैविध्यमयी है। मानव समाज के शिक्षित वर्ग में अपनी उपयोगिता एवं रोचकता के कारण इतनी लोकप्रिय होने वाली इस महत्वपूर्ण विधा का विस्तृत अध्ययन अब आप करेंगे। आइए सर्वप्रथम पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका एवं पद्धति पर दृष्टि डालें।

1.2 पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका एवं पद्धति

पत्रकारिता एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो हमारे जीवन की विविधताओं, नित्य नूतनताओं और दैनिक घटनावलियों-प्रसंगावलियों को शीघ्र प्रस्तुत करने की अतुल क्षमता रखता है। पत्र-पत्रिकाओं को इसी माध्यम का महत्वपूर्ण उपकरण कहा जा सकता है। वास्तव में "पत्रकारिता पत्र-पत्रिकाओं के लिए समाचार लेख आदि एकत्रित तथा सम्पादित करने, प्रकाशन-आदेश आदि देने का ही कार्य है।" (वैज्ञानिक परिभाषा कोष, सम्पादक डॉ. बद्रीनाथ कपूर)

दरअसल पत्र-पत्रिकाएँ ऐसे धारावाही प्रकाशन हैं जो नियमित समय के अन्तर से प्रकाशित होते हैं और जिनमें समाचारों को प्रमुखता दी जाती है। ये दैनिक, साप्ताहिक, अर्द्धमासिक, मासिक, त्रैमासिक एवं वार्षिक आदि होते हैं। समाचारपत्र और समाचार पत्रिका का स्थूल अंतर सजिल्द या अजिल्द होना तो है ही पर विषय क्षेत्र तथा बाह्य एवं भीतरी कलेवर भी है। कुछ पत्रिकाएँ ऐसी भी होती हैं जिनमें समाचार प्रमुख या प्रधान नहीं होते, ज्ञान-वर्द्धन और शैक्षिक या साहित्यिक सामग्री जुटाना ही उनका प्रमुख उद्देश्य होता है। "समाचार" शब्द अंग्रेज़ी के न्यूज (NEWS) का पर्याय है। इस शब्द में– एन, ई, डब्ल्यू तथा एस–ये चार अक्षर हैं। ये चारों अक्षर चारों दिशाओं का बोध कराते हैं–"एन" नॉर्थ (उत्तर), "ई"–ईस्ट (पूर्व), "डब्ल्यू"–वैस्ट (पश्चिम) तथा "एस"–साउथ (दक्षिण)। अर्थात पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण की सभी घटनाओं, सूचनाओं को इन समाचारों में डाल कर पत्र-पत्रिकाओं में प्रस्तुत किया जाता है। इसी प्रकार "न्यूज़" शब्द "न्यू" अर्थात नवीन का भी पर्याय है। नवीनता और ताज़ापन भी समाचारपत्र-पत्रिकाओं के आवश्यक अंग हैं।

पत्र-पत्रिकाओं में दिए गए अधिकांश समाचार सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक होते हैं। राजनीतिक दलों के झगड़े, उनके षडयंत्र, दलों की टूटने-जुड़ने की स्वार्थपूर्ण-प्रक्रियाएँ और एक दूसरे को नीचा दिखाने की राजनीति से प्रेरित वक्तव्यों की भरमार इनमें सहज ही देखी जा सकती है। चोरियाँ, डकैतियाँ, लूटमार, बलात्कार आदि खबरों की इनमें भरमार होती है। अधिकांशतः समाचारपत्र-पत्रिकाओं की ऐसी खबरें नीरस, उबाऊ तथा आक्रोश उत्पन्न करने वाली बन कर रह जाती हैं। राज्यसभा और लोकसभा अथवा राज्य विधान सभाओं में घटने वाली दैनिक गतिविधियों का खुलासा इनमें उपलब्ध होता है तो कहीं-कहीं शुष्क और नीरस अग्रलेख भी मिलते हैं। व्यापार पृष्ठों पर बाज़ार भाव या शेयरों के चढ़ने-लुढ़कने की पारम्परिक सूचनाएँ मिलती हैं। पाठक इन नीरस खबरों से इतना उक्ता जाता है कि वह धीरे-धीरे शीर्षक पढ़ कर ही पूरी खबर का सार निकालने लगता है। दो एक खबरें पाठक को आकर्षित करती हैं और वह उन्हें पूरा पढ़ता भी है। किन्तु शेष खबरों में वह अपनी रुचि की जानकारी मात्र हासिल करता है। लेखन-शैली और एक ही ढर्रे पर लिखी गई ये खबरें पाठकों का मनोरंजन नहीं कर पातीं।

"फीचर" इन्हीं पत्र-पत्रिकाओं का एक ऐसा महत्वपूर्ण अंग है जो कि इन समाचारों से पूर्णतः भिन्न एवं विशिष्ट भी है। सरल, स्पष्ट, रुचिकर तथा पठनीय होने के कारण यह पाठक या दर्शक का मनोरंजन तो करता ही है उसकी उत्सुकता, मानवीय भावना तथा काल्पनिक शक्ति भी जगाता एवं प्रखर करता है। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली सामग्री की विषय-वस्तु के प्रति लगाव एवं रुझान पैदा करने वाली इस विशिष्ट विधा के संदर्भ में चर्चा करने से पूर्व संक्षेप में यह स्पष्ट कर लेना भी अनुचित न होगा कि जिन पत्र-पत्रिकाओं में ये फीचर प्रकाशित होते हैं उनका सामाजिक-दायित्व एवं कार्य पद्धति क्या है ?

1.2.1 पत्र-पत्रिकाओं की सामाजिक भूमिका

जिस प्रकार समाज राष्ट्र का एक महत्वपूर्ण अंग है उसी प्रकार परिवार या व्यक्ति भी समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है। समाज के अच्छे बुरे सभी पहलुओं पर एक नियंत्रक दृष्टि और संतुलित दिशा प्रदान करने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है पत्र-पत्रिका संसार। पत्र-पत्रिकाएँ वास्तव में विचारों के वे पंख हैं जिन पर सवार होकर चिंतकों के विचार एवं दृष्टिकोण यात्रा करते हैं। पत्रकार का दायित्व आज मानव समाज को इस संकट-युग से निकालकर एक राहत भरे सत्य तक ले जाना है। शासन और पूंजी के शिकंजे में फंसे इस समाज को मानव हित की दिशा दिखाना उनका परम कर्तव्य है। प्रसिद्ध हिंदी कवयित्री

श्रीमती महादेवी वर्मा ने पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका स्पष्ट करते हुए कहा भी है–"पत्रकारिता एक रचनाशील विधा है। इसके बगैर समाज को बदलना असम्भव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कर्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जायेगा।"

अतः असत्य से संघर्ष कर सत्य की राह प्रशस्त करना ही ईमानदार पत्रकार का सच्चा धन है। पत्र-पत्रिकाओं का उद्देश्य जहाँ निजी विचारों को प्रकाशित करना होता है वहीं उनके मूल में बसे जनहित-आदर्श को रेखांकित करना भी होता है। पत्र-पत्रिकाएँ जागृति पैदा करती हैं, ज्ञानवर्द्धन करती हैं, संतुलित एवं न्यायसंगत दृष्टि देकर प्रशस्त दिशा दिखाती हैं। मानवता के विकास की सभी दिशाओं को उजागर और सेवा के भावों को उद्दीप्त करती हैं तो सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास की सभी सम्भावनाओं को भी प्रकाश में लाती हैं।

यों पत्र-पत्रिकाओं के सामाजिक दायित्व की बहुत सी दिशाएँ हैं जिनमें–आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक, नैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आदि देखी जा सकती हैं। यही पत्र-पत्रिकाएं सामाजिक असंतुलन को मिटाने और जनहित नीतियों को फैलाने का उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य भी करती हैं। कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ बुलंद कर सामाजिक क्रांति पैदा करना भी इन्हीं के कार्यक्षेत्र में आता है। सरकार की अच्छी-बुरी नीतियों को व्याख्यायित कर जन-जन के सम्मुख प्रकाशित करना भी इनका ही दायित्व है। वैज्ञानिक खोजों, चमत्कारों और उपलब्धियों की ओर ध्यान आकर्षित करना भी इन्हीं का कार्य है। इसी प्रकार यात्रा संस्मरण, जीवन-वृत्त, साहसिक घटनाएँ, स्वास्थ्य एवं परिवार, बाल एवं महिला, युवा एवं वृद्ध, कानून एवं नियम, धर्म, त्यौहार, रीति-रिवाज, पर्व या मेले, वन्य जीव-जन्तु, पर्यावरण, वनस्पति, कृषि, बागवानी, इतिहास, पुरातत्व, तीर्थ, पर्यटन, साहित्य, कला, खेल-कूद तथा संस्कृति आदि कितने ही क्षेत्र हैं जिनसे सम्बद्ध सामयिक सामग्री भी इन्हीं पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा ही उपलब्ध होती रहती है।

अतः कह सकते हैं कि ये पत्र-पत्रिकाएँ समाज की गतिविधियों का दर्पण हैं। समाज में कब, कहाँ, क्यों, कैसे और क्या हो रहा है–इसकी समग्र जानकारी पत्र-पत्रिकाएँ ही देती हैं। समाज की सत्-असत्, दृश्य-अदृश्य तथा शुभ अशुभ छवियों को इस दर्पण में देखा जा सकता है। परिवेश और उसके अन्तःकरण को निरूपित करने वाली यह सूक्ष्म शक्ति नीर-क्षीर विवेक प्रदान करती है तो सामाजिक मूल्यों की नियामक भी बनती है। अतः पत्र-पत्रिकाएँ एक कुशल चिकित्सक की तरह सामाजिक परिस्थितियों और घटनाचक्र की नाड़ी की जाँच कर उसके स्वास्थ्य को सुधारने का कार्य करती हैं। पत्रकार अपनी तीखी एवं तेज नजर से परिवेश की नब्ज एवं रक्तचाप की परीक्षा कर उसकी धड़कनों का हिसाब रखता है। फोटो पत्रकारिता के माध्यम से वह एक्स-रे रिपोर्ट भी प्रस्तुत करता है। प्रत्येक घटना, स्थिति एवं वातावरण की विकृतियों एवं शक्तियों को भी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जन-सामान्य के सम्मुख लाता है। निष्पक्ष विश्लेषण एवं निर्भीक आलोचना से समाज में व्याप्त दोषों के निवारण हेतु जनमत को जागृत करते हुए उपयुक्त निदान या उपचार भी पत्र-पत्रिकाएँ सुझाती हैं। अतः स्पष्ट है कि पत्र-पत्रिकाओं को मानवीय गुणों के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने वाला जीवन का वह सुदृढ़ आधार कहा जा सकता है जिसका लक्ष्य जन सामान्य की भावनाओं को अभिव्यक्ति देते हुए रोचक ढंग से शिक्षा प्रदान करना है। वर्तमान की सूचना और भविष्य की सम्भावना को व्यक्त करती ये पत्र-पत्रिकाएँ मार्ग दर्शक बनकर सामाजिक क्रान्ति की दिशा में चेतना जागृत करती हैं। पत्रकार की शमशीर बनी लेखनी एक तरफ सामाजिक असंतुलन के लिए बवंडर बन कर उभरती है तो दूसरी तरफ समाज में शान्ति कायम करने का कारण भी बनती है।
निष्कर्षतः कह सकते हैं कि पत्र-पत्रिकाएँ ज्ञान के प्रसारक, मनोरंजन के दाता, जन शिक्षण के पुरोधा, दैनदिन घटनाओं के प्रस्तोता, धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों के व्याख्याता और व्यापक भूमि पर व्यक्ति को विश्व मानस से प्रतिबद्ध आदि करने वाले अनिवार्य साधन हैं।

1.2.2 पत्र-पत्रिकाओं की कार्य पद्धति

पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का आरम्भ संसार में युगीन चेतना को वाणी देने के उद्देश्य से हुआ। युगीन चेतना प्रेरित विचार की उत्कृष्ट इच्छा के फलस्वरूप ही जनवरी 1780 में भारत का पहला पत्र "बंगाल गज़ट" (कैलकट्टा एडवरटाइज़र) अंग्रेज़ी में प्रकाशित हुआ। इसके बाद धीरे-धीरे कई पत्रिकाएँ प्रारंभ हुईं। हिंदी में भी प्रकाशन प्रारंभ हुआ। स्वतंत्रता से पूर्व तक इन पत्र-पत्रिकाओं का उद्देश्य जनता की अभीप्सा को अभिव्यक्ति देना, और

उनके आदर्शों एवं आकांक्षाओं को पूर्ण सच्चाई के साथ अंकित करना ही रहा। राष्ट्रप्रेम, अहिंसा-प्रसार, समाज-सुधार तथा भाषा-प्रेम का उद्देश्य ले कर चलने वाली इन पत्र-पत्रिकाओं की बाढ़ आ गई और नैतिक मूल्यों में परिवर्तन आ गया। मुद्रण के क्षेत्र में तकनीकी प्रगति हुई और पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन एक अच्छा खासा व्यवसाय बन गया। परिणामतः इनकी नीति भी बदली। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक या वार्षिक आदि का विभाजन हो जाने से इनकी विषय-वस्तु एवं प्रस्तुति पर भी प्रभाव पड़ा। अर्थ पक्ष की महत्ता भी इसका कारण बनी।

इस तरह विद्यालय या महाविद्यालय की पत्रिकाएँ, जातीय पत्रिकाएँ, औद्योगिक संस्थाओं की पत्र-पत्रिकाएँ तथा रिपोर्ट आदि भी इस यात्रा में शामिल हो गए। फिर धीरे-धीरे जासूसी, फिल्मी, खेलकूद सम्बन्धी, प्रतियोगिता सम्बन्धी, पर्यावरण, महिला, युवा या बाल पत्रिकाएँ आदि भी प्रकाश में आने लगीं। प्रकाशन स्थान का महत्व प्रमुख होने के कारण पत्र-पत्रिकाओं में विषय-स्थान की नीति भी बदली। महानगरीय पत्र-पत्रिकाओं में अखिल भारतीय स्वरूप को अपनाते हुए विषय-विशेष को वरीयता अनुसार सुदृढ़-संख्या एवं स्थान दिये जाने लगे। स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समाचारों के लिए स्थान निश्चित किए गए। इसी प्रकार प्रादेशिक समाचार, बाज़ार भाव, संपादकीय, समीक्षा, सिनेमा, खेल-कूद, बाल सामग्री, महिला परिशिष्ट, साहित्यिक-चर्चा, फीचर-लेखन, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, चिकित्सा की चर्चा, खोज आदि के समाचार तथा राशिफल आदि को एक निश्चित स्थान ही नहीं दिया गया अपितु इन सब के विषय वैशिष्ट्य को ही आधार बनाकर अलग-अलग पत्रिकाएँ भी प्रारंभ हो गईं। धीरे-धीरे पत्र-पत्रिकाओं के लिए इन विशिष्ट सामग्रियों को उपलब्ध कराने वाले स्रोत रूप में प्रेसट्रस्ट, यूनाइटिड न्यूज़, समाचार भारती, हिन्दुस्तान समाचार, तथा फीचर सेवा संस्थाएँ आदि भी प्रारंभ हो गईं।

अगर तकनीकी प्रक्रिया पद्धति पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट होता है कि पत्र-पत्रिका की सामग्री का जन्म, संकलन, संयोजन एवं संपादन कैसे होता है। यों भी कह सकते हैं कि यह सामग्री, विविध रूपों में कैसे, कहाँ से जुटाई जाती है और इस कच्ची सामग्री का यह परिष्कृत रूप कहानी, एकांकी, हास्य-व्यंग्य, लेख, निबन्ध, फीचर, रिपोर्ताज, समाचार तथा विज्ञापन आदि कई रूपों-आकारों में कैसे ढल कर पूरे विश्व के सामने पहुँच जाता है। यों यह पद्धति और प्रक्रिया-व्यवस्था अत्यंत व्यापक, विस्तृत, दुरूह तथा चुनौतीपूर्ण है। संक्षेप में यहाँ इतना जानना ही पर्याप्त है कि पत्र-पत्रिकाओं की वैविध्यमयी सामग्री को यों परिष्कृत एवं संपादित रूप में प्रस्तुत करने वालों की संख्या बहुत बड़ी होती है। किसी भी पत्र-पत्रिका के कार्यालय में विषय अनुसार विभाग, अनुभाग तथा उसी प्रकार अधिकारी एवं कर्मचारी भी अलग-अलग होते हैं। अर्थात् एक बड़ी इकाई के कई छोटे-छोटे अनुभाग होते हैं जो अपने-अपने दायित्वों को सामूहिक रूप से पूरा करते हैं।

इसे और स्पष्ट करें तो कह सकते हैं कि समाचार एकत्रित करने वाले या लेख निबन्ध लिखवाने वाले, विज्ञापन वाले तथा इसी प्रकार अन्य सामग्री से सम्बद्ध कई विभाग-अनुभाग इस दिशा में कार्यरत रहते हैं। समाचार-संग्रह के लिए संवाददाता या विशेष अधिकारी होते हैं, समाचार एजेंसियाँ समाचार वितरित करती हैं फिर उन समाचारों का कार्यालय में पुनर्लेखन, सम्पादन किया जाता है। सम्पादक या सह-सम्पादक पत्र-पत्रिका में समाचार आदि सामग्री की गंभीरता एवं उपयोगिता के अनुसार ही उसका पृष्ठ एवं स्थान निर्धारित करते हैं। तब उसे शुद्धि एवं तकनीकी दृष्टि से जाँच कर मुद्रणालय भेजा जाता है। मुद्रणोपरान्त उसका वितरण एवं प्रचार प्रसार होता है।

इस प्रकार विज्ञापन मंगाने, लेख, निबन्ध, समीक्षा, सूचनाएँ तथा खेल, फिल्म, बाज़ार, शेयर, राजनीति, साहित्य एवं अन्य विषय सम्बन्धी सामग्री एकत्र करने से लेकर, पुनर्लेखन, संपादन, संयोजन, प्रूफ पठन एवं मुद्रण वितरण तक की पूरी मात्रा चलती है। फीचर लेखन की पद्धति भी इसी प्रकार की है। लेखक एवं संपादक का दायित्व इसमें भी प्रमुख होता है। फीचर से ही पत्र-पत्रिका की प्रतिष्ठा भी बनती बिगड़ती है। अतः सामग्री संकलन से प्रकाशन तक की यह पद्धति अत्यंत दुरूह पद्धति है।

इसी प्रकार इन पत्र-पत्रिकाओं की कार्य-पद्धति में संचालक, संपादक, सह-संपादक, सम्पादक मण्डल, व्यवस्थापक, विज्ञापन-मैनेजर, संवाददाता, क्षेत्रीय प्रतिनिधि आदि पर दायित्व को बाँटा गया। इन्हीं के साथ-साथ मुद्रण विभाग तथा प्रसार एवं वितरण विभाग की भी सुचारू भूमिका बन गई। सभी के अपने-अपने क्षेत्र एवं दायित्व निर्धारित हुए। विषय-विशेषज्ञ लेखक वर्ग तैयार हुआ। समय-समय पर विशेषांक निकलने लगे। आर्थिक

बजट को भी इसी पूरी कार्य पद्धति के अनुकूल वितरित या विभाजित किया जाने लगा। विज्ञापन का एक अलग अनुभाग तैयार हो गया।

अतः इस लम्बी यात्रा में सन् 1976 तक आते-आते "रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज़ पेपर्स" द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में—सामयिक समाचार, साहित्य एवं संस्कृति, धर्म-दर्शन, वाणिज्य एवं उद्योग, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, फिल्म, समाज कल्याण, श्रम, शिक्षा, विधि और लोक प्रशासन, इंजीनियरी एवं टैक्नॉलॉजी, कृषि एवं पशुपालन, बाल, परिवहन एवं संचार, बीमा, बैंकिंग एवं सहकारिता, विज्ञान, वित्त एवं अर्थशास्त्र, महिला, कला, बाल, रेडियो, संगीत, खेल एवं अन्य विविध हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 3142 गिनवाई गई। इनके अतिरिक्त ज्योतिष, प्रचार, बाज़ार भाव, तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 143 गिनवाई गई। सन् 1976 से आज तक यह संख्या निश्चित ही पाँच हज़ार से ऊपर हो चुकी होगी। इस समग्र विकास यात्रा एवं कार्य पद्धति के संक्षिप्त विवेचन से यही स्पष्ट होता है कि पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका हमारे समाज और राष्ट्र की दृष्टि से जितनी गंभीर एवं महत्वपूर्ण है उनकी कार्य पद्धति एवं प्रस्तुति प्रक्रिया उतनी ही जटिल एवं चुनौती भरी है। फीचर लेखन इन्हीं पत्र-पत्रिकाओं का एक अनिवार्य, विशिष्ट तथा अनोखा अंग है। विविध क्षेत्रों, दिशाओं, विषयों एवं संदर्भों को केन्द्र में रख कर सत्य एवं कल्पना का अद्भुत मिश्रण करते इसी फीचर वैविध्य का विस्तृत अध्ययन अब हम करेंगे।

1.3 फीचर का अभिप्राय

अभी हम यह चर्चा कर चुके हैं कि कोई भी समाचारपत्र या पत्रिका पाठकों के लिए ही प्रकाशित की जाती है। प्रत्येक सम्पादक चाहता है कि उसका पत्र या पत्रिका ज्यादा से ज्यादा लोगों द्वारा पढ़ी और सराही जाये। इसके लिए वे उसकी प्रसार संख्या में वृद्धि करना चाहता है। उसे लोकप्रिय बनाना चाहता है। इसके लिए वह उसमें रुचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री प्रकाशित करता है। उसका प्रयास रहता है कि वह सामग्री विश्वसनीय हो और उसकी भाषा सरल तथा शैली आकर्षक हो। इसी से पाठक उसे चाव से पढ़ता, समझता और अपनी जानकारी बढ़ाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति में फीचर अत्यंत सहायक सिद्ध होते हैं।

फीचर गंभीर लेखों की तरह बोझिल और नीरस नहीं होते। सरल भाषा तथा आकर्षक शैली में लिखे गए फीचर पाठक को अपने मोहपाश में बाँध लेते हैं। फीचर के जरिए किसी समस्या पर प्रकाश डालते हुए किसी घटना विशेष पर उपयोगी जानकारी दी जाती है। किसी महत्वपूर्ण खोज या उपलब्धि की पृष्ठभूमि और उसके महत्व को समझाया जाता है। अतः यह स्पष्ट है कि किसी दैनिक, साप्ताहिक या मासिक पत्र-पत्रिका की पठनीयता में वृद्धि करने और अधिक से अधिक रोचक सामग्री अपने पाठकों तक पहुंचाने के लिए ही फीचर प्रकाशित किए जाते हैं। इससे यह भी स्पष्ट है कि फीचर से पाठक का मनोरंजन तो होता ही है उसके ज्ञान में भी वैविध्यमयी वृद्धि होती है। पाठक को फीचर के माध्यम से अतीत, वर्तमान या सम्भावित भविष्य संबंधी महत्वपूर्ण, संक्षिप्त एवं सिलसिलेवार जानकारी मिलती रहती है। इतना ही नहीं फीचर लेखन से लेखक को आर्थिक लाभ के साथ-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा भी मिलती है। उसके ज्ञान का विस्तार भी होता है। लेखक किसी प्रश्न, समस्या या संदर्भ विशेष पर अपने विचारों को पाठक वर्ग तक पहुँचा सकता है। कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि, किसी महत्वपूर्ण तिथि, व्यक्ति की जन्म-तिथि, पुण्य-तिथि, कोई सामाजिक समस्या, पर्व या त्यौहार, मेला या प्रदर्शनी, घटना-दुर्घटना, महत्वपूर्ण प्रसंग, धर्म-संस्कृति, कला साहित्य, रहस्य-रोमांच, खोज-अनुसंधान, तीर्थ, पर्यटन, खेलकूद, स्वास्थ्य-कल्याण तथा पर्यावरण आदि-आदि बहुत से विषय हैं जिन्हें फीचर लेखन के लिए चुना जा सकता है। अतः किसी विषय-विशेष पर पाठक या समाज का ध्यान आकर्षित करने वाली यह विधा अपना एक विशिष्ट महत्व रखती है।

1.3.1 फीचर का अर्थ

फीचर (Feature) अंग्रेज़ी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है—आकृति, नखशिख, रूपरेखा, लक्षण, विशेषता या व्यक्तित्व। प्रसंग और संदर्भ के अनुसार यह शब्द अपना अर्थ बदलता है। जिस प्रकार अंग्रेज़ी के अन्य कई शब्द हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अपना लिये गये हैं, उसी प्रकार फीचर भी अब हिन्दी में अपने प्रयोग और प्रसंग के अनुसार अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त होता है। कभी वह किसी व्यक्ति विशेष के सौन्दर्य और

नयन-नक्श पर प्रकाश डालता है तो कभी किसी की रूपरेखा को रेखांकित करता है। समाचारपत्र-पत्रिकाओं के जगत में यही फीचर एक लेख विशेष के अर्थ में प्रयुक्त होता है। हिन्दी के कतिपय विद्वान इसे "रूपक" शब्द से भी सम्बोधित करते हैं।

भारतीय पत्रकार कला पुस्तक में वरिष्ठ पत्रकार श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने फीचर का सैद्धांतिक विवेचन करते हुए कहा है–"मनोरंजक ढंग से लिखे गए प्रासंगिक लेख को फीचर कहा जा सकता है।" इससे यह तो स्पष्ट है कि दृश्यमान जगत के विभिन्न अंग-उपांग, सूचनाओं और घटनाओं को फीचर का माध्यम बनाया जा सकता है।

पत्र-पत्रिकाओं के चार प्रमुख अंग होते हैं–फीचर, समाचार, लेख और चित्र। समाचार और लेख तो थोड़े बहुत अंतर से सभी पत्र-पत्रिकाओं में एक से होते या हो सकते हैं पर फीचर नहीं। फीचर वह लेख है जिसकी अपनी एक विशेषता और अपना एक व्यक्तित्व या खास पहचान है। इसी विशिष्ट लक्षण के कारण फीचर लेखन को विशेष महत्व दिया जाता है। अपने महत्व के कारण ही फीचर समाचारपत्र के व्यक्तित्व को उभारने में सहायक होते हैं और जिस पत्र-पत्रिका में फीचर जितने श्रेष्ठ होते हैं, उसके प्रति पाठक उतने ही अधिक आकृष्ट होते हैं। फीचर लेखक आम तौर पर पाठक वर्ग पर अपना निष्कर्ष नहीं थोपता। वह समग्र सूचना एवं जानकारी इस रूप में प्रस्तुत कर देता है कि पाठक स्वयं ही निष्कर्ष पर पहुंच सकता है।

एक विदेशी पत्रकार श्री डेनियल आर. विलियमसन का कहना है–"फीचर ऐसा सर्जनात्मक तथा कुछ-कुछ स्वानुभूतिमूलक लेख है, जिसका गठन किसी घटना, स्थिति अथवा जीवन के किसी पक्ष के संबंध में पाठक का मूलतः मनोरंजन करने और सूचना देने के उद्देश्य से किया गया हो।" इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि फीचर और लेख में बहुत सी समानताएँ भी होती हैं। दोनों में समाचार प्रधान नहीं होता। दोनों एक-दूसरे के क्षेत्र में अतिक्रमण भी करते रहते हैं। अतः दोनों के बीच एक स्पष्ट पार्थक्य रेखा खींचना भी संभव नहीं। इस विषय में विस्तृत चर्चा हम आगामी इकाई में करेंगे। पर यहाँ स्पष्ट रहे कि फीचर समाचार पर आधारित हो सकता है, लेख के साथ यह जरूरी नहीं। फीचर में चित्रांकन प्रधान होता है और लेख में विश्लेषण तथा गांभीर्य।

अतः स्पष्ट है कि समाचारपत्रों या पत्रिकाओं में समाचारों के अतिरिक्त लोकरुचि की तथा नई-नई जानकारियाँ देकर ज्ञानवर्द्धन करने वाली जो सामग्री प्रकाशित होती है, वह अपने सृजनात्मक वैशिष्ट्य के कारण फीचर के अंतर्गत गिनी जाती है। समाचार पत्रों में कार्य करने वाले संवाददाता, उप-संपादक तथा स्तंभ लेखकों को कभी-कभी विषय विशेष पर लेख लिखने का निर्देश दिया जाता है। ऐसे में वे कुछ लिखते हैं, उस विषय को केन्द्र में रखकर सारगर्भित भाषा में लिखते हैं। ये विशिष्ट लेख किसी घटना-दुर्घटना, प्रसंग या व्यक्ति विशेष को लेकर पाठक के समक्ष सामग्री प्रस्तुत करते हैं और उनकी शंकाओं तथा जिज्ञासाओं का समाधान सुझाते हैं। उदाहरण के लिए कुछ समय पूर्व समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में वर्षों पहले डूबे एक जलपोत के अवशेषों के पाये जाने का समाचार प्रकाशित हुआ था। इस जलपोत का नाम टोटानिक था और अपने समय का वह एक विशालकाय, आधुनिक सुविधाओं से युक्त प्रसिद्ध जलयान था। आज के पाठक को टोटानिक के बारे में कोई जानकारी न थी और समाचारपत्रों या पत्रिकाओं द्वारा भी उसकी जिज्ञासा की तृप्ति न हो सकी थी। ऐसे में एक सतर्क सम्पादक ने पाठकों की जिज्ञासा को भांपते हुए अपने एक उप-संपादक को विषय संबंधी पर्याप्त जानकारी एकत्र कर फीचर लिखने के लिए कहा। उप-संपादक ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए पर्याप्त खोज-बीन कर कई दिनों तक तथ्यात्मक सामग्री एकत्रित की और टोटानिक की दुर्घटना पर अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक फीचर लिखा। पाठक वर्ग ने इस फीचर का अपार स्वागत किया। इसी प्रकार समाजव्यापी एवं राष्ट्रव्यापी बहुत सी समस्याओं को केन्द्र में रखकर लिखे गए कई फीचर देखे जा सकते हैं। देवराला में रूपकंवर नामक युवती के "सती" होने की घटना ने पूरे समाज और देश को झकझोर कर रख दिया था। इस घटना को आधार बनाकर सती प्रथा के इतिहास, उसके कारण तथा दुष्प्रभावों पर अनेक फीचर पत्र-पत्रिकाओं में छपे।

यही नहीं, पिछले दिनों भारत ने तेज मार करने वाले एक प्रक्षेपास्त्र अर्थात मिसाइल का सफल परीक्षण किया। पत्र-पत्रिकाओं में ये समाचार सुर्खियों में छपे। कुछ समय बाद इस समाचार से संबंधित विविध जानकारी देने वाले कई फीचर प्रकाशित हुए। इसी प्रकार काफी अर्से से आतंकवाद, भाषा-विवाद, आरक्षण नीति आदि पर बहुत से फीचर लिखे जाते रहे हैं। पिछले दिनों श्रीलंका में शांति सेना के रूप में गए भारतीय सैनिकों को लेकर काफी

असंतोष रहा। कई पत्र-पत्रिकाओं में भारत की इस नीति पर अनेकों फीचर प्रकाशित होते रहे। इसी प्रकार पिछले दिनों एक खबर छपी थी तरह-तरह के पान-मसाले बाज़ार में बिक रहे हैं और ये कैंसर का कारण बनते हैं। यहाँ आपकी सुविधा और समझ के लिए इससे सम्बद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित फीचर प्रस्तुत है–

पान मसाला : चार ग्राम की पहेली
(डॉ. जगदीप सक्सेना)

"एक दिन में चार ग्राम से ज्यादा पान मसाला खाना खतरनाक है।" सरकार ने फैसला किया है कि आगे से पान मसाले की हर पुड़िया पर यह चेतावनी छपेगी। सरकार के इस फैसले ने विज्ञानियों और डाक्टरों को उलझन में डाल दिया है। चार ग्राम की लक्ष्मण रेखा क्यों ? विज्ञानियों के अनुसार इसका कोई ठोस वैज्ञानिक आधार नहीं है। पान मसाला कितना भी कम क्यों न खाया जाय, सेहत के लिए खतरनाक है।

"बाबूजी! आज एक नया पान मसाला आया है। महक बड़ी जोरदार है। चखेंगे ?"

"चखना क्या! एक पुड़िया दे दो। शाम को बतायेंगे"
पनवाड़ी और ग्राहक के बीच अक्सर ऐसे संवाद सुनायी पड़ते हैं। पान मसाले की ये बढ़ती लोकप्रियता के कारण आये दिन बाज़ार में कोई-न-कोई नया पान मसाला धमकता रहता है। नयी सुगन्ध और नये स्वाद के चक्कर में ग्राहक आसानी से इनके फन्दे में फंस जाता है। यही वजह है कि पान मसाले के लगभग दो दर्जन ब्रांड बाजार में चल रहे हैं। अखबारों, पत्रिकाओं आदि के अलावा रेडियो और टी.वी. पर भी इनका जोरदार विज्ञापन हो रहा है। एक मोटे अन्दाज के मुताबिक पान मसाला हर साल तीन अरब रुपये का कारोबार कर रहा है। देश के दो करोड़ से ज्यादा लोग इसे नशे के गुलाम बन चुके हैं।

जब से पान मसाले का चलन हुआ, तभी से इस पर वैज्ञानिक खोजें भी शुरू हो गयी थीं। पिछले कुछ वर्षों में इस बात के पक्के सबूत मिल गये हैं कि पान मसाला खाने से मुंह और गले का कैंसर हो सकता है। तभी से कई स्वैच्छिक और वैज्ञानिक संगठन पान मसाले के विज्ञापन पर रोक लगाने की माँग कर रहे हैं। इनकी यह भी माँग रही कि सिगरेट की तरह पान मसाले की पुड़िया पर भी चेतावनी लिखी जाय कि यह स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है। विज्ञापनों के साथ भी यह चेतावनी देनी जरूरी हो। तम्बाकू वाले पान मसाले की पुड़िया पर तो लिखा रहता है कि तम्बाकू स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, पर सादे पान मसालों पर अभी तक ऐसी कोई चेतावनी नहीं है।

इसी माँग को देखते हुए केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री नीलमणि राउत राय ने पिछली 26 मार्च को संसद में घोषणा की कि अब से पान मसाले की हर पुड़िया पर यह चेतावनी छपेगी–"एक दिन में चार ग्राम से ज्यादा पान मसाला खाना खतरनाक है।" विज्ञापनों के साथ इस चेतावनी को देना जरूरी कर दिया गया है। इस घोषणा के साथ ही राय ने यह भी बताया कि अहमदाबाद के राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान ने पान मसाले का रासायनिक विश्लेषण किया है। वहाँ हर ब्रांड की जांच पड़ताल हो रही है। राय के अनुसार भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई.सी.एम.आर.) द्वारा करवाये गये अध्ययन बताते हैं कि पान मसाले में मिले कत्था और सुपारी से मुँह का कैंसर हो जाता है। राय ने अपनी बात के प्रमाण में पान मसाला के सात ब्रांडों के रासायनिक विश्लेषण की रिपोर्ट भी प्रस्तुत की। हर ब्रांड में कैंसर पैदा करने वाले रसायन मौजूद थे। कुछ कीटनाशकों की सूक्ष्म मात्रा भी मौजूद थी।

पर यह चार ग्राम वाली बात कहां से आयी ? कुछ दिनों पहले अंग्रेजी के एक दैनिक में छपा कि भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने अपने को इस मामले से बिल्कुल अनजान बताया है। परिषद के अनुसार उन्होंने कभी भी स्वास्थ्य मंत्रालय को पान मसाले की मात्रा के बारे में कोई सलाह नहीं दी। हाँ, उसने कैंसर होने की पुष्टि जरूर की है। हैदराबाद में इसी परिषद् का एक संस्थान है–राष्ट्रीय पोषण संस्थान। वहाँ से छपे एक "संवाद पत्र" में पान मसाले के हानिकारक प्रभावों की चर्चा करते हुए कहा गया है कि एक दिन में चार ग्राम से ज्यादा पान मसाला खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इसलिए पान मसाले की पुड़िया पर ऐसी चेतावनी छापी जा सकती है। पर "संवाद पत्र" में भी इस तथ्य के पीछे किसी वैज्ञानिक खोज का हवाला नहीं दिया गया है। यह किसके दिमाग की उपज है, समझ में नहीं आता। कुछ लोगों का तो यह मानना है कि इसके पीछे करोड़ों का व्यापार करने वाले पान मसाला उद्योग का हाथ है।

यह कारगुजारी चाहे जिसकी हो, आम आदमी को यह जानने का हक है कि यह चेतावनी सच्ची है या महज एक धोखा है। विज्ञानियों के अनुसार कम पान मसाला खाने से कैंसर से बचाव हो जाय, ऐसा कुछ नहीं है। कैंसर पैदा करने वाले रसायन शरीर में धीरे-धीरे इकट्ठे होते रहते हैं। ये कुछ दिन या महीनों बाद नहीं, बल्कि वर्षों बाद तक हमला कर सकते हैं। इसमें दस या बीस साल भी लग जाते हैं। यदि आप पान मसाला के ज्यादा शौकीन नहीं हैं तो हो सकता है आपको कुछ वर्ष बाद कैंसर दबोचे। दूसरी ओर अगर आप पान मसाले का ज्यादा शौक रखते हैं, तो हो सकता है कुछ महीनों बाद ही आपको इसका नतीजा भुगतना पड़े। बात समय की है, मात्रा की नहीं। कुछ साल पहले सिगरेट के बारे में भी ऐसी गलतफहमी थी। कहा जाता था कि दिन में चार सिगरेट पीने से कुछ नहीं होता। यह बात अब पूरी तौर पर झूठी साबित हुई है।

पान मसाले में आखिर ऐसा क्या है, जो कैंसर पैदा करता है ? तम्बाकू या जर्दे वाले पान मसाले में तो सबसे खतरनाक तम्बाकू ही है। इसके बारे में शायद बताने की जरूरत नहीं। सादे पान मसाले में 80 फीसदी पिसी सुपारी, 10 फीसदी कत्था और एक फीसदी चूना रहता है। मीठे पान मसाला में कत्था केवल 10 प्रतिशत होता है। इसमें मिठास के लिए 70 फीसदी पिसा छुआरा मिलाया जाता है। सुगंध और स्वाद के लिए दोनों में ही दालचीनी, लौंग, इलायची, मेंथोल या पिपरमिंट आदि मिलाये जाते हैं। इनकी मात्रा लगभग नौ फीसदी होती है। अनुमान है कि मेंथोल के कारण ही पान मसाला खाने की लत लगती है। यह तो बात हुई एक आदर्श पान मसाले की।

धड़ल्ले से बिक्री होने के कारण पान मसाले में कई तरह की मिलावट की जा रही है । जैसे मिठास के लिए महंग छुहारे की जगह सैक्रीन मिला दी जाती है । सैकरीन कैंसर पैदा करने के साथ ही नपुंसकता भी पैदा करती है । यही हाल रंगों का भी है । पान मसाले में सेहत को नुकसान पहुंचाने वाले रंगों का इस्तेमाल धड़ल्ले से हो रहा है । और-तो-और रेत भी ऐसे ही किसी रंग में रंगकर पान मसाले में मिला दी जाती है । चाँदी के वर्क की जगह एल्यूमिनियम की बारीक पत्तियाँ मिला दी जाती हैं । ऐलुमिनियम की अधिकता शरीर में कई रोग पैदा करती है । कुछ पान मसालों में पत्थर के बारीक चूर्ण भी पाये गये हैं । ये उस पत्थर के होते हैं, जिसकी चिक्की पर सुपारी पीसी जाती है । नीलमणि राउत राय ने संसद में बताया था कि पान मसाले में 255 नमूनों में से 83 में मिलावट पायी गयी थी ।

पान मसाले में मौजूद सभी चीजों में से कत्था और सुपारी कैंसर पैदा करने वाले प्रमुख तत्व हैं । 1987 में 'कैंसर लेटर' नाम से अनुसंधान पत्रिका में डा० गिरी और उनके सहयोगियों का एक शोध पत्र प्रकाशित हुआ था । इसमें प्रयोगों से सिद्ध किया गया था कि कत्थे में कैंसर पैदा करने के गुण हैं । कत्था और सुपारी से गुणसूत्रों (क्रोमोसोम) पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है । इस तरह माता-पिता के गुण हम तक पहुंचाने वाले जीन भी प्रभावित होते हैं । इस असर को वैज्ञानिक "जीनोटॉक्सिक" प्रभाव कहते हैं । तम्बाकू का भी यही असर होता है । चंडीगढ़ के मशहूर "पोस्ट-ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज' के कान, नाक और गला विभाग ने पान मसाले का असर देखने के लिए चूहों पर प्रयोग किया । यहाँ छः महीने तक हर दूसरे दिन चूहों के मुँह के अंदर पान मसाले का लेप किया गया । इससे ज्यादातर चूहों के मुँह में कैंसर की प्रारम्भिक अवस्था पनप गई । हैदराबाद के राष्ट्रीय पोषण संस्थान में भी पान मसाला और सुपारी जीवाणुओं की कोशिकाओं में उत्परिवर्तन पैदा करते देखे गए हैं । उत्परिवर्तन (म्यूटेशन) से प्राणी में किसी प्रकार का बदलाव अचानक पैदा हो सकता है ।

कहने का मतलब यह है कि पान मसाला, कम या ज्यादा, हर हालत में खतरनाक है । इसलिए चार ग्राम के चक्कर में मत फँसिए । पान मसाला बिल्कुल छोड़ दीजिये । सरकार को भी चाहिए कि कम-से-कम रेडियो और टी.वी. पर पान मसाले के विज्ञापन पर पूरी रोक लगा दे । वैज्ञानिक सुपारी की ऐसी किस्में विकसित करने का प्रयास कर सकते हैं, जिनमें खतरनाक यौगिक "अरेकोलिन" कम से कम हो । बेहतर तो यह होगा कि बिना "अरेकोलिन" वाली सुपारी तैयार की जाय । जब तक यह नहीं होता, तब तक पान मसाला से तौबा ही भली ।

यह फीचर पढ़ने के बाद आपको स्पष्ट हो गया होगा कि फीचर में ज्ञानवर्द्धक सामग्री को रोचक ढंग से एक विशिष्ट अंदाज में प्रस्तुत किया जाता है । आगे हम फीचर के अन्य प्रकारों के भी कुछ उदाहरण देखेंगे । यहाँ इस समग्र विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि फीचर स्थिति, परिवेश, घटना एवं संदर्भ का विहंगावलोकन करते हुए अज्ञात को ज्ञात बनाता है तथा अनेकों प्रश्नों के समाधानपरक उत्तर भी प्रस्तुत करता है । अतः समाचार की वर्तमान भूमि पर खड़ी, भूत पर दृष्टि डालती और भविष्य में उड़ान भरती यह फीचर विधा अत्यंत सक्षम एवं उपयोगी विधा है । इसमें विशेष और अनोखे सत्य को कल्पना के शहद में मिलाकर पाठक को इस प्रकार चटाया जाता है कि उसके जिज्ञासा, सहानुभूति, संवेदनशीलता आकांक्षा आदि भाव उद्दीप्त हो जाते हैं । भावना के इर्द-गिर्द चक्कर काटता ये फीचर पाठक की संवेदना को स्पंदित कर देता है । इसमें फीचर लेखन का व्यक्तित्व मुखर नहीं होता । वास्तव में फीचर न तो रेखाचित्र है, न रूपक और न ही गद्यगीत । यह तो केवल फीचर ही है जिसे किसी घटना या संदर्भ का विश्लेषणपरक स्पष्टीकरण कहा जा सकता है । अध्ययन, अनुसंधान, तथ्य, साक्षात्कार तथा फोटो आदि तथ्यों के आधार पर लिखें जाने वाले इस फीचर को परिभाषित करते हुए कह सकते हैं कि –**"फीचर एक ऐसी विधा है जो यथार्थ एवं तथ्यों पर आधारित समाचार को भावात्मक संवेदना तथा सृजनात्मक कल्पना की रससिक्त चाशनी में भिगोकर संतुलित, सहज एवं सरल भाषा तथा चित्रमयी मार्मिक शैली में अभिव्यक्ति प्रदान करती है ।"**

1.3.2 फीचर का महत्व

ज्ञानवर्द्धन, मनोरंजक तथा उत्सुकता उत्पन्न करने वाली इस दिलचस्प विधा का महत्व यों तो इसी तथ्य से प्रमाणित हो जाता है कि प्रत्येक समाचारपत्र या पत्रिका का यह नियमित और अनिवार्य अंग बन कर प्रकाशित होती है । पाठकों की रुचि और फीचर के प्रति उनके रुझान से भी यही सिद्ध होता है कि यह पत्र-पत्रिकाओं के नीरस तथा उबाऊ घटना विवरणों एवं नेताओं के राजनीति-प्रेरित वक्तव्यों से अलग हटकर मानवीय अनुभूतियों को स्पंदित एवं जागृत करने वाली अत्यंत उपयोगी तथा महत्वपूर्ण विधा है । छोटे, सटीक, विषयनिष्ठ, सारगर्भित, सौद्देश्य तथा ज्ञानवर्द्धक फीचर गंभीर रुचि बनाते हैं तथा मन-मस्तिष्क को बहुमुखी विकास की राह पर अग्रसर करते हैं । प्रत्येक वर्ग की समझ को ध्यान में रखकर लिखे जाने के कारण फीचर विशिष्ट आकर्षण का कारण भी बनते हैं । समाज, देश या विदेश की स्थिति, परिवेश, घटना, उपलब्धि, संदर्भ अथवा खोज आदि का दस्तावेज़ी ब्यौरा भी देते हैं । पाठकों की जिज्ञासा को शांत करते हुए उनके ज्ञान का स्रोत बनने वाले फीचर साहित्य का अपना वैशिष्ट्य और अपनी ही उपयोगिता है, इसलिए

पत्रकारिता में इनका स्थान अद्वितीय है। समाज की विविध समस्याओं पर प्रभावी ढंग से प्रकाश डालते हुए उनके समाधान खोजने या खोजने पर मजबूर करने वाली यह विधा सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपना ऐतिहासिक महत्व रखती है, इस तथ्य को कभी भी विस्मृत नहीं किया जा सकता।

बोध प्रश्न

1) निम्नलिखित प्रश्नों में कुछ रिक्त स्थान दिए गए हैं। साथ-साथ दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प को सही (✓) के निशान से चिन्हित कीजिए–

i) पत्र-पत्रिकाओं में दिए गए अधिकांश समाचारों की ..... ही उनकी प्रतिष्ठा को बनाती है। (तथ्यात्मकता, रोचकता, चमत्कारिता)

ii) राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं घटना प्रधान समाचारों को बार-बार तथा अधिक मात्रा में पढ़ने से पाठक का ..... होता है। (ज्ञानवर्द्धन, मनोरंजन, दिमाग परेशान)

iii) फीचर सरल, स्पष्ट, रोचक तथा पठनीय होने के कारण ही अपने पाठक वर्ग को ..... करते हैं। (निराश, तैयार, मोहित)

iv) फीचर का प्रमुख उद्देश्य ..... करना है। (मनोरंजन, सामाजिक दायित्व पूरा, प्रतिष्ठा हासिल)

v) पत्र-पत्रिकाओं को सामाजिक असंतुलन को मिटाने तथा जन-हित नीतियों को फैलाने के लिए पूरे ..... से कार्य करना चाहिए। (उत्तरदायित्व, संयम, संघर्ष)

2) नीचे कुछ विषय दिए जा रहे हैं। उन पर पाँच-पाँच पंक्तियाँ लिखिए :

i) पत्र-पत्रिकाओं के सामाजिक दायित्व के प्रमुख विषय :

.....

.....

.....

.....

.....

ii) पत्र-पत्रिकाओं की कार्य-पद्धति में विषय विभाजन :

.....

.....

.....

.....

.....

3) दो-दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए:

i) फीचर की परिभाषा क्या है?

.....

.....

ii) फीचर के विषय क्या-क्या हो सकते हैं?

.....

.....

1) "पान मसाला : चार ग्राम की पहेली" फीचर में लेखक ने किन चार खतरों की ओर संकेत किया है ? पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

1.4 फीचर के विभिन्न पक्ष

फीचर में ज्ञानवर्द्धन के साथ-साथ कोई समाचार भी निहित रहता है। यह अलग बात है कि यह समाचार गौण होता है और उसकी प्रस्तुति प्रमुख हो जाती है। जो घटनाएँ अपना समाचारिक महत्व नहीं बना पातीं परन्तु पाठक के लिए आकर्षण बनी रहती हैं उन्हीं को यथाशीघ्र और संक्षेप में मनोरंजक तथा आकर्षक रूप में लिखकर फीचर का रूप दे दिया जाता है। उदाहरण के तौर पर पत्र-पत्रिकाओं में एक समाचार छपा कि शहरों और महानगरों में सड़कों पर बिकने वाला पानी जितना महंगा होता है स्वास्थ्य की दृष्टि से उससे कहीं अधिक हानिकारक भी। इसी विषय को आधार बनाकर बहुत से फीचर लेखकों ने अपनी सृजनात्मक कल्पना से इन तथ्यों को सुसज्जित किया और पाठक वर्ग के सम्मुख रोचक तथा प्रभावी सामग्री प्रस्तुत कर दी। इसी विषय पर लिखे गए एक फीचर का उदाहरण प्रस्तुत है जिसका शीर्षक है–"पानी के नाम पर बिकता जहर"–

पानी के नाम पर बिकता जहर
(अजय पाण्डेय)

खूब जला देने वाली धूप और जान-लेवा लू के साथ आयी गर्मी अपने पूरे शबाब पर है। पसीना, उमस और चिपचिपाहट के मारे मन बेचैन रहने लगा है। ऊपर से प्यास के मारे सूखता गला ऐसा, कि बस दुनिया का सारा पानी पी जाने की इच्छा होती है।

चिलचिलाती गर्मी में हर कदम प्यास लगती है, खास कर तब और ज्यादा जब आप धूप में खड़े बस का इंतजार कर रहे हों या धूप में ही काफी चल चुके हों। आप इधर उधर नजर दौड़ायें, लगभग हर स्टाप पर सिनेमा हाल के बाहर और भीड़-भाड़ की जगहों पर आपको 'रेफ्रिजीरेटेड कोल्ड वाटर' वाली टंकी सजाये एक व्यक्ति मिल जाएगा। पैसे दीजिये और ठंडा पानी पीकर तृप्त हो जाइये, चाहें तो बिस्टिक या नींबू पानी भी ले सकते हैं। यह आपकी जेब पर निर्भर करता है। अगर आप कहीं फुटपाथ पर चाट खा रहे हैं, तो निश्चित जानिये, खाने के बाद चाट वाला पानी नहीं पिलायेगा, हाँ आस-पास ही उसका आदमी पानी की टंकी लिये खड़ा मिलेगा, पैसा दीजिये, पानी पीजिये।

प्यास की तलब में आप पानी तो पी लेते हैं पर क्या आपको पता है कि सूखे गले को तर करने के लिए आप जेब से पैसा लगा कर पानी के रूप में जहर पी रहे हैं। इन टंकियों में गंदा और प्रदूषित जल होता है जिसमें महामारियाँ पैदा करने वाले ऐसे संक्रामक कीड़े तैरते हैं, जो हमें आँखों से दिखाई नहीं देते।

जहरीले पेय जल की बिक्री रोकने के लिए सरकार ने कानून तो बहुत बनाये हैं, पर इच्छा शक्ति की कमी और स्वास्थ्य महकमे की लापरवाही के कारण जहरीले ठंडे जल की बिक्री बे रोकटोक जारी है। पानी की टंकी का लाइसेंस लेने की स्वास्थ्य से सम्बद्ध शर्तें बहुत कड़ी हैं, पर लाइसेंस लेने में घूसखोरी, राजनैतिक दबाव जैसे भ्रष्ट तौर तरीकों के कारण ये कड़ी शर्तें और नियम ताक पर धर दिये जाते हैं। स्थानीय प्रशासन के स्वास्थ्य विभाग का जिम्मा होता है कि वह इन टंकियों की सफाई, पानी की स्वच्छता आदि का निरीक्षण करता रहे। नियम तो यह भी है कि टंकियों में बेचे जा रहे पानी का रासायनिक परीक्षण (सैम्पल टेस्टिंग) किया जाय और जल के प्रदूषित पाये जाने पर टंकी वाले पर कड़ा जुर्माना किया जाय, पर लाइसेंस लेते समय ही सारा मामला तय कर लिया जाता है। फिर साल भर की छुट्टी, चाहे पानी बेचो या जहर, कोई देखने, टोकने और रोकने नहीं आयेगा।

गर्मी के मौसम में दस्त, कै और हैजे की बीमारियाँ अचानक बढ़ जाती हैं। इन बीमारियों की एक बड़ी वजह यही ठंडा जहरीला पानी होता है। ठंडा पानी बेचने के नियमों के अनुसार टंकी वाला "फिल्टर्ड पानी" ही बेचेगा, पर आपने किसी टंकी वाले के यहाँ "फिल्टर्ड" पानी पिया है? वैसे भी हम आप फिल्टर्ड पानी क्या होता है, कहाँ जानते हैं? जन स्वास्थ्य के नाम पर मोटी तनखाहें उठाने वाले अधिकारियों की उदासीनता और हद दर्जे की लापरवाही जनता को दिनों दिन संक्रामक रोगों के मुँह में धकेल रही है। पर स्वास्थ्य विभाग की "विभागी चेतना" कभी नहीं जागेगी। लगता है सरकार को किसी बहुत बड़े हादसे का इन्तजार है।

जहरीला शीतल जल पिला कर पूरी आबादी को अस्वस्थ बनाते जाने की प्रक्रिया में टंकी पर खड़ा पानी बेचने वाला व्यक्ति अपराध में उतना भागीदार नहीं है, जितना, इस जल-व्यवसाय में जुड़े बड़े लोग। पानी बेचने वाले की तो अपनी त्रासदी है जो उसे पेट भरने के लिए पानी बेचने पर मजबूर करती है। पानी बेचने वालों की व्यथा कथा भी कम हृदय विदारक नहीं है।

दस पैसे में प्यास बुझाने वाले दरअसल मजदूर होते हैं जो न उस टंकी के मालिक होते हैं और न ही उस पानी के जो वे बेचते हैं। ये मजदूर शहरों में टंकी मालिकों से रोज सुबह टंकियाँ लेते हैं और शाम को जमा कर देते हैं। टंकी में भरा ठंडा पानी भी मालिक का होता है। बेचे गये पानी पर मजदूरों को कमीशन मिलता है। अलग-अलग शहरों में मालिक मजदूर के बीच व्यापार सम्बन्ध अलग-अलग तरह से होता है। मसलन, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता जैसे महानगरों में मजदूरों को टंकी मालिक ठंडा पानी और टंकी दोनों देता है जबकि छोटे शहरों में टंकी मालिक सिर्फ टंकी किराये पर देता है और मजदूर को नगरपालिका के नल से पानी भरना पड़ता है जिसे ठंडा करने के लिये बर्फ भी उसे ही खरीदनी पड़ती है। महानगरों में टंकी और पानी के धंधे में बड़े-बड़े लोग हैं। एक टंकी मालिक के पास कम-से-कम 200 से 400 तक टंकियाँ होती हैं, जिन्हें मजदूरों को कमीशन पर देते हैं।

सामान्य आकार की एक टंकी में लगभग 24 घन इंच पानी आता है। टंकी मालिक 4 से 10 रुपये घन इंच के हिसाब से मजदूरों को पानी देता है और दिनभर की मजदूरी चार रुपये। अब मजदूरों पर निर्भर है कि वह कितना अधिक बेच पाते हैं। प्रति इंच पानी की कीमत पानी बेचने की जगह पर निर्भर है। जहाँ ज्यादा पानी बिकता है, वहाँ टंकी लगाने पर टंकी मालिक प्रति घन इंच पानी की कीमत ज्यादा ले लेता है। एक घन इंच पानी में लगभग 75 गिलास पानी आता है। मजदूर टंकी मालिक से औसतन 4 या 5 घन इंच पानी रोज लेते हैं। जूठे गिलास को धोने में खर्च हुए पानी को वे ग्राहकों को गिलास में थोड़ा कम पानी देकर "एडजस्ट" करते हैं। घन इंच और गिलास के इस गणित में एक पानी मजदूर को लगभग 20 से 25 रुपये बचते हैं जो महीने भर में 750 रुपये अधिकतम पड़ता है। इसी में पूरे परिवार का खर्च चलाना तो लगभग असम्भव है। फिर यह धन्धा स्थायी भी नहीं है। दीपावली के बाद जब जाड़ा शुरू होने लगता है, तब पानी का धन्धा बन्द हो जाता है। फलतः इस धन्धे में लगे गरीब, मजदूरों को दूसरा धन्धा देखना पड़ता है।

दिनभर धूप में मेहनत करने पर भी एक ओर जहाँ इन मजदूरों का पेट तक नहीं भरता, वहीं इनके मालिकों का मात्र एक सीजन में लाखों का वारा न्यारा हो जाता है। गरीब मजदूर न तो खुद की टंकी खरीद सकता है न ही नगरपालिका से पानी बेचने का लाइसेंस लेने जैसा दूभर काम कर सकता है। जल माफिया अपने-अपने क्षेत्र बाँट कर नगरपालिका में कुछ दे दिला कर और राजनैतिक दबाव डलवा कर लाइसेंस प्राप्त कर लेते हैं। यह सब तो थोड़ी पहुँच रखने वाले आदमी के भी बूते के बाहर है, फिर गरीबी की रेखा के नीचे खड़ा मजदूर भला कैसे लाइसेंस पा सकता है।

तेजी से बढ़ती आबादी और पर्यावरण के विनाश से संसाधनों में होती कमी के कारण पीने के पानी की समस्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। घटते जल स्रोत और जलाशयों के बावजूद गैर जरूरी कामों में जल के अनाप शनाप प्रयोग से भी जल संकट गहराता जा रहा है। पानी की बढ़ती माँग और घटते भंडार के कारण ही पानी की बिक्री की नौबत आयी है। और इसी से पनपी है जहरीले पानी की बिक्री। जिम्मेदारी सरकार की बनती है कि वह संसाधनों का विकास करे और इसके समान वितरण की व्यवस्था करे, साथ ही स्वास्थ्य विभाग द्वारा भी गुणवत्ता नियंत्रण के कड़े कदम उठाये जाने चाहिएं। जिम्मेदारी हमारी भी है कि हम स्वस्थ रहने के प्रति सजग रहें।

अब महत्वपूर्ण बात यह है कि इस प्रकार के अनेक विषय संदर्भ, घटनाएँ, सूचनाएँ या स्थितियों आदि पर जो तरह तरह के फीचर लिखे जाते हैं उनमें से प्रत्येक के विभिन्न पक्ष होते हैं जिनसे फीचर एक विशिष्ट स्वरूप में तैयार हो पाता है। इन विभिन्न पक्षों की फीचर के सृजन और प्रस्तुति में कोई न कोई महत्वपूर्ण भूमिका अवश्य रहती है। इन पक्षों में प्रेरक तत्व या विषय, परिवेश, आधार-सामग्री, लेखकीय दृष्टिकोण तथा भाषा शैली प्रमुख हैं। यहाँ इन पक्षों पर संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लेना भी आवश्यक है।

1.4.1 प्रेरक तत्व

फीचर लेखक की प्रेरणा बनने वाले तत्व लेखक के लिए जितने महत्वपूर्ण एवं उपयोगी होते हैं उनके लिए चुना जाने वाला विषय भी उससे कम महत्व नहीं रखता है। विषय का चयन विशेषकर लेखक की रुचि एवं उस विषय पर उसके अधिकार पर निर्भर करता है। उस विषय-विशेष से सम्बद्ध सामग्री जुटा देने की सुविधा तथा सामाजिक पाठकों के ज्ञानवर्द्धन का ठोस विश्वास लेखक की प्रेरणा बनकर इसे सृजन के लिए बाध्य करता है। इसलिए फीचर लेखक को एक अच्छा, महत्वपूर्ण एवं उपयोगी फीचर लिखने के लिए उस फीचर के जीवन तथा उसकी सामाजिक देन को भली प्रकार समझ कर ही कदम बढ़ाना चाहिए। समय तथा विषय की प्रासंगिकता ही फीचर की लोकप्रियता के कारण बनते हैं।

यों ताज़ी घटनाओं तथा ज्वलंत समस्याओं पर तो अनेक लेख, समाचार या फीचर प्रकाशित होते रहते हैं। किंतु समसामयिक समस्याओं एवं घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में यदि इतिहास

सम्मत और भविष्योन्मुखी फीचर भी कल्पनाओं के विविध रंगों से सुसज्जित होता है तो उसकी लोकप्रियता तो बढ़ती ही है साथ ही वह दीर्घजीवी भी बनता है। उदाहरणार्थ विगत काफी दिनों से पंजाब में आतंकवादियों द्वारा की जा रही हत्याएँ और खालिस्तान की माँग से देश की एकता एवं अखंडता को जो खतरा बन गया है उसे ध्यान में रखते हुए अनेक फीचर लिखे जाते रहे। देश की एकता के लिए बलिदान होने वाले अनेक शहीदों की याद फीचर लेखन की प्रेरणा बनी और सिख देश भक्तों के उन शहीदी कारनामों को इनका विषय बनाया गया। पाठक वर्ग ने इतिहास सम्मत उन वीरगाथाओं को फीचर के माध्यम से पढ़ कर देश भक्त सिख युवकों और आतंकवादियों के अंतर को भली प्रकार समझा तथा अपनी गलत धारणाओं को सुधारा। पंजाब के निवासियों द्वारा देश के लिए किए गए बलिदानों की पुनः स्मृति ने अनेक अमर शहीदों की याद ताजा कर परस्पर भाईचारे और आत्मीयता की भावना का संचार किया। इस तरह की खोजपरक सूचनाओं एवं समसामयिक घटनाओं के सम्मिश्रण से सैकड़ों फीचर लिखे गए तथा अभी भी लिखे जा रहे हैं। अतः स्पष्ट है कि फीचर लेखन में प्रेरणा बनने वाले तत्वों के साथ-साथ विषय निर्धारण का भी अपना ही महत्व है।

1.4.2 परिवेश

किसी भी फीचर को महत्वपूर्ण प्रभावी एवं विश्वसनीय बनाने के लिए जो विषय चुना जाता है उसकी परिवेशगत स्थितियों एवं समस्याओं का अध्ययन करना भी अत्यंत अनिवार्य होता है। वास्तव में फीचर कोई शुष्क या नीरस विधा नहीं है। अच्छे फीचर की विशेषता है पाठक के मन को मोह लेना और विषय के प्रति उसकी रुचि पैदा करते हुए ज्ञानवर्द्धन करना। फीचर में परिवेशगत वर्णन विश्वसनीयता का ठोस कारण बनकर उसे अनुपम सौंदर्य प्रदान करता है। फीचर सम्बन्धी सभी या अधिकांश परिवेशगत समस्याओं का अध्ययन उसे सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हुए पाठक के आकर्षण का कारण बनता है। उदाहरण के लिए आप स्मरण करें कि 14 फरवरी, 1981 को फूलन देवी ने भोगिनीपुर-इटावा सड़क से दस किलोमीटर दूर बीहड़ जंगलों की गोद में बसे बेहमई गाँव में बीस व्यक्तियों की हत्या कर दी थीं। बेहमई में इन व्यक्तियों की स्मृति में एक शहीद स्मारक भी बनाया गया है। यह विषय फीचर के लिए अत्यंत उपयुक्त है। हालांकि इस विषय पर बहुत से फीचर उन दिनों लिखे गए। किन्तु आप अगर इस विषय पर मौलिक फीचर लिखना चाहते हैं तो फूलन देवी द्वारा की गई हत्याओं, अन्य डाकुओं के साथ फूलन देवी के आत्मसमर्पण तथा इन डाकुओं एवं पीड़ित परिवारों की परिवेशगत स्थितियों का गंभीर, गहन और व्यापक अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है। उस गाँव के शहीद स्मारक, युवा, वृद्ध एवं बालकों के साक्षात्कार, रोते बिलखते लोगों के चित्र आदि का उपयोग इस फीचर को अत्यंत महत्व प्रदान करेगा।

इसी प्रकार बाढ़, सूखा, महामारी, कोई आतंकवादी घटना, किसी पर्वतीय प्रदेश की यात्रा अन्य कोई भी संदर्भ, अपने पूरे परिवेश, वातावरण एवं स्थिति आदि के साथ जब अभिव्यक्ति पाता है तो वह मर्मस्पर्शी ही नहीं अत्यंत सराहनीय भी बन जाता है।

1.4.3 आधार-सामग्री

फीचर लेखक को बहुत सोच समझ कर ही अपने फीचर के विषय से सम्बद्ध सामग्री के क्षेत्र का निर्धारण करना चाहिए। सर्वप्रथम तो सामयिक आवश्यकता एवं अनिवार्यता को ध्यान में रखते हुए ज्वलंत समस्या के परिप्रेक्ष्य में समाज को झकझोरने वाली घटनाओं एवं परिस्थितियों का गहन अध्ययन करना चाहिए। वास्तव में आधार सामग्री बुनियाद के समान होती है और बुनियाद अगर ठोस एवं मजबूत न हो तो भवन लड़खड़ा सकता है। अतः फीचर लेखक को यह निर्णय सोच समझकर लेना चाहिए कि किस घटना, समस्या या आधार को वह फीचर निर्माण के लिए चुन रहा है। फिर उस घटना से सम्बद्ध प्रभाव, विश्वसनीय सूत्र, रोचक तथ्य तथा सामाजिक उद्देश्य पर विचार करते हुए समग्र उपलब्ध प्रकाशित सामग्री का गंभीर एवं व्यापक अध्ययन मनन करना चाहिए। उसकी ऐतिहासिक, सामाजिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि का श्रम-साध्य अध्ययन करते हुए सम्बद्ध व्यक्तियों से भेंटवार्ताएँ भी करनी चाहिएँ। वहाँ के जिम्मेदार एवं गंभीर व्यक्तियों, अधिकारियों अथवा अन्य सूत्रों से बातचीत करते हुए अपेक्षित तथ्यों, एवं प्रमाणों की खोज भी करनी चाहिए।

फीचर लेखन में सौंदर्य पैदा करने वाली सृजनात्मक-कल्पना का अतिशय प्रयोग या ऐसा प्रयोग जिससे तथ्य धुंधलाने लगें, भी अपेक्षित नहीं। किसी भी तरह का पूर्वाग्रह न हो, इस बात का ध्यान रखते हुए वस्तुतथ्यात्मक वर्णन करना फीचर लेखक का मुख्य कर्तव्य होता

है। घटना-विशेष से सम्बद्ध कोई संवेदनात्मक स्थिति अथवा अज्ञात उत्सुकता जगाने वाले कुछ मनोरंजक तथ्यों को उजागर करने के लिए आँख-कान खुले रखना भी फीचर लेखन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

1.4.4 लेखकीय दृष्टिकोण

फीचर लेखन प्रारंभ करने से पूर्व लेखक को यह स्पष्ट होना चाहिए कि वह विषय-विशेष के संदर्भ में क्या कहना चाहता है, और क्यों कहना चाहता है? अर्थात् उसके इस फीचर लेखन का उद्देश्य क्या है तथा इसके माध्यम से वह समाज को क्या बताना या देना चाहता है। इस श्रम-साध्य कार्य द्वारा तथ्यों को जुटाना, खोज-बीन के लिए यत्र-तत्र घूमना, यात्रा करना, लोगों से मिलना और बातचीत कर किसी नतीजे पर पहुँचना आदि प्रक्रिया से वह मानवीय अभिरुचि के विषयों को शब्दबद्ध करते हुए अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करता है। उस विषय से सम्बद्ध अपूर्व तथ्यों एवं जानकारियों को उपलब्ध कराते हुए सभी गलत धारणाओं को बदलने का प्रयास ही नहीं करता, अपितु मार्ग दर्शन करते हुए सत्य एवं विश्वास की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित भी करता है।

लेखक को अपना दृष्टिकोण बनाने के लिए लेख, इतिहास, साहित्य, अभिलेखागार या संग्रहालयों से शोध करते हुए बहुत से तथ्य, प्रमाण, चित्र एवं ऑडियो-वीडियो रिकार्डिंग आदि जुटाने पड़ते हैं। इन सभी का इस्तेमाल वह अपने मत को पुष्ट करने के लिए करता है। इसी तरह किसी ऐतिहासिक अथवा सांस्कृतिक विषय से सम्बद्ध फीचर तैयार करते समय उसकी दृष्टि प्राचीन मूर्तियों, आभूषणों, वस्त्रों या सिक्कों आदि से प्रेरित होती है तो समाज को एक नया अर्थ देने की प्रेरणा भी बनती है। इस आधार पर आप ऐतिहासिक किलों पर, जीवन वृत्त पर, नृत्य-परंपरा पर या नाट्य, चित्रकला, मूर्तिकला, संग्रह-कला आदि पर बहुत अच्छे फीचर लिख सकते हैं और समाज को इस दिशा में सोचने-समझने पर बाध्य कर सकते हैं। इसी प्रकार देश-विदेश के विभिन्न रीति-रिवाज, रहन-सहन तथा खान-पान आदि भी फीचर के विषय बन सकते हैं। पर ये विषय चुनते हुए यह स्पष्ट होना चाहिए कि आप उस फीचर को क्यों लिख रहे हैं और उसके माध्यम से आप पाठक को क्या कहना, बताना या समझाना चाहते हैं। उस घटना, संदर्भ या विषय के परिप्रेक्ष्य में आपकी सोच अथवा दृष्टि क्या है और उसका ठोस आधार क्या है—यह भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1.4.5 भाषा और शैली

फीचर लेखन के समय यह बात विशेष रूप से ध्यान रखनी चाहिए कि लोक-प्रयोगों से समन्वित भाषा जिसमें शिष्ट एवं प्रभावोत्पादक शब्दावली का संयत एवं सुंदर प्रयोग किया जाए, ही फीचर को रोचक तथा सरस बनाती है। भाषा एवं भाव का उचित सम्मिश्रण ही शैली का निर्माण करता है और बिना संयत भाषा के किसी भी अभिप्रेत भाव को प्रभावी ढंग से व्यक्त नहीं किया जा सकता है।

फीचर की भाषा जितनी सहज, सरल एवं बोधगम्य होगी उतना ही फीचर को प्राणवान बनायेगी। आलंकारिक या श्लिष्ट (दो अर्थों वाले) शब्दों का चयन अथवा मुहावरे-लोकोक्तियों का प्रयोग कथ्य के सम्प्रेषण में बाधित ही होता है, सहायक नहीं। सीधे-सीधे अपनी बात सरल वाक्य-रचना में कह देने से फीचर की आभा और निखार पाती है।

अंग्रेज़ी में कहा जाता है—"style is the man" अर्थात् 'शैली ही व्यक्तित्व' है। वास्तव में शैली, शील से बना है और शील व्यक्ति के स्वभाव से। स्वभाव प्रत्येक व्यक्ति का अलग होता है। अतः फीचर लेखक की शैलीगत विशेषता होना तो अस्वीकार्य नहीं परन्तु फीचर लेखन में व्यक्तित्व के मुखर प्रदर्शन से अधिक उसके गोपन की अपेक्षा की जाती है। विषय, प्रसंग, परिस्थिति और प्रकरण के अनुरूप ही फीचर लेखक शब्दों का चयन तथा वाक्यों का गठन करता है और यही लचीलापन उसकी शैली को निखारकर उसमें प्रसाद गुण की वृद्धि करता है। फीचर लेखन की शैली में तो नदी का वह प्रवाह होना चाहिए जो पाठक को विषय के प्रारंभ से अंत तक द्रुत गति से बहा कर ले जाए। आवश्यकतानुसार ओज गुण हो, शब्दों और वाक्यों के अर्थ को स्पष्ट करने का सामर्थ्य हो, सटीक शब्दावली हो, सरल वाक्य हों, तारतम्यता हो तथा भाव और भाषा के संस्कारों की रक्षा करते हुए लेखक का उद्देश्य पूर्णतः स्पष्ट किया गया हो—यही सब फीचर की भाषा शैली को आदर्श रूप प्रदान करते हैं।

1.5 फीचर की विशेषताएँ

फीचर, समाचार और समस्या आदि के रहस्य की विशेष जानकारी देते हुए आत्मीयता, भावना और विवेचना के गुणों का समावेश करता चलता है। "समाचार के पीछे समाचार" का विश्लेषण करने वाली इस विधा द्वारा ज्ञात या अल्पज्ञात घटना का समीक्षण करके लेखबद्ध चित्र प्रस्तुत करते हुए पाठक-वर्ग को नए तथ्यों से अवगत कराया जाता है। अन्वेषण तथा विश्वसनीय साक्ष्यों से अपने कथ्य को पुष्ट करती यह विधा घटनाओं द्वारा जनता पर होने वाले प्रभाव का पूर्वानुमान भी करती है तो संभावित परिणामों की ओर भी ध्यानाकर्षित करती चलती है। इन्हीं सब उपलब्धियों से पाठक की भावनात्मक संतुष्टि होती है और इसी से वह आकर्षित तथा प्रभावित भी होता है। फीचर-लेखक भावना और कल्पना के सम्मिश्रण से ही अपना एक खास पाठक-वर्ग तैयार कर लेता है। तथ्यों का विश्लेषण, भावों का उद्वेग, तर्कसंगतता तथा सहजता आदि का दायित्व पूर्ण निर्वाह करने वाले फीचर लेखक को बहुत सी विशेषताओं का ध्यान रखना पड़ता है। यहाँ हम फीचर की उन्हीं विशेषताओं की संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

1.5.1 गंभीरता एवं रोचकता

फीचर-लेखन जितना रोचक होना चाहिए उससे कहीं अधिक गंभीर भी होना चाहिए। "फीचर" पत्रकारिता का एक अत्यंत दायित्वपूर्ण तथा उद्देश्यपूर्ण अंग है। फीचर के माध्यम से जन-सामान्य के सम्मुख एक गंभीर विषय का विश्लेषण करते हुए उसके अच्छे-बुरे पक्षों को तटस्थता से रखा जाता है। फीचर लेखक अपने मंतव्य को तभी पा सकता है जब वह फीचर को सारगर्भित, उद्देश्यपूर्ण तथा स्तरीय बनाते हुए अपने संदेश को सम्प्रेषित करता है। गंभीरता से तात्पर्य यहाँ बोझिल होने से नहीं। अगर वह गंभीरता के प्रयास में बोझिल बना दिया गया तो भी उद्देश्य की हत्या ही होगी। रोचकता भी फीचर को जीवंत रखने वाली महत्वपूर्ण विशेषता है। वास्तव में फीचर का वैशिष्ट्य ही यह है कि गंभीरता और रोचकता का एक साथ अद्भुत निर्वाह। गंभीरता उसे प्राणवान बनाती है तो रोचकता उसे जीवंत।

1.5.2 संक्षिप्तता एवं सौद्देश्यता

फीचर का प्राणतत्व है संक्षिप्तता। फीचर अगर बहुत लम्बा या बड़ा होगा तो पाठक की रुचि को खंडित करेगा। एक सीमा तक ही फीचर का दीर्घ होना स्वीकार्य है। हालांकि यह बात काफी हद तक विषय एवं सदर्भ पर निर्भर करती है। यों लम्बे फीचर भी लिखे जाते हैं किन्तु आदर्श-फीचर की लम्बाई अधिक से अधिक पाँच-छह सौ शब्दों की मानी गई है। 'गागर में सागर' भरते हुए फीचर को सहज एवं सरल ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए। फीचर लेखक और फीचर-पाठक के भाव-प्रवाह में अखण्डता और तारतम्यता बनी रहे तथा पाठक उसे पूर्ण किए बिना न छोड़े, यही उसकी सफलता का प्रमाण है। लेखक के विभिन्न भाव एवं विचार भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से पल्लवित पुष्पित होते हुए पाठक से अभिन्न नाता बनाकर उसे भाव-प्रवाह में बहा ले जाते हैं। भावों और विचारों की नई-नई भंगिमाओं से लेखक और पाठक परस्पर जुड़ जाते हैं। यही सहजता उसे प्रवाहमान बनाकर दीर्घजीवी बनाती है।

इसी प्रकार फीचर का सौद्देश्य होना भी अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक सृजन का कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होता है। इसी प्रकार फीचर लेखन की प्रेरणा बनने वाला उद्देश्य लेखक को एक कथ्य प्रदान करता है और लेखक अपने उस संदेश को समाज के सम्मुख सम्प्रेषित करते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति करता है। उस उद्देश्य में जनहित तथा समाज-कल्याण प्रमुख रहता है।

1.5.3 मौलिकता

फीचर लेखन की प्रमुख विशेषताओं में मौलिकता का विशेष स्थान है। एक ही विषय पर बहुत से पत्र-पत्रिकाओं में अनेक फीचर लिखे जाते हैं किन्तु उनमें से कुछ या दो-एक फीचर ही अपनी मौलिक पहचान बनाने में सफल होते हैं। यह मौलिकता विषय संबंधी तथ्यों की खोज-बीन, जाँच-पड़ताल तथा परख-विश्लेषण से लेकर उसकी प्रस्तुति तक विद्यमान रहती है। लेखक का अंदाज, उसके दृष्टिकोण एवं अभिव्यक्ति का वैशिष्ट्य ही

उसे रेखांकित कर भीड़ से अलग कर देता है। विवेच्य बिन्दु को अपनी एक खास शैली में ढालकर विवेचित करना तथा पूर्व-प्रचलित धारणाओं की नए-नए तथ्यों एवं जानकारियों के परिप्रेक्ष्य में परीक्षा करना फीचर-लेखक की मौलिकता का परिचायक बनता है। यह मौलिकता तथ्य संबंधी भी हो सकती है और विषय की प्रस्तुति संबंधी भी। यह मौलिकता कल्पना की उड़ान में भी देखी जा सकती है तो श्रम-साध्य खोज-बीन में भी। चित्र प्रस्तुति में भी और साक्षात्कार आदि तथ्यों के संग्रह में भी। अतः मौलिकता के अभाव में फीचर को पल्लव विहीन वृक्ष ही समझा जा सकता है।

1.5.4 विश्वसनीयता

किसी भी तरह के फीचर-लेखन से पूर्व लेखक को यह भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि वह किन्हीं आधार रहित या अविश्वसनीय सूत्रों के आधार पर तो कोई जानकारी नहीं दे रहा। प्रामाणिकता, विश्वसनीयता एवं दायित्वपूर्ण गंभीरता में फीचर के प्राण होते हैं और इन प्राणों को कल्पना रूपी शरीर में बसाया जाता है। किन्तु कल्पना-आधिक्य अथवा अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन फीचर की गंभीरता को नष्ट कर हास्यास्पद तो बनाता ही है साथ ही फीचर-लेखक की प्रतिष्ठा को भी कलंकित करता है। फीचर-लेखन में कल्पना का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है किन्तु अगर उसमें तथ्यों को इस कदर तोड़ा मरोड़ा जाए कि वे अप्रामाणिक लगे अथवा उन पर विश्वास ही न हो तो पाठक उसमें रूचि भी नहीं लेगा। सभी प्रामाणिक सूचनाओं, जानकारियों, संदर्भों एवं तथ्यों को इस रूप में प्रस्तुत करना चाहिए कि उसकी यथार्थता पर संदेह न हो तथा जिस संदर्भ-विशेष पर जितना बल अपेक्षित हो, उस पर उतना बल भी दिया जा सके।

1.5.5 सुसम्बद्धता

सुसम्बद्धता एक प्रकार से विषय को व्यवस्थित कर आदि से अंत तक उसमें गति, प्रवाह एवं तारतम्यता जगाए रखने वाली एक विशेषता है जिसके अभाव में फीचर बिखर सा जाता है। भाव, विचार, घटना एवं उद्देश्य की असम्बद्धता से कथ्य स्पष्ट नहीं हो पाता तथा वह किसी टूटी हुई माला के बिखरे हुए मोतियों सा जान पड़ता है। प्रत्येक बात को उसके महत्व एवं स्थान के अनुरूप एक क्रम देते हुए उदाहरण, प्रमाण एवं चित्रादि तथ्यों को यथा स्थान रखना अत्यंत आवश्यक होता है। सन्-सम्वत् या तिथि-तारीखों का प्रामाणिक प्रयोग, अनुच्छेदों का उपयुक्त विभाजन तथा विचारों एवं भावों की तारतम्यता फीचर को उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक बनाते हैं।

1.5.6 सटीक शीर्षक

फीचर के प्रति रुचि बनाने, ध्यान आकर्षण करने एवं फीचर की मूल-चेतना को स्पष्ट कर देने वाला परिचय-पत्र है फीचर का शीर्षक। वास्तव में शीर्षक में वह सामर्थ्य एवं आकर्षण है जो अपने पाठकों की संख्या उसी प्रकार बढ़ा सकता है जिस प्रकार कोई विक्रय-प्रतिनिधि अपनी दक्षता एवं कार्यकुशलता से अपनी कम्पनी के व्यवसाय को बढ़ाता है। शीर्षक देखते ही पाठक के भीतर उसे तत्काल पढ़ने और पूरे घटना-विवरण को आमूल जानने की उत्कट-इच्छा होनी चाहिए।

शीर्षक अत्यंत सटीक, उपयुक्त, सारगर्भित एवं संक्षिप्त होना चाहिए। शीर्षक एक तरह से पूरे फीचर का प्रतिबिम्ब होता है। पूरे संदर्भ के केंद्रीय भाव को हृदयंगम करने वाला शीर्षक फीचर में चार चाँद लगा देता है। कई बार तो शीर्षक के कारण ही फीचर की लोकप्रियता पंख लगा कर उड़ने लगती है। फीचर का शीर्षक विषयानुरूप व्यंग्यात्मक, सारात्मक, परिचयात्मक अथवा भावात्मक भी हो सकता है। अतः फीचर लेखन में शीर्षक का महत्व शीर्षस्थ होता है।

1.5.7 भाषा लालित्य एवं उन्मुक्त शैली

फीचर का लक्ष्य होता है कथ्य को रुचिकर ढंग से पल्लवित करते हुए पाठक को आनन्दित करना और उसका ज्ञानवर्द्धन करना। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए फीचर की भाषा का ललित होना नितांत आवश्यक है। गद्य भाषा में लालित्य का सम्मिश्रण हो तो वह किसी भी विषय को रोचक बना सकता है। फीचर में विषय एवं संदर्भ-वैविध्य तो होता ही है और फीचर लेखक तो यों भी भाषा एवं भाव-ग्रहण की दृष्टि से समाज का ही मुखापेक्षी होता है। उसके फीचर लेखन की प्रेरणा भी समाज ही है और उद्देश्य भी समाज ही। भाषा के

समसामयिक मुहावरे तथा स्थिति संदर्भ ही उसे रोचक एवं सहज ग्राह्य बनाते हैं। इसी प्रकार शैली की उन्मुक्तता से भी फीचर में प्रभावित करने की क्षमता बढ़ती है। विषय प्रस्तुति के लिए अपनाई गई भाषा एवं शैली से ही फीचर लेखक की बौद्धिक क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल का भी ज्ञान होता है।

बोध प्रश्न

4) फीचर के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित तत्वों पर पाँच-पाँच पंक्तियाँ लिखिए :

i) परिवेश और फीचर

.....
.....
.....
.....
.....

ii) फीचर की भाषा-शैली

.....
.....
.....
.....
.....

iii) फीचर के प्रेरक तत्व

.....
.....
.....
.....
.....

5) निम्नलिखित प्रश्नों में से कुछ सही और कुछ गलत हैं। उपयुक्त चिह्न लगाइए।

i) फीचर लेखक को पूर्वग्रह से मुक्त होकर वस्तुतथ्यात्मक वर्णन करना चाहिए। ( )

ii) परिवेश एवं पृष्ठभूमि का वर्णन फीचर को उबाऊ बना देता है। ( )

iii) फीचर में लेखक का दृष्टिकोण सदैव प्रधान होता है। ( )

iv) फीचर-लेखक को विषय की स्थापना पर अधिक बल देते हुए अपने उद्देश्य की की प्राप्ति करनी चाहिए। ( )

v) फीचर में गंभीरता और रोचकता का महत्व तो है किन्तु विश्वसनीयता और तथ्यात्मकता का नहीं। ( )

1.6 फीचर के प्रकार

फीचर क्या है, उसकी परिभाषा, स्वरूप, अभिप्राय उसके विभिन्न पक्ष तथा विशेषताओं आदि की जानकारी हासिल करने के बाद फीचर के प्रकार जान लेना भी जरूरी है। फीचर

कई प्रकार के होते हैं। अलग-अलग स्थिति, संदर्भ, क्षेत्र, विषय, शैली, माध्यम, वर्ग आदि के आधार पर लिखे जाने वाले ये फीचर अपने वैविध्य के कारण बहुत से भागों में बाँटे जा सकते हैं। यों मोटे तौर पर देखें तो कह सकते हैं कि फीचर दृश्य, श्रव्य एवं पाठ्य होते हैं। अर्थात् हम कानों के जरिए किसी चर्चा-परिचर्चा या वार्ता आदि को रेडियो पर सुन सकते हैं। इसी प्रकार टेलीविजन पर इन्हें देख भी सकते हैं और पत्र-पत्रिकाओं में इन्हें पढ़ सकते हैं। इसके अतिरिक्त भी फीचर के प्रकारों को अन्य कई आधारों पर देखा-समझा जा सकता है। यहाँ हम सुविधा की दृष्टि से फीचर के विविध प्रकारों को स्पष्ट करने के लिए पाँच भागों में बाँट कर देखेंगे। इन पाँच प्रकारों को फीचर के विषय के आधार पर, वर्ग के आधार पर, प्रकाशन के आधार पर, शैली के आधार पर तथा माध्यम के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

1.6.1 विषय के आधार पर

विषय के आधार पर फीचर को बहुत से रूपों में देखा या बाँटा जा सकता है। फीचर के विषय—सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक या सांस्कृतिक आदि भी हो सकते हैं तो शैक्षिक, आर्थिक, खेल-कूद, पर्यटन संबंधी भी। इसी प्रकार वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रौद्योगिकी संबंधी या धर्म, कानून, कला, प्रदर्शनी, तीज-त्यौहार, रहन-सहन, वन्य जीवन, जीव-जन्तु आदि अनेक विषयों पर भी फीचर लिखे जा सकते हैं। अतः इस आधार पर फीचर के प्रकारों को बहुत व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है।

1.6.2 वर्ग के आधार पर

वर्ग के आधार पर भी फीचर कई प्रकार के हो सकते हैं। इन प्रकारों में—बाल वर्ग, महिला वर्ग, पुरुष वर्ग, वृद्ध-समाज-वर्ग, युवा वर्ग तथा विकलांग आदि वर्ग देखे जा सकते हैं तो इसी प्रकार मजदूर वर्ग, व्यापारी वर्ग, शिक्षक वर्ग, सैनिक या रक्षक वर्ग, आदि विभाजन भी किए जा सकते हैं। इन वर्गों को समाज, राजनीति, अर्थ संस्कृति तथा देश-विदेश या जाति के आधार पर भी बाँटा जा सकता है।

1.6.3 प्रकाशन के आधार पर

फीचर लेखन को प्रकाशन के आधार पर भी बहुत से भागों में बांटा जा सकता है। फीचर किस पत्र-पत्रिका के लिए लिखा जाना है, इस आधार पर उसे दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक या वार्षिक आदि पत्र-पत्रिकाओं के अनुकूल प्रस्तुत किया जाता है। फीचर धारावाहिक (क्रमशः) भी हो सकते हैं। ये किन्हीं विशेषांकों या पुस्तकों के लिए भी लिखे जाते रहे हैं। इसी आधार पर प्रादेशिक, क्षेत्रीय, अंचलीय, साहित्यिक, आर्थिक, वाणिज्य या देशी-विदेशी पत्रिकाओं के आधार पर भी उसे विभाजित किया जा सकता है।

1.6.4 शैली के आधार पर

शैली, जैसा कि पहले भी बताया गया है व्यक्ति या लेखक की मौलिक पहचान बनाकर उसे वैशिष्ट्य प्रदान करती है। किसी लेखक या व्यक्ति की शैली, भाषा तथा कथ्य की प्रस्तुति अन्य किसी से हू-ब-हू नहीं मिलती। कुछ-न-कुछ वैशिष्ट्य या खास पहचान उसे पृथकता प्रदान करती है। इस आधार पर फीचर लेखक केन्द्र में रहता है। अर्थात् उसी की शैली इसे अलग-अलग प्रकारों में बाँटती है। इस प्रकार के फीचर लेखन में परिचयात्मक, विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, चित्रात्मक, व्यंग्यात्मक, आलोचनात्मक, शोधात्मक आदि कई प्रकार देखे जा सकते हैं। इस शैली विशेष को अपनाने की या चुनने की स्वतंत्रता फीचर लेखक की होती है।

यों तो पत्र-पत्रिकाओं में शैली के इन विभिन्न आधारों पर लिखे गए अलग-अलग फीचर देखने को मिलते ही हैं किन्तु सामान्यतः यह देखा गया है कि अधिकांश पत्र-पत्रिकाओं में तीन प्रकार के फीचर अधिक उपलब्ध होते हैं। ये तीन प्रकार के फीचर हैं—वर्णनात्मक फीचर, चित्रात्मक फीचर और व्याख्यात्मक फीचर। कुछ लेखक इन तीनों प्रकारों के सम्मिश्रण से भी अच्छे एवं सराहनीय फीचर तैयार करते हैं। इस प्रकार के फीचर में वर्णन, चित्रण एवं व्याख्या में परस्पर तालमेल बनाते हुए उसे प्रभावी बनाया जाता है। फीचर की इस प्रभावशीलता एवं मर्मस्पर्शिता के लिए लेखक वर्णन शैली में रोचकता तथा

चित्रण-शैली में ओजस्विता का पूरा ध्यान रखता है। वह विषय को सजीव एवं प्रभावी बनाने के लिए गांभीर्य के साथ शोखी एवं चटकीलेपन का मिश्रण कर देता है। अपने वर्णन के अंदाज को रोचक, मोहक एवं आकर्षक प्रसंगों से सुसज्जित करते हुए ही फीचर लेखक अपने उद्देश्य की प्राप्ति करता है।

1.6.5 माध्यम के आधार पर

फीचर लेखन के प्रकारों को माध्यम के आधार पर विभाजित करने की चर्चा हम इस अंश के प्रारंभ में ही कर चुके हैं। इस आधार पर इन्हें दृश्य, श्रव्य एवं पाठ्य (मुद्रित) आधारों पर बाँटा जा सकता है। अर्थात् फीचर दूरदर्शन, रेडियो तथा पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखे जाते हैं। इन्हें देखा, सुना और पढ़ा जा सकता है। दृश्य फीचरों में फोटो-फीचर या कार्टून फीचर भी देखने को मिलते हैं। फीचर को अन्य विधाओं जैसे फोटो फीचर, या कार्टून फीचर के मिश्रण से कुछ और प्रकारों में भी ढाला जा सकता है किन्तु मुख्यतः यही प्रकार देखने को मिलते हैं।

1.7 फीचर लेखक के गुण

फीचर लेखन अपने आप में एक महत्वपूर्ण सृजनात्मक कला है। इस कलात्मक लेखन की यात्रा जितनी सहज जान पड़ती है, उतनी है नहीं। इस चुनौती भरे कार्य एवं दायित्व के निर्वाह के लिए फीचर लेखक को बहुत से गुणों से संपन्न होना चाहिए। फीचर किसी के भी लिख लेने की विधा नहीं। इस लेखन का अपना एक वैशिष्ट्य है तो इसके लेखक के भी कुछ खास गुण एवं विशेषताएँ हैं। यहाँ हम संक्षेप में उन्हीं की चर्चा करेंगे।

1.7.1 विशेषज्ञता

फीचर लेखक का विषय, क्षेत्र या दिशा विशेष पर अधिकार अत्यंत आवश्यक होता है। जिस विषय पर उसे फीचर लिखना है उस विषय पर उसकी पृष्ठभूमि एवं परिवेश पर उसे गहन, व्यापक एवं ठोस जानकारी तो होनी ही चाहिए साथ ही उस विषय में उसकी रुचि तथा शोध-प्रवृत्ति भी होनी चाहिए। बिना इसकी विशेषज्ञता के वह विषय के साथ न्याय नहीं कर सकेगा और पत्रकारिता जगत में हास्य का कारण भी बन जाएगा। विषय एवं संदर्भ संबंधी ठोस, सुदृढ़ एवं प्रामाणिक आधार ही उसके फीचर लेखन को प्राणवान् बनाते हैं।

1.7.2 अध्ययनशीलता

फीचर लेखक को विषय-विशेषज्ञ होना जितना आवश्यक है उतना ही समसामयिक ऐतिहासिक या अन्य सम्बद्ध सामग्री के लिए अध्ययनशील रहना भी अनिवार्य है। वह जितना ज्यादा अधुनातन एवं मूलभूत संदर्भों से जुड़ा रहेगा उतना ही प्रभावी लेखक बन सकेगा। फीचर में परिपूर्णता, तथ्यात्मकता तथा प्रभावशीलता तभी आ सकेगी जब लेखक बहुज्ञ होता है तथा उसकी प्रतिभा वैविध्यमयी दृष्टि से सम्पन्न होती है। निरंतर अध्ययन, अधिक से अधिक जानने-समझने की लालसा एवं प्रत्येक घटना या संदर्भ के प्रति जागृत रहने वाली जिज्ञासा ही उसे अच्छा फीचर लेखक बनाती है। इसी से उसमें आत्मविश्वास आता है और इसी के आधार पर वह पाठकों का ज्ञानवर्द्धन कर पाता है।

1.7.3 निष्पक्षता या तटस्थता

फीचर लेखक का अपना एक दृष्टिकोण, मंतव्य या उद्देश्य होता है जिसे लेकर वह फीचर लिखता है। किन्तु उसका यह कर्तव्य होता है कि वह अपने निर्णय को अथवा दृष्टिकोण को आरोपित न करे अपितु तटस्थ और निष्पक्ष रहते हुए सभी तथ्यों, प्रमाणों एवं सूचनाओं का सही-सही विश्लेषण करके इस रूप में सामने रख दे कि पाठक स्वयं उससे अर्थ ग्रहण कर ले। उसके तर्कसंगत तथ्य तथा विश्वास पैदा करने वाले प्रमाण ही उसके दृष्टिकोण को स्पष्ट कर देते हैं। अतः उसे मुखर होकर किसी की भी अच्छाई या बुराई का रुख नहीं अपनाना चाहिए। और अगर कुछ कटु सत्यों को वह उभार रहा है तो व्यक्तिगत विचारों की सीधी प्रस्तुति न करके प्रामाणिक तथ्यों से उसे अभिव्यक्त करना चाहिए। हालांकि यह अत्यंत जोखिम का कार्य है लेकिन इसी में लेखक का वैशिष्ट्य देखने को मिलता है।

1.7.4 पूर्वग्रह-मुक्तता

फीचर लेखक को अपनी बात रखते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह किसी पूर्वग्रह से ग्रस्त तो नहीं। फीचर लेखक को किसी जाति, समुदाय, भाषा या संप्रदाय आदि के प्रति पूर्वग्रह लेकर नहीं चलना चाहिए। इस तरह की धारणाएँ लेखक को भ्रमित और पथ-भ्रष्ट ही करती हैं। फीचर की गंभीरता तो इससे नष्ट होती ही है उसका दायित्व बोध भी कलंकित हो जाता है। अतः फीचर लेखक को अपने सभी पूर्वग्रह तज कर पूर्णतः तटस्थ रहते हुए फीचर लिखना चाहिए। फीचर लेखक का समाज के प्रति एक गंभीर दायित्व होता है। उसकी गलत या लापरवाहीपूर्ण सूचना से सामाजिक या राष्ट्रीय स्तर पर भी समस्या पैदा हो सकती है।

1.7.5 सौद्देश्यता

प्रत्येक फीचर लेखक को एक सुनिश्चित उद्देश्य लेकर ही विषय का चयन करना चाहिए। उसका प्रथम उद्देश्य तो समाज और राष्ट्र का हित ही होता है। साथ ही वह इस लेखन के माध्यम से पूर्व प्रकाशित गलत धारणाओं को निर्मूल साबित करते हुए नई स्थापनाएँ करता है। सामाजिक दोष, भ्रष्टाचार,अनैतिकता आदि के विरुद्ध वह आवाज बुलन्द करता है तथा समाज को एक प्रशस्त राह दिखाता है।

1.7.6 भाषिक दक्षता

फीचर लेखक जिस भाषा में लेखन करता है उस भाषा पर उसका पूरा अधिकार तथा शैली उन्मुक्त होनी चाहिए। शिष्ट शब्दावली में चित्रात्मक भाषा द्वारा वह अपने विषय को अत्यंत मार्मिक एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर पाठक वर्ग के हृदय को मोह सकता है। उसकी भाषा व्यक्तिगत आक्षेपों से मुक्त तथा संयत होनी चाहिए। कटुता अथवा दो अर्थ देने वाले शब्दों से बचते हुए सीधे-सहज रूप में विषय को स्पष्ट करना ही फीचर-लेखन का महान गुण है। अपेक्षानुसार विषय एवं परिवेश की भाषा का अध्ययन भी उसके लिए कभी-कभी आवश्यक होता है एकाधिक भाषाओं का ज्ञान उसके लिए सहायक है तो लेखन की भाषा पर अधिकार एवं दक्षता भी अनिवार्य है।

बोध प्रश्न

6) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर तीन-तीन पंक्तियों में दीजिए :

i) विषय के आधार पर फीचर के प्रकार

.....

.....

.....

ii) शैली के आधार पर फीचर के प्रकार

.....

.....

.....

iii) फीचर लेखक के कोई तीन गुण

.....

.....

.....

अभ्यास

2) "पानी के नाम पर बिकता जहर" फीचर में उठाई गई सामाजिक समस्या क्या है? आठ-दस पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.8 सारांश

- इस समग्र इकाई के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि फीचर पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण अंग है और हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। पत्र-पत्रिकाओं के सामाजिक दायित्व एवं उनकी कार्य-पद्धति का परिचय भी हमें मिला।
- फीचर का अर्थ तथा महत्व की जानकारी भी हमें मिल सकी।
- फीचर के वे तत्व जिनके मिश्रण से उसकी निर्मिति होती है उनका परिचय हमें मिला। प्रेरक तत्व एवं विषय, परिवेश, आधार-सामग्री, लेखकीय दृष्टिकोण तथा भाषा और शैली का संयोग ही उसे इस रूप में हमारे सामने लाता है।
- यह भी स्पष्ट हुआ कि फीचर मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक, दिशा-निर्देशक एवं सामाजिक दायित्व निभाने वाली वह गंभीर विधा है जो रोचक होती है और उन्हें सोद्देश्य ही लिखा जाता है। सहज, सरल, संक्षिप्त, मौलिक, विश्वसनीय, सुसम्बद्ध तथा लालित्यमय भाषा-शैली में लिखे गए फीचर ही अपनी एक खास पहचान बनाते हैं।
- फीचर के कई प्रकार होते हैं और उन्हें कई आधारों पर विभाजित किया जा सकता है इसकी जानकारी भी हमें मिली।
- अंत में, हमने फीचर जैसी विशिष्ट-विधा के लेखक की विशेषज्ञता, अध्ययनशीलता, निष्पक्षता, पूर्वग्रह-मुक्तता, सौद्देश्यता तथा भाषिक दक्षता जैसे विशिष्ट गुणों के विषय में भी जानकारी हासिल की।

1.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) i) तथ्यात्मकता ii) दिमाग परेशान iii) मोहित iv) सामाजिक दायित्व पूरा
v) उत्तरदायित्व

2) i) देखिए उपभाग 1.2.1
   ii) देखिए उपभाग 1.2.2

3) i) देखिए उपभाग 1.3.1
   ii) देखिए भाग 1.3

4) i) देखिए उपभाग 1.4.2
   ii) देखिए उपभाग 1.4.5
   iii) देखिए उपभाग 1.4.1

5) i) ✓ ii) ✗ iii) ✗ iv) ✓ v) ✗

6) i) देखिए उपभाग 1.6.1
   ii) देखिए उपभाग 1.6.4
   iii) देखिए भाग 1.7 .7

अभ्यास

1 एवं 2 फीचर का अध्ययन कर स्वयं लिखने का प्रयास कीजिए।

इकाई 2 फीचर लेखन की विशिष्टताएँ

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य
2.1 प्रस्तावना
2.2 फीचर लेखन-प्रक्रिया का वैशिष्ट्य
  2.2.1 विषय या घटना से परिचय
  2.2.2 अनुभूति-यात्रा
  2.2.3 चिंतन-मनन
  2.2.4 अपेक्षित शोध
  2.2.5 यात्रा एवं साक्षात्कार
  2.2.6 तथ्य एवं फोटो संग्रह
  2.2.7 विषय-व्यवस्था एवं प्रस्तुति
2.3 फीचर लेखन के नियम
  2.3.1 प्रमाण बिना कुछ न लिखना
  2.3.2 निष्पक्ष विश्लेषण करना
  2.3.3 निर्णयात्मकता से बचना
  2.3.4 सामाजिक हित को सर्वोपरि रखना
  2.3.5 व्यक्तिगत आक्षेपों से बचना
  2.3.6 आदर्श भाषा और शिष्ट शैली का प्रयोग
2.4 फीचर लेखन के लाभ
  2.4.1 ज्ञानवर्द्धन
  2.4.2 आत्म विस्तार
  2.4.3 प्रतिष्ठा
  2.4.4 अर्थ लाभ
2.5 फीचर एवं अन्य विधाएँ
  2.5.1 फीचर और समाचार
  2.5.2 फीचर और लेख
  2.5.3 फीचर और रिपोर्ताज
2.6 फीचर लेखन का वैशिष्ट्य
2.7 सारांश
2.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

फीचर लेखन की विशिष्टताओं को केन्द्र में रखकर चलने वाली इस इकाई के अध्ययन से आप–

- फीचर लेखन-प्रक्रिया के वैशिष्ट्य का उल्लेख करते हुए, उसकी पूरी लेखन-यात्रा के विविध चरणों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- फीचर-लेखन के लिए अपेक्षित विविध नियमों की जानकारी प्राप्त करते हुए आवश्यक सावधानियों का वर्णन कर सकेंगे;
- फीचर लेखन से होने वाले आर्थिक, वैचारिक एवं आत्म-प्रसार जैसे विविध लाभों का उल्लेख कर सकेंगे;
- फीचर एवं समाचार, लेख, रिपोर्ताज तथा निबन्ध आदि अन्य विधाओं के अंतर को बता सकेंगे; तथा
- फीचर लेखन के वैशिष्ट्य का उल्लेख कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन की यह दूसरी इकाई है। इसमें फीचर लेखन की विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए अलग-अलग संदर्भों एवं पक्षों की विवेचना की जा रही है। इससे पूर्व आप एक

इकाई का अध्ययन कर चुके हैं जिसमें आपने फीचर लेखन के अर्थ, महत्व एवं स्वरूप के विषय में जानकारी हासिल की। फीचर के विभिन्न पक्ष, उसकी विविध विशेषताओं और प्रकारों की चर्चा भी वहाँ की जा चुकी है। उसी इकाई में आपने फीचर लेखक के गुणों का विश्लेषण भी किया है। इस इकाई में विशिष्टताओं की चर्चा करते हुए विशेषतः इस बात को ध्यान में रखा गया है कि फीचर लेखन की यात्रा तय करने वाले लेखक की प्रक्रिया अन्य लेखन-प्रक्रियाओं से कैसे और क्यों भिन्न है? यह भिन्नता उनसे विशिष्ट है तो कैसे? इस प्रक्रिया में उसे किन-किन चरणों से और कैसे-कैसे गुजरना पड़ता है। इस वैशिष्ट्य भरी यात्रा के सम्पन्न होने पर ही वह फीचर की प्रस्तुति तक पहुँचता है। इसके अतिरिक्त फीचर लेखन के नियम एवं सावधानियों पर भी प्रकाश डाला गया है। पहली इकाई में आपने फीचर लेखक के गुणों का विश्लेषण किया था किन्तु यहाँ उससे भिन्न पक्ष है जिसमें फीचर-लेखन के नियम, उसकी सीमाएँ तथा उसको लिखते समय ध्यान रखी जानें वाली सावधानियों का वर्णन किया गया है।

इसी विवेचन के साथ फीचर-लेखन के विविध लाभों की चर्चा भी की गई है। फीचर लेखन से लेखक एवं पाठक दोनों को ही कई तरह के लाभ होते हैं। इसके साथ-साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समाज और राष्ट्र को भी लाभ होता है। इसकी चर्चा करते हुए इकाई के अंत में फीचर से समाचार, लेख, रिपोर्ताज एवं निबंध आदि विधाओं का अंतर स्पष्ट किया गया है। अतः फीचर लेखन संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी का यह दूसरा चरण है जिसमें उसके विशिष्ट रूप को रेखांकित करते हुए प्रकाश में लाने का प्रयास रहा है। इस इकाई के अध्ययन से आप फीचर-लेखन के एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष का गंभीर विश्लेषण करने में सफल हो सकेंगे।

2.2 फीचर लेखन-प्रक्रिया का वैशिष्ट्य

फीचर लेखन की सफलता जैसा कि स्पष्ट हो चुका है सुनने, देखने तथा अनुभवों और नयी-नयी खोजों पर निर्भर करती है। फीचर लेखक फीचर जैसी विशिष्ट विधा के लेखन के लिए विषय-विशेष या घटना-विशेष के व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक पक्षों का खूब अच्छी तरह से अनुभव करके ही अपनी यात्रा प्रारंभ करता है। यों तो लेखन-प्रक्रिया प्रत्येक विधा की कुछ-न-कुछ होती ही है किन्तु समाचार, निबंध, रिपोर्ट, लेख या अन्य विधाओं से भिन्न शोधात्मक तत्वों-तथ्यों से सुशोभित इस विधा में "कुछ और ही" सौन्दर्य तथा आकर्षण होता है। यही ज्ञानवर्द्धक, रोचक तथा प्रभावित करने वाला आकर्षण इसे इन सब विधाओं से पृथक और विशिष्ट पहचान देता है। इस वैशिष्ट्य भरी लेखन-प्रक्रिया में फीचर लेखक को समर्पित होकर अपना महत्वपूर्ण तथा गंभीर दायित्व, निभाना पड़ता है। किसी भिक्षुक पर फीचर लिखना हो तो लेखक के लिए बहुत-सी बातें जानना अनिवार्य हो जाता है जैसे, उससे एवं उस वर्ग से व्यक्तिगत तौर पर जुड़ना, उसे समझना, उसकी वेदना एवं पीड़ा भरी जीवन-यात्रा को अनुभव के धरातल पर लाना, उसके प्रति स्वाभाविक सहानुभूति उद्वेलित करते हुए भीतर उतर कर ऐसी भावसिक्त एवं रोमांचकारी जानकारी प्रस्तुत करना, जो अपने आप में अद्वितीय हो, रोचक हो तथा पाठक वर्ग के हृदय तक सहज ही उतर जाए। वास्तव में फीचर लेखन आकर्षक एवं रोचक होने से जितना सहज जान पड़ता है उतना है नहीं। इस जोखिम भरे गंभीर कार्य की प्रक्रिया अत्यंत परिश्रम, साध्य तथा कठिन-प्रक्रिया है। हृदय एवं मस्तिष्क का संतुलन ही इस विधा को प्रभावी बनाता है। घटनाओं एवं स्थितियों की विश्वसनीय एवं तथ्यात्मक सामग्री को कल्पना के धागे में पिरोकर प्रस्तुत करने पर ही इसमें रोचकता की गंध आती है। यों वैशिष्ट्य विषय-चयन का भी होता है तथा प्रस्तुति अर्थात् शैली का भी। विषय-चयन की विशिष्टता का विवेचन हम अगली इकाई में करेंगे। रही बात शैली के वैशिष्ट्य की, तो यह तो सर्वविदित ही है कि प्रत्येक लेखक की अपनी एक खास शैली या लेखन-पद्धति होती है। किन्तु फीचर के लिए जो अन्य महत्वपूर्ण बात ध्यान रखने योग्य है, वह है शैली को "टाइप्ड" होने से बचाना। अर्थात् फीचर लेखक को विषय की गंभीरता एवं उपयोगिता के अनुकूल ही भाषा-शैली भी प्रयुक्त करनी होती है। बार-बार के प्रयोग से शैली रूढ़ हो जाती है और यही नहीं, कई बार एक ही सामयिक विषय पर बहुत से लोग फीचर लिखते हैं तो उसकी प्रस्तुति एवं विषय विवेचन भी एक-सा लगने लगता है। अतः फीचर लेखक को इस दिशा में भी वैविध्य एवं वैशिष्ट्य बनाये रखना होता है।

इस समग्र प्रक्रिया के वैशिष्ट्य की परख एवं समीक्षा करने के लिए ही अब हम फीचर लेखक के आरंभिक बिन्दु (आधारशिला) से लेकर चरम बिन्दु (शिखर) तक की पूरी यात्रा का विवेचन करेंगे। यहाँ इस यात्रा के विभिन्न पड़ाव-बिन्दुओं पर अलग-अलग चर्चा आवश्यक है।

2.2.1 विषय या घटना से परिचय

फीचर के प्रमुख आधारों में कारण, घटना या स्थिति-विशेष का एक खास महत्व है। फीचर लेखक को बहुत सोच-समझ कर अपने फीचर के विषय या क्षेत्र का निर्धारण करना पड़ता है। यों फीचर के लिए घटना-दुर्घटना, शिकायत, आचरण, दंगा, विवाद, नीति, स्थिति, वर्ग अथवा कुछ और भी आधार हो सकते हैं जिनके मूल तक पहुँच कर लेखक को आद्यन्त जानकारी हासिल करनी होती है। लेखक सर्वप्रथम यह देखता है कि समाज के ध्यान को केन्द्रित अथवा आकर्षित करने वाले किसी भी कारण का आधार और स्वरूप क्या है? उसकी मूलभूत चेतना और संवेदना क्या है? समाज का ध्यान उसकी ओर क्यों आकर्षित हो रहा है? लेखक उस घटना-विशेष के संबंध में पूरी जानकारी एकत्रित करता है और विषय की तह तक पहुँच कर अपने भीतर कोई निर्णय लेने की सोचता है। विषय या घटना संबंधी जानकारी हासिल करने के लिए उसका गहन अध्ययन करते हुए ही उसे फीचर लेखन का विषय बनाने का निर्णय लेना पड़ता है। सही और गलत अथवा उचित या अनुचित का बोध जब हो जाता है तभी लेखक की प्रतिभा उस घटना या स्थिति को विषय बनाने की प्रेरणा देती है। इसके द्वारा ही वह समाज और पाठक वर्ग की रुचि को ध्यान में रखकर आगे बढ़ता है।

इकाई एक में आपने 'पानी के नाम पर बिकता जहर' नामक फीचर का अध्ययन किया है। हो सकता है फीचर लेखक ने यह समाचार किसी पत्र-पत्रिका में पढ़ा हो या जगह-जगह बिक रहे पानी के रंग-ढंग को देखकर ही उसने बाज़ार में सर्वेक्षण कर विषय से गहन-परिचय बनाया हो। इस प्रारम्भिक जानकारी को हासिल करने के बाद ही फीचर लेखक ने आगे कदम बढ़ाने का अर्थात् फीचर लिखने का फैसला किया होगा। एक अन्य उदाहरण से इसे और स्पष्ट कर सकते हैं। मंडल आयोग की रिपोर्ट के कारण उत्पन्न आंदोलन अत्यंत सनसनीखेज और चिंतनीय बन गया था। इसको लेकर लिखे जाने वाले फीचर में फीचर लेखक को सर्वप्रथम इससे पूरी तरह परिचय स्थापित करना होगा। अखबार या पत्रिका, रेडियो या टी.वी. अथवा साक्षात्कार एवं चित्र आदि के द्वारा पूरा जायजा लेकर अपेक्षित सामग्री जुटानी होगी। तभी वह फीचर लेखन के लिए अग्रसर हो सकेगा। अतः विषय का घटना से परिचय होना अत्यंत आवश्यक है। सुनी-सुनाई बात या घटना पर फीचर नहीं लिखा जाना चाहिए अन्यथा उसकी प्रामाणिकता पर प्रश्नचिह्न लग सकता है।

2.2.2 अनुभूति-यात्रा

विषय से साक्षात्कार तथा गहन अध्ययन कर लेने पर लेखक उसे अनुभूति के स्तर पर जीता है। फीचर लेखक भी अन्य लेखकों की तरह सामाजिक दायित्व का निर्वाह करता है किन्तु फीचर लेखक का दायित्व कहीं बड़ा तथा सामाजिक एवं जोखिम भरा होता है। फीचर लेखक समाज की ही किसी घटना, स्थिति का प्रतिबिम्ब उभार कर प्रस्तुत करता है। इसके लिए वह घटना या स्थिति को हृदय-संसार में उतार कर भीतर की यात्रा से। उसके सत्य-असत्य तथा हानि-लाभ का जायजा लेता है। वह उस घटना या स्थिति को अपने स्तर पर जीकर उसके प्रभाव आदि का अनुभव करता है। इसी अनुभव से वह घटना या स्थिति के मूलभूत सत्य तक पहुँचने की यात्रा करता है। यही उसकी अनुभूति-यात्रा है। जैसे प्रथम इकाई में दिये गये फीचर 'पानी के नाम पर बिकता जहर' में लेखक यह अनुभव करे कि सड़कों पर बिकने वाले दूषित तथा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहे पानी से जो समाज अस्वस्थ हो रहा है उसके प्रति चिंतित होना उसका दायित्व है। स्व और पर का भेद भुलाकर वह उस घटना को आप बीती मानता है या उस पानी के कारण फैलने वाली बीमारी के शिकार हो रहे लोगों के प्रति वह अपने कर्तव्य-बोध को जागृत करता है। इसी कारण वह समाज तथा प्रशासन के ध्यान को आकर्षित कर फीचर द्वारा यह चेतना फैलाता है।

वास्तव में फीचर-लेखक किसी भी आधारभूत सामग्री को अपने अनुभव क्षेत्र में ले जाकर विचार और भावना के ताप से तपा कर निखारता और संवारता है। वह व्यक्ति, समाज

और राष्ट्र के भूत, वर्तमान एवम् भविष्य को केन्द्र में रखकर हित-अहित एवं नैतिक-अनैतिक पर विचार करता है और उसे अनुभूति की यात्रा से संवेदनशील, विश्वसनीय एवं प्रभावकारी बनाता है।

2.2.3 चिंतन-मनन

फीचर लेखक भी एक सामाजिक प्राणी होता है। वह समाज में घट रही अनेकों घटनाओं एवं स्थितियों को देखता है और अनुभूत करता है। किन्तु प्रत्येक घटना उतनी ही सशक्त एवं प्रेरक नहीं बनती या होती जितनी की कुछ खास घटनाएँ। इसमें फीचर लेखक का निजी दृष्टिकोण तथा उसकी विचारभूमि भी कारण होती है लेकिन चिंतन एवं मनन के धरातल पर वह घटना और स्थिति की ताकत को पहचानने का प्रयास करता है। उसकी क्रिया-प्रतिक्रिया के परिप्रेक्ष्य में वह समाज एवं राष्ट्र पर होने वाले प्रभाव या दुष्प्रभावों को देखने का प्रयास करता है। इसे ही औचित्य एवं अनौचित्य का बोध भी कहते हैं। प्रत्येक घटना को फीचर का विषय बनाया भी नहीं जा सकता। फीचर का विषय बन रही घटना का मूल मंतव्य क्या है? इसका कथ्य किस औचित्य या अनौचित्य की ओर संकेत कर रहा है? लेखक किस विचार-बिंन्दु को सामने रखना चाहता है? इसी प्रकार के अनेक प्रश्न तथा संदर्भ लेखक को अपने स्तर पर झकझोरते हैं। वह किसी विषय को फीचर लेखन के लिए चुनता भी है तो काफी हद तक वह विषय ही उसे एक सौद्देश्य-दिशा में बाध्य करते हुए सृजन की प्रेरणा देता है।

यहाँ एक फीचर "विकलांगों के नाम सर्वांगों की चांदी" आपके अध्ययन के लिए प्रस्तुत है। इस फीचर में लेखक ने दिन-प्रतिदिन बढ़ रही विकलांगों की संख्या, उनके प्रति हो रही लापरवाही, प्रशासन की तटस्थ अथवा कतिपय संस्थाओं में अमीर-गरीब विकलांगों के प्रति हो रहे पक्षपात कितने ही ऐसे पक्ष हैं जिन्होंने लेखक को वैचारिक एवं हार्दिक धरातल पर उधेड़-बुन में डाला होगा। विकलांगों की आवश्यकता, उनकी सुविधा-असुविधा, उनके प्रति सामाजिक एवं प्रशासनिक दायित्व, उनके नाम पर हो रही लूट–कितने ही ऐसे प्रश्न और मुद्दे हैं जिनके औचित्य-अनौचित्य एवं नैतिक-अनैतिक पक्षों को लेखक ने चिंतन-मनन के पश्चात् इसमें उभारा है। इस वैचारिक-मंथन के कारण ही लेखक अपना दृष्टिकोण बना सका और उसने प्रत्यक्षतः कुछ न कहकर भी सब कुछ कह दिया। पूरी स्थिति का एक ऐसा ब्यौरा प्रस्तुत किया कि समाज और प्रशासन को इस सामाजिक-अन्याय के प्रति सोचने पर मजबूर किया। अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए लेखक ने एक यथार्थ, तथ्यात्मक तथा **हृदयद्रावक तस्वीर को समाज के सामने उधेड़ कर रख दिया। फीचर** प्रस्तुत है–

विकलांगों का नाम सर्वांगों की चांदी
(संजय झा)

देश में विकलांगों की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। बोझ बनी जिन्दगी को घसीटना उनकी नियति बना दी गयी है। सामाजिक रूप से बहिष्कृत उन विकलांगों की माली हालत तो और भी खराब है जो कुष्ठ रोग से प्रभावित हैं। कभी विकलांगों की समस्याओं की बात चलती है, तब उसे सतही तौर पर बनी कुछ योजनाओं के मकड़जाल में उलझाकर बुनियादी सवाल को धता बता दिया जाता है। विकलांगों के नाम पर फर्जी फैशन से लेकर उनकी सुविधाओं को हजम कर लेने वाले गिरोह प्रायः हर राज्य में सक्रिय हैं। गाँव और शहर के विकलांगों के बीच एक किस्म की सरकारी व अनुदान प्राप्त स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा खींची गयी विभाजक रेखा सबसे शर्मनाक पहलू है। हैरत की बात तो यह है कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति के तहत विकलांगता की रोकथाम के परिणाम ढाक के तीन पात ही साबित हो रहे हैं। सामान्यतः शहरों की तुलना में गांवों में विकलांगों की संख्या सबसे अधिक है, परन्तु ठीक ढंग से इस ओर कार्य करने वाली मशीनरी का नितान्त अभाव बना हुआ है। एक अनुमान के अनुसार इस समय पूरे देश में विकलांगों की कुल संख्या एक करोड़ 80 लाख है। दिन-प्रतिदिन विकलांगों की गहराती समस्याएँ भयावह होती जा रही हैं।

समाज विज्ञान संस्थान द्वारा देश में, खासतौर से आंध्र प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, तमिलनाडु तथा पश्चिम बंगाल में विकलांगों की स्थिति पर किये गये सर्वे ही काफी चौंकाने वाले तथ्य सामने लाते हैं। 1981 की जनगणना के आधार पर देश में 54 लाख 30 हजार लोग शारीरिक अपंगता से पीड़ित हैं। नेत्रहीन 34 लाख 70 हजार हैं। 27 लाख 50 हजार मूक बधिर, 6 लाख 20 हजार मानसिक रूप से बाधित और 32 लाख कुष्ठ रोग से प्रभावित हैं। इसमें सन्देह नहीं कि दस वर्ष में इन आँकड़ों में काफी इजाफा हुआ है। गौरतलब बात यह है कि बिहार को छोड़कर सभी राज्यों में सरकारी संस्थाओं की अपेक्षा गैर सरकारी संस्थाओं की संख्या अधिक है। सर्वे के दौरान पता चला है कि बचपन में विकलांगता के शिकार शहरों की अपेक्षा गाँवों में अधिक होते हैं। इसके विपरीत कुछ अधिक उम्र में विकलांग होने के मामले गाँवों की बजाय शहरों में अधिक हैं। गाँवों में विकलांगों की संख्या ज्यादा होने के कई कारण हैं, जिसमें कुपोषण, भुखमरी, गरीबी, उचित इलाज का न होना

ही प्रमुख कारण माना जा सकता है। महिलाओं की तुलना में पुरुष विकलांगों की संख्या अधिक है। लेकिन नेत्रहीनता के मामले में औसतन पाँच नेत्रहीनों में तीन महिलाएँ होती हैं।

मूक व बधिरों में 30 प्रतिशत तो जन्मजात विकलांग होते हैं। इसके अलावा 70 प्रतिशत बचपन से ही गूंगे हो जाते हैं। देश के पहाड़ी इलाकों व नदी घाटियों के निचले हिस्से, मसलन पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग, जालपाईगुडी व कूचबिहार में मूक बधिर होने के मामले अधिक देखने में आते हैं। आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु में कोढ़ के कारण होने वाली विकलांगता ज्यादा है। वैसे पश्चिम बंगाल और बिहार के पठारों में भी इस प्रकार के मामले अधिक होते हैं। सबसे हैरतअंगेज बात तो यह है कि देश में मानसिक विकलांगों की कुल संख्या मालूम करने के लिए आज तक कोई व्यवस्था नहीं है। सर्वे के दौरान ही स्पष्ट हुआ है कि हाथ-पाँव से विकलांग, नेत्रहीनों तथा मूक बधिरों में आधे लोग ऐसे हैं जिन्होंने कभी डॉक्टर का मुँह नहीं देखा। बुढ़ापे में आयी विकलांगताओं को तो शुमार ही नहीं किया जाता। इस उम्र में अंधेपन का मर्ज अधिक बढ़ता है। इसे दूर करने के लिए लगाये गये बहुत कम शिविर सफल हो पाते हैं। प्रायः इस तरह के शिविर सनसनीखेज खबरों के गवाह बनते हैं कि, आँख के ऑपरेशन से दस व्यक्ति अंधे हो गये। सच तो यह है कि चिकित्सा सुविधा उन्हीं को मिलती है जो पैसा खर्च करने में सक्षम हैं, गरीब-गुरबे तो सुविधाओं से वंचित ही रहते हैं।

विकलांगों को मिलने वाली सुविधाओं का आलम यह है कि सभी राज्यों में चलने वाली अधिसंख्य संस्थाएँ राजधानियों तथा अन्य बड़े शहरों तक ही केन्द्रित हैं। परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्र उपेक्षित रह जाते हैं। जिन राज्यों में समाज विज्ञान संस्थान द्वारा सर्वेक्षण किया गया, उनमें कुछ जिलों में तो विकलांगों की देखभाल तथा प्राथमिक उपचार तक के लिए कोई सुविधा नहीं है। विकलांगों की सहायता करने वाले स्वयंसेवी संगठनों द्वारा देश में लम्बे अरसे से कार्यरत रहने का दावा किया जाता है। इसके लिए सरकार निजी संस्थाओं को वित्तीय सहायता देती है। इसके अलावा गैर-सरकारी संस्थाओं को अन्य कई स्रोतों से धन प्राप्त होता है। दान देने वालों में धार्मिक संगठन, दानी व्यक्ति, धर्मार्थ न्यास, कम्पनियाँ, व्यापारिक घराने तथा कई विदेशी एजेंसियाँ शामिल हैं। काफी निर्ममता से इन गैर-सरकारी संस्थाओं का मूल्यांकन किया जाय, तो कहना होगा कि नौकरशाह, बिचौलिये और संस्थाओं के कर्ताधर्ता विकलांग के नाम पर मिलने वाली राशि का मिलकर बन्दरबाँट करते हैं। सतही तौर पर शहरी क्षेत्र में खास कर महानगरों में इन संस्थाओं की स्थिति बेहतर है। लेकिन इन सुविधाओं का लाभ बड़े बाप के उपेक्षित विकलांग बेटे ही उठा पाते हैं।

विकलांगों को मदद पहुँचाने की आड़ में कुछ स्वयंसेवी संस्थाएँ विदेशी साजिशों की भी मददगार बनी हैं। इस तरह की खबरें सहानुभूति में ही दब जाती हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा के कई जिलों में फर्जी विकलांग प्रमाण पत्र मुहैया करने वाले गिरोह भी अपनी सक्रियता बनाये हुए हैं। फर्जी पेंशन और आरक्षण पाना तो आम बात है। विकलांगों के प्रति सामाजिक नजरिया भी उपेक्षापूर्ण ही रहता है। पुनर्वास संस्थाओं में विकलांगों को दाखिला कराके पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाने की प्रवृत्ति कायम है। मोमबत्ती बनाना, बुनाई, शिल्पकला आदि व्यवसायों में जिस तरह का प्रशिक्षण दिया जाता है, वह दृष्टिकोण ही दरअसल अव्यवहारिक व अवैज्ञानिक साबित हो रहा है। सरकारी छात्रवृत्ति, आर्थिक सहायता सरीखी कई योजनाएँ वर्षों से चल रही हैं। और हाल के वर्षों में इनमें काफी बढ़ोत्तरी हुई है। लेकिन यह आर्थिक सहायता बहुम कम है। दूसरी बात यह है कि जिसे मिलना चाहिए वह इससे वंचित रह जाता है। गरीब अनपढ़ एवं छोटी जातियों के विकलांग सही जानकारी के अभाव में इस तरह की सहायता प्राप्त नहीं कर पाते। योजनाओं की जानकारी मिलने के बाद भी आवेदन करने की प्रक्रिया इतनी जटिल है कि विकलांग इससे दूर ही रहते हैं। तब घर से दफ्तर तक सक्रिय बिचौलियों का एक बड़ा तबका अनुदान की राशि को हड़प कर लेता है।

एक खास वर्ग ही विकलांग होने का फायदा उठा रहा है। निचले तबकों तक किसी तरह की योजनाओं का क्रियान्वयन नहीं हो पाया है। यह एक कड़वा सत्य है कि अधिकांश विकलांग भीख माँगने पर मजबूर कर दिये जाते हैं। प्रायः देखा गया है कि विकलांगता के शिकार व्यक्ति अतिमेधावी होते हैं। शिक्षा का यह हाल है कि उन्हें पढ़ाने से अधिक प्रशिक्षण पर ध्यान दिया जाता है। विकलांगों की सामाजिक हैसियत कुछ इस प्रकार बना दी जाती है कि वे हीन-भाव के शिकार हो अलग-थलग पड़े रहते हैं।

बहरहाल, विकलांगों की समस्या हमारे सोच के स्तर पर अधिक बनी है। सरकारी नजरिया यह है कि थोड़ी सी आर्थिक योजनाओं के बूते इसके कागजी हल के प्रयास किये जाते रहे हैं। शहर और गाँव का फर्क विकलांगों के समक्ष भी एक सवाल बना हुआ है। इसके आधार पर आज वे बाँटे जा रहे हैं। देखना यह है कि असंगठित शहरी व ग्रामीण विकलांगों के दर्द की शिनाख्त कब हो पाती हैं। हि.फी.

फीचर लेखक इसी प्रकार प्रत्येक विषय के सही-गलत, अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित, प्रभाव-दुष्प्रभाव, क्रिया-प्रतिक्रिया तथा लाभ-हानि आदि पक्षों को अपने चिंतन-मनन के ताप से प्रकाशित करता है। उचित कारण एवं संदर्भों को विचारों की भट्टी में डाल कर ठोस निष्कर्षों को तलाशता है। उसके औचित्य और उपयोगिता पर पक्ष-विपक्ष से सोच-विचार कर अपनी बात को स्वरूप प्रदान करता है।

2.2.4 अपेक्षित शोध

विषय या संदर्भ पर चिंतन-मनन करने के बाद फीचर लेखक आवश्यक तथा अनिवार्य प्रमाणों को जुटाने के लिए खोजबीन करता है। घटना या स्थिति संबंधी तथ्य, फोटो, साक्षात्कार, विवरण एवं अन्य दस्तावेजों को जुटाने के लिए वह घटना स्थल अथवा संबंधित स्थानों पर जाकर शोध करता है। अतः फीचर लेखन की इस प्रक्रिया में तथ्यों एवं-

प्रमाणों को खोजने, संबद्ध स्थानों की यात्रायें करने और अपेक्षित व्यक्तियों, संस्थाओं अथवा समितियों से भेंट आदि कर नए-नए पक्षों एवं संदर्भों को खोजने का भी विशेष महत्व है। इन्हीं खोजों के माध्यम से लेखक को मानवीय अभिरुचि के नए विषय भी मिलते हैं तथा वह पाठक वर्ग में अपनी पहचान को विश्वसनीय एवं प्रभावी बनाता है। अभिलेखागार, पुरातत्व विभाग, संग्रहालय, प्रदर्शनी एवं पुस्तकालयों में जाकर लेखक सदियों पुराने, ऐतिहासिक दस्तावेज जुटा सकता है। बहुत से नए दिलचस्प तथा मनोरंजक तथ्यों को उजागर कर सकता है। फोटो कापी, प्रतिलिपि या चित्र आदि अपने फीचर में प्रस्तुत कर सकता है। शोध-परिशोध से उपलब्ध ये तथ्य फीचर को पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं लोकप्रिय तो बनाते ही हैं साथ ही उसको प्रामाणिकता भी प्रदान करते हैं। किसी ऐतिहासिक विषय पर लिखे गये या लिखे जा रहे फीचर में उस विषय से संबद्ध इमारतों, मूर्तियों, आभूषण, वस्त्र या सिक्के आदि के चित्र देखकर उसे अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी बनाया जा सकता है। यह आवश्यक नहीं कि यह खोज किसी फीचर लेखन के विषय-विशेष के लिए ही की जाये। जागरूक फीचर लेखक ऐसे ही शोध-परिशोध में लगे रहते हैं और वहीं से फीचर का विषय भी निकाल लेते हैं।

2.2.5 यात्रा एवं साक्षात्कार

फीचर लेखन की प्रक्रिया में शोध करने, प्रमाण जुटाने एवं तथ्य आदि को एकत्र करने के लिए लेखक को जगह-जगह यात्राएँ करनी पड़ती हैं तथा विभिन्न लोगों से साक्षात्कार एवं भेंटवार्ताएँ भी करनी होती हैं। किसी भी घटना या स्थिति से संबद्ध पूरी छान-बीन करने के लिए लेखक घटना-स्थल पर ही नहीं जाता अपितु उस घटना से जुड़े व्यक्तियों से मिलता भी है। उसके संदर्भ में अपेक्षित जानकारी देने वालों से बातचीत करता है। आवश्यक चित्र लेता है। अन्य सहायक सामग्री एकत्र करने के लिए भी वह अपेक्षित स्थानों पर जाता है। वास्तव में फीचर की लेखन-प्रक्रिया के ये आवश्यक एवं महत्वपूर्ण अंग हैं।

यों भी देश-विदेश के संग्रहालय, ऐतिहासिक स्थल, तीर्थ स्थल, युद्ध एवं सांध स्थल, घटना-परिवेश आदि के गहन, गंभीर एवं प्रामाणिक अध्ययन के लिए फीचर लेखक को यत्र-तत्र जाना पड़ता है। वहीं से उसे अन्य कई महत्वपूर्ण तथा ज्ञानवर्द्धक विषय और उनकी प्रेरणा भी मिलती है।

किसी भी राजनीतिज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता, धार्मिक नेता, साहित्यकार, कलाकार, अथवा अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति से की गई भेंटवार्ताएँ, नई-से-नई जानकारी तथा अपूर्व तथ्य उपलब्ध कराती हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र के किसी सुप्रसिद्ध व्यक्ति से भेंटवार्ता करके नृत्य, नाटक, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत-कला आदि पर अच्छा फीचर लिखा जा सकता है तो फिल्मी-दुनिया के किसी जाने-माने कलाकार से बातचीत करके फिल्म-संसार के घटनाचक्रों एवं नई-नई जानकारियों को सचित्र फीचर में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसी प्रकार आदिवासी क्षेत्रों में जाकर वहाँ के लोगों के रहन-सहन, रीति-रिवाज को देखकर, लोगों से बात-चीत करके, वहाँ के फोटो आदि लेकर बहुत से अच्छे एवं प्रामाणिक फीचर लिखे जा सकते हैं। एक इसी प्रकार का फीचर जो भारत-नेपाल सीमा के उत्तरी छोर पर लखीमपुर से सौ किलोमीटर की दूरी पर बसे "थारू" जाति के गाँवों में रहने वाले आदिवासियों पर लिखा गया है, उदाहरणार्थ प्रस्तुत है–

थारू : अंधेरे से उजाले की ओर
(के.बी. सिंह)

शराब पीते हैं साहब! किसी का खून तो नहीं पीते? अमीर लोग तो हम गरीबों का खून चूसते हैं। समय का फेर देखिये। एक समय था जब हमारे घर की औरतें दास-दासियों से घिरी रहती थीं। आज एक-एक बूंद पानी के लिए हजारों गालियाँ खानी पड़ती हैं। महाराणा प्रताप के वंश के हैं हम, पर किसे बताएँ, कौन मानेगा? बता भी दें तो लाभ क्या होना है? हमारी औरतों को तो उसी तरह मीलों दूर से पानी भरना और लकड़ियों के लिए जद्-बद् सुनना है।

थारू जाति का बुधराम बिफर पड़ा था जब उससे पूछा गया कि आप दिन भर शराब क्यों पीते हैं?

भारत-नेपाल सीमा के उत्तरी छोर पर प्रसिद्ध दुधवा नेशनल पार्क के समीप, लखीमपुर खीरी से 100 किमी. दूर थारूओं के गाँव हैं। सूरमा गाँव के ग्राम प्रधान सहदेव ने बताया कि 'लगभग 500 वर्ष पूर्व हमारे वंशज चित्तौड़ से भागकर यहाँ आये थे। धीरे-धीरे आबादी बढ़ती गयी और अब तो हम 41 गाँवों में फैल गये हैं। खाना पकाने के लिए लकड़ी और पीने को पानी आसानी से मिलता था तो जीवन ठीक से कट रहा था। अब समस्या यह है कि जिन्दा कैसे रहें।'

रामनगर की रामदुलारी थारू जाति की उन्हीं असहाय स्त्रियों में से एक है जिन्हें लकड़ी काटने जाने पर जंगल में-दुधवा नेशनल पार्क के कर्मचारियों और अधिकारियों की गाली मार सहनी पड़ती है। पर सरद और रामचन्द्र की चिन्ता कुछ और है। ये दोनों सौ-सौ बीघे के काश्तकार हैं। पहले लगान चार आना बीघा देना पड़ता था। लेकिन, इधर कई वर्ष से लगान लिया ही नहीं गया। चिन्तित रामचन्दर कहने लगा—सरकार ने जमीन का पट्टा कर देने की बात कही थी, पर आज तक हमें कोई कागज नहीं मिला। कहीं हमारी जमीन सरकार छीन न ले? एक साथ कई वर्ष का लगान मांगा गया तो भिखारी हो जाएंगे साहब! हमारी सारी जमीन बिक जायेगी।

थारू महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक मेहनती और कर्मठ होती हैं। खाना पकाने के साथ-साथ जंगल से लकड़ी काटकर लाने का काम भी वही करती हैं। पुरुष शराब पीने के आदी हैं इसीलिए उनका अधिकांश समय सोते या नशे में झूमते बीतता है।

थारू समाज अभी बहुत पिछड़ा है। 5-6 वर्ष की वय के लड़के-लड़कियों का विवाह यहाँ आम बात है। विवाह के बाद गौने की प्रथा है। तीन-चार साल बाद गौना हो जाता है। दहेज जरूरी है। सब अपनी-अपनी हैसियत से देते हैं।

थारू महिलाओं की एक अन्य प्रथा अपने पति को रोटी फेंककर देना है। पुरुषों का रसोई की सीमा के भीतर आना मना है। वे थाली लेकर चौके के बाहर ही बैठ जाते हैं। स्त्रियाँ रोटी पकाती हैं और रोटी फेंककर उन्हें देती हैं। इस तरह भोजन करने में यहाँ के पुरुष किसी प्रकार का अपमान महसूस नहीं करते। रोटी फेंककर ही क्यों दी जाती है—यह भी इनको नहीं मालूम। बरबटा की शिवकली ने मासूमियत से उत्तर दिया—हमने तो अपनी माँ को इसी तरह रोटी फेंककर देते देखा था। हम भी उसी तरह फेंककर रोटी देते हैं।

समय के बदलाव के साथ थारू जाति वालों में भी बदलाव आया है। रामनगर की रामदुलारी का बेटा लखीमपुर खीरी में बी.ए. का छात्र है। इनका थारू छात्रावास भी है जिसमें रहकर ये आसानी से पढ़-लिख सकते हैं। थारू जाति की महिलाओं में चेतना जगाने का श्रेय उ.प्र. जल निगम में कार्यरत अधीक्षण अभियन्ता श्रीमती हीरा शर्मा को है। श्रीमती शर्मा ने महिलाओं को हैण्ड पम्प ठीक करने की ट्रेनिंग दी है। अब तक 15 महिलाओं को ट्रेनिंग दी जा चुकी है। 6 महिलाएँ अपने अपने क्षेत्र में प्रिवेन्टिव मेण्टीनेन्स का काम कर रही हैं। इनको 10 रु. प्रति हैण्ड पम्प मिलता है। हर महीने लगभग 250 रु. मिल जाते हैं। महिलाओं की जागरूकता ने थारू समाज को उन्नति का रास्ता दिखाया है। पानी की बढ़ती हुई समस्या को हैण्ड पम्प के माध्यम से दूर करने की पूरी कोशिश यहाँ की महिलाएँ कर रही हैं। थारू महिलाओं में बड़ी बहन जी के नाम से प्रसिद्ध श्रीमती शर्मा ने उ.प्र. जल निगम द्वारा 30 इण्डिया मार्क—2 हैण्ड पम्प लगवा दिये हैं। जल निगम के अधिशासी अभियन्ता आर.के. शर्मा ने बताया कि 15 प्रशिक्षित महिलाओं में से 4 योग्य महिलाओं को हैण्ड पम्प के ब्रेक डाउन कार्य का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। 4 अन्य महिलाओं को ब्रेक डाउन मेण्टीनेन्स का कार्यभार सौंप दिया जायेगा।

पाना देवी के चेहरे पर खुशी की रेखाएँ गहरा गयीं। वह बोली पहले तो सारा समय पानी ढोने में बीत जाता था। जब से हैण्ड पम्प लग गये हैं, बड़ा आराम हो गया है। सरकार ने सिलाई मशीनें भी दिलवा दी हैं, जिनसे हम अपने बच्चों को सिलाई सिखा सकते हैं।

हैण्ड पम्प की सफाई आदि के लिए प्रशिक्षित थारू महिलाओं को शिक्षा का महत्व समझ में आने लगा है। शिक्षा और रोजगार में यदि थारू जाति की रुचि बनी रही और सरकार का सहयोग उन्हें मिलता रहा, तो समाज में फैली बहुत सी बुराइयों को मिटते देर नहीं लगेगी।

इस फीचर में वहाँ के रहन-सहन में आ रहे बदलाव को संकेतित किया गया है। फीचर लेखक ने वहाँ जाकर लोगों से मिलकर फोटो आदि प्रमाण ले कर इसे रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक तो बनाया ही है साथ ही समाज के प्रति अपने गंभीर दायित्व का निर्वाह भी किया है।

2.2.6 तथ्य एवं फोटो संग्रह

फीचर लेखक को फीचर की प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए तथ्यों का संग्रह करना पड़ता है। ये तथ्य वह लिखित दस्तावेज, साक्षात्कार, भेंटवार्ताओं, चित्रों, वस्त्रों, हथियारों एवं अन्य सामग्रियों के रूप में तो एकत्र करता ही है साथ ही फोटो आदि खींचकर या जुटाकर भी उसे विश्वसनीय बनाता है। इन्हीं तथ्यों के आधार पर लेखक फीचर का कलेवर तैयार करता है। फीचर की विशेषता ही यह है कि वह रोचक होने के साथ-साथ तथ्यात्मक भी हो। तथ्य भी ऐसे ही उपयोगी होते हैं जो अपने आप में प्रामाणिक हों। घटना, शिकायत, विषय, आरोप आदि के संदर्भ में जुटाए गये तथ्यों की उपयोगिता तभी सिद्ध होगी जब वे प्रामाणिक भी होंगे। अतः फीचर लेखक को हर प्रकार से जाँच करके तथ्यों की पुष्टि कर लेनी चाहिए। इन प्रयत्नपूर्वक उपलब्ध हुए तथ्यों को अभिलेखबद्ध करते जाना चाहिए। बिना प्रामाणिक तथ्यों के फीचर प्रभावी नहीं बन पाता।

2.2.7 विषय-व्यवस्था एवं प्रस्तुति

फीचर-लेखन की इस दुरूह प्रक्रिया में लेखक ये सभी सोपान पार करता है। विषय को व्यवस्थित करता है। विषय को व्यवस्थित करने के लिए वह उसके पक्ष-विपक्ष,

प्रभाव-दुष्प्रभाव तथा हानि-लाभ के सभी संदर्भों पर विचार करता है और स्थान एवं अपेक्षा का ध्यान रखते हुए महत्वपूर्ण बातों पर बल देता है। यही नहीं विषय के सामाजिक संदर्भ तथा नैतिक दायित्वों पर भी विचार करते हुए लेखक तथ्य, तिथियाँ, चित्र एवं अन्य प्रमाणों की पुनः जाँच कर लेता है। विषय सामग्री का दो या तीन बार गंभीरता से वाचन कर उसे आकार या स्वरूप प्रदान करता है। इसी प्रकार विषय संबंधी फोटो का स्थान भी फीचर में निर्धारित करता है। फीचर का एक सटीक एवं यथासंभव लघु शीर्षक भी उसका एक महत्वपूर्ण अंग है। फीचर लेखक विषय की गंभीरता, दिशा एवं संभवाओं के आधार पर दूर तक अर्थ संप्रेषण करने वाला, गागर में सागर भरने वाला शीर्षक भी निर्धारित करता है। इन सभी के साथ अपनी कल्पना के घोल को मिलाकर एक रोचक, उपयोगी, ज्ञानवर्द्धक तथा महत्वपूर्ण फीचर प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार समाचार या अन्य विधाओं से भिन्न, सरल, अनुपम एवं नृत्य शैली में प्रस्तुत की जाने वाली इस फीचर-विधा की लेखन प्रक्रिया का सफर पूरा हो पाता है। कौतुहल, जिज्ञासा और आनंद का अद्‌भुत मिश्रण जिस विधा में एक साथ हो तथा रोचक ढंग से ज्ञानवर्द्धन जिसका दायित्व हो, उस विधा की रचना प्रक्रिया भी निश्चित ही विशिष्ट है।

बोध प्रश्न

1) निम्नलिखित प्रश्नों में कुछ सही हैं तथा कुछ गलत। प्रश्न के सामने दिए गए स्थान पर उपयुक्त चिह्न लगाइए–

   i) फीचर-लेखन की सफलता लेखक की खोज बीनपरक दृष्टि एवं तटस्थ-प्रस्तुति पर निर्भर करती है। ( )

   ii) किसी भिक्षुक पर अच्छा फीचर लिखना हो तो चार-छह पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन से लिखा जा सकता है। ( )

   iii) घटनाओं एवं स्थितियों की विश्वसनीय एवं तथ्यात्मक सामग्री को कल्पना के धागे में पिरोकर प्रस्तुत करने से फीचर में रोचकता लाई जा सकती है। ( )

   iv) फीचर-लेखक को विषय की गंभीरता एवं उपयोगिता के अनुसार भाषा-शैली बदलने का अधिकार नहीं है। ( )

   v) फीचर जितना सहज, सरल एवं रोचक होता है, उसकी रचना प्रक्रिया भी उतनी ही आसान होती है। ( )

2) फीचर-लेखन प्रक्रिया के वैशिष्ट्य को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित सोपानों पर पाँच-पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

   1) चिंतन-मनन :

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   2) तथ्य एवं फोटो संग्रह :

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   3) अपेक्षित शोध :

   .....

   .....

2.3 फीचर लेखन के नियम

फीचर लेखन में मोटे तौर पर समाचार आधारित या गैर-समाचार आधारित फीचर मिलते हैं। यों तो फीचर में सामान्यतः कोई न कोई समाचार रहता ही है किन्तु कुछ फीचर सामयिक घटना या स्थिति से हट कर भी तैयार किए जाते हैं। जैसे किसी कवि, रचनाकार, कलाकार के जन्म या मृत्यु पर फीचर लिखे जाते हैं। किसी घटना या ऐतिहासिक संदर्भ को वर्तमान की किसी घटना या स्थिति के परिप्रेक्ष्य में देखते हुए फीचर लिखना भी इसी श्रेणी में आता है। इस प्रकार फीचर लेखन के समय लेखक को किन्हीं खास बातों का विशिष्ट ध्यान भी रखना पड़ता है। यों तो विषय की दृष्टि से लेखक को बहुत सी सावधानियाँ रखनी ही पड़ती हैं जिनमें दैनिक घटनाओं में मानवीय पक्षों को खोजना, जीवन के सुख-दुखात्मक पहलुओं पर विचार करना, फीचर को खास, संयत और मर्मस्पर्शी बनाना, उसे हल्के और उबाऊपन से बचाना, धर्म-जाति एवं राष्ट्रीयता पर आक्षेप न हो इसका ध्यान रखना तथा उसे बनावटी, नाटकीय एवं अविश्वसनीय होने से बचाना आदि प्रमुख है। उत्सवों, ऋतुओं, पर्यटन-स्थलों, ऐतिहासिक स्थानों, महापुरुषों एवं सांस्कृतिक घटनाओं आदि पर लिखे जा रहे फीचर में इन बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना होता है।

इन सब बातों के अतिरिक्त फीचर-लेखक को कतिपय तकनीकी नियमों का भी ध्यान रखना चाहिए। इन सावधानियों से फीचर जीवंत, दीर्घजीवी एवं सुंदर तो बनता ही है, विद्वत् समाज द्वारा उसकी सराहना भी होती है। ये तकनीकी सावधानियाँ निम्नलिखित हैं।

2.3.1 प्रमाण बिना कुछ न लिखना

फीचर लेखक को विषय, संदर्भ, स्थिति एवं विवरण आदि की तथ्यात्मकता, विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए। तिथि, सन्, धारा, संख्या, नामादि के संदर्भ में पूरी सावधानी से प्रमाण जुटाते हुए ही फीचर लिखना चाहिए। बिना प्रामाणिकता के फीचर-लेखक खतरे में पड़ सकता है। लोकतंत्र में प्रत्येक को अपनी बात कहने का अधिकार तो है परंतु निराधार बात कहने का नहीं। फीचर लेखक को किसी भी समय प्रमाण एवं तथ्यों की आवश्यकता पड़ सकती है, अतः उसे इन प्रमाणों को संजो कर सुरक्षित भी रखना चाहिए।

2.3.2 निष्पक्ष विश्लेषण करना

फीचर लेखक को किसी भी फीचर में स्वयं को पूर्णतः तटस्थ तथा निष्पक्ष रखना चाहिए। फीचर लेखक का दायित्व घटना या स्थिति का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत करना ही नहीं होता, किंतु उसे किसी भी विवरण में अपनी दृष्टि को संतुलित, पक्षपात रहित, पूर्वाग्रह से मुक्त तथा तटस्थ भी रखना होता है। तभी वह दूध का दूध और पानी का पानी कर सकता है। कल्पना कहीं सम्मिश्रण दृष्टि के संतुलन को डोलने नहीं देता। लेखक अगर फीचर लेखन के समय इस बात की गंभीरता से विमुख होता है तो वह फीचर के दायित्व से अन्याय करता है। अतः किसी भी घटना या स्थिति के सभी अच्छे-बुरे कारण एवं पक्षों को, अडिग एवं अविचलित रहते हुए निष्पक्षता से विश्लेषित करके पाठक के सम्मुख रख देना ही फीचर लेखक का महत्वपूर्ण कर्तव्य है।

2.3.3 निर्णयात्मकता से बचना

फीचर लेखक को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह फीचर का यथातथ्य वर्णन तथा विश्लेषण तो करे पर स्वयं किसी निर्णय को स्थापित न करे। निर्णय तक पहुँचने में सहायक अथवा मार्गदर्शक फीचर तो अपना विशिष्ट महत्व बनाते हैं किन्तु निर्णय की स्थापना या घोषणा करने वाले फीचर सम्मान के अधिकारी नहीं बन पाते। फीचर लेखक का कार्य विश्लेषण-विवेचन करते हुए वास्तविकता को यथातथ्य रूप में प्रस्तुत कर देना ही होता है। क्या है, यह बताना ही उसका कार्य है न कि क्या होना चाहिए। निर्णय देने से

लेखक के निहित स्वार्थ अथवा लाभ का संदेह भी होने लगता है। अतः उसे निर्णय की स्थापना करने से बचना चाहिए।

2.3.4 सामाजिक हित को सर्वोपरि रखना

फीचर लेखक का पहला और अंतिम दायित्व यही है कि वह समाज एवं राष्ट्र के हित को ध्यान में रखकर फीचर लिखें। उसकी यह नैतिक जिम्मेदारी होती है कि वह समाज का शिक्षित नागरिक होने के नाते घटनाओं एवं स्थितियों के विश्लेषण से उसका मार्गदर्शन करे। उसे सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हुए अपने गंभीर दायित्व का निर्वाह करे। व्यक्तिगत आग्रह, स्वार्थ, हित, अथवा लाभ से बचते हुए जनमत की वाणी को मुखर करे। समाज के परिश्रम साध्य तथ्यों एवं प्रयासों के माध्यम से संदर्भ की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करे। यही नहीं, उसके विश्लेषण का अंदाज एवं प्रस्तुति भी सर्जनात्मक ही हो ताकि समाज उससे ठोस विचार एवं संतुलित दृष्टि पा सके।

2.3.5 व्यक्तिगत आक्षेपों से बचना

फीचर लेखक को सभी तरह के आग्रह-दुराग्रह छोड़कर फीचर लिखना चाहिए। फीचर के विषय पर विवेचन-विश्लेषण करते समय उसे सावधान रहना चाहिए कि वह भावावेश में किसी व्यक्ति, जाति, संप्रदाय या वर्ग पर कोई आक्षेप-आरोप न लगाए। उसे अपनी बात कहने के लिए अप्रत्यक्ष शैली अपनानी चाहिए। फीचर की गरिमा इसी में है कि वह बिना किसी छींटाकशी और आरोप-प्रत्यारोप के अपने मंतव्य को इस प्रकार स्पष्ट कर दे कि पाठक-वर्ग सहज ही उद्देश्य को समझ ले। कई बार लेखक को ऐसी बात या उक्ति भी कहनी अनिवार्य हो सकती है जो आलोचनात्मक हो, वहाँ लेखक को शिष्टता, निश्पक्षता एवं विश्वसनीयता का ध्यान रखना चाहिए। यहीं फीचर लेखक की संतुलित दृष्टि एवं सूझ-बूझ की भी परख होती है। फीचर लेखक जितने दायित्व एवं गंभीरता से विचार प्रस्तुत करता है, उतनी ही उसे कम मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। सामाजिक हित और राष्ट्रीय दायित्व का प्रश्न हो तो अत्यंत संतुलित एवं गंभीर दृष्टि से अपना मंतव्य स्पष्ट कर देना चाहिए। यहीं पर फीचर लेखक के अध्ययन एवं व्यक्तिगत के गांभीर्य का परिचय भी मिलता है। बिना किसी प्रमाण के अथवा व्यक्तिगत दुराग्रह से लगाए गए आक्षेप मान-हानि के दावे का कारण भी बन सकते हैं।

2.3.6 आदर्श भाषा और शिष्ट शैली का प्रयोग

फीचर लेखक को किसी भी विषय पर फीचर लिखते समय यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उसके फीचर को समाज में सभी तरह के पाठक पढ़ेंगे। अतः फीचर की भाषा गरिमा से सम्पन्न परंतु सहज एवं संप्रेषणीय भी होनी चाहिए। फीचर की भाषा अगर क्लिष्ट, शास्त्रीय एवं साहित्यिक आलंकारिकता से ओत-प्रोत नहीं होनी चाहिए तो हल्के स्तर एवं अश्लील शब्दों से भरी हुई भी नहीं होनी चाहिए। रोचकता एवं लोकप्रियता के लिए दैनिक प्रचलन की शिष्ट भाषा एवं आदर्श भाषा का ही चयन लेखक की बुद्धिमत्ता का परिचायक बनता है। कई बार फीचर के विषय में ऐसे लोग भी होते हैं जिनकी भाषा शिक्षित समाज से भिन्न होती है। वहाँ यथार्थ का पुट देने के लिए ऐसे लोगों की बातों को उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत करना अच्छा रहता है। लेकिन ऐसे भाषा प्रयोग में शिष्टता और बोधगम्यता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। अतः नीरस से नीरस प्रसंग को भी, सामाजिक तौर पर, अस्वीकृत संदर्भों को भी सभ्य एवं शिष्ट भाषा में उजागर करके पथ-प्रदर्शन करना ही फीचर लेखक का दायित्व बनता है।

दूसरी तरफ यह भी आवश्यक है कि फीचर लेखक साहित्यकार की तरह भाषा के मामले में स्वच्छंद न हो जाए। यों फीचर के प्रकार ही उसके पाठकों का वर्ग तैयार करते हैं और हर फीचर को प्रत्येक पाठक नहीं पढ़ता। सभी की अपनी एक खास रुचि और विषय-क्षेत्र ही उन्हें फीचर के चयन की प्रेरणा देते हैं। पर फीचर लेखक को यह उद्देश्य सामने रखना चाहिए कि उसके फीचर को अधिक से अधिक लोग और अधिक से अधिक वर्ग पढ़ेंगे। इसलिए उसे व्यंजना प्रधान तथा बहुअर्थी शब्दों वाली गूढ़ भाषा से बचना चाहिए। फीचर पाठक पत्र या पत्रिका का आम पाठक होता है। उसे तो साफ-सुथरी, सुलझी हुई और स्पष्ट भाषा ही चाहिए। साहित्यिक-शैली का समावेश एक खास सीमा तक ही स्वीकार्य है। वास्तव में फीचर की भाषा साहित्य और बोलचाल की भाषा के बीच की भाषा होती है।

इसी प्रकार शब्दों का जंजाल भी पाठक को भ्रमित करता है, कई बार अतिशय-व्यंजना भी अर्थ तक पहुँचने में बाधक होती है। शिथिल, असंगत, दुरूह एवं गलत भाषिक प्रयोग भी पाठकों पर बुरा प्रभाव डालते हैं। जिस प्रकार किसी शिक्षक की सदोष भाषा छात्रों की भाषा को प्रभावित करती है, उसी प्रकार फीचर लेखक की सदोष भाषा अपने पाठक वर्ग को। अतः विषय कैसा भी हो फीचर लेखक को अपनी गरिमा नहीं खोनी चाहिए।

नए शब्दों को गढ़ना, शब्दों को तोड़-मोड़ कर नया रूप देना अथवा अन्य भाषाओं के शब्दों का स्वभाषा में रूपांतरण कर लेना आदि पत्रकारिता के लिए अब अमान्य नहीं रहे। किन्तु फीचर लेखक को चाहिए कि वह ऐसा करते समय स्पष्टता, सहजता एवं अर्थ-संप्रेषणीयता का पूरा ध्यान रखे। अगर फीचर का मूल-मंतव्य एवं अर्थ ही संप्रेषित न हुआ तो उसका उद्देश्य ही खत्म हो जाता है। इसी प्रकार लेखक को सामयिक शब्द-भंडार का प्रयोग तो करना चाहिए किन्तु कुछ शब्द समय के दीर्घ अंतराल के कारण लुप्त हो जाने पर भी प्रयुक्त हों तो अस्पष्ट बने रहते हैं। अतः ऐसे प्रयोगों से भी बचना चाहिए।

फीचर लेखक की शैली रोचक, आकर्षक, कौतुहल भरी तो होनी ही चाहिए किन्तु सभ्य एवं शिष्ट भी अवश्य होनी चाहिए। किसी सम्माननीय व्यक्ति के नामोल्लेख अथवा पदोल्लेख के समय विशेष सावधानी रखनी चाहिए। तू, तुम, तेरा, मेरा जैसे शब्दों के प्रयोग से बचते हुए लेखक को प्रभावी, आत्मीय एवं विश्लेषण परक शैली ही अपनानी चाहिए। विषय को इस ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए कि आद्यन्त सुसम्बद्धता बनी रहे। उसमें बिखराव न आने पाए। लोकोक्ति मुहावरे का प्रयोग अगर अर्थ-संप्रेषण में बाधा न बने और सरसता, संक्षिप्तता तथा सहजता पैदा करे तो स्वीकार्य हो सकता है। अतः भाषा-लालित्य एवं शैलीगत शिष्टता फीचर के विषय को प्राणवान ही नहीं दीर्घजीवी भी बनाते हैं। इसी से फीचर एवं लेखक, दोनों को यश की प्राप्ति होती है। ऐसी भाषा का एक उदाहरण प्रस्तुत है:

"विकलांगों को मिलने वाली सुविधाओं का आलम यह है कि सभी राज्यों में चलने वाली अधिसंख्य संस्थाएँ राजधानियों तथा अन्य बड़े शहरों तक ही केंद्रित हैं। परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्र उपेक्षित रह जाते हैं। जिन राज्यों में समाज विज्ञान संस्थान द्वारा सर्वेक्षण किया गया, उनमें कुछ जिलों में तो विकलांगों की देखभाल तथा प्राथमिक उपचार तक के लिए कोई सुविधा नहीं है। विकलांगों की सहायता करने वाले स्वयंसेवी संगठनों द्वारा देश में लंबे अरसे से कार्यरत रहने का दावा किया जाता है। इसके लिए सरकार निजी संस्थाओं को वित्तीय सहायता देती है। इसके अलावा गैर-सरकारी संस्थाओं को अन्य कई स्रोतों से धन प्राप्त होता है। दान देने वालों में धार्मिक संगठन, दानी व्यक्ति, धर्मार्थ न्यास, कंपनियाँ, व्यापारिक घराने तथा कई विदेशी एजेंसियाँ शामिल हैं। काफी निर्ममता से इन गैर-सरकारी संस्थाओं का मूल्यांकन किया जाए तो कहना होगा कि नौकरशाह, बिचौलिये और संस्थाओं के कर्ताधर्ता विकलांगों के नाम पर मिलने वाली राशि का मिलकर बंदरबांट करते हैं। सतही तौर पर शहरी क्षेत्र में खास कर महानगरों में इन संस्थाओं की स्थिति बेहतर है। लेकिन इन सुविधाओं का लाभ बड़े बाप के उपेक्षित विकलांग बेटे ही उठा पाते हैं।"

इस उदाहरण की भाषा प्रवाहमयी, सहज, सरल एवं आम-बोलचाल की भाषा है। इसे पढ़ते समय यह नहीं लगता कि किसी पुस्तक की साहित्यिक भाषा पढ़ रहे हैं। इसमें दैनिक प्रयोग एवं प्रचलन के आलम, देखभाल, अरसे, गैर-सरकारी, घराने, बिचौलिए, कर्ताधर्ता तथा बंदरबांट जैसे शब्द हैं तो ऐजेंसियाँ जैसे शब्दों में अंग्रेज़ी के हिंदी रूपांतरण की आम प्रवृत्ति को भी देखा जा सकता है। अधिसंख्य, सर्वेक्षण, प्राथमिक उपचार, स्वयंसेवी, धर्मार्थ, निर्ममता तथा उपेक्षित आदि साहित्यिक शब्दों का प्रयोग भी सुंदर एवं सटीक रूप में किया गया है।

बोध प्रश्न

3) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं। फीचर लेखन के नियमों को ध्यान में रखकर इनकी पाँच-पाँच पंक्तियों में व्याख्या कीजिए:

   i) फीचर लेखक को प्रमाण बिना कुछ नहीं लिखना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

.....

ii) फीचर में सामाजिक हित सर्वोपरि होना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

.....

iii) फीचर में निष्पक्ष विश्लेषण करते हुए निर्णय देने से बचना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) फीचर लेखन के नियमों को ध्यान में रखते हुए फीचर की भाषा और शैली पर दिए गए कथनों में कुछ सही हैं, कुछ गलत। उपयुक्त चिह्न लगाइए–

i) फीचर लेखक व्यंजना प्रधान एवं बहुअर्थी शब्दों के प्रयोग से फीचर को संप्रेषणीय बनाता है। ( )

ii) भाषा लालित्य एवं शैलीगत-शिष्टता फीचर के विषय को प्राणवान और दीर्घजीवी बनाते हैं। ( )

iii) फीचर में भाषा का ऐसा प्रयोग होना चाहिए कि उसके मूल मंतव्य एवं अर्थ-संप्रेषण पर कोई आँच न आए। ( )

iv) प्रत्येक फीचर-पाठक किसी भी विषय पर लिखे गए फीचर को पढ़ने में रुचि लेता है। ( )

2.4 फीचर-लेखन के लाभ

फीचर-लेखन जैसा कि स्पष्ट हो चुका है रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक होने चाहिए। उनके लेखन का कोई न कोई कारण भी अवश्य होता है। ये कारण मोटे तौर पर दो तरह के होते हैं: **लेखक पक्ष** के कारण तथा **लोक पक्ष** के कारण। लेखक को फीचर लिखने से क्या मिलता है? वह फीचर क्यों लिखता है? फीचर से उसे क्या-क्या लाभ होते हैं? इन प्रश्नों के साथ-साथ यह भी बात उठती है कि पत्र-पत्रिकाएँ ये फीचर क्यों लिखवाती और प्रकाशित करती हैं तथा पाठक-वर्ग इसे क्यों पढ़ता है? समाज को इससे क्या लाभ होता है? इन सभी प्रश्नों का समाधान फीचर के चार मूलभूत लाभों में देखा जा सकता है। ये चारों लाभ फीचर लेखक, पत्र-पत्रिकाओं एवं पाठक-वर्ग को होते हैं। अतः जब परस्पर-लाभ जुड़ जाते हैं तो दायित्व भी उसी में समाहित होने लगते हैं। इस दृष्टि से ही इन चारों लाभों को हम देख सकते हैं।

2.4.1 ज्ञानवर्द्धन

फीचर के लेखन के लिए आवश्यक तैयारी के कारण फीचर-लेखक का ज्ञानवर्द्धन तो होता ही है फीचर पढ़ने से समग्र पाठक-वर्ग को भी दिशा-बोध मिलता है। फीचर लेखक फीचर लिखने के लिए शोध, अध्ययन, यात्रा, चित्र, फोटो, वेशभूषा, रीति-रिवाज, साक्षात्कार अनुभव, संदर्भ, घटना आदि कई पक्षों से अवगत होता है। नई-नई खोज-खबरें जुटाता है। मनन-चिंतन करके उसे समाज के सम्मुख प्रस्तुत करता है। समाज इस ज्ञानवर्द्धन से

उपकृत और चमत्कृत होता है। घटना एवं स्थितियों की तह तक पहुँचता है। सही-गलत या उचित-अनुचित का ज्ञान उसे होता है। वह अपनी दृष्टि एवं धारणा को संशोधित, परिष्कृत, परिवर्तित या दृढ़ करने में फीचर को सहायक मानता है। ऐतिहासिक या सांस्कृतिक, घटनाओं, संदर्भों एवं वस्तुओं आदि के बारे में उसकी जानकारी बढ़ती है। राजनीति, धर्म, एवं समाज में घटित ब्यौरों का विवरण उसे मिलता रहता है। पत्र-पत्रिकाएँ इन फीचरों को प्रकाशित कर जन-सामान्य में दूर-दूर तक पहुँचाती हैं। आजकल फीचर का विषय-क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो गया है। चित्र, फोटो, लेखन एवं कार्टून आदि के माध्यम से भी फीचर ज्ञानवर्द्धन करता है। इस ज्ञानवर्द्धक सामग्री से भी पत्र-पत्रिका के प्रचार-प्रसार पर प्रभाव पड़ता है। लेखक की बुद्धिमत्ता स्थापित होती है और उसकी विषय-विशेषज्ञता निर्धारित होती है।

2.4.2 आत्म विस्तार

फीचर मात्र तथ्यों की प्रस्तुति नहीं। कल्पना का सम्मिश्रण उसे रोचक, मनोरंजक एवं आकर्षक बनाता है तो तथ्यों की मौजूदगी उसे प्रामाणिक एवं सूचनात्मक बनाती है। अतः फीचर लेखक किसी भी विषय को चुनकर अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण तथा अपनी खास सोच को समाज के सामने रखता है। जिस महत्वपूर्ण विषय पर वह समाज का ध्यान आकृष्ट करना चाहता है, उसकी ओर उन्मुख एवं प्रेरित करता है। अपनी आत्मा का विस्तार करते हुए वह फीचर के माध्यम से जन-जन की आत्मा से जुड़ता है। उससे तादात्म्य स्थापित करता है। विषय का गंभीर अध्ययन विवेचन वह पाठक वर्ग की अपेक्षाओं के अनुकूल तो करता ही है साथ ही अपनी दृष्टि एवं अपेक्षाओं के अनुकूल भी पाठक वर्ग की सोच को बनाता या बदलता है। एक तरह से वह परकाया-प्रवेश का कार्य करते हुए जन-जन से साधारणीकृत होता है। बहुत बार हम किसी घटना, स्थिति या विषय के बारे में अपने विचार, अपनी दृष्टि और अपनी भावना को समाज तक पहुँचाने की इच्छा लेकर भी स्वयं को विवश महसूस करते हैं। फीचर, फीचर-लेखक को इसी विवशता के बंधन से मुक्त कराने वाली एक स्वच्छंद विधा है। इसी के माध्यम से लेखक अपनी भावना और धारणा का प्रसार करता है। कुछ पत्र-पत्रिकाएँ भी अपनी एक खास दृष्टि या दिशा बना लेती हैं। राजनीतिक, साहित्यिक, धर्म विषयक, चिकित्सा विषयक, फिल्मी या अन्य कई विशिष्ट-विषयों से संबद्ध पत्रिकाएँ भी उसी दिशा में अपनी धारणाओं का प्रसार करती हैं।

2.4.3 प्रतिष्ठा

प्रतिष्ठा पाने की ललक मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। पत्रकारिता और लेखन में तो यह विशेष रूप से देखा जा सकता है। फीचर लेखक भी नए-से-नए या अद्‌भुत-अपूर्व विषयों पर खोजबीन करते हुए चौंका देने वाले फीचर प्रस्तुत करता या करना चाहता है। इसी प्रकार के फीचर पाठक वर्ग एवं समाज को नई-नई जानकारियों, घटना-विवरणों एवं स्थितियों से चमत्कृत करते हैं। कई फीचर लेखक सामयिक विषयों, घटनाओं एवं स्थितियों पर लिखने के लिए प्रसिद्ध हो जाते हैं। कई ऐतिहासिक, पौराणिक एवं सांस्कृतिक विषयों को अपना क्षेत्र बना लेते हैं। इसी प्रकार अन्य कई लेखक भी या तो अपना एक खास क्षेत्र बना कर उसी में प्रतिष्ठा हासिल करते हैं। कई फीचर लेखक लोकहित एवं जन प्रेरणा के विषय लेकर ख्याति अर्जित करते हैं। तरह-तरह की पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से वे देश-विदेश के पाठकों को आंदोलित या भाव-विह्वल करते हुए नाम कमाते हैं। पिछले दिनों बोफोर्स के मसले पर कुछ पत्रकारों ने फीचर लिख कर बहुत प्रतिष्ठा पाई। इसी प्रकार फूलन देवी पर, रूपकंवर के कथित रूप से "सती" होने पर, आरक्षण, खाड़ी समस्या, शिक्षा नीति आदि विषयों पर बहुत से फीचर लिखे जाते रहे। इसी प्रकार समय-समय पर आने वाले त्यौहार, पर्व एवं उत्सवों पर भी फीचर लिखे जाते हैं। कुछ लोग खेल-कूद पर फीचर लिख कर प्रतिष्ठा पाते हैं। एक ही विषय-क्षेत्र पर जब लेखक बहुत से फीचर लिख लेता है तो उसकी उस क्षेत्र में पहचान बन जाती है। अतः फीचर लेखन से लेखक की एक खास पहचान बनती है। उसे दूर-दूर तक विभिन्न वर्ग के लोग जानने लगते हैं। वह विषय विशेषज्ञ के रूप में स्थापित होता जाता है। जैसे खगोलशास्त्र पर श्री गुणाकर मुले के कई फीचर बहुत सराहे गए हैं।

इसी प्रकार धारावाहिक फीचर या सामयिक फीचरों के कारण पत्र-पत्रिकाएँ भी प्रतिष्ठा हासिल करती हैं। पत्र-पत्रिकाओं का प्रचार-प्रसार भी बढ़ता है। इसके साथ ही उसका पाठक-वर्ग भी बढ़ता जाता है।

2.4.4 अर्थ-लाभ

संसार के भौतिक-पक्ष में मनुष्य कर्म का महत्वपूर्ण ध्येय है अर्थ। फीचर लेखक समाजसुधारक या लोकहित रक्षक होकर भी मनुष्य पहले होता है। मनुष्य के जीवन-यापन का महत्वपूर्ण साधन है धन। फीचर लेखक के चेतन या अचेतन में अर्थ-लाभ अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ बात आदर्श या यथार्थ की नहीं, जीवन की अनिवार्यता की है। अतः फीचर लेखक को फीचर लिखने से आत्मसंतोष तो मिलता ही है किंतु धन की प्राप्ति भी होती है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ फीचर लेखन के लिए पारिश्रमिक प्रदान करती हैं। यह पारिश्रमिक निश्चित नहीं होता। फीचर के आकार, विषय एवं पत्र-पत्रिका के स्तर तथा प्रकाशन के आधार पर इसका निर्धारण होता है। बहुत से फीचर लेखक इसी प्रकार फीचर लिख कर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से अपना जीविकोपार्जन करते हैं।

आजकल तो बहुत सी फीचर-सेवा संस्थाएँ भी सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। इनसे फीचर-लेखक को भी कुछ अधिक राशि मिल जाती है तथा ये संस्थाएँ भी आगे विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में एक ही फीचर को भेज कर अच्छा धनार्जन कर लेती हैं। यहाँ प्रश्न नैतिकता या अनैतिकता का नहीं सामाजिक व्यवस्था का है। परस्पर लाभ की इस योजना में भी कई सामाजिक एवं आर्थिक हित निहित हैं। लेखक, संपादक, पत्र-पत्रिकाएं, पत्र-पत्रिकाओं में कार्यरत कर्मी, पत्रकारिता उद्योग, पाठक, समाज तथा राष्ट्र सभी कहीं न कहीं अर्थ से लाभान्वित होते हैं। कुछ प्रत्यक्ष तथा कुछ अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित होते हैं किंतु अर्थ-लाभ फीचर-लेखन का प्रमुख लाभ है। अच्छे फीचर ही पत्र-पत्रिकाओं के विक्रय पर भी प्रभाव डालते हैं।

2.5 फीचर एवं अन्य विधाएँ

सृजनात्मक लेखन की महत्वपूर्ण विधा है फीचर और इसका उद्देश्य है दुर्घटना, मारपीट, हत्या, बलात्कार तथा नेताओं के नीरस वक्तव्यों एवं ऊबा देने वाले समाचारों से हट कर रोचक, ज्ञानवर्द्धक, दिलचस्प, प्रभावी, मर्मस्पर्शी तथा कौतूहल पैदा करने वाली पाठ्य सामग्री देना। मानवीय अभिरुचियों को जागृत कर पाठक को स्थिति, घटना और परिवेश की ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अवगत कराते हुए उनको नई-नई खोजों-जानकारियों से परिचित कराना। महत्वपूर्ण, समसामयिक एवं दिलचस्प विषय फीचर में ढलकर पाठक वर्ग को मोहित कर लेते हैं तो ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विषय भी पाठकों को ज्ञान संपन्न बनाते हैं। अतः फीचर अपने आप में एक विशिष्ट एवं अद्वितीय विधा है। किन्तु फिर भी कुछ विधाओं से उसका कहीं साम्य भी है तो कहीं वैशिष्ट्य-मूलक वैषम्य भी। इसी वैशिष्ट्य को ध्यान में रखते हुए हम कुछ प्रमुख विधाओं से फीचर के इस पार्थक्य पर दृष्टि डाल लें तो अनुचित न होगा।

2.5.1 फीचर और समाचार

फीचर और समाचार मूलतः दो भिन्न विधाएँ हैं। कहीं-कहीं साम्य-वैषम्य के कारण कुछ भ्रम हो सकता है किंतु यह स्पष्ट है कि फीचर का आधार समाचार हो सकता है, पर फीचर समाचार नहीं है। फीचर का क्षेत्र समाचार से बड़ा होता है। फीचर लेखक तो पठनीय अनुभवों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। उसमें सूचना गौण होती है और सूचना से जुड़े अन्य मानवीय तथ्यों, भावनाओं की प्रमुखता होती है। फीचर में रोचकता तथा शैली-लालित्य का महत्व होता है। यही कारण है कि फीचर समाचार को आच्छादित कर लेता है। इसी वैशिष्ट्य के कारण फीचर का महत्व पत्र-पत्रिकाओं में समाचार से अधिक होता है।

समाचार तो घटना का ब्यौरा मात्र है। "घटना" अपने आप में समाचार नहीं। समाचार में तो **कौन, कब, क्यों, कहाँ** और **कैसे** की विशेष भूमिका रहती है पर फीचर लेखक सिर्फ यहीं तक बंधा नहीं रहता।

समाचार निरे तथ्यपरक होते हैं जबकि फीचर उस समाचार को सृजनात्मक-स्पर्श देकर नया आयाम प्रदान करते हैं। अतः समाचार में सीधे-सीधे अत्यंत संक्षेप में ब्यौरा दे दिया जाता है जबकि फीचर में सरसता, रोचकता एवं कल्पनाशीलता का भी समावेश होता है।

समाचार की शैली का निर्धारण उपर्युक्त पाँच "क" (कौन, कब, क्यों आदि) करते हैं जबकि फीचर लेखन की शैली स्वतंत्र एवं वैविध्यमयी होती है। फीचर की प्रकृति मुक्तता की है तो समाचार घटनाओं से आबद्ध रहता है। फीचर उत्तम, मध्यम या अन्य पुरुष में भी लिखे जाते हैं जबकि समाचार केवल अन्य पुरुष में ही लिखे जा सकते हैं। फीचर की भाषा प्रभावोत्पादक, अभिव्यक्ति मार्मिक, पृष्ठभूमि रंगीन तथा प्रस्तुति भावात्मक होती है। फीचर में विश्लेषण प्रमुख होता है और समाचार में वर्णन प्रधान। फीचर समाचार की अपेक्षा दीर्घजीवी होते हैं।

समाचारों की नीरसता, एकरसता तथा शुष्कता फीचर में नहीं मिलती। फीचर लेखक फीचर द्वारा पाठक को बोझिल होने से बचाता है और आकर्षक तथा रोचक सामग्री प्रदान करता है। समाचार में कई बार पाठक पहला अनुच्छेद पढ़कर ही आगे का वर्णन अपठित छोड़ देता है तथा दूसरे समाचार पर दृष्टि डालता है। इसी क्रम में वह सभी समाचारों पर दृष्टिपात कर लेता है जबकि फीचर में वह आदि से अंत तक बंधा रहता है और पूरा पढ़े बिना उसे नहीं छोड़ता। छोटे, सरल, स्पष्ट एवं रुचिकर फीचर तो अपना पठनीय वैशिष्ट्य बना ही लेते हैं। पाठ्य सामग्री की विषय-वस्तु से पाठक का लगाव भी फीचर ही बढ़ाता है। फीचर की विशिष्ट अभिव्यक्ति ही पाठक के हृदय में सब कुछ देख लेने तथा संवेदना के साथ महसूस करने की प्रवृत्ति जगाती है।

अतः स्पष्ट है कि फीचर लिखते समय लेखक तथ्यों को प्रस्तुत ही नहीं करता अपितु उन तथ्यों में छिपे मानवीय रुचि एवं लोकहित के तत्वों का पता लगाकर उसे रूचिकर ढंग से प्रस्तुत करता है। उदाहरणार्थ यदि देश के विभिन्न भागों में स्थापित ऐतिहासिक किले, भवन, मंदिर, मजार, उपवन या बाजार आदि पर फीचर लिखने हों तो लेखक को स्वयं जाकर उनके भग्नावशेष देखने होंगे, उन पर लिखी सामग्री का अध्ययन करना होगा, वहाँ के रक्षक, चौकीदार, माली या गाइड आदि से बातचीत करनी होगी, ज्ञात हुए कतिपय संदर्भों की खोज बीन करनी होगी। ऐसे में संभव है कि लेखक को सदियों पूर्व घटी किसी प्रेमकथा की, किसी धोखे या विश्वासघात की, कत्ल, हत्या, आत्मोत्सर्ग अथवा आध्यात्मिक चमत्कार की दिलचस्प जानकारी हासिल हो। यही जानकारी लेखक को चमत्कृत करेगी और वह उससे संबद्ध अन्य स्रोतों का गहन अध्ययन कर नये-नये तथ्यों का पता करेगा। इन सब को आधार बनाकर ही वह बहुत से फीचर लिखकर पाठक एवं समाज को रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं महत्वपूर्ण पाठ्य सामग्री प्रदान करते हुए प्रतिष्ठा हासिल कर सकेगा। इसी प्रकार के विषयों से संबद्ध खोज बीन करके आप भी तरह-तरह के फीचर लिखने का प्रयास एवं अभ्यास कर सकते हैं। इस तरह के फीचर पढ़कर पाठकों को कहानी का सा आनंद मिलेगा और बहुत सी अपूर्व जानकारी भी मिल सकेगी। यथार्थ और सत्य का कल्पनामिश्रित यह घोल समाचार से कहीं अधिक वैशिष्ट्य हासिल कर लेता है। परिवेश एवं भौगोलिक स्थिति उसे विश्वसनीय बनाती है।

इसी प्रकार पत्र-पत्रिकाओं में सामाजिक अन्याय एवं अत्याचारों पर छपे बहुत से समाचारों पर भी अच्छे, प्रेरक, रोचक एवं जागृति पैदा करने वाले फीचर लिखे जा सकते हैं। 3 फरवरी, 1988 को कानपुर के एक साहू परिवार की तीन लड़कियों (बहनों) ने दहेज के अभाव में एक साथ आत्महत्या कर ली थी। यह समाचारपत्र-पत्रिकाओं में छपा था। पर इस समाचार को आधार बनाकर दिल-दहला देने वाली इस घटना पर जुलाई 88 में दूरदर्शन ने एक बहुत मार्मिक फीचर प्रदर्शित किया। इसी प्रकार भागलपुर के दंगों पर भी कुछ फीचर दिखाए गए। सन् 89 के चुनावों में बूथों पर कब्जा किए जाने जैसे विषयों पर भी बहुत ही मर्मस्पर्शी फीचर तैयार किए गए। इसी प्रकार पत्र-पत्रिकाओं में भी अनेकों फीचर छपे जिन्होंने विद्वत एवं शिक्षित पाठक-वर्ग को झकझोर कर रख दिया।

उन तीन बहनों के आत्महत्या प्रसंग पर आप भी फीचर लिख सकते हैं। उसके लिए आपको कानपुर जाकर तीनों लड़कियों के फोटो लेने होंगे। उनके घर, स्कूल, मौहल्ले में जाकर फोटो लेने होंगे। उनके प्राध्यापक, सखियाँ, परिवार के अन्य सदस्यों (माता, पिता, भाई, चाचा आदि) से बात-चीत करनी होगी, आस-पड़ौस के लोगों से मिलना होगा, छात्र-छात्राओं से विचार जानने होंगे, प्रशासन के लोगों से मिलना होगा, पुलिस के अधिकारियों से मिल कर पूरी जानकारी लेनी होगी तब कहीं संवेदनशील फीचर तैयार हो सकेगा।

अतः स्पष्ट है कि समाचार और फीचर में पर्याप्त अंतर है। यही अंतर फीचर के वैशिष्ट्य को भी रेखांकित करता है।

2.5.2 फीचर और लेख

लेख अंग्रेज़ी के "आर्टिकल" का पर्याय है। पत्रकारिता में भी इसका एक विशिष्ट स्थान है। लेख के अंतर्गत निर्वैयक्तिक ढंग से विषय को विवेचित-विश्लेषित किया जाता है। यों लेख और निबंध भी एक ही जान पड़ते हैं परंतु इन दोनों में भी सूक्ष्म अंतर है। जहाँ तक फीचर का प्रश्न है यह विषय के अनुसार सामयिक भी हो सकता है और ऐतिहासिक-सांस्कृतिक भी। फीचर में श्रेष्ठ गद्य के दर्शन भी होते हैं। लेख में लेखक प्रधान रहता है उसके विचार केंद्र में रहते हैं जबकि फीचर में ऐसा नहीं होता।

यों लेख और फीचर, दोनों ही पत्रकारिता से संबद्ध हैं। लेख के विषय विस्तृत और गहन होते हैं और मुख्य विषय के साथ उसमें कुछ गौण विषय भी समाहित होते या हो सकते हैं। लेख में विद्वता और गंभीरता भी प्रमुख रहती है जबकि फीचर में गंभीरता के साथ-साथ रोचकता, लालित्य एवं ज्ञानवर्द्धन प्रमुख रहता है। यों भी कह सकते हैं कि फीचर अनौपचारिक होता है जबकि लेख औपचारिक होता है। लेख में लेखक अपनी राय या विचार सीधे प्रस्तुत करता है और फीचर में इसे अप्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत करना ही उचित माना जाता है।

फीचर का विषय बहुत अधिक विस्तृत नहीं होता और न ही उसमें मात्र तथ्यों, आँकड़ों की भरमार होती है। जबकि लेख में तथ्यों और तिथियों की अनिवार्यता होती है। लेख में चित्र या कार्टून भी नहीं होते। फीचर में ये अत्यंत सहायक सिद्ध होते हैं। अतः फीचर घटनाचक्र तथा लोक प्रतिक्रिया पर केंद्रित रहता है जबकि लेख में प्रवृत्ति और विचारधारा प्रधान रहती है। अगर संक्षेप में कहें तो लेख मस्तिष्क की उपज है और फीचर मस्तिष्क तथा हृदय का मिश्रित रूप है।

2.5.3 फीचर और रिपोर्ताज

फीचर और रिपोर्ताज में परस्पर अनेक समानताएँ मिलती हैं। ये दोनों ही विधाएँ खोज-बीन, यात्राएँ, व्यक्तिगत संपर्क, साक्षात्कार एवं चित्रादि के आधार पर पल्लवित होती हैं। अन्य विधाओं में तो पुस्तकीय अध्ययन प्रधान रहता है किंतु इन दोनों में ही लेखक के व्यक्तिगत निरीक्षण एवं अनुभूतियों पर विशिष्ट बल दिया जाता है। दोनों में ही कम-से-कम शब्दों में कथ्य का मर्मस्पर्शी चित्र उकेर कर इस रूप में रखा जाता है कि पाठक के अंतर्मन पर एक अमिट तथा विस्मृत न होने वाली छाप रह जाती है। फीचर और रिपोर्ताज में लेखक छोटी-छोटी बातों, घटनाओं, संदर्भों एवं स्थितियों का संकलन करता हुआ अपनी विधा का ताना-बाना बुनता है। ये घटनाएँ पाठक के समक्ष होकर भी ओझल सी हो चुकी होती हैं। दोनों में ही आँकड़ों पर कम, प्रत्यक्ष घटित पर अधिक विश्वास किया जाता है।

किंतु इतने पर भी दोनों विधाओं में कुछ अंतर है। फीचर जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि सामयिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आदि विषयों पर लिखे जा सकते हैं किंतु रिपोर्ताज अधिकांशतः समसामयिक महत्वपूर्ण घटना पर ही लिखे जाते हैं। फीचर का विषय कोई भी हो सकता है जबकि रिपोर्ताज में ऐसा नहीं होता। फीचर जीवित या दिवंगत नेता, साहित्यकार, कलाकार, अभिनेता आदि पर भी लिखे जा सकते हैं पर रिपोर्ताज में ये विषय नहीं होते। ऐसे ही फीचर में आकर्षक रोचक विषय भी हो सकते हैं पर रिपोर्ताज में विषय आकर्षण हो यह जरूरी नहीं तथा रिपोर्ताज में मर्मस्पर्शी दृष्टि प्रधान होती है, रोचक नहीं। मनोरंजन रिपोर्ताज से कोसों दूर है। रिपोर्ताज तो सामान्यतः युद्ध, अकाल, बाढ़, अग्निकांड, करफ्यू, सूखा या महामारी आदि सामयिक घटनाओं पर ही अधिक लिखे जाते हैं। ये पाठक के हृदय को झकझोर कर रख देने वाले विषय हैं। रिपोर्ताज लेखक का उद्देश्य तो किसी घटना-विशेष की मार्मिक रिपोर्ट तैयार करके उसे तत्काल प्रकाशित कर देना होता है। यह भी सत्य है कि रिपोर्ताज लेखक के पास इतना समय या अवकाश नहीं होता कि वह संदर्भ ग्रंथों या प्राचीन स्रोतों आदि का अध्ययन-विवेचन करे। इन सबकी संभावना फीचर में होती है। अतः फीचर अपने आप में एक विस्तृत, गहन एवं विशाल परिप्रेक्ष्य रखता है।

इसी प्रकार फीचर और संस्मरण, फीचर और कहानी, फीचर और एकांकी, फीचर और निबन्ध तथा फीचर और जीवन-वृत्त आदि में भी कुछ साम्य-वैषम्य देखे जा सकते हैं, परन्तु इन सबके बाद भी यही स्पष्ट होता है कि फीचर अपने तत्वों एवं प्रकारों के कारण तो विशिष्ट है ही उसकी रचना-प्रक्रिया, प्रस्तुति तथा स्वरूप भी उसके वैशिष्ट्य के ही परिचायक हैं।

2.6 फीचर लेखन का वैशिष्ट्य

इस समग्र विवेचन से यह स्पष्ट है कि फीचर कोई साधारण विद्या नहीं है। विषय एवं प्रस्तुति की गंभीरता ही इसे अन्य विधाओं से पृथक या विशिष्ट नहीं ठहराती, इसकी व्यापकता, गहनता एवं रोचकता भी इसे एक खास पहचान देती है। ब्यौरों का समावेश, संतुलित विषय-विवेचन, मार्मिक अभिव्यक्ति, संयोजन का कौशल, दृष्टांत, चित्रादि की विश्वसनीयता आदि तत्व इसे सामान्य से असामान्य बनाते हैं तो विषय की आत्मा के दर्शन कराती कला, सरल, सहज, चुस्त एवं संक्षिप्त वाक्य-गठन तथा मनमोहक शैली उसे जीवंत और प्राणवान बनाते हैं। सरल, सजीव, ज्ञानवर्द्धक, सार्थक, संक्षिप्त, विषय के अनुरूप तथा व्यंजक शीर्षक इसकी शोभा को और समृद्ध करते हैं। अतः स्पष्ट है कि भावों और विचारों के समन्वय के अद्‌भुत उदाहरण के रूप में स्थापित इस "फीचर" का वैशिष्ट्य भी बहुमुखी ही है।

बोध प्रश्न

5) फीचर-लेखन के विविध लाभ क्या हैं? लगभग आठ-दस पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6) फीचर और समाचार नामक विधाओं में मिलने वाले साम्य एवं वैषम्य पर आठ-दस पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7) निम्नलिखित विषयों पर पाँच-पाँच पंक्तियाँ लिखिए–

i) फीचर और लेख :

.....

.....

.....

.....

.....

ii) फीचर और रिपोर्ताज़

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

1) "विकलांगों का नाम सर्वांगों की चांदी"–फीचर का गंभीरता से अध्ययन करें और अपने शब्दों में दस-बारह पंक्तियाँ लिखकर बताएँ कि इस फीचर में किन-किन पक्षों एवं संदर्भों की चर्चा की गई है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) "थारू : अंधेरे से उजाले की ओर"–फीचर में थारू जाति में आ रहे बदलाव पर लगभग आठ-दस पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.7 सारांश

- फीचर-लेखन रोचक, आकर्षक, भावसिक्त एवं सहज होकर भी एक जोखिम एवं दायित्व का कार्य है जिसकी रचना-प्रक्रिया का वैशिष्ट्य परिश्रम-साध्य है।
- फीचर लेखक को विषय एवं भाषा-शैली की दृष्टि से वैविध्य एवं वैशिष्ट्य बनाए रखना होता है।
- फीचर-लेखन की प्रक्रिया में विषय से परिचय, अनुभूति-यात्रा, चिंतन-मनन, शोध-परिशोध, यात्रा-साक्षात्कार एवं तथ्य संग्रह आदि सोपान पार करते हुए ही लेखक किसी सार्थक, जीवंत, रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक फीचर का सृजन करने में सफल होता है।

- फीचर लेखक प्रामाणिकता, निष्पक्षता, तटस्थता, विश्लेषणात्मकता, आक्षेपहीनता तथा लोकहित आदि को ध्यान में रखते हुए आदर्श भाषा एवं शिष्ट शैली के प्रयोग से ही फीचर को मार्मिक, प्रभावी एवं दीर्घजीवी बना कर प्रस्तुत करता है।
- फीचर-लेखन से लेखक, पत्र-पत्रिका तथा पाठक-वर्ग (समाज) को परस्पर अर्थ, ज्ञान, आत्म प्रसार एवं प्रतिष्ठा लाभ प्राप्त होते हैं।
- फीचर जैसी विशिष्ट विधा समाचार, लेख एवं रिपोर्ताज़ जैसी महत्वपूर्ण विधाओं से साम्य-वैषम्य रखते हुए भी अपना एक खास वैशिष्ट्य रखती है।

2.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) i) ✓
   ii) ✗
   iii) ✓
   iv) ✗
   v) ✓

2) i) देखिए उपभाग 2.2.3
   ii) देखिए उपभाग 2.2.6
   iii) देखिए उपभाग 2.2.4

3) i) देखिए उपभाग 2.3.1
   ii) देखिए उपभाग 2.3:4
   iii) देखिए उपभाग 2.3.2

4) i) ✗ ii)✓ iii)✓ iv) ✗

5) देखिए भाग 2.4

6) देखिए उपभाग 2.5.2

7) i) देखिए उपभाग 2.5.2
   ii) देखिए उपभाग 2.5.3

अभ्यास

1) फीचर का गंभीरता से अध्ययन करते हुए तत्व खोजिए।

2) फीचर का गंभीरता से वाचन-अध्ययन कीजिए और स्वयं लिखिए।

इकाई 3 विषय का चयन, सामग्री-निर्धारण एवं प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य
3.1 प्रस्तावना
3.2 फीचर के विभिन्न अंग
  3.2.1 अंतर्वस्तु
  3.2.2 संरचना
  3.2.3 भाषा एवं शैली
3.3 विषय का चयन
  3.3.1 रुचि एवं विशेषज्ञता
  3.3.2 प्रकाशन की प्रकृति
  3.3.3 विषय की प्रासंगिकता
3.4 सामग्री संकलन के स्रोत
3.5 सामग्री का संपादन एवं संयोजन
  3.5.1 पाठक वर्ग का निर्धारण
  3.5.2 समाज पर प्रभाव
  3.5.3 स्थान, आकार एवं चित्र
  3.5.4 अभिव्यक्ति की सहजता
  3.5.5 पत्र-पत्रिका का हित-अहित
3.6 फीचर की उपयोगिता और देन
3.7 सारांश
3.8 उपयोगी पुस्तकें (पूरे खंड के लिए)
3.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

फीचर लेखन पाठ्यक्रम की यह तीसरी इकाई विषय के चयन एवं प्रस्तुति पर है। इस इकाई के गहन अध्ययन से आप–

- फीचर की अंतर्वस्तु, संरचना तथा भाषा-शैली जैसे महत्वपूर्ण अंगों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- विषय चयन के विभिन्न आधारों को समझा सकेंगे;
- सामग्री-संकलन के स्रोतों का परिचय दे सकेंगे;
- सामग्री-संपादन एवं संयोजन की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए उनकी उपयोगिता बता सकेंगे;
- फीचर के तीन प्रमुख सोपानों का विश्लेषण करते हुए उसके अभिव्यक्तिगत वैशिष्ट्य को स्पष्ट कर सकेंगे; तथा
- फीचर की उपयोगिता एवं देन पर प्रकाश डाल सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

अब तक की दो इकाइयों में यह स्पष्ट हो चुका है कि फीचर भाव-प्रधान होता है। पाठक की मानसिक एवं बौद्धिक दुनिया में ज्ञान तथा सूचना का प्रसार करते हुए हृदय तक उतर आता है। वह शब्द जाल में न पड़कर विषय की ठोस स्थापना और पाठक के सम्मोहन से ही अपने वैशिष्ट्य को निर्धारित करता है। उसमें भावना के साथ गंभीरता, विचार के साथ सहानुभूति, सूचना के साथ ज्ञानवर्द्धन तथा रोचकता के साथ उपयोगिता तो रहती ही है,

साथ ही फीचर लेखन के लिए चुने जाने वाले विषय की उपयोगिता एवं भूमिका को स्पष्ट करने का दायित्व भी रहता है। समाचार के तथ्यों को विषय में ढालकर पाठक की सुविधा के लिए फीचर को विश्लेषणात्मक बनाया जाता है। फीचर में विषय की भावनात्मक प्रस्तुति पाठक पर जितनी शक्ति से प्रभाव डालती है पाठक उतनी ही तुष्टि महसूस करता है। इसी से पाठक का आकर्षण बढ़ता है और वह विषय-विशेष के प्रति अपनी रुचि को बढ़ाता जाता है। इसी से व्यक्ति, संस्था, ज्ञान-विज्ञान या अन्य विषय केन्द्र में आकर विशिष्ट महत्व प्राप्त करते हैं। व्यक्ति या समष्टि रूप में कोई घटना, वस्तु या स्थिति पहले लेखक को प्रभावित करती है। तभी उसके मन मस्तिष्क में प्रतिक्रिया के स्फुलिंग उठते हैं परिणामतः यह विषय को शब्दबद्ध कर अभिव्यक्ति का वैशिष्ट्य प्रदान करता है। इसी से "विषय" लेखक की सम्पत्ति मात्र न रहकर सार्वजनिक एवं सार्वभौमिक बन जाता है।

इस इकाई में लेखक के इसी विषय चयन पर, उसके चयन के कारण एवं उपयोगिताओं पर तथा विषय-चयन से प्रस्तुति तक पहुँचने की स्थितियों का विश्लेषण किया जा रहा है। फीचर के विषय का मूल कथ्य या उसकी अंतर्वस्तु क्या होती है? लेखक किस उद्देश्य तथा दृष्टि को केन्द्र में रखकर फीचर की अंतर्वस्तु, संरचना और भाषा-शैली का गठन करता है। विषय चयन में लेखक को किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है? विषय से सम्बद्ध सामग्री के संकलन स्रोत क्या होते हैं? और फीचर में सामग्री के संयोजन, संपादन के लिए लेखक को किन स्थितियों, नियमों, कारणों एवं धारणाओं से बाध्य होना पड़ता है ये सभी विषय इस इकाई में विश्लेषित किए गए हैं। आप अभी तक फीचर के अर्थ, स्वरूप एवं वैशिष्ट्य का व्यापक एवं गहन अध्ययन कर चुके हैं। विषयों के आधार पर फीचर के प्रकार भी जान चुके हैं। यहाँ हम फीचर के प्रकारों को निर्धारित करने वाले उन्हीं विषयों को फीचर के लिए क्यों और कैसे चुना जाता है, विषय के अंग या सोपान कितने होते हैं तथा उसे अभिव्यक्तिगत-नियमों में रोचक एवं प्रभावी ढंग से कैसे बांधा जाता है, इसकी व्याख्या भी करेंगे।

वास्तव में सैद्धांतिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने वाली ये तीनों इकाइयाँ आगे की सभी इकाइयों को नियमित करेंगी। पुस्तक-समीक्षा, साक्षात्कार, महिलाओं के लिए लेखन, ग्रामीण समस्याओं पर लेखन, यात्रा-लेखन तथा सामाजिक, सांस्कृतिक आदि विषयों पर फीचर लेखन के बारे में आप विस्तार से आगे अध्ययन-विश्लेषण करेंगे। यहाँ उसकी पृष्ठभूमि स्पष्ट की जा रही है।

यहाँ एक बार फिर यह दोहराना अनुचित नहीं कि विषय का चयन तो महत्वपूर्ण है ही, उसकी प्रस्तुति भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। कई बार उत्कृष्ट, समसामयिक एवं प्रासंगिक विषय भी संतुलित प्रस्तुति के बिना निर्जीव बन जाते हैं। प्रस्तुति का वैशिष्ट्य तो बेजान विषय को भी जीवन्त बना देता है। अतः लेखक विषय-विश्लेषण तो करे, पर वह उपदेशक न बन जाए, यह सदैव ध्यान रखा जाना चाहिए। बोझिल और व्यक्तिगत उपदेश विषय को प्रभावहीन बनाता है, पाठक उससे ऊबने लगते हैं और लेखक की प्रतिष्ठा धुँधलाने लगती है। लेखक विषय को खंडन-मंडन सहित प्रस्तुत तो करे पर अपनी राय को आरोपित करने का प्रयास भी न करे तो उचित है। निपुण लेखक अपने सुझाव एवं रायमुक्त दृष्टि को शालीनता के आवरण में ऐसे प्रस्तुत कर देते हैं कि पाठक को पता तक नहीं चलता। ऐसा करने से विषय उभर कर सामने आता है लेखक का व्यक्तित्व नहीं। यह अपेक्षित भी है। सुगठित कथ्य को रोचक कल्पना तथा ओजस्वी शैली में प्रस्तुत करते हुए फीचर लेखक पाठक की जिज्ञासाओं को तृप्त करने का कार्य करता है। इसी से विषय दीर्घजीवी, प्रासंगिक एवं रोचक भी बन जाते हैं।

3.2 फीचर के विभिन्न अंग

दैनिक घटनाओं और समाचारों से मानवीय पक्षों को खोज कर जीवन के सुखांत और दुखान्त पहलुओं पर विस्तार-विश्लेषण करने वाला फीचर घटना या स्थिति के आकर्षक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए पाठक के मर्म को छूता है। किन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि फीचर लेखक फीचर के लिए बहुत से स्रोतों को अपनाते हुए विषय सम्बन्धी जो सामग्री एकत्रित करता है उसे जाँच-परख कर एक व्यवस्था देता है। इस व्यवस्थित रूप के बाद ही वह उसे पत्र या पत्रिका में प्रकाशित करवाने की प्रक्रिया में जुटता है। बहरहाल, फीचर जब प्रकाशित हो जाता है तो पाठक के सामने जो अंग उभर कर आते हैं वे मूलतः तीन

होते हैं। साक्षात् या भौतिक रूप में इन तीनों अंगों को अलग-अलग नहीं देखा जा सकता। इन तीनों के सम्मिश्रण से ही फीचर का शरीर या आकार बनता है। इसे और स्पष्ट करें तो यह भी कह सकते हैं कि जैसे शरीर के हाथ, पैर, मुँह, पेट आदि होते हैं, इन सबके मिलने से ही शरीर बनता है। इनमें से किसी एक या दो को शरीर नहीं कह सकते। इसी प्रकार फीचर के भी कुछ अंग होते हैं। यों अंगों पर विस्तार से चर्चा करें तो बहुत-सी बातों को लेना होगा किन्तु स्पष्टता के लिए यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त है कि फीचर में तीन अंग मुखर या प्रधान होते हैं। ये तीन अंग हैं—अंतर्वस्तु, संरचना तथा भाषा-शैली। अंतर्वस्तु को मूल कथ्य या संवेदना भी कह सकते हैं। संरचना को फीचर का बाह्य आकार माना जा सकता है तथा भाषा-शैली को फीचर के व्यक्तित्व की पहचान कराने वाला महत्वपूर्ण अंग माना जा सकता है। यहाँ हम फीचर के किसी भी विषय को ध्यान में रख कर इन तीनों अंगों को देख सकते हैं। कुछ फीचर सूक्ति या उक्ति परक, परिवेश या वातावरण परक तथा घटना या स्थिति परक भी लिखे जाते हैं। सभी प्रकार के फीचरों को ध्यान में रखते हुए हम देखें तो ये तीन अंग सार्वभौमिक ही जान पड़ते हैं। यहाँ इन तीनों अंगों पर संक्षेप में चर्चा कर लें तो अनुचित न होगा।

3.2.1 अंतर्वस्तु

फीचर में घटना या क्रिया व्यापार की मूल वस्तु जिसमें लेखक का कथ्य, सम्प्रेष्य या उस विषय की मूल संवेदना निहित हो, इसे अंतर्वस्तु कहते हैं। फीचर लेखक अपने मूल विषय के कथ्य को, उसकी घटनाओं एवं स्थितियों को चुनकर इस रूप में संजोता है कि उनमें परस्पर सुसम्बद्धता रहती है और वह एक कथात्मक घटना-सी प्रतीत होती है। पाठक उसे पढ़कर सहज विश्वसनीय मानने लगता है और उसमें रम-सा जाता है। कह सकते हैं कि अंतर्वस्तु स्वाभाविक एवं प्रभावी बन कर सामने आती है।

फीचर की अंतर्वस्तु में भी कुछ खास गुण होने चाहिएँ। फीचर में निरी तथ्यात्मकता उसे नीरस बनाती है तो संवेदनात्मक क्षणों की अभिव्यक्ति उसे रोचकता प्रदान करती है। उसकी वस्तु में कुतूहल उत्पन्न करने की क्षमता तथा घटनाओं और स्थितियों की उत्साह तथा जिज्ञासावर्द्धक अभिव्यक्ति पाठक को तन्मय बनाती है। अतः फीचर की अन्तर्वस्तु को सुगठित तथा परस्पर निबद्ध होने के साथ-साथ रोचक भी होना ही चाहिए।

इसके साथ ही एक महत्वपूर्ण बात है मूल कथ्य की गत्यात्मकता। मूल कथ्य के भी यों तो कई चरण हो सकते हैं किन्तु अत्यन्त सूक्ष्म विभाजन में न पड़कर फीचर-लेखक को यह तो ध्यान रखना ही चाहिए कि सर्वप्रथम फीचर की मूल संवेदना को प्रस्तावित कर वह विकास की ओर उन्मुख करे तथा धीरे-धीरे उत्कर्ष तक ले जाए।यही कुतूहल की चरम सीमा है। फीचर लेखक जिस मुख्य विचार, दृष्टिकोण या कार्य-विशेष को मन में सोचकर फीचर लिखता है उसे उद्देश्य (थीम) भी कहते हैं। बहुत बार देखा गया है कि सुगठित तथा रोचक अंतर्वस्तु भी फीचर को प्रभावी नहीं बना पाती। वहाँ दोष "थीम" अच्छा न होने को ही दिया जाता है। अतः स्पष्ट है कि फीचर की अंतर्वस्तु विषय की गंभीरता एवं स्तर के अनुसार ही अपना स्वरूप बनाती है और इसी से फीचर की सफलता भी निर्धारित-नियंत्रित होती है।

3.2.2 संरचना

फीचर का दूसरा प्रमुख अंग है संरचना। इसे फीचर का बाह्य आकार भी कह सकते हैं। अर्थात् फीचर के विषय को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है। किस पक्ष को कितना महत्व या स्थान दिया गया है उसमें तथ्यात्मकता तथा कल्पनाशीलता का अनुपात क्या है? इस तरह के बहुत से पक्ष इस अंग के अंतर्गत स्पष्ट किए गये हैं फीचर की संरचना को भी सुविधा की दृष्टि से तीन भागों में बाँट सकते हैं—**आरम्भ, मध्य** तथा **अंत**। फीचर लेखक सर्वप्रथम अपनी दृष्टि को तथा अपने कथ्य एवं सम्प्रेष्य को प्रस्तावित करता है। विषय क्या है तथा उसमें किस मूल कथ्य को लिया जा रहा है? विषय सम्बन्धी इतर सामग्री का परिचय देकर लेखक अपनी बात का आधार बनाता है। एक तरह से यह विषय का प्रवेश द्वार ही है। फीचर के **श्रीगणेश** में स्थान पाने वाले इस अंग में ही शीर्षक भी समाहित है। शीर्षक ही पाठक को आकर्षित एवं प्रभावित कर विषय से जोड़ता या बांधता है। यही वह चरण है जहाँ पाठक का चाव बढ़ता या विकसित होता है। पहला भाग ही फीचर के पाठक को फीचर के मूल कथ्य, उसकी संवेदना तथा उसकी उपयोगिता को भी स्पष्ट कर आगे का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः फीचर की संरचना का यह प्रथम चरण अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है।

दूसरा चरण ह **मध्य**। फीचर के पाठक को जब यह ज्ञान हो जाता है कि किस विषय चेतना को फीचर के भीतर उजागर किया गया है तो वह प्रवाहित होकर वहाँ पहुँचता है। प्रथम अंश की रोचकता उसे गहराई में उतरने तथा विषय के मूलभाव तक पहुँचने के लिए प्रोत्साहित करती है। आकर्षण अब रुचि में बदल जाता है और पाठक विषय में डूबने लगता है। यहीं आकर वह वैचारिक धरातल की ज्ञानवर्द्धक सामग्री संजोता है तथा विषय-विश्लेषण से लाभान्वित होकर फीचर की आत्मा तक पहुँचता है। लेकिन यहाँ आते-आते उसकी उत्सुकता अत्यंत बढ़ जाती है। वह यथाशीघ्र पूरे फीचर को पढ़ जाना चाहता है। यही एक अच्छे फीचर और उपयुक्त विषय चयन की पहचान भी है।

सरंचना का तीसरा चरण है **समापन या अंत**। इसे निष्कर्ष भी कह सकते हैं फीचर के किसी भी विषय को इस रूप में निष्कर्ष तक ले जाना चाहिए कि पाठक निष्कर्ष को अवश्य पढ़े। हालांकि, निष्कर्ष कैसा हो यह एक अलग संदर्भ है। किन्तु पाठक की पूरी जिज्ञासा, उसका पूरा कुतूहल उसे इतना बाध्य करे कि वह निष्कर्ष पढ़ कर ही फीचर को छोड़े, यही फीचर लेखक की सफलता है। कई फीचर ऐसे भी देखे गए हैं कि पाठक प्रारम्भ में या मध्य तक आते-आते ही निष्कर्ष क्या होगा—यह समझ जाता है परिणाम वह आगे का फीचर पढ़े बिना ही छोड़ देता है। अतः फीचर लेखक को संरचना की दृष्टि से यह भी ध्यान रखना चाहिए। निष्कर्ष में पाठक की सभी जिज्ञासाएँ शांत होनी चाहिएँ। विषय का पूरा स्पष्टीकरण हो जाना चाहिए। लेखक का मूल मंतव्य तथा विषय का संदेश सम्प्रेषित हो जाना चाहिए। पाठक फीचर को पढ़ कर अपनी एक धारणा बना सके यह भी फीचर तथा फीचर लेखक के लिए प्रशंसनीय ही होता है।

इस प्रकार फीचर की संरचना में प्रारम्भ, मध्य तथा अंत का यह संतुलित वर्णन उसे आकर्षक, उपयोगी, रोचक तथा प्रतिष्ठित बनाता है। यों फीचर के नियमों की सावधानी भी आवश्यक होती है। फीचर के उन नियमों तथा गुणों की चर्चा पहले की जा चुकी है। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि फीचर का संरचनात्मक गठन विषय को अनुपात देता है तथा संतुलन स्थापित करते हुए अपेक्षानुसार महत्व भी प्रदान करता है।

3.2.3 भाषा एवं शैली

फीचर का तीसरा प्रमुख अंग है उसकी भाषा और शैली। विषय का उपयोगी, गंभीर एवं महत्वपूर्ण होना जितना आवश्यक है उतना ही उसका गंभीरता एवं गरिष्ठता से अभिव्यक्त होना भी। विषय के अनुकूल शब्द-चयन तथा भाषा-गठन का भी अपना खास महत्व है। कोई भी विषय भाषा की ताकत से ही जीवंत बन पाता है तथा भाषिक लापरवाही से ही प्रभावशून्य भी हो जाता है। भाषिक तत्व, उसकी सृजनात्मकता तथा अभिव्यक्तिगत उन्मुक्तता से विषय को निखार प्राप्त होता है। दृष्टांत देते हुए धाराप्रवाह-शैली में फीचर लेखक अपनी बात को इस रूप में प्रस्तुत करता है कि पाठक के मर्म तक वह उतर जाती है। शैली में व्यंग्य, चित्रात्मकता तथा सूक्तिपरक उक्तियाँ समाहित हो जाती हैं और विषय को बोधगम्य तथा ग्राह्य बनाकर पाठक के मन पर गहरी छाप छोड़ती हैं। भाषा और शैली अंतर्वस्तु को आकार देती है तथा संरचना के प्रथम चरण से तृतीय चरण तक की यात्रा पूरी कराती है। कई बार विषय अत्यंत गंभीर तथा तथ्यात्मक भी होते हैं। ऐसे में भी शैलीगत रोचकता तथा सरसता ही उसे नीरस या उबाऊ होने से बचाती है। यहीं फीचर लेखक की मौलिकता की पहचान भी होती है। नए ढंग से विचार करना जितना मौलिक है उतना ही मौलिक विषय को नए ढंग से प्रस्तुत करना भी है। अतः फीचर में भाषा-शैली का भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा-शैली में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, इसकी चर्चा भी पहले की जा चुकी है।

3.3 विषय का चयन

फीचर लेखक को फीचर लिखने से पहले यह विचार लेना आवश्यक है कि वह किस विषय पर और क्यों फीचर लिखना चाहता है? फीचर लिखने के लिए सामान्यतः किसी भी बिषय को चुना जा सकता है किन्तु उस विषय विशेष के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना अत्यंत जरूरी है। यों तो फीचर लेखक को कोई भी सामयिक विषय चुनौती दे सकता है। फीचर लेखक को उसके लिए तैयार भी रहना चाहिए। फीचर लेखक के गुणों की चर्चा करते हुए हम बहुत सी अपेक्षाओं पर विचार कर भी चुके हैं किन्तु यहाँ यह स्पष्ट

करना अनिवार्य है कि लेखक को परिश्रमी, अन्वेषी, धैर्यशील तथा दूरदर्शी होने के साथ-साथ कुछ अन्य बातों को भी केन्द्र में रखकर आगे बढ़ना चाहिए। यहाँ फीचर के विषय चयन से पहले ध्यान रखने योग्य उन्हीं पक्षों पर विचार किया जा रहा है।

3.3.1 रुचि एवं विशेषज्ञता

फीचर लेखक को अर्थ-लाभ या प्रतिष्ठा-लाभ के लालच में किसी भी विषय को लेखन हेतु चुन लेना सर्वथा अनुचित है। जब तक लेखक की विषय-विशेष में रुचि एवं विशेषज्ञता न होगी, वह विषय के साथ न्याय नहीं कर सकेगा। बल्कि उससे विषय भ्रामक तथा अव्यवस्थित रूप में सामने आयेगा। फीचर लेखक का अपना एक गंभीर दायित्व भी होता है जिसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। यह एक अलग बात है कि विषय में विशेषज्ञता न हो तो गंभीर अध्ययन मनन तथा खोज बीन करके लेखक उस विषय का विशेषज्ञ बनने का प्रयास करे। किन्तु यह तभी संभव होगा जब वह उस विषय में रुचि लेगा। रुचि के कारण ही उसका विषय में मन लगेगा और वह परिश्रम भी कर सकेगा। बिना रुचि और परिश्रम के वह विषय को विश्लेषित-विवेचित भी न कर सकेगा। परिणामतः फीचर का उद्देश्य विफल हो जाएगा।

प्रत्येक लेखक का कोई-न-कोई उद्देश्य तथा पाठक के प्रति उत्तरदायित्व भी होता ही है। पाठक को मनोरंजन प्रदान करने से ही यह दायित्व पूर्ण नहीं होता है। ज्ञानवर्द्धन, जागृति तथा परिवेश एवं पृष्ठभूमि को चित्रांकन के साथ-साथ पाठक को दिलचस्प जानकारी देना और उसकी कल्पना-शक्ति को जगाना भी तभी संभव है जब लेखक स्वयं विषय से तदाकार कर सकेगा। वह विषय में स्वयं रस लेगा तभी पाठक तक उस आनन्द को पहुँचा सकेगा।

फीचर लेखक को विषय चुनने के पहले अपनी सभी सीमाओं तथा विशेषताओं पर विचार करते हुए यह निर्णय लेना चाहिए कि उसे सत्य की गहन खोज करके पाठक के समक्ष लाना है। लेखक को फीचर के साथ न्याय करते हुए उसे समाचार बनने से तो बचाना ही है पाठक की उत्सुकता को संतुष्ट भी करना है। नई-नई जानकारियाँ देने के लिए लेखक को विषय की गहराई में उतरना और डूबना होता है। बिना विषय में डूबे पार लगने की कोशिश से फीचर-लेखक स्वयं डूब जाता है। वह पाठक वर्ग में प्रतिष्ठा भी हासिल नहीं कर पाता। उसके फीचर दीर्घजीवी नहीं बन पाते। उसके प्रति एक साधारण सी धारणा बन जाती है। अतः फीचर का विषय चुनने से पहले लेखक को विषय में अपनी रुचि जगानी तथा बढ़ानी चाहिए। संबद्ध सामग्री का विस्तृत, व्यापक एवं गहन अध्ययन-मनन करना चाहिए। अपेक्षित तथ्य एवं प्रमाण जुटाकर ही उसे स्वरूप प्रदान करना चाहिए। इसी से उत्साहवर्द्धन होता है तथा लेखक में एक विश्वास भी जगता है। उसकी विषय संबंधी जानकारी अत्यंत आधुनिक, नवीनतम तथा अद्यतन भी होनी ही चाहिए।

3.3.2 प्रकाशन की प्रकृति

फीचर लेखक को किसी भी विषय को चुनते समय इस तथ्य को भी सामने रखना चाहिए कि वह फीचर किस पत्र-पत्रिका के लिए लिख रहा है? उस पत्र-पत्रिका का स्तर, पाठक-वर्ग, वितरण-क्षेत्र तथा पत्रिका का प्रकार या वर्ग कैसा है? पत्रिका साहित्यिक है, राजनीतिक है, सामाजिक है, वैज्ञानिक है या अन्य किसी वर्ग की। पत्रिका बच्चों की है, नारी वर्ग की है या खेल आदि की? इसी प्रकार इसका पाठक वर्ग कहाँ और कितना है? उनकी अपेक्षाएँ क्या हैं? ऐसे कितने ही संदर्भ हैं जिन्हें विचार कर ही लेखक को फीचर लेखन के लिए अग्रसर होना चाहिए। इन सबके साथ-साथ एक और महत्वपूर्ण पक्ष है, पत्र-पत्रिका की प्रकाशन-अवधि क्या है? जिस पत्र-पत्रिका के लिए फीचर लिखा जा रहा है, वह दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक या वार्षिक आदि में से कैसी पत्रिका है? इसके साथ ही एक अन्य पक्ष भी ध्यातव्य है और वह है फीचर का आकार। पत्र-पत्रिका में फीचर को कहाँ और कितना स्थान मिलेगा इसका विचार भी फीचर लेखक को कर लेना चाहिए। कई बार फीचर की गंभीरता और लेखक का परिश्रम पत्रिका के स्तर से तो बाहर होता ही है, पत्रिका में मिलने वाले स्थान एवं आकार से भी बाहर होता है। यों भी कह सकते हैं कि जिस विषय को फीचर में प्रभावी ढंग से ढालने के लिए कम-से-कम पाँच सौ शब्द लिखना अत्यंत आवश्यक है, उसे पत्र-पत्रिका की सीमा के कारण दो सौ या तीन सौ शब्दों में लिखने को कहा जाए तो इसे फीचर और फीचर लेखक के प्रति अन्याय ही कहा जाएगा। किन्तु फीचर-लेखक को इन सभी बातों पर भी विचार

करके ही आगे बढ़ना होता है। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर ही वह फीचर का विषय चुनता है। अतः पत्र-पत्रिका के आकार एवं स्थान की सीमा भी फीचर-लेखक को स्वीकारनी ही पड़ती है।

फीचर लेखक के सामने दो तरह की स्थितियाँ होती हैं। एक स्थिति में तो वह स्वेच्छा से फीचर के विषय को चुनता और फीचर लिखता है। तदोपरान्त वह किसी भी पत्र-पत्रिका को प्रकाशनार्थ भेजता है। वहाँ पत्र-पत्रिका के सम्पादक अपनी अपेक्षानुसार उसे घटा-बढ़ा भी लेते हैं। उसका स्थान भी वे स्वयं निर्धारित करते हैं। दूसरी स्थिति वह है जहाँ फीचर-लेखक पत्र-पत्रिका की अपेक्षा को ध्यान में रखकर ही विषय चुनता है तथा उन्हीं के निर्देशानुसार फीचर का आकार भी निर्धारित करता है।

फीचर लेखक को पत्र-पत्रिका में फीचर भेजने के लिए उनके प्रकाशन समय को तो ध्यान में रखना ही होता है साथ ही विषय चयन के लिए समसामयिक अपेक्षाओं का ध्यान रखना भी उसके लिए जरूरी होता है।

घटनाएँ, पर्व, त्यौहार तथा स्थितियाँ भी लेखक को विषय चयन के लिए बाध्य करती हैं। अक्सर देखा गया है कि होली, दीपावली, दो अक्तूबर, पन्द्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी या अन्य धार्मिक एवं राष्ट्रीय पर्वों के अवसर पर पत्र-पत्रिकाओं में नए-नए फीचर छपते हैं। इसी प्रकार कभी मेला, खेलोत्सव या अन्य कोई उत्सव फीचर के विषय बनते हैं तो कभी सूखा, महामारी, दुर्घटना, चुनाव आदि को लेखक फीचर का विषय बनाता है। इसी प्रकार सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक आदि विषयों का चयन भी फीचर के लिए किया जाता है। प्रत्येक पत्र-पत्रिका में विषय आदि के आधार पर स्थान एवं आकार पूर्वनिश्चित होता है। फिल्म सम्बन्धी फीचर या समाचार कुछ पूर्व निश्चित पृष्ठों पर ही दिए जाते हैं। इसी प्रकार राजनीतिक, सामाजिक, खेल या व्यापार सम्बन्धी सामग्री का भी स्थान एवं पृष्ठ निश्चित होता है। ये सभी बातें फीचर लेखक को विषय-चयन एवं आकार-निर्धारण के लिए बाध्य करती हैं। अतः फीचर-लेखक को इन सभी अपेक्षाओं का ध्यान रखना चाहिए।

3.3.3 विषय की प्रासंगिकता

फीचर लेखन के लिए विषय-चयन करते समय विषय की प्रासंगिकता का ध्यान रखना भी अत्यंत आवश्यक होता है। फीचर लेखक मूलतः पत्रकारिता से सम्बद्ध व्यक्ति ही हो यह जरूरी तो नहीं किन्तु फिर भी उसे सामयिक स्थितियों, घटनाओं एवं परिवेशगत-परिवर्तनों की अद्यतन जानकारी रखनी ही चाहिए। एक कहावत है "लोहा गरम हो तो चोट करो"। अर्थात् फीचर लेखक को भी समय, स्थिति एवं तात्कालिक घटना आदि के परिप्रेक्ष्य में ही फीचर का विषय चुनना चाहिए। समय पर कही गई बात का प्रभाव जितना होगा, असमय कही गई बात का उतना नहीं होता। इसलिए यह भी कहा जाता है कि समय पर लगा एक टाँका आगे के नौ टाँकों को बचाता है। अगर कपड़ा फटा हुआ हो तो तत्काल एक टाँका लगा लो, नहीं तो आगे चलकर नौ टाँकें भी लगाने पड़ सकते हैं। फीचर लेखक अगर समाज की अपेक्षा को ध्यान में रखते हुए नव्यतम जानकारी जुटाता है तो उसे कई तरह से प्रतिष्ठा हासिल होती है। होली के अवसर पर अगर ऐतिहासिक संदर्भों को जोड़कर कुछ फीचर सामने आते हैं तो उन्हें पाठक वर्ग द्वारा सहर्ष स्वीकारा जाता है। इसी प्रकार अगर दीपावली पर होली का फीचर प्रकाशित हो तो संभवतः हास्यास्पद भी लगेगा तथा उसे पहचान एवं प्रतिष्ठा भी न मिल सकेगी।

इसी के साथ यह भी महत्वपूर्ण है कि विषय कितना प्रासंगिक है? अर्थात् तात्कालिक स्थिति में किस विषय को क्यों चुना जाए? यों तो ज्वलंत समस्याएँ फीचर में आती ही हैं और उन्हीं के प्रकाशन से फीचर तथा लेखक की लोकप्रियता भी बढ़ती है। किन्तु किन्हीं ऐसी घटनाओं एवं समस्याओं पर जिन्होंने समाज एवं राष्ट्र में खलबली मचा दी हो, नई-नई सूचनाएँ, नए-नए तथ्य तथा पहलुओं को उजागर करने से भी फीचर को अपार प्रतिष्ठा मिलती है। वह परिवर्तन का, दिशा-निर्देश का तथा तथ्यों के खुलासे का दस्तावेज़ी ब्यौरा बन कर भी पाठकों को मोह लेता है। पंजाब तथा कश्मीर में आतंकवादियों द्वारा की जा रही हत्याओं से देश की एकता एवं अखंडता को गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। फीचर लेखकों ने ऐसे परिप्रेक्ष्य में गदर-पार्टी के देश भक्तों का स्मरण करते हुए अनेक फीचर प्रस्तुत किए। देश की एकता के लिए शहीद हुए लोगों को लेकर अनेक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक घटनाओं, स्थितियों को स्मरण करते हुए पाठकों के सामने लाया जाता रहा। देश के लिए सिक्ख वर्ग की कुर्बानियों को फीचर में दोहराया गया। अभी भी

इस विषय पर बहुत से पक्षों को उजागर करने की आवश्यकता है। इसी प्रकार काश्मीर में बिगड़ रही स्थिति को फीचर का विषय बनाया गया। इसी तरह दहेज, दुर्घटना, बीमारी-महामारी, साम्प्रदायिकता, आरक्षण, चुनाव, बेरोजगारी, प्रतियोगिताएँ, भाषा-विवाद, राज्यगत-अशांति तथा अन्य कई इसी प्रकार के विषय हैं जिन्हें फीचर-लेखन के लिए समय-समय पर अपेक्षानुसार चुना जाता रहा है। उत्सव, त्यौहार, राष्ट्रीय-पर्व, मेले, प्रदर्शनी, बाज़ार-वर्णन या अन्य सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भों को भी यथा समय फीचर का विषय बनाया जाना चाहिए। इनसे हम अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं ऐतिहासिक संदर्भों से जुड़े रहते हैं।

आप भी अगर आतंकवाद की बढ़ती समस्या को ध्यान में रखते हुए प्रभावी फीचर लिखना चाहें तो पंजाब में अनेक ऐसे गाँव और उनके निवासी मिल जाएँगे जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया और शहीद हुए। आप पुस्तकालय, ऐतिहासिक अभिलेख, साक्षात्कार आदि एकत्र कर उनकी कुर्बानियों को सामने ला सकते हैं। सांप्रदायिक भाईचारे एवं सांस्कृतिक एकता को फीचर का विषय बनाकर आतंकवाद के विरुद्ध राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ किया जा सकता है।

बोध प्रश्न

1) **नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में दीजिए–**

i) **फीचर के प्रमुख अंग कौन से और कैसे हैं?**

.....

.....

.....

ii) **फीचर की संरचना के तीन चरण कैसे होने चाहिए?**

.....

.....

.....

iii) **शैलीगत रोचकता तथा सरसता का फीचर में क्या स्थान है?**

.....

.....

.....

2) नीचे लिखे विषयों पर पाँच-पाँच पंक्तियाँ लिखिए–

i) विषय चयन में "विशेषज्ञता" का स्थान

.....

.....

.....

.....

.....

ii) विषय की प्रासंगिकता

.....

.....

.....

.....

.....

iii) प्रकाशन की प्रकृति

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 सामग्री संकलन के स्रोत

फीचर-लेखक को फीचर का विषय निर्धारित करने के बाद सम्बद्ध सामग्री जुटाने की चुनौती का सामना करना होता है। यों तो विषय-विशेष से ही सामग्री के स्रोत भी निर्धारित होते हैं। फीचर अगर पूर्णतः साहित्यिक विषय पर लिखा जाना है और उसमें भी किसी साहित्यकार विशेष पर, तो लेखक को साहित्यकार के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व संबंधी यथासंभव उपलब्ध सामग्री जुटानी होगी। साहित्यकार जीवित हो तो उससे भेंट कर प्रामाणिक जानकारी जुटानी चाहिए। अगर साहित्यकार दिवंगत हो तो उसके कृतित्व को खोजना, उसके परिवार-जनों या वंशजों से मिलना, उसके परिचितों से साक्षात्कार लेना, उसके विविध चित्र आदि जुटाना, पुस्तकालयों से संदर्भ आदि खोजना, उसके निवास स्थान तथा क्षेत्र में जाकर लोगों से मिलना, फोटो लेना तथा मूल पांडुलिपियाँ जुटाने के प्रयास करना चाहिए।

इसी तरह अन्य विषयों के संदर्भ में भी इस प्रक्रिया एवं स्रोतों को देखा जा सकता है। बहुत से फीचर ऐसे होते हैं जिसमें परिवेशगत-समस्याओं को उठाया जाता है। जैसे आसाम के चाय-बागानों पर, उनकी व्यवस्था एवं प्रक्रिया पर अगर प्रभावी फीचर लिखना है तो लेखक को स्वयं वहाँ जाना होगा। वहाँ के मजदूरों तथा मालिकों से मिलना होगा। उनकी प्रक्रिया-पद्धति को समझना तथा उसके कुछ फोटो जुटाने होंगे। उससे होने वाले लाभ-हानियों पर तथ्य जुटाने होंगे। लोगों से साक्षात्कार लेने होंगे। तभी वह प्रभावी फीचर लिख सकेगा। घर की या पुस्तकालय की चारदीवारी में बैठ कर प्रामाणिक फीचर लिखना संभव नहीं होता। किसी दंगाग्रस्त-क्षेत्र में जाए बिना, वहाँ जाने की चुनौती को स्वीकारे बिना आप फीचर नहीं लिख सकते। अगर ऐसा फीचर लिखा भी जाएगा तो वह विश्वसनीय एवं प्रामाणिक कम होगा। इस संदर्भ में साहित्य की यह उक्ति पूर्णतः खरी उतरती है कि "मखमल पर सोने वाले झोंपड़ी का यथार्थ वर्णन नहीं कर सकते।"

डाकुओं, आतंकवादियों या अलगाववादियों पर फीचर लिखने वाले ईमानदार लेखक इन क्षेत्रों में जाकर संबद्ध सामग्री को जुटाते हैं। नेताओं, प्रशासनिकों एवं जन-समूहों से मिलकर सत्य को खोजते हैं। साक्षात्कार एवं फोटो से उसे प्रामाणिक बनाकर जनता के सामने लाते हैं। इसके साथ ही तथ्यों की पुष्टि के लिए उन्हें गाँवों, पिछड़े-क्षेत्रों, शहरों, संस्थानों या अन्य कई स्थानों पर भी जाना पड़ सकता है। किसी महामारी या सूखाग्रस्त, बाढ़ या दंगाग्रस्त क्षेत्र में जाकर अपेक्षित सामग्री जुटाना भी आवश्यक हो सकता है। यहाँ उसे अपने दायित्व से समझौता नहीं करना चाहिए। यहीं फीचर लेखक की हिम्मत उसके धैर्य तथा कर्तव्यनिष्ठा को आँका जाता है। यहीं उसके अध्ययन, खोजबीन तथा परिश्रम को कसौटी पर कसा जाता है। इसके लिए फीचर लेखक को धैर्यशील, परिश्रमी एवं खोजबीन करते रहने वाली प्रवृत्ति का होना चाहिए। समाज के ज्वलंत प्रश्न, घटनाएँ या समस्याएँ जब समाज को झकझोरते हैं तो फीचर लेखक यह सोचता है कि पाठक को अब किस जानकारी में दिलचस्पी है? तब वह महत्वपूर्ण, सामयिक एवं आकर्षक घटना को चुनकर उससे सम्बद्ध सामग्री का वर्गीकरण कर लेता है। प्रकाशित सामग्री, अप्रकाशित सामग्री, साक्षात्कार, यात्राएँ, फोटो-चित्र, ऐतिहासिक भौगोलिक या सांस्कृतिक, साक्षात्कार संदर्भ तथा भेंटवार्तायें आदि जुटाना उसका लक्ष्य हो जाता है।

मान लीजिए आपको सूचना मिली कि एक नृशंस तथा खूँखार डाकू ने अपने गिरोह सहित आत्मसमर्पण कर दिया है। या किसी आतंकवादी-गिरोह को पुलिस ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया है। आप इस खबर पर फीचर लिखना चाहते हैं तो आपको उस व्यक्ति के डाकू या आतंकवादी बनने के पीछे छिपी कहानी का पता लगाना होगा। इसके

लिए आपको आतंकवाद या डाकुओं संबंधी सामग्री तो एकत्र करनी ही होगी, जेल के भीतर जा कर उन डाकुओं या आतंकवादियों से बात-चीत भी करनी होगी। उनके बताए गए तथ्यों पर खोज करनी होगी। उनकी कथा के सत्य तलाशने होंगे तब उसे प्रामाणिक रूप में जनता के सामने लाना होगा। इसी से फीचर प्रासंगिक, प्रामाणिक एवं जीवंत बनेगा तथा इसी से लेखक को, उसकी हिम्मत एवं जागरूकता को सराहना भी मिल सकेगी। ऐसे फीचर ही लेखक की प्रतिष्ठा का कारण भी बनते हैं। अतः फीचर लेखक को सुनी-सुनाई बात पर विश्वास करके फीचर नहीं लिखना होता। भारत के ऐतिहासिक या धार्मिक स्थलों पर अगर प्रामाणिक एवं प्रभावी फीचर लिखना है तो उसे स्वयं वहाँ जाना होगा। पुस्तकों में पढ़कर या लिखित सामग्री को आधार बनाकर फीचर लिखना उचित नहीं होगा। इसी तरह उसे गंदी बस्तियों, कारखानों, मिलों या खेतों-जंगलों में भी जाना पड़ सकता है। अतः स्पष्ट है कि फीचर के विषय से ही उसके सामग्री स्रोत भी निर्धारित होते हैं और फीचर लेखक को किसी भी सहज या दुस्साध्य स्रोत तक पहुँचना पड़ सकता है।

3.5 सामग्री का संपादन एवं संयोजन

फीचर लेखक विषय की रूपरेखा से चलकर सामग्री संकलन एवं स्रोत अर्जन तक की यात्रा जब तय कर लेता है तो विषय को ध्यान में रखते हुए तकनीकी एवं वैज्ञानिक दृष्टि से फीचर की सामग्री का संपादन तथा संयोजन भी करता है। व्यवस्था देना भर ही संपादन एवं संयोजन नहीं है। फीचर लेखक को इस संदर्भ में कई तथ्यों, बातों एवं संदर्भों का गंभीरता से ध्यान रखना होता है। फीचर लेखक ज्ञानवर्द्धन, रोचकता तथा विश्वसनीयता के साथ-साथ अन्य कई पक्षों का भी ध्यान रखता है। इसके बिना वह किसी भी संकट में पड़ सकता है। साथ ही फीचर के प्रति भी अन्याय कर सकता है। फीचर लेखक को विषय-चयन एवं सामग्री-संकलन के बाद जिन महत्वपूर्ण तथा गंभीर पक्षों पर अपनी संपादकीय-दृष्टि डालनी होती है उनमें चार-पाँच बातें महत्वपूर्ण हैं। इसके बाद वह उन्हें एक व्यवस्था में ढाल देता है। यों तो इन सावधानियों की चर्चा, हम यत्र-तत्र कर चुके हैं किंतु यहाँ उन्हें अलग से भी देख लें तो अनुचित न होगा।

3.5.1 पाठक वर्ग का निर्धारण

फीचर लेखक फीचर को प्रकाशनार्थ भेजने से पूर्व यह तो तय कर ही ले कि उसे किस पत्र-पत्रिका में भेजना है। साथ ही, यह भी सोच ले कि उसके फीचर को कौन-कौन सा वर्ग पढ़ेगा? बच्चे, युवा या बुजुर्ग? नारी, पुरुष या लड़के-लड़कियाँ? विद्यार्थी, व्यापारी या नौकरी पेशा लोग? शिक्षित या अशिक्षित वर्ग? नेता या बुद्धिजीवी? इसी प्रकार अन्य वर्गों को भी देखा जा सकता है। इस निर्धारण से ही वह पत्र-पत्रिका का चयन भी सहज ही कर सकेगा। समस्या या घटना तथा स्थिति या परिवेश से भी पत्र-पत्रिका एवं पाठक वर्ग का निर्धारण किया जा सकता है।

3.5.2 समाज पर प्रभाव

फीचर लेखक को संपादन-संयोजन करते समय फीचर के विषय एवं प्रस्तुति की दृष्टि से यह भी विचार लेना चाहिए कि उसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा? कुछ विषय पथ-प्रदर्शक हो सकते हैं तो कुछ समाज को पथभ्रष्ट करने वाले भी। परंतु लेखक को किसी भी विषय को इस रूप में प्रस्तुत करना चाहिए कि उसके अच्छे पक्ष के प्रति सहानुभूति तथा बुरे पक्ष के प्रति दुःख या खेद का भाव पैदा हो। यही नहीं, ऐसा भी हो सकता है कि विषय की प्रस्तुति में किसी जाति, वर्ग या समुदाय के प्रति किसी आपत्तिजनक भाव का आभास होने लगे, यह भी अनुचित है। भाषा भी समाज के परिप्रेक्ष्य में संतुलित एवं मर्यादित ही होनी चाहिए। आक्षेप, निर्णय एवं व्यक्तिगत विचारों के आरोपण से बचते हुए समाज के सामने आदर्श को स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। मार्ग-दर्शक बनते हुए फीचर लेखक को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसके फीचर से किसी व्यक्ति, संस्था, समाज या वर्ग का अपमान न हो। उसका कार्य परिशोधन का है। बुराइयों को उघाड़ने के लिए बुराई करना आवश्यक नहीं। तथ्यात्मक वर्णन करते हुए तटस्थ रहना और समाज को सत्य से अवगत कराना ही अपेक्षित होता है।

3.5.3 स्थान, आकार एवं चित्र

फीचर लेखक को विषय चुनते समय फीचर के आकार तथा स्वरूप पर भी विचार कर लेना चाहिए। कितना लंबा या बड़ा फीचर हो तथा उसे पत्र-पत्रिका में कितना स्थान दिया जाना है? इन सब बातों पर भी विचार करके ही विषय का निर्धारण करना चाहिए। इसके बिना प्रकाशन-संस्था को भी कठिनाई होती है तथा विषय की काट-छाँट में भी अनपेक्षित नुकसान हो सकता है। हो सकता है कि फीचर बड़ा होने के कारण प्रकाशन संस्था के लोग उसमें से ऐसा कुछ काट-छाँट दें जिसे लेखक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आवश्यक मानता हो। अतः इस संदर्भ में भी फीचर लेखक को सावधान रहना चाहिए। इसी संदर्भ में फीचर संबंधी चित्र की महत्ता, उसके स्वरूप या कोण तथा स्थान का भी ध्यान रखना चाहिए। चित्र कौन-सा प्रभावी होगा, कैसा प्रभावी होगा इसका निर्णय भी सोच-समझकर ही लेना चाहिए। चित्र आपत्तिजनक न हो तथा सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन न करे, यह भी ध्यान रखना होता है।

3.5.4 अभिव्यक्ति की सहजता

प्रकाशन के लिए फीचर भेजने से पहले लेखक को दो-तीन बार फीचर को पढ़ लेना चाहिए। कठिन शब्द, अस्पष्ट वाक्य या अन्य अभिव्यक्तिगत दुरूहताओं को दूर करते हुए भाषागत प्रवाह बनाना चाहिए। फीचर का पाठक एक सहज व्यक्ति, कम पढ़ा लिखा विद्यार्थी या मज़दूर भी हो सकता है। यह ठीक है कि वर्ग-विशेष के आधार पर फीचर लिखे जाते हैं किंतु यह भी ठीक है कि उसे जितने अधिक पाठक पढ़ें उतना ही वह सफल कहलाता है। अतः भाषा एवं शैलीगत सहजता भी फीचर को प्रभावी तथा जीवंत बनाती है।

3.5.5 पत्र-पत्रिका का हित-अहित

फीचर लेखक को जिस पत्र-पत्रिका के लिए फीचर लिखना है उसके हित को भी ध्यान में रखना चाहिए। कोई ऐसा कथन अथवा उदाहरण फीचर में न दें जिससे उस पत्र-पत्रिका की प्रतिष्ठा पर आँच आए। ऐसे तथ्य जो प्रमाणित न हों, ऐसे वाक्य या संदर्भ जो अमर्यादित हों या ऐसी घटनाएँ जो संदिग्ध हों पत्र-पत्रिका की साख को खत्म कर सकते हैं। अतः लेखक को पूरी गंभीरता एवं सतर्कता से अपना दायित्व निभाना चाहिए।

3.6 फीचर की उपयोगिता और देन

इस प्रकार हम देखते हैं कि फीचर पत्रकारिता की वह सृजनात्मक विधा है जो अपने गंभीर-दायित्व से समाज को जागृत करती है, अपने तथ्यात्मक स्वरूप से जन-जीवन का शोधन-परिशोधन करती है, अपनी दूरदृष्टि से समाज एवं राष्ट्र का मार्ग-दर्शन करती है तथा सुपाठ्य सामग्री से ज्ञानवर्द्धन करते हुए उनकी रुचि को परिष्कृत करती है। समाज का प्रत्येक वर्ग तथा प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी रुचि से इनका चयन करता है और आनंदित होता है। नए-नए विषय, नई-नई खोजें तथा जानकारियाँ समाज के सामने आती हैं। घटना-दुर्घटना या स्थितियों का जीवंत चित्रांकन जन-सामान्य के ज्ञानकोष को समृद्ध करता है।

अनुभवों का वैविध्य, फीचर-लेखक की निरीक्षण शक्ति का चमत्कार, विषयगत चिंतन-मनन से उपलब्ध निष्कर्ष तथा समसामयिक घटनाचक्रों का दस्तावेज़ी ब्यौरा हमें फीचर से ही उपलब्ध होता है। सत्य, रहस्य, कल्पनाएँ, परिवेश सब के सब सामयिक, स्थानीय, देश व्यापी तथा सर्वदेशीय परिप्रेक्ष्य में उजागर हो उठते हैं। कथात्मक आनंद और प्रामाणिक जानकारी का यह अद्‌भुत मिश्रण साहित्यिक तथा वैज्ञानिक तरीकों से कथ्य को व्याख्यायित करता है। प्रखर एवं प्रभावी वर्णन-शैली विषय को विस्तृत, संवेदनशील, आकर्षक, रोचक, ज्ञानवर्द्धक तथा मर्मस्पर्शी बना कर प्रस्तुत करती है। फोटो, भेंटवार्ताएँ, साक्षात्कार तथा अन्य प्रमाण-संग्रह इसे दायित्वनिष्ठ तथा उपयोगी बनाते हैं और यह विषय के प्रति रुचि पैदा कर पाठक-वर्ग को मोह लेता है। लोकमानस के हृदय तक उतर जाने वाली यह सहज एवं उपयोगी विधा व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। स्थानीय एवं राष्ट्रीय विषयों को केंद्र में रखकर सभी को ज्ञानवर्द्धक

सामग्री देने वाली इस विधा की उपयोगिता असंदिग्ध है। पाठक वर्ग की रुचि बनाना, सामयिक विषयों के प्रति उसे सावधान करना, नई-नई खोज तथा घटनाओं के प्रति जागृत करना और सत्य के प्रकाश में तथ्यों को आलोकित करना फीचर की महान देन है। ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों को वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में देखते हुए विषय की प्रासंगिकता को सिद्ध करना तथा समाज के सामने एक संतुलित दृष्टि रखना फीचर की ही देन है। कुल मिलाकर फीचर अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी विधा है जिसमें कई विधाओं का मिश्रित आनंद उपलब्ध होता है।

बोध प्रश्न

3) सामग्री संकलन के विभिन्न स्रोतों की चर्चा करते हुए फीचर लेखक के दायित्व को आठ-दस पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) सामग्री-संपादन में फीचर लेखक को बहुत सी बातों का ध्यान रखना होता है। किन्हीं तीन प्रमुख बातों पर तीन-तीन पंक्तियाँ लिखिए:

i)

.....

.....

.....

ii)

.....

.....

.....

iii)

.....

.....

.....

5) फीचर की उपयोगिता एवं देन पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए:

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

1) अगर आपको आत्मसमर्पण करने वाले किसी डाकू-गिरोह पर फीचर लिखना हो तो। किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे? दस पंक्तियों में लिखिए।

.....

2) सामयिक समस्याओं, स्थितियों एवं घटनाओं को ध्यान में रखते हुए किसी एक प्रासंगिक विषय पर लगभग 300 शब्दों में एक फीचेर लिखिए।

3) "आतंकवाद" की बढ़ती समस्या पर फीचर लिखने के लिए आप क्या-क्या करेंगे? लगभग 200 शब्दों में बताइये।

3.7 सारांश

फीचर के विषय-चयन एवं प्रस्तुति पर लिखित इस इकाई का अध्ययन आपने किया। यह इस खंड की अंतिम इकाई है। आपने गंभीर, व्यापक एवं गहन अध्ययन से यह जान लिया कि :

- फीचर के तीन प्रमुख अंग होते हैं—अंतर्वस्तु, संरचना एवं भाषा-शैली। अतंर्वस्तु विषय का मूल-कथ्य ही होती है जो भौतिक रूप में दिखाई नहीं देती परंतु पूरे फीचर के केंद्र में रहती है। संरचना फीचर के स्वरूपगत आकार को कहा जाता है। फीचर के किसी भी विषय का प्रारंभ रोचक, मध्य प्रभावी एवं अंत जिज्ञासाओं की तृप्ति करने वाला होता है। भाषा एवं शैली फीचर के वैशिष्ट्य की परिचायक होती है। फीचर की प्रस्तुतिगत सहजता इसी पर निर्भर करती है।
- विषय-चयन के लिए फीचर लेखक को तीन बातों का ध्यान रखना होता है। पाठकों की रुचि का, अपनी रुचि के विषय का तथा विषयगत विशेषज्ञता का। दूसरे, जिस पत्र-पत्रिका के लिए फीचर लिखा जा रहा है, वह किस वर्ग की तथा कैसी है। दैनिक, साप्ताहिक या मासिक आदि का आधार भी विषय के आकार-प्रकार को निर्धारित करता है। तीसरे, विषय समसामयिक एवं प्रासंगिक भी होना चाहिए।
- फीचर लेखक को सामग्री-संकलन के सभी स्रोतों का इस्तेमाल करना होता है। तथ्य संग्रह, फोटो, यात्राएँ, रिपोर्ट, भेंटवार्ताएँ, साक्षात्कार तथा यहाँ-वहाँ जाना आदि कई पक्ष हैं जिनका ध्यान रखना आवश्यक होता है।
- फीचर लेखक को विषय-चयन एवं सामग्री-संकलन के बाद उसे संपादित एवं संयोजित भी करना होता है। इसके लिए उसे कई बातों का ध्यान रखना होता है जिनमें मुख्य है : पाठक वर्ग कौन तथा कैसा है? विषय को कितने स्थान तथा आकार में देना होगा? उसमें चित्र की उपयोगिता क्या और कहाँ होगी? अभिव्यक्ति की सहजता उसे जीवंत एवं प्रभावी बनाएगी तथा समाज का हित उसे सदैव ध्यान में रखना होगा।
- फीचर अत्यंत महत्वपूर्ण, उपयोगी एवं जीवंत विधा है जिससे पाठक, समाज एवं राष्ट्र को रोचक और ज्ञानवर्द्धक सामग्री के साथ-साथ गंभीर दिशा-निर्देश भी मिलता है। इससे जागृति की लहर व्याप्त होती है तथा मानसिक परिष्कार भी होता है।

3.8 उपयोगी पुस्तकें (पूरे खंड के लिए)

प्रेमनाथ चतुर्वेदी, फीचर लेखन, जुलाई, 1988, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, पटियाला हाऊस, नई दिल्ली-110 001

डॉ. वेद प्रताप वैदिक, *हिंदी पत्रकारिता, विविध आयाम*, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली

कमलापति त्रिपाठी और पी.डी. टंडन, *पत्र और पत्रकार*, ज्ञानमंडल, वाराणसी

डॉ. रामचंद्र तिवारी, *पत्रकारिता के विविध रूप*, आलेख प्रकाशन, दिल्ली

के.पी. नारायण, *संपादन कला*, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल

3.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) i) अंतर्वस्तु, संरचना और भाषा शैली

   ii) प्रारंभ रोचक, मध्य प्रभावी तथा समापन (अंत) जिज्ञासा को संतुष्टि देने वाला

   iii) पाठक बंधा रहता है, रुचि बनती है, प्रवाह रहता है, उबाऊपन नहीं होता, विषय स्थापित होता है तथा प्रतिष्ठा पाता है। फीचर का प्रमुख अंग है।

2) i) विषय का सही स्वरूप उभरेगा, भ्रम नहीं होगा, पाठक संतुष्ट होगा, तथ्यात्मक तथा प्रासंगिक जानकारी सामने आएगी, न्याय हो सकेगा, विषय और लेखक को प्रतिष्ठा मिलेगी।

   ii) सामाजिक घटनाएँ पाठक को आकर्षित करती हैं, विषय जीवंत बनता है, सामाजिक दायित्व का निर्वाह होता है, पाठक वर्ग को तृप्ति मिलती है, नव्यतम जानकारियाँ जुड़ती हैं।

   iii) प्रकाशन की प्रवृत्ति के अनुसार ही विषय चयन, आकार, स्वरूप निर्धारण भी उसी आधार पर, विषय-चयन का महत्वपूर्ण आधार पत्र-पत्रिका, मासिक, अर्द्धमासिक, साप्ताहिक, त्रैमासिक या वार्षिक पत्रिका का स्तर एवं वर्ग, चित्र का स्थान एवं आकार आदि।

3) देखिए भाग 3.4

4) देखिए भाग 3.5

5) देखिए, भाग 3.6

अभ्यास

1) इस इकाई का गहन अध्ययन कर स्वयं लिखने का प्रयास करें।

2) इस खंड के अध्ययन से स्वयं कोई प्रासंगिक विषय चुन कर लिखें।

3) इस इकाई का गहन अध्ययन कर स्वयं लिखने का प्रयास करें।

खंड
2
फीचर लेखन के क्षेत्र

इकाई 4
सामाजिक विषयों पर फीचर लेखन 5

इकाई 5
सांस्कृतिक विषयों में फीचर लेखन 21

इकाई 6
आर्थिक विषयों में फीचर लेखन 37

इकाई 7
पर्यावरण विषय पर फीचर लेखन 52

इकाई 8
विज्ञान में फीचर लेखन 68

इकाई 9
खेल-कूद में फीचर लेखन 83

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

श्री विष्णु प्रभाकर
दिल्ली

श्री गिरिराज किशोर
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर

श्री राजेन्द्र अवस्थी
संपादक, कादंबिनी, नयी दिल्ली

प्रो. इंद्रनाथ चौधरी
सचिव, साहित्य अकादमी
नयी दिल्ली

प्रो. चंद्रकांत बांदिवडेकर
बंबई विश्वविद्यालय, बंबई

डॉ. असगर वजाहत
जामिया मिलिया इस्लामिया
नयी दिल्ली

सहयोग
प्रो. शिव के. कुमार
हैदराबाद

श्री बजनारायण अग्रवाल
साप्ताहिक हिंदुस्तान, नयी दिल्ली

डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल
रीडर, हिंदू कॉलेज, दिल्ली

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
प्रो. बरुशीश सिंह
भूतपूर्व निदेशक, मानविकी विद्यापीठ

प्रो. बी.रा. जगन्नाथन (संयोजक)
डॉ. रीतारानी पालीवाल
डॉ. जवरीमल पारख
डॉ. शत्रुघ्न कुमार

सहयोग
डॉ. सुनयना कुमार
डॉ. शशिप्रभा कामरा

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक

डॉ. नीलम फारूखी
डॉ. जवरीमल पारख
श्री देव कृष्ण व्यास
श्री राजेन्द्र अवस्थी
(पाठ्यक्रम संपादक)

संक्रय सदस्य
डॉ. सत्यकाम
डॉ. पूरन चंद टंडन
डॉ. नीलम फारूखी
श्रीमती विमल खांडेकर

डॉ. जवरीमल पारख
(खंड एवं पाठ्यक्रम संयोजक एवं संपादक)

सामग्री निर्माण

श्री बालकृष्ण सेल्वराज
कुलसचिव
मुद्रण एवं प्रकाशन प्रभाग
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

जून, 1992

© *इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1992*

ISBN-81-7263-023-9

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अनुमति से पुनः मुद्रित। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद की ओर प्रो. डॉ. जी. ए. शुक्ला, कुलसचिव द्वारा पुनः मुद्रित एवं प्रकाशित 2017
मुद्रक ; चन्द्रकला युनिवर्सल प्रा. लि. 42/7 जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद, 211002

खंड 2 का परिचय

फीचर लेखन से संबंधित सृजनात्मक पाठ्यक्रम का यह दूसरा खंड है। इससे पहले के खंड में आपने फीचर लेखन के सैद्धांतिक पक्ष का अध्ययन किया है। इस खंड में कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों से संबंधित फीचर लेखन के बारे में बताया गया है। खंड में कुल 6 इकाइयां हैं। खंड की पहली और पाठ्यक्रम की चौथी इकाई में सामाजिक फीचर के बारे में बताया गया है। सामाजिक विषयों पर लिखे फीचर का अपना महत्व है। सामाजिक समस्याओं के प्रति लोगों को जागरूक बनाने में इस तरह के फीचर बहुत उपयोगी साबित हो सकते हैं। इकाई 5 में संस्कृतिक विषयों पर फीचर लिखने के बारे में बताया गया है। सामाजिक विषयों की तरह सांस्कृतिक विषय भी महत्वपूर्ण होते हैं। संस्कृतिक ही मनुष्य की वास्तविक पहचान है। विभिन्न संस्कृतियों से परिचित होकर हम अधिक उदार और मानवीय बनते हैं। सांस्कृतिक विषयों पर फीचर द्वारा हम सांस्कृतिक अंतरक्रिया को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। खंड की तीसरी और पाठ्यक्रम की छठी इकाई का संबंध आर्थिक विषयों से है। 7वीं इकाई में पर्यावरण विषय पर, 8वीं इकाई में विज्ञान विषय पर और 9वीं इकाई में खेल-कूल विषय पर फीचर लेखन पर विचार किया गया।

उक्त चारों क्षेत्रों पर लिखने के लिए फीचर लेखक में कुछ खास तरह की योग्यता का होना आवश्यक है। आर्थिक फीचर में अर्थशास्त्र और वाणिज्य-व्यवसाय का ज्ञान आवश्यक है, पर्यावरण तथा विज्ञान में आधारभूत वैज्ञानिक संकल्पनाओं से परिचय तथा पर्यावरण के वैज्ञानिक पहलुओं की जानकारी और खेल-कूल में खेलों से संबंधित नियम व तकनीकी पहलुओं के बारे में जानना आवश्यक है। इन चारों क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट शब्दावली भी हैं जिसका उपयोग आप तभी कर सकेंगे जब आपकी इन क्षेत्रों में गहरी रुचि हो एवं आप उन पर लगातार अध्ययन भी करते रहें। आर्थिक और खेल-कूद क्षेत्रों से संबंधित फीचर का अपना पाठक वर्ग भी है जबकि पर्यावरण और विज्ञान के प्रति पाठकों की रुचि लगातार

इस खंड में हमने फीचर लेखन के उक्त क्षेत्रों के बारे में बताया है। सबसे पहले तो हमने सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, पर्यावरण, विज्ञान और खेल-कूद के अंतर्गत किन-किन विषयों को फीचर के लिए चुना जा सकता है इसकी जानकारी दी है। विषयों के चयन और सामग्री के संकलन पर भी विचार किया गया है। विभिन्न उदाहरणों द्वारा हमने फीचर लेखन के व्यवहारिक पक्ष पर भी गंभीरता से विचार किया है तथा भाषा-शैली की विशिष्टता को भी रेखांकित किया है। खंड की इन इकाइयों में उद्धृत फीचर लेखों के अतिरिक्त भी आपका पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित फीचर पढ़कर उनकी विशिष्टता पहचाननी चाहिए और फिर स्वयं भी लिखने का अभ्यास करना चाहिए।

आभार

नवभारत टाइम्स– नयी दिल्ली
जनसत्ता–नयी दिल्ली
इंडिया टुडे–नयी दिल्ली
साप्ताहिक हिंदुस्तान–नयी दिल्ली

खेल हलचल

PGDCWH-02/62

दैनिक जनगण–नयी दिल्ली
आर्थिक जगत–नयी दिल्ली
उत्तरार्द्ध–मथुरा

इकाई 4 सामाजिक विषयों में फीचर लेखन

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य
4.1 प्रस्तावना
4.2 सामाजिक फीचर क्या है
4.3 सामाजिक फीचर के प्रकार
  4.3.1 सामाजिक समस्याओं पर आधारित
  4.3.2 शिक्षा पर आधारित
  4.3.3 सांप्रदायिकता की समस्या पर आधारित
  4.3.4 अन्य सामाजिक विषय
4.4 विषय का चयन
  4.4.1 रुचि एवं विशेषज्ञता
  4.4.2 विषय की प्रासंगिकता और प्रकाशन प्रकृति
4.5 सामग्री का संकलन
  4.5.1 तथ्यों का संकलन एवं शोध
  4.5.2 फोटो
  4.5.3 साक्षात्कार
4.6 सामग्री का संपादन और संयोजन
4.7 फीचर लेखन की प्रस्तुति
  4.7.1 आरंभ
  4.7.2 मध्य
  4.7.3 अंत और शीर्षक
  4.7.4 भाषा-शैली
4.8 सारांश
4.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

सामाजिक फीचर, फीचर लेखन के विभिन्न क्षेत्रों में से एक है। इस इकाई में सामाजिक फीचर के विषय चयन और उसकी प्रस्तुति की चर्चा की जा रही है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- सामाजिक फीचर क्या है, यह स्पष्ट कर सकेंगे;
- सामाजिक फीचर के प्रकार बता सकेंगे;
- विषय चयन के समय ध्यान देने योग्य बातों का उल्लेख कर सकेंगे;
- फीचर के लिए आवश्यक सामग्री की उपयोगित समझा सकेंगे;
- सामग्री को संयोजित और संपादित कर सकेंगे;
- सामाजिक विषयों पर फीचर लेखन में कुशलता बढ़ा सकेंगे; और
- सामाजिक फीचर के लिए उपयुक्त भाषा और शैली का उपयोग कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

सृजनात्मक पाठ्यक्रम के "फीचर लेखन" की यह चौथी इकाई है। इससे पूर्व की इकाइयों में आप फीचर लेखन के सिद्धांतों, विशिष्टताओं और उसकी प्रस्तुति के बारे में पढ़ चुके हैं। इस इकाई में सामाजिक फीचर लेखन के बारे में चर्चा की जा रही है।

सामाजिक फीचर के अंतर्गत समाज से जुड़े किसी भी विषय को लिया जा सकता है। इस

दायरे में सामाजिक समस्याओं से जुड़े विषय भी आ सकते हैं। और सामाजिक प्रथाओं से जुड़े विषय भी आ सकते हैं। इस प्रकार, कुल मिलाकर सामाजिक फीचर का क्षेत्र व्यापक है। अनेकानेक विषय हैं, किंतु इन पर फीचर लेखन के लिए अधिक मार्मिकता, आत्मीयता और पैनी नज़र तथा साहित्यिक भाषा की ज़रूरत होती है।

इस इकाई में सामाजिक फीचर की आकृति (ढाँचा), उसके विषय चयन तथा उससे संबंधित सामग्री संकलन का उल्लेख किया जा रहा है ताकि आप सामाजिक फीचर को समझते हुए उसका विषय चुन सकें और संबंधित सामग्री संकलित कर सकें। सामाजिक फीचर के अधिक स्पष्टीकरण के लिए इसके विभिन्न भेद तथा अन्य फीचरों से इसका अंतर भी स्पष्ट किया जा रहा है। सामग्री के संपादन और संयोजन की चर्चा भी हम इसमें कर रहे हैं। आशा है, इसे पढ़ने के बाद आप सामाजिक फीचर को भलीभाँति समझ सकेंगे और उसे लिखने में आपको इससे मदद मिल सकेगी।

4.2 सामाजिक फीचर क्या है?

इस इकाई से पूर्व अन्य कई इकाइयों में आप फीचर के बारे में विस्तार से पढ़ चुके हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि रोचक और आकर्षक ढंग से लिखा प्रासंगिक लेख "फीचर" है। इसमें कल्पना, तथ्य और लेखन-कला तीनों का सम्मिश्रण होता है। सरसता उसका गुण है। इसकी शैली रोचक और पाठक को आकर्षित करने वाली होनी चाहिए। वह घटनाओं द्वारा पड़ने वाले प्रभावों का पूर्वानुमान लगाकर संभावित परिणामों की ओर भी ध्यान आकर्षित करता है। इस तरह, फीचर एक रोचक, ज्ञानवर्द्धक और मार्गदर्शन देने वाली विधा है।

इकाई के इस भाग में हम विशेष रूप से सामाजिक फीचर को समझाने का प्रयास कर रहे हैं। यूं तो समाज से जुड़े किसी भी विषय पर लिखे गए फीचर को सामाजिक फीचर कहा जा सकता है, जिसमें व्यक्ति-विशेष से लेकर समूह, जाति, उनसे जुड़ी प्रथाएँ, कुरीतियाँ, यहाँ तक कि समाज में घटित किसी भी सामान्य अथवा असामान्य घटना को सामाजिक फीचर के अंतर्गत रखा जाता है। किंतु यहाँ हमारा तात्पर्य ऐसे विषयों से है जिनमें सामाजिकता का पहलू ही प्रमुख है। हमने उन विषयों को इनसे अलग रखा है जो अन्य क्षेत्रों के अंतर्गत शामिल किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, नगर में खेलों के किसी बड़े आयोजन या उसमें चल रही गतिविधियाँ "खेल फीचर" के अंतर्गत रखी जाएगी। व्यक्ति विशेष पर, जैसे पं. जवाहरलाल नेहरू पर लिखा गया फीचर व्यक्ति-चित्र के अंतर्गत आ सकता है। सुनील गावस्कर पर लिखे फीचर को "खेल फीचर" या व्यक्ति-चित्र के अंतर्गत रखा जाएगा। इसी प्रकार, शेयर बाज़ार में एक समूह द्वारा की जा रही गतिविधियाँ, वहाँ के बाज़ार का उतार-चढ़ाव, समाज से जुड़ी गतिविधियाँ जरूर हैं किंतु इन्हें "आर्थिक फीचर" के अंतर्गत माना जाएगा। इसी प्रकार "इन्सैट डी" से जुड़े विवरण को "विज्ञान फीचर" के अंतर्गत माना जाएगा। विषय के अनुसार इनकी भाषा और शैली में भी अंतर आता जाता है।

आपकी सुविधा के लिए हम सामाजिक फीचर से अन्य फीचर लेखों के अंतर को कुछ उदाहरणों द्वारा भी स्पष्ट कर रहे हैं ताकि उनकी भाषा और लेखन शैली के अंतर से भी आप परिचित हो सकें। आरंभ में हम सामाजिक फीचर के कुछ अंश दे रहे हैं जिससे सामाजिक फीचर क्या है आप अच्छी तरह समझ सकें:

> *"राजधानी के लाखों परिवार आवास की समस्या से जूझ रहे हैं। गरीब परिवार ही नहीं, ठीक से कमाने-खाने वाले अधिकांश परिवार भी समझ नहीं पा रहे कि अपने परिवार के लिए एक छोटा-सा दड़बानुमा घर भी खरीदा जाए तो कैसे। कभी मकान मालिकों की डांट-फटकार सुनकर तो कभी प्रापर्टी डीलरों के आसमान छूते दाम सुनकर आम आदमी परेशान हो जाता है कि अनेक नीड़ का निर्माण करे तो कहाँ और कैसे।.....महानगरों में आवास की समस्या नई नहीं है। आवास की तंगी ने लाखों परिवारों की नींद हराम कर रखी है लेकिन इसी के चलते कोलोनाइज़रों और प्रापर्टी डीलरों की एक समांतर दुनिया बनी है जो नई बस्तियाँ बसाने और मकानों की खरीद-फ़रोख्त पर टिकी है।"*
>
> **(रहने को घर नहीं है सारा जहाँ हमारा : भारत डोगरा, जनसत्ता 16 दिसंबर, 1990)**

सामाजिक फीचर का ही एक अन्य उदाहरण देखें :

"वोटों की राजनीति की खातिर धर्म का आवरण चढ़ाकर सांप्रदायिक ताकतों ने नफ़रत की जो आग भड़काई, उसमें आहुति देने वाले हाथ ज़रूर उनके थे, लेकिन भस्म होने वाले हमेशा की तरह इस बार भी ग़रीब और बेसहारा थे। एक भी सांप्रदायिक वीर खुद "शहीद" नहीं हुआ।"

(**हर शहर पर काबिज ये नफ़रत के सौदागर** : राजकुमार सिंह, **हिंदी संडे आब्जर्वर**, 30 दिसंबर, 1990)

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि सांप्रदायिकता अथवा आवास की समस्या के विषय सीधे समाज से जुड़े विषय हैं। इसमें राजनीति के धरातल पर आम आदमियों की ज़िंदगियों से खिलवाड़ का डर है। समाज, संस्कृति, शहर और देश की छवि की चिंता है और उबरे हुए हालात में उत्पीड़न का एहसास है। इस प्रकार सामाजिक फीचर में निम्नलिखित विशेषताओं का होना ज़रूरी है:

- विषय का समाज से सीधा जुड़ा होना
- तथ्यपरकता
- आत्मीयता का एहसास
- मार्मिकता
- बेबाक किंतु संतुलित मत प्रतिपादन

अब अन्य फीचर से सामाजिक फीचर किस प्रकार भिन्न है, इसे उदाहरणों द्वारा समझने की कोशिश करें। पहले खेल फीचर का उदाहरण देखें :

वर्तमान में जहाँ भारतीय टीम में बल्लेबाजी सक्षम है, वहीं गेंदबाज़ी के खेमे में कपिल एवं कुछ हद तक शिवा के अलावा ऐसा कोई गेंदबाज़ नहीं है जो विपक्षी बल्लेबाज़ के विकेट को खरीद सके। भारत के अन्य गेंदबाज़ मात्र रन रोकने वाले गेंदबाज़ हैं। रवि शास्त्री मात्र एक दिवसीय मैचों के लायक एक चुस्त एवं कंजूस गेंदबाज़ हैं। दुख की बात है कि मनिंदर सिंह जैसे बाएं हाथ के लेग स्पिन गेंदबाज़ जो कि विकेट खरीद सकते हैं, वे आज भारतीय टेस्ट टीम से बाहर हैं, क्योंकि वे ऑलराउंडर नहीं हैं।

(**भारतीय टेस्ट क्रिकेट आज किस मोड़ पर**, सुजीत मोहंती, **खेल हलचल**, 11 जनवरी, 1986)

दोनों फीचर के उदाहरणों से स्पष्ट है कि सामाजिक विषयों पर फीचर आत्मीयता के अधिक नज़दीक होता है, जिसके लिए भाषा के प्रयोग में अधिक सतर्कता बरतनी होती है जबकि खेल फीचर पूरी तरह तथ्यपरक होता है। उसकी अपनी शब्दावली होती है अतः भाषा और शैली में अंतर होता है। खेल फीचर लिखने के लिए विशेषज्ञता आवश्यक है, जबकि सामाजिक फीचर के लिए सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरुकता जरूरी है।

अब आर्थिक और सामाजिक फीचर के अंतर को देखें :

आर्थिक फीचर : (**अनिश्चित रुख : वित्तीय संस्थाओं ने उबारा : इंडिया टुडे**, 15 सितंबर, 1989)

आज की स्थिति जुलाई की स्थिति के एकदम उलट है। बंबई शेयर बाज़ार के आंकड़ों के मुताबिक जुलाई में बिके 937 शेयरों में से तीस फीसदी के दाम बहुत ऊँचे रहे। दूसरे तीस फीसदी शेयरों ने भी अपनी स्थिति कमोबेश बरकरार रखी। जबकि बाकी 40 फीसदी शेयरों के दाम गिर गए। इसकी सीधी वजह उन पैंतालीस कंपनियों के मुनाफ़ों और बिक्री में है जिन्होंने जुलाई में अपने नतीजों की घोषणा की थी।"

अब सामाजिक फीचर का एक उदाहरण प्रस्तुत है, जिसमें आप आंकड़ों का इस्तेमाल देख सकेंगे :

सरकार ने हाल ही में मंजूर किया है कि दस हज़ार गैस पीड़ितों को सांस की तकलीफ है और 25 प्रतिशत शायद ही कभी ठीक हो पाएँ। बाकी 75 प्रतिशत अपने आप ठीक हो जाएँ तो नहीं कह सकते क्योंकि इलाज के नाम पर शुरू से आज तक भगदड़ और शगूफ़ेबाज़ी चल रही है।

(**कारबाइड बच्चों का शहर भोपाल** : राजेश नायक, **जनसत्ता**– 13 अक्तूबर, 1985)

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों में आंकड़ों का ब्यौरा मिलता है किंतु दोनों के संदर्भ में फर्क है। आर्थिक फीचर में शेयर बाज़ार के आंकड़ों का ब्यौरा है जिनका सीधा संबंध पूंजी से है जबकि सामाजिक फीचर के उदाहरण में भोपाल गैस पीड़ितों के मानवीय पहलू को दृष्टि में रखते हुए सरकार द्वारा घोषित आंकड़ों की चर्चा की गई है। इस प्रकार दोनों ही उदाहरणों में तथ्यों की आवश्यकता है किंतु आर्थिक फीचर विशेषज्ञता की माँग करता है। इसकी अपनी शब्दावली होती है—शेयर बाज़ार, दामों में गिरावट, कंपनी के मुनाफ़े आदि जैसे शब्द भिन्न संदर्भ में प्रयुक्त होते हैं। अर्थशास्त्र की जानकारी रखने वाला ही आर्थिक फीचर लिख सकता है। इतना ही नहीं आर्थिक फीचर वस्तुपरक होता है—सामाजिक फीचर की तरह उसमें भावना की कोई गुंजाइश नहीं होती। उम्मीद है आप सामाजिक फीचर और अन्य फीचर लेखों का अंतर समझ गए होंगे।

4.3 सामाजिक फीचर के प्रकार

सामाजिक फीचर लिखना अधिक आसान है किंतु इसमें मेहनत और महारत की भी ज़रूरत है। आसान इसलिए कि आप और हम सभी समाज से जुड़े हैं, हमारे इर्द-गिर्द अनेक प्रकार के लोग हैं, उनसे हमारा मिलना-जुलना होता है। हरेक व्यक्ति के स्वभाव, आचार-व्यवहार, उसके उठने-बैठने के अंदाज़, उससे जुड़ी समस्याएँ हमारे सामने आती हैं। फिर सामूहिक रूप में भी अनेक समस्याएँ, प्रथाएँ, उनसे जुड़ी अच्छी-बुरी बातें हमारे सामने रहती हैं। इनसे जुड़े लोग, उनकी समस्याएँ, किसी सामाजिक समुदाय से जुड़ी प्रथाओं को फीचर का विषय बनाया जा सकता है। किंतु विषय को लेखन में ढालने के लिए अधिक कौशल की आवश्यकता है। विषय के प्रति आपका लगाव, आपकी जानकारी और विषय पर आपकी सूक्ष्म दृष्टि और अवलोकन ज़रूरी है। इस आधार पर सामाजिक फीचर के विभिन्न प्रकारों में बाँटा जा सकता है:

- सामाजिक समस्याओं पर आधारित
- शिक्षा पर आधारित
- सांप्रदायिकता पर आधारित
- बच्चों पर आधारित
- महिलाओं पर आधारित
- अन्य

बच्चों और महिलाओं पर फीचर लेखन की चर्चा हम पिछले खंड में कर चुके हैं। अतः यहाँ हम उनको नहीं दोहराएंगे।

4.3.1 सामाजिक समस्याओं पर आधारित

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में जीता और बढ़ता है। उसकी प्रत्येक गतिविधि समाज से प्रभावित होती है और वह भी अपने कार्यों द्वारा समाज को प्रभावित करता है। समाज के अच्छे-बुरे स्वरूप का निर्माण हम अपने कार्यों से करते हैं। दहेज समस्या, बाल विवाह, सती प्रथा आदि कुछ इसी प्रकार की समस्याएँ हैं, जो हमारी मान्यताओं और पिछड़ेपन को बताती है। कुछ अन्य घटनाएँ भी समाज के लिए समस्या का रूप धारण कर लेती हैं। जापान में हिरोशिमा, नागासाकी की बर्बादी वर्षों से स्थान विशेष के लिए समस्या बनी रही है जिसने विश्व में भीषण खौफ़ और डर का माहौल फैलाया है। भारत में सन् 1984 में भोपाल का गैस कांड हज़ारों-लाखों परिवारों की आने वाली पीढ़ी तक के लिए समस्याओं के द्वारा खोल गया। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद नीति ने विश्व के समक्ष बड़े प्रश्न खड़े किए।

इन सब घटनाओं और इसी प्रकार समाज से जटिल रूप में जुड़े विषय सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत रखे जा सकते हैं। मार्मिकता, वास्तविकता और संतुलन का सामंजस्य ऐसे फीचर के लेखन में ध्यान देने योग्य बातें होंगी। उदाहरण के लिए दहेज समस्या पर **जनसत्ता** 30 जुलाई, 1989 में लिखे एक फीचर का अंश हम नीचे दे रहे हैं जिसकी लेखक हैं **कमल कुमार। "दहेज सवाल तो है—जवाब क्या है?"**

दहेज देने को विवाह की एक रीति माना जाता है, जिसमें माता-पिता अपनी प्रतिष्ठा समझते हैं। इसलिए जिनके पास संपत्ति नहीं भी होती, वे भी दहेज देते हैं और देना चाहते हैं। साथ ही, लड़की वालों की ओर से अधिक से अधिक दिया गया दहेज भी लड़के वालों के लिए कम हो सकता है।

पिता की संपत्ति में बेटे या बेटी का समान अधिकार और दहेज एक-दूसरे के पर्याय नहीं है। इसमें कुछ व्यावहारिक कठिनाईयाँ हैं। लड़की को दहेज में दी गई रकम पिता के जीते जी मिलेगी, जबकि संपत्ति का हिस्सा आमतौर पर उनके मरने के बाद। दूसरी बात, संपत्ति में लड़कों का हिस्सा तो तय रहता है पर दहेज में कितनी रकम खर्च हो, इसका निर्धारण करने वाले दूसरे घटक हैं जैसे लड़के की आर्थिक और सामाजिक स्थिति, उसकी योग्यता, लड़की की सुंदरता, लड़की के भाइयों और पिता की इच्छा, लड़की का कामकाजी होना आदि।

इसके अतिरिक्त अन्य कई विषय सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत आ सकते हैं जिनका प्रत्यक्ष संबंध समूह या समाज से हो, जैसे—महंगाई, पौष्टिक आहार, रीति-रिवाज, आवास समस्या, विभिन्न आयु वर्गों की समस्याएँ, नशीली दवाओं का सेवन, तस्करी आदि।

4.3.2 शिक्षा पर आधारित

आदिकाल से यदि मानव के इतिहास को देखा जाए तो शिक्षा ही है जिसने मनुष्य को क्रमशः उन्नति और प्रगति की ओर बढ़ाया है। मनुष्य और समाज से जुड़े इस विषय को सामाजिक फीचर के अंतर्गत एक पृथक श्रेणी का स्थान दिया जाता है। पारंपरिक शिक्षा आरंभ में समाज के कुछ विशेष वर्गों के लिए ही उपलब्ध थी। फिर जब इसका दायरा बढ़ा तो महिलाएँ इससे वंचित रहीं। आज शिक्षा विज्ञान और नई प्रौद्योगिकी के माध्यम से उस दौर में है जहाँ मनुष्य चांद और सूरज को नज़दीक से देखने और समझने की कोशिश कर रहा है। महिलाओं ने समाज के हर क्षेत्र में शिक्षा के लिए अपने को साबित किया है। फिर भी भारत में शिक्षा आज भी सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं है। शिक्षा से जुड़ा भाषा का प्रश्न भी आज राजनीतिकों के हाथ का खिलौना बना हुआ है। शिक्षा के तरीकों पर आज भी विचार और परामर्श की आवश्यकताएँ हैं। इन सभी विषयों को लेकर शिक्षा पर आधारित सामाजिक फीचर लिखे जा सकते हैं। गहन अध्ययन, विस्तृत जानकारी और समाज के वंचित वर्गों से सहानुभूति जैसी बातों को शिक्षा से जुड़े विषयों के लिए अपनाना जरूरी होगा। शिक्षा के लिए आरक्षण का मुद्दा भी ज्वलंत विषयों में से एक विषय है।

फीचर का एक उदाहरण देखें : "**बस्ते में बोझ है या ज्ञान**" *शीर्षक से प्रगति सक्सेना का लिखा यह फीचर दिनांक* 30 जुलाई, 1989 के **जनसत्ता** में प्रकाशित हुआ था :

शिक्षा बचपन को छोटा और नीरस बना ही रही है, युवावस्था को भी कोई नींव नहीं दे रही। एन.सी.ई.आर.टी. बार-बार अध्यापकों की सलाह से पाठ्यक्रम को बदलती है लेकिन हर बार बातों का बोझ ज्यादा होता जाता है। हिंदी सीखना तो मुश्किल है ही, अंग्रेज़ी की किताबें दिन-ब-दिन मोटी होती जाती है। किंडर गार्डन के बच्चों से भी यह उम्मीद की जाती है कि उसे गणित में जमा-घटा और पहाड़े याद हों। इस पर अंग्रेजी-हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों में एक विशेष तरह की हीन भावना को भी जन्म देती है।

शिक्षा से संबंधित चुने हुए विषय पर विभिन्न सरकारी योजनाएँ तथा नितीयों की जानकारी लेखन में सहायक होती है। आम लोगों की प्रतिक्रियाएँ तथा प्रबुद्ध लोगों के विचार लेखन में निखार ला सकते हैं।

4.3.3 सांप्रदायिकता की समस्या पर आधारित

सामाजिक फीचर के अंतर्गत सांप्रदायिकता पर आधारित वे विषय लिए जा सकते हैं जहाँ धर्म के नाम पर राजनीति मनुष्य को मनुष्य के विरुद्ध बर्बरता का सलूक सिखाती है। सांप्रदायिकता से जुड़े उन मुद्दों पर जिनका समाज पर सीधा विध्वंसक असर होता है, कलम उठाना एक लेखक की ज़िम्मेदारी हो जाती है। चूंकि ये विषय विभिन्न समुदायों की भावनाओं से जुड़े होते हैं अतः लेखन में सत्य के प्रयोग के साथ-साथ भाषा पर पूर्ण नियंत्रण और संतुलित समझबूझ का प्रयोग आवश्यक होता है। "**हर शहर पर काबिज थे नफरत के सौदागर**" शीर्षक फीचर का एक अंश प्रस्तुत है, जो "**संडे आबज़र्वर**", 30 दिसंबर, 1990 में प्रकाशित हुआ था :

1947 की सांप्रदायिक विभीषिका में भी मज़हबी जुनून से अछूते रहे चुनिंदा शहरों में से ही एक है आगरा। शाहजहां और मुमताज महल की मोहब्बत की इस नगरी को बकायदा षड्यंत्र के तहत सांप्रदायिकता की आग में झोंक गया। नतीजन यह शहर पूरे एक पखवाड़े तक कर्फ्यू और दहशत के साये में मज़हबी जुनून से लड़ता रहा।

4.3.4 अन्य सामाजिक फीचर

ऊपर बताए गए विषयों के अतिरिक्त भी कई ऐसे विषय हो सकते हैं जिन्हें सामाजिक फीचर के अंतर्गत रखा जाता है। उदाहरण के लिए किसी स्थल, किसी प्राणी अथवा किसी वस्तु पर जिनसे समाज अथवा समुदाय का सीधा संबंध हो, पर्यावरण से जुड़े विषय इसके अंतर्गत आ सकते हैं। एक उदाहरण देखिए जो 22 जुलाई, 1990 के "**जनसत्ता**" से लिया गया है–शीर्षक है "**फिर आएंगे साइकिल के दिन**"–

दरअसल मोटर वाहनों के धुएं से हवा में ज़हर का फैलाव लगातार बढ़ता जा रहा है। दिल्ली में पिछले कुछ महीनों से वाहनों से निकलने वाले धुएं की जांच शुरू हुई है। ज्यादा धुआं पाये जाने पर जुर्माना ज़रूर वसूल कर लिया जाता है। प्रदूषण से परेशान लोगों और सरकार का ध्यान साइकिल की ओर नहीं गया। जबकि साइकिल इतना सस्ता और आसान विकल्प है कि यह धुएं और शोर दोनों का इलाज कर सकती है।

उक्त उदाहरण में साइकिल की महत्ता पर भी जोर दिया गया है और इसे प्रदूषण समस्या का एक हल भी बताया गया है। अन्य फीचर का एक और उदाहरण देखिए जहाँ "टिड्डी दल" को विषय बनाया गया है–**जनसत्ता**, 22 जुलाई 1990 "**हरे सोने का लुटेरा है टिड्डी**"–

टिड्डी दल के आक्रमण को देवी प्रकोप या भगवान भरोसे छोड़ देने की बात वैज्ञानिक व परिवेश में मूर्खता है। विभिन्न देशों के वैज्ञानिक इस खोज में लगे हैं कि आखिर टिड्डियां क्यों और कैसे अपना जन्म स्थान छोड़ हज़ारों मील दूर जाकर धावा बोलती हैं। अगर यह मान लिया जाए कि इनकी यह प्रकृति आनुवांशिक है तो प्रश्न उठता है कि ये हर समय क्यों नही घूमतीं?

उक्त उदाहरण में देवी के प्रकोप के नाम से अंधविश्वास की बात की गई है। समाज को नुकसान पहुँचा रहे अंधविश्वासों तथा इनसे जुड़ी कुरीतियों और प्रथाओं को भी सामाजिक फीचर का विषय बनाया जा सकता है। विभिन्न जातियों के, कबीलों के रहन-सहन, उनकी वेशभूषा, उनकी सांस्कृतिक गतिविधियों पर लिखे गए फीचर भी सामाजिक फीचर की इस श्रेणी के अंतर्गत रखे जा सकते हैं।

अन्य सामाजिक फीचर के अंतर्गत विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों पर आधारित फीचर भी लिखे जा सकते हैं जिनका सीधा संबंध समाज से जुड़ता है। उदाहरण के लिए सांची में 'अशोकी की लाट' (खंभे) पर लिखे फीचर में सम्राट अशोक का ज़िक्र भी प्रमुखता से हो सकता है जिसने बौद्ध धर्म के प्रचार और मानवता के लिए अनगिनत कार्य किए। ऐसे फीचर भी सामाजिक फीचर में आ सकते हैं जिनमें महान व्यक्तियों का पूर्ण या आंशिक जीवन समाज की गतिविधियों से जुड़ा हो। उदाहरण के लिए महात्मा गांधी का व्यक्तित्व राजनीतिज्ञ के अतिरिक्त समाज सुधारक का भी रहा है। मदर टेरेसा और बाबा आम्टे के जीवन से जुड़े फीचर भी अन्य सामाजिक फीचर की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। "**लोग पैदल चलते हैं लेह में**"–मोहन राणा द्वारा लिखित "**जनसत्ता**" 6 अगस्त, 1989 में प्रकाशित एक फीचर का अंश प्रस्तुत है:

लद्दाख में परम्परागत रूप से सापा (सत्तू) मक्खन की नमकीन चाय के साथ खाया जाता है पर अब जिस तरह लेह में कई भाषाएँ, कई तरह की संस्कृतियों और आस्थाओं वाले लोग हैं, उसी तरह भोजन में भी विविधताएँ देखने को मिलती हैं। हर एक, अभिवादन के लिए "जुले" शब्द का प्रयोग करता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि अनेकानेक ऐसे विषय हैं जिन पर सामाजिक फीचर तैयार किए जा सकते हैं। इसके लिए पैनी नज़र, अध्ययन और शोध की ज़रूरत है। फिर लेखन में सहयोगी होती है आपकी भाषा-शैली, विषय से आपकी सम्बद्धता, मार्मिकता और आत्मीयता–जहाँ आपको सही और सच भी कहना है, टीका-टिप्पणी भी करनी है, अपनी भाषा और शब्दों को समय के साथ संतुलन भी देना है।

बोध प्रश्न

1) सामाजिक फीचर के अंतर्गत निम्नलिखित में से किन विषयों को शामिल करने को प्रमुखता देंगे और क्यों? दो-दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

क) शेयर बाज़ार में उतार-चढ़ाव

.....

.....

ख) ऊर्जा के नए स्रोत

.....

.....

ग) शिक्षा का व्यवसायीकरण

.....

.....

घ) जनसंख्या विस्फोट के खतरे

.....

.....

2) सामाजिक और आर्थिक फीचर में अंतर स्पष्ट कीजिए। उत्तर केवल तीन पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

.....

3) सामाजिक फीचर के महत्व पर प्रकाश डालिए। उत्तर केवल तीन पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

अभ्यास

1) विवाह के अवसर पर लगातार बढ़ने वाली फिजुलखर्ची को ध्यान में रखते हुए अपने आस-पड़ोस में होने वाले किसी विवाह समारोह का लगभग दस पंक्तियों में विवरण प्रस्तुत कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) सरकारी दफ्तरों में भ्रष्टाचार के संबंध में आप अपने अनुभव के आधार पर एक फीचर की रूपरेखा तैयार कीजिए। उत्तर लगभग 5-6 पंक्तियों में लिखिए।

.....

4.4 विषय का चयन

सामाजिक फीचर के लिए विषय का चयन किस प्रकार किया जाए, इसके बारे में विचार करना आवश्यक है। सामाजिक विषयों की बहुलता और विविधता के कारण यह आवश्यक तय करना चाहिए कि किस विषय को फीचर के लिए चुना जाए। उदाहरण के लिए शिक्षा पर आधारित फीचर में महिलाओं की शिक्षा, ग्रामीणों की शिक्षा, बच्चों की शिक्षा, नई शिक्षा नीति, दूर शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा आदि से जुड़े विषय हो सकते हैं। अतः आपको विषय का चयन किन आधारों पर करना है, आइए इस पर भी एक नज़र डाली जाए।

- रुचि एवं विशेषज्ञता
- विषय की प्रासंगिकता एवं प्रकाशन प्रकृति

4.4.1 रुचि एवं विशेषज्ञता

विषय चयन के समय आपको अपनी रुचि और विशेषता को आंकना होगा। उदाहरण के लिए, अगर आपकी रुचि शिक्षा क्षेत्र की ओर है तो आपकी शिक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं और समस्याओं पर जानकारी प्राप्त करनी होगी। लेकिन आपकी रुचि इस क्षेत्र में नहीं है और आपकी जानकारी भी इस क्षेत्र में अपर्याप्त है तो बेहतर यही है कि आप इस विषय पर फीचर न लिखें। किसी भी विषय पर लिखने से पूर्व उसके संबंध में आपको पर्याप्त अध्ययन कर लेना चाहिए।

4.4.2 विषय की प्रासंगिकता एवं प्रकाशन प्रकृति

प्रकाशन की प्रकृति के आधार पर आपको विषयों को प्राथमिकता देनी होगी। दैनिक समाचार पत्रों के लिए शिक्षा से जुड़ी सरकारी योजनाओं और घोषणाओं की तात्कालिकता को ध्यान में रखना आवश्यक है। जबकि मासिक पत्रिकाओं में शिक्षा की विभिन्न पद्धतियों के तुलनात्मक विश्लेषण को भी विषय बनाया जा सकता है। राजस्थान में "सती कांड" का विषय तात्कालिकता के आधार पर उस समय दैनिक पत्रों के लिए उपयुक्त था, तो आज कोई अन्य विषय अधिक उपयुक्त हो सकता है। आपको विषय का चयन करते समय यह अवश्य विचार करना चाहिए कि क्या इस समय इस विषय पर लिखे गए फीचर में पाठक रुचि लेंगे। सामाजिक फीचर से संबंधित कुछ विषय ऐसे हो सकते हैं जिनका महत्व हमेशा विद्यमान रहता है। जैसे बेरोज़गारी, अंधविश्वास, असमानता, दहेज समस्या आदि समस्याओं पर लिखते हुए यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि इनके नए पहलुओं को हम उजागर करें। घिसी-पिटी बातें दोहराने से फीचर नीरस और उबाऊ हो जाता है।

4.5 सामग्री का संकलन

फीचर लेखन के लिए महत्वपूर्ण कार्य है संबंधित विषय पर सामग्री संकलन। इसी के आधार पर उसे सशक्त और उपयोगी बनाया जा सकता है। सामग्री संकलन में कौन-सी सामग्री उपयोगी और उपयुक्त हो सकती है और कैसे, आइए इस पर भी एक नज़र डाली जाए।

- तथ्यों का संकलन एवं शोध
- फोटो
- साक्षात्कार

4.5.1 तथ्यों का संकलन एवं शोध

आपके पास अपनी बात की पुष्टि और प्रभाव के लिए संबंधित विषय पर तथ्यों के प्रमाण ज़रूरी हैं। अतः इनका संकलन ज़रूरी है। ये तथ्य आंकड़ों और तालिकाओं से प्राप्त हो सकते हैं, जिन्हें संबंधित सरकारी कार्यालयों, वाचनालयों, स्थान-विशेष पर स्वयं की खोजबीन, वार्तालाप तथा संबंधित लोगों अथवा अधिकारियों के साक्षात्कार से एकत्र किया जा सकता है। दुर्घटनाओं अथवा सांप्रदायिक दंगों में प्रभावित व्यक्तियों के साक्षात्कार उपयुक्त और प्रभावकारी सिद्ध होते हैं। शिक्षा नीति, दहेज प्रथा अथवा बाल-विवाह की समस्याओं पर आंकड़ें और तुलनात्मक तालिकाएँ आपकी बात की पुष्टि में सहायक होते हैं।

''वे बूढ़े हो चुके हैं'' शीर्षक से **जनसत्ता,** दिनांक 23 दिसंबर, 1990 में लिखे फीचर में आंकड़ों से बात को मज़बूती दी गई है:

> *भारत ही नहीं पूरी दुनिया में वृद्ध तेजी से बढ़ रहे हैं। यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन) के विशेषज्ञों का अनुमान है कि आगामी 15 वर्षों में यानी सन् 2005 तक दुनिया में 59 करोड़ लोग 60 वर्ष की उम्र पार कर चुकेंगे और वृद्ध हो चुके, इन लोगों में आधे से ज्यादा तीसरी दुनिया के गरीब लोग होंगे। पिछले सालों में 60 वर्ष से ज्यादा उम्र के वृद्धों की संख्या में वृद्धि की दर सामान्य आबादी की वृद्धि की दर से कहीं ज्यादा रही है। यह स्थिति विकासशील देशों की नहीं विकसित देशों में भी है।*

इस प्रकार कुल मिलाकर आपको तथ्यों के संकलन के साथ-साथ एक प्रकार का शोध कार्य भी हाथ में लेना होता है। स्वयं अपने प्रयासों से लाइब्रेरी में संबंधित विषय पर प्रकाशित पुस्तकों, योजनाओं और जानकारियों को पढ़ना और समझना होता है तभी प्रभावी एवं सशक्त फीचर लिखा जा सकता है।

4.5.2 फोटो

फीचर में उपयुक्त फोटो भी उपयोगी होते हैं जो न केवल उसे आकर्षक बनाते हैं वरन् विषय को समझने में, संवेदना को उभारने में भी मददगार होते हैं। दूरस्थ क्षेत्रों में जहाँ आदिवासी आज भी मछली को अपने भालों से मारकर अपने लिए भोजन तलाश करते हैं, उनके चित्रों से उनके जीवन पर लिखे फीचर को आकर्षक बनाया जा सकता है। भोपाल गैस कांड में लोग उस चिमनी के फोटो को देखने के लिए उत्सुक हो उठे जिसने मिनटों में बर्बादी का एक-एक न भूलने वाला खेल खेला।

फोटो साफ़ हों, मकसद की पूर्ति में समर्थ हों और प्रकाशन के बाद भी उभरकर अपना प्रभाव छोड़ सकें—इन बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है। ''साइकिल की उपयोगिता'' पर लिखे एक फीचर में चीन में इसके व्यापक इस्तेमाल को केंद्र बिंदु बनाया गया है। इस फीचर में एक बड़ी भीड़ को साइकिलों पर दर्शाते फोटो ने फीचर को निखारने में मदद की।

4.5.3 साक्षात्कार

ऊपर हम चर्चा कर चुके हैं कि साक्षात्कार तथ्य की अहमियत भी रखते हैं। साक्षात्कार समय और परिस्थितियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण होने चाहिए। नेलसन मंडेला की रिहाई के तुरंत बाद उनसे लिए गए साक्षात्कार से उनके विचार और रंगभेद नीति के विरुद्ध उनकी अपनी प्रतिक्रिया अथवा नीतियाँ जाना महत्वपूर्ण था। यह ध्यान रखना होगा कि सामाजिक फीचर के लिए साक्षात्कार में सामाजिक पहलुओं को उजागर करते हुए ही अपने प्रश्न और बातचीत को मोड़ना होगा। साक्षात्कार के समय प्रश्न छोटे-छोटे पूछें तथा उनके विस्तृत उत्तर प्राप्त करने के प्रयास करें ताकि आप उनका आवश्यकतानुसार उपयोग अपने फीचर में कर सकें।

4.6 सामग्री का संपादन एवं संयोजन

सामग्री के संकलन के पश्चात व्यवस्थित ढंग से उसका इस्तेमाल करना होता है। फीचर के

विषय के लिए जो सामग्री एकत्रित की है, उसमें से उपयुक्त वस्तु को निकालकर उसे एक क्रम में संयोजित करना पड़ता है। फीचर को आकर्षक ढंग से आरंभ करना होता है ताकि उसमें पाठक की रुचि बढ़ सके। जटिल भाषा से बचते हुए आम बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल करना ही उचित होता है। आरंभ के बाद विवरण में अनुकूल सामग्री का उपयोग किया जाता है। अपने विवरण में विषय के प्रति मार्मिकता और सहृदयता बरतना आवश्यक है। अतः कटु और द्वेषपूर्ण भाषा से बचना चाहिए। मध्य (विवरण) भाग में ही आपको आंकड़ों, तालिकाओं और फोटो आदि का भी उपयोग करना होता है। अतः इनकी भरमार से आपको बचना है। संतुलित आंकड़ों और तालिकाओं की सहायता ली जा सकती है। अधिक विस्तृत वाक्यात को ब्यौरेवार तारीख के अनुसार भी तालिका का रूप दिया जा सकता है। इसी प्रकार, दो या तीन से अधिक फोटो भी संतुलन बिगाड़ने का कारण बन सकते हैं अतः उपयुक्त स्थान पर उपयुक्त फोटो ही लगाएँ।

बोध प्रश्न

4) सामाजिक फीचर के लिए किस तरह की विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है? उत्तर तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

5) सांप्रदायिक सद्भाव को सामाजिक फीचर के लिए क्या आप प्रासंगिक विषय मानते हैं? कारण देते हुए उत्तर लगभग पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6) सामाजिक फीचर के लिए सामग्री का संकलन किन स्रोतों से किया जा सकता है? बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

3) सांप्रदायिक सद्भाव विषय पर फीचर के लिए आवश्यक सामग्री का विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) उक्त विषय पर फीचर के लिए पाँच पंक्तियों में एक रूपरेखा तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5) उक्त विषय के साथ दिए जाने वाले दो या तीन फोटो के विषय सुझाइए।

.....

.....

.....

4.7 फीचर लेखन की प्रस्तुति

इस भाग में हम सामाजिक फीचर के लेखन पर विचार करेंगे। दैनिक समाचारपत्रों में जगह की कमी की वजह से अधिक विस्तार वाले फीचर को स्थान नहीं मिल पाता है। इनकी अपेक्षा साप्ताहिक या मासिक पत्र-पत्रिकाओं के लिए अधिक विस्तृत फीचर लिखे जा सकते हैं। किसी भी फीचर को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं—आरंभ, मध्य अथवा विवरण; और अंत या उपसंहार।

4.7.1 आरंभ

सामाजिक फीचर में आरंभ की महत्ता अधिक है क्योंकि आरंभ ध्यान आकर्षित करने वाला होता है। शुरुआत अगर अच्छी हुई, रोचक हुई तो पाठक पूरा फीचर पढ़ने के लिए उत्सुक हो उठेगा अन्यथा वह उसे आगे पढ़ेगा ही नहीं। अतः विषय को कहाँ से और किस प्रकार शुरू किया जाए कि वह ध्यान आकृष्ट कर सके, यह विशेषज्ञता और अनुभव से ही आ सकता है। विषय के अनुसार आरंभ के चयन के लिए लेखक को मनोविज्ञान को समझने वाला होना चाहिए क्योंकि सामाजिक फीचर के सभी विषय कहीं-न-कहीं सीधे मनुष्य से या उसके वातावरण से जुड़े होते हैं। कुल मिलाकर फीचर का आरंभ इतना दिलचस्प होना चाहिए कि उसे पढ़ते ही पाठक पूरा फीचर पढ़ने के लिए विवश हो जाए इसके लिए विषय से संबंधित अधिक से अधिक जानकारी आपकी मददगार हो सकती है। एक उदाहरण देखिए :

> *साल के 365 दिनों में एक दिन शिक्षकों को दिया जाता है गोया कि वे पीड़ित और शोषित वर्ग के हैं जैसे बालिकाएँ, महिलाएँ, हरिजन और अल्पसंख्यक। और यह तब है जब आजादी से पहले और आज़ादी से कुछ समय बाद तक भी शिक्षक समाज की बहुत कुछ देते रहे हैं—अच्छी पुस्तकों और कुशल प्रशासकों के रूप में। उनकी एक गौरवशाली परंपरा रही है, देश-विदेश में उनका नाम रहा है—द्रोणाचार्य से लेकर डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन तक। गुरुओं के देश के नाम से भारत को जाने कितने विदेशी अब भी याद करते हैं पर वे गुरु अब कहाँ हैं जिसकी इच्छा राजा के लिए आदेश के समान होती थी?*
>
> **(कैसी छवि है शिक्षक की** : दामोदर अग्रवाल)

एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत है, जो 15 अक्तूबर, 1989 को **जनसत्ता** में प्रकाशित हुआ था। वासुदेव शाह के इस फीचर का शीर्षक है : **"जीवन में मिठास घोलता एक जीव"**। इसमें "शहद" को केंद्रित करते हुए फीचर का प्रारंभ करना था। कई पहलुओं से इसकी शुरुआत की जा सकती थी। मनुष्य इसे चाव से खाता है। या स्वास्थ्य के लिए इसके लाभप्रद पहलू से भी इसकी शुरुआत की जा सकती थी। शहद बनने की विधि से फीचर का आरंभ किया जा सकता था। निम्नलिखित उदाहरण में "आरंभ" शहद के स्वाद और उसके बनने की विधि के मिले-जुले रूप से किया गया है:

> *मिठास यानी शहद मधुमक्खियों की सबसे बड़ी देन है। रसीला, चिपचिपा, सरसों के तेल सा चमकीला, मधुर और स्वादिष्ट शहद फूलों के रस से तैयार किया जाता है। अलग-अलग किस्म के पेड़ों पर लगे मधुछत्तों में इकट्ठा हुए फूलों के रस से बने शहद का स्वाद अलग तरह का होता है। इसके निर्माण में फूल, फल, लता, वृक्ष, जंगल और दरख़्तों के कोटरों की अहम् भूमिका होती है।*

4.7.2 मध्य

मध्य भाग फीचर का वह भाग है जिसमें फीचर की मुख्य अंतर्वस्तु को विस्तार से प्रस्तुत किया जाता है। फीचर के इस भाग में सारी जानकारी को इस प्रकार पिरोना होता है कि उससे इसे लिखने का उद्देश्य भी उजागर होता रहे। फीचर के इस भाग के कमज़ोर रहने का अर्थ होगा, उसे नीरस बना देना। अतः निम्नलिखित सावधानियाँ मध्य भाग को सशक्त बनाने में सहायक हो सकती हैं:

- विषय से संबंधित सारी जानकारी का समावेश हो।
- मध्य भाग को इस प्रकार क्रमशः बढ़ाया जाए कि तारतम्य बना रहे।
- अनावश्यक फैलाव और अनुपयोगी विवरण से भी बचना चाहिए।
- उपयोगी जानकारी और विवरण से उसे दीर्घकालिक बनाया जा सकता है।
- आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करें।

मध्य भाग के एक अंश का एक उदाहरण देखें जो **"हमारी क्रूर दुनिया में बच्चे"** शीर्षक फीचर से लिया गया है:

> *विश्व शिखर सम्मेलन में सर्वसम्मति से स्वीकृत ये बाल अधिकार इतने असामान्य नहीं हैं कि उन्हें देने से राष्ट्र की तथाकथित प्रगति का चक्का जाम हो जाएगा या अर्थव्यवस्था चरमरा उठेगी। आखिर 71 देशों के राष्ट्राध्यक्षों, शासनाध्यक्षों समेत 151 देशों के प्रतिनिधियों ने इन्हें मंजूर किया है जिनमें अधिकांश देश हमसे भी विपन्न व अविकसित या अल्प विकसित हैं। इन अधिकारों को चार वर्गों में बाँटा जा सकता है:*
>
> क) *जीने का अधिकार। इसमें बच्चों को स्वास्थ्यकर भोजन, स्वच्छ पानी, सुरक्षित आश्रय और पर्याप्त स्वास्थ्य सेवाएँ प्राप्त करने और जीवन के लिए अन्य खतरों से सुरक्षा पाने का अधिकार है।*

शिक्षा एवं व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए उचित सुविधाएँ और साधन पाने का अधिकार। इस विकास में बाधक परिस्थितियों से संरक्षण पाने का अधिकार भी शामिल है।

4.7.3 अंत और शीर्षक

अंत फीचर का वह भाग है जहाँ फीचर को समाप्त किया जाता है। इस भाग में सारे फीचर का निष्कर्ष भी देना होता है। अच्छा अंत फीचर के विषय पर सोचने, समझने पर मजबूर करता है। और यदि संभव हो तो पाठक अथवा समाज को क्रियाशील भी करता है। यह एक अच्छे अंत की सफलता है। **"कैसे जुटेगा भविष्य में भोजन"** शीर्षक से जगदीप सक्सेना लिखित इस फीचर का अंत उदाहरणस्वरूप देखिए, जिसे 2 दिसंबर, 1990 के **जनसत्ता** में प्रकाशित किया गया था।

> *हर किसी को भरपेट भोजन जुटाने की सारी ज़िम्मेदारी वैज्ञानिकों और किसानों पर नहीं है। ना ही यह काम उनके बस का है। ए.एफ.ओ. के अनुसार दुनिया में इतना भोजन है कि अगर सबको बराबर बाँट दिया जाए तो दस फीसदी अनाज बच जायेगा। फिर भूख क्यों? इसका कारण असमान वितरण है। विकसित देशों के लोग ज़्यादा खा रहे हैं, जबकि विकासशील देशों के गरीबों को भरपेट भोजन नसीब नहीं। जब अनाज के सही वितरण का काम कोई अंतर्राष्ट्रीय संस्था करेगी तभी भूख का नाम भी मिटेगा।*

सामाजिक फीचर का शीर्षक आकर्षक होना चाहिए। वह समस्या की ओर पाठकों का ध्यान केंद्रित करने वाला हो ताकि पाठक जल्दी से विषय को समझकर उसको पढ़ने की ओर प्रेरित हो सके। बहुत अधिक लंबे और निबंधात्मक शीर्षक प्रायः पसंद नहीं किए जाते। कुछ रोचक शीर्षकों के उदाहरण देखिए:

- कैसे जुटेगा भविष्य में भोजन
- हमारी क्रूर दुनिया में बच्चे

- जीवन में मिठास घोलता एक जीव
- कैसी छवि है शिक्षक की
- फिर आएंगे साइकिल के दिन

4.7.4 भाषा-शैली

सामाजिक फीचर में भाषा उसी प्रकार महत्वपूर्ण है जिस प्रकार शरीर के लिए आत्मा। इसका बुनियादी कारण तो यह है कि सामाजिक फीचर व्यक्ति और समाज से सीधे जुड़े होते हैं। इनमें उनको प्रथाएँ-कुप्रथाएँ, उनकी आस्था-अनास्था, उनके सुख-दुख, उनके उत्सव-त्यौहार आदि सभी की चर्चा होती है, जिसके लिए सच्चाई, बेबाकी तथा आत्मीयता और मार्मिकता की भी ज़रूरत है। सादगी और सुरुचि उत्कृष्ट लेखन के अनिवार्य तत्व हैं जो शब्द, वाक्य, परिच्छेद—सभी को स्पर्श करते हैं। फीचर लेखक को जहाँ एक ओर सहजता और सुबोधता का ध्यान रखना होता है, वहाँ दूसरी ओर साहित्यिक अभिव्यक्ति पर भी दृष्टि रखनी होती है। विषय से संबंधित यथार्थ जानकारी तथा संबंधित व्यक्ति और समूह से जुड़े प्रश्नों को उन्हीं की भाषा और शैली में स्थान देने से स्वाभाविकता आती है।

इस प्रकार, भाषा का संतुलित और सहज प्रयोग फीचर के निखार के लिए महत्वपूर्ण है। आम बोलचाल की भाषा ही साहित्यिक फीचर का आभूषण है। सर्वसाधारण में प्रचलित शब्दों का उपयोग किया जाना चाहिए। वाक्य सुगठित तथा छोटे हों। गति और उत्तेजना को उत्पन्न कर सकने में समर्थ सीधे-सादे, संयत वाक्यों का प्रयोग प्रभावी होता है। जटिल और कठिन भाषा का प्रयोग फीचर में पाठक की रुचि कम कर देता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है:

> *भुखमरी, कुपोषण या अल्पोषण से ग्रस्त करीब दस करोड़ बच्चों की डबडबाई आंखों में असंख्य अनुत्तरित सवाल तैर रहे हैं। साल-दर-साल दिवस मनाने की हमारी समारोहधर्मिता कायम है। इस उत्सवधर्मिता पर तो होश संभालते ही सीधे बुढ़ापे में कदम रखने को अभिशप्त मासूम ज़िंदगियों की पीड़ा का कोई-असर पड़ता है और न पेट की खातिर पहाड़ से कामों में खटती नन्हीं हथेलियों के छालों का। ऐसी बाल निरपेक्ष और भोंथरी संवेदनाओं के बीच भारत का संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार घोषणा-पत्र और कार्य योजना की पुष्टि करना एक निर्मम विद्रूप ही कहा जाएगा।*

निर्मम विद्रूप, भोंथरी संवेदना, बाल निरपेक्ष, अभिशप्त, उत्सवधर्मिता, समारोहधर्मिता आदि अपेक्षाकृत कठिन शब्दों के प्रयोगों के बावजूद इस फीचर की भाषा साहित्यिक स्पर्श लिए हुए हैं। भाषा को अधिक सरल और सुबोध बनाकर भी साहित्यिक स्पर्श दिया जा सकता है।

बोध प्रश्न

7) सामाजिक फीचर के आरंभिक अंश की क्या विशेषताएँ होनी चाहिए। उत्तर लगभग पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8) सामाजिक फीचर के मध्य भाग का लेखन करते हुए कौन-सी सावधानियाँ रखें? उत्तर तीन पंक्तियों में लिखें

.....

.....

.....

9) सामाजिक फीचर के शीर्षक की विशेषता क्या होनी चाहिए? दो पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

अभ्यास

6) सांप्रदायिक सद्भाव पर 200-250 शब्दों में एक फीचर लेख तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7) उपर्युक्त फीचर का उचित शीर्षक दीजिए।

.....

.....

4.8 सारांश

फीचर लेखन के सृजनात्मक पाठ्यक्रम की इस चौथी इकाई में सामाजिक लेखन पर विचार किया गया है। समाज से जुड़ा प्रत्येक प्रश्न, समस्या या मुद्दा सामाजिक फीचर का विषय बनाया जा सकता है। फिर भी, विचार की सुविधा के लिए हमने सामाजिक समस्या, शिक्षा, सांप्रदायिकता आदि पर विस्तार से विचार किया है। बच्चों, महिलाओं, ग्रामीणों आदि पर फीचर के बारे में आप पिछली इकाइयों में पहले ही पढ़ चुके हैं।

- सामाजिक फीचर के लिए विषय तय करते वक्त सबसे पहले यह देख लेना चाहिए कि इस विषय की कितनी प्रासंगिकता है। ऐसा कोई विषय, जिसमें पाठक रुचि न लें, उस पर फीचर का लेखन प्रासंगिक नहीं होगा। सामाजिक फीचर समाज को रूढ़ियों से मुक्त कराने, भाईचारा स्थापित करने व समाज को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से लिखे जाने चाहिए। इसके लिए पर्याप्त अध्ययन और आवश्यक तैयारी कर लेनी चाहिए।

- सामाजिक फीचर का लेखन तभी सार्थक हो सकता है जब वह सोद्देश्यपूर्ण और सुरुचिपूर्ण हो। फीचर तैयार करने से पहले संकलित सामग्री के आधार पर रूपरेखा बना लीजिए। पत्र-पत्रिका में स्थान के आधार पर उसका आकार तय कीजिए और जो चित्र आदि देने हैं उन पर भी विचार कर लीजिए फिर लेखन आरंभ कीजिए।

- सामाजिक फीचर के आरंभिक अंश में समस्या का परिचय अवश्य दे देना चाहिए। फिर एक-एक पहलू अत्यंत तर्कपूर्ण और रोचक ढंग से पेश कीजिए। जहाँ आवश्यक हो वहाँ किसी घटना का उल्लेख, लोगों की बातचीत का अंश या किसी विद्वान के कथन को उद्धृत कीजिए। जब फीचर के विषय से संबंधित सभी पक्षों का समावेश हो जाए तो अत्यंत संक्षेप में लेख का समाहार कर लीजिए। अंत में कोई सुझाव, समाधान या पाठकों को समस्या के प्रति जागरूक रहने का आह्वान कर सकते हैं। शीर्षक में विषय का संकेत अवश्य होना चाहिए।

- सामाजिक फीचर की भाषा सरल, सुबोध और लोगों को उद्वेलित करने वाली होनी चाहिए। आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुए उसके स्तर को गिराना नहीं चाहिए। शैली पठनीय तथा रोचक हो। फीचर में कोई ऐसी बात नहीं होनी चाहिए जो पाठकों के किसी वर्ग या व्यक्ति को अपमानित करे।

4.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) क) **आर्थिक फीचर :** क्योंकि यह आर्थिक पक्ष से संबंधित विषय हैं, यद्यपि यह ऐसे विषय है कि इसका असर समाज पर भी पड़ता है, परंतु फीचर की मुख्य सामग्री अर्थ संबंधी होगी।

   ख) ऊर्जा के नए स्रोत, विज्ञान विषय। यहाँ भी मुख्य विषय वस्तु विज्ञान की जानकारी पर आधारित होगी।

   ग) शिक्षा का व्यवसायीकरण सामाजिक फीचर के लिए उपयुक्त विषय है। शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव समाज के विकास पर सीधे पड़ता है।

   घ) जनसंख्या वृद्धि भी सामाजिक फीचर के लिए उपयुक्त है। यह एक सामाजिक समस्या है।

2) सामाजिक फीचर में सामाजिक समस्या की प्रमुखता रहती है जबकि आर्थिक फीचर में आर्थिक समस्या की। आर्थिक फीचर में व्यवसाय और वाणिज्य से संबंधित घटनाचक्रों को विषय बनाया जाता है और एक खास तरह की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग होता है।

3) सामाजिक फीचर लोगों में सामाजिक जागरुकता लाने में सहायक होता है। वह समाज के विभिन्न वर्गों में भाईचारा स्थापित करने का माध्यम भी बन सकता है।

4) सामाजिक समस्याओं की जानकारी, उनके संबंध में पर्याप्त अध्ययन, समाज के प्रति उदार और प्रगतिशील दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

5) सांप्रदायिकता हमारे देश की सर्वाधिक ज्वलंत समस्या है। इसके प्रति लोगों को जागरूक बनाना और लोगों में सांप्रदायिक सद्भाव कायम करने का काम फीचर लेखों द्वारा किया जा सकता है। भारत विभिन्न धर्मों का देश है। इसलिए यह आवश्यक है कि विभिन्न धर्मावलंबी एक्यबद्ध होकर रहें अन्यथा देश की एकंता और अखंडता को सुरक्षित रखना कठिन होगा।

6) i) अध्ययन और शोध द्वारा

   ii) लोगों से बातचीत

   iii) संबंधित स्थान की यात्रा

7) देखिए उपभाग 15.7.1

8) देखिए उपभाग 15.7.2

9) देखिए उपभाग 15.7.3

अभ्यास

1) इसमें आप पंडाल, बरात, रोशनी, बैठने की व्यवस्था, भोज आदि के संबंध में विवरण दे सकते हैं।

2) कोई ऐसा सरकारी दफ्तर लीजिए जहाँ संपर्क का ज्यादा वास्ता पड़ता हो। जैसे बिजलीघर, टेलीफोन दफ्तर, रेलवे का आरक्षण कार्यालय आदि। जनता की परेशानी, अधिकारियों का रवैया आदि की रूपरेखा में शामिल कर सकते हैं।

3) i) किसी शहर में दंगे की घटना
   ii) हिंसा और विनाश का विवरण
   iii) भाईचारे के प्रसंगों का उल्लेख
   iv) सांप्रदायिक ताकतों को अनावृत करने वाले प्रसंग
   v) आम लोगों का मत

4) उपर्युक्त सामग्री के आधार पर रूपरेखा बना सकते हैं।

5) i) दंगे से प्रभावित क्षेत्र का चित्र
   ii) रोती-बिलखती औरतों-बच्चों के चित्र
   iii) कर्फ्यू के दौरान सड़कों के दृश्य

6) फीचर स्वयं तैयार कीजिए।

7) शीर्षक स्वयं लिखिए।

कुछ उदाहरण : यह आग कब बुझेगी जलते शहर में भी जीवित है इंसानियत कब तक लड़ते रहेंगे इस तरह

इकाई 5 सांस्कृतिक विषयों में फीचर लेखन

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य
5.1 प्रस्तावना
5.2 सांस्कृतिक फीचर का अभिप्राय
5.3 सांस्कृतिक फीचर के प्रकार
  5.3.1 परंपरा संबंधी फीचर
  5.3.2 कला एवं साहित्य संबंधी फीचर
  5.3.3 शिक्षा संबंधी फीचर
  5.3.4 भाषा संबंधी फीचर
  5.3.5 अन्य सांस्कृतिक फीचर
5.4 विषय का चयन
  5.4.1 रुचि एवं विशेषज्ञता
  5.4.2 विषय की प्रासंगिकता
  5.4.3 प्रकाशन की प्रकृति
5.5 सामग्री का संकलन
  5.5.1 विषय संबंधी शोध एवं अध्ययन
  5.5.2 तथ्यों का संकलन
  5.5.3 साक्षात्कार
  5.5.4 अन्य सामग्री
5.6 सामग्री का संयोजन और संपादन
5.7 फीचर का लेखन
  5.7.1 आरंभ
  5.7.2 मध्य
  5.7.3 अंत एवं शीर्षक
  5.7.4 भाषा एवं शैली
5.8 सारांश
5.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

यह इकाई सांस्कृतिक विषय पर फीचर लेखन से संबंधित है। इस इकाई के अध्ययन से आप:

- सांस्कृतिक फीचर का अभिप्राय स्पष्ट कर सकेंगे;
- सांस्कृतिक फीचर के विभिन्न भेदों का बता सकेंगे;
- विषय चयन के समय ध्यान देने योग्य बातों का उल्लेख कर सकेंगे;
- फीचर के लिए आवश्यक सामग्री की उपयोगिता बता सकेंगे;
- प्राप्त सामग्री का संयोजन और संपादन कर सकेंगे;
- सांस्कृतिक फीचर के लिए चयनित विषय पर फीचर लिखने की कुशलता बढ़ा सकेंगे; और
- फीचर के लिए उपयुक्त भाषा और शैली के उपयोग की क्षमता बढ़ा सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

यह इस पाठ्यक्रम की पांचवी इकाई है और इस खंड की दूसरी इकाई। चौथी इकाई में आपने सामाजिक विषयों पर फीचर लिखने के बारे में अध्ययन किया था। हमने बताया था कि सामाजिक विषयों की पहचान क्या है और उसके लिए प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण विषय

का चयन कैसे किया जाता है। सामाजिक विषय के अंतर्गत कौन-से विषय आते हैं तथा एक अच्छे सामाजिक फीचर की क्या विशेषता होती है।

इस इकाई में हम सांस्कृतिक विषयों पर फीचर लेखन का अध्ययन करेंगे। सामाजिक की तरह सांस्कृतिक शब्द भी अति व्यापक अर्थ वाला है। संस्कृति की कोई सर्वमान्य परिभाषा देना आसान नहीं है। हमारी कोशिश होगी कि आपको सांस्कृतिक फीचर का आशय स्पष्ट करते हुए यह बताएँ कि कौन-कौन से विषय सांस्कृतिक फीचर के अंतर्गत शामिल किए जा सकते हैं। अभी तक हमने जिन विषयों पर फीचर लेखन की चर्चा की है उनमें से कई विषय संस्कृति के अंतर्गत भी शामिल कर सकते हैं जैसे शिक्षा। शिक्षा को सामाजिक और सांस्कृतिक दोनों पहलुओं से प्रस्तुत किया जा सकता है। इन्हीं सब पहलुओं पर हम इस इकाई में चर्चा करेंगे।

सांस्कृतिक विषयों पर फीचर लिखने के लिए यह आवश्यक है कि आप पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले ऐसे फीचर लेखों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें और यह समझने का प्रयास करें कि इन फीचर लेखों की क्या विशेषता है और वे अन्य विषयों पर लिखे गए फीचर लेखों से किन अर्थों में भिन्न है। इसके अतिरिक्त आप अपने आसपास के सांस्कृतिक जीवन का भी अवलोकन कीजिए और यह देखिए कि किस तरह संस्कृति लोगों के जीवन का अभिन्न अंग है। इन्हीं सब बातों से आप सांस्कृतिक फीचर लेखन की विशिष्टता को पहचान और समझ सकेंगे।

5.2 सांस्कृतिक फीचर का अभिप्राय

संस्कृति शब्द संस्कार से बना है। संस्कार का अर्थ है व्यक्ति के मानस पर पड़ने वाला वह प्रभाव जो उसके परिवेश, परिवार और समाज के माध्यम से पड़ता है। इन्हीं संस्कारों से मनुष्य का निजी और सामाजिक व्यक्तित्व बनता है। यह प्रभाव उन विचारों, परंपराओं, रहन-सहन, रीति-रिवाजों, व्यवहारों और कला तथा साहित्य की रचनाओं से पड़ता है जिनके संपर्क में रहकर व्यक्ति बड़ा होता है। इन्हीं से मनुष्य के मानस का गठन होता है। उसके विचार और व्यवहार का निर्धारण होता है। आमतौर पर एक विशिष्ट समाज का अपना मानसिक और वैचारिक गठन होता है—यह उस समाज की सांस्कृतिक पहचान है। इसके अच्छे और बुरे, दोनों पहलू होते हैं। दूसरे, समाज के भौतिक जीवन में होने वाले परिवर्तनों का असर भी उस समाज पर पड़ता है, जिससे समाज की सांस्कृतिक पहचान भी प्रभावित होती है। अन्य समाजों के संपर्क में आने से संस्कृति में तब्दीली आती है। इस प्रकार, संस्कृति में एक निरंतरता बनी रहती है। प्रत्येक समाज की संस्कृति को उस समाज की परंपरा, आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज, कला और साहित्य, शिक्षा, विचार, धर्म भाषा आदि में पहचाना जा सकता है। फीचर लेखन के माध्यम से हम न केवल अपने समाज की सांस्कृतिक पहचानों से और अधिक जुड़ सकते हैं वरन् उसके अच्छे-बुरे पहलुओं को समझकर उससे अधिक गहरा रिश्ता जोड़ सकते हैं। इसके साथ ही अन्य समाजों की सांस्कृतिक विशिष्टताओं को जानने-समझने का अवसर भी मिल सकता है। इससे हमारा दृष्टिकोण अधिक उदार और मानवीय बनता है।

संस्कृति के बारे में एक भ्रम यह भी है कि संस्कृति और धर्म एक ही चीज है। वस्तुतः धर्म, संस्कृति का एक अंग है और वह भी धार्मिक कर्मकांडों और मान्यताओं के रूप में नहीं वरन् मानवीय मूल्यों और आदर्शों के रूप में। धर्म सिर्फ इस अर्थ में संस्कृति का अंग बनता है। संस्कृति, धर्म से कहीं व्यापक शब्द है। वह एक ही समाज के विभिन्न धर्मावलंबियों की साझी परंपरा होती है जबकि धार्मिक रूढ़ियाँ सिर्फ एक संप्रदाय तक सीमित होती हैं।

सांस्कृतिक फीचर का लेखन अन्य फीचर लेखों से भिन्न होता है सामाजिक फीचर में किसी न किसी रूप में सामाजिक समस्या की प्रधानता रहती है, समस्या का वर्णन और विश्लेषण तथा लोगों को जागरूक करना उद्देश्य रहता है, जबकि सांस्कृतिक फीचर प्रायः समस्या प्रधान नहीं होता बल्कि विषय का रोचक, ज्ञानवर्द्धक परिचय देना तथा यह बताना उद्देश्य होता है कि यह उस समाज की संस्कृति को किस रूप में समृद्ध करता है। इसी प्रकार, आर्थिक फीचर में अर्थ जगत की घटनाओं के उतार-चढ़ाव को प्रस्तुत करना होता है। यही बात खेलकूद से संबंधित फीचर लेखों पर लागू होती है जबकि सांस्कृतिक फीचर का मूल्य अधिक स्थायी और सोद्देश्यपूर्ण होता है।

संस्कृति के बहुत सारे पक्ष ऐसे भी हैं जिनका उल्लेख हम अन्य विषयों के अंतर्गत भी कर सकते हैं। जैसे लोक कला, इनका उल्लेख हम ग्रामीण जीवन से संबंधित फीचर के अंतर्गत भी कर सकते हैं। शिक्षा से संबंधित कई पक्षों की चर्चा हम सामाजिक फीचर के अंतर्गत कर चुके हैं। संस्कृति के विभिन्न पक्षों के आधार पर हम सांस्कृतिक फीचर लेखों का निर्धारण कर सकते हैं।

5.3 सांस्कृतिक फीचर के प्रकार

सांस्कृतिक फीचर का लेखन करने से पहले उसके क्षेत्र को जान लेना आवश्यक है। इतिहास, परंपरा, कला, साहित्य, भाषा, शिक्षा, धर्म, दर्शन आदि विभिन्न क्षेत्रों को संस्कृति के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है। संस्कृति का क्षेत्र अपेक्षाकृत गंभीर है इसलिए इन विषयों पर लेखन को सुरुचिपूर्ण रोचक और ज्ञानवर्द्धक बनाना आवश्यक है। यहाँ हमने सांस्कृतिक फीचर के कुछ खास प्रकारों का परिचय दिया है ताकि आप इनकी विशिष्टता को पहचान सकें। सांस्कृतिक फीचर के कुछ प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं:

- परंपरा संबंधी फीचर
- कला एवं साहित्य संबंधी फीचर
- शिक्षा संबंधी फीचर
- भाषा संबंधी फीचर

इनके अतिरिक्त धर्म, दर्शन, अध्यात्म, रीति-रिवाज, आचार-विचार, रहन-सहन आदि विषयों पर भी लिखे जाने वाले फीचर सांस्कृतिक फीचर में शामिल किए जा सकते हैं।

5.3.1 परंपरा संबंधी फीचर

परंपरा एक व्यापक शब्द है। संस्कृति का संबंध परंपरा से बहुत गहरा होता है। परंपरा वह गतिमानता है जो हमें अतीत से प्राप्त हुई है। इसमें समाज के वे तत्व विद्यमान होते हैं जिनसे समाज की पहचान भी बनती है और जो उस समाज को जीवित भी बनाए रखते हैं। समाज में अतीत के वे तत्व भी विद्यमान होते हैं जो अपनी प्रासंगिकता खो चुके हैं। उन्हें रूढ़ियाँ कहते हैं। परंपरा और रूढ़िवादिता को एक नहीं समझा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए स्त्रियों का सम्मान करना भारतीय परंपरा है परंतु पर्दा प्रथा, सती प्रथा आदि रूढ़ियाँ हैं। इसी प्रकार जातिवाद, धार्मिक अंधविश्वास आदि वे रूढ़ियाँ हैं जो हमारे समाज की परंपरा के अंग नहीं हैं बल्कि हमारे अतीत के वे मृत पक्ष हैं जिन्हें छोड़ देना चाहिए।

परंपरा के संबंध में सही दृष्टिकोण का विकास करना और परंपरा के जीवंत तत्वों का परिचय देना फीचर लेखन का विषय हो सकता है। उदाहरण के लिए राम, कृष्ण आदि की कथाएँ हमारी परंपरा के अभिन्न अंग है। इन कथाओं को विषय बनाकर सदियों से महान् साहित्य की रचना की जाती रही है। आज हम अगर राम कथा की इस गतिशील और वैविध्यमयी परंपरा को त्यागकर राम कथा के केवल एक रूप को स्वीकार करेंगे तो वह हमारी परंपरा का अनादर ही कहा जाएगा। राम कथा की इसी प्राचीन समृद्ध परंपरा का परिचय देने वाले एक फीचर का अंश यहाँ उद्धृत है:

> *बाल्मीकि का समय हम नहीं जानते, पर यह जाना जा सकता है कि आज से करीब डेढ़ हजार साल पहले, गुप्तकाल के अंत समय में, उनकी रामायण का स्वरूप क्या रहा होगा। रामायण की जितनी भी हस्तलिपियाँ मिली हैं वे एक हजार साल से अधिक पुरानी नहीं हैं। रामायण की सबसे पुरानी हस्तलिपी 1020 ई. की है, जो नेपाल से मिली है। सबसे अर्वाचीन हस्तलिपि 1800 ई. के आसपास की है। चूंकि रामायण में समय-समय पर नई बातें जोड़ी जाती रही हैं, इसलिए उपलब्ध हस्तलिपियों में ढेर सारे पाठांतर देखने को मिलते हैं। बाल्मीकी-रामायण के इन उपलब्ध पाठों को मोटे तौर पर दो भागों में बाँटा गया है—उत्तर भारतीय पाठ और दक्षिण भारतीय पाठ। विद्वानों का मत है कि रामायण का दक्षिण भारतीय पाठ ज्यादा प्रामाणिक है।*
>
> ("रामकथा की वास्तविकता"—गुणाकर मुले, "सारंगा स्वर" 8 जून, 1988)

उपर्युक्त अंश में रामकथा की प्राचीनता पर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार किया गया है। अगर हम परंपरा को संकीर्ण दृष्टि से न देखें तो हम उसके प्रति ज्यादा सही दृष्टिकोण अपना सकते हैं। फीचर लेखक परंपरा के ऐसे ही अनछुए पहलुओं को उजागर कर इस कार्य में मदद कर सकता है।

परंपरा का महत्वपूर्ण अंग है हमारी लोक संस्कृति। लोक जीवन के ऐसे कई पहलू जो हमारे समाज को सभ्य और सुसंस्कृत बनाते हैं, उन पर फीचर लिखकर उन्हें पुनः समाज में प्रतिष्ठा दिला सकते हैं। उदाहरण के लिए अतिथियों का सत्कार, विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच पारस्परिक भाईचारा, बड़े-बूढ़ों का सम्मान, स्त्रियों का आदर आदि ऐसे पक्ष हैं जिनको हम वर्तमान सभ्यता के कुप्रभावों के कारण छोड़ते जा रहे हैं। ऐसे पक्षों को फीचर का विषय बनाकर हम अपने समाज को सुसंस्कृत बनाने में मदद कर सकते हैं।

5.3.2 कला एवं साहित्य संबंधी फीचर

संस्कृति अपनी मुखर अभिव्यक्ति कला और साहित्य के माध्यम से ही करती है। साहित्य भी व्यापक अर्थ में कला का ही अंग है। कला के दो रूप मिलते हैं—एक उपयोगी कला और दूसरी ललित कला। उपयोगी कला उसे कहते हैं जिसमें निर्मित वस्तु का भौतिक उपयोग होता है जैसे घड़े बनाना, कुर्सी बनाना, कालीन बुनना आदि। इन कार्यों को करने में भी कौशल और ज्ञान की जरूरत होती है। भारत की सभ्यता अत्यंत प्राचीन है। यहाँ सदियों से ऐसी उपयोगी कलाओं का विकास होता रहा है। भारत के बने हुए कपड़े सदियों तक सारे विश्व में लोकप्रिय रहे हैं। ललित कला उस कला को कहते हैं जिसका उद्देश्य मनुष्य को आनंद पहुँचाना है। जैसे कविता लिखना, संगीत की साधना, चित्र बनाना आदि। फिल्म बनाना, फोटो खींचना आदि नवीन कलाएँ हैं। ये सभी फीचर के विषय हो सकते हैं। दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले धारावाहिकों पर अच्छा और रोचक फीचर तैयार किया जा सकता है। समय-समय पर होने वाली कला-प्रदर्शनियों, सांस्कृतिक आयोजनों आदि पर भी फीचर तैयार किए जा सकते हैं। यहाँ उदाहरण के लिए प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट स्व. के. शंकर पिल्लै द्वारा स्थापित अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय पर लिखे गए फीचर का एक अंश दे रहे हैं। इस तरह के विषय सभी के लिए पठनीय और रोचक होते हैं:

> *ऐसी ही एक प्रदर्शनी देखकर चाचा नेहरू ने शंकर को गुड़ियों की एक स्थायी प्रदर्शनी लगाने का सुझाव दिया। जब बाल पुस्तक निधि के लिए बहादुरशाह जफर मार्ग पर इमारत बन रही थी, एक खंड इस संग्रह के लिए अलग रख दिया गया। 1965 में इस संग्रह का प्रदर्शन स्थायी तौर पर आरंभ हुआ। वह जो एक अबोध गुड़िया द्वारा शुरुआत थी, अब 6000 से ऊपर का संग्रह हो गया है....विभिन्न देशों के रंगरूप, परिधान, रचना, और कल्पना का प्रतिनिधित्व करते शीशे लगे खिड़कियों से झांकते भिन्न-भिन्न आकारों वाले गुड्डे-गुड़िया बच्चों और बड़ों का मन समान रूप से मोहते हैं।*
>
> (**यह धरोहर कल्पनाशील शंकर की देन है**—सुष्मिता चौबे "नवभारत टाइम्स" 19 मई, 1990)

5.3.3 शिक्षा संबंधी फीचर

शिक्षा संबंधी फीचर लेखों की चर्चा हम इकाई 15 में भी कर चुके हैं। केवल औपचारिक रूप से विद्यालयों-विश्वविद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा ही शिक्षा नहीं है। अपने घर-परिवार और समाज में पलते-बढ़ते हुए मनुष्य बराबर दूसरों से कुछ-न-कुछ सीखता है। यही शिक्षा है और जैसी शिक्षा हमें मिलती है उसी से हमारे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इसीलिए शिक्षा को संस्कृति का अनिवार्य अंग माना जाता है। शिक्षा के इस महत्व को ध्यान में रखकर अच्छे फीचर तैयार किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए शिक्षा की सार्थकता इस बात से भी तय होती है कि शिक्षक और छात्र का संबंध किस तरह का है। भारत की परंपरा गुरु को देवतुल्य मानने की रही है परंतु आज वह आदर्श बदल गया है। न वैसे शिक्षक रहे और न ही विद्यार्थी इस समस्या पर अच्छा फीचर तैयार किया जा सकता है। ऐसे ही एक फीचर लेख का अंश देखिए:

> *आजकल शिक्षकों के लिए शिक्षा महज व्याख्यानबाजी बनकर रह गई है और विद्यार्थियों के लिए मनोरंजन का साधन या डिग्री हासिल करने की निरी औपचारिकता। शिक्षकों को लगता है कि उनके पढ़ाने का तनख्वाह लेने के अलावा*

कोई मतलब नहीं है और छात्रों को लगता है कि उनके पढ़ने का पढ़ा-लिखा कहलाने के अलावा कोई मतलब नहीं। ऐसे में छात्रों और शिक्षकों के बीच संबंधहीनता में लगातार गैर जरूरी होती जाती मौजूदा शिक्षा व्यवस्था को बदले कौन? सरकार को वोट की राजनीति से फुरसत नहीं और जनता को दाल-रोटी के संघर्ष से।

(**अब न कोई पढ़ना चाहता है न पढ़ाना**—रजनी नागपाल, '**जनसत्ता**' 2 सितंबर, 1990)

5.3.4 भाषा संबंधी फीचर

भाषा मनुष्य की भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। बिना भाषा के मनुष्य अपंग है। भाषा के होने के कारण ही हजारों साल पहले रची गई कृतियाँ आज भी जीवित हैं। इस प्रकार सांस्कृतिक परंपराएँ भाषा द्वारा ही सुरक्षित रहती हैं। ये परिवर्तन समाज में होने वाले परिवर्तनों तथा अन्य भाषायी समुदायों के संपर्क में आने से संभव होते हैं। कोई भाषा तभी तक जीवित रहती है जब तक कि वह समय के अनुरूप अपने को ढालती रहती है। भारत विशाल देश है। यहाँ 15 भाषाओं को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया गया है। इनके अलावा भी कई भाषाएँ, उपभाषाएँ और बोलियाँ विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाती हैं। इन सबको जानने-समझने से हम अपने देश की समृद्ध भाषायी परंपरा को जान-समझ सकते हैं।

भाषा किस तरह हमारे समाज को बनाने में मदद करती है, हमारे व्यक्तित्व का दर्पण होती है, इसे भी हम अच्छे फीचर लेख द्वारा बता सकते हैं। भारतीय भाषाओं की पारस्परिक एकता को व्यक्त करने वाले एक फीचर लेख का अंश यहाँ उद्धृत है:

सभी भारतीय भाषाओं के प्रति जनतांत्रिक रवैया तो यही हो सकता है कि सभी भारतीय भाषाओं को समानता के आधार पर समान दर्जा दिया जाए, न केवल संविधान के पन्नों पर बल्कि व्यवहार में भी। अपने-अपने क्षेत्रों में उन्हें शिक्षा से लेकर सरकारी व्यवहार तक में इस्तेमाल की पूरी छूट होनी चाहिए। इसके साथ ही उन अल्पसंख्यक भाषाओं को भी इस्तेमाल करने की छूट होनी चाहिए, जिनको बोलने वालों की संख्या उस राज्य में दस प्रतिशत से ज्यादा हो या किसी क्षेत्र विशेष में अच्छी खासी बड़ी संख्या हो। इसके अतिरिक्त भी जो भाषाएँ या बोलियाँ अलग-अलग क्षेत्रों में व्यवहार में आती हों उनके संरक्षण और संवर्धन की पूरी सुविधा हासिल होनी चाहिए। भारत की सभी भाषाओं और बोलियों चाहे बोलने वालों की संख्या कुछ हज़ार में ही क्यों न हो, के साहित्य तथा लिपि के संरक्षण और विकास के पूरे प्रयास होने चाहिए। यही एकमात्र जनवादी तरीका है जिससे सभी भारतीय भाषाओं के बीच समानता और एकता कायम की जा सकती है।

(**उर्दू का सवाल और भाषा समस्या**, "उत्तरार्द्ध" अप्रैल, 1988)

5.3.5 अन्य सांस्कृतिक फीचर

ऊपर गिनाए गए सांस्कृतिक फीचर के अलावा भी कई अन्य विषय हो सकते हैं। उदाहरण के लिए किसी समाज के आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज, धर्म-दर्शन आदि पक्षों पर भी फीचर लेख तैयार किए जा सकते हैं। गांधीजी के अहिंसा संबंधी विचारों की प्रासंगिकता, भारतीय व्यंजनों की विविधता, भारतीय फूलों का सौंदर्य आदि विविध विषयों पर फीचर लेख तैयार किए जा सकते हैं। भारतीय फूल "गुलदाउदी" पर प्रकाशित एक फीचर का अंश द्रष्टव्य है:

रंग-रूप की विविधता में गुलदाउदी का कोई जवाब नहीं। देश के दक्षिणी और पश्चिमी हिस्सों की पुरानी किस्मों पर छोटे और पीले या सफेद फूल उगते हैं। पूर्वी और उत्तरी हिस्सों में गुलदाउदी की बागवानी व्यावसायिक स्तर पर की जा रही है। इसलिए यहाँ कई रंगों के फूल देखने को मिलते हैं जैसे लाल, बैंगनी, पीला, सफेद वगैरह। लाल और नारंगी के बीच के कई हल्के गहरे रंगों में गुलदाउदी का सौंदर्य देखते ही बनता है। देश के दक्षिणी और पश्चिमी इलाकों में अगस्त से फरवरी तक खूब फूल खिलते हैं। लेकिन उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में अक्तूबर के आखिर से फूल खिलना शुरू होते हैं और फरवरी तक खिलते रहते हैं।

(**सौंदर्य बिखेरता गुलदाउदी**—जगदीप सक्सेना, '**नवभारत टाइम्स**' 1 दिसंबर, 1990)

बोध प्रश्न

1) सांस्कृतिक फीचर के अंतर्गत किन-किन विषयों को शामिल किया जा सकता है? कुछ प्रमुख विषयों का नामोल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर में अंतर स्पष्ट कीजिए। उत्तर केवल पाँच पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सांस्कृतिक फीचर का महत्व स्पष्ट कीजिए। उत्तर केवल तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

अभ्यास

1) दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले किसी मनोरंजक कार्यक्रम पर अपने आस-पड़ौस के किन्हीं दो लोगों की प्रतिक्रिया नोट कीजिए। उत्तर लगभग दस पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) अपने पारिवारिक अनुभव को दृष्टि में रखते हुए रहन-सहन में आने वाले बदलाव पर एक टिप्पणी लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.4 विषय का चयन

सांस्कृतिक विषय रोचक तो होते हैं परंतु उनके लेखन में गंभीरता और गहन अध्ययन की जरूरत भी होती है। सांस्कृतिक विषयों की विविधता को देखकर यह समझना बहुत जरूरी है कि उनके लेखन के लिए भिन्न तरह की योग्यता आवश्यक है। उदाहरण के लिए अगर आप चित्रकला या मूर्तिकला पर फीचर लिखना चाहते हैं तो यह जरूरी है कि आप इन कलाओं की बारीकियों को भी समझें। सांस्कृतिक फीचर के लिए उपयुक्त विषय के चयन के ऐसे ही कुछ पक्षों की चर्चा यहाँ की जा रही है।

5.4.1 रुचि एवं विशेषज्ञता

सांस्कृतिक फीचर के लिए उपयुक्त विषय का चयन करते हुए अपनी रुचि का ध्यान अवश्य रखें क्योंकि इसके प्रायः प्रत्येक क्षेत्र के लिए अलग तरह की विशेषज्ञता जरूरी है। संगीत कला पर बेहतर फीचर लिखने वाला जरूरी नहीं कि चित्रकला पर भी फीचर लिख सके। इसी प्रकार दूरदर्शन और फिल्म की दुनिया से काफी भिन्न है इतिहास और दर्शन की दुनिया। रीति-रिवाज, रहन-सहन, वेशभूषा आदि पहलुओं पर बिल्कुल भिन्न तरह की जानकारी और अध्ययन की आवश्यकता है। कहने का तात्पर्य यही है कि सांस्कृतिक फीचर के जिस क्षेत्र को भी चुनें, आप उस संबंध में पर्याप्त जानकारी अवश्य प्राप्त करें।

फीचर के ये विषय रोचक भी बन सकते हैं और नीरस भी। अगर आप इन्हें रोचक और जीवंत ढंग से प्रस्तुत करेंगे तो पाठक आपके फीचर को पसंद करेंगे और अगर आप नीरस ढंग से केवल तथ्यों का उल्लेख भर करेंगे तो फीचर प्रभावशाली नहीं होगा यह तभी संभव है जब आप पूर्ण रुचि लेकर फीचर तैयार करें।

5.4.2 विषय की प्रासंगिकता

सांस्कृतिक फीचर में प्रासंगिकता का प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। कई विषय प्रासंगिक भी हो सकते हैं या किसी खास मौके पर भी आप फीचर तैयार कर सकते हैं जैसे किसी कला प्रदर्शनी, धारावाहिक के प्रदर्शन या सांस्कृतिक आयोजन के अवसर पर। परंतु संस्कृति से जुड़े विभिन्न क्षेत्र सदाबहार होते हैं। हाँ, यह अवश्य है कि आप उन्हें किस तरह रोचक और सार्थक बनाते हैं।

5.4.3 प्रकाशन की प्रकृति

सांस्कृतिक फीचर के लिए विषय का चयन करते समय पत्र-पत्रिका की प्रकृति का भी ध्यान रखना चाहिए। दैनिकों, साप्ताहिकों आदि में विविध तरह के सांस्कृतिक फीचर प्रकाशित होते हैं। लेकिन इन पत्रों में विभिन्न अवसरों पर अवश्य उनसे संबंधित फीचर छपते हैं। जैसे होली, दिवाली, ईद, क्रिसमस जैसे त्यौहारों या राष्ट्रीय पर्वों पर उनसे संबंधित फीचर अवश्य प्रकाशित होते हैं। फीचर लेखक को ऐसे अवसरों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए तथा यथापूर्व फीचर तैयार कर प्रकाशन के लिए भेज देना चाहिए ताकि वह सही समय पर प्रकाशित हो सके। दीपावली के अवसर पर प्रकाशित ऐसे ही एक रोचक फीचर का अंश यहाँ उद्धृत है:

> *आदिकाल से ही मनुष्य की पुकार रही है: मुझे अंधकार से बाहर निकालो, मुझे प्रकाश की ओर ले चलो—तमसो मा ज्योतिर्गमय! दीपावली के महापर्व में मानव की इस चिरकालिक अभिलाषा का अभिनय होता है, अमावस्या की अंधेरी रात को ढेरों दीप जगमगा उठते हैं, और तब अंधकार प्रकाश में बदल जाता है।*
>
> *मगर अंधकार क्या है? प्रकाश क्या है? दोनों में दरअसल अंतर क्या है? दोनों की सीमारेखा कौन-सी है। दीपावली के अवसर पर इन सवालों के बारे में भी सोचना जरूरी है।....*
>
> (**एक सफर रोशनी का**, गुणाकर मुले, '**जनसत्ता**' 14 अक्तूबर, 1990)

5.5 सामग्री का संकलन

फीचर लेखन के लिए आवश्यक है कि संबंधित विषय पर सामग्री का संकलन करें। उपयोगी और महत्वपूर्ण सामग्री के आधार पर ही एक अच्छा फीचर तैयार किया जा सकता है। संबंधित विषय के आधार पर ही यह तय होगा कि उसके लिए किस तरह की सामग्री आवश्यक होगी। फिर भी एक अच्छे सांस्कृतिक फीचर लेख के लिए पर्याप्त अध्ययन और शोध, तथ्यों का विवेकपूर्ण संकलन, लोगों से बातचीत व संबंधित फोटो एवं अन्य दस्तावेज़ आवश्यक हो सकते हैं। अब इन सब पर हम सांस्कृतिक फीचर के संबंध में विचार करें।

5.5.1 विषय संबंधी शोध एवं अध्ययन

सांस्कृतिक फीचर का एक क्षेत्र ऐसा है जिस पर कई बार पर्याप्त अध्ययन और शोध आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए आप अंडमान द्वीप समूह में रहने वाले आदिवासियों के सांस्कृतिक जीवन पर फीचर लिखना चाहते हैं तो यह बहुत आवश्यक है कि आप सबसे पहले वहाँ के आदिवासियों के बारे में पर्याप्त अध्ययन कर लें। उनके रीति-रिवाज, वेशभूषा, भाषा, धर्म, लोककला, आचार-विचार की जानकारी अध्ययन द्वारा प्राप्त करने पर आप में कई नई जिज्ञासाएँ उत्पन्न होंगी जिनके लिए आपको अन्य स्रोतों का भी इस्तेमाल करने की जरूरत महसूस हो सकती है। इसी प्रकार संगीत के बारे में लिखना हो तो संगीत की विभिन्न परंपराओं और उनकी विशिष्टताओं का ज्ञान आवश्यक होगा। इस तरह का अध्ययन एक तरह से फीचर लेखन के आधारत का काम करता है। इसके बिना फीचर लेख की इमारत दृढ़तापूर्वक खड़ी नहीं की जा सकती।

5.5.2 तथ्यों का संकलन

फीचर के लिए आवश्यक तथ्यों का भी विवेकपूर्ण संकलन करना चाहिए। उदाहरण के लिए ऊपर सुझाए गए विषय अंडमान के आदिवासी समाज पर फीचर के लिए आप जो भी अध्ययन करेंगे उसमें आपको कई तथ्य प्राप्त होंगे। कई नए तथ्य आपको अंडमान-निकोबार के विभिन्न सरकारी कार्यालयों और दस्तावेज़ों से प्राप्त हो सकते हैं। ये तथ्य और आंकड़े आपको उस समाज के सांस्कृतिक जीवन को समझने में सहायक हो सकते हैं। इसी प्रकार अगर आप किसी क्षेत्र विशेष की लोककला पर फीचर तैयार करना चाहते हैं तो आप आंकड़ों और तथ्यों द्वारा बता सकते हैं कि उक्त कला का क्या महत्व है, उसकी लोकप्रियता कहाँ तक फैली हुई है या उससे संबंधित लोक कलाकारों की दशा कैसी है? ऐसे कई पक्षों को उजागर करने से फीचर को अधिक प्रासंगिक और उपयोगी बनाया जा सकता है।

5.5.3 साक्षात्कार

सांस्कृतिक फीचर में साक्षात्कार का भी महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। संबंधित व्यक्तियों से बातचीत अधिक प्रामाणिक होती है। लोग कई नए पहलुओं पर प्रकाश डाल सकते हैं। अंडमान के आदिवासियों के सांस्कृतिक जीवन पर लिखे जाने वाले फीचर को अधिक सार्थक तभी बनाया जा सकता है, जब फीचर लेखक स्वयं अंडमान की यात्रा कर वहाँ के आदिवासियों से मिले, उनके जीवन को नज़दीक से देखे-समझे और उनसे विभिन्न पहुओं पर बातचीत करे। इस तरह की बातचीत का उपयोग फीचर में किया जा सकता है। पिछले पृष्ठों पर हमने एक फीचर "**अब न कोई पढ़ना चाहता है न पढ़ाना**" उद्धृत किया था। इस फीचर का अधिकांश भाग विभिन्न अध्यापकों की बातचीत पर आधारित था। उसी फीचर से एक अंश उद्धृत है :

> *जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक का कहना है कि समकालीन समाज से शिक्षा का रिश्ता सीधे जोड़े बगैर प्रासंगिकता हासिल नहीं की जा सकती। पिछड़े हुए भारतीय समाज के लिए जहाँ आधे से ज्यादा लोग खेती के काम में लगे हैं, विचारना होगा कि कैसी शिक्षा हो।....*
>
> *दिल्ली विश्वविद्यालय के एक अध्यापक ने शिक्षक और छात्रों के बीच पैदा हुए अजनबीपन और अलगाव की तरफ इशारा करते हुए इसका मूल कारण सामाजिक* **आवश्यकताओं और शिक्षा के अलगाव को बताया**

इस फीचर में आगे भी कई अध्यापकों के विचारों को उद्धृत किया गया है। इस प्रकार एक अच्छे फीचर में लोगों से बातचीत का सार्थक उपयोग किया जा सकता है।

5.5.4 अन्य सामग्री

सांस्कृतिक फीचर के साथ फोटो, चित्र या अन्य दस्तावेज़ों का इस्तेमाल भी उपयोगी हो सकता है। आरंभ में हमने दिल्ली स्थित "अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय" से संबंधित फीचर का उल्लेख किया था। इस फीचर के साथ समाचारपत्र ने गुड़िया के कई रंग-बिरंगे चित्र भी दिए थे। इनसे फीचर की उपयोगिता तो बढ़ी ही, साथ ही उसका सौंदर्य भी बढ़ा। फीचर के साथ प्रासंगिक और रोचक फोटो और चित्र अवश्य देने चाहिए। इसी प्रकार फीचर के साथ पुस्तक के पृष्ठ या पांडुलिपि के पृष्ठ का फोटो चित्र भी दिया जा सकता है। कोई आरेख या तालिका या कार्टून आदि उपयोगी हो तो वह भी दे सकते हैं। जो भी सामग्री आप दें वह विषय के साथ सम्बद्ध हो और उनसे फीचर की उपयोगिता में वृद्धि हो, यह आवश्यक है।

5.6 सामग्री का संयोजन और संपादन

फीचर के लेखन के लिए जो सामग्री आप एकत्र करें उन्हें लेखन से पूर्व अच्छी तरह से जांच-परख लीजिए। जो उपयोगी सामग्री हो उन्हें अलग कर लीजिए। फिर उनके आधार पर फीचर की एक रूपरेखा बनाइए और यह तय कर लीजिए कि फीचर का लेखन आप किस तरह से करेंगे। उसका आरंभ, उसका मध्य भाग, मध्य भाग में दी जाने वाली अंतर्वस्तु का क्रम तथा उसका उपसंहार सभी पर अच्छी तरह से विचार कर लीजिए। कहाँ आप कौन-सी सामग्री देंगे। कहाँ लोगों के कथन उद्धृत करेंगे। कहाँ किसी घटना, अनुभव या स्थिति का वर्णन देंगे—इस पर विचार कर लीजिए। जब आप एक-एक बिंदु पर अच्छी तरह से विचार करेंगे तभी आप अपने फीचर को उपयोगी बना सकेंगे।

फीचर लेखन की सामग्री के संयोजन का आधार होगा, फीचर के पीछे निहित उद्देश्य। अगर आपके सम्मुख आपके लेखन का उद्देश्य स्पष्ट है तो आपके लिए सामग्री का निर्धारण और फीचर का लेखन आसान हो जाएगा।

फीचर शुष्क और विचार प्रधान न हो जाए इस बात का अवश्य ध्यान रखिए। सांस्कृतिक फीचर के लिए यह और भी जरूरी है। फीचर को रोचक बनाने के लिए आप अपनी बात को अनुभव के रूप में, बातचीत के रूप में या भावपूर्ण रूप में प्रस्तुत करें। इसके लिए जरूरी है आपके पास जो सामग्री है उसकी प्रस्तुति को मार्मिक और सहृदयपूर्ण बनाएँ।

फीचर की प्रस्तुति में सामग्री के साथ-साथ आपकी प्रस्तुति का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। आइए, अब हम फीचर के लेखन पर विचार करें।

बोध प्रश्न

4) सांस्कृतिक फीचर के लिए किस तरह की विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है? उत्तर तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

5) सांस्कृतिक फीचर का प्रासंगिक होना आवश्यक होता है या नहीं? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

6) सांस्कृतिक फीचर के लेखन में साक्षात्कार के उपयोग की सार्थकता बताइए।

.....

.....

.....

अभ्यास

3) फिल्मी गीतों के गिरते स्तर और उनके कुप्रभाव पर एक फीचर तैयार करने के लिए आप किस तरह की सामग्री एकत्र करेंगे। कारण सहित विवरण दीजिए। उत्तर लगभग दस पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.7 फीचर का लेखन

सांस्कृतिक फीचर का लेखन जब आरंभ करें तो आप उसके आकार और विस्तार के बारे में पहले तय कर लें। आप जिस पत्र-पत्रिकाओं के लिए फीचर लिख रहे हैं वहाँ आपके लेख के लिए जितनी जगह उपलब्ध होगी उसी के अनुरूप आप फीचर का आकार तय करें। आकार के अनुसार ही आप फीचर के आरंभिक, मध्य और अंतिम भाग को विस्तार दें। उसी के अनुरूप अपनी सामग्री का इस्तेमाल करें। आइए, अब सबसे पहले सांस्कृतिक फीचर के आरंभिक भाग के लेखन पर विचार करें।

5.7.1 आरंभ

सांस्कृतिक फीचर का आरंभ आप कई ढंग से कर सकते हैं किंतु प्रत्येक ढंग पाठकों के लिए रोचक और अपनी ओर आकृष्ट करने वाला हो। अगर आप समस्या प्रधान फीचर लिख रहे हैं तो आरंभिक अंश में समस्या का परिचय अवश्य दें। अगर किसी खास चीज़ का परिचय देना हो तो उसके रोचक पहलू से आरंभ करें। किसी घटना या मनोरंजक बात से भी फीचर का आरंभ कर सकते हैं। कुछ उदाहरण लें।

क) **समस्या के संकेत से आरंभ होने वाल फीचर**

पहले दीवाली सचमुच दीपों का त्यौहार लगती थी। पर आज हालात बदल गए हैं। दीये शहरों में तो नज़र आते ही नहीं, गांवों और कस्बों से भी अदृश्य होते जा रहे हैं। इनका स्थान मोमबत्तियां और बिजली के छोटे-छोटे रंग-बिरंगे बल्बों की लड़ियां और झालरें लेती जा रही हैं। शायद आने वाले समय में दीपावली के अवसर पर दीपमालिका के दर्शन दुर्लभ हो जाएंगे। अब पूजा आदि के अवसर पर धातु के बने दीए या फिर प्लास्टिक के "बिजली दीपक" इस्तेमाल किए जाने लगे हैं।

(**कुम्हारों की सिमटती जिंदगी**—हिमांशु राय, '**जनसत्ता**' 14 सितम्बर, 1990)

ख) **विषय का प्रारंभिक परिचय देते हुए**

जीवन, मृत्यु और जगत जैसे शाश्वत एवं मूलभूत प्रश्नों से जूझते आदि मानव ने जब ईश्वर जैसी किसी शक्ति की कल्पना की होगी और सृष्टि को उसके इशारों पर नाचते देखा-सोचा होगा, संभवतः तभी अपनी दुनिया गढ़ने की रचनात्मक इच्छा ने मनुष्य को स्वयं सूत्रधार, संचालक बनकर पुतलियां बनाने-नचाने को प्रेरित किया

होगा। शायद इसीलिए पुतली-कला के जन्म और विकास के प्रारंभिक सूत्र हमें किसी-न-किसी रूप में ईसा से कई शताब्दी पूर्व के प्रागैतिहासिक काल और धर्म से जुड़े प्रतीत होते हैं।....

(जीवन और जगत का मर्म हैं पुतलियां—जयदेव तनेजा '**नवभारत टाइम्स**', 15 सितंबर, 1990)

ग) **मनोरंजक आरंभ**

हमारे देश में शायद अनोखी सुगंध के कारण चमेली को फूलों की रानी कहा जाता है। पर दरअसल रानी है गुलदाउदी। इसमें कोई दो राय नहीं कि गुलाब दुनिया का सबसे लोकप्रिय फूल है। इसलिए इसे फूलों का राजा भी कहा जाता है। लोकप्रियता मे दूसरे नंबर पर गुलदाउदी है। तो इसे रानी मानने में एतराज क्यों? वैसे पश्चिमी देशों में गुलदाउदी को "पूरब की रानी" का खिताब दिया ही गया है।

(सौंदर्य बिखेरता गुलदाउदी—जगदीप सक्सेना, **नवभारत टाइम्स**, 1 दिसंबर, 1990)

5.7.2 मध्य

फीचर के मध्य भाग में ही फीचर की मुख्य अंतर्वस्तु प्रस्तुत की जाती है। यह आवश्यक है कि इस भाग को रोचक ढंग से लिखें। फीचर जिस उद्देश्य से प्रेरित होकर आप लिख रहे हैं उस उद्देश्य की पूर्ति करने वाली सभी बातों का समावेश होना चाहिए। लेकिन यह भी ध्यान रखें कि इस भाग के सभी बिंदुओं में संतुलन रहे। ऐसा न हो कि कुछ बातों को अनावश्यक विस्तार मिल जाए और कुछ चलताऊ ढंग से निपटा दिए जाएँ। इसलिए यह जरूरी है कि लिखते हुए अनावश्यक विस्तार और अनुपयोगी विवरण से बचें। प्रत्येक बात तार्किक, क्रमबद्ध, सुरुचिपूर्ण और रोचक ढंग से प्रस्तुत की जानी चाहिए। शुष्क से शुष्क बात को भी रोचक ढंग से कहने की कला का विकास करना चाहिए। यहाँ हम एक फीचर उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। इस को पढ़ने से आप फीचर के उत्कृष्ट लेखन को पहचान सकते हैं।

यह धरोहर कल्पनाशील शंकर की देन है

बच्चे किसी भी देश के हों सुकुमार और कोमल भावनाओं वाले होते है। वह कलुषरहित संबंध जोड़ लेते हैं उन चीजों से जो उनके नजदीक होती हैं। खिलौने उन्हें बहलाते हैं और इन्हीं खिलौनों में मानव आकार तथा उससे भावनात्मक संबंध जोड़ने के लिए ही शायद गुड्डे-गुड़िया का चलन शुरू किया गया। जातिगत, क्षेत्रीय रंग रूप तथा चारित्रिक विशेषताओं को उभारते हुए, कि बच्चे अपने आरम्भिक विकास काल में ही उनसे परिचित हो सकें। और जब 85 देशों के गुड्डे-गुड़ियाँ एक छत के नीचे इकट्ठे रखे हों, तो वह जगह अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के दायरे में पहुंचकर बताती है कि विश्व में हर जगह बच्चे राग-द्वेष से अनभिज्ञ होते हैं चाहे उनका पहनावा और रूप कोई भी हो। यह जगह दिल्ली का अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय है, जो प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट 'शंकर' भारतीय बच्चों के लिए छोड़ गए।

के. शंकर पिल्ले एक ऐसे कार्टूनिस्ट थे, जो अपने काम के प्रति थे बेहद सजग। वह चित्रकार भी थे और उससे भी बढ़कर बाल मनोविज्ञान को समझने वाले थे। उनकी धारणा थी कि अभिव्यक्ति से रचनात्मकता बढ़ती है। इसी आधार पर भारत की आजादी के साथ उन्होंने बच्चों के मनोभावों की अभिव्यति की ऐसी परंपरा आरम्भ की, जो अभी तक चल रही है। 'शंकर्स इंटरनेशनल पेंटिंग कम्पिटिशन' में अब तीसरी पीढ़ी हिस्सा लेने लगी है और इन वर्षों में अनगिनत लोग इससे जुड़े हैं—प्रतियोगी बनकर, दर्शक बनकर।

उन्होंने 'ऑन द स्पॉट' चित्र प्रतियोगिता को अंतर्राष्ट्रीय रूप देकर विश्व भर के बच्चों को अनूठे ढंग से एक मंच पर लाने की कोशिश की। जिन दिनों शंकर बाल पुस्तकों के लिए एक निधि बनाने की कल्पना को आकार देने की कोशिश कर रहे थे, तभी भारत में हंगरी के राजदूत ने उन्हें एक गुड़िया उपहारस्वरूप दी। यह गुड़िया शंकर को इस कदर भा गई

कि उन्होंने गुड़िया संग्रह करना आरम्भ कर दिया। वह जिस देश में पहुंचे वहां के गुड्डे-गुड़िया साथ लेते आए। कुछ ही दिनों में उनके पास 500 गुड्डों-गुड़ियों का अनोखा संग्रह हो गया और उन्होंने अपनी चित्र-प्रदर्शनी मय इन्हें रखना शुरू कर दिया।

ऐसी ही एक प्रदर्शनी देखकर चाचा नेहरू ने शंकर को गुड़ियों की एक स्थायी प्रदर्शनी लगाने का सुझाव दिया। जब बाल पुस्तक निधि के लिए बहादुरशाह जफर मार्ग पर इमारत बन रही थी, एक खंड इस संग्रह के लिए अलग रख दिया गया। 1965 में इस संग्रह का प्रदर्शन स्थायी तौर पर आरम्भ हुआ। वह जो एक अबोध गुड़िया द्वारा शुरुआत थी, अब 6000 से ऊपर का संग्रह हो गया है... विभिन्न देशों के रंगरूप, परिधान, रचना और कल्पना का प्रतिनिधित्व करते शीशे लगे खिड़कियों से झांकते भिन्न-भिन्न आकारों वाले गुड्डे-गुड़िया बच्चों और बड़ों का मन समान रूप से मोहते हैं।

अगर किसी खिड़की में अमेरिका के रेड इंडियन हैं , तो किसी अन्य खिड़की में चांद पर मानव भी है। अगर एक खिड़की में जर्मनी का मजीब रेलवे यार्ड है, तो दूसरी में डांडी मार्च करते हुए महात्मा गांधी और उनके साथी तथा एक अन्य में कथकली नर्तक और स्टेज, जो इस संग्रहालय में जुड़े गुड़िया डिजाइन केन्द्र द्वारा बड़ी बारीकी से तैयार किए गए हैं। बर्फ गाड़ी पर फिसलता सोवियत संघ का गुड्डा है तो स्पेन के रंगीले नर्तक। डिजाइन केन्द्र द्वारा तैयार मजीब बंजारिन है तो वहीं कहीं एक जापान के सामुराई (योद्धा), शंकर को दी गई पहली हंगरी की गुड़िया है तो एक खिड़की स्विट्जरलैंड की ढाई सौ साल पुरानी बच्चा गाड़ी में लेटी वह गुड़िया भी है जिसे साफ करते हुए भी देख-रेख करने वाले डरते हैं कि कहीं उसके कपड़े ने फट जाएं।

दक्षिण कोरिया, थाईलैंड, इंडोनेशिया, पोलैंड, ईरान, ग्रीस आदि के महत्वपूर्ण व्यक्तियों द्वारा भेंट की हुई गुड़िया के साथ ब्रितानी रानी के संग्रह की गुड़िया भी प्रदर्शित है। आपसी आदान-प्रदान से प्राप्त गुड्डे-गुड़िया भी हैं।

कभी यह संग्रहालय बाहर से अलग ही नजर आता था, अब ट्रैफिक की आपाधापी में छुप जाता है। पर अभी भी बाहरी दीवार पर पच्चीकारी और गुड्डे-गुड़िया का आकार इस इमारत को खास बनाता है।

अलबत्ता आधुनिक प्रदर्शन तकनीकों के मुकाबले दर्शक इस प्रदर्शनी को जरा पुराने अंदाज की पाते हैं, और शायद इसको अधिक आकर्षक बनाने की आवश्यकता भी है। सालाना दो-सवा दो लाख छोटे-बड़े आगंतुकों को आकर्षित करता यह संग्रहालय नवीनीकरण के बाद शायद अधिक लोगों को आकर्षित करेगा। लेकिन नवीनीकरण और रोशनी के चमत्कारिक प्रयोग में बच्चे और बड़े यह नहीं भूल पाएंगे कि मूलतः यह धरोहर उस कल्पनाशील शंकर की है जो बच्चों की भावनाओं को समझता था और बेहद गहराई से जुड़ा था उनसे।

सुष्मिता चौबे

5.7.3 अंत एवं शीर्षक

फीचर का अंतिम भाग उपसंहार की तरह भी लिखा जा सकता है। अगर समस्या प्रधान फीचर है तो समस्या के समाधान या किसी सुझाव के साथ फीचर का अंत कर सके हैं। निम्नलिखित अंत ऐसा ही है:

> इस समय हमारे यहाँ या तो एकदम पारंपरिक कलाकार हैं या फिर एकदम आधुनिक—इन दोनों के बीच कोई पुल नहीं है। आज हमारी पुतुल कला को भी हबीब तनवीर, रतन थियम, क.ना. पन्निकर, भानु भारती और बंसी कौल जैसे समन्वित दृष्टि के कलाकारों की बेहद जरूरत है जो हमारे पारंपरिक कलाकारों को आधुनिकता और आधुनिक कलाकारों को पारंपरिकता की धारा से जोड़कर इस कला को प्रगतिशील, प्रासंगिक, अर्थवान और जीवंत बना सकें। इतने बहुआयामी और व्यापक अनुष्ठान के बाद हम सरकार से उम्मीद करते हैं कि वह इस बेहद सादे किंतु अत्यंत सशक्त और समग्र कला-रूप के संरक्षण एवं बहुविध विकास के लिए निश्चय ही कुछ स्थायी, वास्तविक और असरकारी उपाय करेगी।
>
> **(जीवन और जगत का मर्म हैं पुतलियां**—जयदेव तनेजा, **नवभारत टाइम्स**, 15 सितंबर, 1990)

फीचर के अंतिम भाग में किसी संबंधित विद्वान का उद्धरण प्रस्तुत कर सकते हैं। जिस विषय को फीचर में प्रस्तुत किया गया है उसके बारे में कोई रोचक टिप्पणी करते हुए समाप्त कर सकते हैं। फीचर का अंत ऐसा नहीं होना चाहिए कि पाठक को अधूरापन महसूस हो। उसे तृप्ति का अहसास होना चाहिए तथा यह महसूस होना चाहिए कि उसने कुछ नया और महत्वपूर्ण प्राप्त किया है।

फीचर के शीर्षक विषयानुसार अलग-अलग ढंग से दिए जा सकते हैं। समस्या प्रधान में समस्या का उल्लेख, परिचयात्मक में विषय की महत्वपूर्ण विशेषता का उल्लेख या किसी विद्वान का कथन भी शीर्षक बन सकता है।

विशेषता बताने वाले शीर्षक

- **जीवन और जगत का मर्म हैं पुतलियाँ**
- **सौंदर्य बिखेरता गुलदाउदी**

समस्या प्रधान शीर्षक

- **अब न कोई पढ़ना चाहता है न पढ़ाना**
- **कुम्हारों की सिमटती जिंदगी**

कभी-कभी विषय से संबंधित किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति का नाम जुड़ा होता है जैसे दिल्ली के "अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय" की स्थापना शंकर पिल्ले ने की थी, इसलिए उस संग्रहालय पर तैयार फीचर का शीर्षक था **"यह धरोहर कल्पनाशील शंकर की देन है"**। शीर्षक में जहाँ तक संभव हो विषय का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। ऊपर के सभी शीर्षकों में विषय का स्पष्ट संकेत किया गया है केवल "यह धरोहर कल्पनाशील...." शीर्षक में गुड़िया का उल्लेख नहीं है–परंतु इस फीचर में शंकर का योगदान का भी उतने ही महत्व के साथ उल्लेख किया गया है।

हमने इस इकाई में दो और शीर्षक वाले फीचर के अंश प्रस्तुत किए हैं–**"रामकथा की वास्तविकता"** और **"उर्दू का सवाल और भाषा समस्या"**। ये शीर्षक फीचर की बजाय निबंध के अधिक अनुकूल है। फीचर लेखों के लिए ऐसे शीर्षकों से बचना चाहिए।

5.7.4 भाषा एवं शैली

फीचर की भाषा-शैली उसके विषय से निर्धारित होती है। सांस्कृतिक विषयों पर फीचर की भाषा स्वभावतः कुछ विलष्ट और साहित्यिक स्पर्श वाली होगी। लेकिन ऐसी भाषा को भी मर्मस्पर्शी और रोचक स्वरूप दिया जा सकता है। यह लेखक की भाषिक क्षमता पर निर्भर करेगा। जितना संभव हो भाषा को सरल और सुबोध बनाना चाहिए। ऐसे विषय जहाँ कुछ पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करना पड़े वहाँ कोशिश कीजिए कि ऐसा बहुत अनिवार्य होने पर ही करें क्योंकि फीचर के पाठक सभी समुदायों के होते हैं। प्रचलित पारिभाषिक शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए। एक अच्छी, गंभीर फिर भी सरल और बोलचाल की भाषा में लिखे गए फीचर का अंश प्रस्तुत है:

> *सांवला, शांत, गंभीर व्यक्तित्व, जो अपने में ही खोया हुआ नजर आता है। चेहरे पर एक खास तरह की शांति है, पर उसके पीछे जैसे एक समुद्र की आहट सुनी जा सकती है। सरोद के जादूगर उस्ताद अली अकबर खां दूसरे संगीतकारों की तरह प्रदर्शनप्रिय नहीं हैं, वे अपनी कला के विक्रेता नहीं हैं और दूसरे संगीतकारों की तरह व्यावसायिक मुस्कान नहीं ओढे रहते हैं। उनके व्यक्तित्व की गभीरता की तरह ही उनका सरोद जिससे उनका एक जैविक रिश्ता-सा है। सरोद उनके लिए वाद्य नहीं एक जीवित उपस्थिति है।*
>
> (**सरोद की तरह मीठे और गंभीर**–रवींद्र मिश्र **जनसत्ता**, 9 सितंबर, 1990)

उपर्युक्त अंश में आप पाएंगे कि भाषा सरल और सुबोध भी है और गंभीर भी। साथ ही भाषा की साहित्यिकता भी हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। इसी फीचर के निम्नलिखित अंश में उस्ताद अली अकबर खां के संगीत की उत्कर्षता का वर्णन किया गया है परंतु इतने रोचक ढंग से कि सरोद की बारीकियों से अनभिज्ञ पाठक भी उसका अर्थ आत्मसात् कर सकता है:

ख्याल गायन को नई दिशा देने में उस्ताद अमीर खां के कंठ संगीत का जो योगदान है, शायद वैसा ही योगदान अली अकबर खां का वाद्य संगीत में है। उनके सरोद वादन की यह खूबी है कि वे राग के रहस्य को गहराई से स्पष्ट करने में उसकी परत दर परत खोलते चले जाते हैं।

भाषा की ऐसी सहजता ही सांस्कृतिक फीचर का आदर्श हो सकती है।

बोध प्रश्न

7) सांस्कृतिक फीचर की भाषा किस तरह की होनी चाहिए। तीन पंक्तियों में बताइए।

.....

.....

.....

8) सांस्कृतिक फीचर का शीर्षक देते हुए किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए?

.....

.....

.....

अभ्यास

4) फिल्मी गीतों के गिरते स्तर और उसके कुप्रभाव पर एक फीचर लगभग 250 शब्दों में तैयार कीजिए। जिसमें पुराने फिल्मी संगीत और आज के फिल्मी संगीत की तुलना भी हो। इसमें कुछ संगीत प्रेमी लोगों का मत का भी उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5) उपभाग 16.7.2 में उद्धृत फीचर की भाषा शैली की विशेषताएँ बताइए। उत्तर लगभग पांच पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

.....

.....

6) उक्त फीचर का कोई अन्य रोचक शीर्षक सुझाइए।

.....

.....

5.8 सारांश

फीचर लेखन से संबंधित इस पाठ्यक्रम की इस 5वीं इकाई में सांस्कृतिक विषयों पर फीचर लेखन के बारे में विचार किया गया है। सांस्कृतिक फीचर का क्षेत्र सामाजिक फीचर की तरह अत्यंत व्यापक है। संस्कृति के अंतर्गत किसी समाज के रीति-रिवाज, आचार-विचार, रहन-सहन, परंपरा, लोक जीवन, शिक्षा, भाषा, कला, साहित्य, धर्म, दर्शन आदि विभिन्न पक्ष आते हैं। इन सब पर तैयार किए जाने वाले फीचर लेखों को सांस्कृतिक फीचर कह सकते हैं।

- सांस्कृतिक फीचर के इस व्यापक क्षेत्र के आधार पर परंपरा, कला और साहित्य, शिक्षा, भाषा आदि विभिन्न विभाजन किए गए हैं। इनके अध्ययन से आप सांस्कृतिक फीचर के विषयों का निर्धारण कर सकते हैं।
- सांस्कृतिक फीचर के लिए विषय तय करने से पूर्व आवश्यक अध्ययन, तथ्यों का संकलन, संबंधित लोगों से बातचीत तथा फोटो आदि एकत्र कर लेनी चाहिए। फिर इन सबका समुचित अध्ययन कर फीचर के लिए रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
- इस रूपरेखा के आधार पर फीचर का लेखन आरंभ करना चाहिए। आरंभिक अंश विषय का परिचय देने वाला परंतु रोचक और आकर्षक हो। मध्य भाग में फीचर के विषय की समस्त सामग्री तार्किक क्रमबद्ध और सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत की जानी चाहिए। फीचर के अंत में कोई समाधान, सुझाव या कोई महत्वपूर्ण बात प्रस्तुत की जानी चाहिए। फीचर का शीर्षक विषय का संकेत देने वाला और आकर्षक होना चाहिए।
- सांस्कृतिक फीचर के लिए भाषा का कुछ हद तक जटिल और गंभीर हो जाना स्वाभाविक है। परंतु फिर भी सरल, सहज और बोलचाल की भाषा का यथासंभव प्रयोग करने का प्रयत्न करना चाहिए। सांस्कृतिक फीचर में साहित्यिक भाषा के प्रयोग से फीचर की गुणवत्ता में वृद्धि होती है। शैली सहज और संप्रेष्य परंतु विषय के अनुरूप हो। सांस्कृतिक फीचर के उपर्युक्त गुणों से परिचित होने के बाद आप इस विषय पर एक अच्छा फीचर लिखने का प्रयास कर सकते हैं।

5.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) प्रमुख विषय : परंपरा, शिक्षा, भाषा, कला एवं साहित्य, लोक-जीवन आदि।

2) सामाजिक फीचर में समाज से जुड़े वे विषय उठाए जाते हैं जो समाज की संरचना उसके विभिन्न समुदायों, लोगों के जीवन से जुड़ी समस्याओं से संबद्ध हो जबकि सांस्कृतिक फीचर में समाज के सांस्कृतिक जीवन से संबद्ध विषयों को उठाया जाता है। सामाजिक फीचर में प्रायः समस्याओं की प्रधानता रहती है लेकिन सांस्कृतिक फीचर में ऐसा आवश्यक नहीं है। सांस्कृतिक फीचर अधिक गंभीर साथ ही सरस होते हैं।

3) सांस्कृतिक फीचर से जहाँ हम अपनी संस्कृति से अधिक परिचित होते हैं, वहीं अन्य संस्कृतियों के संपर्क में आने से हमारी दृष्टि अधिक उदार और मानवीय बनती है।

4) सांस्कृतिक फीचर के लिए गंभीर अध्ययन और संस्कृति से संबंधित विभिन्न पहलुओं की जानकारी आवश्यक है। आप इस विषय के जिस क्षेत्र को चुनें उसकी बारीकियों को भी अच्छी तरह से समझें।

5) सांस्कृतिक विषय का प्रासंगिक होना अनिवार्य नहीं है लेकिन किसी आयोजन, उत्सव, पर्व आदि के अवसर पर भी सांस्कृतिक फीचर लिखे जा सकते हैं।

6) सांस्कृतिक फीचर में साक्षात्कार का उपयोग विषय पर निर्भर करेगा लेकिन साक्षात्कार के उपयोग से फीचर को अधिक प्रामाणिक, जीवंत और सरस बनाया जा सकता है।

7) सांस्कृतिक फीचर की भाषा

   i) सरल परंतु गंभीर, सरस और साहित्यिक स्पर्श वाली हो।

   ii) भाषा में विषय के कारण जटिलता संभव है, परंतु जहाँ तक संभव हो, अपनी बात को आसान बनाकर प्रस्तुत करना चाहिए।

   iii) निबंधात्मक भाषा से बचें।

8) देखिए उपभाग 16.7.3

अभ्यास

1) लोगों से बातचीत के पूर्व यह तय कर लीजिए कि आप क्या पूछेंगे और जो जानकारी प्राप्त होगी वह आपको उद्देश्य के अनुरूप है या नहीं?

2) आप देखेंगे कि पीढ़ियों के अनुसार रहन-सहन में अंतर आया है। गांवों और शहरों–दोनों जगह हमारे रहन-सहन में अंतर आया है। यह अंतर जीवन-सुविधाओं में बदलाव के साथ-साथ जीवन के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव से भी आया है। इन बातों को लिखते हुए यह तथ्य ध्यान रखें।

3) i) हिन्दी गीतों की परंपरा का विवरण

   ii) पूर्व के गीतों की भाषा, कथ्य और उसका शिल्प पक्ष पर प्रकाश डालने वाले कुछ प्रमुख गीतों के अंश

   iii) पूर्व के गीतों के संबंध में कुछ प्रमुख गीतकारों, संगीतकारों, फिल्म समीक्षकों एवं आम श्रोताओं के विचार

4) स्वयं लिखिए और अपने दृष्टिकोण के अनुसार लिखिए और अपने परामर्शक को दिखाइए।

5) भाषा-शैली की समीक्षा के लिए इस इकाई में भाषा-शैली पर व्यक्त किए विचारों को आधार बनाइए।

6) स्वयं लिखिए।

इकाई 6 आर्थिक विषयों में फीचर लेखन

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य
6.1 प्रस्तावना
6.2 आर्थिक फीचर का अभिप्राय
6.3 आर्थिक फीचर के प्रकार
  6.3.1 आर्थिक विकास संबंधी फीचर
  6.3.2 वाणिज्य व्यापार संबंधी फीचर
  6.3.3 बजट संबंधी फीचर
  6.3.4 अन्य आर्थिक फीचर
6.4 विषय का चयन
  6.4.1 रुचि एवं विशेषज्ञता
  6.4.2 प्रकाशन की प्रकृति
  6.4.3 विषय की प्रासंगिकता
6.5 सामग्री का संकलन
  6.5.1 विषय पर शोध एवं अध्ययन
  6.5.2 तथ्यों का संकलन
  6.5.3 साक्षात्कार
  6.5.4 अन्य सामग्री
6.6 सामग्री का संयोजन एवं संपादन
6.7 लेखन की प्रस्तुति
  6.7.1 आरंभ
  6.7.2 मध्य
  6.7.3 अंत एवं शीर्षक
6.8 भाषा एवं शैली
6.9 सारांश
6.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

फीचर लेखन से संबंधित सृजनात्मक पाठ्यक्रम की यह छठी इकाई है। इस इकाई में आप आर्थिक फीचर के बारे में अध्ययन करेंगे। इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- आर्थिक फीचर का अभिप्राय स्पष्ट कर सकेंगे;
- आर्थिक फींचर के लिए उपयुक्त विषय का चयन कर सकेंगे;
- फीचर लेखन के लिए आवश्यक सामग्री का संकलन कर सकेंगे;
- संकलित सामग्री पर विचार करके फीचर की रूपरेखा बना सकेंगे;
- आर्थिक विषय पर फीचर लेखन की विधि समझने के बाद फीचर लेखन कर सकेंगे; और
- फीचर के लिए उपयुक्त शैली एवं भाषा का प्रयोग कर सकने की क्षमता बढ़ा सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन पाठ्यक्रम के दूसरे खंड की इस तीसरी इकाई में आप आर्थिक फीचर का अध्ययन करेंगे। इससे पहले की इकाई में आपने संस्कृति से संबंधित फीचर लेखन के बारे में अध्ययन किया था। संस्कृति की ही तरह आर्थिक क्षेत्र भी विशिष्ट प्रकार का क्षेत्र है जिसमें लेखन की ओर उन्हें ही अग्रसर होना चाहिए जो इस विषय के विशिष्ट पहलुओं से भलीभांति वाकिफ हों। अर्थशास्त्र एक ऐसा विषय है जिसमें खास तरह की प्रवीणता की

आवश्यकता है। अर्थ का सर्वाधिक महत्व होने के बावजूद इसके तकनीकी पहलुओं को समझने में आम पाठक को प्राय: कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसलिए यह जरूरी है कि वे लेखक जो आर्थिक फीचर पर लिखना चाहते हैं उन्हें आपने लेखन में रोचकता पैदा करने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। इस इकाई में हमने सबसे पहले आर्थिक फीचर के अर्थ पर विचार किया है। इसके अंतर्गत किन-किन विषयों को शामिल किया जा सकता है तथा फीचर के लिए विषय के चयन का आधार क्या होना चाहिए। विषय का चयन कर लेने के बाद उसके लिए सामग्री का संकलन कैसे किया जाए व संकलित सामग्री के आधार पर फीचर की रूपरेखा कैसे बनाई जाए, इस पर भी इकाई में विचार किया गया है।

फीचर के लेखन का आरंभ किस प्रकार करना चाहिए, उसके मध्य भाग में विषय सामग्री को किस तरह प्रस्तुत करना चाहिए और फीचर का अंतिम भाग कैसे लिखना चाहिए, इन सभी पक्षों के बारे में उदाहरणों द्वारा समझाया गया है। फीचर का शीर्षक देने पर भी विचार किया है। आर्थिक फीचर में भाषा का अपना महत्व है। इनमें कुछ विशेष प्रकार की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग होता है। आपको उसके बारे में भी बताया जाएगा। इकाई में दिये गये बोध प्रश्नों एवं अभ्यासों को करने से आप स्वयं फीचर लेखन की कुशलता बढ़ा सकेंगे।

6.2 आर्थिक फीचर का अभिप्राय

किसी देश, समाज या संपूर्ण विश्व की आर्थिक स्थिति के संबंध में लिखा गया फीचर आर्थिक फीचर कहलाता है। राजनीति और अर्थव्यवस्था का घनिष्ठ संबंध है। जब किसी देश की राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन होता है तो उसका असर अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। इसी प्रकार जब देश में सूखे और बाढ़ का प्रकोप होता है और उत्पादन घट जाता है या निर्यात व्यापार कम हो जाता है तब राजनीति भी प्रभावित होती है। राजनीतिक स्थिरता के लिए अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ होना आवश्यक है। ऐसे कई उदाहरण हैं जब अर्थव्यवस्था डांवाडोल होने पर सरकारें बदल गई हैं। किसी देश की शक्ति या प्रगति का अंदाजा केवल उसकी फौजी ताकत से नहीं लगाया जा सकता। इसके लिए प्रति व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय के आंकड़ों पर नजर डालनी होगी। यह भी देखना होगा कि सबको जीवन की बुनियादी आवश्यकताएं सुलभ हो रही हैं अथवा नहीं। कृषि और औद्योगिक उत्पादन अर्थव्यवस्था के मुख्य आधार स्तंभ हैं। जब इन दोनों क्षेत्रों में स्थिति संतोषजनक होती है तभी देश खुशहाली की ओर बढ़ता है। जिस प्रकार साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। उसी प्रकार वाणिज्य व्यापार को अर्थव्यवस्था का दर्पण कहा जा सकता है। उत्पादन या औद्योगिक प्रगति का लाभ वाणिज्य व्यवसाय के जरिए ही जनसाधारण तक पहुंचता है।

अब आप अच्छी तरह समझ गये होंगे कि देश के विकास में अर्थव्यवस्था का कितना महत्व है। अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं की जानकारी समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाले आर्थिक लेख या आर्थिक फीचर से ही हो सकती है। समाचार पत्रों का आर्थिक फीचर की ओर ध्यान देर से गया है। अंग्रेजी की पत्र-पत्रिकाओं ने आर्थिक विषयों पर जानकारीपूर्ण फीचर छापने का सिलसिला शुरू किया है। हिन्दी के कुछ बड़े पत्र भी कभी-कभी आर्थिक समस्याओं पर अच्छे फीचर छापते रहते हैं। पर इस हकीकत से इंकार नहीं किया जा सकता कि हिन्दी के अधिकतर पत्र अभी आर्थिक विषयों को विशेष महत्व नहीं देते। समाचार पत्रों का काम केवल खबरें छापना ही नहीं है, खबरों से जुड़े हुए सवालों पर पाठकों को आवश्यक जानकारी देना भी है।

आर्थिक फीचर का महत्व: आर्थिक समस्याओं पर अपनी कलम चलाकर आप समाज और देश की सेवा कर सकते हैं। सदियों से शोषित, पीड़ित और उपेक्षित आदिवासियों की दुर्दशा का चित्रण करके आप सरकार को उनके आर्थिक विकास के लिए उपयुक्त सुझाव दे सकते हैं। गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले देश के करोड़ों लोगों की कठिनाइयों की ओर ध्यान आकर्षित करके आप बता सकते हैं कि गरीबी का उन्मूलन कैसे किया जा सकता है। बेरोजगारी के क्या कारण हैं और इसे कैसे दूर किया जा सकता है, इस विषय पर लिखकर आप एक महत्वपूर्ण समस्या के समाधान में योगदान कर सकते हैं। उद्योगों की कठिनाइयों को उजागर करके आप देश के औद्योगिक विकास में सहायक हो सकते हैं। कृषि प्रधान देश होते हुए भी भारत कृषि में पिछड़ा हुआ क्यों है, इस विषय पर

लिखकर आप किसानों की सेवा कर सकते हैं। कुटीर और लघु उद्योगों की समस्याओं को सरकार और राष्ट्र के सामने प्रस्तुत कर कमजोर वर्गों को राहत दिला सकते हैं।

आर्थिक फीचर के द्वारा सरकार की आर्थिक नीतियों की समीक्षा की जा सकती है। उदाहरणार्थ जब आयात-निर्यात नीति घोषित की जाती है तब आप विश्लेषण कर बता सकते हैं कि इस नीति में क्या अच्छाइयां हैं और क्या खामियां हैं। बजट के पूर्व आप अर्थशास्त्रियों, उद्योगपतियों, व्यापारियों और अन्य करदाताओं से साक्षात्कार करके सरकार की कर नीति में परिवर्तन के लिए उपयोगी सुझाव दे सकते हैं। बजट पेश किये जाने के बाद आप उसके विभिन्न पहलुओं पर कई फीचर तैयार कर सकते हैं। बजट और कृषि, बजट और उद्योग, बजट और पूंजी बाजार, बजट और लघु उद्योग, बजट और कमजोर वर्ग तथा बजट और आम जनता इन शीर्षकों के अंतर्गत आप विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों पर बजट के संभावित प्रभावों पर प्रकाश डाल सकते हैं। उपभोक्ताओं के हित में आप अनाज, दालों, तेलों, दूध, सब्जियों, फलों आदि के मूल्यों और उनकी आपूर्ति पर फीचर तैयार कर सकते हैं। सार्वजनिक वितरण प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार और अनियमितताओं का पर्दाफाश कर उपभोक्ता आंदोलन को सक्रिय बना सकते हैं। इस प्रकार आर्थिक फीचर के द्वारा आप समाज और राष्ट्र की सेवा कर सकते हैं।

6.3 आर्थिक फीचर के प्रकार

आर्थिक फीचर के महत्व की चर्चा करते हुए हमने उसके क्षेत्र का भी आपको परिचय दे दिया है। आपने देखा होगा कि कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसका संबंध अर्थ से न हो फिर भी हम सुविधा के लिए आर्थिक फीचर को निम्नलिखित प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं।

- आर्थिक विकास संबंधी फीचर
- वाणिज्य एवं व्यापार संबंधी फीचर
- बजट संबंधी फीचर
- अन्य आर्थिक फीचर

आइए, इन पर अलग-अलग विचार करें।

6.3.1 आर्थिक विकास संबंधी फीचर

आर्थिक विकास का सीधा संबंध देश की प्रगति से होता है। आर्थिक दृष्टि से कोई देश कितना संपन्न है, इसी से उसकी प्रगति का निर्धारण होता है। विकास के मुख्य रूप से दो क्षेत्र हैं—कृषि एवं उद्योग। कृषि भोजन संबंधी मूलभूत आवश्यकता को पूरा करती है तो उद्योग हमारे जीवन के अन्य क्षेत्रों की जरूरतों को पूरा करने में सहायक होते हैं। भारत कृषि प्रधान देश है। यहां तीन चौथाई जनसंख्या अब भी कृषि पर निर्भर है। देश की आय का बहुत बड़ा भाग कृषि उत्पादों द्वारा ही प्राप्त होता है। लेकिन कृषि के क्षेत्र की कई समस्याएं भी हैं। कृषि उत्पादनों में पर्याप्त वृद्धि के बावजूद किसानों की आम हालत संतोषजनक नहीं है। छोटे किसानों और खेत मजदूरों को भुखमरी तक का सामना करना पड़ता है। कृषि उत्पादों का संतोषजनक मूल्य नहीं मिलता। अब भी हमारी कृषि व्यवस्था मानसून पर निर्भर रहती है। इसलिए हर साल किसी न किसी क्षेत्र में अकाल पड़ता है या बाढ़ के कारण खेती बर्बाद हो जाती है। कृषि क्षेत्र के इन विभिन्न पक्षों को आर्थिक फीचर के अंतर्गत विषय बनाया जा सकता है।

उद्योग के क्षेत्र से संबंधित फीचर भी आर्थिक फीचर के अंतर्गत आते हैं। उद्योग व्यवसाय संबंधी समस्याओं, देश की औद्योगिक प्रगति, विकासशील और विकसित देशों से औद्योगिक संबंध, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के उद्योगों की समस्याएँ, कुटीर एवं लघु उद्योगों की समस्याएँ आदि विभिन्न विषयों को इसके अंतर्गत लिया जा सकता है।

कृषि और उद्योग के क्षेत्र में केवल उत्पादन वृद्धि ही लक्ष्य नहीं होता। यह भी देखना होता है कि क्या इसे आम आदमी के जीवन स्तर में सुधार हुआ है? क्या इनसे पर्याप्त रोजगार अवसर उपलब्ध कराये जा सके हैं। उद्योगों द्वारा उत्पादित वस्तुएँ हमारी प्राथमिकताओं को पूर्ण करने में सक्षम हैं। उद्योग और कृषि क्षेत्र दोनों में क्या वर्चस्व निहित स्वार्थों का

है? क्या पूंजीपति और व्यापारी केवल अपने लाभ की ही सोचते हैं या मजदूरों और राष्ट्र के हित की भी सोचते हैं। इस तरह के कई प्रश्नों को आर्थिक फीचर का विषय बनाया जाना चहिए। उद्योगों के संबंध में एक ऐसे ही फीचर का अंश यहां उद्धृत कर रहे हैं जिसमें बीमार उद्योगों को मजदूरों द्वारा अपने हाथ में लेने की पेशकश को विषय बनाया गया है–

बंबई की बंद पड़ी कंपनी कमानी के शेयर कम कीमत पर खरीदने और इसे सरकारी वित्तीय संस्थाओं की मदद से चलाने की पेशकश करके वहां की मजदूर यूनियन ने इस साल के शुरू में औद्योगिक हलके में खलबली मचा दी थी। तब इसे बड़बोलापन समझा गया पर आज यूनियन इस बात को सच साबित करने में लगी है कि वह अपने प्रस्ताव पर गंभीर है। उसने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है क्योंकि "मजदूरों का पूंजीवाद" सरकार और वित्तीय संस्थाओं के गले नहीं उतर रहा है।

ऐसा करने वाली सिर्फ कमानी यूनियन ही नहीं है। यूनियन कारवाईड का चेंबूर स्थित कारखाना कुछ दिनों से बंद पड़ा है। उसके मजदूर भी ऐसी ही पेशकश करने के मूड में हैं।....

(**हिन्दी इंडिया टूडे**, 15 जुलाई 1987)

6.3.2 वाणिज्य-व्यापार संबंधी फीचर

अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पक्ष वाणिज्य और व्यापार है। वस्तुओं का क्रय-विक्रय व्यापार है और वाणिज्य के अंतर्गत क्रय, विक्रय, विनिमय, लेन-देन आदि सभी पक्ष आ जाते हैं। बाजार व्यवस्था, शेयर, बैंकिंग, वस्तुओं का क्रय-विक्रय और विनिमय वित्तीय ऋणों का लेन-देन, कीमतों का उतार-चढ़ाव आदि सभी पक्ष वाणिज्य-व्यापार के अंतर्गत आयेंगे। पूंजीवादी समाज में इन सबका अत्यधिक महत्व होता है। आज लगभग प्रत्येक देश और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लेन-देन बैंकों के माध्यम से होता है। नौकरीपेशा लोगों को वेतन भी अब बैंकों से मिलने लगा है। बैंकों में लोग अपनी बचत जमाकर उस पर ब्याज दर पर ऋण भी प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार उद्योगों की प्रगति का पता शेयर बाजार से लगता है। राजनीतिक, प्राकृतिक, सामाजिक, संकटों का प्रभाव अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। एक वस्तु के अंतर्राष्ट्रीय भाव में बढ़ोत्तरी या गिरावट आने से अन्य चीजों की कीमतों पर भी असर पड़ता है। उदाहरण के लिए खाड़ी संकट के समय तेल की कीमतों में भारी वृद्धि हो गई। इसके कारण भारत में भी पेट्रोल, डीजल आदि तेल उत्पादों में 25 प्रतिशत वृद्धि कर दी गई। इनमें वृद्धि होने से इन पर निर्भर अन्य चीजों की कीमतों में भी वृद्धि हुई। इस प्रकार एक राजनीतिक संकट (जिससे हम यद्यपि सीधे रूप में जड़े हुए नहीं थे) ने हमारी अर्थव्यवस्था को गहरे रूप में प्रभावित किया। वाणिज्य-व्यापार के ऐसे घटनाचक्रों को फीचर का विषय बनाया जा सकता है। खाड़ी संकट के दौरान पेट्रोल के संकट पर कई पत्र-पत्रिकाओं ने फीचर प्रकाशित किये। ऐसे ही एक फीचर का अंश यहां उद्धृत है–

यह तो सर्वविदित है कि भारत को पचास प्रतिशत तेल की आपूर्ति इराक और कुवैत से होती है। हम साल भर में लगभग दो करोड़ टन कच्चा तेल बाहर से मंगाते हैं और लगभग साढे तीन करोड़ टन अपने देश में ही निकालते हैं। इराक से इस वर्ष हमने सवा बाईस लाख व कुवैत से पंद्रह लाख टन कच्चा तेल प्राप्त करने का अनुबंध किया है। रूस से हमें पैंतालिस लाख टन तेल इस वर्ष प्राप्त करना है। वर्तमान खाड़ी संकट को देखते हुए भारत को इराक और कुवैत से एक टन भी कच्चा तेल प्राप्त होने की आशा नहीं है।....

(**बिना पेट्रोल सब सून**–प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव, **दैनिक जागरण**, 2 सितंबर 1990)

6.3.3 बजट संबंधी फीचर

बजट का शाब्दिक अर्थ है आय-व्यय का ब्यौरा। इसके अंतर्गत गत वित्तीय वर्ष में हुए आय-व्यय का बयौरा प्रस्तुत किया जाता है, आगामी वित्त वर्ष के लिए आय के प्रावधानों तथा व्यय के अनुमानों का विवरण दिया जाता है। हमारे देश में प्रत्येक वर्ष फरवरी माह में रेल बजट और आम बजट पेश किये जाते हैं। इन बजटों के प्रति सभी लोगों की उत्सुकता रही है क्योंकि इन्हीं में नये करों का प्रावधान होता है, आयकर की सीमा बढ़ाई जाती है तथा उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों में संभावित वृद्धि का पता लगता है। बजट आने से पूर्व

समाज के विभिन्न वर्ग-उद्योगपति, व्यवसायी, नौकरीपेशा लोग, मजदूर, किसान आदि अपने-अपने ढंग से बजट को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। उनके इस प्रयत्न में फीचर लेख मदद करते हैं। इसी प्रकार बजट जारी होने के बाद समाज के विभिन्न वर्गों की प्रतिक्रियाओं और अर्थशास्त्रियों और विशेषज्ञों की राय को भी फीचर लेखक अपने फीचर के माध्यम से प्रस्तुत कर सकता है। इससे देश की अर्थव्यवस्था के निर्धारण में अधिक से अधिक लोगों को शामिल करना संभव हो पाता है।

6.3.4 अन्य आर्थिक फीचर

आर्थिक फीचर के उपयुक्त विषयों के अतिरिक्त भी कई विषय हो सकते हैं। जैसे आदिवासियों, उपेक्षित वर्गों आदि के लिए आरंभ की गई योजनाओं, उनके आर्थिक उत्थान के प्रयत्नों, बेरोजगारी, महंगाई, गरीबी, जनसंख्या वृद्धि का अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाला प्रभाव, आदि विभिन्न पक्षों पर तैयार किये गये फीचर भी इसी के अंतर्गत शामिल होंगे। गांव से आये मजदूरों पर लिखे गये एक फीचर का अंश यहां उद्धृत कर रहे हैं जो संगठित न हो पाने के कारण शोषण और उत्पीड़न के शिकार हो रहे हैं–

प्रश्न यह है कि इन्हें अपने उद्भव स्थानों यानी कि गांवों-कस्बों आदि से क्यों कर उखड़ना पड़ता है। इस विषय में अध्ययन से पता चलता है कि अपने इलाकों में घोर मेहनत करने के बाद इस वर्ग के परिवार की औसत आमदनी प्रति वर्ष 250 रुपये से भी कम पड़ती थी। ग्रामीण क्षेत्र के परिवारों की वार्षिक आमदनी यदि 6400 रुपये से कम है तो वह गरीबी रेखा से नीचे है। इस हिसाब से वे परिवार तो गरीबों से भी कहीं ज्यादा गरीब रहते थे और फलस्वरूप शहरों की तरफ भाग्य आजमाने के लिए भागते थे। ग्रामीण इलाकों में न्यूनतम उचित अवस्था में जीवनयापन के लिए प्रति परिवार कम से कम 534 रुपये प्रतिमाह की आमदनी अवश्य होनी चाहिए। अनुमान किया जा सकता है कि इन प्रवासी श्रमिकों की हालत अपने गांवों में कितनी त्रस्त और यंत्रणाभरी रहती होगी। ये क्या खाना-पीना पाते होंगे, इसका अन्दाजा इनकी तुच्छ आय से लगाया जा सकता है। 6-7 व्यक्तियों के परिवार के लिए खाने-पीने के हेतु 250 से 500 रुपये का ही जुगाड़ हो पाए तो वह परिवार क्या स्वस्थ और सुखी रह पाएगा? इस प्रकार ये श्रमिक शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य एवं जिस्मानी ताकत और वजन आदि के लिहाज से अल्प विकसित, रोगी और असहाय रहते थे।

(दुख ही जीवन की कथा रही–आर्थिक जगत, 6 अगस्त 1990)

बोध प्रश्न

1) आर्थिक फीचर का महत्व बताइए।

.....

.....

.....

.....

2) आर्थिक विकास से संबंधित फीचर के अंतर्गत किन-किन विषयों को शामिल किया जा सकता है, स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) बजट का तात्पर्य बताइए।

.....

.....

.....

अभ्यास

1) महंगाई की समस्या पर एक टिप्पणी लिखिए जिसमें मध्य वर्ग पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रखा गया हो। टिप्पणी लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) महंगी होती बच्चों की शिक्षा को क्या आर्थिक फीचर के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है? कारण बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

6.4 विषय का चयन

आर्थिक विषयों पर फीचर लिखने का कार्य दायित्वपूर्ण है। इस ओर उसी लेखक को अग्रसर होना चाहिए जिसकी आर्थिक विषयों में गहरी अभिरुचि है। आर्थिक फीचर के लिए विषय का चयन करते हुए विषय की प्रासंगिकता और महत्व पर अवश्य विचार करना चाहिए। यह भी विचार कर लेना चाहिए कि फीचर जिस पत्रिका में प्रकाशित होगा, उसका पाठक वर्ग कैसा है। आइए, इन सब पक्षों पर विचार करें।

6.4.1 रुचि एवं विशेषज्ञता

आर्थिक फीचर के लेखन की ओर उसकी लेखक को अग्रसर होना चाहिए जिसकी इस में गहरी रुचि हो तथा जिसने अर्थशास्त्र का पर्याप्त अध्ययन किया हो। आर्थिक फीचर में अर्थशास्त्र, वाणिज्य, व्यवसाय प्रबंध, सांख्यिकी आदि विषयों की आधारभूत जानकारी आवश्यक होती है। इनके ज्ञान के बिना अर्थ-क्षेत्र की जटिलताओं को नहीं समझा जा सकता। कई ऐसी संकल्पनाओं एवं पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग आर्थिक लेखन में किया जाता है कि उसे जानना बहुत जरूरी है। हम यहां 1990-91 के बजट पर लिखे एक फीचर का अंश प्रस्तुत कर रहे हैं। आप पायेंगे कि इस अंश में कई ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है जिन्हें प्रयोग करने से पहले उन्हें ठीक से समझना आवश्यक था–

> *.....8 मार्च को 390.4 के निचले स्तर तक पहुंच चुका इकॉनामिक टाइम्स का शेयर मूल्य सूचकांक बजट की शाम 395 के बिंदु पर था। लेकिन बजट के बाद हुए कारोबार में वह 407.7 की ऊँचाई पर पहुंच गया और अगले दिन उसका पड़ाव था 419.1 का अंक जो जनवरी की बुलंदी 442.9 से ज्यादा दूर नहीं है।*
>
> *बजट के कई प्रस्तावों का काफी स्वागत हुआ। इनमें आधारभूत कंपनी कर को 50 फीसदी से घटाकर 40 फीसदी करने और आयकर अधिनियम की धारा 115-जे को हटाने का प्रावधान भी है। जिसके चलते कंपनियों को अपने घोषित मुनाफे का*

कम-से-कम 30 फीसदी आयकर के रूप में देना पड़ता है। शेयरों से जुड़ी बचत योजना को अंतिम रूप दिये जाने से भी निवेशकों के हौसले बुलंद होने की उम्मीद है।

(**इंडिया टुडे**, 15 अप्रैल 1990)

उपर्युक्त अंश में आप देखेंगे कि इसमें कई ऐसे शब्द और संकल्पनाओं का प्रयोग हुआ है जिसे समझे बिना लिखने पर लेखक विषय के साथ न्याय नहीं कर पाएगा। जैसे शेयर बाजार, शेयर मूल्य सूचकांक, आधारभूत कंपनी, आयकर अधिनियम की धारा 115-जे, शेयरों से जुड़ी बचत योजना, निवेशक आदि। इन्हें समझे बिना विषय का मर्म समझना मुश्किल होगा, न ही वह अपना विवेचन प्रस्तुत कर सकेगा। इसलिए यह आवश्यक है कि फीचर लेखक की आर्थिक विषयों में गहरी रुचि हो और उसकी संकल्पनाओं को सही ढंग से समझ सकने की क्षमता हो।

6.4.2 प्रकाशन की प्रकृति

आर्थिक फीचर के लिए विषय का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आप किस पत्र-पत्रिका के लिए लिख रहे हैं। आप दैनिक समाचार पत्र के लिए लिख रहे हैं तो आपको पाठकों के विस्तृत वर्ग को ध्यान में रखना होगा। अगर आप आर्थिक विषयों की पत्रिका के लिए लिख रहे हैं तो आप फीचर के लिए अधिक गहन विषय का चयन कर सकते हैं। इसी प्रकार आजकल कई पत्र-पत्रिकाएं आर्थिक विषयों के लिए पर्याप्त पृष्ठों की व्यवस्था रखती हैं। इनमें आर्थिक विषयों पर कई तरह के लेख, फीचर, रिपोर्ताज आदि प्रकाशित होते हैं। यह इस बात का द्योतक भी है कि आर्थिक विषयों पर लेखन का महत्व लगातार बढ़ रहा है।

6.4.3 विषय की प्रासंगिकता

आर्थिक फीचर के विषय का चयन बहुत सोच-समझकर करना चाहिए। विषय सामयिक और महत्वपूर्ण होगा तभी वह पाठकों का ध्यान आकर्षित करेगा। गलत विषय का चयन कर लेंगे तो आपकी मेहनत बेकार चली जाएगी। सभी पत्र-पत्रिकाओं में उन्हीं विषयों के लेखों को प्राथमिकता दी जाती है जिनकी अखबारी दुनिया में काफी चर्चा हो। उदाहरण के लिए एक समाचार छपा कि केन्द्रीय जांच ब्यूरो के अधिकारियों ने देश के कई बड़े नगरों में सरकारी और निजी कंपनियों के अफसरों के घरों पर छापे डालकर दो करोड़ रुपये का काला धन बरामद किया। इन खबरों को पढ़कर जागरूक लेखक काले धन पर फीचर लिखने के विचार करेगा। एक और उदाहरण लीजिए, समाचार प्रकाशित हुआ कि नये केन्द्रीय वित्त मंत्री ने पूंजी बाजार को सक्रिय करने और लगातार बढ़ रही महंगाई पर अंकुश लगाने के काम को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का निश्चय किया है। इस समाचार से आपको फीचर के दो विषय मिल रहे हैं—पूंजी बाजार और महंगाई।

कभी-कभी घटना का पूर्वानुमान करके भी आर्थिक फीचर तैयार किये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ फरवरी के अंतिम सप्ताह में हर साल केंद्रीय बजट पेश होता है। इस बजट के आने के दो-तीन सप्ताह पूर्व आप बाजार की स्थिति का अध्ययन करके और व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों एवं अर्थशास्त्रियों से बातचीत करके अच्छा फीचर तैयार कर सकते हैं। दूसरा उदाहरण लीजिए। आपको मालूम है कि दस-पंद्रह दिन बाद राष्ट्रपति सोवियत संघ की यात्रा पर जा रहे हैं इस अवसर पर आप भारत-सोवियत आर्थिक संबंधों पर फीचर तैयार करके समाचारपत्रों को भेज सकते हैं इसी तरह मानसून के आगमन के बाद आप सारे देश में वर्षा कैसे हुई इसका जायजा ले सकते हैं और अनुमान लगा सकते हैं कि खरीफ की फसल कैसी होगी।

6.5 सामग्री का संकलन

जब आप विषय का चयन कर लें तब आपको उसके लिए सामग्री का चयन करना होगा। विषय पर पर्याप्त अध्ययन, आंकड़ों तथा अन्य तथ्यों का संकलन, विशेषज्ञों की राय आदि को एकत्र कर आप उनके आधार पर फीचर तैयार कर सकते हैं। आइए, सामग्री के

संकलन पर विचार करें

6.5.1 विषय पर शोध एवं अध्ययन

आर्थिक फीचर के लिए जो भी विषय आपने चुना है उसकी गहरी जानकारी आवश्यक है। इसके लिए यह जरूरी है कि आप संबंधित विषय का अध्ययन करें। किसी पुस्तकालय में जाकर संदर्भ ग्रंथों और प्रकाशित सामग्री की फाइलों पर नजर दौड़ानी होगी। अध्ययन करते समय यदि आप अपनी डायरी में महत्वपूर्ण मुद्दों और आंकड़ों को नोट कर लेंगे तो फीचर लिखने में सुविधा होगी। आपको विषय के सभी पक्षों का अध्ययन करना चाहिए ताकि आपकी नजरों से कोई महत्वपूर्ण पक्ष ओझल न हो जाए। बेहतर यह होगा कि अगर आपकी रुचि आर्थिक फीचर के लेखन में है तो आपको निरंतर इस क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन करते रहना चाहिए तथा जरूरी तथ्यों और आंकड़ों को नोट करते रहना चाहिए। इससे आपको फीचर लिखने में मदद मिलेगी।

6.5.2 तथ्यों का संकलन

आर्थिक फीचर में तथ्यों और आंकड़ों का बहुत महत्व होता है। उनके माध्यम से आप अपने विषय के साथ ज्यादा सही ढंग से न्याय कर सकते हैं। इसके लिए आप स्वयं भी आंकड़े और तथ्य एकत्र करें। सरकारी दस्तावेजों, सर्वेक्षणों, शोध कार्यों आदि से भी आप आंकड़े एकत्र कर सकते हैं। मान लीजिए आपको काले धन पर फीचर लिखना है। सबसे पहले आपको यह मालूम करना होगा कि काला धन कहते किसे हैं। इसके बाद पता लगाइए कि काले धन के स्रोत क्या-क्या हैं? यह भी मालूम कीजिए कि भारत में कितना काला धन है। अन्य देशों के आंकड़ों का भी पता लगाने की कोशिश कीजिए। इस विषय में सरकार ने कोई कमेटी या आयोग नियुक्त किया हो तो उसकी रिपोर्ट के निष्कर्षों को नोट कर लीजिए। इसके बाद देखिए कि काला धन देश के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन को किस प्रकार दूषित करता है। इन सभी पक्षों पर तथ्य और आंकड़े एकत्र कर आप एक अच्छा फीचर तैयार कर सकते हैं।

6.5.3 साक्षात्कार

आर्थिक फीचर को स्तरीय बनाने के लिए अर्थशास्त्रियों, विशेषज्ञों, राजनेताओं, सरकारी अधिकारियों, उद्योगपतियों, उपभोक्ताओं आदि विभिन्न संबद्ध लोगों से बातचीत करनी चाहिए और विषय पर लोगों की राय जाननी चहिए। इसके लिए यह जरूरी है कि पहले यह तय कर लें कि आपको क्या-क्या बातें जाननी हैं। फिर, इसके लिए किन-किन लोगों से बातें करनी हैं। आप संबद्ध लोगों से फोन द्वारा या सीधे मिलकर बातचीत कर सकते हैं। कई बार विशेषज्ञों की राय अन्य स्रोतों से भी प्राप्त की जा सकती है। जैसे समाचारपत्रों, रेडियो या दूरदर्शन पर उनके बयान को आप अपने फीचर लेखन में उद्धृत कर सकते हैं।

6.5.4 अन्य सामग्री

आर्थिक फीचर के साथ आप तालिकाएँ, दस्तावेज की फोटो प्रतिलिपि या विषय से संबद्ध छायाचित्र, कार्टून, रेखाचित्र देने से फीचर का महत्व बढ़ जाता है। आर्थिक फीचर का विषय चूंकि शुष्क होता है इसलिए उपर्युक्त सामग्री का उपयोग करने से फीचर को अधिक जीवंत बनाया जा सकता है। फीचर के लिए सामग्री एकत्र करते वक्त उसके महत्व का अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

6.6 सामग्री का संयोजन एवं संपादन

आर्थिक फीचर लिखने के लिए आपने जो सामग्री एकत्र की है, फीचर लिखने की शुरुआत करने से पूर्व उसका अच्छी तरह से अध्ययन कीजिए। आपके फीचर का जो भी उद्देश्य है, क्या संकलित सामग्री उसके अनुरूप है? अगर कोई पक्ष छूट रहा है तो आपको उससे संबंधित सामग्री इकट्ठी करनी चाहिए। सामग्री का अध्ययन करके उसमें से गैर जरूरी सामग्री को अलग कर लीजिए। उपयोगी सामग्री का एक बार पुनः अध्ययन करके उसके आधार पर एक रूपरेखा तैयार कर लीजिए। फिर, रूपरेखा के एक-एक बिन्दु पर अच्छी तरह से विचारकर लीजिए कि उसके अंतर्गत आप क्या-क्या सामग्री प्रस्तुत करेंगे। किन-किन तथ्यों और आंकड़ों का उपयोग करेंगे। कहां अर्थशास्त्री, विशेषज्ञ, उद्योगपति

या उपभोक्ता के मत का उल्लेख करेंगे। यह ध्यान रखिए कि फीचर के अंतर्गत जो भी बात आप कहें वह तथ्यों से पुष्ट हों। आपका विश्लेषण और निष्कर्ष विश्वसनीय और प्रामाणिक होना चाहिए।

सामग्री का संयोजन और संपादन करते हुए अपने उद्देश्य और पाठक वर्ग को सामने रखना चाहिए। ये दोनों बातें आपके फीचर के स्वरूप को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

बोध प्रश्न

4) आर्थिक फीचर के लेखक में किन-किन योग्यताओं का होना आवश्यक है, बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

5) आर्थिक फीचर के लिए विषय का चयन करते हुए किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6) आर्थिक फीचर में आंकड़ों के महत्व पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

3) खाद्य तेलों के संकट पर फीचर लिखने के लिए आप क्या-क्या तैयारी करेंगे? उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) उक्त विषय के लेखन के लिए एक रूपरेखा तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6.7 लेखन की प्रस्तुति

आर्थिक फीचर का लेखन आरंभ करने के लिए जब आपकी तैयारी पूरी हो जाए, आप अपनी सामग्री का अच्छी तरह से अध्ययन कर लें और जब फीचर की रूपरेखा तय कर लें तब आप लेखन शुरू करें। यह अवश्य तय कर लीजिए कि आप फीचर का क्या आकार रखेंगे। आकार के अनुरूप ही फीचर के प्रत्येक अंश का निर्धारण कीजिए। कहीं ऐसा न हो कि आरंभिक अंश अत्यधिक विस्तृत हो जाए और बाद वाले अंश को स्थानाभाव के कारण चलताऊ ढंग से पूरा करना पड़े। ऐसी स्थिति में आपका फीचर प्रभावशाली नहीं होगा। वैसे तो फीचर का लेखन समन्वित रूप में ही किया जाता है। फिर भी उसके लेखन को समझने के लिए हम यहां आरंभ, मध्य और अंत के रूप में उसके विभिन्न अंशों पर विचार करेंगे।

6.7.1 आरंभ

आर्थिक फीचर का लेखन आप किसके लिए और क्यों कर रहे हैं—इन्हीं प्रश्नों से आपके फीचर का स्वरूप तय होगा। जिस उद्देश्य से प्रेरित होकर आप फीचर लिख रहे हैं अगर आरंभ से ही वह स्पष्ट रूप से व्यक्त हो तो फीचर को आप रोचक रूप दे सकते हैं। इसके लिए आप आरंभ में समस्या का संकेत दे सकते हैं। उसकी भयावहता का उल्लेख कर सकते हैं या विषय से संबद्ध वर्गों को संबोधित कर सकते हैं। विषय के निष्कर्ष को भी आरंभ में प्रस्तुत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए बजट पर लिखे गये एक फीचर की शुरुआत बजट की निष्कर्षात्मक समीक्षा से की गई और बाद में बजट की विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की गई।

> *जैसा सोचा था, वैसा नहीं हुआ। देश करों की कड़वी खुराक का अंदेशा लगाए बैठा था लेकिन आशंकाएं व्यर्थ साबित हुई। जैसी कि उम्मीद थी ग्रामीण इलाकों को कई रियायतें मिलीं। उद्योग जगत करारी चोट खाने का अंदाजा लगा रहा था, लेकिन उन्हें हल्की-सी चपत ही मिली। इसलिए शेयर बाजार में तेजी आ गई और उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादकों ने राहत की सांस ली।*
>
> **(घाटा कम रखने का करतब—इंडिया टूडे,** 15 अगस्त 1990)

इस फीचर में आगे लेखक बजट पर कुछ प्रश्न चिह्न लगाता है और फिर उनका उत्तर खोजते हुए अपने फीचर की शेष सामग्री प्रस्तुत करता है। समस्या के उल्लेख और विषय के परिचय के साथ किये गये आरंभ का अंश देखिए—

> *भूखा पेट रहना मानवता के नाम पर सबसे बड़ा कलंक है। वैज्ञानिकों की पुरजोर कोशिश के बावजूद दुनिया के 50 करोड़ लोग भूख का शिकार हैं। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ. के नाम से मशहूर) की एक रपट के अनुसार जिंदगी के लिए जरूरी चीजों हर साल दुनिया के पांच करोड़ लोगों की जान ले लेती है। इनमें भोजन की कमी से मरने वालों की तादाद सबसे ज्यादा है। आबादी बढ़ने के साथ-साथ भोजन की समस्या और भी विकट होती जा रही है। इस अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे की ओर ध्यान खींचने के लिए इस साल एफ.ए.ओ. ने विश्व खाद्य दिवस (16 अक्तूबर) का मुख्य विषय चुना—"भविष्य के लिए भोजन"। इस दौरान आयोजित चर्चाओं, संगोष्ठियों, व्याख्यानों आदि से समस्या के हल की हल्की सी किरण दिखी है। इन पर गौर करने से पहले समस्या को थोड़ा और गहराई से देखना होगा।*
>
> **(कैसे जुटेगा भविष्य में भोजन,** जगदीप सक्सेना, **जनसत्ता,** 2 दिसंबर 1990)

फीचर के आरंभ का रूप चाहे जो भी हो लेकिन उसे रोचक बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। आरंभ में अगर पाठक की रुचि जाग्रत होगी तभी वह आगे के अंश पढ़ेगा।

6.7.2 मध्य

फीचर के मध्य भाग में मुख्य सामग्री प्रस्तुत की जाती है। इस सामग्री को क्रमबद्ध एवं तार्किक अंग से प्रस्तुत करना चाहिए। आप जो भी बात कहें उसके प्रमाण में पर्याप्त तथ्य और आंकड़े प्रस्तुत करें। जहाँ आवश्यक हो वहाँ विशेषज्ञ की राय उद्धृत करें। ऊपर हम "कैसे जुटेगा भविष्य में भोजन" शीर्षक फीचर का आरंभिक अंश उद्धृत किया था, उसमें

लेखक ने आगे इस समस्या पर कई महत्वपूर्ण आंकड़े और विशेषज्ञों की राय दी है। यह बताया है कि आगामी दस सालों में बढ़ती आबादी की खाद्य जरूरतों को पूरा करने के लिए कितने खाद्यान्न उत्पादन की आवश्यकता होगी। उसके लिए क्या करना होगा। इन प्रश्नों पर विचार किया है।

> *इस समय दुनिया में मनुपुत्रों की तादाद 5-3 अरब है। जबकि सन् 1950 में धरती पर ढाई अरब लोगों का वास था। विशेषज्ञों का मानना है कि इस सदी के अंत तक यह है कि इन सभी का पेट इसी धरती से भरना है। इसके लिए मौजूदा खाद्यान्न उत्पादन को 40 फीसदी बढ़ाना होगा।*

विश्व में जनसंख्या में वृद्धि तथा खाद्यान्न की जरूरत बताने के बाद लेखक हमारे अपने देश में खाद्यान्न की जरूरत के बारे में आंकड़े प्रस्तुत करता है तथा विशेषज्ञों की राय भी हमारे सामने रखता है।

> *इस समय देश में हर साल 17 करोड़ टन से ज्यादा अनाज पैदा होता है। अगर आबादी इसी तरह बढ़ती रही तो सन् 2000 में 24 करोड़ टन अनाज उपजाना होगा। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिक प्रोफेसर बी. राय ने "खेती" में छपे एक लेख में हिसाब लगाकर बताया है कि सैद्धांतिक रूप से हम ऐसा करने में समर्थ हैं। क्योंकि सबसे बडी समस्या तेजी से बिगड़ रहे पर्यावरण की है। एफ.ए.ओ. के महानिदेशक डॉ. एडवर्ड सौमा ने बताया है..... लेकिन अन्न उत्पादन के लिए जरूरी प्राकृतिक साधन पूरी दुनिया में तेजी से खत्म हो रहे हैं। मिट्टी का कटाव हर साल 250 लाख टन उपरी उपजाऊ मिट्टी को नष्ट कर रहा है। अस्सी लाख हेक्टेयर कृषि भूमि पूरी तरह बंजर हो चुकी है। हर साल 170 लाख हेक्टेयर जमीन में जंगल घट रहे हैं।" यानी हम तेजी से खराब होती भूमि से ज्यादा से ज्यादा अनाज पाने की उम्मीद लगाए हुए हैं।*

उपर्युक्त दोनों अंशों का विश्लेषण करें तो स्पष्ट हो जाएगा कि लेखक ने अपने फीचर के उद्देश्य के अनुरूप अपने तथ्य और तर्क प्रस्तुत किये हैं। सबसे पहले बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में ज्यादा अनाज की जरूरत। फिर ज्यादा अनाज उत्पादन के लिए आवश्यक संसाधनों पर विचार। उनके संबंध में जरूरी आंकड़े और विशेषज्ञों की राय। इसी क्रम में वह अन्न उत्पादन की समस्या पर विचार करता हुआ एक-एक पक्ष को हमारे सामने रखता जाता है। फीचर के मध्य भाग को इसी क्रमबद्ध, तथ्यपरक और तार्किक रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

6.7.3 अंत एवं शीर्षक

फीचर के अंतिम भाग में विषय के संबंध में निष्कर्ष, समस्या का समाधान या समस्या के प्रति पाठकों को सचेत रहने का आहवान किया जा सकता है। आरंभ की तरह ही फीचर का अंत भी प्रभावशाली होना चाहिए। पाठक को अंत तक पहुंचते-पहुंचते यह संतोष महसूस होना चाहिए कि उसने एक जानकारी भरा, सोद्देश्यपूर्ण एवं रोचक फीचर पढ़ा है। **"कैसे जुटेगा भविष्य में भोजन"** के अंतिम भाग में लेखक ने समस्या का समाधान भी प्रस्तुत किया है और विषय का निष्कर्ष भी।

> *हर किसी को भरपेट भोजन जुटाने की सारी जिम्मेदारी वैज्ञानिकों और किसानों पर नहीं है। न ही यह काम इनके बस का है। एफ.ए.ओ. के अनुसार दुनिया में इतना भोजन है कि अगर सबको बराबर-बराबर बांट दिया जाए तो 10 फीसदी अनाज बच जाएगा। फिर भूख क्यों हैं? इसका कारण असमान वितरण है। विकसित देशों के लोग ज्यादा खा रहे हैं, जबकि विकाशील देशों के गरीबों को भरपेट भोजन नसीब नहीं। जब अनाज के सही वितरण का काम कोई अंतर्राष्ट्रीय संस्था करेगी, तभी भूख का नाम मिटेगा।*

फीचर का शीर्षक विषय को संकेतित करने वाला व आकर्षक होना चाहिए। शीर्षक से यह मालूम पड़ना चाहिए कि किस विषय पर फीचर लिखा गया है, ताकि पाठक अपनी रुचि के अनुसार उसको पढ़ने की ओर प्रवृत्ति हो सके। कुछ विषय और समस्या का संकेत देने वाले शीर्षक के उदाहरण देखिए।

कैसे जुटेगा भविष्य में भोजन?

बिन पेट्रोल सब सून

समस्या के समाधान की ओर संकेत देने वाले शीर्षक भी रखे जा सकते हैं।

बीमार उद्योग : मजदूर माँगे मिल्कियत

रास्ते और भी हैं पेट्रोल के सिवा

विषय पर निष्कर्षात्मक टिप्पणी को भी शीर्षक बनाया जा सकता है।

1990-91 का बजट : घाटा कम रखने का करतब

चमड़ा उद्योग : पांव पसारने का दौर

गांव से आये मजदूर : दु:ख ही जीवन की कथा रही

उपर्युक्त शीर्षक में आप पायेंगे कि ये सभी किसी न किसी रूप में फीचर के विषय और उद्देश्य को ध्वनित करते हैं। शीर्षक को रोचक बनाने के लिए उन्हें काव्यात्मक या मुहावरेदार भाषा में कहने की कोशिश की गई है। "दु:ख ही जीवन की कथा रही" निराला की काव्य पंक्ति है तो "रास्ते और भी हैं पेट्रोल के सिवा" उर्दू के एक शेर का रूपांतरण है। जबकि "घाटा कम रखने का करतब" या "पांव पसारने का दौर" में "करतब", "पांव पसारना" जैसे विशिष्ट प्रयोग द्वारा प्रभाव उत्पन्न किया गया है। फीचर का शीर्षक तय करते समय इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

6.8 भाषा एवं शैली

आर्थिक फीचर की भाषा अत्यंत सरल होनी चाहिए। वाक्य छोटे-छोटे हों और आम बोल चाल के शब्दों का ही उपयोग किया जाए। साहित्यिक फीचर में पांडित्य और लालित्य भले ही दिखाया जाए पर आर्थिक फीचर में इसके लिए कोई गुंजाइश नहीं है। जब आप आर्थिक फीचर लिखने बैठें तब सोचें कि किसके लिए लिख रहे हैं। आप विद्वानों के लिए ही नहीं लिख रहे हैं। आपका उद्देश्य तो आपके विचारों को अधिक से अधिक पाठकों तक पहुंचाना है। नवीन और आकर्षक शैली में गंभीर से गंभीर विचारों को प्रस्तुत करने की कला आपको आनी चाहिए। आर्थिक फीचर में एक विशेष प्रकार की शब्दावली का भी उपयोग होता है। जब तक इस शब्दावली से आप भली भांति परिचित नहीं होंगे तब तक आप आर्थिक फीचर लेखन में सफल नहीं हो सकते। कारोबार, खपत, आमद या आवक, तेजड़ियें, मंदड़िये, मुनाफा वसुली, दृढ़ता या मजबूती, उछाल, नरमी या मुलायीम गिरावट, सुधार, मंदी, तेजी, खामोशी, शेयर, शेयर बाजार, निवेश, डिबेंचर, इक्विटी; वायदा बाजार, पूंजी बाजार, आदि कुछ प्रमुख शब्द हैं जिनके अर्थ जानना आवश्यक है। इन शब्दों को समझे बिना आर्थिक फीचर का लेखन नहीं हो सकता। इसी प्रकार थोक मूल्य सूचकांक, प्रति व्यक्ति आय, मुद्रा अवमूल्यन, गरीबी में दिये गये तथ्यों को समझना और उनका तुलनात्मक अध्ययन करना भी आपको आना चाहिए ताकि आप अपना विश्लेषण और निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकें। पूंजीवादी समाज में शेयर बाजार का अत्यधिक महत्व होता है। उससे समझना और उसकी गतिविधि पर नजर रखना आवश्यक होता है। वहां प्रयुक्त होने वाली खास भाषा जो सांकेतिक भी होती है, को समझना चाहिए। इससे आपको आर्थिक उतार-चढ़ाव को समझने में मदद मिलेगी।

उपर्युक्त बातों का महत्व होते हुए भी यह ध्यान रखना चाहिए कि केवल आंकड़ों और तथ्य आर्थिक फीचर को महत्वपूर्ण नहीं बनाते। यह भी जरूरी है कि आप फीचर को लोगों के अनुभव संसार का हिस्सा बनाकर पेश करें। यह काम आप अपनी रोचक शैली और प्रभावपूर्ण भाषा द्वारा ही कर सकते हैं।

बोध प्रश्न

7) आर्थिक फीचर का लेखन आरंभ की कुछ विधियों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

8) आर्थिक फीचर का शीर्षक तय करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

9) आर्थिक फीचर की भाषा कैसी होनी चाहिए?

अभ्यास

5) महंगाई पर लगभग 250 शब्दों में फीचर लिखिए। इस फीचर के लिए आप थोक मूल्य सूचकांक में वृद्धि मूलभूत जरूरी चीजों के बाजार भाव तथा आम लोगों की तकलीफों को आधार बनाएं।

6) उक्त फीचर का रोचक शीर्षक दीजिए।

6.9 सारांश

- इस इकाई को पढ़ने के बाद आर्थिक फीचर की उपयोगिता से तो भली भाँति परिचित हो गये होंगे। अर्थव्यवस्था पर भी प्रत्येक देश की प्रगति और समृद्धि निर्भर करती है। यदि आप आर्थिक फीचर के लेखन की ओर अग्रसर होना चाहते हैं तो आप इस क्षेत्र का पर्याप्त ज्ञान हासिल करना होगा। आपको यह जानना होगा कि आर्थिक क्षेत्र के अंतर्गत कौन-कौन से विषय आते हैं और फीचर के लिए किन विषयों का चयन प्रासंगिक और महत्वपूर्ण होगा।
- आर्थिक फीचर के क्षेत्र को मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में विभाजित कर सकते हैं। आर्थिक विकास से संबंधित फीचर, वाणिज्य और व्यापार संबंधी फीचर तथा बजट संबंधी फीचर। आर्थिक विकास के दो मुख्य क्षेत्र हैं–कृषि और उद्योग। इनके अतिरिक्त भी आप निर्बल वर्गों, आदिवासियों आदि के आर्थिक उत्थान पर भी फीचर तैयार कर सकते हैं। उत्पादन, वितरण और विनिमय के विभिन्न क्षेत्रों को आर्थिक फीचर का विषय बनाया जा सकता है।
- जब विषय तय कर लें तो उसके बाद उसके लिए सामग्री का संकलन करें। आर्थिक फीचर से आंकड़ों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि आप इनका संकलन लगातार करते रहें और फीचर में यथावसर इनका आयोग करें। इनके अतिरिक्त विशेषज्ञों, अर्थशास्त्रियों के मतों का भी उपयोग करें। सरकारी दस्तावेजों, शोध पत्रों, सर्वेक्षणों, रिपोर्टों आदि के अध्ययन द्वारा आपको अपने विषय के लिए महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध हो सकती है। अगर आप फीचर के साथ विषय से संबद्ध फोटो, चित्र, कार्टून, तालिकाएँ आदि दें तो फिचर और अधिक प्रभावशाली होगा।
- सामग्री का अध्ययन करके रूपरेखा बना लें और फिर फीचर लिखना शुरू करें। अगर आपका उद्देश्य स्पष्ट है और आपको मालूम है कि आपको क्या लिखना है तो फिर आपके लिए फीचर लिखना कठिन नहीं होगा। अपने उद्देश्य को केन्द्र में रखते हुए रोचक ढंग से फीचर की शुरुआत करें। तथ्यों और आंकड़ों से अपनी बातों को पुष्ट करें। क्रमबद्ध व तार्किक ढंग से अपनी बातें रखें एव पाठकों को सही निष्कर्ष, समस्या का समाधान या समस्या के प्रति सचेत करने के साथ फीचर का अंतिम भाग लिखें। फीचर का शीर्षक भी विषय से संबद्ध और आकर्षक होना चाहिए।
- आर्थिक फीचर के लेखन के लिए विशेष पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान आवश्यक है। फीचर की भाषा सरल और आम पाठक के अनुकूल होनी चाहिए। शैली नवीन और आकर्षक होनी चाहिए। इस इकाई को पढ़ने से आपको आर्थिक फीचर के लेखन में मदद मिलेगी।

6.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) आर्थिक फीचर पर लिखकर आप समाज और राष्ट्र की सेवा कर सकते हैं। अर्थव्यवस्था पर समाज की प्रगति निर्भर करती है। अर्थव्यवस्था से संबंधित विभिन्न समस्याओं और पहलुओं को फीचर का विषय बनाकर आप समाज को जागरूक और सरकार को सक्रिय कर सकते हैं।

2) आर्थिक विकास के मुख्य दो क्षेत्र हैं–कृषि एवं उद्योग। कृषि हमारी खाद्यान्न की आवश्यकताओं को पूरा करता है तो उद्योग जीवन की अन्य भौतिक आवश्यकताओं को।

3) बजट का अर्थ आय-व्यय का ब्यौरा। प्रत्येक देश, राज्य और संस्थान में प्रतिवर्ष बीस वर्ष के आय-व्यय का विवरण और आगामी वर्ष के आय-व्यय की योजनाएं प्रस्तुत की जाती हैं। इन्हें ही बजट कहा जाता है।

4) i) विषय का पर्याप्त ज्ञान हो

ii) आर्थिक क्षेत्र की गतिविधियों में गहरी रुचि हो।

iii) इन गतिविधियों को समझने की क्षमता है।

iv) आर्थिक लेखन की विशिष्ट शब्दावली का ज्ञान हो।

5) देखिए भाग 18.4

6) आर्थिक फीचर में आंकड़ों का महत्व अत्यधिक है। आंकड़ों से ही आर्थिक प्रगति, ठहराव या ह्रास का पता लगता है। आंकड़ों के तुलनात्मक अध्ययन से हम समस्या की गहराई जान सकते हैं। आंकड़ों से ही सही निष्कर्ष और समाधान प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

7) आरंभ में विषय का परिचय, समस्या का उल्लेख या विषय पर निष्कर्षात्मक टिप्पणी से किया जा सकता है।

8) i) विषय से संबद्ध हो।

ii) समस्या का संकेत या समाधान हो।

iii) छोटा परन्तु रोचक हो।

अभ्यास

1) मध्य वर्ग के लिए महंगाई की समस्या काफी गंभीर होती है। इस वर्ग के इस अनुभव से आप सभी परिचित होंगे। अपने अनुभव के आधार पर एक टिप्पणी लिखिए। इसके लिए महंगाई पर प्रकाशित होने वाले लेखों को पढ़ सकते हैं।

2) [illegible]या जा सकता है, क्योंकि शिक्षा पर खर्च से निम्न वर्ग और मध्य वर्ग की स्थिति पर बुरा असर पड़ता है। गरीब शिक्षा का खर्च वहन न कर पाने के कारण बच्चों को स्कूलों में भेजता ही नहीं है या प्राइमरी तक शिक्षा दिलवाकर रोजगार में लगा देता है। जबकि मध्य वर्ग के लोगों को शिक्षा पर अपनी हैसीयत से अधिक खर्च करना पड़ता है जिससे अन्य कई समस्याएँ पैदा होती हैं।

3) सबसे पहले आपको यह देखना चाहिए कि भारत में खाद्य तेलों की प्रति व्यक्ति खपत कितनी है। अन्य देशों की खपत के आंकड़ें भी लेने होंगे। भारत में तिलहनों का उत्पादन किस राज्य में कितना होता है, यह भी मालूम कीजिए। तिलहन उत्पादन कितनी कृषि भूमि में होता है और प्रति हेक्टेयर कितना उत्पादन है। तिलहन उत्पादक किसानों की कठिनाइयों और समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए। तेल मिलों की कठिनाइयों के बारे में भी पता लगाइए। विदेशों से कितना खाद्य तेल हर साल आयात होता है और सरकार की इस संबंध में क्या नीति है।

4) i) तेल का कुल उत्पादन और कुल आवश्यकता

ii) आगामी वर्षों की जरूरत

iii) तिलहन उत्पादन की स्थिति

iv) तेल मिलों की उत्पादन क्षमता

v) खाद्य तेलों के आयात की कठिनाइयाँ

vi) सरकारी नीति की समीक्षा।

उपर्युक्त सभी पक्षों पर संबद्ध व्यक्तियों की राय शामिल करनी चाहिए। 5 एवं 6 फीचर स्वयं लिखिए एवं शीर्षक दीजिए।

इकाई 7 पर्यावरण विषय पर फीचर लेखन

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य
7.1 प्रस्तावना
7.2 पर्यावरण संबंधी फीचर लेखन से अभिप्राय
  7.2.1 पर्यावरण का अर्थ
  7.2.2 पर्यावरण की समस्या के कारण
7.3 पर्यावरण संबंधी फीचर के प्रकार
  7.3.1 प्रदूषण से संबंधित फीचर
  7.3.2 पारिस्थितिकी से संबंधित फीचर
  7.3.3 पर्यावरण संबंधी जागरुकता पर फीच
7.4 विषय का चयन
  7.4.1 रुचि एवं विशेषज्ञता
  7.4.2 विषय की प्रासंगिकता
  7.4.3 प्रकाशन की प्रकृति
7.5 सामग्री का संकलन
  7.5.1 विषय संबंधी अध्ययन
  7.5.2 तथ्यों का संकलन
  7.5.3 साक्षात्कार
  7.5.4 अन्य सामग्री
7.6 सामग्री का संयोजन और संपादन
7.7 फीचर लेखन की प्रस्तुति
  7.7.1 आरंभ
  7.7.2 मध्य
  7.7.3 अंत एवं शीर्षक
7.8 भाषा एवं शैली
7.9 सारांश
7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

फीचर लेखन से संबंधित इस इकाई में आप पर्यावरण से संबंधित लेखन का अध्ययन करेंगे। इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- पर्यावरण का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे तथा पर्यावरण की समस्या के कारण बता सकेंगे;
- पर्यावरण संबंधी फीचर के विभिन्न प्रकारों की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- पर्यावरण संबंधी फीचर लिखने के लिए उपयुक्त विषय और उससे संबंधित आवश्यक सामग्री का चयन कर सकेंगे; और
- चयनित विषय पर फीचर लिख सकेंगे और अपने लेखन का विकास कर सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन से संबंधित सृजनात्मक पाठ्यक्रम के इस दूसरे खंड की यह तीसरी इकाई है और इस पाठ्यक्रम की भी यह 7वीं इकाई है। इससे पहले की इकाई में आपने आर्थिक क्षेत्र से संबंधित फीचर लेखन के बारे में पढ़ा था। पर्यावरण का संबंध विज्ञान की तरह हमारे जीवन और जगत से है। औद्योगिक उन्नति, शहरों में बढ़ती भीड़ तथा आधुनिक परिवर्तनों ने प्रकृति पर कुछ नकारात्मक प्रभाव भी डाले हैं जिसका असर मनुष्य के स्वास्थ्य और उसके आसपास की जलवायु पर पड़ा है। पिछले कुछ वर्षों में इस संबंध में लोगों की

चिंताएं बढ़ी हैं अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों, सरकारों, स्वेच्छिक संगठनों तथा जागरूक अखबारों ने इस संबंध में लोगों को आगाह किया है और बराबर कर रहे हैं। पर्यावरण के संबंध में बढ़ती इसी चिंता का नतीजा है कि पत्र-पत्रिकाओं में अब नियमित् रूप से पर्यावरण के संबंध में फीचर लेख प्रकाशित होते हैं। सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के कारण ही पर्यावरण संबंधी फीचर का अध्ययन आवश्यक है।

इस इकाई में हमने सबसे पहले पर्यावरण शब्द पर विचार किया है। पर्यावरण का अर्थ क्या है तथा इस समस्या की उत्पत्ति के कौन-कौन से कारण हैं? पर्यावरण संबंधी फीचर के कौन-कौन से विषय हो सकते हैं तथा उक्त विषय पर लिखने के लिए फीचर लेखक में क्या योग्यता होनी चाहिए? पर्यावरण संबंधी फीचर के विभिन्न प्रकारों पर भी विचार किया गया है। फीचर के लिए क्या तैयारी करनी चाहिए और फीचर को कैसे लिखना चाहिए, इस पर भी इकाई में विस्तार से विचार किया गया है। पर्यावरण संबंधी फीचर की भाषा-शैली पर भी इकाई में बताया गया है। उम्मीद है इकाई को पढ़ने के बाद आपको इस विषय पर फीचर लिखने में सहायता मिलेगी। इकाई में हमने पर्यावरण संबंधी फीचर लेखों के उदाहरण भी दिये हैं। आप स्वयं भी पत्र-पत्रिकाओं में पर्यावरण संबंधी फीचर पढ़ें और उनकी लेखन शैली और विशेषताओं को समझने की कोशिश करें।

7.2 पर्यावरण संबंधी फीचर लेखन से अभिप्राय

पर्यावरण के संबंध में फीचर लिखने से पूर्व इस बात को अच्छी तरह समझ लेना आवश्यक है कि पर्यावरण शब्द का क्या अर्थ है तथा इसके अंतर्गत किन-किन बातों को शामिल किया जाता है। हम यहाँ सबसे पहले पर्यावरण शब्द पर विचार करेंगे।

7.2.1 पर्यावरण का अर्थ

पर्यावरण शब्द अंग्रेजी शब्द "Environment" के शब्दार्थ के रूप में प्रयुक्त होता है। हम जिस वातावरण में रहते हैं उसमें प्रकृति और मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तुओं का अस्तित्व है। पृथ्वी, जल, वायु, अन्य भौतिक तत्व तथा संपूर्ण प्राणी जगत प्रकृति के अंग हैं। मनुष्य ने इनका निर्माण नहीं किया है। स्वयं मनुष्य प्रकृति का अंग है और इस रूप में प्राकृतिक उत्पादन है। प्रकृति के अपने नियम हैं। जैसे पृथ्वी अपने अक्ष पर 24 घंटे में एक चक्कर लगाती है। पृथ्वी सूर्य का उपग्रह है और सूर्य की परिक्रमा करती है। सूर्य ज्वलनशील गैसों का वृत्त है और उससे पृथ्वी को प्रकाश और ऊर्जा प्राप्त होती है। पृथ्वी एक ठोस पिंड है जिसका तीन चौथाई भाग जल से भरा है। पृथ्वी की स्थिति और गति की विशिष्टता ने उसे एक ऐसा पर्यावरण दिया है जिसने जीवन को संभव बनाया। इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ है किसी के चारों ओर की स्थितियाँ, लोगों, वस्तुओं और घटनाओं का वह प्रभाव जो उसके जीवन पर पड़ता है। इसमें प्रकृति और मनुष्य दोनों द्वारा निर्मित स्थितियां, वस्तुएं और घटनाएं शामिल हैं। इनमें होने वाले परिवर्तन से पर्यावरण में भी फर्क आता है पर्यावरण में आने वाला फर्क दोनों तरह का हो सकता है—नकारात्मक भी और सकारात्मक भी। जिन परिवर्तनों से पर्यावरण दूषित होता है उसका कुप्रभाव प्राणी जगत पर भी पड़ता है। मनुष्य के लिए पर्यावरण को अनुकूल बनाए रखना आवश्यक है। इसके लिए पर्यावरण को दूषित होने से बचाना जरूरी है।

7.2.2 पर्यावरण की समस्या के कारण

मनुष्य ने ही प्रकृति के विकास क्रम में गुणात्मक परिवर्तन किए। मनुष्य तक का विकास प्रकृति का आंगिक विकास था। अब तक जो कुछ उत्पन्न हुआ या नष्ट हुआ वह प्रकृति के अपने नियमों के अनुसार ही हुआ। लेकिन मनुष्य ने अपनी विकसित शारीरिक और मानसिक क्षमताओं के बल पर प्रकृति का भिन्न ढंग से उपयोग करना शुरू किया। उदाहरण के लिए, आदिम अवस्था में जीने वाले मनुष्य ने जब स्वयं आग पैदा करने की क्षमता प्राप्त की तो उसने मांस को भूनकर खाना शुरू किया। यह भूना हुआ मांस प्राकृतिक वस्तु का कृत्रिम रूपांतरण था। इसी तरह उसने जंगलों को साफ करके खेती करना आरंभ किया और उगने और फलने की प्राकृतिक क्रिया को नियंत्रित कर अपने हित में इस्तेमाल किया। इस प्रकार मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का अपने लिए इस्तेमाल करने लगा। इस

उपयोग में वह प्रकृति का कृत्रिम रूपांतरण भी कर रहा था और नये पदार्थों का सृजन भी कर रहा था।

मनुष्य द्वारा प्रकृति के रूपांतरण की प्रक्रिया में गुणात्मक परिवर्तन आधुनिक यु ा में आया। इस युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने अभूतपूर्व प्रगति की। मनुष्य ने प्रकृति से प्राप्त संसाधनों का सिर्फ उपयोग ही नहीं किया वरन् उसका परिष्कार भी किया। उसने प्रकृति के गुणों का विस्तार किया। इस प्रक्रिया में मनुष्य प्रकृति पर प्रभुत्व जमाने और संसाधनों का व्यापक रूप से दोहन करने की ओर अग्रसर हुआ। उसने एक नयी स्थिति को जन्म दिया। आधुनिक युग में, औद्योगिक विकास ने प्राकृतिक संसाधनों की जरूरत को बढ़ा दिया था। परिणामतः पृथ्वी के अंदर से खनिज और पेट्रोलियम पदार्थों को भारी मात्रा में निकाला जाने लगा। प्राकृतिक संसाधनों की खोज में नये-नये क्षेत्रों को ढूँढा गया। जो क्षेत्र अब तक मानव-सभ्यता के स्पर्श से बचे हुए थे, वहाँ भी मनुष्य पहुंच गया। औद्योगिक विकास ने नगरीकरण की प्रक्रिया शुरू की, जिसने नयी जरूरतों को पैदा किया। इन जरूरतों को पूरा करने के लिए वनों, जलाशयों और कृषि योग्य भूमि को रिहायशी और औद्योगिक कार्यों के लिए उपयोग में कई गुना बढ़ोतरी हुई। उद्योगों के अधिकाधिक विस्तार ने तथा नगरीय जीवन की बढ़ती जरूरतों ने पर्यावरण पर भी असर डाला।

उद्योगों द्वारा छोड़े गये धुएँ, रासायनिकों के इस्तेमाल तथा गाड़ियों से निकलने वाले धुएँ ने वायुमंडल को प्रदूषित किया है। शहर के शोर शराबे ने ध्वनि प्रदूषण बढ़ाया है। औद्योगिक और घरेलू अवशिष्टों (कचरा) ने मिट्टी, जल और वायु को प्रदूषित किया। अब परमाणु ऊर्जा भी एक बहुत बड़ा खतरा बन गया है औद्योगिकरण की अनियंत्रित प्रवृत्ति ने प्राकृतिक संसाधनों की कमी का खतरा उत्पन्न कर दिया है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई ने पहाड़ी क्षेत्रों की जलवायु को गंभीर खतरा पहुँचाया है। प्रकृति के साथ इसी खिलवाड़ ने पर्यावरण की समस्या उत्पन्न की है यहाँ तक कि पारिस्थितिकी संबंधी जटिल समस्याएं भी उत्पन्न हो रही हैं। पर्यावरण के क्षेत्र में इन्हीं सब समस्याओं से परिचित कराते हुए लोगों को उनके प्रति जागरूक बनाना फीचर लेखन का उद्देश्य होना चाहिए।

7.3 पर्यावरण संबंधी फीचर के प्रकार

पर्यावरण की समस्याओं को मुख्य रूप से दो भागों में बाँट सकते हैं। एक तो प्रदूषण संबंधी समस्या यानी जल, वायु और मिट्टी का प्रदूषण। दूसरा पारिस्थितिकी संबंधी समस्या। इनके अतिरिक्त उक्त दोनों समस्याओं या सामान्य रूप से पर्यावरण के संबंध में लोगों को जागरूक बनाने वाले विषय लिये जा सकते हैं। इस प्रकार पर्यावरण संबंधी फ़ीचर को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

i) प्रदूषण से संबंधित फीचर

ii) पारिस्थितिकी से संबंधित फीचर

iii) पर्यावरण संबंधी जागरुकता पर फीचर

आइए, हम इनका परिचय प्राप्त करें।

7.3.1 प्रदूषण से संबंधित फीचर

वायु, जल और मिट्टी में ऐसे द्रव्यों का अधिक मात्रा में मिलना प्रदूषण कहलाता है जिससे प्राणी जगत का स्वास्थ्य और जीवन पर प्रतिकूल असर पड़े या उनका सही उपयोग करना संभव न रहे।

उद्योगों द्वारा छोड़े गये धुएँ ने वायु में कार्बन डाईआक्साइड, कार्बन मोनोआक्साइड, सल्फर डाइआक्साइड, नाइट्रोजन डाइआक्साइड जैसी दूषित गैसों की मात्रा बढ़ा दी। कई उद्योगों में ऐसे ऊर्जा स्रोतों एवं रासायनिकों का इस्तेमाल किया जाता है जिनसे भारी मात्रा में दूषित गैसें वायुमंडल में मिल जाती है। शहरों में बढ़ती गाड़ियों की संख्या भी वायु प्रदूषण को बढ़ाने में मदद करती है। वायु प्रदूषण से वायु में आवश्यक आक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है। इससे हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। यहाँ तक कि पेड़ पौधों का जीवन भी खतरे में पड़ जाता है।

पर्यावरण में औद्योगिक और घरेलू अपशिष्टों की भारी मात्रा का विसर्जन होने से मिट्टी, जल और वायु तीनों तरह का प्रदूषण बढ़ रहा है। उद्योगों से भारी मात्रा में निकलने वाला अपशिष्ट जलाशयों को दूषित कर रहा है। ये अपशिष्ट प्रायः नदिगों में मिलाये जाते हैं जिससे पीने का पानी ही दूषित नहीं होता बल्कि नदियों में रहने वाली मछलियां भी बड़ी तादाद में मर जाती हैं। दूषित जल का उपयोग करने से तरह-तरह की बीमारियां फैल जाती हैं। उद्योगों द्वारा विसर्जित अपशिष्टों ने मिट्टी की उर्वरा शक्ति पर भी असर डाला है। कई पेड़ पौधों में नये तरह के रोग हो जाते हैं।

इधर के वर्षों में परमाणु ऊर्जा के अत्यधिक उपयोग तथा नाभिकीय हथियारों के बढ़ते उत्पादन ने प्रदूषण के एक नये खतरे को उत्पन्न किया है। रेडियो सक्रियता की बहुत थोड़ी सी मात्रा का रिसाव भी मिट्टी, जल और वायु तीनों को दूषित कर देता है। यह प्रदूषण केवल तात्कालिक असर डालकर ही समाप्त नहीं हो जाता वरन् कई पीढ़ियों तक इसका प्रभाव बना रहता है।

हिरोशिमा, नागाशाकी पर परमाणु बम के हमले से न केवल हजारों-हजार लोग मारे गये बल्कि हजारों लोग अपाहिज हो गये यहाँ तक कि उनके बच्चे भी। सोवियत संघ के चिर्नोबिल में भी परमाणु संयत्र से रेडियो सक्रियता के रिसाव ने भयंकर तबाही मचाई। 1984 में भारत में भोपाल में यूनियन कार्बाइड के कारखाने से निकली विषैली गैस ने दो हजार लोगों को हमेशा के लिए मौत की नींद सुला दिया। इन कुछ बड़ी दुर्घटनाओं के अलावा रोजाना लाखों लोग प्रदूषण के शिकार होकर बेमौत मारे जा रहे हैं। इनमें से किसी भी पक्ष को फीचर लेखन का विषय बनाया जा सकता है। ऐसे ही एक फीचर लेख का अंश यहाँ उद्धृत है :

> *बनारस से उत्तर की ओर गई गंगा की धारा (उत्तर वाहिनी) घोड़े की नाल के रूप में मुड़ जाती है। यहाँ लोग अपने मरे हुए पशुओं की लाशें ऐसे ही फेंक जाते हैं। कभी-कभी मानव-शव भी दिखाई देते हैं। इन पर चील, कौए और गिद्ध मंडराते रहते हैं। यहाँ की बदबू नहाने वाले घाटों तक पहुँचती है। इस तरह पूरा गंगा घाट प्रदूषित हो जाता है। इन सब वजहों से बनारस में गंगा का पानी पीने लायक नहीं रह गया है।*
>
> (**सिसकती हुई बहती है गंगा**–डॉ. जगदीप सक्सेना, **जनसत्ता**, 24 जून 1990)

7.3.2 पारिस्थितिकी से संबंधित फीचर

पर्यावरण के संदर्भ में पारिस्थितिकी (Ecology) की अवधारणा को समझने के लिए पहले इस शब्द का अर्थ समझना आवश्यक है। पारिस्थितिकी का शाब्दिक अर्थ है परिस्थिति का अध्ययन अर्थात् जीवित तत्वों के प्राकृतिक निवास का अध्ययन। यह जैविकीय परिभाषा है। पारिस्थितिकी का विषय काफी विस्तृत है और इसकी कई शाखाएँ हैं। पारिस्थितिकी विज्ञान की एक ऐसी शाखा है जिसमें जीवन और पर्यावरण को प्रभावित करने वाली हर चीज का; जिनमें मानव-समाज तथा उसके कार्यों के लिए आवश्यक चीजों का भी अध्ययन किया जाता है। मनुष्य द्वारा प्रकृति में किया गया हस्तक्षेप पारिस्थितिक असंतुलन को उत्पन्न करता है। कई बार एक क्षेत्र की रक्षा के लिए किया गया प्रयत्न नये तरह के असंतुलन को उत्पन्न कर देता है। रासायनिक पदार्थों की सहायता से एक बड़े क्षेत्र में कृषि के लिए हानिकारक कीट पतंगों को नष्ट करने की प्रक्रिया में नये तरह का पारिस्थितिकी असंतुलन पैदा हो सकता है जो कृषि को अधिक नुकसान पहुँचा सकता है। कई बार प्रदूषण भी प्राणियों या पौधों की सारी जाति में बीमारी उत्पन्न कर देता है, उनकी संख्या घटा देता है अथवा नाश कर देता है। इसका परिणाम किसी अन्य जाति के तेजी से प्रजनन में भी निकल सकता है और ह्रास में भी।

औद्योगिक विकास की जरूरतों और नगरीकरण की प्रवृत्ति ने वन संपदा को काफी नुकसान पहुँचाया है। पेड़-पौधे न केवल वायु में आवश्यक आक्सीजन की मात्रा को सुरक्षित रखते हैं बल्कि उनके कारण भू-स्खलन, जमीन का कटाव, नदियों में मिट्टी का बहना आदि भी नियंत्रित रहते हैं। वन संपदा वायु में आवश्यक आर्द्रता की मात्रा को बनाये रखती है जो वर्षा आदि के लिए आवश्यक है किंतु लगातार पेड़ों के काटे जाने से मौसम पर बुरा असर पड़ा है। भू-स्खलन व बाढ़ों के साथ-साथ वर्षा के औसत में लगातार गिरावट आई है। उद्योगों से निकलने वाली गैसों, परमाणु ऊर्जा तथा नाभिकीय हथियारों के कारण वायुमंडल में बढ़ती रेडियो सक्रियता तथा जहरीले अवशिष्टों ने पेड़ पौधों के जीवन को दूभर बनाया

है। वैज्ञानिकों ने इस खतरे की ओर बार-बार ध्यान दिलाया है। अगर प्रदूषण की यही प्रवृत्ति बनी रही तो पेड़-पौधों का जीवन खतरे में पड़ जाएगा। वैसे भी ईंधन यूरोप में जहाँ नाभिकीय हथियारों के भंडार तथा परमाणु ऊर्जा के विशाल केंद्र मौजूद हैं, वनों के मरने की प्रवृत्ति एक नये तरह के पारिस्थितिक संतुलन की ओर हमें धकेल रही है।

पहले के बीरान क्षेत्रों में मनुष्य की बस्तियाँ बस जाने, जहरीले पदार्थों के व्यापक उपयोग तथा प्रकृति के निर्मम शोषण की वजह से जातियों के विलोप की दर में तेजी से बढ़ोतरी हुई है एक अनुमान के अनुसार हर वर्ष एक जाति या उपजाति विलुप्त हो जाती है। इस समय पक्षियों और जानवरों की एक हजार जातियों के लुप्त होने का खतरा है। कुछ वैज्ञानिकों का विचार है कि पौधे की किसी एक जाति के लुप्त होने से कीड़ों, जानवरों या अन्य पौधों की 10 से 30 तक जातियाँ विलुप्त हो सकती हैं। यह प्रवृत्ति जारी रही तो पूरा जैव मंडल विरूपित हो सकता है।

पारिस्थितिक असंतुलन का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण है जीन इंजीनियरी का विकास। दो प्रजातियों के योग द्वारा एक नयी प्रजाति के कृत्रिम विकास की प्रवृत्ति के भी घातक परिणाम अब सामने आने लगे हैं। जीव-जंतु और पेड़ पौधे दोनों में ही इस तरह के अनियंत्रित प्रयोग पारिस्थितिक संतुलन पर बुरा असर डाल रहे हैं।

पारिस्थितिकी के उपर्युक्त सभी पक्षों को फीचर लेखन का विषय बनाया जा सकता है। इनमें से बहुत से पहलू तो ऐसे हैं जिनके बारे में आम पाठक कुछ नहीं जानते। अगर उन्हें मनुष्य जाति के सामने उपस्थित खतरे से परिचित कराया जाए तो वे इस समस्या से निपटने में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं। पारिस्थितिकी से संबंधित एक फीचर लेख का अंश यहाँ उद्धृत है:

> *इस तरह कृषि के अंतर्गत लगातार बढ़ती भूमि जंगलों को सफाचट करती जाती है। जंगल विहीन भूमि जहाँ इस प्रदेश की मनोरम छटा को चौपट कर देती है, वहीं पारिस्थितिकी असंतुलन को भी बढ़ावा देती है। वन न रहेंगे तो न तो वन्य जंतु होंगे और न पखेरू। सूखा और बाढ़ की चक्की में धरती पिसती रहेगी। इसके फलस्वरूप धरती का तापमान जो नित्य प्रति बढ़ता जा रहा है, उसकी वजह से इस हिम मंडित क्षेत्र में जो लगभग 1200 गलेश्वर हैं, उनका आकार भी छोटा पड़ता जा रहा है। यह एक भयावह पारिस्थितिकी की ओर इशारा करता है। ये गलेश्वर हमारी जीवन-दायिनी नदियों के उद्गम हैं। जब गलेश्वर ही न रहेंगे तो नदियों में जल आएगा कहाँ से?*
>
> (**हिमालय का मैला होता आंचल**--राजेंद्र सिंह भंडारी, **जनसत्ता**, 22 अप्रैल, 1990)

7.3.3 पर्यावरण संबंधी जागरूकता पर फीचर

पर्यावरण संबंधी उपर्युक्त समस्याएँ यद्यपि आधुनिक औद्योगिक विकास का परिणाम नजर आती हैं तथापि इन्हें इसका अंतर्भूत कारण नहीं माना जा सकता। पारिस्थितिक संकट का खतरा इस कारण से वास्तविक नहीं हुआ है कि मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया है। न ही इसलिए कि उसने प्रकृति की अंतर्क्रिया में दखल दिया है। इसका कारण तो दोहन और अंतर्क्रिया के तरीकों में निहित है। एक ऐसे समाज में जहाँ प्रकृति के साथ दोहन तथा अंतर्क्रिया पर किसी तरह का नियंत्रण न हो वहाँ प्राकृतिक शक्तियों और साधनों के संतुलन को नष्ट करने की क्षमता अपने आप पैदा हो जाती है। जब भौतिक उत्पादन आर्थिक लाभ के क्षुद्र उद्देश्य से प्रेरित होते हैं तो उत्पादक पर्यावरण के पक्षों की प्रायः उपेक्षा कर देता है। आज पर्यावरण और पारिस्थितिक संकट किसी एक देश तक सीमित समस्या नहीं रहे हैं। एक देश में घटी दुर्घटना कई अन्य देशों को भी अपनी चपेट में ले सकती है। जैसे नदियों और समुद्रों में मिलाया जाने वाला अपशिष्ट लंबे क्षेत्र में प्रदूषण फैलाता है। इसी तरह गैसों के रिसाव, रेडियो सक्रियता आदि का प्रभाव सैंकड़ों मील तक फैल जाता है। अभी हाल ही में खाड़ी युद्ध के दौरान हुई बमबारी, तेल का भारी रिसाव और तेल कुओं में लगी आग ने बहुत बड़े क्षेत्र के पर्यावरण के लिए खतरा पैदा कर दिया है।

पर्यावरण का प्रश्न मानव जाति के सामने गंभीर चुनौती बन कर खड़ा है। इसके लिए जरूरी है कि मनुष्य **प्रकृति से अपने** रिश्ते को ठीक से समझे। यह संभव नहीं है कि प्रगति की अपनी इन **अवस्थाओं को छोड़कर** मनुष्य ऐसे जीवन को अपना ले जहाँ वह पूर्णतः

प्राकृतिक नियमों के वशीभूत हो। मनुष्य ने अब तक जो भी विकास किया है उस विकास को आगे बढ़ाते हुए ही पर्यावरण के संकट का निराकरण करना होगा। स्वस्थ पर्यावरण के लिए यह जरूरी है कि योजनाओं और विकास कार्यक्रमों के प्रत्येक पक्ष के साथ पर्यावरणीय पहलुओं का ध्यान रखा जाए। पर्यावरण के संकट को समाप्त करने का कोई भी प्रयास तभी सार्थक हो सकता है जबकि इसे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से उसी स्तर पर क्रियान्वित किया जाए। इसके लिए यह भी जरूरी है कि लोग पर्यावरण को लेकर अधिकाधिक जागरूक हों और पर्यावरण की रक्षा को जन आंदोलन का रूप दिया जाए। इन कार्यों में पत्र-पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। फीचर लेखों द्वारा यह काम किया जा सकता है। पर्यावरण संबंधी अंतर्राष्ट्रीय जागरुकता पर लिखे फीचर का अंश यहाँ प्रस्तुत है:

पर्यावरण की गिरावट की बात कर उसके संरक्षण की जिम्मेदारी से बचना अभी तक बेशक आसान रहा हो, किन्तु अब वैसा नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अब उंगली उठाकर पर्यावरण प्रदूषण के लिए दोषी लोगों को इंगित किया जा रहा है। पिछड़े व कम विकसित देश, विकसित औद्योगिक देशों को कह रहे हैं कि पर्यावरण प्रदूषण के लिए वह जिम्मेदार हैं, अतः ठीक करने का आर्थिक भार भी उन्हें उठाना चाहिए। अक्टूबर, 89 के राष्ट्रमंडल देशों के "पृथ्वी संरक्षण कोष" के मूल में यह विचार भी है। परंतु ऐसी माँगों व आरोपों पर धनी और विकसित देशों का क्या रवैया होगा यह कोष बनाने के मामले में ब्रिटेन द्वारा अपनाए गए रुख से ही पता चल जाता है।

(पर्यावरण की अंतर्राष्ट्रीय चिंताएं–बीरेंद्र पेन्यूली, **नवभारत टाइम्स,** 7 मार्च, 1990)

बोध प्रश्न

1) पर्यावरण का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

2) पारिस्थितिकी का पर्यावरण में क्या महत्व है? बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) पर्यावरण संबंधी लेखों के प्रमुख प्रकार बताइए।

.....

.....

.....

अभ्यास

1) अपने आसपास के पर्यावरण पर दस पंक्तियों में एक टिप्पणी लिखिए। उत्तर में पर्यावरण के दूषित होने के कारणों पर भी विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7.4 विषय का चयन

पर्यावरण एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें लेखन के लिए लेखक में खास विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। पर्यावरण का क्षेत्र विज्ञान से संबंधित भी है इसलिए लेखक में विज्ञान की जानकारी भी आवश्यक है। वह पर्यावरण के महत्व से भी भलीभांति परिचित हो। उसे किस तरह की पत्र-पत्रिका के लिए लिखना है इस बात को ध्यान में रखना चाहिए तथा विषय की प्रासंगिकता पर भी विचार करना चाहिए। आइए, इन बातों पर किंचित विस्तार से विचार करें।

7.4.1 रुचि एवं विशेषज्ञता

पर्यावरण संबंधी समस्याओं के प्रति रुचि रखने वाले लेखकों-पत्रकारों को ही इस ओर अग्रसर होना चाहिए क्योंकि पर्यावरण का विषय जितना सामाजिक महत्व का है उतना ही उसके लिए विषय संबंधी सही वैज्ञानिक जानकारी का होना भी आवश्यक है। उदाहरण के लिए किसी क्षेत्र विशेष में स्थापित रासायनिक उत्पादों का कारखाना किस तरह से उस क्षेत्र के पर्यावरण को प्रभावित करेगा, उसके बारे में सही वैज्ञानिक समझ की आवश्यकता है, नहीं तो आप यह स्पष्ट नहीं कर पायेंगे कि कारखाने से निकलने वाली जहरीली गैसें और अन्य हानिकारक अपशिष्ट कैसे पर्यावरण को नुकसान पहुँचाएंगे और ये जहरीली गैसें क्यों जहरीली हैं या हानिकारक अपशिष्ट क्यों हानिकारक हैं। निम्नलिखित फीचर के अंश से आप स्वयं समझ सकते हैं:

> *इनमें ''नर्व गैस'' सबसे खतरनाक है। यह मांस और चमड़ी के जरिए शरीर में प्रवेश करती है और दिमाग समेत पूरे तंत्रिका तंत्र को चपेट में ले लेती है। ये तंत्रिका तंत्र के महत्वपूर्ण एंजाइम ''एसीटिककोलिनइस्टरेस'' को निष्क्रिय कर देती हैं। इससे मांसपेशियों पर दिमाग का नियंत्रण खत्म हो जाता है। ढेर सारा पसीना आता है और उल्टी होना शुरू हो जाती है। बाद में छाती में जकड़न होती है। फेफड़े काम करना बंद कर देते हैं और आदमी मर जाता है। इसमें चंद मिनट लगते हैं। एक रूसी विशेषज्ञ के अनुसार 15 टन ''नर्व गैस'' 60 किलोमीटर क्षेत्र में फैलकर चंद मिनटों में उस क्षेत्र में मौजूद आधे व्यक्तियों की जान ले सकती है। इसका जहरीला असर लंबे समय तक बना रहता है।*
>
> (**कैसे-कैसे रासायनिक हथियार हैं जंगखोरों के पास**—डॉ. जगदीप सक्सेना, **जनसत्ता,** 3 फरवरी 1991)

उपर्युक्त अंश से आप स्वयं अंदाज लगा सकते हैं कि पर्यावरण के संबंध में फीचर के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक जानकारी क्यों आवश्यक है। पर्यावरण विषय पर लिखने वालों का दृष्टिकोण बहुत साफ होना चाहिए। सामाजिक और मानवीय हितों को सर्वोपरि मानने वाला व्यक्ति ही पर्यावरण विषय पर उपयोगी फीचर लिख सकता है। वैज्ञानिक उन्नति का अंध भक्त या लहर नये विकास का अंध विरोधी पर्यावरण पर संतुलित ढंग का फीचर नहीं लिख सकता।

7.4.2 विषय की प्रासंगिकता

पर्यावरण स्वयं में अत्यंत प्रासंगिक विषय है, फिर भी पर्यावरण से संबंधित जो भी विषय आप उठायें उसकी प्रासंगिकता और महत्व के बारे में अवश्य विचार कर लें। उदाहरण के लिए खाड़ी युद्ध के समय युद्ध के कारण होने वाले पर्यावरणीय नुक्सानों के बारे में समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में लगातार लेख आदि प्रकाशित होते रहे। भोपाल गैस कांड या चेर्नोबिल की घटना के समय भी पर्यावरण संबंधी लेख प्रकाशित हुए। लेकिन पर्यावरण के संबंध में कुछ सामान्य महत्व के फीचर लेख तो बराबर प्रकाशित होते रह सकते हैं।

जैसे शहरों में धुएँ के कारण होने वाला प्रदूषण, पानी की स्वच्छता का महत्व, कल-कारखानों में पर्यावरण संबंधी व्यवस्था करना, पहाड़ों पर पेड़ों की कटाई परमाणु व रासायनिक हथियारों से होने वाले विनाश आदि ऐसे विषय है जिन पर बराबर लिखा जाना चाहिए।

7.4.3 प्रकाशन की प्रकृति

पर्यावरण पर फीचर लिखने से पूर्व यह विचार कर लीजिए कि आप किसके लिए लिख रहे हैं अर्थात् दैनिक समाचारपत्र, साप्ताहिक, पाक्षिक आदि या किसी पर्यावरण संबंधी पत्रिका के लिए। समाचारपत्रों में पर्यावरण पर फीचर आमतौर पर ऐसे प्रकाशित होते हैं जिनमें सामान्य पाठक भी दिलचस्पी ले सके। ऊपर हमने जो विषय गिनाये हैं उनमें आम पाठक की भी दिलचस्पी हो सकती है लेकिन पर्यावरण संबंधी पत्रिका के लिए फीचर का विषय जो भी चुनें उसकी प्रस्तुति अधिक तकनीकी और गंभीर हो जाएगी। पर्यावरण संबंधी विषय जिस किसी भी पत्र-पत्रिका के लिए लिखें यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि लोग पर्यावरण के तकनीकी और वैज्ञानिक पक्ष को नहीं जानना चाहते, मुख्य ध्येय तो उसके मानवीय पहलू की ओर होता है। इसलिए लिखते हुए इस बात को केंद्र में रखना चाहिए।

7.5 सामग्री का संकलन

पर्यावाण विषय पर फीचर लिखने के लिए क्या करना चाहिए, आइए इस पर विचार करें। जब आप यह तय कर लें कि आपको किस विषय पर फीचर लिखना है तो आपको उससे संबंधित सामग्री एकत्र करनी चाहिए। संबंधित पुस्तकों, लेखों का अध्ययन, उनसे संबद्ध तथ्य और आंकड़े एकत्र करना प्रदूषण से प्रभावित स्थलों की यात्रा, प्रभावित लोगों एवं विशेषज्ञों से बातचीत, विषय से संबद्ध स्थलों का फोटो या प्रभावित लोगों के फोटो आदि एकत्र करने होंगे। इन सभी पक्षों पर आगे हम विस्तार से चर्चा करेंगे।

7.5.1 विषय संबंधी अध्ययन

पर्यावरण के जिस विषय पर आप फीचर लिखने जा रहे हैं उससे संबंधित साहित्य का अध्ययन कीजिए ताकि आपको समस्या को समझने में मदद मिले। उदाहरण के लिए आपको पहाड़ों पर पेड़ों की कटाई और उसके कुप्रभाव पर फीचर लेख तैयार करना है तो यह बहुत जरूरी है कि आप यह जानें कि पेड़ों का क्या महत्व है, वे पहाड़ों की जलवायु को कैसे प्रभावित करते हैं। पेड़ों के अंधाधुंध काटे जाने से क्या भू-स्खलन वर्षा की मात्रा, जलवायु आदि पर भी असर पड़ता है। इसके वैज्ञानिक कारण क्या हैं तथा इन कुप्रभावों से कैसे बचा जा सकता है। ये सभी बातें आपको उन पुस्तकों और लेखों से प्राप्त होंगी जिनमें पहाड़ों की भौगोलिक संरचना, जलवायु तथा प्रकृति और लेखों से प्राप्त होंगी जिनमें पहाड़ों की भौगोलिक संरचना, जलवायु तथा प्रकृति पर वैज्ञानिक तरीके से विचार किया गया हो। बिना इस तरह की जानकारी के आप तथ्यपरक एवं उपयोगी फीचर नहीं लिख पाएंगे।

7.5.2 तथ्यों का संकलन

अपने विषय से संबंधित आपको सभी तथ्य एकत्र कर लेने चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि आप विषय पर गंभीरता से विचार करें और इसकी सूची तैयार करने में विषय से संबंधित अध्ययन आपकी सहायता करेगा। उदाहरण के लिए उपर्युक्त विषय को ही ले। पहाड़ों पर पेड़ों की कटाई पर लिखे जाने वाले फीचर से संबंधित निम्नलिखित आपको जानने जरूरी होंगे।

1) उस स्थल की भौगोलिक स्थिति
2) जलवायु (पहले और वर्तमान में)
3) प्रकृति का स्वरूप (पहले और वर्तमान में)
4) क्षेत्र की आर्थिक स्थिति (तुलनात्मक रूप में)
5) स्थानीय लोगों की प्रतिक्रियाएँ
6) खतरे (वर्तमान और संभावित)

7) दोषी कौन?

8) विनाश को रोकने के उपाय

उपर्युक्त सभी पक्षों पर तथ्य एकत्र करने होंगे। इसके लिए आपको उस क्षेत्र की यात्रा करनी होगी। इस बदलाव को स्वयं अपनी आँखों से देखना होगा जो पेड़ों की कटाई के कारण उस क्षेत्र में आ रहा है। लोगों की प्रतिक्रियाएँ जानने के लिए उनसे बातचीत भी करनी होगी। आवश्यक हो तो वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों तथा संबंधित अधिकारियों से भी बातचीत करनी चाहिए।

7.5.3 साक्षात्कार

पर्यावरण पर फीचर को प्रामाणिक और तथ्यपरक बनाने के लिए यह जरूरी है कि आप विभिन्न लोगों से मिलें, बातचीत करें। अगर पर्यावरण की किसी सामान्य समस्या पर लिख रहे हैं तब भी आप उस विषय से संबद्ध विशेषज्ञों, अधिकारियों आदि से बातचित करें, उनका दृष्टिकोण लें और यथा आवश्यक फीचर में उनका इस्तेमाल करें। अगर किसी क्षेत्र विशेष से संबद्ध पर्यावरण की समस्या को आप उठा रहे हैं तो आप प्रभावित लोगों से भी मिलें, बातचीत करें। खाड़ी युद्ध के दौरान भारत के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव पर लिखे गये एक फीचर में कुछ वैज्ञानिकों का मत भी उद्धृत किया गया, जिससे लेखक उस विषय पर अधिक प्रामाणिक बात कह सका।

> *डा. वसंत गोवरीकर विज्ञान और टेक्नोलॉजी विभाग के सचिव तो हैं ही, उन्हें मौसम विज्ञानी भी माना जाता है। गोवरीकर का मत है कि खाड़ी क्षेत्र के तेल के कुओं में आग लगने से उत्पन्न धुएँ के बादलों से देश के मानसून पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। रक्षा अनुसंधान विकास संगठन के महानिदेशक डा. अरूणाचलम ने एक रिपोर्ट की भूमिका में मानसून से प्रभावित होने को बेबुनियाद बताकर केवल इतना ही स्वीकार किया है कि धुएँ के बादल पश्चिमी भारत के ऊपर करीब तीन सप्ताह तक टिके रह सकते हैं। वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के महानिदेशक डा. ए.पी. मिश्र ने कहा है कि धुएँ के बादलों का मानसून पर कोई प्रतिकूल असर नहीं होगा और पर्यावरण को थोड़ी बहुत ही अस्थाई क्षति पहुँच सकती है।*
>
> (**खाड़ी के धुएँ में हमारा मौसम**—गुणाकर मुले, **जनसत्ता**, 3 फरवरी 1991)

7.5.4 अन्य सामग्री

अन्य सामग्री के अंतर्गत फोटो, दस्तावेज की प्रतिलिपि, आंकड़े आदि का प्रयोग आप कर सकते हैं। फोटों विषय से संबद्ध हो। उदाहरण के लिए किसी नदी के प्रदूषण को विषय बनाया है तो आप उस नदी का चित्र साथ में दे सकते हैं। अगर नदी में गिरते गंदे नाले या सड़ती तैरती लाशों आदि का चित्र दे सकें तो फीचर का महत्व बढ़ जाएगा। इसी प्रकार गैस रिसाव या अन्य कारणों से हुई पर्यावरणीय दुर्घटना से संबद्ध फीचर के साथ कारखाने का चित्र, प्रभावित लोगों के चित्र अवश्य देने चाहिए। यह अवश्य ध्यान रखिए कि चित्रों की संख्या दो या तीन हो। इससे अधिक चित्र से फीचर में आलेख के लिए पर्याप्त जगह नहीं रहेगी।

फीचर लेख के साथ दस्तावेज या आंकड़े भी दिये जा सकते हैं। जैसे पर्यायवरण के संबंध में किसी अंतर्राष्ट्रीय संगठन का घोषणापत्र, किसी जाँच समिति की रिपोर्ट के अंश, किसी वैज्ञानिक का मत, और कुछ महत्वपूर्ण आंकड़ें, तालिकाएँ जिससे फीचर का महत्व बढ़े लेकिन ऐसी चीजें फीचर के विषय से पूरी तरह संबद्ध होनी चाहिए और उसमें दिये गये तथ्य प्रामाणिक होने चाहिए।

7.6 सामग्री का संयोजन और संपादन

पर्यावरण पर फीचर के लिए जो सामग्री आपने संकलित की है उसका ध्यान से अध्ययन कीजिए। पर्यावरण से संबंधित जिस विषय को भी आपने चुना है उसका दो दृष्टियों से निरीक्षण कीजिए। एक तो यह कि इस विषय के वैज्ञानिक और तकनीकी पक्ष क्या हैं? कभी-कभी इन पक्षों के बारे में सही जानकारी न होने से गलत निर्णयों पर पहुँचने का खतरा रहता है। कभी-कभी वैज्ञानिकों और तकनीकी विशेषज्ञों का भी मसले पर मतैक्य

नहीं होता। उदाहरण के लिए टेहरी और नर्मदा परियोजनाओं पर न केवल राजनीतिज्ञों और सामाजिक कार्यकर्ताओं वरन् वैज्ञानिकों में भी मतभेद दिखाई पड़ा। ऐसी स्थिति में फीचर लेखक का काम मुश्किल हो जाता है। फीचर लेखक को चाहिए कि वह सारे मसले पर गंभीरता से विचार करे, तथ्यों का निष्पक्षता से अध्ययन करे तथा पूरी सामग्री के आधार पर रूपरेखा बनाए। फीचर लेख कितना बड़ा लिखना है तथा उसका उद्देश्य क्या है, इसी के आधार पर फीचर की रूपरेखा तय कीजिए।

सामग्री का संयोजन करते समय गैर जरूरी सामग्री अलग कर लीजिए। यह ध्यान रखिए कि सिर्फ उतनी ही बातें लिखें जो फीचर के लिए जरूरी हैं। अनावश्यक विस्तार से फीचर का प्रभाव कम हो जाता है।

---

4) पर्यावरण विषय पर लिखते समय किन पक्षों पर विशेष ध्यान देना चाहिए?

.....

.....

.....

5) पर्यावरण पर लिखने से पूर्व विषय का अध्ययन क्यों आवश्यक है? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए

.....

.....

.....

6) पर्यावरण पर फीचर के लिए किस तरह के तथ्य एकत्र करने चाहिए?

.....

.....

.....

अभ्यास

2) कल-कारखानों के कारण होने वाले वायुमंडलीय प्रदूषण के लिए आप किस तरह के तथ्य एकत्र करेंगे? उत्तर पाँच पंक्तियों में लिखिए

.....

.....

.....

.....

.....

3) इस संबंध में आप किस-किस से बातचीत करना चाहेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

4) उक्त बातचीत के लिए कुछ प्रश्न तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

7.7 फीचर लेखन की प्रस्तुति

पर्यावरण पर फीचर लेखन का आरंभ करने से पहले कुछ बातों का ध्यान रखिए। सबसे पहले यह विचार कीजिए कि आपने यह विषय किस उद्देश्य से चुना? क्या आपने जो सामग्री एकत्र की है तथा जो रूपरेखा बनाई है वह इस उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होगी। क्या आपका विषय सामान्य पाठक के लिए भी रोचक होगा? क्या आपका विषय बहुत अधिक तकनीकी तो नहीं है? अगर है तो उसे सामान्य पाठक के अनुरूप प्रस्तुत करने के लिए आप क्या परिवर्तन करना चाहते हैं? ये कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं जिन पर सोच-विचार कर ही आगे बढ़िए।

पर्यावरण पर फीचर का आरंभ, मध्य और अंत के हिस्सों पर बातचीत करने से पहले यह भी हम पुनः याद दिलाना चाहते हैं कि आप फीचर का आकार भी तय कर लीजिए ताकि आप उक्त तीनों भागों को उसी अनुपात में प्रस्तुत कर सकें।

7.7.1 आरंभ

पर्यावरण पर फीचर आरंभ करने के मुख्य रूप से दो तरीके हैं। एक तो आप समस्या का परिचय दें। दूसरा, आप संबद्ध विषय, क्षेत्र या वस्तु के बारे में बताएँ जिसके पर्यावरण पर आप आगे विचार करने जा रहे हैं। समस्या की प्रस्तुति का भी कोई एक ढंग नहीं है। समस्या की प्रस्तुति के कुछ उदाहरण लें। कुछ जानवरों की नस्लों के धीरे-धीरे लुप्त हो जाने के विषय पर लिखे एक फीचर का आरंभ समस्या के परिचय से हुआ है, परंतु अत्यंत रोचक ढंग से–

> *कोई ऐसे विलुप्त हो जाए जैसे गधे के सिर से सींग तो अंग्रेजी में उसके लिए मुहावरा है, "डेड ऐज़ डोडो"। भारतीय उप महाद्वीप में अंग्रेजों के आने से पहले, डोडो नाम की बड़ी और बेहतरीन चिड़िया मारीशस में बहुतायत में रहती थीं। खनिज और कच्चे माल के अलावा अंग्रेजों की निगाह खुराक के लिये नये शिकार पर लगी रहती। इस लिहाज से डोडो बेहद आदर्श पक्षी साबित हुए। शुतुरमुर्ग की तरह स्थलचारी ये जीव, गोरों के हाथ में तनी बंदूकों के सामने ऐसे खेड़े हो जाते, जैसे जिंदगी उनके लिए निस्सार हो। इसका कारण जो भी रहा, नतीजा यह निकला कि डोडो की सारी नस्ल, भोजन की मेज पर सज गई। धरती से इनका नामोनिशान ऐसे मिट गया जैसे–वे कभी यहाँ रहे ही न हो। डोडो की जान की कीमत पर अंग्रेजी भाषा का मुहावरा मिला "डेड एज़ डोडो"।*
>
> (**नासमझ–आदमी या जानवर**–राजेश राहुल, **जनसत्ता**, 28 अक्तूबर 1990)

निम्नलिखित उदाहरण में समस्या की पृष्ठभूमि आरंभ में प्रस्तुत की गई है। ताकि पाठक उसके सही संदर्भ से भी परिचित हो सके। खाड़ी युद्ध के संदर्भ में लिया गया यह फीचर 3 फरवरी, 1991 के जनसत्ता में प्रकाशित हुआ था। उस समय युद्ध जारी था और इस दृष्टि से वह प्रासंगिक भी था–

> *जंग में जान-माल की तो बेइंतहा बरबादी होती ही है, सत्य को भी सूली पर चढ़ा दिया जाता है। युद्ध और असत्य का संबंध बहुत पुराना है। अश्वत्थामा की मृत्यु के बारे में झूठ बोलने के लिए धर्मराज युधिष्ठिर को स्वयं श्री कृष्ण ने ही प्रेरित किया था। आज भी भ्रांतियाँ फैलाने के लिए बेशुमार तकनीकी साधन उपलब्ध हैं। अतः खाड़ी युद्ध की स्थिति के बारे में युद्धरत राष्ट्रों की ओर से झूठे और परस्पर-विरोधी समाचार प्रसारित करने के प्रयास हो रहे हैं तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। हमें खाड़ी युद्ध के संभावित परिणामों को जानना है। सभी जानते हैं कि इस युद्ध के कारण भारत को काफी लंबे समय तक आर्थिक संकट और कई प्रकार के अभावों से गुजरना होगा। खाड़ी युद्ध अपनी कुछ विशेषताओं के कारण पर्यावरण को भी प्रभावित करेगा।*
>
> (**खाड़ी के धुएँ में हमारा मौसम**–गुणाकर मुले)

अब जो उदाहरण हम प्रस्तुत कर रहे हैं उसमें आरंभ में उस क्षेत्र (यमुना) का परिचय दिया गया है जो प्रदूषण से प्रभावित हुआ है। यहाँ समस्या का उल्लेख इस परिचय के बाद आता है–

हिमालय की कोख से जन्मी यमुना का जल आज भी अनवरत् हिलोरे मारता हुआ भारत के अनेकों गाँवों, कस्बों, शहरों, जंगलों, पहाड़ों को छूता हुआ, अपने में सहायक नदियों को समेटता हुआ और गंदे पानी के नालों को झेलता हुआ इलाहाबाद में मिलकर गंगा जल बन जाता है।

(**अब थकी हुई लगने लगी है यमुना**–राजीव पंछी, **नवभारत टाइम्स**, 6 नवंबर, 1990)

फीचर का आरंभ रोचक होना चाहिए। आरंभिक अंश को पढ़ने से ही यह ज्ञान हो जाना चाहिए कि किस विषय पर फीचर लिखा गया है। ताकि पाठक उसके महत्व को समझकर आगे के अंश पढ़ने के लिए उत्सुक हो उठे।

7.7.2 मध्य

फीचर के मध्य भाग में शेष विषयवस्तु रहती है। इस अंश में जो भी सामग्री आप प्रस्तुत करें उसे तार्किक ढंग से व क्रमबद्ध रूप में रखें। न तो बातों में अनावश्यक विस्तार हो और न ही उलझाव। जो भी बात रखें वह तथ्यपरक और ठोस हो। खाड़ी युद्ध से संबंधित जिस फीचर का हमने उदाहरण दिया है उसके मध्य भाग में खाड़ी युद्ध की विभीषिका और उसके दुष्परिणामों पर विचार किया गया है। उदाहरण के लिए इस फीचर के मध्य भाग में तेल भंडारों व तेल शोधक कारखानों पर बमबारी व तेल कुओं में आग लगने पर होने वाले विनाश का उल्लेख किया गया है। लेखक ने पहले युद्ध के भयावह रूप और उसके बाद विनाश की आशंका को प्रस्तुत किया है। अपनी बात के पक्ष में उसने वैज्ञानिकों के मत को भी उद्धृत किया है–

पश्चिम जर्मनी के प्रख्यात मैक्स प्लैंक संस्थान के वैज्ञानिक पाल क्रुटगेन ने खाड़ी युद्ध के परिणामों का एक भयावह चित्र प्रस्तुत किया है। इराक, सऊदी अरब और इजराइल के तेल भंडारों और तेल शोध कारखानों पर तो बम बनाए ही जा रहे हैं, कुवैत के तेल कुओं को भी आग लगा दिए जाने की काफी संभावना है। कुवैत के अधिकांश तेल कुओं की विशेषता यह है कि उनमें से तेल प्राकृतिक रूप से बाहर निकल आता है, उसे पंपों से नहीं खींचना पड़ता। बताया जाता है कि इराक ने कुवैत के ऐसे करीब 350 कुओं में आग लगा देने की तैयारी कर रखी है। इतने सारे कुओं में आग लगा दी जाए, तो वही दावानल की तरह लंबे समय तक जलती रहेगी।

इसके अगले पैरा में लेखक ने इस आग के दुष्परिणामों की संभावना पेश की है–

क्रुटगेन का मत है कि पश्चिमी एशिया के तेल क्षेत्रों में आग लगने से इस विशाल क्षेत्र में जहरीला काला धुआं फैल जाएगा। धूल और काले धुएं से इस क्षेत्र में अंधेरा छा जाएगा, सूरज की किरणें धरातल पर नहीं पहुंचेगी और धरती का तापमान करीब आधा डिग्री सेल्सियस गिर जाएगा। इतना ही नहीं, जहरीले धुएं के बादल भारतीय उपमहाद्वीप के ऊपर से होकर पूर्वी एशिया के देशों तक पहुंच जाएंगे। खाड़ी क्षेत्र में उत्पन्न होने वाला धुआं वायुमंडल में अधिक ऊंचाई पर उठकर उत्तरी गोलार्ध के देशों के ऊपर भी फैल सकता है। अमेरिकी वैज्ञानिक कार्ल सागा ने भी इस संभावना को स्वीकार किया है। क्रुटगेन ने यह भी कहा है कि कई स्थानों पर तेजाब की बारिश होगी और मानसून भी दगा दे सकता है।

उक्त दोनों परिच्छेदों में पूरे विषय को तथ्यों के आधार पर तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया है ताकि सामान्य पाठक भी बात के मर्म को अच्छी तरह समझ सकें। मध्य भाग का प्रत्येक पैरा इसी तरह लिखा जाना चाहिए।

7.7.3 अंत एवं शीर्षक

पर्यावरण संबंधी फीचर की अंत निष्कर्ष या सार या समस्या के संबंध या भविष्य के प्रति चेतावनी और चिंता के साथ भी किया जा सकता है फीचर का अंत चाहे जिस रूप में करें पाठकों को यह अहसास नहीं होना चाहिए कि फीचर अधूरा है या विषय को ठीक से प्रस्तुत नहीं किया गया है। कभी-कभी फीचर को अत्यंत रोचक ढंग से भी समाप्त कर सकते हैं। फीचर का अंतिम भाग कैसे लिखेंगे यह बहुत कुछ फीचर के विषय और उद्देश्य पर निर्भर

करेगा। पर्यावरण संबंधी फीचर में खास चीज है सामाजिक जागरुकता। इसलिए फीचर के अंत में अगर हम लोगों का पर्यावरण के संकट के बारे में जागरूक रहने का आहवान करें। पर्यावरण के संकट के बारे में जागरूक रहने का आहवान करें या उन्हें कुछ सुझाव पर्यावरण की रक्षा के लिए दें तो यह भी फीचर को सार्थक बनाएगा।

फीचर का **शीर्षक** पर्यावरण संकट की चिंता या पर्यावरण संबंधी विनाश की आशंका को संकेतित करने वाला हो तो पाठक उसकी ओर जल्दी आकृष्ट होगा। जैसे **"सिसकती हुई बहती है गंगा"** या **"हिमालय का मैला होता आंचल"** या **"खाड़ी के धुएं में हमारा मौसम"** किसी न किसी रूप में पर्यावरण के संकट की ओर संकेत करते हैं। शीर्षक छोटा परंतु स्पष्ट कथन वाला होना चाहिए तथा बात को अगर भावात्मक रूप दिया जा सके तो यह भी शीर्षक के प्रभाव को बढ़ाएगा। जैसे **"सिसकती हुई बहती है गंगा"** में सिसकती हुई वाक्यांश गंगा की दुर्दशा को मार्मिक ढंग से व्यक्त कर देता है। इसी तरह **"हिमालय का मैला होता आँचल"** में 'मैला होता आँचल' वाक्यांश न केवल समस्या की विकरालता की ओर ध्यान आकृष्टि करता है वरन् हिमालय के पवित्र सौंदर्य के मलिन होते जाने को भी व्यक्त करता है। शीर्षक हमेशा ऐसे ही प्रभावशाली और हृदय को छूने वाले देने चाहिए।

7.8 भाषा एवं शैली

पर्यावरण संबंधी फीचर चूंकि तथ्यपरक अधिक होते हैं इसलिए उसमें शैली संबंधी विविधता की अधिक संभावना नहीं होती। वर्णनात्मक ढंग या विश्लेषणात्मक ढंग से ही ये फीचर लिखे जाते हैं। विश्लेषण को शैली का अंग तो बनाया जा सकता है परंतु अधिक इस्तेमाल से फीचर निबंध की तरह बोझिल हो सकता है।

फीचर में पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग में विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता है। पारिभाषिक शब्द अगर प्रचलित न हों तो उनको फीचर में समझा भी देना चाहिए। वैज्ञानिक पक्ष को सरल ढंग से और सामान्य पाठक को दृष्टि में रखकर प्रस्तुत करना चाहिए। जहाँ तक संभव हो भाषा ऐसी होनी चाहिए जो विषय को सहज ही संप्रेषित कर दे। फीचर में वैज्ञानिक पक्ष को सरल ढंग से कैसे प्रस्तुत करें इसका एक उदाहरण देखिए–

> *गरीबी के दिनों में जमीन ज्यादा तपती है, मगर तुलना में महासागर की सतह ठंडी रहती है। इसलिए जमीन के ऊपर की हवा गर्म होकर ऊपर उठती है तो उसका स्थान भरने के लिए महासागर के ऊपर की ठंडी हवाएँ जमीन की ओर बहने लगती हैं। महासागर से जमीन की ओर बहने वाली हवाएँ अपने साथ जलवाष्प को ले जाती हैं और इस प्रकार जून के आरंभ से सितंबर के मध्य तक चलने वाले मानसून को जन्म देती हैं।*
>
> (**खाड़ी के धुएँ में हमारा मौसम**, पूर्वोक्त)

उपर्युक्त अंश को पढ़ने से सामान्य पाठक को भी मानसून का कारण स्पष्ट हो जाएगा। इस जानकारी के बाद वह अगला अंश पढ़ेगा तो उसे खाड़ी युद्ध के कारण मानसून पर पड़ने वाले असर को समझने में दिक्कत नहीं होगी।

> *स्पष्ट है कि मानसून के लिए जमीन और महासागर के तापमान में काफी अंतर होना आवश्यक है। ऐसा केवल उष्णकटिबंध में ही हो सकता है धूल और काले धुएँ के बादल जमीन के तापमान को पर्याप्त बढ़ने नहीं देंगे, तो जमीन और महासागर के तापमानों में ज्यादा अंतर भी नहीं रहेगा। वैसी दशा में मानसून निश्चय ही दगा दे सकता है।*

वैज्ञानिक पक्ष के अतिरिक्त जहाँ पर्यावरण से होने वाले विनाश को बताना हो वहाँ भाषा में मार्मिकता लाने का प्रयत्न करना चाहिए। आपकी चिंता आपकी भाषा से भी व्यक्त होनी चाहिए।

बोध प्रश्न

7) पर्यावरण संबंधी फीचर के आरंभ में किन बातों का उल्लेख करना चाहिए?

.....

.....

.....

8) पर्यावरण संबंधी फीचर में वैज्ञानिक पक्ष को प्रस्तुत करते हुए किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

5) अपने शहर के पर्यावरण पर एक फीचर तैयार कीजिए। फीचर में उद्योगों एवं वाहनों के कारण होने वाले प्रदूषण को केंद्र में रखें। फीचर लगभग 200 शब्दों में लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6) उक्त फीचर का उचित शीर्षक भी दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7.9 सारांश

फीचर लेखन से संबंधित पाठ्यक्रम की इस अंतिम इकाई में आपने पर्यावरण से संबंधित फीचर लेखन के बारे में पढ़ा है। पर्यावरण का अर्थ है किसी प्राणी या वस्तु के चारों ओर की स्थितियों, लोगों, वस्तुओं और घटनाओं का वह प्रभाव जो उनके जीवन पर पड़ता है। इसमें प्रकृति और मनुष्य द्वारा निर्मित स्थितियाँ, वस्तुएँ और घटनाएँ शामिल हैं। पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण अंग है पारिस्थितिकी परिस्थितिक संतुलन का बनना बिगड़ना बहुत कुछ पर्यावरण पर निर्भर करता है और पर्यावरण बहुत से कारणों से दूषित होता जा रहा है। स्थितियाँ इस हद तक बिगड़ गई है कि अगर जल्दी ही सधार नहीं किया गया तो पथ्वी पर मनष्य जीवन के लिए भयंकर संकट उत्पन्न हो

जाएगा। इसी बात को ध्यान में रखकर पर्यावरण के संबंध में जागरुकता लाने की कोशिश की जा रही है। इसमें पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित फीचर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इकाई में आपने पर्यावरण के इसी महत्व के बारे में अध्ययन किया है।

- पर्यावरण के विभिन्न पक्षों के आधार पर पर्यावरण संबंधी फीचर के तीन भेद किये जा सकते हैं–प्रदूषण से संबंधित फीचर, पारिस्थितिकी से संबंधित फीचर पर्यावरण संबंधी जागरुकता पर फीचर। इन तीन तरह के फीचर की विशिष्टताओं का भी आपने अध्ययन किया है।
- पर्यावरण पर फीचर लिखने के लिए फीचर लेखक में पर्यावरण संकट के प्रति वास्तविक चिंता, उसके वैज्ञानिक पक्षों को समझ सकने की क्षमता पर्यावरण के विभिन्न पक्षों की गहरी जानकारी होनी चाहिए। विषय तय करते समय विषय के महत्व और प्रासंगिकता का भी ध्यान रखना चाहिए तथा जिस पत्र-पत्रिका के लिए लिख रहे हैं उसके पाठकों की अभिरुचि को भी दृष्टि में रखना चाहिए।
- फीचर के लिए विषय तय करने के बाद विषय का गहराई से अध्ययन करना चाहिए। संबंधित तथ्यों को एकत्र करना चाहिए, संबंधित लोगों से बातचीत करनी चाहिए। आंकड़े, दस्तावेज और तस्वीरें प्राप्त करनी चाहिए तथा समस्त सामग्री का अध्ययन कर एक रूपरेखा बना लेनी चाहिए।
- फीचर के आरंभ में पर्यावरण संबंधी समस्या का उल्लेख या संबंधित क्षेत्र का विवरण देना चाहिए। वैज्ञानिक पक्ष को सामान्य पाठक के समझ में आ सकने वाली शैली में प्रस्तुत करना चाहिए। अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए तथा अंत में पर्यावरण संकट के संबंध में सुझाव या चेतावनी प्रस्तुत करनी चाहिए।
- पर्यावरण संबंधी फीचर की शैली वर्णनात्मक, भाषा सरल और बोधगम्य होनी चाहिए। वैज्ञानिक व तकनीकी पक्ष को पाठकों के समझ में आ सकने वाली भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए। इकाई को पढ़कर आप पर्यावरण पर फीचर लेखन की अपनी योग्यता बढ़ा सकेंगे।

7.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) पर्यावरण का अर्थ है किसी के भी चारों ओर की स्थितियों, लोगों, वस्तुओं और घटनाओं का वह प्रभाव जो उसके जीवन पर पड़ता है।

2) पर्यावरण में होने वाले परिवर्तन का असर पारिस्थितिकी पर पड़ता है। पारिस्थितिक असंतुलन का असर मनुष्य के अपने जीवन पर भी पड़ता है। इसलिए यह जरूरी है कि मनुष्य पर्यावरण के साथ ऐसी छेड़छाड़ न करें जिसका असर पारिस्थितिक संतुलन पर पड़े।

3) i) प्रदूषण संबंधी फीचर।
   ii) पारिस्थितिकी संबंधी फीचर।
   iii) पर्यावरण संबंधी जागरुकता पर फीचर।

4) i) उसके सामाजिक पक्ष को ध्यान में रखना चाहिए।
   ii) वैज्ञानिक पक्ष को भी ध्यान में रखना चाहिए।

5) देखिए उपभाग 75.1

6) देखिए उपभाग 75.2

7) समस्या का उल्लेख, या
   क्षेत्र का परिचय

8) i) वैज्ञानिक पक्ष का समुचित अध्ययन करना चाहिए।
   ii) इस पक्ष को पाठकों को समझ में आ सकने वाली भाषा शैली में प्रस्तुत करना चाहिए।

अभ्यास

1) आप अपने शहर की सफाई व्यवस्था या उद्योगों के कारण होने वाले कुप्रभावों के कारण पर्यावरण पर पड़ने वाले असर की चर्चा कर सकते हैं।

2) इसके अंतर्गत आप कल-कारखानों की बढ़ती संख्या, उनके आसपास की गहरी आबादी, कल-कारखानों में प्रदूषण से बचाव की व्यवस्था प्रदूषण पर रोक के लिए जिम्मेदार सरकारी एजेंसियों की भूमिका तथा वायुमंडल पर प्रदूषण के प्रभाव से संबंधित तथ्यों को एकत्र करें।

3) वैज्ञानिकों, अधिकारियों, प्रदूषण से प्रभावित लोगों तथा अन्य संबद्ध लोगों से बातचीत कर सकते हैं।

4) प्रश्न संख्या 2 के विभिन्न पक्षों पर बातचीत के लिए प्रश्न तैयार कीजिए।

5) 5 एवं 6 स्वयं उत्तर लिखिए।

इकाई 8 विज्ञान में फीचर लेखन

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य
8.1 प्रस्तावना
8.2 विज्ञान फीचर का अभिप्राय
8.3 विज्ञान फीचर के प्रकार
  8.3.1 विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित
  8.3.2 विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता से संबंधित
  8.3.3 वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित
8.4 विषय का चयन
  8.4.1 रुचि एवं विशेषज्ञता
  8.4.2 प्रकाशन की प्रकृति
  8.4.3 विषय की प्रासंगिकता
8.5 सामग्री का संकलन
8.6 सामग्री का संयोजन एवं संपादन
8.7 फीचर का लेखन
  8.7.1 आरंभ
  8.7.2 मध्य
  8.7.3 अंत एवं शीर्षक
  8.7.4 भाषा एवं शैली
8.8 सारांश
8.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम विज्ञान फीचर की चर्चा कर रहे हैं। जिसे पढ़ने के बाद आप–

- विज्ञान फीचर क्या है, यह बता सकेंगे,
- विज्ञान फीचर के भेद कर सकेंगे,
- विज्ञान फीचर लेखन के लिए विषय का चयन कर सकेंगे,
- रुचि अनुकूल विषय की सामग्री किन तरीकों से एकत्रित की जाती है, यह बता सकेंगे, और
- सामग्री के संपादन एवं संयोजन के बाद फीचर को आकर्षक ढंग से विकसित करने की विधि समझा पाएंगे।

8.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन से संबंधित सृजनात्मक पाठ्यक्रम के दूसरे खंड की यह पांचवी इकाई और पाठ्यक्रम की आठवीं इकाई है। इससे पहले की इकाई में आपने पर्यावरण विषय पर फीचर के बारे में पढ़ा था। इस इकाई में आप विज्ञान फीचर के बारे में अध्ययन करेंगे। हिंदी समाचारपत्र-पत्रिकाओं में विज्ञान लेखन तो बहुत समय से हो रहा है लेकिन इसके लिए संगठित प्रयत्नों का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। इसका संबंध हम अंतरिक्ष-यात्रा से जोड़ सकते हैं, जबकि सामान्य व्यक्ति की दिलचस्पी अंतरिक्ष यात्रा के साथ-साथ विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में हो रहे शोध-कार्यों में भी पैदा हुई। आज न केवल हिंदी के विभिन्न समाचारपत्रों में नियमित विज्ञान स्तम्भ स्थापित हैं वरन् विज्ञान संबंधी पाक्षिक एवं मासिक पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हो रही हैं। ऐसी स्थिति में विज्ञान-लेखन एक व्यापक क्षेत्र है जहाँ लेखक को विज्ञान संबंधी खोज, उपलब्धियों एवं जानकारी को पाठकों तक पहुंचाना है।

पश्चिमी देशों में वैज्ञानिक आविष्कार और अनुसंधान कार्य अधिक हुए हैं। साथ ही वहाँ विज्ञान-लेखन को अहमियत दी गयी है। संयुक्त राष्ट्र संघ के संगठनों ने भी विज्ञान को लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया है जिनमें यूनेस्को तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रमुख हैं। यूनेस्को की पत्रिका "कूरियर" का हिंदी संस्करण नेशनल बुक ट्रस्ट प्रकाशित करता है। इसी प्रकार विश्व स्वास्थ्य संगठन की "वर्ल्ड हैल्थ" का हिंदी संस्करण भी कुछ समय के लिए दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। विज्ञान फीचर लेखन से आप भी समसामयिक वैज्ञानिक समाचार तथा प्रयोगशालाओं में चल रहे अनुसंधानों के संबंध में तथ्यपूर्ण जानकारी पाठकों तक आकर्षक ढंग से पहुंचा सकते हैं।

विज्ञान फीचर की क्या मुख्य विशेषताएँ हैं, उसके कितने प्रकार हैं। विज्ञान फीचर को क्यों और कैसे आकर्षक और मनोरंजक बनाया जा सकता है। सशक्त विज्ञान फीचर के लिए कैसी भाषा-शैली हो और उसे किस प्रकार से विस्तार दिया जा सकता है—इस सबकी चर्चा हम इस इकाई में कर रहे हैं।

आशा है इसे पढ़ने के बाद आप विज्ञान फीचर को न केवल भलीभाँति समझा पाएंगे वरन् अपनी रुचि के अनुरूप विज्ञान फीचर लेखन की ओर आपका रुझान भी बन सकेगा।

8.2 विज्ञान फीचर से अभिप्राय

विज्ञान फीचर को समझने के लिए विज्ञान का अर्थ समझना होगा। विज्ञान की सामान्य परिभाषा है—ज्ञान का व्यवस्थित रूप। मनुष्य के अपने शरीर से लेकर सृष्टि में उपलब्ध सभी वस्तुओं की उपयोगिता-अनुपयोगिता के कारण ढूँढना, यहाँ तक कि पृथ्वी के अंदर भूगर्भ में और पृथ्वी से ऊपर अंतरिक्ष में भी मनुष्य के हित में लाभ और हानि ढूँढना विज्ञान है। इसलिए हर वह विषय जिसमें सच और तर्क की बुनियाद पर इंसानी हक में फ़ायदे और नुकसानात तलाश करने वाला पहलू हो, विज्ञान के अंतर्गत आता है। उदाहरण के लिए पानी में यदि बिजली उत्पन्न करने की शक्ति है तो वह विज्ञान का विषय हो गया। वायुमंडल में यदि ऐसी गैस है जो मनुष्य के लिए लाभकारी (आक्सीजन) या हानिकारक (कार्बनडाइआक्साइड) है तो वह विज्ञान के लिए शोध का विषय है।

किसी भी विषय को तर्क के आधार पर प्रस्तुत करना वैज्ञानिक पहलू है। चुम्बक को यदि लोहे के नज़दीक लाया जाये तो वह उससे चिपक जाता है। तर्क न समझने वाले सामान्य व्यक्ति के लिए यह जादू हो सकता है किंतु इसका तार्किक पहलू यह है कि हर अणु में उत्तरी और दक्षिणी दो ध्रुव होते हैं, विपरीत ध्रुव एक दूसरे को आकर्षित कर जबकि समान ध्रुव एक-दूसरे को दूर करते हैं यानी उनमें विकर्षण होता है। तर्क पेश करने से ही यही विषय विज्ञान का विषय बन जाता है। आप अंदाज़ लगा सकते हैं कि रेल की पटरियाँ इसी तर्क के आधार पर सैकड़ों मील तक एक समान फैली रहती हैं और हज़ारों रेलों के एक स्थान से दूसरे स्थान तक आने-जाने में सहायक होती हैं।

आज नये-नये वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण हमारे जीवन में सैकड़ों चीज़े समा गयी हैं और उन्हें घर-घर में प्रयोग में लाया जा रहा है। प्रेशर कुकर, बिजली की प्रेस, रेडियो, टेलीविज़न, वी.सी.आर., कैमरा आदि-आदि घर-घर में उपयोग में लाये जा रहे हैं। बिजली के तार और फ्यूज इत्यादि महिलाएँ और बच्चे भी घरों में जोड़ लेते हैं। ट्रेक्टर, मोटर, स्कूटर और साइकिल विज्ञान के ही तो चमत्कार हैं। यहाँ तक कि पहियों में भरी हुई हवा जो बस एक वाल्व की मदद से रुकी रहती है, किंतु वाल्ब पर केवल हल्का सा दवाब डालने से भी सारी हवा निकल सकती है और चलती हुई गाड़ी रुक सकती है।

8.3 विज्ञान फीचर के प्रकार

इस तरह आपने देखा कि विज्ञान आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। घर में हम बिजली जलाते हैं, सुबह बस या कार से दफ्तर जाते हैं। लिफ्ट से हम ऊपर चढ़ते हैं। दफ्तर पहुंचते ही दो-चार टेलीफ़ोन करते हैं। शाम को दफ्तर से लौटते हुए बच्चे की संतुष्टि के लिए हार्लिक्स या च्यवनप्राश ले जाते हैं। इन सब में हमारे इर्द-गिर्द विज्ञान

का ही सहयोग नज़र आता है। इसके अतिरिक्त रेल हैं, हवाई जहाज़ हैं, राकेट हैं, पेटेंट टैंक और एटमिक हथियार हैं। अब शायद ही कोई चीज़ विज्ञान से अछूती रही हो। इसलिए विज्ञान पर चुने जाने वाले विषयों का क्षेत्र भी अति व्यापक है, फिर भी अपनी सुविधा के लिए इसे हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं–

1) विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित
2) विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता से संबंधित
3) वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित

8.3.1 विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित

फीचर के अंश का निम्नलिखित उदाहरण देखें जो हमने 17 फ़रवरी, 1991 की **जनसत्ता** से लिया है। लेखक हैं डा. यतीश अग्रवाल।

> *हीमोफ़िलिया एक ख़ास किस्म का वंशानुगत रक्त विकार है, जो सिर्फ़ पुरुषों में पाया जाता है। इस विकास में ख़ून जमने में सहायक एक तत्व फैक्टर 8 की कमी होती है, जिसके कारण मरीज़ के लिए हर छोटी सी चोट ख़तरनाक बन जाती है। रक्त-जमाव सहायक तत्व की कमी को पूरा करने के लिए मरीज़ को बार-बार यह तत्व बाहर से देना पड़ता है। पर इसके बावजूद जोड़ों में बार-बार छुटपुट रक्तस्राव होने के कारण जोड़ सूज जाते हैं, विकृत हो जाते हैं और जकड़ जाते हैं। इससे मरीज़ का जीवन अस्तव्यस्त हो जाता है। यह असर सबसे ज़्यादा घुटनों के जोड़ में देखा जाता है। इसलिए कुछ वर्ष पहले तक विशेषज्ञों की यह राय थी कि इन बच्चों को खेलकूद के मैदान से अलग रहना चाहिए चिकित्सा के नाम पर भी ज़ोर केवल फैक्टर-8 की कमी को पूरा करने पर रहता था। पर अब विशेषज्ञों ने पाया है कि जोड़ों में हुए रक्तस्राव की सबसे बेहतर चिकित्सा समय से की गयी भौतिक चिकित्सा है। फैक्टर आठ देने के साथ-साथ यह भी ज़रूरी है कि मांसपेशियों को सही व्यायाम द्वारा सशक्त बनाया जाए और उनके तालमेल की तरफ़ भी ध्यान दिया जाए। इससे जोड़ को स्थायी जकड़न से बचाया जा सकता है।*

उपर्युक्त उदाहरण पढ़ने से आपको तुरंत अंदाज़ हुआ होगा कि फीचर का यह अंश चिकित्सा विज्ञान से संबंधित है। इसी प्रकार आप गौर करेंगे तो पाएंगे कि विज्ञान की अपनी-अपनी शाखाएँ बन गयी हैं, जैसे:

- चिकित्सा विज्ञान
- कृषि विज्ञान
- जीव विज्ञान
- वनस्पति विज्ञान
- भू-विज्ञान
- भौतिक विज्ञान
- रसायन विज्ञान–आदि

विषय चुनते समय हमें यह स्पष्ट कर लेना होगा कि हम विज्ञान की किस शाखा पर फीचर लिखने जा रहे हैं। अपना क्षेत्र सीमित कर लेने से हम अपने विषय के साथ भलीभाँति न्याय कर सकते हैं।

8.3.2 विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता से संबंधित

विज्ञान अब हमारे जीवन का ज़रूरी अंग बन गया है। प्रत्यक्ष न सही अप्रत्यक्ष रूप से विज्ञान की हर नयी खोज का हमारे ऊपर प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए कपड़े धाने की मशीन विज्ञान की चमत्कारिक उपलब्धियों में से एक है। हो सकता है महंगी होने के कारण भारत में सामान्य व्यक्ति का इससे प्रत्यक्ष संबंध न होकर अप्रत्यक्ष प्रभाव उस पर भी अवश्य पड़ेगा। क्योंकि धोबियां के धंधे और उनके रोज़गार पर इसका असर पड़ेगा। इस तरह समाज का एक बड़ा वर्ग इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकेगा। आपको अनभव होगा कि खाना बनाने की गैस के प्रचलन के बाद जलाने वाली लकड़ी के व्यापार

में भारी अंतर आया है। इसके सकारात्मक पहलू भी हैं जो औसतन हमेशा अधिक ही होते हैं।

वैज्ञानिक खोजों से जुड़ी कोई भी ऐसी समस्या को उजागर करने वाला फीचर सामाजिक उपयोगिता से संबंधित श्रेणी के अंतर्गत रखा जा सकता है। मनुष्य के स्वरूप जीवन के लिए स्वच्छ पर्यावरण जरूरी होता है और पर्यावरण को साफ़ बनाए रखने के लिए विज्ञान की चर्चा आवश्यक हो गयी है। **"पर्यावरण से जुड़ी सेहत की नब्ज़"**—डॉ. जगदीप सक्सेना द्वारा लिखित फीचर का यह अंश देखिए जिसे हमने 8 अप्रैल, 1990 के **"जनसत्ता"** से लिया है।

> *पानी में घुलता कीटनाशकों का कहर हमारे स्वास्थ्य को एक और गंभीर चुनौती है। बढ़ती आबादी का पेट भरने के लिए कीटनाशकों और अन्य कृषि रसायनों का इस्तेमाल मजबूरी बन गया है। खेत में सिंचाई के पानी से मिलकर यह ज़हर गांववासियों के स्वास्थ्य को चौपट करता है। पानी में घुले कीटनाशकों की अत्यंत सूक्ष्म मात्रा शरीर पर धीमे ज़हर की तरह असर करती है। कीटनाशकों के इस्तेमाल का अवैज्ञानिक ढंग भी अनेक समस्याएँ पैदा करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि ज़्यादातर विकासशील देशों में कीटनाशकों से होने वाले रोग महामारी की तरह फैलते हैं। स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारी इन पर ज़्यादा ध्यान भी नहीं देते। किसानों को सही ढंग से कीटनाशकों का इस्तेमाल करना भी बताया नहीं गया है।*

उपर्युक्त उदाहरण से आपने अंदाज़ किया होगा कि विज्ञान हमारे जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। अतः विज्ञान फीचर लेखक का एक बड़ा दायित्व उसकी सामाजिक उपयोगिता को उजागढ़ करना भी है।

8.3.3 वैज्ञानिक दृष्टिकोण

एक समय था जब यह माना जाता था कि पृथ्वी स्थिर है और सूरज उसके गिर्द घूमता है। किंतु विज्ञान ने इसे सिद्ध किया कि दरअसल सूरज स्थिर है और पृथ्वी उसके गिर्द चक्कर लगाती है। इस प्रकार आम धारणा को अक्सर विज्ञान अपनी खोज और अनुसंधान से बदलने में सक्षम है या उसकी तह तक पहुंचकर उसके सही कारण खोजने में कामयाब है।

एक और उदाहरण देखें—एक समय था जब न्यूटन ने इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया था कि पेड़ से टूटा सेब नीचे पृथ्वी पर ही क्यो गिरा और वह ऊपर आसमान की ओर क्यों नहीं चला गया। तब न्यूटन के इस आश्चर्य पर लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाया किंतु अंततः न्यूटन ने ही विज्ञान का वह सिद्धांत प्रतिपादित किया जिससे हमें मालूम हुआ कि पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण शक्ति है और वह सभी चल और अचल पदार्थ को अपने केंद्र की ओर खींचती है।

यदि विज्ञान आम या सामान्य व्यक्ति के दृष्टिकोण से भिन्न कुछ साबित करता है तो एक लेखक उसके आधार पर आम व्यक्ति के दृष्टिकोण को बदलने की ज़िम्मेदारी उठाता है। ऐसे विभिन्न विषय हैं जिन पर विज्ञान अपना दृष्टिकोण रखता है। अणु और परमाणु की शक्ति क्या केवल विनाशकारी शक्ति है या वह ऊर्जा का एक ऐसा स्रोत भी है जो मानव जाति के लिए विभिन्न प्रकार से उपयोगी और बड़ी तबदीली (परिवर्तन) ला सकता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का तात्पर्य यह है कि हम प्रत्येक वस्तु और कार्य पर वैज्ञानिक ढंग से सोचें। किसी बात को सिर्फ इस कारण से न मान लें कि यह हमारे बुजुर्ग लोग मानते हैं या धार्मिक ग्रंथों में ऐसा लिखा हुआ है। भारत में ऐसा विश्वास किया जाता है कि सूर्य और चंद्रग्रहण का कारण राहु और केतु हैं। यह अंधविश्वास है और हमें लोगों को ग्रहण के वैज्ञानिक कारण बताने चाहिए।

भूत-प्रेत और अन्य तरह के अंधविश्वास से मुक्ति तभी मिल सकती है जब लोगों की सोच वैज्ञानिक बने। गले में तांबीज़ बांधने से बीमारी का इलाज नहीं होता। बिल्ली के रास्ते काटने या छींक आने से काम बिगड़ना ये सिर्फ अंधविश्वास हैं क्योंकि इनका कोई तार्किक आधार नहीं है। चमत्कारों से भरी पौराणिक कथाओं को यथार्थ मानना भी अंधविश्वास है और ऐसे अंधविश्वास हमारी प्रगति में बाधक ही बनते है।

अभी कछ दिन पहले अखबार में किसी साध-महात्मा के चमत्कार की खबर छपी थी। उस

उस मुट्ठी से भस्म गिरने लगती थी। यह देखकर आम आदमी का चमत्कृत होना स्वाभाविक है लेकिन अगर उन्हें इस बात की जानकारी दी जाए कि दरअसल हाथ में लगा केमिकल उस सिक्के के साथ रासायनिक क्रिया कर उसे भस्म में बदल देता है तो साधु की पोल से वह बच सकता है।

फीचर लेखक को चाहिए कि वह फीचर के माध्यम से लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार करे। हम सब ईश्वर की संतान है—यहाँ तक मानना तो ठीक है। लेकिन इसी कारण परिवार को बढ़ाते चले जान न सिर्फ उस परिवार के लिए बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए भी घातक है। सभी मनुष्य मूलतः एक हैं। चाहे वह जिस धर्म, नस्ल, जाति और भाषा से संबद्ध हो क्योंकि विज्ञान के अनुसार ये सब बाहरी भेद हैं। अगर हम मनुष्य की सामान्य एकता के भाव को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करें तो यह एक महत्वपूर्ण काम होगा।

अतः फीचर लेखक चाहे तो सामान्य व्यक्ति की सोच को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बदल सकता है। और किसी बात को समझकर तर्क से परख कर यानी कार्य-कारण से ही विश्वास करने की चेतना जगा सकता है।

बोध प्रश्न

1) विज्ञान का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) विज्ञान फीचर के प्रमुख प्रकारों का नामोल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) वैज्ञानिक द्रष्टिकोण से संबंधित फीचर का महत्व बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

1) वैज्ञानिक फीचर के निम्नलिखित विषय किस-किस श्रेणी में आएंगे—

क) ब्रह्माण्ड के रहस्यों के लिए एक टेलिस्कोप

.....

ख) वाहनों को प्रदूषण रहित कैसे रखें?

.....

ग) क्या-क्या कहर ढाते हैं जीवन में अंधविश्वास

.....

घ) हमारा जीवन और भाग्यवाद

.....

ङ) सौर ऊर्जा क्या है?

.....

2) दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाले कुछ प्रमुख वैज्ञानिक उपकरणों के नाम गिनाइये–

.....

.....

.....

.....

.....

8.4 विषय का चयन

विज्ञान का क्षेत्र बहुत व्यापक है। यहाँ धरती के अंदर दबे बीजों और खगोल विज्ञान के विषय से लेकर धरती में उड़ रहे विमान और अंतरिक्ष के विभिन्न विवरण तक शामिल होते हैं। अतः इतने व्यापक क्षेत्र में लेखन कार्य के लिए विषय का चयन अपने आप में महत्वपूर्ण है।

8.4.1 रुचि एवं विशेषज्ञता

सबसे पहली और महत्वपूर्ण बात है कि आपको अपनी रुचि के आधार पर विज्ञान का कोई क्षेत्र चुनना होगा, जैसे–

कृषि विज्ञान
जीव विज्ञान
भू-विज्ञान
चिकित्सा विज्ञान
वनस्पति विज्ञान
भौतिक विज्ञान
रसायन विज्ञान

इस प्रकार विज्ञान का कोई एक क्षेत्र चुनकर उसमें विशेषज्ञता बढ़ायी जा सकती है जो विषय चयन में दूसरा सहायक गुण है। एक ही क्षेत्र में लिखते रहने पर आपके पास

अधिक जानकारी एकत्र हो सकती है।
तात्कालिक जानकारी मिल सकती है।
नयी खोज और नये प्रयोगों की सूची और विवरण मिल सकता है।
आकलन शक्ति अधिक तीव्र होती है।
तकनीकी शब्दों का अधिक सावधानी से इस्तेमाल कर सकते हैं।
अपने क्षेत्र से संबंधित पत्र-पत्रिकाओं की जानकारी होती है जिससे फीचर प्रकाशित करने में सहूलियत रहती है।

8.4.2 प्रकाशन की प्रकृति

अब तक आपको यह ज्ञात हो चुका है कि प्रकाशन के लिए फीचर को मुख्यतया तीन तरह के पत्र-पत्रिकाओं में स्थान मिल सकता है:

1) दैनिक समाचार पत्र जिनमें तात्कालिक जानकारियों से युक्त विषयों को स्थान मिलता है।

2) साप्ताहिक या पाक्षिक पत्रिकाएः जिनमें दैनिक समाचारपत्रों की अनिस्वत लेख को

थोड़ा और विस्तार दिया जा सकता है तथा निकट भूतकाल में हुई घटनाओं या आविष्कारों के विषय भी लिये जा सकते हैं।

3) मासिक, त्रैमासिक दीर्घकालीन पत्रिकाएँ, जिनमें अधिक स्थायी विषय ही लेने होते हैं।

अतः प्रकाशन प्रकृति की दृष्टि से दो बातें प्रमुख हैं। एक तो विषय की तात्कालिकता के अनुसार पत्र-पत्रिकाओं का चयन। दूसरे, पत्र-पत्रिकाओं को ध्यान में रखते हुए फीचर का विस्तार। यह बात भी हमें स्पष्ट हो चुकी है कि स्थान की कमी के कारण छोटे और कसे हुए फीचर अधिक उपयोगी होते हैं। तथा फीचर के विस्तार के अनुसार इन्हें क्रमशः दैनिक, साप्ताहिक या दीर्घकालिक पत्र-पत्रिकाओं में स्थान मिल पाता है।

8.4.3 विषय की प्रासंगिकता

आइए एक विश्लेषण करें। भोपाल के यूनियन कार्बाइड प्लांट में मिथाइल गैस के रिसने से हजारों व्यक्ति मौत के शिकार हुए। मिथाइल गैस पर जानकारी, उसके गुण-दोष से जुड़े विषय दुर्घटना के तुरंत बाद दैनिक समाचारों के लिए महत्वपूर्ण हुए क्योंकि पाठकों के सामने एक गंभीर समस्या या विषय था जिसके बारे में वे जल्द ज्ञान हासिल करना चाहते थे। क्योंकि चैम्बर में गैस फिर भी बाकी रह गई थी और उसे नष्ट किए जाने के प्रयास जारी थे। अतः मिथाइल गैस की विनाशकारी शक्ति और उसे समाप्त करने के लिए की गई तकनीकों पर आधारित विषय साप्ताहिक-पाक्षिक पत्रिकाओं के लिए भी महत्वपूर्ण रहे। इस भीषण दुर्घटना का प्रभाव इतना व्यापक था कि मासिक और त्रैमासिक पत्र-पत्रिकाओं के लिए भी इससे संबंधित विषय उपयोगी बने रहे। किंतु सन् 1984 में घटित इस दुर्घटना से संबंधित विषय अब उतने उपयोगी नहीं नजर आते जितने आज के संदर्भ में खाड़ी के तेल कुओं में लगी आग के कारण पर्यावरण में फैली गैस और उनके प्रभावों से संबंधित विषय।

प्रासंगिक विषय पर लिखे गए फीचर के प्रति पाठकों को अधिक रुचि होती है। प्रासंगिकता का मतलब केवल तात्कालिक घटनाओं से संबद्धता ही नहीं है, वरन् उन सभी बातों को फीचर का विषय बनाया जा सकता है जिनके बारे में आज के पाठकों को जानना चाहिए। जैसे—कंप्यूटर के बारे में आज पाठक ज्यादा से ज्यादा जानना चाहता है।

8.5 सामग्री का संकलन

विज्ञान फीचर अन्य फीचर की अपेक्षा अधिक विशेषज्ञता की मांग करता है। हालांकि इसमें अलंकारिक भाषा की जरूरत नहीं है, अतः इस दृष्टि से यह आसान भी है। विज्ञान के अनुसंधान और खोज की रफ्तार आज इतनी तेज़ है कि यदि जरा भी विषय से आप असम्बद्ध हुए तो जानकारियों के संबंध में आपके पिछड़ेने का खतरा बन जाता है। विज्ञान फीचर में यदि आप नवीनतम खोज, अनुसंधान या विचारधारा का उल्लेख करने में चूक जाते हैं तो फीचर या तो अधूरा रह जाता है या उसमें झोल आने की संभावना बनी रहती है। उदाहरण के लिए यदि खाड़ी युद्ध में वैज्ञानिक हथियारों की शक्ति और उनकी सफलता-असफलता का आकलन किया जाए तो स्कड मिसाइल के साथ-साथ पैट्रिट मिसाइल का भी संपूर्ण विश्लेषण जरूरी हो जाएगा। तो इस प्रकार निष्कर्ष यह है कि विज्ञान फीचर लेखक के लिए विषय से संबंधित उसकी योग्यता और विषय पर उसकी पकड़ का होना जरूरी है। इसके लिए लेखक में इन गुणों का होना आवश्यक है:

विज्ञान संबंधी विषयों में रुचि हो।

विज्ञान संबंधी पत्र-पत्रिकाओं का नियमित अध्येता हो।

विज्ञान संबंधी चर्चा, परिचर्चा एवं सेमीनारों में भाग ले।

विज्ञान संबंधी खोज राष्ट्र से बाहर भी होती है, अतः विश्व में हो रहे अनेक अनुसंधानों पर नजर हो।

विषय को समजाने की क्षमता हो।

संबंधित विषय में तथ्यपूर्ण एवं नवीनतम (up to date) जानकारी हो।

विज्ञान संबंधी लेख, फोटो, भेंटवार्ताएँ आदि की कतरनें एकत्र करने की रुचि हो

इस प्रकार सामग्री संकलन के मुख्य मुद्दे हुए–

1) विषय पर शोध
2) तथ्यों का संकलन
3) फोटो
4) साक्षात्कार
5) अन्य कोई स्रोत–तालिकाएँ, ग्राफ आदि।

सामग्री संकलन से संबंधित जो बातें बताई गई हैं, इन्हें अपनाने से निश्चित ही आकर्षक और अधिक से अधिक जानकारी से युक्त फीचर लिखने में सहायता मिल सकती है। उदाहरण के लिए **"शीत लहर ढाती है कहर"** शीर्षक से विजय कुमार द्वारा लिखित (**जनसत्ता** 23.12.90) फीचर में दी गई जानकारियों के संकेत हम दे रहे हैं जिससे आपको अनुभव होगा कि विषय का किस गहराई से अध्ययन करके लिखा गया है–

> *हमारे शरीर के भीतर का तापमान 37 डिग्री सेल्सियस या 98.4 डिग्री फारेनहाइट होता है–आमतौर पर 28 डिग्री सेल्सियस तक होने पर हमें ठंड लगने लगती है और शरीर से निकल कर वातावरण में जाती गर्मी को रोकने के लिये अतिरिक्त सूति या गर्म कपड़ों की जरूरत पड़ती है।*

शरीर का तापमान 28 डिग्री या इससे भी कम हो जाने पर व्यक्ति "वेंट्रीकुलर–फाइब्रिकेशन" नामक स्थिति का शिकार हो जाता है। इस स्थिति में दिल की प्रत्येक माँसपेशी आपस में बिना किसी तालमेल के अलग-अलग संकुचित होने लगती है। इस समय दिल को देखकर ऐसा लगता है जैसे छोटी सी थैली में बंद बहुत सारे कीड़े कुलबुला रहे हैं।

फीचर के इस अंश में लेखक ने मनुष्य के शरीर में आने जाने वाली गर्मी का जिक्र किया है। इससे ज्ञात होता है कि विषय के बारे में लेखक को पूरी जानकारी है और विाय पर उसकी पकड़ है।

> *इतना सब होने के बावजूद लंदन हास्पिटल मेडिकल सेंटर के शरीर क्रिया वैज्ञानिक प्रोफेसर बिल कीटिंग का मानना है कि ठंडक में अकड़कर मरने वालों में अधिकांश की मौत "हाइपोथर्मिया" से पहले ही दिल के आघात, दिल की धड़कनें बंद होने अथवा श्वसन प्रणाली के काम न करने के कारण ही हो जाती है।*

फीचर के इन अंशों में लेखक ने विभिन्न वैज्ञानिकों और उनके विचारों का हवाला देते हुए अपनी बातों की पुष्टि भी की है। इस प्रकार ज्ञान और रोचकता के साथ विषय को समृद्ध बना दिया है।

बोध प्रश्न

4) विज्ञान फीचर लेखक में कौन-सी योग्यताएँ होनी चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

5) विज्ञान विषय पर लिखे फीचर का प्रासंगिक होना क्यों आवश्यक हैं?

.....

.....

.....

6) विज्ञान विषय पर फीचर लिखने के लिए किस तरह की सामग्री का संकलन आवश्यक है?

.....

.....

.....

अभ्यास

3) भरयवाद के खंडन पर फीचर लिखने के लिए क्या-क्या सामग्री एकत्र करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

8.6 सामग्री का संयोजन एवं संपादन

फीचर लेखन की पूर्व तैयारी में आपने समझ लिया है कि विषय से संबंधित जानकारियों का संकलन, तथ्यों का आकलन और विषय पर गहन विचार के लिए संपूर्ण तैयारी कर लेना जरूरी है। संपादन एवं संयोजन का भाग अब हमें सही मायने में लेखन कार्य की ओर अग्रसर करता है।

संकलित सामग्री में से जो उपयोगी हो उसे छांट कर अलग कर लेना चाहिए। फिर उसे एक क्रम में व्यवस्थित करना लेखन संयोजन का पहला और प्रमुख कार्य है। आपके पास उपलब्ध सामग्री इस प्रकार हो सकती है:

- जानकारी
- व्याख्या
- संबंधित प्रश्न और उनके उत्तर
- लोगों से बातचीत के अंश
- फोटो
- आंकड़े
- तालिकाएँ आदि-आदि

इस सामग्री को नियत अनुपात में ही स्थान देना ज़रूरी है। अपनी बात में रुचि बनाए रखना और तारतम्य कायम रखना भी अच्छे संयोजन की निशानी है। उदाहरण के लिए पेट्रोल के विकल्प पर लिखे एक फीचर में लेखक ने सीधे विषय पर न पहुंचकर पहले खाड़ी संकट से पैदा हुई पेट्रोल समस्या पर ध्यान आकर्षित किया है। यह एक बेहतर तरीका है। किंतु यहीं इस बात का ध्यान रखना भी ज़रूरी है कि विषय की भूमिका के अधिक विस्तृत हो जाने से फीचर अधिक बोझिल हो सकता है और पाठक की रुचि जो पेट्रोल के विकल्प को जानने के लिए आकर्षित हुई थी, खत्म हो सकती है।

विज्ञान विषय पर लिखा फीचर तब जटिल बन सकता है जब उसमें तकनीकी पक्ष हावी हो। फीचर लेखक को चाहिए कि वह विषय को सरल बनाकर पेश करे। संबंधित विषय पर आम लोगों की जिज्ञासा, उनकी प्रतिक्रिया और कौतूहल से जुड़े उनके प्रश्न और उनके उत्तर को फीचर में स्थान देना आवश्यक है। किंतु इन सब में भी इस तरह अनुपात रखना ज़रूरी है कि विषय के प्रवाह में बाधा न आए।

फोटो, आंकड़ों तालिकाओं जैसी सामग्रियों को भी उचित स्थान देना आवश्यक है यदि फीचर के आरंभ में ही सभी आंकडे और तालिकाएं दे दिए गए तो वह उचित न होगा।

फीचर के जिस भाग से फोटो संबंधित हो, संयोजन में उन्हें उसी जगह स्थान देना आकर्षक होता है। फोटो की भरमार भी नहीं होनी चाहिए।

उपलब्ध सामग्री को पाठकों तक किस प्रकार पहुंचाया जाए, लेखन के समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना ज़रूरी है:

भाषा सरल हो।
नए तकनीकी शब्दों की स्पष्ट व्याख्या की जाए।
पैराग्राफ छोटे-छोटे हों।
प्रत्येक बात सामान्य पाठक की दृष्टि से प्रस्तुत की जाए।
विज्ञान के द्वारा पाठकों की समस्याओं और भ्रमों का निवारण हो सकता है इसलिए विषय को प्रस्तुति में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए।

8.7 फीचर का लेखन

संकलित सामग्री के संयोजन और संपादन के बाद फीचर लिखने का कार्य आरंभ किया जा सकता है। अन्य फीचर की भाँति इसे भी तीन भागों में बाँटा जा सकता है। आरंभ या प्रस्तावना, मध्य या विवरण तथा अंत या उपसंहार।

8.7.1 आरंभ

फीचर का आरंभ चाहे अन्य विषयों से संबंधित हो या विज्ञान से, महत्वपूर्ण होता है। आरंभ में फीचर के विषय का संकेत या परिचय दिया जाता है। दरअसल यही वह भाग है जहाँ से लेखक को विषय से संबंधित अपनी बात शुरू करनी होती है और पाठक को अपनी ओर आकर्षित करना होता है। विज्ञान फीचर में चूंकि सृजनात्मकता की गुंजाइश कम होती है अतः आरंभ को ही आकर्षक बनाने के लिए अपनी सोच और लेखन-कौशल का उपयोग करना होता है, और विषय के उस पहलू से बात आरंभ करने की कोशिश की जाती है जिससे किसी न किसी रूप में पाठक आकर्षित हो सके।

जीव विज्ञान के अंतर्गत मेंढक जैसे प्राणी पर जानकारी देना हो तो एकदम हर किसी पाठक के लिए यह विषय उतना आकर्षक नज़र नहीं आता किंतु निम्नलिखित उदाहरण में इसे सशक्त बनाने के लिए मेंढक को निरीह प्राणी बताते हुए उसे निर्यात के महत्व के पहलू से पाठक का ध्यान मेंढक की ओर आकर्षित किया गया है और उसके प्रति पाठकों की मनोवैज्ञानिक सहानुभूति हासिल कर ली गयी है। अब उदाहरण देखें–

> *मेंढक जैसे निरीह प्राणी पर जितना अत्याचार हुआ है, उसकी कोई दूसरी मिसाल नहीं है। हर साल लाखों की तादाद में बेकसूर मेंढकों की जान ली जा रही है वह भी निर्दयतापूर्वक और अमानवीय तरीके से। पोखरों के आसपास फुदकते स्वच्छंद मेंढकों को पकड़ कर जिंदा ही बोरों में ठूस दिया जाता है। इन बोरों को कारखाने तक लाने में 12-24 घंटे लग जाते हैं। इस दौराना एक-एक बोरे में सैकड़ों की तादाद में ठुंसे मेंढकों की वेदना का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। बोरे खुलने पर अधमरे से पड़े मढकों की पिछली टाँगों को बड़ी बेरहमी से तेज़ औजार से धड़ से अलग कर दिया जाता है। पिछली टाँगें उपयोग के लिए रख ली जाती हैं और धड़ ज़मीन पर पड़ा तड़पता रहता है। हजारों की संख्या में ज़मीन पर पड़े मेंढक के तड़पते हुए धड़ संपूर्ण मानवता के मुंह पर करारा तमाचा है। समर्थ और शक्तिशाली होने का क्या यही मतलब है? जीवों के प्रति क्रूरता के खिलाफ आवाज़ उठाने वाले अनेके संगठनों ने मेंढकों पर हो रहे अत्याचार की कड़ी आलोचना की है। फिर भी अत्याचार जारी है।*
>
> (**त्रासदी है मेंढक की जिंदगी** – डॉ. जगदीप सक्सेना : **जनसत्ता**–1 अक्तूबर, 1989)

8.7.2 मध्य

मध्य भाग में फीचर से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी और तथ्यों का विस्तार किया जाता है। प्रस्तुतीकरण में आपको ध्यान रखना होगा कि प्रत्येक अनुच्छेद में विषय की दृष्टि से

क्रमबद्धता और भाषा की दृष्टि से एकरूपता होनी चाहिए। मुख्य भाव संपूर्ण फीचर में व्याप्त रहे इसलिए ध्यान रहे कि गैरज़रूरी बाते उसमें न आने पाएं। वैसे भी विज्ञान फीचर में विषय की तथ्यात्मकता, उसका स्पष्टीकरण समझाना और भाषा का सरलीकरण अधिक महत्वपूर्ण है जिसका कि निरंतर ध्यान रखना ज़रूरी होता है, अन्यथा फीचर के बोझिल होने का खतरा बना रहता है।

"**त्रासदी है मेंढक की जिंदगी**" फीचर के मध्य भाग का एक अंश देखिए–

"पर्यावरण वैज्ञानिकों का मानना है कि खाद्य-श्रृंखला में मेंढक की गैर-मौजूदगी धरती की पूरी आहार व्यवस्था को चरमरा सकती है। अगर प्रकृति में मेंढक पर्याप्त संख्या में मौजूद न हों तो किसानों के लिए फसलों को कीड़ों के प्रकोप से बचाना मुश्किल हो जाएगा। उसे एक बड़ी राशि की कीटनाशकों के छिड़काव पर खर्च करनी होगी। इससे पर्यावरण प्रदूषण भी बढ़ेगा। अगर मेंढक के निर्यात पर लगा प्रतिबंध खत्म कर दिया जाए तो क्या वास्तव में ऐसी विनाशकारी स्थिति हो जाएगी? इस सवाल पर विचार करने के लिए 1986 में कलकत्ता में मेंढक की टाँगों के व्यवसाय पर पहले विश्व सम्मेलन में आए ज्यादातर वैज्ञानिकों की राय थी कि मेंढक की टाँगों के निर्यात के मसले पर बेवजह इतना हो-हल्ला हो रहा है। मेंढक का निर्यात होने से इतना नुकसान होने वाला नहीं। यह एक अवैज्ञानिक सोच का नतीजा है।

वैज्ञानिकों की राय थी कि मेंढक के निर्यात पर प्रतिबंध लगाकर सरकार ने रोज़गार और विदेशी मुद्रा के अच्छे स्रोत को खत्म कर दिया है। हमारे देश में मेंढक की लगभग 112 जातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से केवल तीन बड़ी जातियों (राना टिग्रीना, राना क्रासा और राना हैसाडैक्टाइला) का निर्यात किया जाता है। जहाँ तक हानिकारक कीड़ों-मकोड़ों के भक्षण का सवाल है, मेंढक की हर जाति समान रूप से प्रभावकारी है, बल्कि देखा यह गया है कि निर्यात की जाने वाली बड़ी जातियां छोटे कीड़ो-मकोड़ों का शिकार नहीं करतीं। इसलिए इन तीन मेंढकों की संख्या कम होने से खेती पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ने वाला।

8.7.3 अंत एवं शीर्षक

"अंत" फीचर का तीसरा और अंतिम भाग है। अनुपातिक दृष्टि से वह भाग छोटा किंतु महत्वपूर्ण है। कुछ उदाहरण देखें–

ब्रह्माण्ड किरणों के अनुसंधान के क्षेत्र में हमारा योगदान अंतर्राष्ट्रीय स्तर का और महत्वपूर्ण है। "अनुराधा" से मिले आंकड़े और जानकारी से हमारे वैज्ञानिकों के हौसले बुलंद होंगे और ब्रह्माण्डीय किरणों के शोध को नयी दिशा मिलेगी, इसमें संदेह नहीं।

(**अनुराधा से अंतरिक्ष की खोज** : धीरेन्द्र कुमार दीक्षित, **जनसत्ता**, 17 फरवरी, 1991)

बृहस्पति सौर मंडल का सबसे बड़ा ग्रह है–इसके विवरण पर आधारित गुणाकर मुले के लिये फीचर का अंतिम भाग देखिए–(**गैलीलियो की बृहस्पति यात्रा : जनसत्ता**, 5 नवंबर, 1989)

बृहस्पति, अपने सोलह चंद्रों सहित, सौर-मंडल के भीतर एक प्रकार की स्वतंत्र योजना है। बृहस्पति के वायुमंडल में वह द्रव्य आज भी मौजूद है जिससे करीब पांच अरब पहले साल हमारे सूर्य और ग्रहों का सृजन हुआ था। बृहस्पति के वायुमंडल को जानने का अर्थ है सौर-मंडल को जन्म देने वाले द्रव्य की आदिम परिस्थितियों को जानना।

उपर्युक्त उदाहरणों से आपने अनुमान लगाया होगा कि अन्य फीचर की भाँति विज्ञान फीचर के अंत में समीक्षा या निष्कर्ष की संभावनाएं कम होती हैं। विज्ञान फीचर के लेखक का मुख्य दायित्व संबंधित विषय, अनुसंधान या आविष्कार की जानकारी देना है, अतः उसमें संदेश की गुंजाइश भी कम होती है। लेकिन विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित फीचर लेखों में संदेश, सुझाव या चेतावनी दी जा सकती है, दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए देखें–"**रास्ते और भी हैं पेट्रोल के सिवा**", शीर्षक से डॉ. जगदीप सक्सेना के लिखे फीचर का अंत (**जनसत्ता**, 18 नवंबर, 1990)।

वर्तमान खाड़ी संकट खत्म होने के बाद भी पेट्रोल संकट को खत्म समझना बुद्धिमानी नहीं होगी। क्योंकि एक न एक दिन पेट्रोल खत्म होना है। ऐसी कयामत आने से पहले पेट्रोल के विकल्पों को व्यावहारिक स्तर पर लाना ज़रूरी है।

इसमें लेखक ने पेट्रोल की समस्या पर अंत में चेतावनी देने की कोशिश की है। जो विज्ञान फीचर जानकारी के साथ-साथ सामाजिक चेतना को जगाने का दायित्व भी निभाते हैं, जैसे—नशीली दवाओं, शराब, खेती और पर्यावरण से जुड़े विषय, ऐसे फीचर के अंत में लेखक अपने सुझाव भी रख सकता है। उदाहरण के लिए रणबीर सिंह के लिखे **"क्या खुद ही गायब हुए हैं चीते"** का अंत देखिए (**जनसत्ता**, 3 सितंबर, 1989)।

अनुसंधान से यह स्पष्ट हो चुका है कि आनुवंशिक रूप से चीता एक कमज़ोर प्राणी है। अब अफ्रीका के अलावा चीता मुक्त वातावरण में और कहीं नहीं है। लेकिन जिन अफ्रीकी चीतों में थोड़ी बहुत आनुवंशिक भिन्नता (जेनेटिक पालीमारफिज़्म) मौजूद है उन्हें अन्य नर या मादा चीतों के संपर्क में लाकर प्रजनन कराया जा सकता है, ताकि इनकी संतान में जाने वाले जीवन सूत्रों में विविधता आ सके। फिर इन नये चीतों को इनके पुराने प्राकृतिक घर भारत, ईरान, सोवियत संघ, सउदी अरब, उत्तरी अमेरिका और यूरोप में छोड़ा जा सकता है।

विज्ञान फीचर का शीर्षक विषय का संकेत देने वाला हो। लेकिन उसे रोचक रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। विषय में अगर किसी समस्या का उल्लेख है तो उसे शीर्षक में शामिल करना चाहिए जैसे—**"क्या खुद ही गायब हुए हैं चीते"** या **"त्रासदी है मेंडक की जिंदगी"**। इन शीर्षकों में समस्या को शामिल किया गया है। विज्ञान के किसी क्षेत्र की जानकारी देने वाले विषय में विषय का उल्लेख हो जैसे—**"क्यों आते हैं हिम युग"** या **"ब्रह्माण्ड के रहस्यों के लिए एक टेलिस्कोप"**।

शीर्षक स्पष्ट हो और बहुत लंबा न हो तथा उसे आकर्षक बनाकर पेश करना चाहिए।

8.7.4 भाषा एवं शैली

विज्ञान संबंधी विषयों में तार्किकता उसका आधार होती है जिसके पीछे कोई न कोई खोज होती है। और खोज के लिए कोई न कोई ऐसा ज्ञान होता है जो सामान्य व्यक्ति की समझ से बाहर होता है जब तक कि उसे बाकायदा समझाया न जाए। इसलिए विज्ञान फीचर लिखना मुश्किल और कठिन कहा जा सकता है। परंतु इसमें एक आसानी और सुविधा यह भी है कि अलंकारिक और साहित्यिक भाषा की आवश्यकता नहीं होती वरन् सरल और सामान्य भाषा में विषय को पाठक के समक्ष रख देना होता है। एक उदाहरण देखें **"आसान होगी अब अस्थि-चिकित्सा"** से, लेखक डॉ. यतीश अग्रवाल (**जनसत्ता** : 17 फरवरी, 1991)।

आज रूस में इलिजरोव तकनीक के कई रूप उपयोग में लाए जा रहे हैं। पर मोटे तौर पर इसका आधार कुछ इस तरह है: सबसे पहले उस हड्डी के ऊपरी और निचले हिस्सों में बाहर से ही महीन तार डाले जाते हैं। ये गिनती में तीन या चार तक हो सकते हैं। इन तारों को टांग-बांह पर कड़े पहनाकर उनसे जोड़ दिया जाता है। इसके बाद ऊपर और नीचे के कड़ों को आपस में स्टील की छड़ों से जोड़ दिया जाता है। इस दौरान यह ध्यान रखा जाता है कि हड्डी ठीक से बैठी हो। यदि ज़रूरत होती है, तो टूटे हुए टुकड़ों को जोड़ने के लिए उनके बीच भी तार डाल दी जाती है, जो कड़ों के रास्ते छड़ से जुड़ जाती है।

इसके बाद मरीज़ अपने कामकाज पर लौट सकता है। उसे किसी प्लास्टर की ज़रूरत नहीं होती।

उपर्युक्त उदाहरण में आपने देखा कि विषय को कितने सरल, सहज तरीके से समझाया गया है। भाषा सरल है, वाक्य छोटे हैं और पैराग्राफ भी छोटे हैं।

विज्ञान फीचर की शब्दावली आम फीचर से बहुत भिन्न हो जाती है। यद्यपि कुछ शब्द अब आम व्यक्ति के लिए नये नहीं रहे, जैसे—अल्कोहल, आक्सीजन, बैटरी, तापमान, स्पेस, अणु, परमाणु आदि किंतु फिर भी अनेक शब्द आम व्यक्ति के लिए नए होते हैं, जैसे—मीथेनाल (मेथिल अल्कोहल) इथेनाल (एथिल अल्कोहल), हीलियम (हाइड्रोजन जैसी हल्की गैस) प्रक्षेपित (दागना)...आदि। विषय के अनुसार सभी शब्दों का ज्ञान आवश्यक है।

विज्ञान से संबंधित ऐसे पारिभाषिक शब्द या अवधारणा जिससे आम पाठक परिचित नहीं है फीचर में प्रयुक्त करते वक्त उनकी व्याख्या भी साथ में दे देनी चाहिए। आमतौर पर जो शब्द जिस रूप में प्रचलित हैं उनको उसी रूप में इस्तेमाल करना चाहिए चाहे वे विदेशी शब्द ही क्यों न हों। ऐसे प्रचलित शब्दों के अप्रचलित हिंदी अनुवाद आम पाठक के लिए कठिनाई ही पैदा करते हैं।

जहाँ तक शैली का प्रश्न है, विज्ञान से संबंधित फीचर की शैली आमतौर पर वर्णनात्मक होती है। वहाँ प्रत्येक बात को तार्किक ढंग से और सुलझे हुए रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। अपनी बात की पुष्टि के लिए आवश्यकतानुसार वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों को उद्धृत करना चाहिए। बीच-बीच में जीवनानुभवों, उदाहरणों द्वारा फीचर को रोचक बनाना चाहिए। यह तभी संभव है जब आपका अनुभव और अभिव्यक्ति क्षमता समृद्ध हो

बोध प्रश्न

7) विज्ञान से संबंधित फीचर की शैलीगत विशेषताएँ बताइए–

.....

.....

.....

.....

.....

8) विज्ञान से संबंधित फीचर की भाषागत विशेषताएँ बताइए–

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

4) घरेलू जीवन में बिजली की उपयोगिता पर एक फीचर का आरंभिक अंश लिखिए जिसमें बिजली के बिना जीवन कैसा होगा, इसकी कल्पान की गई हो। उत्तर लगभग 6-7 पंक्तियों में लिखें–

.....

.....

.....

.....

.....

5) बिजली के अपव्यय पर लगभग 6-7 पंक्तियों में प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8.8 सारांश

इस इकाई में हमारा उद्देश्य आपको विज्ञान फीचर से परिचित कराना और उसके लेखन

के लिए तैयार करना रहा है। आपने इस इकाई में जाना कि किसी भी विषय को तर्क और बुद्धि के आधार पर प्रस्तुत करना विज्ञान है।

- विज्ञान फीचर लेखन के लिए विषयों का व्यापक दायरा है, क्योंकि विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र हैं, जैसे चिकित्सा, कृषि, वनस्पति, भू, रसायन, भौतिकी आदि। लेखन की दृष्टि से इन्हें तीन मुख्य भागों में विभक्त किया जा सकता है। विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित, सामाजिक उपयोगिता से संबंधित और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित।
- विज्ञान फीचर में तथ्यों का बड़ा महत्व है अतः फीचर लेखन के लिए आपका शोध कार्य महत्वपूर्ण होता है। जानकारी का स्रोत क्या है और उसमें जो बात कही गई है, वह किन दलीलों पर आधारित है। सामग्री संकलन के बाद फीचर को आरंभ, मध्य और अंत तीन भागों में विस्तार दिया जा सकता है। भाषा का सरल होना, विषय से जुड़े मुद्दों का स्पष्टीकरण ज़रूरी है। सहज, सुरुचिपूर्ण शैली, छोटे वाक्य पाठक की रुचि कायम रख सकते हैं।

आशा है इस इकाई को पढ़ने के बाद आपको विज्ञान फीचर को समझने में मदद मिली होगी। और अपनी विशेषता और रुचि से संबंधित विषयों पर विज्ञान फीचर लिखने की ओर आपका रुझान बढ़ेगा। बार-बार अभ्यास करते रहने से आपके लेखन में निखार आएगा।

8.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) सुव्यवस्थित ज्ञान को विज्ञान कहते हैं। परंतु विज्ञान का अर्थ यह भी है कि सृष्टि में व्याप्त प्रत्येक वस्तु, प्राणी एवं विचार के बारे में तार्किक और बौद्धिक ढंग से विचार करना। विज्ञान में किसी भी बात पर इसलिए विश्वास नहीं कर लिया जाता कि वह पुस्तकों में लिखी है या हमारे पूर्वज ऐसा मानते थे बल्कि तर्क और प्रयोग द्वारा जिसकी सच्चाई स्थापित की जा सके विज्ञान उसे ही मानता है।

2) i) विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित

   ii) विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता से संबंधित

   iii) वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित

3) वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में हम बहुत सी ऐसी बातों में विश्वास करने लगते हैं जिसका हमारे जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। बहुत से लोग मानते हैं कि छींक आने पर बाहर नहीं जाना चाहिए अन्यथा कुछ नुकसान हो सकता है। बिल्ली के रास्ता काटने पर लौट आना चाहिए नहीं तो काम बिगड़ सकता है। ऐसी बातों में विश्वास करने से संभव है हम इंटरव्यू में समय पर न पहुंच पाएँ या परीक्षा से पहले ही निरुत्साहित हो जाएं।

4) i) विज्ञान संबंधी विषयों में रुचि हो।

   ii) विज्ञान संबंधी पत्र-पत्रिकाओं का नियमित अध्येता हो।

   iii) विज्ञान संबंधी विचार-गोष्ठियों में भाग ले।

5) विज्ञान पर लिखा फीचर प्रासंगिक होने से पाठक अधिक रुचि लेगा। लोगों को संबद्ध घटना या पक्ष को समझने में सहायता मिलेगी तथा उसका प्रकाशन भी आसान होगा।

6) सामग्री का संकलन विज्ञान फीचर के विषय पर निर्भर करेगा। फिर भी विषय के संबंध में पर्याप्त अध्ययन और उससे प्राप्त जानकारी, संबद्ध वैज्ञानिकों तथा विशेषज्ञों का मत, संबद्ध तथ्य, आंकड़े तालिकाएँ चित्र आदि एकत्र करने चाहिए।

7) एवं 8) देखिए उपभाग 19.7.4

अभ्यास

1) क) विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित

ख) विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता से संबंधित

ग) वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित

घ) वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित

ङ) विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित

2) अपने अनुभव के आधार पर स्वयं लिखिए।

3) i) भाग्यवाद की अवधारणा पर वैचारिक सामग्री

ii) भाग्यवाद के जीवन पर कुप्रभाव संबंधी तथ्य

iii) भाग्यवाद के वैज्ञानिक विश्लेषण पर मत

iv) वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों, विचारकों एवं आम लोगों के विचार

4) स्वयं लिखिए। एक उदाहरण देखिए–

रात के नौ बजे हैं। आप टी.वी. के सामने बैठे हैं। आपका पसंदीदा धारावाहिक आरंभ होने वाला है। आप पिछले सप्ताह से इस दिन का इंतजार कर रहे हैं कि आप धारावाहिक का अगला भाग देखें। लेकिन एकाएक बिजली चली जाती है। चारों ओर घुप्प अंधेरा। उस समय आपकी मानसिक दशा कैसी होती होगी, आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं। कभी आपने सोचा है कि बिना बिजली के जीवन कैसा होगा? जीवन में केवल अंधेरा ही नहीं छा जाएगा और भी बहुत कुछ हमसे छिन जाएगा।.....

आप ऐसे ही रोचक ढंग से फीचर का आरंभिक अंश लिख सकते हैं।

5) बिजली की उपयोगिता और उसके पर्याप्त उत्पादन की कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए बिजली के अपव्यय पर प्रकाश डालिए।

इकाई 9 खेल कूद में फीचर लेखन

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य
9.1 प्रस्तावना
9.2 खेल फीचर का अभिप्राय
9.3 खेल फीचर के प्रकार
  9.3.1 खेल आधारित
  9.3.2 खिलाड़ी आधारित
  9.3.3 प्रतियोगिता आधारित
  9.3.4 अन्य खेल फीचर
9.4 विषय का चयन
  9.4.1 रुचि एवं विशेषज्ञता
  9.4.2 प्रकाशन की प्रकृति
  9.4.3 विषय की प्रासंगिकता
9.5 सामग्री का संकलन
  9.5.1 विषय पर शोध
  9.5.2 तथ्यों का संकलन
  9.5.3 फोटो
  9.5.4 साक्षात्कार
  9.5.5 अन्य स्रोत
9.6 सामग्री का संयोजन एवं संपादन
9.7 फीचर का लेखन
  9.7.1 आरंभ
  9.7.2 मध्य
  9.7.3 अंत एवं शीर्षक
  9.7.4 भाषा एवं शैली
9.8 शब्दावली
9.9 सारांश
9.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें
9.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

सृजनात्मक लेखन में फीचर एक ऐसी आकर्षक विधा है, जिसे अब लेखन के हर क्षेत्र में प्रयोग में लाया जा रहा है। यद्यपि भारत में खेल पत्रकारिता का अभी आरंभिक दौर ही चल रहा है किंतु "फीचर विधा" ने इसे भी आकर्षक और प्रभावी बना दिया है।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- खेल फीचर का क्या अभिप्राय है, यह बता सकेंगे;
- उसके प्रकारों का उल्लेख कर सकेंगे;
- खेल फीचर लिखने के लिए विषय का चयन कर सकेंगे;
- फीचर से संबंधित सामग्री का संकलन कर सकेंगे;
- सामग्री का उचित प्रयोग, संयोजन और संपादन कर सकेंगे; और
- खेल फीचर में अपना कौशल बढ़ा सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

भारत में, यह कोई बहुत पुरानी बात नहीं है कि यहां खेलों से जुड़े युवाओं को बहुत अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था। खेल केवल राजाओं और नवाबों या कुछ विशेष क्लबों की देख-रेख में ही होते थे। व्यवस्थित रूप से न सरकार की ओर से खिलाड़ियों को कोई प्रोत्साहन था और न ही घरों में माता-पिता की ओर से। क्योंकि माता-पिता की दृष्टि में खेलों से जुड़ने में समय की बर्बादी के साथ-साथ शिक्षा पर भी असर पड़ता था। लेकिन अब स्थिति बदली है। अब घरों से लेकर शहर और देश में खिलाड़ी को इज्जत की नज़र से देखा जाता है। उसे सम्मान प्राप्त है, सरकार की ओर से विभिन्न प्रोत्साहन भी मिल रहे हैं और अर्थ प्राप्ति के द्वार भी खुले हैं।

खेलकूद के प्रति इस बदले हुए माहौल से खेल-पत्रकारिता को भी जीवन प्राप्त हुआ है। आज खेल-परिणामों के अतिरिक्त विस्तृत लेख भी खेल-प्रेमियों की भूख मिटाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। अतः अब पत्र-पत्रिकाओं में खेल-फीचर को स्थान दिया जा रहा है। फीचर लेखन का वह निखरा हुआ रूप है, जिसमें कुल मिलाकर दिलचस्पी के सभी सामान एकत्र होते हैं।

खेल फीचर लिखने के लिए आपको क्या तैयारियां करनी होंगी? कौन-से गुण अच्छे फीचर लेखन में सहायक होंगे? विषय-चयन से लेकर सामग्री संकलन और उसके संपादन तक आपको किन परिस्थितियों से गुज़रना होगा, इन सबकी चर्चा इस इकाई में की जा रही है जिसे पढ़कर आप आकर्षक खेल फीचर लिखने में कामयाब हो सकते हैं।

यह इस पाठ्यक्रम के दूसरे खंड की छठी इकाई और पाठ्यक्रम की नौवीं इकाई है। इससे पहले वाली इकाई में आपने विज्ञान विषय पर फीचर का अध्ययन किया था। इस इकाई में खेलकूद पर फीचर का अध्ययन करेंगे।

9.2 खेल-फीचर का अभिप्राय

खेल-फीचर से अभिप्राय खेलों पर लिखे जाने वाले फीचर से है किंतु इनके आलेख तैयार करने के लिए खेल-फीचर से पूरा परिचय आवश्यक है। फीचर, लेखन की एक आकर्षक शैली है और खेलों के संदर्भ में, जहां कि आंकड़े महत्वपूर्ण होते हैं और उनकी भरमार रहती है, इस शैली को अपनाना अभ्यास और निपुणता पर अधिक निर्भर है। कहने का तात्पर्य है, खेल संबंधी किसी विषय पर सजा-संवार कर लिखे गए आलेख को खेल-फीचर कहते हैं। इसमें निम्नलिखित तत्व महत्वपूर्ण हो सकते हैं:

- जानकारी/समाचार
- तथ्य
- तारतम्यता
- सम्बद्धता
- आकर्षक भाषा-शैली

खेल-जगत में तात्कालिक समाचारों का महत्व सबसे अधिक होता है। खेलों के परिणामों को तुरंत जानने की उत्सुकता के कारण ही रेडियो और दूरदर्शन की खेल-सेवाएं भी आज इतनी लोकप्रिय हो रही हैं। किंतु समाचारों के बाद "लेख" की महत्ता होती है। कारण है, विस्तार पूर्वक समाचार सहित विवरण और महत्वपूर्ण आंकड़ों का अधिक ब्यौरा। इसी वजह से दैनिक या साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं की महत्ता है। किंतु लेखों से भी अधिक महत्वपूर्ण, आकर्षक और स्थायी होते हैं "फीचर" जिनमें लेख की विशेषताएं तो होती ही हैं, लेखक की अपनी शैली और सम्बद्धता (involvement) के अतिरिक्त गुण भी होते हैं जो फीचर पढ़ने के लिए हमेशा उकसाते हैं। इसलिए आज फीचर को दैनिक समाचार-पत्रों से लेकर साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाओं में, खेल पत्रिकाओं में स्थान दिया जा रहा है।

जहां तक "खेल" की बात है, आज इसका अर्थ केवल किसी मैदान या किसी स्थान पर

खेले गए किसी विशेष खेल से ही नहीं रह गया है वरन् इसका अर्थ अब व्यापक हो गया है। "खेल" शब्द के दायरे में जो लोग और स्थान जुड़ते हैं, वे हैं:

1) विशेष खेल
2) विशेष खिलाड़ी
3) खेलों की गतिविधियों से जुड़े अन्यत्र लोग, जैसे—कोच, मैनेजर, अम्पायर, खेल कमेंटेटर, खेल समीक्षक आदि।
4) खेलों से जुड़ी विभिन्न प्रतियोगिताएं, जैसे—रणजी ट्राफी, चैम्पियन्स ट्राफी, डेविस कप, विंबलडन, एशियाई खेल और ओलम्पिक खेल आदि।

उपर्युक्त सभी विषयों पर "खेल फीचर" तैयार हो सकते हैं। कुछ अन्य विशेषताएं जो खेल फीचर में होती हैं, वे हैं:

- खेलों की अपनी शब्दावली होती है, जैसे—रन, मेडेन, गली, स्लिप, पेनल्टी कॉर्नर, पेनलटी स्ट्रोक, फ्री हिट आदि।
- विशिष्ट समीक्षात्मक दृष्टिकोण (समाचार को अपने दृष्टिकोण से देना होता है)
- तुलनात्मक आंकड़े

9.3 खेल फीचर के प्रकार

खेलों का संसार बहुत व्यापक है। तरह-तरह के खेल और उनसे जुड़ी सैंकड़ों तरह की प्रतियोगिताएं, उनसे जुड़े हजारों खिलाड़ी आदि के बारे में जानना आसान काम नहीं है। इसलिए बेहतर यही है कि इस क्षेत्र में लेखन से पहले हम यह तय कर लें कि हमें किन-किन खेलों के लेखन में सक्रिय होना चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखकर हम यहां खेल फीचर के विभिन्न प्रकारों पर विचार करेंगे। इसे हम मुख्यतः चार भागों में विभक्त कर सकते हैं:

- खेल आधारित
- खिलाड़ी आधारित
- प्रतियोगिता आधारित
- अन्य खेल फीचर

9.3.1 खेल आधारित

फीचर के इस प्रकार का चयन बहुत आसान है क्योंकि कई तरह के खेल खेले जाते हैं—कबड्डी, फुटबॉल, टेनिस, हॉकी, क्रिकेट, वालीबाल, बास्केटबाल, बिलियर्ड, गोल्फ, शतरंज, कुश्ती, बैडमिंटन आदि किसी भी खेल का चयन किया जा सकता है और इस पर फीचर लिखा जा सकता है। सीधे खेल से संबंधित फीचर होने के कारण इसे खेल आधारित फीचर कहेंगे। अब खेल आधारित फीचर लिखने के कौन-से तरीके हो सकते हैं, यह जान लेना जरूरी है। लेखन में आपकी पैनी-नज़र और खेल संबंधी जानकारी मदद करती है। कुछ क्षेत्र हैं, जिन पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है, जैसे

- खेल के नियम
- खेल का इतिहास
- खेल से जुड़ी सामग्री
- खेल तकनीक
- अच्छा खेल कैसे खेलें
- खेल की लोकप्रियता

"**कितना पैसा है फुटबाल में**" शीर्षक से 24 जून, 1990 के **साप्ताहिक हिंदुस्तान** में जसमिंदर लिखित फीचर की ये आरंभिक पंक्तियां प्रस्तुत हैं:

इसमें कोई शक नहीं है कि लोकप्रियता के मामले में फुटबाल विश्व का पहले नम्बर का खेल है। जो कुछ खास कारण इसे विश्व का सबसे लोकप्रिय खेल बनाते हैं, उनमें से एक यह है कि खेलने में यह बेहद सस्ता खेल है। बस समझ लीजिए कि अगर फुटबाल पास में हो तो भी खेल शुरू हो सकता है, न किसी मंहगे उपकरण की जरूरत और न किसी खास तरह के स्टेडियम की जरूरत।

इन पंक्तियों में फुटबाल की सहजता और सरलता को फीचर शैली में लिखा गया है।

किसी विशेष मैच या मुकाबले को भी खेल आधारित फीचर के अंतर्गत रखा जा सकता है। नीचे एक उदाहरण देखें, जिसे सुरेश चौहान लिखित **"कुश्ती इतिहास के वे दो रोमांचक मुकाबले"** फीचर से लिया गया है:

1908 में इन दो पहलवानों के बीच एक बार पुनः लंदन में मुकाबला आयोजित किया गया। विजेता को सौ पौंड का इनाम देने की घोषणा की गई। जार्ज ने विशेष कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षण लेना प्रारंभ कर दिया। निर्धारित दिन "दि टेरिबल टर्क" तथा "दी रमियन लायन" फिर आमने-सामने थे। मुकाबला देखने के लिए दर्शक उमड़ पड़े थे। लोगों का विचार था कि इस बार अहमद भारी पड़ेगा। उनके अनुभवों में काफी हद तक सत्यता भी थी। मगर जार्ज को इस बार भी अपनी बुद्धि पर भरोसा था।

9.3.2 खिलाड़ी आधारित

विभिन्न खेलों से जुड़े विभिन्न खिलाड़ियों को आप फीचर का विषय बना सकते हैं। इनमें उस खिलाड़ी से जुड़े विवरण से लेकर उससे जुड़े वाद-विवाद को दर्शाया जा सकता है। जरूरी नहीं कि खिलाड़ी लोकप्रिय और प्रतिष्ठित हों। नए और उभरते हुए खिलाड़ियों को भी लिया जा सकता है। **"खेल हलचल"** पत्रिका में प्रकाशित **"उभरते हुए सितारे"** फीचर का यह अंश देखिए:

(बारह वर्ष से कम उम्र के खिलाड़ियों में) रोहित को गेंदबाजी करते हुए जिसने भी देखा है, उसे इंग्लैंड के महान तेज़ गेंदबाज़ फ्रेडीट्रूमेन की याद आना लाज़मी है। रोहित तगड़े-ऊंचे कद के हैं और उनकी गति अत्यधिक तेज़ है। हाल ही में मद्रास में सम्पन्न हुई स्कूल की न्यूट्रीन स्पर्धा में रोहित ने डॉन बोस्की स्कूल का नेतृत्व किया था। यही नहीं, मद्रास का नेतृत्व करते हुए रोहित ने संयुक्त जिलों की टीम को पराजित किया था।

एक अन्य उदाहरण में टेनिस खिलाड़ी बोरिस बेकर का जिक्र इस तरह है:

बेकर शुद्ध रूप से एक आक्रामक खिलाड़ी हैं—प्वांइट बनाने के बाद और पहले भी। कोई भी प्रतिस्पर्धा हो वे साहसपूर्वक डटे रहते हैं। अंतिम मैच में केविन करेन के विरुद्ध कोर्ट बदलते हुए करेन से कंधा भिड़ाकर वे चलते थे। भविष्य में बोरिस बेकर लगता है कई गुल खिलाएंगे।

किसी खिलाड़ी पर फीचर लेखन से पूर्व जो जानकारी और समीक्षात्मक दृष्टि उपयोगी हो सकती है, उसमें मुख्य है:

- खेल के प्रति खिलाड़ी का समर्पण
- उसका खेल, उसकी शैली
- उसका पूर्व इतिहास
- उससे भविष्य की आशाएं
- अन्य खिलाड़ियों से उसकी तुलना
- उसके अन्य शौक और पारिवारिक विवरण
- उसका अपना स्वभाव
- अन्य कोई विशेषता

एक उदाहरण देखें—इसे मनूभाई लिखित **"राष्ट्रीय शतरंज चैम्पियन वर्गीज़ कोशी"** से लिया गया है:

कोई अजनबी वर्गीज़ कोशी के कमरे में चला जाए तो किताब में डूबी दाढ़ी वाली उस आकृति को देखकर उसे यही लगेगा कि किसी प्रोफेसर के पास आ गया है। राष्ट्रीय शतरंज चैंपियन वर्गीज़ कोशी आज भी एक शोधकर्ता की तरह शतरंज विषयक पुस्तकों का नित्य घंटों अध्ययन करते हैं। अन्य खिलाड़ियों के लिए शतरंज एक पेशा या शौक हो सकता है परंतु कोशी के लिए जीवन है। उनका कहना है कि शतरंज के खिलाड़ी को इस खेल के विकास के लिए कुछ न कुछ योगदान करना चाहिए। स्वयं वर्गीज़ ने इस पर किस हद तक अमल किया, उसका अंदाज़ इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके जमशेदपुर आने के बाद यहां प्रतिवर्ष सात-आठ शतरंज के टूर्नामेंट होने लगे हैं।

9.3.3 प्रतियोगिता पर आधारित

आपके अपने जिले से लेकर राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल प्रतियोगिताएं आयोजित होती रहती हैं।

ओलम्पिक खेल, विश्व कप क्रिकेट, विश्व कप फुटबाल, विश्व कप हॉकी, विम्बलडन, फ्रेंच ओपन आदि कुछ प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं हैं। इनमें से विभिन्न प्रतियोगिताएं दो-दो और चार-चार वर्षों के अंतराल से आयोजित होती हैं। विभिन्न राष्ट्र इनके आयोजन का दायित्व और जिम्मेदारी संभालते हैं तथा आयोजनों को इस भव्य पैमाने पर करते हैं कि मेला-सा लगता है। इनके अतिरिक्त हमारे अपने देश में भी खेलों की विभिन्न लोकप्रिय प्रतियोगिताएं हैं—राष्ट्रीय हॉकी, डूरेंड कप फुटबाल, रणजी ट्राफी (क्रिकेट), दिलीप ट्राफी (क्रिकेट), आगा खान कप (हॉकी) आदि। इन प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन करने पर खिलाड़ियों के राष्ट्रीय टीमों में चुने जाने की संभावना बढ़ जाती हैं। इनके अतिरिक्त, राज्य और जिला स्तरों पर भी विभिन्न खेलों की प्रतियोगिताएं आयोजित होती रहती है। आप इनमें से किसी प्रतियोगिता पर फीचर लिख सकते हैं। ऐसे विषय या तो प्रतियोगिता आरंभ होने से पूर्व लिखे जा सकते हैं या प्रतियोगिता के दौरान। आलेख में आपके लिए मुख्य बिंदु होंगे:

- प्रतियोगिता का इतिहास
- पिछले रिकार्ड
- होने वाली प्रतियोगिता की तैयारियां
- होने वाली प्रतियोगिता में मुकाबलों और संघर्ष क संभावनाएं आदि।

किसी विशेष प्रतियोगिता की समाप्ति पर भी फीचर तैयार किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में आपको जिन बिंदुओं पर ध्यान देना होगा, वे हैं:

- प्रतियोगिता का पैमाना
- कितने खिलाड़ियों और कितनी टीमों ने भाग लिया
- टीमों और व्यक्तिगत खिलाड़ियों के उल्लेखनीय प्रदर्शन
- रोमांचक स्थितियां एवं परिणाम
- संपूर्ण प्रतियोगिता में खेल स्वर
- भविष्य में प्रतियोगिता के आयोजन और उसकी संभावनाओं पर विचार।

नीचे दिया जा रहा उदाहरण देखिए जिसमें किसी प्रतियोगिता पर लिखे फीचर की शैली का अंदाज़ा होता है:

विम्बलडन के दर्शकों के दुख का अंतिम वर्ष 1967 था। लेकिन ऑस्ट्रेलिया ने एक बार फिर दिखा दिया कि उनके पास अपार उभरती प्रतिभा सुरक्षित है। सिडनी का तेईस वर्षीय जॉन न्यूकांब विश्व के महान एमेच्चर खिलाड़ी बनकर सामने आए। शक्तिशाली और सुंदर व्यक्तित्व वाले न्यूकांब ने सुनहरा प्रदर्शन कर पश्चिम जर्मनी के अठाईस वर्षीय विल्हेम बर्गट को 6-3, 6-1, 6-3 से हराकर निराशाजनक फाइनल को जीता। बर्गट फाइनल में अपने को स्थिति के अनुरूप नहीं ढाल पाए। बॉबी विल्सन, बोमज कोच और राजर टेलर तीनों ही खिलाड़ियों को पांच सेटों में मात देकर फाइनल में पहुंचने वाले बर्गट पहले जर्मन खिलाड़ी बने थे।

प्रतियोगिता पर लिखे फीचर में तुलनात्मक दृष्टि और समीक्षात्मक पकड़ होना जरूरी है।

दसवें राष्ट्रीय महिला खेल कोयंबटूर में आयोजित हुए थे, उन पर लिखे इस उदाहरण से बात और स्पष्ट होगी:

> *वॉलीबाल और बास्केटबाल के स्वर्ण पदक तमिलनाडू ने हथियाये। हैंडबाल और हॉकी के खिताब कर्नाटक ने जीते। हैंडबाल की सुपरलीग में कर्नाटक और महाराष्ट्र के 55 अंक थे। किंतु बेहतर गोल औसत के कारण कर्नाटक की लड़कियां स्वर्ण ले उड़ीं। हॉकी में कर्नाटक ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन करके स्वर्ण पदक पाया। लीग कम नॉक आउट के आधार पर खेले गए हॉकी मुकाबलों में कर्नाटक ने अंतिक मुकाबले में केरल को 5-1 से हराया।*

9.3.4 अन्य खेल फीचर

खेल, खिलाड़ी और किसी प्रतियोगिता से हटकर भी कई ऐसे विषय हो सकते हैं जो खेल फीचर के अंतर्गत आते हैं। स्पष्ट है कि इनका प्रत्यक्ष न सही अप्रत्यक्ष रूप से तो खेलों से संबंध होता है। ऐसे कुछ विषय हो सकते हैं:

- किसी खेल मैदान, स्टेडियम पर आधारित
- किसी खेल कमेंटेटर, खेल पत्रकार पर आधारित
- खेल प्रशिक्षक, खेल अधिकारी पर आधारित
- किसी अम्पायर, रेफरी या निर्णायक पर आधारित
- खेलों से जुड़े दर्शक, श्रोता, पाठक या किसी स्थान विशेष पर आधारित।

उदाहरण के लिए दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम पर एक फीचर तैयार किया जा सकता है। क्रिकेट के मैदानों और स्टेडियम को लेकर विभिन्न फीचर लिखे गए हैं जैसे लार्डस्, लीड्स, फीरोजशाह कोटला, ग्रीन पार्क आदि क्योंकि क्रिकेट में मैदानों पर "पिच" बड़ी मेहनत से तैयार की जाती है और खेल का दारोमदार बहुत कुछ "पिच" की मेहरबानी पर रहता है। अब तक खेलों में पत्रकार या खेल कमेंटेटर के सहयोग को नकारा जाता रहा है। जबकि खेल की भव्यता और खेल में, चाहे व्यक्तिगत रूप से हो या सामूहिक रूप से, निखार लाने में इन व्यक्तियों का बड़ा योगदान होता है। खेल पत्रकार एक समीक्षक की पैनी नज़र रखता है। वह खिलाडियों को सही समय पर पहचानता है, अपने प्रयासों से प्रोत्साहन देता है। और यह नहीं भूलना चाहिए कि सही समय पर खिलाड़ी को मिला प्रोत्साहन ही उनका उचित पुरस्कार होता है। यही कार्य खेल प्रशिक्षक और खेल मैनेजर भी करते हैं। प्रशिक्षक तो खेल से पूर्व और विभिन्न खेलों में खेल के समय भी (जैसे—वॉलीबाल में) तकनीक को समझाने वाला होता है। किंतु हां, सबमें सभी को महारत हासिल नहीं हो सकती। इसलिए ऐसी सही नामों का चयन पहले आवश्यक है जिनके पास अपना अनुभव हो। खेल समीक्षक और कमेंटेटर में जसदेव सिंह, नरोत्तम पुरी, खेल प्रशिक्षक में पी.टी. ऊषा के प्रशिक्षक नांबियार पर फीचर लिखे गए हैं।

इसी प्रकार खेलों को सही रूप से संचालित करने में अंपायर, रेफरी और निर्णायकों का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान होता है। उदाहरण के लिए, अम्पायर स्वरूप सिंह को तो उनकी सेवाओं के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार पद्मश्री से सम्मानित किया गया। निर्णायकों की जीवनी, उनके अनुभव और उनकी अपनी टिप्पणियों पर भी फीचर लिखे जा सकते हैं जो निश्चित रूप से खेलकूद को बढ़ावा देने में कारगर साबित होंगे।

इसी प्रकार दर्शक या श्रोता या पाठक यदि खेलों में दिलचस्पी न लें, खिलाड़ियों की चर्चा न करें, उन्हें प्रोत्साहन न दें तो खेलों से जुड़ा मनोरंजन एकतरफा होकर रह जाएगा जो नीरस भी होगा। आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं—एक ऐसे मैदान पर जहां बड़े-बड़े खिलाड़ी खेल हों और दर्शक न हों, वहां वह खेल कितना सूना लगेगा फिर चाहे वहां बड़े-बड़े रिकार्ड ही क्यों न बन रहे हों। पर दर्शकों के बीच छोटे स्तर के खिलाड़ियों का खेल भी महत्वपूर्ण हो उठता है। फीचर के लिए इनको भी विषय बनाया जा सकता है। उनके अनुभव, उनकी प्रतिक्रियाएं इसका आधार हो सकती हैं।

दर्शकों की दिलचस्पी और उनके शौक के कारण ही कई स्थान भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, हॉकी में भोपाल और पंजाब, फुटबाल में कलकत्ता आदि। इसी प्रकार

इटली का नाम भी फुटबाल के साथ जुड़ा है। एक उदाहरण देखें। 24 जून, 1990 के साप्ताहिक हिंदुस्तान में छपे चरणपाल सिंह सोबती के फीचर का शीर्षक है "मेज़बान इटली का फुटबाल इतिहास" जहां फुटबाल एक धर्म है:

एक फुटबाल विशेषज्ञ ने ठीक पहचाना है कि इटली के नक्शे को देखकर किसी पैर या जूते की शक्ल की याद आती है। शायद यही कारण है कि यह देश पैर से खेले जाने वाले फुटबाल के खेल में आज विश्व के कुछ सबसे सफल और जोरदार देशों में से एक है। ब्राजील के अतिरिक्त इटली एकमात्र दश है जो विश्व कप जैसे महत्वपूर्ण टर्नामेंट को तीन बार जीत चुका है।

बोध प्रश्न

1) खेलकूद से संबंधित फीचर की कुछ प्रमुख विशेषताएं बताइए। उत्तर लगभग पांच पंक्तियों में लिखिए

.....

.....

.....

.....

.....

2) खेल आधारित फीचर और प्रतियोगिता फीचर में अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

3) निम्नलिखित विषयों पर लिखे गए फीचर किस श्रेणी में आएंगे और क्यों?

क) हॉकी के जादूगर ध्यानचंद

.....

.....

ख) खेल पत्रकारिता के बदलते तेवर

.....

.....

ग) डेविस कप में भारत की चुनौती

.....

.....

घ) शतरंज के दांवपेंच

.....

.....

अभ्यास

1) **आपको जो खेल प्रिय हो उससे संबंधित किसी अनुभव का उल्लेख कीजिए। यह उल्लेख खिलाड़ी या दर्शक किसी भी रूप में हो सकता है। उत्तर दस पंक्तियों से अधिक में न हो।**

.....

.....

.....

.....

9.4 विषय का चयन

खेल फीचर के प्रकार के अंतर्गत हमने खेल फीचर को विभिन्न वर्गों में रखकर देखा। आइए, अब लेखन-कार्य में कौन-सा विषय आपके लिए उपयोगी हो सकता है, आपको विषय के चयन के समय किन बातों का ध्यान रखना है, उस पर भी चर्चा कर ली जाए। इसके लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना होगा:

- रुचि एवं विशेषज्ञता
- प्रकाशन की प्रकृति
- विषय की प्रासंगिकता

9.4.1 रुचि एवं विशेषज्ञता

यह बात स्पष्ट है कि विषय का चयन खेल फीचर के उसी प्रकार के लिए किया जाए जिसमें आपकी रुचि है। केवल रुचि ही काफी नहीं है, उसमें आपकी अधिक से अधिक विशेषज्ञता भी उपयोगी रहेगी। उदाहरण के लिए, आप क्रिकेट पर फीचर लिख रहे हैं, आपको इस खेल की पूरी जानकारी होनी चाहिए, साथ ही आपको रन, रन अप, हेटट्रिक, एल.बी.डब्ल्यू., हिट विकेट आदि शब्दों का ज्ञान भी होना चाहिए। खेल और खिलाड़ी से संबंधित प्रतियोगिता के बारे में जानकारी महत्वपूर्ण है। फिर क्रिकेट आंकड़ों का खेल है। खेल से संबंधित आंकड़े आपके लिए उपयोगी रहेंगे। इसी प्रकार अन्य खेलों से संबंधित आपकी रुचि और विशेषज्ञता विषय चयन को अधिक आसान बना सकती है। रेडियो सुनना, समाचार-पत्र, खेल पत्रिकाओं, खेल पुस्तकों को पढ़ना इसके अतिरिक्त खेल के दौरान आपका खुद मैदान में उपस्थित रहना बहुत आवश्यक है।

9.4.2 प्रकाशन की प्रकृति

यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि फीचर किस पत्र-पत्रिका के लिए लिखा जा रहा है अर्थात् इसे दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित होना है, साप्ताहिक विशेषांक में या किसी खेल पत्रिका में। प्रकाशन की प्रकृति के अनुसार ही विषय का चयन उपयोगी रहता है क्योंकि इसके अनुसार आपके लेखन में भी परिवर्तन आ सकता है। दैनिक समाचार पत्र के लिए जो बातें महत्वपूर्ण होंगी, वे हैं:

- तात्कालिकता
- ताज़े से ताज़े परिणाम
- संक्षिप्तता

इसका कारण यह है कि दैनिक समाचार पत्रों में स्थान की कमी होती है और बहुत आवश्यक होने पर ही फीचर को स्थान मिल पाता है। अतः इस प्रकार के फीचर में **समसामयिकता** और **तात्कालिकता** को ध्यान में रखना होता है।

साप्ताहिक विशेषांक या अन्य पत्रिकाओं में खेल स्तंभ के लिए अधिक स्थान रहता है इसलिए विषयों के चयन में जो बातें महत्वपूर्ण हैं उनमें हैं:

- विषय का **स्थायी महत्व**
- भाषा की चुस्ती और पैनापन

- घटना क्रम की जानकारी
- संकलित सामग्री का बेहतर उपयोग

9.4.3 विषय की प्रासंगिकता

विषय की प्रासंगिकता से हमारा तात्पर्य दरअसल ऊपर बताई गई दोनों बातों से है। दैनिक पत्रों में तात्कालिकता का महत्व अधिक है तो साप्ताहिक अथवा मासिक पत्रिकाओं में स्थायित्व का। इसका प्रभाव विषयचयन पर पड़ सकता है। उदाहरण के लिए समाचार पत्र में किसी खेल मैदान या स्टेडियम पर लिखे फीचर को स्थान मिल पाना मुश्किल है। किंतु किसी आकस्मिक दुर्घटना के समय उसी मैदान या स्टेडियम पर लिखे फीचर की महत्ता दैनिक समाचार पत्र के लिए बढ़ जाएगी। इसी प्रकार किसी बड़े और नामी खिलाड़ी की पुण्यतिथि पर लिखे गए फीचर को खेलकूद से संबंधित पत्रिका में अधिक आसानी से स्थान मिल सकता है। आम तौर पर सभी पत्र-पत्रिकाएं खेलकूद का स्थायी स्तंभ रखती हैं इसलिए यह जरूरी है कि उस पत्र-पत्रिका के पाठकों को और विषय के महत्व को ध्यान में रखते हुए विषय का चयन करें।

9.5 सामग्री का संकलन

फीचर एक प्रकार से तथ्यों पर आधारित लेख है। इसमें आप तथ्यों को अपनी सृजनात्मक शक्ति से सजा-संवार सकते हैं, आकर्षक बना सकते हैं और यही फीचर एक "आम लेख" से भिन्न हो जाता है। इसके लिए तथ्य जुटाने पड़ते हैं और उन्हें हर प्रकार से रोचक बनाया जाता है और आकर्षक स्वरूप प्रदान किया जाता है। आइए देखें, कौन-सी सामग्री फीचर लेखन में सहायक और उपयोगी हो सकती है।

9.5.1 विषय पर शोध

जहां तक खेल-परिणामों की बात है, वे तो संचार के सभी माध्यमों अर्थात् समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन से उपलब्ध हो सकते हैं लेकिन खेल-प्रेमी के लिए मात्र परिणाम ही काफी नहीं। पाठक या श्रोता को विषय से संबंधित अनेक जानकारियों की आवश्यकता भी पड़ती है जिन्हें आपको अपने प्रयासों से एकत्र करना होगा।

उदाहरण के लिए आपको भारतीय हॉकी टीम के किसी मैच पर फीचर लिखना है जिसमें कप्तान मोहम्मद शाहिद का खेल उल्लेखनीय रहा है और उसने गोल भी किया है। यह समाचार आपको संचार के अन्य माध्यमों से भी मिल सकता है किंतु विस्तृत जानकारी के लिए मैच देखना उपयोगी होगा। मैच देखते समय यह नोट करें कि शाहिद ने खेल की कौन-सी नीति अपनाई है, क्या उसने छोटे-छोटे "पास का गेम" खेला? क्या उसने "डी" के ऊपर गोल के लिए तुरंत प्रयास किए? विपक्षी टीम के खिलाड़ी उसके बेहतर प्रदर्शन को कितना महत्व दे रहे थे? या वह बिना "चेक" किए ही रह गया था। उसने आक्रमण में योजनाएं भी बनाई या केवल अच्छे "पास" का उपयोग ही कर सका। क्या वह अवसर पड़ने पर सुरक्षा के लिए अपनी टीम को सहयोग दे सका। आपका यह सूक्ष्म अवलोकन आपकी रचना में रंग भर देगा। लेकिन मोहम्मद शाहिद के खेल पर ही आपकी टिप्पणियां काफी नहीं हैं। आपको अन्य परिस्थितियां और जानकारियों भी जुटानी पड़ेंगी। शाहिद के इस मैच के गोल के अतिरिक्त उसके अपने व्यक्तिगत कुल गोल कितने हो गए है? मैच के परिणाम से भारतीय टीम की स्थिति कितनी मज़बूत हो गई है? इस खेल के बाद भारतीय टीम से जुड़ी आशाओं का उल्लेख भी किया जा सकता है। मैच के फोटो मिल सकें और विशेष रूप से शाहिद के गोल करते समय का, तो फीचर और आकर्षक बन सकता है।

इन सभी बातों के लिए प्रयास करने होते हैं। उदाहरण के लिए क्रिकेट में खिलाड़ियों के बनाए रनों का रिकार्ड आसानी से उपलब्ध हो जाता है और आंकड़े विभिन्न माध्यमों द्वारा सभी पिछले रिकार्डों के साथ भी उपलब्ध रहते हैं जबकि हॉकी में खिलाड़ी के व्यक्तिगत गोलों का रिकार्ड रखने का प्रचलन नहीं है। आपको या तो यह रिकार्ड स्वयं रखना होगा या जो संस्थाएं मैच आयोजित करा रही हों, उनसे संपर्क साधने होंगे। इस प्रकार, कुछ सुझाव आपके शोध के लिए उपयोगी हो सकते हैं:

- अपने प्रिय और जानकारी वाले खेलों पर लेखन कार्य करें।
- खेलों में अपनी जानकारी, उनकी पूर्व और भविष्य की प्रतियोगिताओं की जानकारी रखें।
- खिलाड़ियों के खेल प्रदर्शन पर अपने पठन और दीगर स्रोतों द्वारा पैनी नज़र रखें।
- हो सके तो स्वय खेल देखने का प्रयास करें।
- दर्शकों की प्रतिक्रियाएं अवश्य नोट करते रहें।

9.5.2 तथ्यों का संकलन

तथ्यों के संकलन के लिए हमें संचार माध्यमों की सहायता लेनी पड़ेगी रेडियो और दूरदर्शन पर समाचारों के अतिरिक्त विभिन्न समीक्षाएं, टिप्पणियां, भेंटवार्ताएं और नियमित खेल कार्यक्रम भी प्रसारित होते रहते हैं। इन सभी कार्यक्रमों को नियमित रूप से सुनते-देखते रहना चाहिए और उनसे प्राप्त जानकारी को किसी डायरी वगैरह में सुरक्षित रखने की आदत डालें। दैनिक/साप्ताहिक/मासिक पत्र-पत्रिकाओं की कतरनें या उनकी प्रतियां अपने पास सुरक्षित रखें। उनमें छपी तालिकाएं भी संभाल कर रखें। तथ्यों को शामिल करने से आलेख में जान पड़ जाती है और तुलनात्मक दृष्टि अधिक कारगर होती है।

पुरानी पत्र-पत्रिकाएं भी आपको पुस्तकालय से, मित्रों और मिलने वालों से प्राप्त हो सकती हैं। इनमें तथ्य, तिथियों और अन्य विवरणों के साथ मिल जाते हैं। पुराने खिलाड़ियों और खेल प्रेमियों से बातचीत भी यदि आप रिकार्ड करके रख सकें तो वह समय पर उपयोगी हो सकती है।

9.5.3 फोटो

फोटो संकलन की आदत डालना भी आपके लिए जरूरी है। फीचर में फोटो अहम् भूमिका निभाते हैं। इसका अनुभव आप किसी भी दिन के समाचार-पत्र को उठा कर, कर सकते हैं। आदमी बिना पढ़े भी फोटो और उनके शीर्षक की ओर तुरंत ध्यान देता है। फिर कुछ ''खास क्षणों'' के फोटो हमेशा-हमेशा के लिए यादगार बन जाते हैं। जैसे किसी दौड़ाक का ''दौड़'' जीतते ही लिया गया फोटो। ऐसे अवसर पर हो सके तो आप भी उस दौड़ाक के साथ बात करते हुए अपना फोटो खिचवा सकते हैं। उसका एक स्थायी महत्व होता है। किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से बातचीत के समय का फोटो भी आप फीचर के साथ दे सकते हैं। कुछ फोटो खेल भावना और टीम भावना को दर्शाने में सक्षम हो सकते हैं। पुरानी पत्र-पत्रिकाओं से भी फोटो संकलित किए जा सकते हैं और उचित अवसर पर उनका उपयोग किया जा सकता है। पटौदी और सोबर्स माने हुए क्रिकेट कप्तान रहे हैं, इनके बीच एक मैच के लिए ''टॉस'' करता फोटो जिसमें दोनों कप्तान अपने देश के कोट पहले हुए बीच मैदान में ऊपर उछाले हुए सिक्के को देख रहे हैं, आज भी रोमांच पैदा करता है। इसी तरह बिशन सिह बेदी, वेंकटराघवन और चंद्रशेखर की तिकड़ी स्पिन गेंदबाज़ी में प्रख्यात रही। इनकी उस ज़माने की गेंदबाज़ी के ऐक्शन फोटो आज भी युवाओं में जोश और उत्साह भर सकते हैं।

ध्यानचंद के हॉकी खेलते हुए फोटो आज भी प्रेरणादायी बन सकते हैं। अतः

- फोटो संकलन की आदत डालें,
- उचित अवसरों के फोटो या उचित अवसरों पर फोटो प्राप्त करने की कोशिश करें।
- किसी बड़े खिलाड़ी या व्यक्तित्व से बातचीत के दौरान फोटो खिचवायें।
- खेल भावना और टीम भावना को दर्शाने वाले फोटो प्राप्त करने की चेष्टा करें।
- फोटो के लिए भी पुराने समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का संकलन करें।

9.5.4 साक्षात्कार

साक्षात्कार अपने आप में एक अलग विधा है किंतु फीचर के लिए इसका दायित्व कुछ और अधिक हो जाता है। फीचर के लिए साक्षात्कार करते समय कुछ बातों का ध्यान भी रखना होता है। जैसे किसी खिलाड़ी से साक्षात्कार करते समय आप उनके खेल के अलावा उनकी शिक्षा, पारिवारिक स्थिति, उनके अन्य शौक की जानकारी भी ले सकते हैं। साक्षात्कार के

दौरान उत्तर देते समय खिलाड़ी के हावभाव का उल्लेख कर सकते हैं, जैसे—उन्होंने "मुस्कुरा कर जवाब दिया", "उसने लंबी सांस ली", "उसने एक चुप्पी में अपनी यादों को संजोया" आदि। बातचीत करते समय आप आसपास के वातावरण पर भी नजर रख सकते हैं। ड्रांइग रूप में कौन-कौन सी तस्वीरें थीं, कोई विशेष सामान था। आपकी बातचीत के दौरान यदि कोई अन्य सदस्य भी साथ था तो उसकी टिप्पणियां, उसकी दिलचस्पी का उल्लेख आप कर सकते हैं। इससे आपके फीचर में जो जीवंतता आएगी, वह लेखन की एक उपलब्धि होगी।

9.5.5 अन्य स्रोत

सामग्री संकलन के अन्य स्रोत भी हैं जो फीचर के लिए उपयोगी होते हैं। अतः इनके संपर्क में रहना हमेशा लाभप्रद है। दैनिक समाचार, साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ते रहने के अतिरिक्त रेडियो और दूरदर्शन के समाचार एवं खेल कार्यक्रमों को सुनते-देखते रहना भी जरूरी है। खेल फीचर में आंकड़े और तालिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसकी खास वजह है:

- तालिकाएं कम स्थान में अधिक जानकारी देती हैं
- इनसे एक दृष्टि में जानकारी मिल सकती है।
- तुलनात्मक दृष्टि सामने आती है।
- लेखन को आकर्षक भी बनाती है।

9.6 सामग्री का संयोजन एवं संपादन

कहते हैं मेजबानी की कला अच्छे स्वादिष्ट खानों में कम, उसके
अधिक है। यही बात फीचर लेखन पर भी लागू होती है। फीचर लिखते समय संकलित सामग्री को हम किस प्रकार संजोते हैं, यह एक कला है। सभी कुछ बेतरतीब लिख देना ही काफी नहीं है।

सामग्री संकलन के बाद हमें एक बार फिर फीचर के बुनियादी तत्वों को ध्यान में रखना होगा। क्या फीचर से संबंधित सभी तथ्य प्राप्त हो गए हैं? उससे जुड़ी जानकारियों जो दी जा सकती थीं, वे सभी उपलब्ध हैं। जिन तथ्यों को उजागर करना हो उनका अध्ययन करें। फीचर लिखने से पूर्व आप समस्त सामग्री का ध्यान से अध्ययन कीजिए। गैर-जरूरी सामग्री अलग कीजिए। विषय और उद्देश्य के अनुरूप लेखन के लिए एक रूपरेखा बनाइए और फिर उसी के अनुसार अपना लेखन शुरू कीजिए।

बोध प्रश्न

4) खेलों पर फीचर लिखने के लिए किन बातों को अपनाना जरूरी है? किन्हीं चार बातों का उल्लेख कीजिए।

i) .....

ii) .....

iii) .....

iv) .....

5) तालिकाओं के किन्हीं दो लाभों का उल्लेख कीजिए।

i) .....

ii) .....

6) फोटो के चयन के समय किन बातों का ध्यान रखना होता है? कोई तीन बातें बताइए।

i) .....

ii) .....

iii) .....

7) खेल फीचर के विषय चयन में कुछ बातें जरूरी होती हैं–सही पर √ का निशान और गलत पर × का निशान लगाइए :

क) विषय में स्वयं की रुचि होना जरूरी नहीं। ( )

ख) प्रकाशन की प्रकृति महत्वपूर्ण है। ( )

ग) विषय प्रासंगिक होना चाहिए। ( )

घ) खेल में विशेषज्ञता हो, यह आवश्यक नहीं। ( )

8) खेल फीचर के तथ्यों के संकलन के लिए कौन-कौन से स्रोत हो सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

2) आपको अपने शहर की फुटबॉल प्रतियोगिता पर फीचर लिखने के लिए सामग्री एकत्र करनी है, बताइए कि आप क्या-क्या सामग्री एकत्र करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) इसी प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी पर फीचर लिखने के लिए आप क्या तैयारी करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9.7 फीचर का लेखन

फीचर को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है–आरंभ, मध्य और अंत। अर्थात् आपके पास जो सामग्री है, उसे तीन भागों में फैलाना होगा। उसे किस तरह संयोजित किया जाएगा, क्या सावधानियां रखनी होंगी, अब इसकी चर्चा भी कर ली जाए ताकि लेखन की कला स्पष्ट हो सके।

9.7.1 आरंभ

देखा जाए तो "आरंभ" फीचर का वह महत्वपूर्ण भाग है जिसे पाठक सबसे पहले पढ़ता है और निश्चय करता है कि उस फीचर को पूरा पढ़ना चाहिए या नहीं। लेखों के आकर्षक शीर्षक और आरंभ पाठक को पढ़ने के लिए बाध्य कर देते हैं। कुछ उदाहरणों से आपको स्पष्ट हो जाएगा। "**छोटी-सी बाल की लम्बी दास्तां**" फीचर का आरंभ देखें:

> *विश्व के सबसे पुराने खेलों में से है, फुटबाल का खेल। सीधे से नियम, इस खेल में न के बराबर उपकरणों का इस्तेमाल और थोड़े ही समय में खत्म हो जाने वाले इसके मैच के कारण यह खेल लगातार लोकप्रियता पाता रहा है। इस खेल की शुरुआत के बारे में इतिहासकारों का नजरिया अलग-अलग है। इतना तय है कि फुटबाल का खेल सबसे पहले इंग्लैंड से शुरू हुआ था और 1963 में इस खेल की औपचारिक सैंनटेनरों का जश्न बड़े जोर-शोर से मानाया गया था। 26 अक्तूबर, 1863 को इंग्लैंड में फुटबाल एसोसिएशन का गठन हुआ था। इस एसोसिएशन ने ही इस खेल को दुनिया भर में लोकप्रिय करने का बीड़ा उठाया।*

उपर्युक्त फीचर के अंश में फुटबाल के ऐतिहासिक आरंभ के साथ आलेख में पूरी रोचकता लाने का सफल प्रयास किया गया है। कुछ जिज्ञासाएं और प्रश्न भी दिमाग में स्वतः उठ खड़े होते हैं जो अपने रोमांच के साथ पाठक में आगे की कहानी जानने के लिए उत्सुकता पैदा करते हैं। दरअसल आरंभ को आकर्षक बनाने के लिए पद्धति कोई भी अपनाई जा सकती है लेकिन तरीका वही होगा जिससे पाठक को अपने आलेख की ओर आकृष्ट किया जा सके।

"आरंभ" लिखने के कई तरीके हो सकते हैं। आप किसी खिलाड़ी के वक्तव्य से आरंभ कर सकते हैं। विवरणात्मक ढंग से भी आरंभ किया जा सकता है। चाहें तो आप साक्षात्कार के किसी हिस्से से भी आरंभ कर सकते हैं। जो हो, "आरंभ" में विषय का संकेत, उसका बोध और आपकी सृजनशीलता का आभास पाठक को होना चाहिए। तभी फीचर का सफल आरंभ तैयार हो सकेगा। आपकी सुविधा के लिए आरंभ के दो उदाहरण हम और दे रहे हैं। "**साप्ताहिक हिंदुस्तान** (24 जून, 1990) में प्रकाशित "**चौदहवां विश्व कप: अखाड़ा दो दर्जन दिग्गजों का**" (लेखक चरण पाल सिंह सोबती) से एक उदाहरण देखिए जिसमें विश्व कप चैम्पियनशिप में भविष्य की संभावनाओं से जुड़े सवालों की झड़ी लगाकर पाठकों में लेख के प्रति उत्सुकता और जिज्ञासा पैदा कर दी है।

> *विश्व कप के 52 मैचों के बाद फुटबाल चैम्पियन के नाम का पता लगेगा। क्या अर्जेंटीना फिर से विश्व कप चैंपियन होगा? क्या विश्व कप विजेता फिर से उन्हीं टीमों में से कोई एक होगा जो अब तक विश्व कप जीत चुकी है। क्या इस बार विश्व कप को कोई नया विजेता मिलेगा? जीत की एक जोरदार दावेदार टीम ब्राज़ील के कोच से बस्टियाओं लैजरोनी का करना है, 'यह विश्व कप के इतिहास का सबसे संतुलित विश्व कप है। इस बार एक-दो नहीं, कई टीमें जीत की दावेदार हैं।'*
>
> *इसी तरह से हर विश्व कप से कोई न कोई एक हीरो खिलाड़ी सामने आता रहा है—1982 में पालो रोसी और 1986 में डिएगो मेराडोना। इस बार कौन हीरो होगा? क्या फिर से मेराडोना? या हालैंड के रड गलिट और वैन बैसटन? या ऐसा कोई खिलाड़ी जिसके बारे में अभी कुछ ज्यादा सुना ही नहीं गया? अब तक खेले जा चुके मैच क्या इस बारे में कुछ इशारा कर रहे हैं?*

एक अन्य उदाहरण देखिए जो "**रिचर्ड्स : वो दिन कहां गए**" में से लिया गया है। इसमें आरंभ विवरणात्मक शैली में किया गया है:

> *पिछले दो दशकों में क्रिकेट जगत में अनेकों धुरंधर बल्लेबाज़ हुए हैं जिन्होंने अपने आकर्षक खेल से क्रिकेट प्रेमियों का मन मोह लिया है। इन बल्लेबाजों में इंग्लैंड के ज्योफ बायकाट और डेविड गावर, आस्ट्रेलिया के ग्लेन बोर्डर, पाकिस्तान के जहीर अब्बास और जावेद मियांदाद, भारत के सुनील गावस्कार और दिलीप वेंगसरकर, वेस्टइंडीज़ के गोर्डन ग्रीनिज और डेसमंड हेंस आदि प्रमुख हैं। इन बल्लेबाजों के अलावा एक अन्य बल्लेबाज का नाम है—विवियन रिचर्ड्स जिसे पिछले लगभग पंद्रह वर्षों से क्रिकेट जगत का सर्वाधिक आकर्षक बल्लेबाज कहा जाता है। कुछ क्रिकेट विशेषज्ञ तो रिचर्ड्स को सर डान ब्रैडमैन के बाद क्रिकेट जगत का सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज मानते हैं।*

9.7.2 मध्य

"मध्य" से तात्पर्य फीचर का वह भाग जो उसे विस्तार देता है। यह भाग भी महत्वपूर्ण है। किसी पेड़ की जड़ें उसे मजबूती प्रदान करती हैं और ऊपरी हिस्से की उपयोगिता पत्ते और फल-फूल की वजह से होती है लेकिन पेड़ को सीधा खड़ा तो मध्य भाग यानी उसका तना ही रखता है। फीचर का मध्य भाग भी यही कुछ भूमिका निभाता है। इसे बहुत अधिक विस्तार नहीं देना है, हां, विवरण अधूरा न लगे इसका ध्यान रखना चाहिए। भाषा सरल और शैली आकर्षक हो। आंकड़े और तथ्य देने जरूरी हैं किंतु आंकड़ों की भरमार से इसे बोझिल नहीं होने देना है।

सही विस्तार देते समय विषय की प्रासंगिकता, उपयोगिता और सामयिकता पर ध्यान रखें। आपके विस्तृत फीचर को पत्र-पत्रिका में स्थान मिलना भी मुश्किल है और बहुत छोटा फीचर अगर कुछ जिज्ञासाएं छोड़ता है तो भी बात नहीं बनती उदाहरण के लिए एक नए उभरते खिलाड़ी पर जो फीचर तैयार होगा उसे निश्चित ही विश्व कप-फुटबाल या ओलम्पिक पर लिखे फीचर से कम महत्ता मिलेगी। किंतु परिस्थितियां विपरीत भी हो सकती हैं। यदि जूनियर खिलाड़ियों की कोई महत्वपूर्ण प्रतियोगिता चल रही है, जहां उनका चयन राष्ट्रीय टीम या अंतर्राष्ट्रीय स्तर के महत्वपूर्ण मुकाबलों के लिए होना है और विश्व कप फुटबाल या ओलम्पिक में अभी लगभग एक वर्ष बाकी है तब जूनियर खिलाड़ी या उनकी प्रतियोगिता पर लिखे फीचर की अधिक उपयोगिता होगी। अर्थात् इसका कोई विशेष नियम नहीं है पर जैसा कि हमने कहा समय का तकाजा और विषय की प्रासंगिकता स्वयं इसका निर्धारण करती है। यही बात भाषा, संतुलित आंकड़ों और सामग्री के आकर्षक जमाव पर भी लागू होती है। नीचे दो फीचर के मध्य भाग के अंश हम दे रहे हैं। आपको भाषा और सामग्री के जमाव का अंदाज़ हो सकेगा। सुरेश कौशिक लिखित **"खेलों का खेल है फुटबाल"** से एक उदाहरण जो 3 जून, 1990 के **'जनसत्ता'** में प्रकाशित हुआ था।

> *फुटबाल की कहानी इतनी अनोखी है कि खेल के हर पहलू को गहराई से समझने को प्रेरित करती है। उस खेल को जो लोगों के लिए तो उद्योग बन गया है जबकि अनगिनत लोगों के लिए मजहब। और जहां इस कप का आयोजन होता है, वहां के वातावरण फुटबालमय हो जाता है। नाचने-गाने के माहौल से गलियों की रौनक बढ़ जाती है। झंडे, बैनर, कारों के हार्न, समुद्री जहाजों के साइरन का शोर, रंग-बिरंगी छटा और मस्ती में लोग अपने को भूल जाते हैं। मरे हुए दिल जीवंत हो उठते हैं। खेल के उतार-चढ़ाव और रोमांच को कई बर्दाश्त भी नहीं कर पाते हैं और उनके दिल की धड़कन जवाब दे जाती है।*
>
> *कौशल के अलग नज़ारों में सबसे ज्यादा फायदे में रहते हैं गोल बनाने वाले खिलाड़ी। यद्यपि टीम की जीत में हर खिलाड़ी का अपना योगदान रहता है लेकिन गोल करने वाले को ज्यादा प्रसिद्धि मिलती है। गोल करने पर ही तो टीम जीतेगी। और इसी में तो मजा है। और जब फुटबाल की बात चलती है यह सवाल एकाएक उठता है कि फुटबाल इतिहास का महान खिलाडी कौन है? इसमें पेले को सबसे ऊपर रखा जाता है। वैसे फुटबाल पंडितों का नजरिया थोड़ा अलग भी है। गेम को नियंत्रण करने की क्षमता से कुछ डी स्टीफेनो को बढ़िया आल राउंड खिलाड़ी मानते हैं, कुछ का कहना है चरम पर जर्ज बेस्ट के मुकाबले दूसरा कोई नहीं। अलग-अलग राय में पुस्कास, डीन, गालाचर, बेकनबाउर और।माराडोना।के नाम आ सकते हैं। लेकिन यह बहस तब तक खत्म नहीं होगी जब तक फुटबाल रहेगी।*

इसी तरह एक अन्य उदाहरण देखिए 27 जुलाई, 1985 के **"खेल हलचल"** से लिया गया है, शीर्षक है: **"ओह! विजय क्या तुम्हारा नाम विजय ही है"**:

> *विजय ने शुरुआत तो नर्वस होकर की थी, लेकिन एक बार आत्म-विश्वास प्राप्त कर लेने के बाद, इनके रैकेट से शाट मानो बहने लगे थे। अंतिम सेट में विजय 5-4 से बढ़त लिए हुए थे। विजय, विजय से सिर्फ दो प्वांइट पीछे थे। कोड्स 30-0 पर सर्विस कर रहे थे। कोड्स ने एक कमजोर सा लॉब शाट खेला। विजय इसे आसानी से रिटर्न कर, मैच प्वॉइंट प्राप्त कर सकते थे, मगर विजय का कुछ क्षणों के लिए ध्यान बंट गया और उन्होंने गेंद को बेस लाइन पर उछाल दिया। इस तरह विजय ने रामनाथन कृष्णन की तरह सेमीफाइनल में पहुंचने का स्वर्ण अवसर खो दिया। रामनाथन दो बार सेमीफाइनल में पहुंचे थे। कोड्स ने विजय को 6-4, 3-6, 4-6,6-3, 7-5 से हराया तथा फाइनल में उन्होंने रूसी खिलाड़ी एलेक्स मेट्रेवेली को हराकर*

विम्बलडन खिताब जीत लिया। बाद में कोड्स ने कहा, "मैं सोचता हूं यह लड़का बोर्ग से भी बेहतर है। सही मायनों में वह खिलाड़ी है।"

तस्वीरें फीचर को जीवंत और आकर्षक बनाती हैं। मध्य भाग को संतुलित और प्रभावी बनाने में तालिकाएं भी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाती हैं।

9.7.3 अंत एवं शीर्षक

"अंत" फीचर का तीसरा और अंतिम भाग है। फीचर का किस प्रकार समापन किया जाए कि उसका असर हमेशा के लिए बना रहे ? यद्यपि कुछ फीचर विषय की दृष्टि से बहुत स्थायी नहीं होते हैं, किंतु फिर भी एक निश्चित समय तक उसके "अंत" में दी गई आपकी टिप्पणी और निष्कर्ष उसे प्रभावी बनाए रखते हैं और यही फीचर की सफलता है।

3 जून, 1990 के **'जनसत्ता'** में विश्व कप फुटबाल को केंद्रित कर सुरेश कौशिक ने "खेलों का खेल है फुटबाल" शीर्षक फीचर का अंत इस प्रकार किया:

यों मजबूत दाव पांच टीमों—अर्जेंटीना, यूरोपीय चैंपियन नीदरलैंड, मेजबान इटली, ब्राजील और पश्चिम जर्मनी का है, लेकिन बेल्जियम, यूगोस्लाविया, स्पेन और इंग्लैंड भी सफलता के साथ जुड़ सकती हैं। लेकिन निर्णायक भूमिका माराडोना, एडगुलिट, मारको वान बेस्टेन जैसे सुपर स्टार खिलाड़ी निभाएंगे। कोई नया सितारा भी आश्चर्यजनक प्रदर्शन से अपनी टीम को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकता है। सभी पुरानी चर्चाएं और यादें एक इतिहास बनकर रह जाएंगी। जब 8 जून को इटली में 24 टीमों में विश्व चैंपियन बनने की जंग शुरू होगी। विश्व की फुटबाल शक्तियां उन उभरते हुए देशों की टीमों से खेलेंगी जो नई पहचान बनाने की कोशिश में रहेंगी और जब एक महीने बाद वह फुटबाल मेला समाप्त होगा तो शायद लातिन अमेरिका या यूरोप की ही किसी टीम को विश्व चैंपियन का सेहरा बंधेगा।

उपर्युक्त उदाहरण से एक बात और स्पष्ट है कि अंत में निष्कर्ष निकालने के लिए और अपना अनुमान बनाने के लिए समीक्षात्मक दृष्टि समृद्ध होनी चाहिए।

अक्सर लेखक खेल फीचर में अंत को इतना महत्व नहीं देते हैं और विवरण के साथ ही फीचर को भी खत्म करते हैं।

कुल मिलाकर फीचर में अंत को भी महत्व दिया जाना चाहिए और साधारण विषय पर फीचर का अंत कोई न कोई निष्कर्ष, अनुमान या संदेश लिए हुए हो। अंत में **"अपराजित चैम्पियन का रहस्य"** शीर्षक से 8 फरवरी, 1986 की **"खेल हलचल"** में छपे फीचर का यह उदाहरण देखें जिसमें खिलाड़ी के शीर्ष स्थान पर पहुंचकर हटने से, मिलने वाली इज्जत का संदेश छुपा हुआ है।

दो वर्ष बाद ही हर्ब ने रोम ओलम्पिक में 1500 मीटर की दौड़ रिकार्ड समय में जीत ली। और यही दौड़ उसकी अंतिम दौड़ सिद्ध हुई। अब वे शादी कर चुके थे और पिता बन चुके थे। उनकी जिम्मेदारियां भी अब बढ़ चुकी थीं। हर्ब स्टेडियमों की चकाचौंध भूलकर उच्च अध्ययन के लिए कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी चले गए। उन्हें इस बात का संतोष था कि अपराजित रहकर ही उन्होंने निवृत्ति की घोषणा की। ऐसे कम ही खिलाड़ी होते हैं, जो कैरियर के शीर्ष पर होते हुए निवृत्ति की घोषणा कर देते हैं। मगर हर्ब-इलियट एक अलग किस्म का ही खिलाड़ी था।

खेल फीचर की तरह ही फीचर का शीर्षक भी आकर्षक होना चहिए। उसमें विषय का संकेत भी हो और फीचर के केंद्रीय भाव का उल्लेख भी हो।

9.7.4 भाषा एवं शैली

खेल फीचर अपनी भाषा और शैली के कारण अन्य फीचर से एकदम भिन्न हो जाता है। रन अप, स्कोर, गोल, पेनाल्टी कॉर्नर, एल.बी.डब्ल्यू., हिट, विकेट, लॉबी, स्मैश, हैटट्रिक आदि ऐसी शब्दावली है जो खेलों के लिए ही प्रयुक्त होती है।

फीचर शैली की विशेषता यह है कि वह सादगीपूर्ण हो, समझ सकने योग्य हो किंतु यथार्थ वस्तु को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत कर सके। सही शैली पाठकों में विश्वास उत्पन्न करती है

जो एक बड़ी सफलता है। शब्दों का अनुचित चयन, भाषा और शैली दोनों को बिगाड़ता है। एक उदाहरण देखें:

*वहीं भारत-पाकिस्तान श्रृखला में "पेनालटी कार्नर जल्लाद" के रूप में प्रतिष्ठित मोहिंदर पाल इस स्पर्धा में **बौने** साबित हुए।*

उक्त उदाहरण में शब्द "जल्लाद" और "बौने" अनुपयुक्त लगते हैं और दोनों शब्दों में तालमेल का भी अभाव है। ऐसे अवसर पर केवल "पेनाल्टी कार्नर-विशेषज्ञ" लिखना उचित था। "बौने" की जगह "नाकाम" लिखना बेहतर रहता।

कभी-कभी आम बोलचाल में जो शब्द खेलों से जुड़े नहीं दिखते, वे भी खेल फीचर के लिए कहीं उपयुक्त बन जाते हैं और इन शब्दों के मायने कुछ के कुछ हो जाते हैं। उदाहरण के लिए:

"भारतीय हॉकी काफी घायल अवस्था में है।"

इसमें घायल का तात्पर्य घायल न होकर हॉकी की दुर्दशा से है किंतु इस उदाहरण में दुर्दशा से कहीं अधिक "घायल" शब्द उपयुक्त लगता है।

एक अन्य उदाहरण में भाषा की जटिलता देखें:

"कई वर्ष बाद इस वर्ष यह कहा जा सकता है कि तीनों प्रमुख टीमों की ताकत कम अधिक एक समान है।"

यहां "ताकत कम अधिक एक समान" कहने से कोई भी अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

खेल फीचर में तकनीकी शब्दावली का सावधानीपूर्वक इस्तेमाल करें। विभिन्न खेलों के अपने तकनीकी शब्द होते हैं। खेल के तकनीकी पक्ष की सही जानकारी के बिना आप इन शब्दों का उपयुक्त ढंग से इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे। इसके लिए जरूरी है कि आप खेलों को ध्यानपूर्वक देखें और उनके इस पक्ष पर विशेष ध्यान दें।

इसीलिए लेखन में भाषा और शैली पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

बोध प्रश्न

9) फीचर को आरंभ करने के कोई तीन तरीके बताइए।

i) .....

ii) .....

iii) .....

10) फीचर के मध्य भाग को विस्तार देने के लिए किन बातों पर ध्यान देना जरूरी है?

i) .....

ii) .....

iii) .....

अभ्यास

4) अपने नगर में आयोजित किसी खेल प्रतियोगिता को देखें तथा उसके विवरण के आधार पर एक फीचर तैयार करें (लगभग 200 शब्दों में)।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5) प्रकाश पादुकोन या पी.टी. उषा के खेल जीवन पर लगभग 15 पंक्तियों में एक फीचर लिखिए। इसके लिए आप पुस्तकालयों में उपलब्ध सामग्री का उपयोग करें। इस फीचर में खिलाड़ी का संक्षिप्त परिचय, खेल जीवन, उसकी उपलब्धियां, खेल तकनीक की विशेषता को अवश्य शामिल करें।

6) उपर्युक्त फीचर लेख का उचित शीर्षक दें।

9.8 शब्दावली

रन : क्रिकेट में दो विकेटों के बीच 22 गज दूरी का फासला जिसे दौड़कर पूरा करने पर एक रन बनता है। मैच के अंत में रनों के आधार पर ही हार-जीत का निर्णय होता है।

एमेच्चर : अव्यवसायी शौकीन

लीग कम नॉक आउट : लीग पद्धति में हर टीम एक-दूसरे से मैच खेलती है। नॉक आउट पद्धति में हारने वाली टीम प्रतियोगिता से बाहर होती जाती है।

पिच : क्रिकेट खेलने की पट्टी

हेटट्रिक : लगातार तीन बार

एल.बी.इब्लू. : पगबाधा, क्रिकेट में यदि विकेट पर जाती हुई गेंद पैरों से लगे तो खिलाड़ी एल.बी.डब्लू. आउट दिया जाता है।

हिट : शॉट

पास : गेंद आगे बढ़ाना

'डी' : हॉकी में मैदान का विशेष क्षेत्र जहां से गोल किया जाता है।

सैनटेनरो : 100 वर्ष

लॉब शाट : गेंद को उछाल कर मारना

पेनाल्टी कार्नर : हॉकी में बैक लाइन से 25 गज़ के क्षेत्र में किसी भी नियम के भंग होने पर विरोधी टीम को पेनाल्टी कार्नर दिया जाता है। इसमें उस टीम का एक खिलाड़ी बैक लाइन से गेंद को स्ट्राइकिंग सर्कल के ऊपर साथियों के पास फेंकता है और उन्हें विरोधी टीम के केवल पांच खिलाड़ियों के विरुद्ध गेंद को गोल बाक्स में पहुंचाना होता है।

9.9 सारांश

- फीचर, लेखन की एक आकर्षक शैली है और खेलकूद पर फीचर लेखन ने प्रसिद्धि हासिल की है। केवल अच्छे फीचर ही ऐसी धरोहर होते हैं जो लंबे समय तक दिलचस्पी कायम रखते हैं। इस इकाई में खेल फीचर के अभिप्राय को स्पष्ट करने के साथ-साथ उसके विषय का चुनाव किस प्रकार किया जाए, यह बताया गया है।
- इसके लिए खेल फीचर के प्रकारों की जानकारी दी गई है। किसी खेल, किसी खिलाड़ी, किसी प्रतियोगिता के अतिरिक्त भी आप अन्य विषय चुन सकते हैं, जैसे—खेलों से जुड़ी विभिन्न अन्य हस्तियों—अम्पायर, खेल कमेंटेटर आदि तथा किसी विशेष खेल संस्थान या मैदान अथवा स्टेडियम पर भी फीचर लिखे जा सकते हैं।
- कौन-सा विषय आपके लिए उपयोगी रहेगा, इस संबंध में आपकी रुचि और विषय की प्रासंगिकता को महत्वपूर्ण बताया गया है। फीचर लेखन के लिए सामग्री संकलन एक महत्वपूर्ण कार्य है। विषय से जुड़े तथ्य, फोटो, विभिन्न साक्षात्कार और आपका अपना शोध लेखन को आसान और रुचिकर बना सकता है।
- सामग्री को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाए, इसके लिए फीचर के तीन मुख्य भागों—आरंभ, मध्य और अंत की भी बात हुई है। इसके अतिरिक्त फीचर की भाषा-शैली पर विचार किया गया है भाषा सरल हो, उसमें गति और प्रवाह हो, पैनापन हो। शैली रोचक और आकर्षक हो जिससे फीचर तथ्यों और आंकड़ों की वजह से बोजिल न लगे।
- आशा है, इस इकाई को पढ़ने के बाद आप खेल फीचर लेखन की ओर प्रवृत्त होंगे और यह इकाई उसमें मददगार सिद्ध होगी।

9.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें (पूरे खंड के लिए)

प्रेमचंद्र गोस्वामी : **पत्रकारिता के प्रतिमान** : यूनिक ट्रेडर्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर।

प्रवीण दीक्षित : **जनमाध्यम और पत्रकारिता** : सहयोगी साहित्य संस्थान, कानपुर।

डॉ. बृजभूषण सिंह आदर्श : **रूपक लेखन** : मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।

ब्रियन निकोल्स : **फीचर्स विद प्लेयर** : प्रेस इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया।

रामचंद्र तिवारी : **पत्रकारिता के विविध रूप** आलेख प्रकाशन, दिल्ली।

डॉ. अर्जुन तिवारी : **आधुनिक पत्रकारिता**, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

9.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) i) उसमें खेल के नियम और तकनीकी पक्ष का ध्यान रखना होता है।
   ii) खेल से संबंधित आंकड़ों का ध्यान रखना होता है।
   iii) खेल की खास शब्दावली में पारंगत होना होता है।

2) खेल आधारित फीचर में खेल के सैंबंध में परिचयात्मक विवरण दिया जाता है जबकि प्रतियोगिता में खेल से संबंधित प्रतियोगिता को विषय बनाया जाता है।

3) क) खिलाड़ी आधारित क्योंकि इस फीचर के केंद्र में ध्यानचंद होंगे।
   ख) अन्य खेल फीचर के अंतर्गत क्योंकि यह शेष तीनों प्रकारों से संबद्ध नहीं है।
   ग) प्रतियोगिता आधारित–डेविस कप टेनिस से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता है।
   घ) खेल आधारित–शतरंज के खेल के बारे में।

4) i) रुचि और जानकारी वाले खेलों का चयन।
   ii) फोटो संकलन की आदत
   iii) पुराने महत्वपूर्ण लेख और तालिकाओं का संकलन।
   iv) संभव हो तो मैच अथवा प्रतियोगिता स्वयं देखना।

5) i) तालिकाओं से तुलनात्मक आंकड़े प्राप्त होते हैं।
   ii) इनसे फीचर में आकर्षण बढ़ता है।
   iii) कम जगह में ज्यादा सूचना दी जा सकती है।

6) i) फोटो महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के हों।
   ii) विशेष अवसर के हों।
   iii) फोटो ध्यान आकर्षित करने वाले हों।

7) क) × ख) √ ग) √ घ) ×

8) i) रेडियो, ii) दूरदर्शन, iii) पत्र-पत्रिकाएं
   iv) पुस्तकें, v) स्वयं खेल का मैदान जहां खेल हो रहे हों।

9) i) किसी समीक्षक या खिलाड़ी के वक्तव्य से।
   ii) किन्हीं जिज्ञासु और उत्सुकतापूर्ण प्रश्नों से।
   iii) विवरणात्मक ढंग से।

10) i) सामग्री का जमाव आकर्षक ढंग से किया जाए।
    ii) भाषा सरल और शैली रोचक हो।
    iii) संतुलित आंकड़े सम्मिलित किए जाएं।

अभ्यास

1) उत्तर स्वयं लिखिए।

2) i) प्रतियोगिता का परिचय और इतिहास
   ii) प्रमुख टीमों और खिलाड़ियों का विवरण
   iii) प्रतियोगिता के संबंध में कुछ प्रमुख संबद्ध लोगों के विचार
   iv) प्रतियोगिता पर आपके अनुमान और निष्कर्ष

3) i) खिलाड़ी का परिचय प्राप्त करना

ii) उसकी उपलब्धियों के आंकड़े प्राप्त करना

iii) उसकी खेल तकनीक की विशेषता अन्यों से तुलना के लिए सामग्री एकत्र करना

iv) उससे बातचीत करना और अन्य विशेषज्ञों की राय लेना।

v) फोटो एकत्र करना

4) स्वयं करें। कुछ संकेत जो उपयोगी हो सकते हैं:

- प्रतियोगिता से संबंधित हर प्रकार का विवरण
- प्रतियोगिता के तथ्य, आंकड़े, उनके क्षेत्र, खिलाड़ियों के अनुभव।
- सभी मैचों के परिणाम और प्रतियोगिता पर उन परिणामों के प्रभाव।
- आयोजन की तैयारियां।
- दर्शकों की प्रतिक्रियाएं आदि।

5 एवं 6 इकाई में बताई गई बातों के आधार पर स्वयं लिखिए।

खंड

3

रिपोर्ताज और यात्रा लेखन

इकाई 10

रिपोर्ताज : अर्थ, स्वरूप एवं महत्व 5

इकाई 11

रिपोर्ताज : लेखन एवं प्रस्तुति 15

इकाई 12

यात्रा लेखन का महत्व और उसके विविध प्रकार 25

इकाई 13

यात्रा लेखन : विषय का चयन और प्रस्तुति 35

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

प्रो. इंद्रनाथ चौधरी
सचिव, साहित्य अकादमी
नयी दिल्ली

श्री विष्णु प्रभाकर
दिल्ली

श्री राजेन्द्र अवस्थी
संपादक, कादंबिनी
नयी दिल्ली

प्रो. चंद्रकांत बांदिवडेकर
बंबई विश्वविद्यालय
बंबई

श्री गिरिराज किशोर
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
कानपुर

श्री असगर वजाहत
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नयी दिल्ली

सहयोग
प्रो. शिव के. कुमार
हैदराबाद

श्री ब्रजनारायण अग्रवाल
सहायक संपादक, साप्ताहिक हिंदुस्तान
नयी दिल्ली

डॉ. कृष्ण दत्त पालीवाल
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

प्रो. बख्शीश सिंह
भूतपूर्व निदेशक, मानविकी विद्यापीठ

प्रो. वी.रा. जगन्नाथन

डॉ. जवरीमल पारख

डॉ. रीतारानी पालीवाल

डॉ. शत्रुघ्न कुमार

सहयोग

डॉ. शशिप्रभा कामरा

डॉ. सुनयना कुमार

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक
श्री विश्वमित्र उपाध्याय
नयी दिल्ली

डॉ. नीलम फ़ारूक़ी

डॉ. जवरीमल पारख

संपादक
डॉ. राजेंद्र अवस्थी
संपादक, कादंबिनी

संकाय सदस्य

डॉ. शत्रुघ्न कुमार

डॉ. सत्यकाम

डॉ. पूरन चंद टंडन

डॉ. नीली फ़ारूक़ी

श्रीमती विमल खांडेकर

खंड संयोजक

डॉ. जवरीमल पारख

पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. जवरीमल पारख

सामग्री निर्माण

श्री बालकृष्ण सेल्वराज
कुलसचिव
मुद्रण एवं प्रकाशन प्रभाग
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

श्री. महेन्द्र प्रकाश शर्मा
संयुक्त कुलसचिव
मुद्रण एवं प्रकाशन प्रभाग
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

जुलाई, 1992

© *इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1992*

ISBN-81-7263-181-2

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अनुमति से पुनः मुद्रित। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद की ओर से प्रो. जी.एस.शुक्ला, कुलसचिव द्वारा पुनः मुद्रित एवं प्रकाशित, 2017
मुद्रक ; चन्द्रकला युनिवर्सल प्रा.लि. 42/7 जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद 211002

PGDCWH-02/162

खंड 3 का परिचय

सृजनात्मक लेखन कार्यक्रम से संबंधित दूसरे पाठ्यक्रम फीचर लेखन के दो खंड आप अब तक पढ़ चुके हैं। पहले खंड में आपने फीचर लेखन के आधारभूत नियमों की जानकारी प्राप्त की थी। दूसरे खंड में विभिन्न विषयों से संबंधित फीचर लेखन का अध्ययन किया था। इस तीसरे खंड में आप "रिपोर्ताज और यात्रा लेखन" का अध्ययन करेंगे इस खंड में कुल चार इकाइयाँ हैं। पहली दो इकाइयों में रिपोर्ताज के लेखन के बारे में बताया गया है जबकि शेष दो इकाइयों में यात्रावृतांत के लेखन के बारे में।

इकाई 10 "रिपोर्ताज : अर्थ, स्वरूप एवं महत्व" में रिपोर्ताज विधा की जानकारी दी गई है। रिपोर्ताज का संबंध जितना पत्रकारिता से है उतना ही साहित्य से भी। कई लेखकों, रचनाकारों ने समय-समय पर उच्चकोटि के रिपोर्ताज लिखे हैं। इस इकाई में हमने रिपोर्ताज का अर्थ, उसके स्वरूप और उसके महत्व के बारे में बताया है। साथ ही हमने कई विधाओं से इसकी तुलना भी प्रस्तुत की है ताकि आप रिपोर्ताज और अन्य विधाओं के अन्तर को अच्छी तरह समझ सकें।

इकाई 11 "रिपोर्ताज : लेखन एवं प्रस्तुति" में रिपोर्ताज के लेखन के बारे में बताया गया है। रिपोर्ताज लिखने की शुरुआत करने से पूर्व क्या तैयारी करनी चाहिए। समस्या का निर्धारण क्यों करना चाहिए, ध्यान रखना क्यों आवश्यक है, आदि पक्षों पर इकाई में विचार किया गया है। रिपोर्ताज लेखन की शुरुआत कैसे करें उसका मध्य भाग लिखते हुए किन बातों का ध्यान रखें तथा अंत कैसे करें आदि के बारे में भी बताया गया है। रिपोर्ताज का रोचक शीर्षक देने के बारे में भी इकाई में उल्लेख किया गया है। रिपोर्ताज की भाषा-शैली की प्रमुख विशेषताओं से भी आज परिचय प्राप्त करेंगे।

इकाई 12 यात्रा लेखन का महत्व और उसके विविध प्रकार में यात्रा लेखन के उद्देश्य और महत्व, पत्र लेखन के विविध प्रकारों और विभिन्न शैलियों के बारे में बताया गया है।

इकाई 13 यात्रा लेखन : विषय का चयन और प्रस्तुति में यात्रा लेखन के किया गया है। यात्रा लेखन फीचर लेखन का महत्वपूर्ण अंग है। लोग यात्राओं के बारे में पढ़ना चाहते हैं। विशेष रूप से उन यात्राओं के बारे में जो ज्ञानवर्द्धक, सोद्देश्यपूर्ण, साहसिक और रोमांचकारी हों। एक अच्छा यात्रा वृत्तान्त यात्रा की तरह आनंददायक होता है।

इस खंड में हमने रिपोर्ताज और यात्रा वृतांत के विभिन्न उदाहरण भी दिये हैं। आप पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रिपोर्ताजों और यात्रा वृतांतों का स्वयं भी अध्ययन करें। खंड में दिये गये बोध प्रश्नों एवं अभ्यासों द्वारा अपने लेखन कौशल को सुधारें।

इकाई 10 रिपोर्ताज : अर्थ, स्वरूप एवं महत्व

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 रिपोर्ताज का अर्थ
10.3 रिपोर्ताज की रचनागत विशिष्टता
  10.3.1 अंतर्वस्तु
  10.3.2 भाषा
  10.3.3 शैली
  10.3.4 प्रतिपाद्य
10.4 रिपोर्ताज एवं अन्य गद्य रूप
  10.4.1 रिपोर्ताज और कहानी
  10.4.2 रिपोर्ताज और रेखाचित्र
  10.4.3 रिपोर्ताज और संस्मरण
  10.4.4 रिपोर्ताज और निबंध
  10.4.5 रिपोर्ताज और फीचर
  10.4.6 रिपोर्ताज और रिपोर्ट
10.5 रिपोर्ताज का महत्व एवं उपयोगिता
10.6 सारांश
10.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

रिपोर्ताज गद्य की एक महत्वपूर्ण विकसित विधा है जिसका अध्ययन आप इस इकाई में और इससे अगली इकाई में करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- रिपोर्ताज का अर्थ बता सकेंगे,
- रिपोर्ताज और गद्य की अन्य विधाओं का अंतर स्पष्ट कर सकेंगे,
- रिपोर्ताज की उपयोगिता और उसके महत्व का उल्लेख कर सकेंगे, और
- रिपोर्ताज की रोचकता एवं विशिष्टता बता सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

हिंदी में सर्जनात्मक लेखन कार्यक्रम के पाठ्यक्रम दो से संबंधित तीसरे खंड की यह पहली इकाई है और पाठ्यक्रम की 10वीं इकाई है। इस इकाई में रिपोर्ताज के स्वरूप एवं लेखन की तैयारी के बारे में विचार किया जाएगा। इससे पहले की इकाई में आपने खेल-कूद में फीचर लेखन के बारे में अध्ययन किया था। अब तक इस पाठ्यक्रम में आपने जो पढ़ा, उससे आप यह समझ चुके हैं कि फीचर लेखन पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण अंग है। रिपोर्ताज भी पत्रकारिता का एक अन्य महत्वपूर्ण अंग है। लेकिन यह फीचर लेखों से किंचित् भिन्न है। रिपोर्ताज यद्यपि पत्रकारिता की देन है परन्तु यात्रा लेखन की तरह इस विधा का भी साहित्यिक रूप में प्रयोग होता रहा है। इसमें किसी घटना, युद्ध, भूचाल, अकाल आदि का तथ्यपरक मार्मिक विवरण दिया जाता है जो मानवीय संवेदनाओं से जुड़कर साहित्य की अमूल्य निधि बन जाता है। इसका विस्तृत विश्लेषण हम इस इकाई में करेंगे। इस इकाई में हम अन्य गद्य विधाओं की तुलना में रिपोर्ताज की विशिष्टता से भी आपको परिचित करायेंगे। यद्यपि रिपोर्ताज की विधा हिंदी में इतनी लोकप्रिय नहीं है तथापि उसकी उपयोगिता और उसके महत्व को व्यापक रूप से स्वीकारा गया है। इस इकाई में हम रिपोर्ताज के महत्व और उसकी उपयोगिता के बारे में विचार करेंगे। इकाई को पढ़ने से आप रिपोर्ताज के विभिन्न पहलुओं को समझ सकेंगे।

10.2 रिपोर्ताज का अर्थ

रिपोर्ताज शब्द से ही आभास होता है कि यह शब्द "रिपोर्ट" से संबंधित है। हिंदी साहित्य कोश के अनुसार रिपोर्ट का ही कलात्मक रूप रिपोर्ताज है। यह बात कहाँ तक सही है इस पर हम आगे विचार करेंगे। इससे पहले रिपोर्ताज

शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में विचार करें। रिपोर्ताज फ्रेंच भाषा का शब्द है जिसके मूल में पत्रकारिता से जुड़ा "रिपोर्टिंग" शब्द है। इस गद्य विधा का सूत्रपात द्वितीय विश्व-युद्ध के आसपास से माना जाता है। रूसी लेखकों ने समाचार पत्रों में जो युद्ध के सजीव मार्मिक और टिप्पणीयुक्त विवरण भेजे उन्हें रिपोर्ताज कहा गया।

रिपोर्ताज का मतलब रोचक और भावात्मक विवरण से है जिसमें किसी सत्य घटना का यथातथ्य वर्णन, गद्यात्मक सरसता और रोचकता के साथ किया गया हो। पत्रकारिता में पत्रकार जब घटना की यथातथ्य रिपोर्टिंग लिखकर समाचार पत्र को भेजते हैं तो उसे रिपोर्ताज की संज्ञा नहीं दी जाती है। वह तो मात्र "समाचार" है परन्तु यही रिपोर्टिंग का कार्य जब अधिक दायित्व के साथ और घटनाओं के यथातथ्य वर्णन के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं को ध्यान में रखकर किया जाता है तो वह मात्र समाचार या रिपोर्टिंग नहीं रहता और जब यही रिपोर्टिंग कलात्मक रूप में अभिव्यक्त की जाती है तो रिपोर्ताज की श्रेणी में आ जाती है। हां यह अवश्य है कि प्रत्येक रिपोर्ताज साहित्यिक स्तर प्राप्त नहीं कर पाता। इसके लिए रचनात्मक क्षमता का होना आवश्यक है। लेकिन पत्रकारिता के क्षेत्र में एक उत्कृष्ट रिपोर्ताज का महत्व हमेशा बना रहता है।

उपर्युक्त विश्लेषण से आप समझ गये होंगे कि रिपोर्ताज से क्या तात्पर्य है। रिपोर्ताज न समाचार है न मात्र रिपोर्ट। वह इन दोनों की विशेषताओं को स्वीकार करता हुआ भी इनसे भिन्न है। यथातथ्य वर्णन, मानवीय संवेदना, मार्मिकता और साहित्यिक शैली के साथ प्रस्तुत की गई रिपोर्टिंग को रिपोर्ताज कहा जा सकता है।

10.3 रिपोर्ताज की रचनागत विशिष्टता

यद्यपि एक श्रेष्ठ सृजनात्मक रचना का सृजन पूरी तरह नियमों के बंधनों से बंधकर नहीं किया जाता। लेकिन अन्य विधाओं से उस विशेष विधा की पृथकता बताने के लिए जरूरी हो जाता है कि उसका विशिष्ट बताया जाये अर्थात् उसका अपना स्वरूप क्या है। इस दृष्टि से विचार करने पर रिपोर्ताज के स्वरूप को निम्नलिखित तत्वों के आधार पर निर्धारित किया जा सकता है :

1) अंतर्वस्तु
2) भाषा
3) शैली
4) प्रतिपाद्य

10.3.1 अंतर्वस्तु

रिपोर्ताज लेखन के लिए जिस किसी विषय का चयन किया जाए चाहे वह युद्ध से संबंधित हो अथवा महामारी, बाढ़, अकाल, दुर्घटना या किसी महत्वपूर्ण पहलू से संबंधित हो या किसी ऐतिहासिक स्थल से। लेखक का उद्देश्य उसकी सूचना देना भर नहीं होता। उसकी दृष्टि तो उस घटना के उन अनदेखे, अनछुए मानवीय पहलुओं पर होती है जिसे वह उजागर करना चाहता है। साथ ही वह पाठकों को उस विषय और घटना पर सोचने के लिए बाध्य भी करता है। अतः रिपोर्ताज की अंतर्वस्तु में निम्नलिखित तीन गुणों का होना आवश्यक है। (1) समसामयिकता, (2) तथ्यपरकता और (3) कथात्मकता।

1) समसामयिकता

एक अच्छे रिपोर्ताज की पहली आवश्यक शर्त यह होती है कि रिपोर्ताज लिखने के लिए आप जिन घटनाओं का चयन करें वह कोई महत्वपूर्ण सामयिक समाचार देने वाली होनी चाहिए और लेखक को उन घटनाओं का प्रत्यक्ष दृष्टा होना चाहिए। महत्वपूर्ण सामयिक समाचार से तात्पर्य यह है कि एक अच्छा रिपोर्ताज लेखक उन घटनाओं को ही रिपोर्ताज का विषय बनाता है जिसमें पाठकों की व्यापक दिलचस्पी हो या फिर उसमें इतनी क्षमता होनी चाहिए कि वह घटना के ऐसे पहलू उभार सके जिनका समसामयिक महत्व हो। प्रत्यक्ष दृष्टा से तात्पर्य यह नहीं है कि जिस समय घटना घटित हुई हो उस समय लेखक वहां मौजूद हो। ऐसा होना चाहिए जो प्रायः असंभव ही है। लेकिन जब कोई ऐसी घटना घटित हो जाए जिसे रिपोर्ताज का विषय बनाया जाना हो तो लेखक का यह कर्तव्य है कि वह उस स्थान का स्वयं दौरा करे और स्थिति का सही-सही जायजा लेकर आंखों देखी और कानों सुनी बातों का मानवीय संदर्भ में बयान करें क्योंकि यदि आप दो-चार महीनों के अखबारों से किसी विषय विशेष से संबंधित घटना का चयन कर एक भावपूर्ण रचना लिखेंगे तो वह रिपोर्ताज नहीं होगी। कारण एक तो वे घटनायें पुरानी पड़ चुकी होती हैं और अखबारी दुनिया में बासी खबरों की कोई कीमत नहीं होती और दूसरे यह कि लेखक वहां खुद मौजूद नहीं है इसलिए वह जो कुछ भी लिखेगा उससे वह प्रभाव पैदा नहीं हो पायेगा जो अगर वह प्रत्यक्ष दृष्टा होता तो पैदा होता। उदाहरण के लिए "तूफ़ानों के बीच" रिपोर्ताज के रचयिता रांगेय राघव सन् 1942 में बंगाल में पड़े भयंकर अकाल के प्रत्यक्ष दृष्टा रहे। भीषण अकाल में जकड़े हुए बंगाल के लोगों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से सैनिक चिकित्सक दल में प्रगतिशील लेखक संघ के रिपोर्टर के रूप में रांगेय राघव स्वयं आगरा से बंगाल पहुंचे थे और अकाल से जूझते लोगों के साथ सुबहें, शामें और रातें गुजारी थीं। इसी तरह "ग्वालियर" रिपोर्ताज उन्होंने वहां हुए गोली कांड के तत्काल बाद ग्वालियर की

यात्रा कर लिखा है। फणीश्वर नाथ रेणु ने बिहार के सूखे का आंखों देखा हाल "भूमि दर्शन की भूमिका" रिपोर्ताज में बयान किया है। निर्मल वर्मा ने "प्राग का स्वपन" में युद्ध की विभीषिका का वर्णन प्राग में रहकर किया है।

2) तथ्यपरकता

रांगेय राघव के रिपोर्ताज संग्रह "तूफ़ानों के बीच" में सन् 1942 के अकाल के भयावह रूप को दिखाया गया है। इस अकाल में 60 लाख लोग भूख से तड़प-तड़प कर मर गये और इससे कहीं अधिक कुपोषण के शिकार होकर पंगु, अशक्त और मृतप्राय जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य हो गये या फिर भयंकर रोगों के शिकार होकर इस संसार से कूच कर गये। सैकड़ों महिलाओं को अपनी तथा अपने परिवार की भूख मिटाने के लिए वेश्यावृत्ति अपनानी पड़ी। यह अकाल ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अनवरत शोषण का परिणाम था। अपने समय की इस घटना को मानव होने के नाते हर व्यक्ति के लिए जानना और समझना जरूरी था। लेखक ने इस महत्वपूर्ण घटना को केवल एक अखबारी सुरखी के रूप में नहीं देखा बल्कि इसे ऐसे कथ्य के रूप में अपनाया जिसमें उस अकाल की वास्तविक घटनाओं को मानवीय संवेदन के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया गया था। उन्होंने अकाल के मार्मिक चित्र ही नहीं दिये बल्कि इसके लिए जिम्मेदार तत्वों का पर्दाफाश करके वास्तविकता के सभी महत्वपूर्ण पक्षों को अपने रिपोर्ताज का हिस्सा बनाया। कहने का तात्पर्य यह है कि रिपोर्ताज लेखक को केवल घटनाओं का आंखों देखा वर्णन ही नहीं करना चाहिए वरन् उन तत्वों को भी सामने लाना चाहिए जो सामने दिखाई देने वाली घटनाओं के पीछे कारण के रूप में मौजूद हैं।

3) कथात्मकता

रिपोर्ताज एक या अनेक घटनाओं से गुँथा हुआ होता है इसलिए प्रत्येक रिपोर्ताज में कोई-न-कोई छोटी-बड़ी कहानी जरूर होती है। यद्यपि कहानी कहना लेखक का उद्देश्य नहीं होता। इसका इस्तेमाल तो वह घटना विशेष को प्रभावी रूप प्रदान करने के लिए करता है। छोटी-छोटी बातों के माध्यम से लेखक ऐसे चित्र खींचता है जिससे पाठक उस घटना के बारे में सोचने के लिए मजबूर हो उठता है। 'तूफ़ानों के बीच' संग्रह के रिपोर्ताज "एक रात" में रूप लाल का कथावृत्त या फिर "अंधकार" में चण्डी चरण मुखोपाध्याय का, ये कथा प्रसंग बंगाल के अकाल के भीषण रूप को सामने लाने का काम करता है। अपने वर्ग की विशिष्टताओं को दिखाते हुये ये उस अकाल के विविध और बेहतर आयामों को उजागर करते हैं। 'एक रात' रिपोर्ताज का एक उदाहरण देखिये :

> *रूप लाल हँस उठा। वह कह रहा है — "तुम क्या जानो? तुमने क्या मुझे तब देखा, जब मैं भूखा था?"*
>
> *वह अट्टहास कर उठा। तब? आसमान में न तारे थे, न पैरों के नीचे जमीन। चारों और अंधेरा नजर आता था। मैं प्राण बाला को प्यार करता था और संसार ने गरीबी के कारण सदा वह समझा कि मेरा प्यार, प्यार नहीं, मेरा स्वार्थ था, एक नियम। सचमुच। किन्तु जिस दिन मैंने अपने हाथों से अपनी बहू और बच्चों का खून किया था उस दिन मैं रूप लाल नहीं था, उस दिन कोई मेरा नहीं था, मैं किसी का नहीं था में रूप लाल की छाया भी न था। बाबू, उस दिन मैं भूखा था।*
>
> [रांगेय राघव ग्रंथावली, खंड 8, पृ. 199)

10.3.2 भाषा

रिपोर्ताज विधा को पत्रकारिता की देन माना जाता है इसलिए समाचार पत्रों के लिए जिस प्रकार की भाषा अपनाई जाती है रिपोर्ताज के लिए भी उसे उपयुक्त समझा जाता है। लेकिन रिपोर्ताज को अगर साहित्यिक रूप प्रदान किया जाना है तो अखबारी भाषा का अनुकरण पर्याप्त नहीं है। तब भाषा को सृजनात्मक रूप देना होगा। केवल तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली या घटना का आंखों देखा हाल कहने वाली भाषा कभी भी उतनी प्रभावशाली नहीं हो सकती। जितनी कि वह भाषा जिसमें तथ्यों और घटनाओं को मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत करके प्रस्तुत किया जाये। रिपोर्ताज में वाक्य छोटे, स्पष्ट और प्रभावशाली होने चाहिए। भाषा ऐसी नहीं होना चाहिए कि पाठक शब्दों के अर्थ-जाल में उलझकर रह जाये परन्तु घटनाओं का ऐसा बिम्ब खड़ा करना चाहिए कि जिसे पढ़ते ही पाठक के सामने सब कुछ चित्र रूप में प्रस्तुत हो जाये। फणीश्वर नाथ रेणु के "भूमि दर्शन की भूमिका" का निम्नलिखित उदाहरण देखिये :

> *मैंने जीवन में ऐसे लोगों की भीड़ कम देखी है, चलते फिरते मुर्दों की टोली मुझे लगा, मुँह में रस डालकर चबाते हुए बिना कोई स्वाद पाये ही लोग निगलते जा रहे हैं।*

एक और उदाहरण देखिये जो रांगेय राघव के रिपोर्ताज "बूचड़खाना" से लिया गया है।

> *मैली काली बत्तियां। मैं देख रहा हूँ। बंगाल के भीतरी भाग में तुलना नहीं हो सकती। वहाँ इतना भेद नहीं है। आज की सभ्यता की माप वहाँ है जहाँ एक ओर महल है एक ओर झोपड़ी। हम में कितनी सामर्थ्य और शक्ति है, किन्तु हम कितने दुखी हैं।*

इन दोनों उदाहरणों में लेखक ने छोटे-छोटे वाक्य द्वारा अपनी बात कही है यहाँ तक कि यथासंभव अनुच्छेद भी छोटे ही रखे हैं। दूसरे उदाहरण में "मैली काली बत्तियां" उस समय के बंगाल के निराशा भरे वातावरण की तस्वीर सामने रखती है। यह केवल व्यक्ति के मन की दशा की झलक नहीं देता बल्कि इस बात की ओर संकेत भी करता है कि जब मनुष्य अपने मूलभूत आवश्यकता भूख ही नहीं मिटा पाता तो फिर बत्तियों पर जमी धूल को साफ करने का अवकाश किसके पास है। "मैली काली बत्तियां" लोगों के बुझते हुये जीवन दीप तथा विषम से विषम परिस्थितियों में पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ अपने प्राणों की रक्षा के लिए जूझते लोगों की करुण कहानी कहती है। इस तरह कई-कई अर्थ इससे निकल सकते हैं लेकिन इसमें कहीं कोई अस्पष्टता नहीं है।

रिपोर्ताज लेखक भावों की अभिव्यक्ति के लिए जिन उपमानों या अप्रस्तुतों का चयन करता है वे उसी माटी से जुड़े होने चाहिए जिसकी वह कथा कहता है। तथ्य को प्रभावी बनाने के लिए लेखक को ऐसे शब्दों के प्रयोग से नहीं कतराना चाहिए जो स्थानीय महत्व के हैं। देशज शब्द अपना अलग ही प्रभाव डालते हैं अतः यथास्थान उनका प्रयोग किया जा सकता है। हां इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि ऐसे शब्दों की भरमार न हो।

10.3.3 शैली

कथ्य के प्रभावी सम्प्रेषण के लिए रिपोर्ताज लेखक को विषय के अनुरूप शैली का प्रयोग करना चाहिए। वैसे मुख्यतः वर्णनात्मक शैली का उपयोग अधिक किया जाता है लेकिन कभी-कभी पत्र शैली का प्रयोग भी किया गया है, कभी-कभी निबंध शैली का भी। कभी रिपोर्ताज में कथात्मकता प्रमुखता पाती है तो कभी कथ्य काव्य सा लगता है। लेकिन यह शैली वैविध्य रिपोर्ताज की आत्मा में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं लाता। कहने का मतलब है कि काल, महामारी, युद्ध आदि समसामयिक विभिषकाएँ मानव मन को उद्वेलित करती हुई उन जीवन मूल्यों के संबंध में सोचने के लिए विवश करती है जिनके अभाव में मनुष्य-मनुष्य नहीं रह जाता। रांगेय राघव ने अपनी रचनाओं में रिपोर्ताज लेखन के लिए विविध प्रकार की शैलियों का उपयोग किया है। यहां तक कि एक ही रचना में एक से अधिक शैलियां प्रयुक्त हुई हैं। कहीं-कहीं वे नाट्य विधा का भी प्रयोग करते हैं। रिपोर्ताज में महत्व इस बात का होता है कि लेखक जिन घटनाओं को शब्दों में प्रस्तुत कर रहा है उसका एक जीवंत रूप पाठकों के सामने पेश कर दे और इस जीवंत रूप को सामने लाने के लिए रचना का भिन्न-भिन्न शैली का प्रयोग करता है। हां यह आशा है कि केवल चमत्कार दिखाने के लिए किये गये प्रयोग रिपोर्ताज के प्रभाव को कम भी कर सकता है।

10.3.4 प्रतिपाद्य

रिपोर्ताज लेखक रिपोर्ताज में अपने युग को प्रतिबिम्बित करता है इसलिए रिपोर्ताज न केवल, अपने युग का जीवंत इतिहास होता है वरन् जीवन का दिशा निर्देशक भी होता है। अतः रिपोर्ताज लेखक घटना विशेष से संबद्ध विभिन्न प्रसंगों को ही नहीं बल्कि उस घटना चक्र को प्रचालित करने वाली विभिन्न शक्तियों और उनके भीतरी इरादों का पर्दाफाश करने का प्रयत्न करता है। लेखक उस घटना चक्र में पिसने और झूझने वाले साधारण व्यक्तियों की असाधारण वीरता, दृढ़ संकल्प और बलिदान की ऐसी कहानी कहता है कि पढ़ने वाले के हृदय को स्पर्श करे। रिपोर्ताज लेखक का दृष्टिकोण मानवतावादी होता है। वही वजह है कि विशेष घटना का तथ्य संकलन मात्र उसका अभीष्ट नहीं होता। पत्रकार की दृष्टि तथ्यों पर केंद्रित होती है जबकि साहित्यकार की मानवीय पहलुओं पर। भीषण और विकट परिस्थितियों में जो मनुष्य की सहायता नहीं करता वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं। रिपोर्ताज लेखक अपने लेखन द्वारा यही मानवीय कर्म करता है। रिपोर्ताज लेखक को पूर्वग्रहग्रस्त और पक्षपातपूर्ण भी नहीं होना चाहिए। उसके लेखन से यह नहीं लगना चाहिए कि वह अपने कार्य के प्रति ईमानदार नहीं है। अगर हममें मानवीय सरोकारों के प्रति गहरा लगाव है तो हम रिपोर्ताज को हमेशा उच्च उद्देश्यों से प्रेरित होकर लिखेंगे इसी में हमारे लेखन की सफलता और सार्थकता निहित होगी।

बोध प्रश्न

1) रिपोर्ताज किसे कहते हैं? दो पंक्तियों में उत्तर लिखिये।

.....

.....

2) रिपोर्ताज की अंतर्वस्तु के तीन प्रमुख गुणों का नामोल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

3) रिपोर्ताज की भाषा की तीन विशेषतायें बताइये।

.....

.....

.....

अभ्यास

1) रांगेय राघव के एक रिपोर्ताज के निम्नलिखित अंश की भाषागत विशेषतायें पाँच पंक्तियों में बतायें।

एक 8 या 9 वर्ष का बालक एकाएक कह उठा — 'चावल तो मिलता ही नहीं अकाल में तो हमने बाजरा खाया था, बाजरा।' और सब हँस पड़े। सचमुच यह हँसी नहीं थी। जब मनुष्य निराशाओं से घिरा अपने ऊपर रोने के

स्थान पर मुस्करा उठता है, तब उसके हृदय का प्रत्येक स्वर गीत बनकर निकलता है। उसकी एक बाँकी चितवन अंधकार में एक क्षण भर का जुगनू बनकर टिमटिमा उठती है।

.....

.....

.....

.....

.....

10.4 रिपोर्ताज एवं अन्य गद्य रूप

रिपोर्ताज एक बहुत ही लचीला साहित्य रूप है यही कारण है कि उसे कभी कहानी के नजदीक बताया जाता है तो कभी निबंध के। कभी-कभी उसे रेखाचित्र, संस्मरण, फीचर और रिपोर्ट भी समझा जाता है। अतः रिपोर्ताज तथा इन विधाओं के पारस्परिक अंतर को स्पष्ट कर देना जरूरी है।

10.4.1 रिपोर्ताज और कहानी

रिपोर्ताज में चूंकि कथा तत्व शामिल रहता है उसमें कहानी की सी रोचकता आ जाती है। यही कारण है कि रिपोर्ताज को कहानी मान लिया जाता है। लेकिन दोनों में पर्याप्त अंतर है —

1) रिपोर्ताज लेखक जहाँ घटना घटित होती है वहां स्वयं पहुँचकर स्थिति का जायजा लेता है जबकि कहानी के लिए जीवन की किसी वास्तविक घटना से प्रत्यक्ष रूप में प्रेरणा लेना या उसे कहानी का आधार बनाना आवश्यक नहीं है। कहानीकार ऐसा भी कर सकता है और वह नितांत काल्पनिक घटनाओं पर भी कहानी का ताना-बाना बुन सकता है।

2) रिपोर्ताज लेखक वास्तविक घटना से बंधा होता है यद्यपि उसके विवरण की शैली उसकी अपनी होती है लेकिन कहानीकार वास्तविक घटनाओं से प्रेरणा लेकर भी उससे बंधा नहीं होता।

3) रिपोर्ताज लेखक अभीष्ट पात्रों का चरित्र-चित्रण करना नहीं होता जबकि कहानीकार थोड़ा-बहुत चरित्र चित्रण पर भी बल देता है।

4) रिपोर्ताज सामान्यतः समसामयिक घटनाओं और प्रसंगों पर आधारित होते हैं। जबकि कहानी अतीत, वर्तमान और भविष्य में, किसी भी वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं और प्रसंगों पर बुनी जा सकती है।

प्रेमचंद की कहानी "शतरंज के खिलाड़ी" का एक अंश देखिये और इसकी तुलना किसी भी रिपोर्ताज से करके देखिये तो अंतर स्वतः ही स्पष्ट हो जायेगा।

> *सभी की आंखों में विलासिता का मद छाया हुआ था संसार में क्या हो रहा है इसकी किसी को खबर न थी। बटेर लड़ रहे हैं, तीतरों की लड़ाई के लिए पाली बदी जा रही है। कहीं चौसर बिछी हुई है, पों बारह का शोर मचा हुआ है। कहीं शतरंज का घोर संग्राम छिड़ा हुआ है। राजा से लेकर रंक तक इसी धुन में मस्त थे यहां तक कि फकीरों को पैसे मिलते तो वे रोटियां न लेकर अफीम खाते या मदक पीते। शतरंज, ताश, गंजीफा खेलने से बुद्धि तीव्र होती है। विचार शक्ति का विकास होता है। पेचीदा मसलों को सुलझाने की आदत बढ़ती है। ये दलीलें जोरों के साथ पेश की जाती थीं। इस संप्रदाय के लोगों से दुनियां अब भी खाली नहीं है। इसलिए अगर मिर्जा शज्जाद अली और मीर रौशन अली अपना कुछ समय बुद्धि तीव्र करने में व्यतीत करते थे तो किसी विचारशील पुरुष को क्या आपत्ति हो सकती थी? दोनों के पास मौरूसी जागीरें थी, जीविका की कोई चिंता न थी। घर में बैठे चकोतियां करते थे और आखिर करते ही क्या?*

इस अंश में प्रेमचंद जी ने 19वीं शताब्दी के भारत की सामाजिक परिस्थितियों का चित्र प्रस्तुत किया है। लेकिन यह कहानी भी भूमिका है। वास्तविक कहानी तो मिर्जा शज्जाद अली और मीर रौशन अली की है जिनका चरित्र कहानी में उभरकर आता है। रिपोर्ताज में चरित्र उभरते हैं लेकिन अंततः वहाँ घटनायें ही प्रथमतः स्थान पाती हैं।

10.4.2 रिपोर्ताज और रेखाचित्र

कभी-कभी रिपोर्ताज का रेखाचित्र से संबंध जोड़ा जाता है। इस समानता के आधार पर दोनों में घटना, स्थान और व्यक्ति चित्रित किये जा सकते हैं। दोनों विधाओं के लेखकों से अपेक्षा की जाती है कि संवेदना के धरातल पर कथ्य से जुड़ा होने के बावजूद तटस्थ बने रहें। इन समानताओं के अलावा रिपोर्ताज रेखाचित्र में अनेक अंतर भी।

रिपोर्ताज लेखन में लेखक कल्पना के सहारे घटनाओं का चित्रण नहीं कर सकता क्योंकि उसे घटना का तथ्यपरक विवरण देना होता है। जबकि रेखाचित्र कल्पना से रंजित हो सकता है। रिपोर्ताज लेखक को जहाँ पाठक तक समाचार को तथ्यात्मक विवरण के साथ पहुँचाना होता है। इसलिए वह चरित्रात्मकता की शैली को एक प्रकार के रूप में तो इस्तेमाल कर सकता है लेकिन रेखा चित्रकार की तरह उसे अपनी रचना का साध्य नहीं बना सकता। रिपोर्ताज के लिए संक्षिप्तता अनिवार्य शर्त नहीं है यद्यपि अत्यधिक विस्तार रिपोर्ताज का भी गुण नहीं है। जबकि रेखाचित्र में कम शब्दों के प्रयोग से ही उसके रूप में निखार आता है। रेखाचित्र के केंद्र में प्रायः व्यक्ति होता है जिसके चरित्र का उद्घाटन लेखक शब्दों के माध्यम से करता है जबकि रिपोर्ताज में ऐसा होना अनिवार्य नहीं है।

महादेवी वर्मा के रेखा चित्रों को पढ़ने से हम रिपोर्ताज से उसकी भिन्नता को समझ सकते हैं।

10.4.3 रिपोर्ताज और संस्मरण

आइये, अब रिपोर्ताज और संस्मरण में क्या अंतर है, यह जानें। लेकिन इससे पहले यह भी जानें कि रिपोर्ताज को संस्मरण समझने की भूल क्यों की जाती है। दरअसल, दोनों ही विधाओं में कथ्य के साथ निजी सम्पर्क होना आवश्यक है। कहने का मतलब है कि दोनों विधाओं में लेखक वहीं बात कहता है जो उसकी आंखों देखी होती है। इसके अलावा दोनों विधाओं में लेखक ऐसी बातों का उल्लेख करता है जिन्हें हम दिन-प्रतिदिन के जीवन में अनदेखा कर देते हैं, किंतु ये छोटी-छोटी बातें उन जीवन-मूल्यों के साथ जुड़ी होती हैं जो मनुष्य को पशु से अलग करती हैं। यही वजह है कि रिपोर्ताज और संस्मरण को एक समझ लिया जाता है। लेकिन दोनों विधाओं में काफी अन्तर है।

1) रिपोर्ताज में जहाँ प्रत्यक्ष रूप विधान पर बल दिया जाता है, वहाँ संस्मरण में स्मृति रूप विधान पर। अर्थात् रिपोर्ताज लेखक जहाँ किसी घटना विशेष के घटित होते ही तुरंत अपनी रचना रचने लगता है, वहाँ संस्मरण लेखक के लिए यह जरूरी नहीं होता। वह तो स्मृति के आधार पर बाद में भी अपनी रचना लिख सकता है।

2) रिपोर्ताज लेखक में तटस्थता का गुण होता है। आत्मीयता का संबंध अगर वह रखता भी है तो मानव-मूल्यों के साथ, किसी घटना विशेष के साथ नहीं। जबकि संस्मरण लेखक तटस्थ अंकन नहीं कर पाता। संस्मरण के केंद्र में आमतौर पर कोई व्यक्ति होता है जबकि रिपोर्ताज में जीवन के यथार्थ को केंद्र में रखा जाता है।

3) रिपोर्ताज में केवल वर्तमान की बात होती है। यह बात और है कि रिपोर्ताज लेखक अतीत को एकदम छोड़ नहीं पाता और न ही भविष्य के प्रति अपनी आस्था को छोड़ता है। जबकि संस्मरण में विगत का ही अंकन होता है।

ये कुछ अंतर हैं जो रिपोर्ताज को संस्मरण से अलग करते हैं। महादेवी वर्मा के लिखे संस्मरण "घीसा" का यह अंश देखिये —

> *"उसकी सचेत आँखों में न जाने कौन-सी जिज्ञासा भरी थी। वे निरंतर घड़ी की तरह खुली मेरे मुख पर टिकी ही रहती थीं, मानो मेरी सारी विद्या बुद्धि को सीख लेना ही उनका ध्येय था।*
>
> *लड़के उससे कुछ खिंचे-खिंचे से रहते थे। इसलिये नहीं कि वह कोरी था, वरन् इसलिये कि किसी की माँ, किसी की नानी, किसी की बुआ आदि ने घीसा से दूर रहने की नितांत आवश्यकता उन्हें कान पकड़-पकड़ कर समझा दी थी। यह भी उन्होंने बताया और बताया घीसा के सबसे अधिक कुरूप नाम का रहस्य।"*

यहाँ लेखिका आत्मीयता के साथ "घीसा" के जीवन के त्रासद पक्ष का अंकन कर रही हैं। लेकिन रिपोर्ताज लेखक जीवन मूल्यों को उजागर करने के लिए किसी घटना विशेष का अंकन करता है — रांगेय राघव के "बांध भंगे दाओ" रिपोर्ताज का यह अंश देखिये —

> *छोटे-बड़े अनेक विद्यार्थियों ने आकर हमें घेर लिया। उनके अधरों पर एक तरल हंसी थी। पर आँखों में भय-उदासी की छाया भी एक अद्भुत वास्तविकता थी। दीपक की शिखा जल रही थी किंतु निर्धूम नहीं, निश्शंक नहीं। क्षण-भर पहले ही तो वह लौ तूफ़ान में कांप उठी थी, बुझते-बुझते बची थी। मैंने सोचा और समझा कि ये बालक इसलिये नहीं मुस्कुरा रहे हैं कि उन्हें उस अकाल के भयानक पिशाच से लड़कर बच रहने का गर्व था, बल्कि इसलिये कि उनके सामने आज ऐसे मनुष्य खड़े थे, जिन्होंने उनके मनुष्य बने रहने के अधिकार को स्वीकार किया था, उस समय जबकि उनके अपने उनके नहीं थे। जब वे घृणा और स्वार्थ के कारण एक-दूसरे पर विश्वास कर सकने तक की श्रद्धा को भूल चुके थे।*

10.4.4 रिपोर्ताज और निबंध

जिस प्रकार रिपोर्ताज, लेखक के दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करते हैं, उसी प्रकार निबंध भी लेखक के विचारों के सूचक होते हैं, लेकिन इस एक समानता के आधार पर दोनों को समान नहीं कहा जा सकता। इन दोनों विधाओं में अंतर है —

1) रिपोर्ताज में कथात्मकता का समावेश रहता है जबकि निबंध में विचारों और भावों की प्रधानता रहती है।

2) रिपोर्ताज लेखक निबंधकार की तरह किसी भी विषय को कथ्य के रूप में ग्रहण नहीं कर सकता, उसे तो समाज, राष्ट्र और विश्व में घटी ऐसी सामयिक, महत्वपूर्ण घटनाओं को लेना होता है जिससे मानवमूल्य जुड़े होते हैं।

3) रिपोर्ताज लेखक यथार्थ का चित्रण करता है, कल्पना का सहारा वह नहीं ले सकता। जबकि निबंधकार के लिये यह अनिवार्य नहीं।

4) रिपोर्ताज लेखक का यह दायित्व होता है कि वह पाठकों को घटना विशेष की समग्र जानकारी दे जबकि निबंध में घटनाओं और तत्संबंधी विवरणों का प्रायः अभाव होता है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखित "नाखून क्यों बढ़ते हैं" निबंध का एक अंश यहां प्रस्तुत है —

बच्चे कभी-कभी चक्कर में डाल देने वाले प्रश्न कर बैठते हैं। अल्पज्ञ पिता बड़ा दयनीय जीव होता है। मेरी छोटी लड़की ने जब उस दिन पूछ लिया कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते हैं, तो मैं कुछ सोच ही नहीं सका। हर तीसरे दिन नाखून बढ़ जाते हैं, बच्चे कुछ दिन अगर उन्हें बढ़ने दें, तो माँ-बाप अक्सर उन्हें डांटा करते हैं। पर कोई नहीं जानता कि ये अभागे नाखून क्यों इस प्रकार बढ़ा करते हैं। काट दीजिये, वे चुपचाप दंड स्वीकार कर लेंगे, पर निर्लज्ज अपराधी की भांति फिर छूटते ही सेंध पर हाज़िर। आख़िर ये इतने बेहया क्यों हैं?

निबंध के इस अंश में कहानी की-सी रोचकता तो है लेकिन साथ ही इस रचना में भावों और विचारों की प्रधानता है। अब एक उदाहरण रांगेय राघव के 'अदम्य जीवन' रिपोर्ताज से देखें —

कौन कहता है कि बंगाल मर गया है? जहाँ भूख और बीमारियों से लड़कर भी मनुष्यों के बालकों में क्रांति को चिरजीवी रखने का अपराजित साहस है, वह राष्ट्र कभी भी नहीं मर सकेगा। हड्डी-हड्डी से लड़ने वाले ये यौद्धा जीवन की महान शक्ति को अभी तक अपने में जीवित रख सके हैं।"

उक्त पंक्तियों में "बंगाल के अकाल" पर लिखे निबंध का-सा आभास होता है लेकिन चूंकि यह रिपोर्ताज बंगाल के अकाल पर लिखा गया है। अतः लेखक बंगाल का जिक्र करते हुए भी बंगाल के अकाल और उसके परिणामों को ही केंद्र में रखे हुए है। रिपोर्ताज में घटना विशेष का विवरण रहता है और मानव-मूल्यों की बात की जाती है। यही विशेषता उसे निबंध से पृथक करती है।

10.4.5 रिपोर्ताज और फीचर

पत्रकारिता में फीचर को व्यापक रूप में देखा गया है। रिपोर्ताज को भी फीचर का ही एक अंग माना गया है। दोनों ही विधाओं में पुस्तकीय अध्ययन के स्थान पर व्यक्तिगत निरीक्षण और अनुभूतियों पर बल दिया जाता है। कहने का मतलब है कि आँखों देखी और कानों सुनी बातों पर विश्वास करना पड़ता है, केवल आंकड़े देने से काम नहीं चलता।

दोनों विधाओं में लेखक उन छोटी-छोटी महत्वपूर्ण बातों के संकलन से अपनी रचना का ताना-बाना चुनते हैं जिन्हें हम रोज़मर्रा के जीवन में देख नहीं पाते। लेखक कम से कम शब्दों में कथ्य का ऐसा मर्मस्पर्शी चित्र उकेरते हैं कि पाठक उसे भूल नहीं पाते।

इन समानताओं के होते हुए भी रिपोर्ताज और फीचर में पर्याप्त अंतर है :

1) रिपोर्ताज में जहाँ किसी महत्वपूर्ण समसामयिक समाचार को आधार रूप में ग्रहण करना पड़ता है, वहाँ फीचर के लिये यह अनिवार्य नहीं।

2) रिपोर्ताज लेखक का मुख्य उद्देश्य किसी घटना विशेष की मार्मिक रिपोर्ट तैयार करके उसे तुरंत प्रकाशित करना होता है जिससे वह समाचार बासी न पड़ जाये। उसके पास इतना अवकाश कहाँ कि सामग्री संकलन के लिये ऐतिहासिक पुस्तकों और दस्तावेजों की खोजबीन करता फिरे। जबकि फीचर लेखक विषय विशेष की प्रत्यक्ष जानकारी के साथ-साथ, ऐतिहासिक सामग्री का सहारा भी ले सकता है।

भोपाल में हुए गैस कांड पर कई पत्र-पत्रिकाओं में आपको फीचर पढ़ने को मिले होंगे। एक दिसंबर 1985 की "जनसत्ता" में महेश पांडे लिखित "साल भर बाद भोपाल की याद" शीर्षक से जो फीचर प्रकाशित हुआ, उसका अंश हम यहाँ दे रहे हैं, इसे पढ़ें और रिपोर्ताज से इसका अंतर जानने की कोशिश करें।

यह भोपाल है। कोई जापान का हिरोशिमा और नागासाकी नहीं जो एटम बम गिरने के बावजूद आत्मविश्वास से खड़ा होने लगे और आख़िरकार हो जाए। यह भोपाल है जहाँ साल भर पहले मानव-सभ्यता के इतिहास की सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटना हुई और अब एक साल बाद आधे से ज्यादा शहर लंबी-लंबी कतारों में खड़ा है — भिखमंगों जैसा। गैस कांड के वक्त गुनहगारों के लिए बद्दुआ में उठे लाखों हाथ अब याचना में फैले हुए हाथों में बदल गये हैं। हाथों की लंबी कतारें — वे अस्पताल के बाहर हों या दावे दर्ज करने के लिए खोले गये शिविरों के सामने।

अब रिपोर्ताज का एक अंश देखिये जिसे हमने शुक्ला रुद्र के "जहाँ लाशें जली' वहां चूल्हा कौन जलाये" से लिया है जो 20-26 जनवरी, 1985 के "दिनमान" में प्रकाशित हुआ है, यह राहत शिविरों में सिख विस्थापितों पर लिखा गया है —

इसी शिविर में मंगोलपुरी की 60 वर्षीय महिंदर कौर मिलीं। उन्हें अब सिर्फ अपनी मानसिक दृष्टि से अविकसित 18 वर्षीय बेटी सुमिंदर कौर का सहारा रह गया है, जिसकी उम्र भर की जिम्मेदारी अब उन्हें अकेले उठानी है। कुछ कहने से पहले ही वह फूट पड़ीं। अपने दो दिवंगत जवान बेटों की तस्वीरों को दोनों हाथों में लेकर और स्वर्गीय पति के स्कूटर लाइसेंस में जड़ी तस्वीर को कंधे पर रखकर उन्होंने उसी तरह अपना चित्र खिंचवाने पर

जोर दिया। फिर पूछा : मैं क्या करूं बताओ? कभी घर से बाहर कदम नहीं रखा और अब कहा जा रहा है कि कुछ काम सीख कर अपने पैरों पर खड़ी हो जाओ। मैं घर लौटना चाहती हूँ, मगर वहाँ जाकर मां-बेटी खायेंगी क्या?

इस उदाहरण में लेखक ने स्थिति का मात्र शुष्क विवरण प्रस्तुत नहीं किया है — वरन् डरे हुए, मुसीबतज़दा सिख विस्थापितों की दयनीयता का संवेदना के साथ मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। जबकि फीचर में लगभग ऐसी ही स्थिति है, किंतु लेखक ने भोपाल गैस दुर्घटना के साथ हिरोशिमा और नागासाकी के हादसे के बाद जापान के दोबारा अपने पैरों पर खड़े हो जाने से भोपाल की स्थिति की तुलना करके उसे रिपोर्ताज की सीमा से बाहर कर दिया है। यह फीचर के अपने आरंभ की विशेषता भी और फीचर की लेखन शैली का अपना एक अंदाज़ भी।

10.4.6 रिपोर्ताज और रिपोर्ट

रिपोर्ताज और रिपोर्ट को प्रायः एक समझ लिया जाता है क्योंकि दोनों में घटना का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन दोनों में अंतर है।

1) किसी घटना की जाँच करके लेखक व्यक्तिगत निरीक्षण, प्रत्यक्षदर्शी, साक्षियों के आधार पर जो विवरण तैयार करेगा, उसे "रिपोर्ट" कहेंगे। जबकि रिपोर्ताज इससे कुछ भिन्न, कुछ व्यापक अर्थयुक्त शब्द है। रिपोर्ट में वस्तुपरकता, तथ्यात्मकता की रक्षा अनिवार्य है जबकि रिपोर्ताज में लेखक के अपने दृष्टिकोण और लेखकीय शैली का भी अपना महत्व होता है।

2) रिपोर्ताज का उद्देश्य सूचना देना भर नहीं होता। इसके पीछे उसकी विशेष दृष्टि होती है। उसका उद्देश्य किसी घटना विशेष के अनदेखे पहलुओं का पर्दाफ़ाश कर मानव मूल्यों के प्रति पाठक को सजग करना होता है। मानव मूल्यों से जुड़कर ही रिपोर्ताज साहित्य की स्थायी सम्पत्ति बन जाता है।

10.5 रिपोर्ताज का महत्व एवं उपयोगिता

रिपोर्ताज साहित्य की एक समृद्ध धरोहर है। क्योंकि समसामयिक समाचारों के आधार पर रिपोर्ताज लिखे जाते हैं। अतः वे पाठकों के लिए रोचक होते हैं। लेखक चूंकि घटना स्थल का खुद दौरा करता है, अतः सत्यापन और प्रामाणिकता के फलस्वरूप रिपोर्ताज का अपना महत्व होता है।

इतना ही नहीं रिपोर्ताज पढ़ने का अपना आनंद है। इसमें विभिन्न गद्य-शैलियों का समावेश रहता है — कहानी, निबंध, समाचार, आंखों देखा विवरण, घटना-स्थल पर हुई बातचीत — इन सभी से रोचक एवं सशक्त जानकारी मिलती है जिससे पाठक की रुचि बढ़ती है।

सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि रिपोर्ताज मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा रहता है, यही वजह है कि पाठक उसकी ओर शीघ्र आकर्षित होता है। रिपोर्ताज समाज में चेतना लाता है और पाठकों को भी क्रियाशील तथा जुझारू बनने के लिये उत्प्रेरित करता है।

इस प्रकार रिपोर्ताज भविष्य की एक सशक्त साहित्यिक और ऐतिहासिक धरोहर है। एक लेखक के लिये जीविकोपार्जन का साधन तो है ही।

बोध प्रश्न

4) रिपोर्ताज और रेखाचित्र के अंतर को चार पंक्तियों में स्पष्ट कीजिये।

.....

.....

.....

.....

5) सही (√) या गलत (×) का निशान लगायें।

i) रिपोर्ताज में जीवन यथार्थ केंद्र में होता है।

ii) संस्मरण में विगत का अंकन होता है।

iii) रिपोर्ताज में लेखक की प्रतिबद्धता व्यक्ति विशेष के प्रति होती है।

iv) प्रत्यक्ष रूप विधान रिपोर्ताज में महत्वपूर्ण है।

6) रिपोर्ताज और फीचर के अंतर को चार पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए —

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

2) संथाल परगना की पहाड़िया जाति पर लिखे वेद प्रकाश वाजपेयी के रिपोर्ताज के इस अंश को पढ़िये जो जनवरी, 1985 के दिनमान में प्रकाशित हुआ। इस अंश में रिपोर्ताज की कौन-कौन सी विशेषताएँ मिलती हैं। अपने उत्तर की पुष्टि इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से कीजिये।

"मिट्टी के घड़े ... दो-चार मुर्गियाँ ... कुछ चिथड़े तथा थोड़ा बहुत कंद-मूल-सम्पन्न से सम्पन्न पहाड़िया परिवार के पास भी इससे ज्यादा कुछ नहीं होता। इनके घर लकड़ियों के बने होते हैं। पत्थर ही पत्थर ... फर्क नहीं मिट्टी और पत्थर में। खेती भी इसी पर होती है। उपज ... "हमको डेढ़ सौ बीघा खेत है लेकिन सौ सेर भी नहीं उपजता। आधा साल तो खीरा और कंद खाकर पेट भरते हैं ...।"

10.6 सारांश

- इस इकाई को पढ़ने के बाद आपने जाना कि रिपोर्ताज किसी घटना विशेष या स्थल विशेष का ऐसा तथ्यपरक, प्रामाणिक विवरण है जिसे लेखक स्वयं घटनास्थल पर पहुँचकर वहाँ से प्राप्त सूचनाओं और तथ्यों के आधार पर तैयार करता है। रिपोर्ताज मानवीय मूल्यों से जुड़कर ही साहित्य की स्थायी सम्पत्ति बनता है।
- इसे पढ़ने के बाद आप रिपोर्ताज की रचनागत विशेषताओं को भी जान गये होंगे। रिपोर्ताज के मुख्य तत्व हैं — अन्तर्वस्तु, भाषा, शैली और प्रतिपाद्य अथवा उद्देश्य। अन्तर्वस्तु में समसामयिकता, तथ्यपरकता और कथात्मकता जैसे गुणों का समावेश रहता है। इसकी भाषा समाचार-पत्र की भाषा के अधिक निकट है। तथापि इसमें सृजनात्मकता का तत्व अधिक होता है। वाक्य छोटे और सजीव होते हैं। यूं तो रिपोर्ताज वर्णनात्मक शैली में लिखा जाता है लेकिन यह लेखक की अपनी सृजनात्मक क्षमता पर निर्भर है कि आप बात को गहराई से पाठक तक पहुँचाने के लिए वह कौन-सी शैली अपनाता है। आपने देखा कि वह पत्र-शैली, कथात्मक शैली, गद्यकाव्य शैली, चित्रात्मक शैली आदि विविध शैलियों का प्रयोग करता है।
- इस इकाई में हमने आपको स्पष्ट किया कि रिपोर्ताज में समाचार की तथ्यपरकता, फीचर का विश्लेषण, निबंध की वैचारिकता, कहानी का कथारस, रेखाचित्र जैसा व्यक्तित्व अंकन और संस्मरण की आत्मीयता आदि अन्य विधाओं की विशेषताएं पायी जाती हैं जिससे प्रायः इसे उपर्युक्त गद्य विधाओं-सा समझने का भ्रम हो जाता है लेकिन इसकी तथ्यपरकता, मार्मिकता, संवेदात्मकता साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाता है।
- अंत में आपने रिपोर्ताज के महत्व और उपयोगिता के बारे में भी जाना कि किस तरह रिपोर्ताज सामाजिक घटना चक्रों को समाज और राष्ट्रीय हित की दृष्टि से उजागर कर पाठक को जागृत करता है, सोचने पर बाध्य करता है और उसे क्रियाशील बनने के लिये उत्प्रेरित करता है। इस प्रकार रिपोर्ताज का ऐतिहासिक और साहित्यिक धरोहर के रूप में बड़ा महत्व है।

10.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) भाग 10.2 देखिए।

2) i) समसामयिकता
   ii) तथ्यपरकता
   iii) कथात्मकता

3) i) समाचारों की भाषा से अधिक सृजनात्मकता
   ii) चित्रमय भाषा
   iii) वाक्य छोटे, सरल और अर्थपूर्ण

4) रेखाचित्र के लिए कल्पना का सहारा लिया जा सकता है जबकि रिपोर्ताज में नहीं। रेखाचित्र में चित्रात्मकता महत्व है जबकि रिपोर्ताज में इसे साधन के रूप में अपनाया जाता है क्योंकि लेखक को तथ्यपरक विवरण देना होता है। रिपोर्ताज में संक्षिप्तता या विस्तार की कोई कैद नहीं है जबकि रेखाचित्र की विशेषता है कम शब्दों का प्रयोग।

5) i) ✓
   ii) ✓

iii) ×
iv) √

6) उपभाग 10.4.5 देखिए।

अभ्यास

1) उत्तर संकेत — i) सहज, सरल और भावपूर्ण वाक्य-रचना
ii) आत्मीयतापूर्ण और चित्रमय भाषा
iii) तथ्य को उजागर करने वाली भाषा

2) उत्तर संकेत — रिपोर्ताज के उक्त अंश में तथ्यात्मकता है, संवेदनशीलता है, मार्मिकता है और है मानवीय पहलू। शैली वर्णनात्मक है।



आप पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाले विभिन्न रिपोर्ताजों तथा पुस्तकाकार रूप में उपलब्ध रिपोर्ताजों का अवश्य ध्यान करें। इनसे आपको उच्चस्तरीय रिपोर्ताज के गुणों को समझने में मदद मिलेगी और जिनसे प्रेरित होकर आप भी उत्कृष्ट रिपोर्ताज लिख सकेंगे।

11.2 रिपोर्ताज लेखन की तैयारी

रिपोर्ताज लेखन बंद कमरे में नहीं किया जा सकता। इसके लिए तो घटना स्थल पर ही जाना पड़ता है। मान लीजिए आपको राजस्थान के अकाल पर रिपोर्ताज लिखना है तो आप दिल्ली में बैठकर अखबारों की कतरनों के आधार पर रिपोर्ताज कैसे लिख सकते हैं। इसलिए रिपोर्ताज की शुरुआत तो घटना स्थल पर लेखक, पत्रकार की यात्रा से ही हो सकती है। लेकिन केवल यात्रा करना ही पर्याप्त नहीं है। इसके अलावा रिपोर्ताज के लेखक को लिखने से पहले कई तरह की तैयारी करनी होती है। आइए, इनके बारे में जानकारी प्राप्त करें।

11.2.1 यात्रा से पूर्व की तैयारी

रिपोर्ताज लेखन दो तरीके से संभव है। यदि आप किसी अखबार में पत्रकार हैं तो आपका संपादक, आपको किसी स्थान विशेष या घटना विशेष पर रिपोर्ताज लिखने के लिए कह सकता है। तब आप वहाँ की यात्रा करेंगे, फिर रिपोर्ताज लिखेंगे। दूसरा तरीका यह हो सकता है कि आप साहित्यकार हों या स्वतंत्र पत्रकार हों, ऐसी स्थिति में घटना का चयन आप स्वयं करेंगे यानी किस घटना पर या किस विषय पर रिपोर्ताज लिखना है। यह आप अपनी अभिरुचि के अनुसार तय करेंगे और फिर जब रिपोर्ताज तैयार हो जायेगा तो आप किसी पत्र-पत्रिका में प्रकाशन के लिए भेज देंगे। दोनों ही स्थितियों में रिपोर्ताज लेखन के लिए तैयारी में कोई फर्क नहीं होगा। आपको घटना स्थल पर तो जाना ही होगा। लेकिन इससे पहले कि आप घटना स्थल की यात्रा करें, आपको कुछ तैयारी कर लेनी चाहिए।

सबसे पहले तो आपको यह मालूम होना चाहिए कि आप वहाँ क्यों जा रहे हैं। क्या उस स्थल पर घटित हुई घटना के बारे में, आपको आरंभिक जानकारी है? क्या आपने अपनी जानकारी और बढ़ानी की कोशिश की है? क्या आपने यह जानने का प्रयास किया है कि वहाँ आप तथ्यों को कैसे एकत्र करेंगे? किन-किन लोगों से मिलेंगे और उनसे क्या जानने का प्रयास करेंगे। अगर आपने इन सब बातों पर विचार नहीं किया है तोप घटना स्थल की यात्रा आपके लिए बहुत उपयोगी साबित नहीं होगी। संभव है कि आप वहाँ जाकर सोच में पड़ जाएँ कि आप क्या करें। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि आप जाने से पहले जो भी समय आपको मिले उसमें उन सूचनाओं को उपलब्ध करें जो घटना स्थल की यात्रा में आपके लिए उपयोगी हो। इसके लिए समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार तथा अन्य संबंधित रिपोर्टों को ध्यान से पढ़ें और आवश्यक तथ्यों को नोट करें। उस स्थल और घटना से संबंधित तथ्यों के लिए आवश्यक पुस्तकों एवं दस्तावेजों को भी यथासमय देख लें। उन लोगों की सूचि बनाएं जिनसे आपका मिलना लाभकर हो सकता है। यहाँ तात्पर्य व्यक्तियों से नहीं बल्कि अधिकारियों और प्रभावित वर्गों से है जो घटना के संबंध में प्रमाणिक और उपयोगी जानकारी दे सकें।

11.2.2 संबंधित घटना स्थल की यात्रा

रिपोर्ताज लेखन के लिए यह बहुत जरूरी है कि आप घटना स्थल की यात्रा यथासंभव घटना घटित होने के तत्काल बाद कर लें। अगर आप अकाल, युद्ध, दंगे, उत्सव आदि पर रिपोर्ताज लिखने जा रहे हैं तो आपको इनके जारी रहने के दौरान ही यात्रा कर लेनी चाहिए ताकि आप घटना का आँखों देखा विवरण दे सकें जो आपके रिपोर्ताज को प्रमाणिक भी बनायेगा और प्रभावशाली भी। उदाहरण के लिए अगर आप सांप्रदायिक दंगे पर रिपोर्ताज लिखना चाहते हैं और आपको यह मालूम पड़ता है कि उक्त शहर में दंगा भड़का है तो आपको पहली सूचना मिलते ही दंगे से प्रभावित शहर पहुँचने की कोशिश करनी चाहिए इससे आपको दंगे की चपेट में आये लोगों के भय, दुख और आतंक से साक्षात्कार करने का मौका मिलेगा। अब आप स्वयं अपनी आँखों से दंगा पीड़ित शहर की विभिषिका देखेंगे तो आपका विवरण में जो सच्चाई उभरेगी वह पाठकों के दिल को गहराई तक स्पर्श करेगी। बंगाल के अकाल पर रांगेय राघव के रिपोर्ताज इसीलिए इतने प्रभावशाली बन पड़े हैं।

> *रूप लाल ईस उठा। वह कह रहा है — 'तुम क्या जानो, तुमने क्या मुझे तब देखा जब मैं भूखा था।'*
>
> *अट्टहास कर उठा। तब? तब आसमान में न तारे थे न पैरों के नीचे ज़मीन। चारों ओर अंधेरा नज़र आता था। मैं प्राण बाला को प्यार करता था और संसार ने गरीबी के कारण सदा यह समझा कि मेरा प्यार-प्यार नहीं, मेरा स्वार्थ था एक नियम! सचमुच! किन्तु जिस दिन मैंने अपने हाथों से अपने बहु और बच्चों का खून किया था, उस दिन मैं रूप लाल नहीं था, उस दिन कोई मेरा नहीं था, मैं किसी का नहीं था, मैं रूप लाल की छाया भी न था। बाबू, उस दिन मैं भूखा था।*

जब आप घटना स्थल की यात्रा करें तो आपको निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :

1) सबसे पहले घटना से प्रभावित लोगों से मिलें और उनसे घटना का पूरा विवरण जानने का प्रयास करें।
2) घटना स्थल के परिवेश का भी रिपोर्ताज में वर्णन करना जरूरी हो तो उनका ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और आवश्यक नोट लें।

3) संबंधित अधिकारियों और लोगों से मिलें जो घटना के विभिन्न पहलुओं पर रोशनी डाल सकें।

4) ऐसे तथ्य और प्रसंग एकत्र करें जिनका उल्लेख करने से आपका रिपोर्ताज मार्मिक बन सके।

5) संबंधित स्थल और प्रभावित लोगों के छाया चित्र भी लें जिनको रिपोर्ताज के साथ देने से आपके रिपोर्ताज की प्रामाणिकता बढ़ सके।

11.2.3 साक्षात्कार

रिपोर्ताज के लिए जब आप घटना स्थल का दौरा करते हैं तब आपको विभिन्न लोगों से मिलना होगा। उनसे बातचीत करनी होगी। वह बातचीत ही साक्षात्कार है। आप जो जानना चाहते हैं उसके लिए आपके पहले से तैयारी कर लेनी चाहिए ताकि आप वे सभी सूचनाएँ प्राप्त कर सकें जो आपको रिपोर्ताज लिखने में मददगार हों। यह ध्यान रखें कि जिन लोगों से आप मिलेंगे वे अनायास आपको सूचनाएँ नहीं दे देंगे। यह आपकी बातचीत के ढंग पर निर्भर करेगा कि वो आपको कितनी और क्या सूचना दें। ऐसे भी लोग मिल सकते हैं जो आपको गलत सूचनाएँ देकर गुमराह करें। रिपोर्ताज के लिए बेहतर यही होगा कि आप आँखों देखे और प्रामाणिक दस्तावेजों से प्राप्त बातों पर ही विश्वास करें। लेकिन जो लोग प्रभावित हुये हैं, उदाहरण के लिए अगर हरिजनों के गाँव को जलाया गया है, लोगों को मारा गया है, औरतों के साथ बलात्कार किया गया है, तो, स्वयं गाँव की तस्वीर और प्रभावित लोगों की बदहाली आपको सच्चाई बयान कर देगी। वहाँ अगर आप पुलिस की तरह लोगों से जिरह करेंगे तो आपको घटनाओं की सच्ची तस्वीर नहीं मिल सकेगी आपको प्रभावित लोगों का विश्वास प्राप्त करना होगा। उनके प्रति सच्ची संवेदना अभिव्यक्त करनी होगी। ध्यान रखें कि आपका उद्देश्य पत्रकार की तरह मात्र सूचना देना नहीं है। इसलिए साक्षात्कार लेते वक्त इन बातों का अवश्य ध्यान रखें।

11.2.4 तथ्यों की जाँच

इसी प्रकार जब आप अधिकारियों से मिलें तो सावधानी रखें कि अधिकारी भी अपने पक्ष के बचाव में गलत सूचनाएँ दे सकते हैं। आपको उनकी प्रामाणिकता की जाँच कर लेनी चाहिए। अगर आपको घटनाओं का सही विवरण मालूम है तो अधिकारियों से आप उपयोगी सूचनाएँ प्राप्त कर सकेंगे। बातचीत में ये ध्यान रखें कि आपका उद्देश्य केवल तथ्यों का विवरण देना नहीं है तथ्य जरूर प्रस्तुत करें लेकिन उन्हें इस रूप में प्रस्तुत करें कि पाठक उन्हें पढ़कर उस मर्म तक पहुँच सकें जो रिपोर्ताज के द्वारा आप पहुँचाना चाहते हैं।

11.3 सामग्री का संयोजन और संपादन

घटना स्थल की यात्रा करने के बाद जो भी विवरण आपने एकत्र किये हैं उनके तथ्यों की जांच अन्य उपलब्ध सामग्री के द्वारा कर लेनी चाहिए। कुछ ऐसे तथ्य भी एकत्र कर सकते हैं जिनका आप रिपोर्ताज में उपयोग करना चाहेंगे। उदाहरण के लिए अगर आप अकाल पर रिपोर्ताज लिखना चाहते हैं तो आप कुछ ऐसे तथ्य जरूर एकत्र करें जो अकाल की समस्या पर रोशनी डाल सके। जैसे उस क्षेत्र में इससे पहले कितनी बार अकाल पड़ा, अकाल न पड़े इसके लिए सरकार ने क्या किया है और क्या कर रही है। अकाल राहत के लिए कितनी राशि आबंटित हो गई है, इन तथ्यों की रोशनी में ही-आपने जो विवरण घटना स्थल से एकत्र किये हैं उनको सही परिप्रेक्ष्य में जाँच सकेंगे। अगर आपको यह मालूम है कि सरकार ने बड़े पैमाने पर अकाल राहत चलाने के लिए काफी बड़ी राशि अकाल राहत के लिए रखी है लेकिन वास्तविक अकाल-पीड़ितों तक वह राशि पहुँचने की बजाय ऐसे लोगों की जेबों में पहुँच जाती है जिनको उस राहत की कोई जरूरत नहीं है, तो आप इसका उल्लेख रिपोर्ताज में कर सकते हैं।

आप जो भी सामग्री एकत्र करें उसको एक बार ध्यानपूर्वक पढ़िये फिर उसमें जो जरूरी-जरूरी बातें हैं उनको तार्किक क्रम से नोट कर लीजिये। यह भी देखिये कि आपके द्वारा एकत्र विवरण से मुख्य संदेश क्या प्राप्त हो रहा है उसी को आप अपने रिपोर्ताज का केन्द्रीय भाव बनाइये। ऐसे विवरण या प्रसंग छांटिये जो रिपोर्ताज को मार्मिक बनने में सहायक हों। उदाहरण के लिए अगर आप सांप्रदायिक दंगे पर रिपोर्ताज लिख रहे हैं तो आप एक धर्मावलम्बी द्वारा दूसरे धर्मावलम्बी की जान बचाने की किसी मानवीय घटना का विवरण दे सकते हैं। इसी प्रकार ऐसे दंगों में महिलाओं और बच्चों को जो पीड़ाएँ भोगनी पड़ती हैं, उनको जरूर लिखें। इन बातों को केन्द्र में रखने पर आपका रिपोर्ताज प्रभावशाली बन सकेगा।

रिपोर्ताज लिखने से पहले उसकी रूपरेखा अवश्य बना लेनी चाहिए। मुख्य चीज़ वह प्रभाव है जो रिपोर्ताज से उत्पन्न होगा लेकिन इसके लिए आपको अपने लिखने की शैली और भाषा पर भी ध्यान देना होगा। इसलिए यह बहुत-जरूरी है कि अब आप प्रभावित लोगों की बातों को उद्धत करें तो उनकी बातों को उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत करें। इससे प्रामाणिकता का प्रभाव उत्पन्न होगा। इसलिए यह जरूरी है कि आप तथ्यों को एकत्र करते वक्त और साक्षात्कार लेते वक्त घटनाओं से जुड़ी बातों को हू ब हू लिखें। ऐसी सभी बातों को जिनका रिपोर्ताज में उपयोग करना लाभकर होगा, उनको अवश्य अलग कर दें। यह सब करने के बाद आप रिपोर्ताज लेखन की ओर बढ़ सकते हैं।

11.4 रिपोर्ताज का लेखन

रिपोर्ताज का लेखन शुरू करने से पहले कुछ और बातें भी आपको ध्यान में रखनी चाहिए। सबसे पहले तो यह ध्यान रखिये कि आप किस तरह की पत्र-पत्रिका के लिए रिपोर्ताज तैयार कर रहे हैं। उनके पाठक किस वर्ग से आते हैं। इसके साथ ही यह भी विचार कीजिए कि आप रिपोर्ताज क्यों लिख रहे हैं, क्या आज इसकी कोई प्रासंगिकता है? आप जो भी समस्या रिपोर्ताज के माध्यम से उठाना चाहते हैं क्या आपके मस्तिष्क में वह स्पष्ट है? आइये, इन सभी प्रश्नों पर विचार करें।

11.4.1 समस्या का निर्धारण

रिपोर्ताज लिखना आरंभ करने से पहले अपने पास एकत्र सामग्री का अच्छी तरह अध्ययन करके यह तय कर लीजिए कि आप किस समस्या पर रिपोर्ताज लिखने जा रहे हैं। अगर आप केवल एकत्र सामग्री के आधार पर बिना समस्या का निर्धारण किये रिपोर्ताज लिखेंगे तो आप तथ्यों का ब्यौरा भर दे पायेंगे और उन्हें किसी उद्देश्य से नहीं जोड़ पायेंगे। इससे आपके पाठक को यह स्पष्ट नहीं हो पायेगा कि आपने रिपोर्ताज क्यों लिखी। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि लिखने से पहले आप यह तय कर लीजिए कि आपके रिपोर्ताज के केन्द्र में कौन-सी समस्या है ताकि आप अपनी बात उसी के इर्द-गिर्द रख सकें। समस्या के निर्धारण से आप रिपोर्ताज का उद्देश्य निश्चित कर लेते हैं। इस प्रकार आप अपने रिपोर्ताज को एक निश्चित दिशा दे पाते हैं। यह काम वस्तुतः घटना स्थल की यात्रा करने से पहले ही तय कर लेना चाहिए। परन्तु यह संभव है कि यात्रा करने के बाद जो तथ्य आपके हाथ लगे उनकी रोशनी में आपको रिपोर्ताज का उद्देश्य परिवर्तित करने की आवश्यकता पड़े। इसलिए यह जरूरी है कि लिखना आरंभ करने से पहले अच्छी तरह सोच विचार कर समस्या का निर्धारण कर लीजिए।

11.4.2 प्रासंगिकता पर विचार

जब आप समस्या का निर्धारण करें तो उस समय यह भी ध्यान रखिए कि आपके रिपोर्ताज लिखने की प्रासंगिकता क्या है? क्या आप इसके माध्यम से किसी प्रासंगिक समस्या का ज्वलंत प्रश्न की ओर पाठकों का ध्यान खींचना चाहते हैं? बहुत बार ऐसा होता है कि हम तो यह सोचते हैं कि जो रिपोर्ताज हमने तैयार किया है उसका बहुत महत्व है लेकिन पाठक उसमें बिल्कुल दिलचस्पी नहीं लेते। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि रिपोर्ताज का विषय पाठकों को प्रासंगिक न लगे यानी रिपोर्ताज लिखते हुये समसामयिकता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। आमतौर पर जिन प्रश्नों और समस्याओं से आम आदमी जूझ रहा होता है उनके संबंध में रिपोर्ताज लिखने पर अवश्य पाठक उसमें रुचि ले पाते हैं, या ऐसी कोई महत्वपूर्ण घटना जिसमें ज्यादा से ज्यादा लोग दिलचस्पी रखते हों तो उस पर लिखे हुये रिपोर्ताज भी पाठकों द्वारा पसंद किये जाते हैं। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि आप हमेशा उन्हीं विषयों को छुएँ जो समसामयिक हों। आप किसी ऐसे विषय पर भी रिपोर्ताज लिख सकते हैं जिसकी ओर पाठक का ध्यान न गया हो, लेकिन रिपोर्ताज द्वारा आप लोगों को उसकी ओर आकर्षित करना चाहते हों, इसमें रिपोर्ताज लेखन की शैली आप द्वारा प्रस्तुत तथ्य और पत्रिका द्वारा आपके रिपोर्ताज को दिये जाने वाला महत्व पाठकों में रुचि जगायेगा। कहने का तात्पर्य यही है कि रिपोर्ताज लेखन से पूर्व प्रासंगिकता का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए।

11.4.3 पाठक वर्ग पर विचार

प्रत्येक रिपोर्ताज में सभी पाठक रुचि नहीं लेते। पाठक की अपनी-अपनी अभिरुचियाँ होती हैं। आमतौर पर इन अभिरुचियों को समझे बिना रिपोर्ताज लिखने से असफलता ही हाथ लगती है। यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक पत्र और पत्रिका का अपना विशिष्ट पाठक वर्ग होता है। दैनिक समाचार पत्र, साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्रों के पाठक वर्ग भिन्न-भिन्न होते हैं। साहित्यिक रुचि वाले पाठक भिन्न तरह के रिपोर्ताज पसंद करते हैं। आपको पाठक की अभिरुचियों की समझ है तो आप रिपोर्ताज के लिए बेहतर विषय चुन सकते हैं और उन्हें ज्यादा रोचक ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं। जो पत्रकार किसी पत्र-पत्रिका में नौकरी करते हैं उनके लिए विषय चुनना अवश्य आसान होता है क्योंकि वहाँ ऐसे ही विषय चुने जाते हैं जो उस पत्र-पत्रिका के पाठकों की रुचि के अनुकूल हों। लेकिन जो स्वतंत्र लेखन करते हैं उन्हें पाठकों का विचार अवश्य करना चाहिए और उसी के अनुरूप पत्र-पत्रिका का चयन करना चाहिए जिसमें की आप अपने रिपोर्ताज को छपा सकें और वह ज्यादा से ज्यादा पाठकों तक पहुँच सकें।

11.4.4 प्रस्तुति का ढंग

अगर आपने ऊपर की बातों पर अच्छी तरह विचार कर लिया है तो अब आप इस बात पर विचार कर सकते हैं कि आपको लेखन के लिए कौन-सा ढंग अपनाना चाहिए। प्रस्तुति का ढंग, विषय और आपकी अपनी शैली पर निर्भर। इन तीनों बातों को ध्यान में रखते हुए रिपोर्ताज का लेखन शुरू कीजिए। लेकिन यह अवश्य ध्यान रखिये कि रिपोर्ताज केवल तथ्यों का संग्रह मात्र न हो। न ही घटनाओं का आंखों देखा विवरण बल्कि इन दोनों का उपयोग करते हुए एक ऐसी शैली अपनाइये जिससे पाठकों को प्रभावित किया जा सके। लेकिन यह भी ध्यान रखिये कि आपका ढंग जटिल और बोझिल न हो। अगर आप पाठकों में रोचकता पैदा नहीं कर पायेंगे तो आपके रिपोर्ताज को पढ़ने की ललक पाठकों में पैदा नहीं हो पायेगी। तब आप कितने ही महान् उद्देश्य से प्रेरित होकर क्यों न लिख रहे हों पाठकों के लिए

वह निरर्थक ही होगा। इन बातों को ध्यान में रखते हुये अगर आप अपना लेखन शुरू करेंगे तो आप निश्चित ही एक बेहतर लेखन कर पायेंगे।

बोध प्रश्न

1) निम्नलिखित कथनों में से सही कथन चुनिए।

   क) रिपोर्ताज के लिए घटना स्थल की यात्रा आवश्यक है।

   ख) रिपोर्ताज के लिए घटना स्थल की यात्रा आवश्यक नहीं है।

   ग) केवल समाचारों के आधार पर रिपोर्ताज लिखा जा सकता है।

   [ ]

2) घटना स्थल की यात्रा के दौरान लेखक को किन बातों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए?

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

3) रिपोर्ताज के लेखन से पूर्व समस्या का निर्धारण क्यों आवश्यक है?

   .....

   .....

   .....

   .....

4) रिपोर्ताज लेखन में पाठक वर्ग पर विचार करना क्यों आवश्यक है?

   .....

   .....

   .....

अभ्यास

1) आपके शहर या गाँव में हाल ही में घटी किसी घटना रिपोर्ताज तैयार करने के लिए अपनी तैयारी का विवरण दीजिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

11.5 रिपोर्ताज की प्रस्तुति

रिपोर्ताज का लेखन आरंभ करने से पहले उसके आकार के बारे में भी विचार कर लेना चाहिए। अगर किसी पत्र-पत्रिका में प्रकाशन के लिए रिपोर्ताज लिख रहे हैं तो वह बहुत लम्बा नहीं होना चाहिए। अगर आप बाद में कोई पुस्तकाकार प्रकाशित करायेंगे तो भी उसका बहुत अधिक लम्बा होना उपयुक्त नहीं है। आमतौर पर रिपोर्ताज की लम्बाई एक हजार शब्दों के आस-पास हो सकती है लेकिन अंततः रिपोर्ताज का विषय और आपकी शैली ही रिपोर्ताज के आकार को तय करेगी।

रिपोर्ताज के लेखन का आरंभ करते हुये यह प्रश्न उपस्थित होता है कि उसकी शुरुआत कैसे की जाये। हम यहाँ पर कुछ उदाहरणों द्वारा रिपोर्ताज के आरंभ, मध्य और अंतिम भाग के लेखन पर विचार करेंगे।

11.5.1 रिपोर्ताज का आरंभ

रिपोर्ताज का आरंभ किस तरह करें इसके लिए आपको रिपोर्ताज की अंतर्वस्तु और शैली के अनुसार तय करना होगा। आमतौर पर रिपोर्ताज के लेखन के लिए लेखक घटना स्थल की यात्रा करता है। इसलिए उसका आरंभ यात्रा वृत्तांत के आरंभ से मिलता जुलता हो सकता है। उदाहरण के लिए रांगेय राघव के रिपोर्ताज 'बाँध भंगे दाओ' की शुरुआत इसी ढंग से हुई है।

> *रेल रुक गयी। हम लोग बेहद फुर्ति से सामान उतारने लगे। एक बक्स, एक बिस्तर, एक बक्स, एक बिस्तर — दवाओं के बड़े-बड़े बक्स ... सब कुल एक-डेढ़ मिनट में।*
>
> *भुइयाँ लम्बी-लम्बी साँसें लेता हुआ मुसकुराता जाता था। वह अपनी असमी उच्चारण की अंग्रेज़ी में कहने लगा — 'सब उतार लिया! सब! मगर गाड़ी तो अभी तक खड़ी है'।*
>
> *जसवंत अभी तक अदद गिन रहा था। उसने एकाएक ही सिर उठाकर कहा — 'अरे हाँ गाड़ी तो अभी तक खड़ी है'।*
>
> (रांगेय राघव ग्रंथावली, भाग-8, पृष्ठ 189)

उपर्युक्त उदाहरण की शुरुआत जैसा कि स्पष्ट है यात्रा के वर्णन से की गई है लेकिन आवश्यक नहीं कि हर रिपोर्ताज की शुरुआत इसी ढंग से की जाये। शुरुआत प्रसंग के उल्लेख से अथवा लेखकीय टिप्पणी से भी की जा सकती है। रांगेय राघव ने ही एक अन्य रिपोर्ताज की शुरुआत पत्र शैली में की है :

> *"तुमने पूछा है, बंगाल की अब क्या हालत है? एक-दो लफ्ज़ों में पूरी बात खत्म हो जाये, ऐसे 'अर्थ-इति' में कहकर बात समाप्त कर देने की सामर्थ्य मुझ में नहीं है। कहने को तो बहुत है। आखिर क्या-क्या सुनाऊँ?*
>
> *मैं तुमसे कहूँ कि भुंइयापाड़ा में 300 में से 150 मर गये। तो क्या तुम कुछ समझ सकीं? दुनिया में दो अरब आदमी हैं। कह देने से क्या तुम्हारे दिमाग में कुछ चित्र बैठता है? शायद एक के बाद अनेक बिन्दी और कुछ नहीं। मलेरिया, कालाज़ार, हैज़ा, चेचक ... मैं पूरी मेटीरिया मेडिका सामने रख दूँ। तुम कुछ अंदाजा नहीं कर सकती। मृत्यु का चित्र एक कठिन वस्तु है। 35-40 रुपये महीने की तनख्वाह के लोभ में किसान खेत बेचने के बाद मिल के मज़दूर हो गये हैं। क्योंकि चावल एक मन 19 या 20 रुपये का मिलता है। दोनों बातों से जीवन की कठिनता समझ लेना कठिन ही है। सुना किसने नहीं कि लड़ाई के मैदान में बम्ब फटते हैं, गोली चलती है, मगर समझ में तब आता है जब वाकई सामने बंदूक उठती है।*
>
> ('तूफान के विजेता' शीर्षक रिपोर्ताज से उद्धृत, रांगेय राघव ग्रंथावली, भाग-8, पृष्ठ 215)

महत्वपूर्ण बात यह है कि रिपोर्ताज की शुरुआत प्रभावशाली होनी चाहिए। अगर पाठक शुरुआत में ही आपके लेखन से बंध जाये तभी आपकी सफलता है अन्यथा पाठक को पढ़ने की उत्सुकता नहीं होगी। रिपोर्ताज के आरंभ में ये भी ध्यान रखना चाहिए की उसकी शुरुआत महज विवरण की तरह न हो। हम वहाँ गये, उनसे मिले, यह देखा उन्होंने यह कहा आदि का अखबारी वर्णन रिपोर्ताज को प्रभावशाली नहीं बना सकता। जब तक आपको हर बात में हर शब्द में हर प्रसंग में मानवीय संवेदना झलकती नज़र नहीं आएगी, तब तक रचना प्रभावशाली नहीं होगी।

11.5.2 मध्य भाग

रिपोर्ताज को आगे बढ़ाना कम महत्वपूर्ण नहीं है। यह वास्तव में रिपोर्ताज का वह मुख्य भाग है जिसमें उसकी पूरी अंतर्वस्तु समाहित होती है। मध्य भाग में आपको वे सभी बातें कह देनी हैं जो आप कहना चाहते हैं। यह संभव है कि आपके पास सामग्री ज्यादा हो लेकिन आप इन सब बातों को पूरे विस्तार के साथ प्रस्तुत करने की स्थिति में न हों। वैसे भी बहुत लम्बा रिपोर्ताज पाठकों के लिए ऊब ही पैदा करता है इसलिए आपको वह कला विकसित करनी होगी जिसमें कम शब्दों में अधिक बात और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत की जा सके। मध्य भाग को लिखने के लिए आपको रचना किस तरह विकसित करनी है यह पहले विचार करना चाहिए। केवल एक के बाद दूसरी घटना का वर्णन करते जायेंगे तो इससे रिपोर्ताज प्रभावशाली प्रभावशाली नहीं बनेगा। अगर आपने यह तय कर रखा है कि आप रिपोर्ताज क्यों लिख रहे हैं तो उसी क्यों के अनुरूप ही प्रसंगों और बातों का चयन करें और उन्हें सही क्रम में प्रस्तुत करें। रिपोर्ताज में यात्रा संस्मरण, फ़ीचर लेखन, निबंध और कहानी सभी का मिला-जुला रूप मिलता है इसलिए आपको इन सभी विधाओं की विशेषताओं को बारीकी से समझना चाहिए और रिपोर्ताज में जहाँ आपको आवश्यक लगे वहाँ उनका उपयोग करना चाहिए। उदाहरण के लिए निम्नलिखित अंश को देखें :

> *मैं देख रहा था जिनके शरीर में केवल हड्डियाँ ही शेष थीं आज भी उनमें जीवित रहने का साहस था। अकाल आया, बीमारी आयी और फिर दूसरे अकाल की गहरी आँधी भी क्षितिज पर सिर उठाने लगी है, किन्तु अविचलित*

है यह! किस लिए? इसीलिए न कि यह जनता किसी से भी दब नहीं सकती। एक दिन विजेताओं ने इन्हें कुचला था, आज भी मनुष्य का स्वार्थ और भीषण व्यापार इन्हें निचोड़ रहा है, किन्तु यह तो अभी तक अदम्य, अविजेय है।

(रांगेय राघव का रिपोर्ताज 'अदम्य जीवन')

उपर्युक्त अंश ललित निबंध का आभास देता है। इस बात ने रिपोर्ताज के प्रभाव को बढ़ाने में मदद की है। एक और अंश देखिए :

हम पगडंडियों से बढ़ते जा रहे थे सूर्य आकाश में चढ़ने लगा था कहीं-कहीं कोई किसान किसी पेड़ की छाया में दीख पड़ता था सर्वत्र नीरवता छा रही थी। आकाश में बादल तैर रहे थे, जिन्हें देखकर खेतों से एक सोंधी सी उसाँस उमंग उठती थी! दूर हरियाली की लहर तेज चलती हवा की तरंगों पर गूँज सी उठती थी। हरी-भरी पृथ्वी पर कभी-कभी बादलों के छा जाने से कहीं धूप और कहीं छाया बरबस हृदय को अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। किन्तु मेरे साथी को जैसे इन सब बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। बायां हाथ उठाकर वह कह रहा था — 'वही है सिद्धिर गंज देख रहे हो वह तार का पेड़?"

(अदम्य जीवन नामक रिपोर्ताज से रांगेय राघव ग्रंथावली भाग-8, पृष्ठ 207)

मुख्य बात यह है कि रिपोर्ताज का मध्य भाग जितना रोचक और विविधता से पूर्ण होगा उतना ही वह पाठकों को पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। ध्यान रखें कि हम जो भी घटना या प्रसंग का वर्णन करें वह पाठकों के हृदय तक स्पर्श करे तभी आप द्वारा कही हुई अन्य बातों का उन पर असर पड़ेगा। मध्य भाग को उतना ही विस्तार दें जितना आवश्यक है। यह विस्तार जिस पत्र-पत्रिका में आपका रिपोर्ताज प्रकाशित हो रहा है उसमें निर्धारित स्थान से भी तय कर सकते हैं लेकिन अगर आप रूपरेखा पहले बना चुके हैं तो आप महत्वपूर्ण बातों और प्रसंगों का जरूर वर्णन करें।

11.5.3 अंतिम भाग

रिपोर्ताज की समाप्ति उतनी ही प्रभावशाली होनी चाहिए जितना कि उसका आरंभ। क्योंकि हर रचना का आरंभ जितना महत्वपूर्ण होता है उतना ही उसका अंत। अंत बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि रिपोर्ताज का आरंभ और विकास कैसा हुआ है। अंत किसी प्रसंग के साथ किया जा सकता है। किसी वैचारिक टिप्पणी के साथ और किसी निष्कर्ष के साथ। अंत लिखते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि पाठकों को यह लगे कि रचना पूरी हो गई है। अगर उन्हें उतावलेपन का एहसास हुआ तो इसे रचना की सफलता नहीं माना जाएगा। हम यहां एक-दो रोचक उदाहरण लेते हैं जिनका अंत प्रभावशाली माना जा सकता है।

"अदम्य जीवन" रिपोर्ताज के निम्नलिखित अंतिम अंश में लेखक अपनी ओर से एक टिप्पणी कर रहा है —

आज अकाल का वह पहला भीषण स्वरूप समाप्त हो चुका है। किन्तु रोगों की वर्षा — आँधी के बाद प्रलय उमड़ रही है और इस समय भी लोग कहते हैं — बंगाल का अकाल समाप्त हो चुका है! पर आज यह कुछ नहीं तो भी महामरण का भीषण नृत्य है। जब हम लोग शिद्धिर गंज से लौट रहे थे, शीतलता की प्रशांत धारा में नहाता हुआ एक आदमी गा रहा था —

"सोनार बांगला होलो शोंशान एक साथे सबे चल"

उसका यह स्वर दूर-दूर तक लहरें पर फैल उठता था।

निम्नलिखित रिपोर्ताज का अंत एक प्रसंग से किया गया है —

"पागल चला गया। बीमार जोर से कहारने लगा। स्त्री देखती रही। एकाएक जोर की हिचकी आई और बीमार के प्राण पखेरू उड़ गये। स्त्री जोर से चिल्ला उठी, डॉक्टर, अंधेरा छाया जा रहा है चारों ओर! मैं क्या करूँ, डॉक्टर? कौन उठायेगा इसे? दूर-दूर तक अंधेरा छाया जा रहा है।"... "यहां कौन है मेरा? क्या करूँ डॉक्टर? और वह फूट-फूट कर रो पड़ी।"

डॉक्टर देख रहा था — देख रहा था। दूर, ऊपर सहानुभूतिहीन तारे निकल आये थे। नीरव, निर्मल अंधकार झुकता आ रहा था पृथ्वी पर।

स्त्री रो रही थी — निस्सहाय, कलंकिनी, लाचार, अबला!

इस प्रकार अंतिम भाग को लिखते हुए आप कोई भी तरीका अपनायें, महत्वपूर्ण यह है कि वह प्रभावशाली, मार्मिक और अपने में रिपोर्ताज को पूर्ण अर्थ देने वाला हो।

11.5.4 शीर्षक देना

फीचर की तरह रिपोर्ताज का शीर्षक भी विषय से संबद्ध पूर्णतः रोचक होना चाहिए। वह लेख या निबंध के शीर्षक की तरह नहीं लगना चाहिए। कुछ रोचक शीर्षक देखिये :

अंधेरे में एक चीख
प्रायः एक स्वप्न
तूफ़ानों के बीच
मरेंगे साथ जियेंगे साथ
यह ग्वालियर है।

शीर्षक छोटा होना चाहिए, बहुत लम्बा नहीं। लेकिन पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट करने वाला होना चाहिए। कई बार पत्र-पत्रिकायें स्वयं भी शीर्षक दे देती हैं। शीर्षक के लिए रिपोर्ताज में किसी प्रसंग में कही हुई बात का भी उपयोग किया जा सकता है।

11.6 रिपोर्ताज की भाषा-शैली

रिपोर्ताज एक ऐसी विधा है जिसमें कहानी, निबंध, संस्मरण आदि कई विधाओं की विशेषतायें देखने को मिलती हैं। इसलिए यह जरूरी है कि उसकी भाषा शैली जीवंत प्रवाहमय और मार्मिक हो। भाषा न तो निबंध की तरह क्लिष्ट होनी चाहिए न कहानी की तरह पूर्णतः साहित्यिक। हमे समाचार पत्रों-सी सरलता, निबंध-सी गंभीरता, कहानी-सी रोचकता और संस्मरण-सी आत्मीयता होनी चाहिए। रिपोर्ताज की भाषा के दो नमूने यहाँ दे रहे हैं। जिससे आप रिपोर्ताज की भाषा की विशेषता पहचान सकते हैं।

अजीब बात यह है कि सबसे पहले उन्हें जानने का अवसर मिला। यह नीग्रो युवक के माध्यम से। रात की पार्टी के आत्मीय वातावरण में नहीं, बल्कि खुले आकाश के नीचे। वह बारिश की शाम थी और मैं धूप की खोज में हाइड पार्क चला आया था। इतवार की हर दुपहर वहाँ "खुली हवा" में कंसर्ट होता है — झरे हुए पत्तों और सरसराती घास के बीच वहाँ बैठकर मुझे बरबस शिमला के शनिवार याद हो आते थे, जब आर्मी हेडक्वार्टर्स का "फ़ौजी आर्केस्ट्रा" "रिज" के खुले मैदान में बैंड बजाता हुआ परेड करता था और हम स्कूल से लौटते हुए अपनी भूख-प्यास दबाकर उन्हें देखने रुक जाया करते थे। किन्तु उस दिन बारिश के कारण कुर्सियाँ खाली पड़ी थीं। पानी में भीगती हुई खाली कुर्सियों के उदास दृश्य से छुटकारा पाने के लिए मैं पार्क के दूसरे कोने में चला आया, जहाँ इक्के-दुक्के भाषणकर्ता इधर-उधर छितरे हुए लोगों को अपने "श्रोताओं" में बदलने की कोशिश कर रहे थे। जब कभी बारिश की झड़ी कुछ ज्यादा तेज हो जाती, लोग भागकर पेड़ों की आड़ में खड़े हो जाते और भाषणकर्ता अपने "अनुयायियों के अभाव में उन सेनापतियों की तरह आमने-सामने हो जाते, जिनकी फ़ौजें मैदान छोड़कर भाग गयी हों और जब अब एक-दूसरे से दो-दो हाथ होने के लिए मजबूर हों।

('अंग्रेजों की खोज में', निर्मल वर्मा का रिपोर्ताज 'हर बारिश में' पृष्ठ 39)

दूसरा उदाहरण —

गर्व से मेरी चौड़ी छाती फूल उठी, कौन कहता है कि बंगाल मर गया है? जहाँ भूख और बीमारियों से लड़कर भी मनुष्यों के बालकों में क्रांति को चिरजीवी रखने का अपराजित साहस है। वह राष्ट्र कभी भी नहीं मर सकेगा। हड्डी-हड्डी से लड़ने वाले यह योद्धा जीवन की महान् शक्ति को अभी तक अपने में जीवित रख सके हैं। संसार कहता है, स्टालिनग्राड में लोग खंडहरों में से लड़े थे और उन्होंने दुश्मन के दाँत खट्टे कर दिये। उन्होंने बर्बरता की धारा को रोककर रूस को गुलाम होने से बचा लिया। किन्तु मैं पूछता हूँ क्या शिद्धिर गंज दूसरा स्टालिनग्राड नहीं? मनुष्य भूख से तड़प-तड़पकर यहाँ जान दे चुके हैं। वे भीषण रोगों के शिकार हो चुके हैं। उनके घर खंडहर हो गये हैं, कब्रों से जमीन ढक गयी है, नदियों में लाशों की सड़ांध एक दिन दूर-दूर तक फैल गयी थी, किन्तु मनुष्य का साहस जीवित है। आज भी बंगाल के बच्चे क्रांति को नहीं भूले हैं। क्या इन योद्धाओं में भारतीय संस्कृति की जड़ों पर होने वाले आघात को सहकर आज संसार को यह नहीं दिखला दिया कि जन शक्ति कभी पराजित नहीं हो सकती, वह कभी मर नहीं सकती? ...

(अदम्य जीवन, रांगेय राघव ग्रंथावली भाग-8, पृष्ठ 213)

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि रिपोतार्ज की भाषा में वे सभी गुण होने चाहिए जिनकी चर्चा ऊपर की गयी है। ये दोनों उदाहरण इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

बोध प्रश्न

5) निम्नलिखित मे से सही कथन का चयन कीजिए।

क) रिपोर्ताज को कहानी की भांति काल्पनिक होना चाहिए।

ख) रिपोर्ताज को निबंध की तरह गूढ़ होना चाहिए।

ग) रिपोर्ताज को संस्मरण की तरह आत्मीय होना चाहिए।

6) निम्नलिखित कथनों में सही शब्द लिखिए।

क) रिपोर्ताज को कहानी की तरह ..... होना चाहिए। (काल्पनिक, रोचक, घटना प्रधान)

ख) रिपोर्ताज को निबंध की तरह ..... होना चाहिए। (गंभीर, विश्लेषणात्मक, गूढ़)

ग) रिपोर्ताज को संस्मरण की तरह ..... होना चाहिए। (आत्मीय, आत्मनिष्ठ, स्मृतिपरक)

घ) रिपोर्ताज को समाचारों की तरह ..... होना चाहिए। (मनगढंत, विश्वसनीय, सतही)

7) रिपोर्ताज की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

.....

.....

.....

.....

8) रिपोर्ताज के आरंभ की प्रमुख विधियों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

अभ्यास

2) अपने शहर या गांव में घटी घटना पर एक रिपोर्ताज लगभग 200-250 शब्दों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

11.7 सारांश

- सृजनात्मक लेखन कार्यक्रम से संबंधित फीचर लेखन पाठ्यक्रम के तीसरे खंड की इस इकाई में आपने रिपोर्ताज के लेखन के बारे में अध्ययन किया है। रिपोर्ताज लिखना आरंभ करने से पूर्व आवश्यक तैयारी कर लेनी चाहिए। सबसे पहले उस स्थल की यात्रा करनी होगी जहाँ के बारे में आपको रिपोर्ताज लिखना है। उससे संबंधित तथ्यों को एकत्र करना होगा उनकी जाँच करनी होगी तथा सम्बद्ध लोगों से मिलना होगा।
- जो भी सामग्री आप एकत्र करें उनका अच्छी तरह से अध्ययन करें। आवश्यक सामग्री का चयन करें, उनको क्रम दें और इस तरह आपके पास एक स्पष्ट रूपरेखा तैयार हो जाएगी।
- रिपोर्ताज लेखन से पूर्व आपको यह भी विचार कर लेना चाहिए कि जिस विषय पर आप रिपोर्ताज लिखने जा रहे हैं उसकी केन्द्रिय समस्या क्या है। आपके रिपोर्ताज लिखने का उद्देश्य क्या है। अगर आपने समस्या और उद्देश्य का निर्धारण नहीं किया तथा केवल घटनाओं का विवरण मात्र प्रस्तुत कर दिया तो रिपोर्ताज प्रभावशाली नहीं होगा।

आपको रिपोर्ताज की प्रस्तुति के ढंग पर भी विचार करना चाहिए। रिपोर्ताज किन पाठकों के लिए लिख रहे हैं तथा आज उसकी प्रासंगिकता क्या है, इसपर भी विचार करें।

- रिपोर्ताज का लेखन आरंभ करते हुये उसके सभी पक्षों पर विचार कर लीजिए। आरंभ प्रभावशाली और मार्मिक होना चाहिए। मध्य भाग में अधिक विस्तार न हो। जो आपके उद्देश्य में सहायक हो केवल उन्हीं बातों को रिपोर्ताज का अंग बनायें। रिपोर्ताज का अंतिम भाग उतना ही रोचक और प्रभावशाली होना चाहिए जितना कि आरंभ शीर्षक, विषय की केन्द्रीय भावना को व्यक्त करने वाला हो।
- रिपोर्ताज एक साहित्यिक विधा भी है और पत्रकारिता से जुड़ी विधा भी। इसलिए इसमें दोनों के गुणों का समावेश होना चाहिए। रिपोर्ताज में कहानी-सी रोचकता, समाचारों-सी विश्वसनीयता, संस्मरण-सी आत्मीयता और निबंध-सी गंभीरता भी होनी चाहिए।
- रिपोर्ताज की भाषा शैली इसी के अनुरूप सहज रचनात्मक और प्रभावपूर्ण हो।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए आप रिपोर्ताज लेखन में अपनी कुशलता का विकास कर सकते हैं।

11.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) क)

2) घटना से प्रभावित लोगों से मिलें और उनसे घटना का पूरा विवरण जानने का प्रयास करें। संबंधित अधिकारियों और लोगों से मिलें जो घटना के विभिन्न पहलुओं पर रोशनी डाल सकें। ऐसे तथ्य और प्रसंग एकत्र करें जिनका उल्लेख करने से आपका रिपोर्ताज मार्मिक बन सके।

3) बिना समस्या का निर्धारण किए रिपोर्ताज लिखने से रिपोर्ताज मात्र घटनाओं का विवरण होकर रह जाएगा। समस्या का निर्धारण करने पर आप रिपोर्ताज को सही दिशा दे सकते हैं और उसे उद्देश्यपूर्ण बना सकते हैं।

4) रिपोर्ताज लेखन में पाठक वर्ग पर विचार करना इसलिए जरूरी है क्योंकि उससे आपको रिपोर्ताज के लिए विषय और समस्या का निर्धारण शैली और भाषा तय करने में मदद मिलती है।

5) ग)

6) क) रोचक ख) गंभीर ग) आत्मीय घ) विश्वसनीय

7) रिपोर्ताज की भाषा सहज प्रभावपूर्ण रचनात्मक और मर्मस्पर्शी होनी चाहिए।

8) रिपोर्ताज का आरंभ किसी घटना से, समस्या के संकेत से, यात्रा के आरंभ से अथवा किसी संबद्ध व्यक्ति के परिचय से किया जा सकता है।

अभ्यास

1) इसके लिए आप इकाई के भाग 11.2 को पढ़िये और अपना उत्तर तैयार कीजिए।

2) इकाई पढ़कर स्वयं उत्तर तैयार कीजिए।

11.9 उपयोगी पुस्तकें

- डॉ. सुलोचना रांगेय राघव (संपादिका) : *रांगेय राघव ग्रंथावली, भाग-8*, राजपाल एंड संस, दिल्ली।
- निर्मल वर्मा : *हर बारिश में*, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।

इकाई 12 यात्रा लेखन का महत्व और उसके विविध प्रकार

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य
12.1 प्रस्तावना
12.2 यात्रा लेखन से अभिप्राय
12.3 यात्रा लेखन का उद्देश्य और महत्व
  12.3.1 यात्राएँ : क्यों और किसलिए
  12.3.2 यात्रा लेखन के उद्देश्य
  12.3.3 यात्रा लेखन क्यों पढ़े जाते हैं?
12.4 यात्रा लेखन के विविध प्रकार
  12.4.1 व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन
  12.4.2 सूचनात्मक यात्रा लेखन
  12.4.3 विशिष्ट यात्रा लेखन
  12.4.4 साहित्यिक यात्रा लेखन
12.5 यात्रा लेखन की विभिन्न शैलियाँ
  12.5.1 वर्णनात्मक शैली
  12.5.2 संस्मरणात्मक शैली
  12.5.3 डायरी शैली
12.6 सारांश
12.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

सृजनात्मक लेखन से संबंधित फीचर लेखन के इस पाठ्यक्रम की इस 12वीं इकाई में यात्रा लेखन के बारे में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यात्रा लेखन का अभिप्राय स्पष्ट कर सकेंगे;
- यात्रा लेखन के उद्देश्य और महत्व पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- यात्रा लेखन के विविध प्रकारों का अंतर बता सकेंगे; और
- यात्रा लेखन की विभिन्न शैलियों को समझ सकेंगे और उनकी विशेषताएँ बता सकेंगे।

12.1 प्रस्तावना

सृजनात्मक लेखन से संबंधित फीचर लेखन के इस पाठ्यक्रम के तीसरे खंड की यह तीसरी इकाई और पाठ्यक्रम की 12वीं इकाई है। 12वीं व 13वीं इकाई में यात्रा लेखन के संबंध में बताया गया है। इससे पूर्वकी दो इकाइयों में आपने रिपोर्ताज के संबंध में अध्ययन किया है। यात्रा लेखन फीचर लेखन का महत्वपूर्ण अंग है। आपने समाचार पत्रों के रविवारीय परिशिष्टों, साप्ताहिक, पाक्षिक मासिक पत्रों में यात्रा संबंधी लेख पढ़े होंगे। यात्रा करना, नयी-नयी जगहों को खोजना और उनके बारे में अधिक से अधिक जानना मनुष्य जाति का आदिम काल से शौक रहा है। सभ्यताओं का विकास इसी यात्रावृत्ति के कारण हुआ है। यही कारण है कि आज भी लाखों-लाख लोग दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में घूमते-विचरते हैं और नयी-नयी जगहों पर जाकर अपना अनुभव-संसार विस्तृत करते हैं। लेकिन मनुष्य के कार्यों की सीमाएँ भी होती हैं। सभी लोग सब जगह यात्रा नहीं कर पाते। उन जगहों के बारे में उनकी दिलचस्पी का समाहार फिल्म, टी.वी. कार्यक्रम तथा यात्रा लेखों व संस्मरणों के माध्यम से होता है। इसीलिए पत्र-पत्रिकाओं में यात्रा लेखन एक तरह से स्थायी स्तंभ होता है। इसी यात्रा लेखन के संबंध में हम इस इकाई और अगली इकाई में विचार करने जा रहे हैं। इस इकाई में हम सबसे पहले यात्रा लेखन के अभिप्राय को स्पष्ट करेंगे। फिर हम इस पर विचार करेंगे कि यात्रा लेखन के क्या-क्या उद्देश्य हो सकते हैं? यात्रा लेखन के बारे में लोग क्यों पढ़ना चाहते हैं और क्या पढ़ना चाहते हैं। यात्रा लेखन के प्रकारों पर भी इस इकाई में विचार किया गया है। यानी कि यह बताया है कि अलग-अलग उद्देश्यों से प्रेरित यात्रा लेखन की प्रकृति में क्या अंतर होगा। यात्रा लेखन की कुछ मुख्य शैलियों का परिचय भी इस इकाई में दिया गया है।

अगली इकाई में आप यात्रा लेखन के व्यवहारिक पक्ष का अध्ययन करेंगे।

12.2 यात्रा लेखन से अभिप्राय

आपने फाहियान, ह्वेत्सांग, अलबरूनी, वास्कोडिगामा, कोलंबस आदि नाम सुने होंगे। ये सभी नाम इतिहास में इसीलिए प्रसिद्ध हुए क्योंकि इन्होंने लंबी-लंबी यात्राएँ की थीं। यह माना जाता है कि भारत में आर्य भी बाहर से आये थे। आर्यों के बाद भी लगातार कई विदेशी जातियां भारत में आईं और यहाँ बस गईं। कई विदेशी आक्रमणकारियों के साथ आए विदेश. द्वानों ने अपने संस्मरण लिखे। चीनी यात्री फाहियान और ह्वेत्सांग के लिखे विवरणों से तत्कालीन भारत के बारे में यथातथ्य जानकारी प्राप्त करने में मदद मिली। कोलंबस की यात्रा से ही अमरीका की खोज संभव हो सकी। वास्कोडिगामा ने यूरोप से भारत पहुँचने का समुद्री मार्ग खोजा जिससे यूरोपवासियों के लिए भारत पहुँचना आसान हो गया। सदियों से विभिन्न क्षेत्रों, राज्यों और देशों के बीच यात्रा करने वाले लोगों के कारण ही उनमें पारस्परिक संबंध संभव होता रहा और दुनिया की सभ्यताएँ एक दूसरे के नजदीक आती रहीं।

मनुष्य की जिज्ञासु वृत्ति का ही परिणाम है यात्रा की ललक। मनुष्य नयी-नयी चीजों, नयी-नयी जगहों के बारे में जानना चाहता है। इसके लिए वह हर तरह के खतरे उठाता है। लेकिन केवल यात्रा करना ही पर्याप्त नहीं है क्योंकि यात्रा के अनुभव तो उस व्यक्ति के साथ ही समाप्त हो जाएंगे, उसका लाभ तो तभी है जब यात्रा करने वाला व्यक्ति अपने अनुभवों को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुँचाए ताकि उसने अपनी यात्रा से जो कुछ जाना-समझा है, उसका भागीदार वह दूसरों को भी बना सके। इसी इच्छा और जरूरत ने ही यात्रा लेखन की शुरुआत की। फाहियान, ह्वेत्सांग आदि यात्रियों ने अपनी यात्राओं के जो विवरण लिखे हैं उन्हीं के कारण यह संभव हो सका है कि हम आज चंद्रगुप्त और हर्षवर्धन जैसे राजाओं के शासन और उस समय के भारत के बारे में प्रामाणिक जानकारी हासिल कर सकें। इन यात्रियों का नाम इतिहास में इसीलिए अमर हो सका क्योंकि इन्होंने अपने यात्रा-अनुभवों को लिपिबद्ध किया अन्यथा अतीत में तो और भी यात्रियों ने भारत की यात्राएँ की होंगी पर उनमें से अधिकांश के नाम से भी हम परिचित नहीं हैं।

अपनी यात्राओं का ऐसा ही विवरण प्रस्तुत करना यात्रा लेखन है। यात्रा किसी बिल्कुल अनजान और अपरिचित स्थान की ही हो, यह आवश्यक नहीं है बहुत परिचित और सर्वज्ञात स्थान की यात्रा को भी बिल्कुल नये अंदाज और नयी सूचनाओं के साथ लेखन का विषय बनाया जा सकता है क्योंकि प्रत्येक स्थान को देखने के नये-नये कोण हो सकते हैं। ऐतिहासिक अभिरुचि वाले व्यक्ति की दिलचस्पी यात्रा स्थल के अतीत में होगी, जबकि साहित्यिक प्रकृति वाला व्यक्ति उस स्थल पर रहने वाले लोगों के स्वभाव, वहाँ की प्रकृति में निहित सौंदर्य तथा ऐतिहासिक स्थलों के महत्व में दिलचस्पी लेगा। कहने का अर्थ यही है कि यात्रा लेखन को कई दृष्टियों से लिखा जा सकता है। यह लेखक पर निर्भर करता है कि वह अपनी यात्राओं को किस दृष्टि से लिखे।

यात्राओं के प्रति पाठकों की अभिरुचि के कारण ही पत्र-पत्रिकाएँ लगातार यात्रा लेखन प्रकाशित करती है। पर्यटन संबंधी इन लेखों को ही हमने इस इकाई में अध्ययन का विषय बनाया है। यात्रा लेखन से हमारा यही अभिप्राय है।

12.3 यात्रा लेखन का उद्देश्य और महत्व

अगर आपको यात्रा लेखन पढ़ने की रुचि रही हो तो आपने राहुल सांकृत्यायन, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा आदि हिंदी के रचनाकारों द्वारा लिखे गये यात्रा संस्मरण पढ़े होंगे। इन यात्रा संस्मरणों का उद्देश्य किसी अज्ञात स्थल का परिचय देना नहीं था, न ही यह किसी ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय या पर्यावरणीय खोज-बीन के हिस्से थे। ये तो साहित्यकारों की यायावरी वृत्ति के वे अनुभव थे, जिनमें स्थलों का नीरस वर्णन नहीं वरन् उसका एक जीवंत और सौंदर्यपरक चित्र देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए महादेवी वर्मा द्वारा लिखित "पर्वत पुत्र" नामक यात्रा निबंध को लिया जा सकता है। उत्तराखंड के पर्वतों की इस यात्रा के साथ चलने वाले भारवाहकों का जैसा मानवीय और हृदयस्पर्शी चित्र उन्होंने प्रस्तुत किया है वह एक संवेदनशील कलाकार द्वारा ही संभव था।

> *मार्ग में हम सब उनके पीछे चलते थे, अतः शेष शरीर बोझ की ओट में होने के कारण केवल उनके पैर ही मेरे निरीक्षण की सीमा में रहते थे। धनसिंह की पलकें चाहे संकोच से न उठती हों पर उनके पैर भाई के साथ दृढ़ता से उठते थे। जब कभी चढ़ाई पर उनके पंजों का भार एड़ियों पर पड़ने लगता और आगे रखा हुआ पैर पीछे खिसकता जान पड़ता, तब मैं बिना उनका मुख देखे ही थकावट का अनुमान लगा लेती थी। परंतु "जंहाबहादुर थक गये हो" पूछते ही विचित्र भाषा में वही परिचित उत्तर मिलता 'अस्सा है मां! कुछ तकलीस नहीं।' अच्छा और तकलीफ के अपभ्रंश रूप पर यदि हँसी नहीं आती थी तो स्वर की गंभीरता के कारण।*

यात्रा लेखन का उद्देश्य क्या है इसी से उसके लेखन की प्रकृति भी तय होगी। पत्र-पत्रिकाओं में लिखे जाने वाले यात्रावृत्त कई उद्देश्यों से प्रेरित होकर लिखे जा सकते हैं। ऊपर जिस तरह के यात्रा संस्मरण का उद्धरण दिया गया है, वैसे भी प्रकाशित होते हैं। परंतु इनके अतिरिक्त भी कई अन्य कारण भी होते हैं, जिनकी चर्चा हम आगे करेंगे।

12.3.1 यात्राएँ : क्यों और किसलिए

मानव जाति का इतिहास यात्राओं का इतिहास है, यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है। सभ्यता की आरंभिक अवस्था

में मनुष्य भोजन और आवास की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह भटकता था। ऐसी जगह की तलाश जहाँ उसे शांति से भोजन मिल सके, दैवीय और प्राकृतिक प्रकोपों से अपने को सुरक्षित रख सके और अपने जीवन को नयी दिशा दे सके। इसी तलाश, इसी खोज ने विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों की नींव रखी। बाद में भी व्यापार और वाणिज्य के लिए या अपना साम्राज्य बढ़ाने के लिए व्यापारियों और राजाओं-महाराजाओं ने लंबी-लंबी यात्राएँ की। युनान के बादशाह सिकंदर दो हजार वर्ष से भी अधिक पहले विश्वविजय की कामना से भारत आया था। इसके बाद भी लगातार कई जातियाँ भारत में आईं और हमेशा के लिए यहाँ बस गयीं। विभिन्न क्षेत्रों से आई इन विभिन्न जातियों के सम्मिश्रण से ही उस संस्कृति का निर्माण हुआ जिसे आज हम भारतीय संस्कृति कहते हैं।

यात्राएँ मनुष्य के सोच को, उसके स्वभाव को उदार बनाती हैं। विभिन्न सभ्यताओं भाषा-भाषियों, संस्कृतियों के संपर्क में आने पर ही मनुष्य को मालूम पड़ता है कि यह दुनिया विविधताओं से भरी है। अलग-अलग धर्म, भाषा, प्रकृति, संस्कृति रीति-रिवाज, वेशभूषा के साथ अंतर्क्रिया से ही उसकी दृष्टि व्यापक और मानवीय बनती है।

मनुष्य हमेशा से ही अपने संसार को व्यापकतर बनाने की कोशिश करता रहा है। कूपमंडुकता को कभी अच्छा नहीं माना गया। इसीलिए मनुष्य अपने अनुभव जगत को विस्तृत करने की कोशिश करता है। इसके कई तरीके हैं। पुस्तकें पढ़ना और यात्राएँ करना उनमें प्रमुख हैं। यात्राएँ मनुष्य को साक्षात् अवसर देती है कि वह अपने अनुभव और ज्ञान को विस्तृत करे।

मनुष्य घूमे और नयी-नयी जगहों को जाने-समझे इसके लिए धर्म का भी सहारा लिया गया। तीर्थयात्राएँ हजारों सालों से मनुष्यों को दुर्गम यात्राएँ करने के लिए प्रेरित करती रही हैं। आधुनिक युग में स्वास्थ्य लाभ तथा गर्मी या सर्दी की अतिशयता से बचने के लिए भी लोग दूसरी अनुकूल स्थलों की यात्रा करते हैं। इतिहास प्रसिद्ध स्मारकों को देखने की इच्छा के कारण भी यात्रा करना आम बात है। ताजमहल, मीनाक्षी मंदिर, अंजता की गुफाएँ देखने की इच्छा से लोग सैंकड़ों हजारों मील की यात्रा करके वहां पहुँचते हैं। इसलिए यह कहना ज्यादा सही है कि यात्राएँ मनुष्य के लिए प्रेरणा का कारण रही है। कारण जो भी हों, प्रायः लोग यात्राओं के अवसर निकाल, ही लेते हैं क्योंकि यात्राओं के प्रति एक स्वाभाविक ललक प्रायः सभी में होती है।

12.3.2 यात्रा लेखन के उद्देश्य

यात्राएँ मनुष्य के लिए जितनी रोमांचकारी और आकर्षक होती हैं, उससे कम रोचक नहीं होता, यात्राओं के बारे में पढ़ना। "गुलीवर्स ट्रेवल" जैसी काल्पनिक यात्राएँ भी मनुष्य को कम आकृष्ट नहीं करती रही हैं, तब सचमुच की यात्राओं के बारे में पढ़ना कितना रोचक लगता होगा, यह बताना बहुत मुश्किल नहीं है।

लेकिन आज यात्रा लेखन का कारण सिर्फ इतना ही नहीं है। पर्यटन के एक उद्योग के रूप में विकसित होने के कारण ऐसे यात्रा साहित्य का भी निर्माण होने लगा है, जिसका उद्देश्य लोगों को कुछ खास स्थलों की यात्रा करने के लिए प्रेरित करना होता है। उदाहरण के लिए पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकारें और संबंधित विभाग ऐसे साहित्य का प्रकाशन करती है जिनका उद्देश्य लोगों को पर्यटन स्थलों के बारे में आकर्षक जानकारी देना होता है ताकि वे उसे पढ़कर यात्रा के लिए प्रेरित हो सकें। इस तरह की जानकारी व्यवसायिक उद्देश्यों से प्रेरित होती है, इसलिए वह प्रायः सूचनात्मक होती है तथा उस स्थल के संबंध में अत्यंत संक्षेप में परंतु अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से वर्णन किया जाता है। इसके साथ ही इनमें यात्रा के संबंध में अन्य जानकारियों जैसे यात्रा संबंधी सुविधाओं का भी ब्यौरा प्रस्तुत किया जाता है। इस तरह की प्रचार सामग्री का प्रकाशन यात्राओं का व्यवसायिक प्रबंध करने वाली पर्यटन कंपनियाँ भी करती हैं।

पर्यटन के बढ़ते महत्व को ध्यान में रखकर कई पत्र-पत्रिकाएँ उस काल में जब पर्यटन का व्यवसाय अपने चरम पर होता है (भारत में मई-जून के महीने इसके लिए सबसे अधिक उपयुक्त होते हैं, इसके बाद अक्टूबर के आसपास का काल उपयुक्त समझा जाता है) पर्यटन विशेषांक प्रकाशित करती हैं और भारत के खास-खास पर्यटन स्थलों के सचित्र विवरण प्रस्तुत करती हैं। इन विवरणों में भी मुख्य ध्येय सूचनाएँ देना होता है तथा यातायात, आवास, भोजन आदि की सुविधाओं की भी संक्षिप्त और उपयोगी सूचना दी जाती है। पत्रिकाओं के ऐसे लेखों का उद्देश्य व्यवसायिक होते हुए भी इनमें दी गई जानकारी अधिक यथार्थपरक होती है।

तीसरे तरह का लेखन का वर्णन हम पहले ही कर चुके हैं। इसमें वे फीचर लेख आते हैं जिनमें मुख्य ध्येय यात्रा स्थलों का सूचनापरक परंतु अधिक गंभीर, रोचक और स्तरीय जानकारी दी जाती है। इस तरह के लेखों में सर्वोत्कृष्ट वे कहे जायेंगे जिनका साहित्यिक मूल्य भी है। महादेवी वर्मा, अज्ञेय आदि के यात्रा लेख इस दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

12.3.3 यात्रा लेखन क्यों पढ़े जाते हैं?

व्यवसायिक और सूचनापरक यात्रा लेखन के अतिरिक्त जो प्रचुर यात्रा साहित्य प्रकाशित होता है, उसे लोग क्यों पढ़ते हैं इस पर भी विचार करना चाहिए। यात्रा का आनंद तो यात्रा में ही है परंतु जैसा कि स्पष्ट है प्रत्येक व्यक्ति हर स्थान की यात्रा नहीं कर सकता। कुछ तो अर्थ और समय के अभाव के कारण और कुछ हमारी सीमित क्षमता और अवसर के अभाव में। उदाहरण के लिए हमारी इच्छा रोम, लंदन, काहिरा जैसे प्रख्यात नगरों की यात्रा करने की हो सकती है परंतु हम अर्थाभाव के कारण अपनी इच्छापूरी न कर सकें। लेकिन माउंट एवरेस्ट पर चढ़ना, उत्तरी या दक्षिणी ध्रुव

की यात्रा करना या अंतरिक्ष के भ्रमण पर जाने की इच्छा रखना और इनका पूरा न होना इसलिए भी संभव नहीं होता क्योंकि वैसा करने योग्य क्षमता हमारे पास नहीं है। लेकिन ऐसी दुर्गम यात्राओं के बारे में पढ़ना हमारे लिए उतना ही रोचक और रोमांचकारी हो सकता है और ऐसे रोमांचकारी अनुभवों को पढ़ते हुए हम लगभग वैसा ही आनंद महसूस करते हैं जो शायद यात्रा करने पर महसूस करते। इसलिए यात्रा साहित्य हमारी यात्राओं की अतृप्त इच्छाओं को पूरा करने का भी साधन है।

यात्रा लेखन ज्ञान के एक अपूर्व संसार में ले जाता है। उनको पढ़कर हम नयी जानकारियों से परिचित होते हैं, कई बार पहले से परिचित बातों को भी नये रूप से जानने का मौका पाते हैं। अंडमान निकोबार द्वीप समूह पर लिखे एक यात्रा लेख का निम्नलिखित अंश इस दृष्टि से उल्लेखनीय है :

> *करीब एक लाख की आबादी वाले शांत और धीमी रफ्तार के शहर पोर्ट ब्लेयर में एक टीले पर स्थित सेलुलर जेल को देखकर आज भी डर सा लगता है। यह तीन मंजिला जेल अंग्रेजों ने कैदियों से बनवाई थी और 1905 में बनकर तैयार हुई थी। पोर्ट ब्लेयर में अब भी तीन मंजिला इमारतें बहुत कम हैं, और उस समय जब यह शहर लगभग निर्जन रहा होगा, इतनी बड़ी इमारत की कल्पना ही कंपा देती है। सेलुलर जेल सात बाहों वाले एक ऑक्टोपस की तरह थी। बीच में एक गुबंद और उससे निकलती सात भुजाएं, जिनमें बनी सभी कोठरियों के दरवाजे एक ही दिशा में खुलते थे ताकि कैदी एक दूसरे को देख न सकें। ठोस लोहे के सीखचों से बने दरवाजों पर ताले लगाने की व्यवस्था दीवारों पर सांचे बनाकर की गई थी ताकि कैदी उसे किसी हालत में खोल न पाएं। यह इंतजाम इतना पुख्ता था कि ताले की चाबी अगर कैदी को दे दी जाए तब भी वह उसे खोल न सके। सात बैरकों के बीच गुंबद में जेल के पहरेदार खड़े रहते थे और वे सातों तरफ निगरानी रख सकते थे। इस मजबूत इमारत को देखकर लगता है अंग्रेज उपनिवेशवादियों ने ऐसे सभी निर्माण यह सोचकर कराए होंगे कि भारत में उनका सूर्य कभी अस्त नहीं होगा।*
>
> (समुद्र में एक सभ्यता — मंगलेश डबराल, जनसत्ता 29 अप्रैल 1990)

अंडमान का इतिहास प्रसिद्ध सेलुलर जेल जिसमें हजारों महान् क्रांतिकारी और देशभक्त बंदी बनाकर रखे गये थे, उसका उपर्युक्त वर्णन पढ़ते हुए हम आजादी के संघर्ष से अपने आपको अनयास ही जोड़ लेते हैं। इस प्रकार यात्राएँ ही नहीं यात्राओं के बारे में पढ़ना स्वयं एक अपूर्व अनुभव है। भूगोल, इतिहास, संस्कृति और सभ्यता का सजीव अनुभव हम यात्रा लेखन द्वारा पाते हैं और इन्हीं सब को पाने के लिए लोग यात्राओं के संबंध में पढ़ना चाहते हैं। हाँ, यह अवश्य है कि ऐसा लेखन नीरस, ऊबाऊ और अपठनीय न हो।

बोध प्रश्न

1) प्राचीन काल में लोग यात्राएँ क्यों करते थे? कोई तीन कारण बताइए।

.....

.....

.....

.....

2) यात्रा लेखन किस लिए पढ़े जाते हैं? कोई दो कारण बताइए।

.....

.....

.....

.....

3) यात्रा लेखन के कुछ प्रमुख उद्देश्य बताइए। उत्तर लगभग पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

1) अब तक आपने जो भी यात्राएँ की हैं — उनके पीछे क्या कारण थे? उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) यात्राओं के दौरान आपकी रुचि मुख्य रूप से किस ओर रहती है (प्रकृति, लोग, प्राचीन स्मारक, रीति-रिवाज या अन्य कोई) और क्यों? उत्तर पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

12.4 यात्रा लेखन के विविध प्रकार

यात्रा का लेखन आज काफी हद तक बदल गया है। पर्यटन का आर्थिक दृष्टि से महत्व बढ़ जाने के कारण अब पर्यटन को भी उद्योग की संज्ञा प्राप्त हो गई है। प्रत्येक देश अपने यहाँ विदेशी पर्यटकों को आकृष्ट करने की कोशिश करते हैं क्योंकि उन विदेशी पर्यटकों से बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा उपलब्ध होती है जो विकास में मददगार होती है। लेकिन इस जरूरत के लिए जो यात्रा साहित्य निर्मित कराया जाता है वह प्रायः विदेशी भाषाओं में होता है। हिंदी में तैयार किया जाने वाला यात्रा साहित्य भिन्न प्रकार का होगा। इसी प्रकार पत्र-पत्रिकाएँ ऐसा सूचनात्मक साहित्य प्रकाशित करती हैं जो पाठकों के लिए जानकारी भरा हो और जिनको पढ़ने से उन्हें यात्रा के लिए प्रोत्साहन भी मिले और अगर वे यात्रा पर न जा सकें तो भी उन्हें उस स्थल का रोचक विवरण मिल सके। तीसरे तरह का यात्रा साहित्य वह है जो इतिहास, साहित्य, समाजशास्त्रीय, पर्यावरणीय, वैज्ञानिक आदि ध्येयों से प्रेरित होकर लिखी गई हों। आगे हम इन्हीं की किंचित् विस्तृत चर्चा करेंगे।

12.4.1 व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन

पर्यटन विभाग यात्रियों को खास स्थलों की यात्रा करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से समय-समय पर विविध तरह का प्रचार साहित्य प्रकाशित करता है। इस तरह के साहित्य में उस विशेष पर्यटन स्थल का विस्तृत विवरण नहीं दिया जाता बल्कि उसके बारे में कुछ खास-खास सूचनाएँ दी जाती हैं जो पर्यटक को यात्रा करने के लिए प्रेरित करे। जैसे —

- वे मुख्य स्थान जो पर्यटन स्थल को आकर्षक बनाते हैं। झील, नाव यात्रा, सूर्योदय या सूर्यास्त का मनोरम दृश्य, फूलों से भरी घाटी, नदी का स्वच्छ निर्मल सौंदर्य, रोप वे, प्राचीन खंडहर या भव्य इमारत आदि जो भी आकर्षण केंद्र उस जगह पर उपलब्ध हों उसका रोचक विवरण दिया जाता है।
- इन स्थलों पर कुछ खास मनोरंजक गतिविधियाँ — जैसे नौका विहार, ऊँट की यात्रा, स्केटिंग, संगीत व नृत्य के कार्यक्रम, प्रकाश-ध्वनि कार्यक्रम आदि।
- ठहरने के लिए अच्छे होटल, उत्कृष्ट भोजन व शापिंग का आकर्षण।
- विद्यार्थियों, बुद्धिजीवियों आदि के लिए शोध कार्य आदि की सुविधा का विवरण।

इस तरह यह प्रचार साहित्य भिन्न-भिन्न लोगों और समुदायों की रुचियों को ध्यान में रखकर विवरण भी प्रस्तुत करती है। इसी प्रचार साहित्य को लिखने के लिए खास तरह की योग्यता की आवश्यकता होती है। संक्षेप में परंतु सधी हुई भाषा में विवरण देना जिसमें अतिशयोक्ति तो हो सकती है, परंतु तथ्य सही होने चाहिए। एक तरह की विज्ञापनी भाषा की जरूरत इस तरह के साहित्य के लेखन में आवश्यक है।

12.4.2 सूचनापरक यात्रा लेखन

इस तरह का यात्रा साहित्य प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होता है। दैनिक समाचार पत्र या तो अपने रविवारीय परिशिष्टों में यात्रावृत्त प्रकाशित करते हैं या फिर वे यात्रा लेखन के लिए अलग से स्थायी स्तंभ रखते हैं। ऐसे यात्रा वृत्तों को पढ़ने वाले पाठकों का समुदाय बहुत विस्तृत होता है और उनकी रुचि भी भिन्न-भिन्न तरह की होती है। सीधे तौर पर इसका उद्देश्य लोगों को किसी खास स्थल की यात्रा के लिए प्रेरित करना नहीं होता। परंतु इसका उद्देश्य यह अवश्य हो सकता है कि वह यात्रा करने वालों को कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएँ व परामर्श देकर उनकी यात्रा को सुगम और रोचक बनाए। उदाहरण के लिए आप उन्हें बता सकते हैं कि किन पर्यटन स्थलों की यात्रा कब करनी चाहिए। उस जगह तक कैसे पहुँचना चाहिए, क्या-क्या साथ ले जाना चाहिए। किन-किन स्थलों को देखना चाहिए, उनकी क्या-क्या विशेषताएँ हैं। क्या खरीददारी की जा सकती है। किस वर्ग के यात्री से आवास स्थल

बेहतर होंगे। ये और ऐसी सूचनाएँ इस तरह के यात्रा लेखों में दी जा सकती हैं। नीचे हम ऐसे ही एक यात्रा लेख का अंश दे रहे हैं जिसमें पर्यटकों के लिए कई तरह की सूचनाएँ दी गई हैं :

अगर कोई पहाड़ों में घूमने का शौक रखता हो, तो एक बहुत दिलचस्प और खूबसूरत ट्रैक है : मैक्लियोडगंज से त्रिउंड तक का जिसका अनुभव जल्दी नहीं भुलाया जा सकता। यह 11 किलोमीटर का रास्ता खूबसूरत भी है और आसान भी। यहाँ आप पहाड़ों को देखते ही नहीं, महसूस भी करते हैं। चीड़ के दरख्तों से गुजरती ठंडी हवा और उसकी आवाज चीड़ के दरख्तों की खुशबू, वहाँ की पथरीली, खड़ी चट्टानें और ऊँचाई पर चढ़ने का आनंद यह सब आपको त्रिउंड के रास्ते में ही मिलेगा।

त्रिउंड पहुँचने के लिए आप दिल्ली से जम्मू की ओर जाने वाली रात की ट्रेन ले सकते हैं। जो कि दूसरे दिन सुबह आपको पठानकोट पहुँचा देगी। वहाँ से मैक्लियोडगंज बस से सिर्फ चार घंटे का सफर है। वहाँ से समझिए आपकी यात्रा शुरू हो गई। वैसे दो-एक रोज आप मैक्लियोडगंज में भी गुजार सकते हैं, जो कि कांगड़ा जिले के मुख्यालय धर्मशाला का एक उप-नगर है। मैक्लियोडगंज में मुख्यतः तिब्बती लोग रहते हैं। दलाई लामा का निवास भी यहीं पर है। वहाँ एक तिब्बती मंदिर, एक पुराना चर्च और एक तेजी से गिरता झरना है जो अलग-अलग दिशाओं में फैल जाता है।

त्रिउंड का रास्ता मैक्लियोडगंज से बस अड्डे से ही शुरू हो जाता है माउंटेनिअरिंग इंस्टीट्यूट वाली रोड पर। जैसे-जैसे हम ऊपर चलते जाते हैं, पेड़ कम दिखाई देते हैं और काफी ऊपर चढ़ने पर एक तरफ कांगड़ा की पूरी वादी दिखाई पड़ती है तो दूसरी तरफ पहाड़ की स्लेटी चट्टानें। रास्ता भी पथरीला होता जाता है। मैक्लियोडगंज से त्रिउंड की चढ़ाई कम से कम 3500 फुट है। त्रिउंड एक बहुत ही हरी घास का मैदान है, समुद्रतल से 10,000 फुट की ऊंचाई पर। ...

(त्रिउंड की ऊंचाई पर — नलिनी तनेजा, नवभारत टाइम्स, 6 अक्टूबर 1990)

इस तरह के आलेख लिखने के लिए जरूरी है कि आप जो भी लिखें प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित हो, बिना यात्रा किये केवल यात्रा संबंधी प्रचार साहित्य को आधार बनाकर न लिखें। तथ्यों को ईमानदारी से प्रस्तुत करें व अपनी बातों को रोचक ढंग से रखें। किसी तरह का पूर्वाग्रह आपके लेखक में नहीं झलकना चाहिए। वर्णन में तथ्यों का अभाव और केवल विशेषणों की भरमार इस तरह के लेखन के लिए उपयुक्त नहीं है।

12.4.3 विशिष्ट यात्रा लेखन

इसके अंतर्गत हम उन यात्रावृत्तों को शामिल कर सकते हैं जो किसी विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लिखे गये हों। उदाहरण के लिए दक्षिण ध्रुव की यात्रा का विवरण या माउंट एवरेस्ट पर आरोहण का रोमांचक वर्णन। किसी पुरातात्विक या ऐतिहासिक महत्व का यात्रावृत्त, पर्यावरणीय दृष्टि से लिखा गया कोई यात्रावृत्त भी हम इसी के अंतर्गत शामिल करेंगे। उदाहरण के लिए ट्रैकिंग को ही केंद्र में रखकर लिखे गये यात्रावृत्त का अंश देखिए —

आखिर वह दिन भी आ पहुँचा जब हमें अपने चिरप्रतीक्षित लक्ष्य सरपॉस (14,800 फुट) को पार करना था। आज जहाँ पहला रोमांच सरपॉस को पार करने का था वहीं दूसरा रोमांच इस बात का था कि आज हमें लगातार सात घंटे, सात किलोमीटर, बर्फ केवल बर्फ पर ही चलना था। यह हमारा सौभाग्य ही था कि उस दिन मौसम बिल्कुल साफ था। उस दिन हमें नगारू से सुबह सवा छह बजे ही पैक लंच देकर रवाना कर दिया गया। चूंकि बर्फानी रास्ता जोखिम भरा था इसलिए दो गाइड भी हमारे साथ हो लिए।

करीब आधा घंटा पथरीले रास्ते पर चलने के बाद ज्यों ही हम बर्फानी क्षेत्र में पहुँचे, तो सभी के चेहरों पर एक अपूर्व मुस्कुराहट तैर गई। आगे-पीछे, ऊपर-नीचे जहाँ तक निगाह जाती थी, वहीं बर्फ की सफेद दुधिया चादर बिछी हुई दिखाई देती थी। सूरज की सुबह की तेज और ताजी किरणों से बर्फ की चमक कई गुना बढ़ गई थी और वह स्वर्णिम आभा बिखेरती दिखाई दे रही थी।

(भुलाए नहीं भूलते वे मधुर, रोमांचक क्षण — जगजीत सिंह, नवभारत टाइम्स, 20 अप्रैल 1990)

उपर्युक्त यात्रावृत्त का उद्देश्य ट्रैकिंग के अनुभवों को पाठकों के सामने रखना है। ट्रैकिंग पहाड़ों की वह यात्रा है जो साइट सीइंग से भिन्न जोखिम और साहस से भरी होती है। इस तरह का यात्रावृत्त सामान्य सूचनापरक यात्रावृत्तों से भिन्न होगा।

12.4.4 साहित्यिक यात्रा लेखन

रचनाकारों द्वारा लिखे गये यात्रावृत्त इस कोटि में आते हैं। कवि, लेखक जब अपनी यात्राओं का विवरण लिखते हैं तो उनमें एक अलग ही तरह का रस होता है। लेखक की दृष्टि मूलतः सौंदर्यपरक होती है। वह पर्यटन स्थलों को बिल्कुल भिन्न ढंग से देखता है और उनका वर्णन करता है। यद्यपि उसके लेखन में सूचनाएँ भी होती हैं। वह एक साथ कई उद्देश्यों की पूर्ति वाले भी हो सकते हैं परंतु मुख्य बात होती है उनकी लेखन की शैली जो सामान्य फीचर लेखन से अधिक गंभीर, सौद्देश्यपूर्ण रोचक, सरस और कलात्मक होती है। हमने महादेवी वर्मा के ऐसे ही एक यात्रा संस्मरण का अंश पहले उद्धृत किया है। अब एक हिंदी कवि मंगलेश डबराल द्वारा लिखे गये यात्रावृत्त का अंश पढ़िए, आप खुद महसूस करेंगे कि प्रकृति सौंदर्य का ऐसा वर्णन केवल कवि ही कर सकता है :

"बहर गर बहर न होता तो बयाबान होता!" गालिब की यह अतियथार्थवादी ढंग की कल्पना अंडमान में एक खास तरह से याद आती है और लगता है जैसे हम एक साथ बहर यानी समुद्र और बियाबान में पहुँच गये हों। गंभीर, अनंत नीला समुद्र और बीच-बीच में उभरे खूब हरे बियाबान द्वीप जो समुद्र के हाथों की तरह लगते हैं या प्राक्-इतिहास के महाकाय पशुओं की तरह समुद्र में सोये हुए। समुद्र पहले विस्मित और अभिभूत करता है और फिर चुप कर देता है। लोग उसके सामने अकेले गूंगे बच्चों की तरह लगते हैं सिर्फ अपने विस्मय के साथ उसे देखते हुए। समुद्र मन में वैसी उत्सुकता नहीं जगाता जैसी कि पहाड़ जगाते हैं। पहाड़ ऊँचाई का और शायद उनके सामने अपने बौनेपन का भी एहसास देते हैं और साथ ही कुछ और आगे जाकर कुछ और जानने की जिज्ञासा भी जगाते हैं, पर समुद्र अपनी विशालता और निर्जनता के आगे हमें लाचार सा कर देता है। शायद समुद्र भी एक तरह का बियाबान है : पानी का बीहड, निर्जन, नंगा विस्तार। ...

(समुद्र में एक सभ्यता — मंगलेश डबराल, जनसत्ता, 29 अप्रैल 1990)

साहित्यिक यात्रावृत्त की विशेषता यह होती है कि वह यात्रा के पड़ाव में पड़ने वाली जगहों, लोगों और अन्य चीजों के आंतरिक सौंदर्य को उद्घाटित करती है। वह शब्दों द्वारा उनको पुनर्सृजित करती है। इस तरह हम साहित्यिक यात्रावृत्त को पढ़ते हुए उस स्थल का अपने मन और हृदय में पुनः निर्माण करते हैं। जानी-पहचानी जगहों को भी साहित्यकार ऐसी गरिमा प्रदान कर देता है कि वे बिल्कुल नये अर्थ में हमारी सामने अवतरित हो जाती है। स्पष्ट ही ऐसा यात्रा लेखन सर्वाधिक कठिन है परंतु यही यात्रा लेखन का आदर्श भी कहा जा सकता है।

बोध प्रश्न

4) व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन और सूचनापरक यात्रा लेखन में मुख्य अंतर क्या-क्या है? उत्तर पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5) सूचनापरक यात्रा लेखन की कोई तीन विशेषताएँ बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

6) साहित्यिक यात्रा लेखन और विशिष्ट यात्रा लेखन का अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

3) मान लीजिए आपको पहाड़ पर यात्रा के लिए सूचनापरक यात्रा लेख लिखना है तो आप कौन-कौन सी सूचनाएँ अपने पाठकों को देना चाहेंगे? उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए —

.....

.....

.....

.....

.....

4) निम्नलिखित अंश पढ़कर बताइए कि इसे आप यात्रा लेखन की किस कोटि में रखेंगे और क्यों? उत्तर पाँच पंक्तियों में लिखिए।

जिन्होंने, पाँच जल की धाराओं से घिरा और रंग-बिरंगे फूलों में छिपे चरणों से लेकर शून्य नीलिमा में प्रकट मस्तक तक सफेद हिम में समाधिस्थ केदार का पर्वत देखा है वे ही उसका आकर्षण जान सकते हैं। मीलों दूर से ही वह उज्ज्वल शिखर अक्षरहीन आमंत्रण के समान खुला दिखायी देता है। जैसे-जैसे हम उसकी ओर बढ़ते हैं वह विस्तार में बढ़ता जाता है और उसकी रजत-विद्युत-लेखाओं के समान झिलमिलाती हुई रेखाएँ स्पष्टतर होती जाती हैं। लौटते समय जिस क्षण वह हमारी दृष्टि से ओझल हो जाता है उस समय हम एक विचित्र अकेलेपन का अनुभव करते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

12.5 यात्रा लेखन की विभिन्न शैलियाँ

यात्रा लेखन के लिए कई शैलियाँ अपनाई जा सकती हैं। परंतु व्यवसायोन्मुख और सूचनापरक यात्रा लेखन प्रायः वर्णनात्मक शैली में ही लिखे जाते हैं क्योंकि उनमें महत्व शैली का नहीं बल्कि सूचनाओं का होता है। लेकिन विशिष्ट उद्देश्य से प्रेरित यात्रा लेखन और साहित्यिक यात्रा लेखन की शैलियाँ भिन्न होती हैं। प्रायः ऐसे यात्रावृत्त संस्मरणात्मक शैली में, डायरी शैली में या निबंधात्मक शैली में लिखे होते हैं। अब हम यहाँ कुछ प्रमुख शैलियों का परिचय दे रहे हैं।

12.5.1 वर्णनात्मक शैली

वर्णनात्मक शैली इसे कहेंगे जिसमें "वस्तु" का वर्णन किया गया हो। यहाँ वस्तु से तात्पर्य है रचना में प्रस्तुत सामग्री। उदाहरण के लिए रचना में जो बातें कहनी हैं उनका शब्दों में अगर वर्णन कर दिया जाए तो उसे हम वर्णनात्मक शैली कहते हैं। यात्रा का ऐसा वर्ण करना जिसमें यात्रा से संबंधित तथ्यों का वर्णन मात्र किया गया हो तो वह वर्णनात्मक शैली में लिखा गया यात्रा लेखन होगा। वर्णनात्मक शैली व्यवसायोन्मुख व सूचनापरक यात्रा लेखन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है क्योंकि इन दोनों में महत्व सूचनाओं का होता है, उनकी प्रस्तुति का उतना नहीं।

वर्णनात्मक शैली में तथ्यों का सही परंतु रोचक विवरण प्रस्तुत किया जाता है। इसमें भाषा सरल और सहज होती है। प्रत्येक बात को सही क्रम में और विश्वसनीय ढंग से रखा जाता है। बहुत गंभीर और काव्यात्मक ढंग से बातों को रखने की बजाए उन्हें रोचक और सहज ढंग से रखना ज्यादा अच्छा समझा जाता है। हाँ, यह अवश्य है लेखक को जहाँ आवश्यक हो अपनी बात को सरस भी बनाना चाहिए अन्यथा लेख शुष्क होकर रह जाएगा। वर्णनात्मक शैली में लिखे गये यात्रावृत्त का एक उदाहरण देखिए —

> *समुद्र के किनारे कैशुरीना के जंगल नजर आते हैं। हालांकि यह जंगल पर्यटन विभाग ने खड़े किये हैं। कैशुरीना के दो-दो पेड़ों के बीच प्लास्टिक के जाली वाले लंबे-लंबे झूले डाले गये हैं। जिन पर बच्चों और जोड़ों को हर समय देखा जा सकता है। एक तरफ परंपरागत नाव खड़ी है तो दूसरी तरफ शिव मंदिर या तट मंदिर तक कुकुरमुत्ते की शक्ल में छोटी-छोटी झोपड़ियाँ बनाई गई हैं। रेतीली जमीन पर समुद्री लताओं का जाल सा नगर आता है जिनमें बैंगनी फूल लगे हैं। महाबलीपुरम अब सिर्फ पल्लव साम्राज्य के प्राचीन अवशेषों का स्मारक ही नहीं है बल्कि खूबसूरत समुद्री तटों के लिए भी पहचाना जाने लगा है। यह बात अलग है कि यहाँ परंपरागत मेहराबी शक्ल वाले तट नजर नहीं आते हैं। लेकिन कैशुरीना नारियल और नागफनी के पेड़ों से सटे इस समुद्री तट की खूबसूरती अलग किस्म की है। ...*
>
> (समुद्र तट पर शिल्प का नगर — अंबरीष कुमार, जनसत्ता, 2 सितंबर 1990)

आप देखेंगे कि उपर्युक्त अंश में महाबलीपुरम के समुद्री तट का वर्णन किया गया है। इस वर्णन में यद्यपि उस जगह का सौंदर्य उभारने की कोशिश की गई है। परंतु मुख्य चीज जो उभरकर आती है वह है उस स्थान का तथ्यपरक वर्णन। यही वर्णनात्मक शैली है।

12.5.2 संस्मरणात्मक शैली

संस्मरणात्मक शैली का अर्थ है संस्मरणों के रूप में लेखन। संस्मरण का अर्थ है अतीत को याद करना। संस्मरणात्मक शैली में लिखी गयी रचना में अतीत की स्मृतियों को लिपिबद्ध किया जाता है। संस्मरणात्मक शैली में लिखा गया यात्रावृत्त अतीत की स्मृतियों का ही लिपिबद्ध रूप होता है अर्थात् जो यात्रा अतीत में की गई उसी को संस्मरणात्मक रूप में लिखना। वैसे तो सभी यात्रावृत्त संस्मरणात्मक ही होते हैं परंतु साहित्यिक यात्रावृत्त में इस शैली का उत्कृष्ट रूप देखने को मिलता है। महादेवी वर्मा के "पर्वत पुत्र" यात्रावृत्त की शैली संस्मरणात्मक ही है। इसी का एक अंश यहाँ उद्धृत है जिसे पढ़कर आप समझ सकेंगे कि संस्मरणात्मक शैली में यात्रावृत्त लिखने का ढंग क्या होना चाहिए :

जंगबहादुर के स्वार्थ — त्याग पर कोई काव्य चाहे न लिखा जाय, पर मेरे हृदय में उसकी स्मृति एक अत्यन्त मधुर कविता है। जब मैंने जंगबहादुर को अपने साथ चलने का आदेश दिया धनसिंह को रुद्रप्रयाग में विश्राम का, तब उसकी आँखें अधिक सजल हो आयीं यह कंठ अधिक गद्‌गद् हो उठा, वह बताना कठिन है। उसने बहुत साहस से लौट जाने का प्रस्ताव किया था, पर हम सबका विछोह सहना उसके लिए कठिन था। ...

वह यात्रा भी समाप्त हो गयी और तब एक दिन हम सबको बस पर बिठाकर वे दोनों भाई खोये-से खड़े रह गये। जंगबहादुर ने आंसू रोकने का प्रयास करते-करते कहा, "मांजी जीता रहना फिर आना, जंगिया का नाम चीठी भेजना।" धनिया सदा के समान पृथ्वी पर दृष्टि गड़ाये, बीच-बीच में टपकते आंसुओं की भाषा में विदा दे रहा था। आज वे दोनों पर्वत पुत्र कहाँ होंगे सो तो मैं बता ही नहीं सकती, पर उनकी मांजी होकर मुझे जो सम्मान मिला वह भी बताना सहज नहीं।"

आप देखेंगे कि उपर्युक्त अंश में कवयित्री महादेवी वर्मा ने बद्रीनाथ की अपनी यात्रा के दौरान अपने कुलियों के आत्मीय व्यवहार की स्मृतियों को प्रस्तुत किया है। इस यात्रा लेख की प्रस्तुति में उच्चकोटि की साहित्यिकता अनायास ही हमारा ध्यान आकृष्ट कर लेती है।

12.5.3 डायरी शैली

यात्रावृत्त लिखने की एक और शैली डायरी शैली होती है। यात्रा के दौरान कई यात्री डायरी में अपने प्रत्येक दिन का लेखा जोखा लिख लेते हैं। इसी लेखे-जोखे को अगर यात्रा लेख का रूप दिया जाए तो उसे हम डायरी शैली में लिखा गया यात्रावृत्त कहेंगे। डायरी शैली में तारीखवार यात्रा का वृतांत प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन यह ध्यान रखना होता है कि उसमें नितांत निजी और अनावश्यक बातें न हों। डायरी शैली का प्रयोग भी आमतौर पर साहित्यिक कोटि के यात्रावृत्तों के लिए होता है। व्यवसायोन्मुख और सूचनापरक यात्रा लेखन के लिए वह उपयुक्त भी नहीं है।

उपर्युक्त शैलियों के अतिरिक्त भी यात्रा लेखन की शैलियाँ हो सकती हैं। यह लेखक की प्रतिभा और कल्पनाशीलता पर निर्भर करेगा।

बोध प्रश्न

7) वर्णनात्मक शैली की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

8) संस्मरणात्मक शैली और डायरी शैली में मूल अंतर क्या है? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

अभ्यास

5) अपनी किसी यात्रा का संक्षिप्त विवरण लगभग 10 पंक्तियों में प्रस्तुत कीजिए। इसमें यात्रा के दौरान आने वाली यातायात संबंधी कठिनाइयों का उल्लेख हो।

.....

.....

.....

.....

.....

12.6 सारांश

- इस इकाई में आपने यात्रा लेखन के बारे में अध्ययन किया है। यात्रा लेखन फीचर लेखन का महत्वपूर्ण अंग है। यात्रा करना और यात्रा के बारे में पढ़ना दोनों के ही प्रति मनुष्य को स्वाभाविक लगाव होता है। यात्रा के कई उद्देश्य होते हैं उसी तरह यात्रा लेखन के भी कई उद्देश्य होते हैं। आप इकाई को पढ़कर इनके बारे में बता सकेंगे।

- उद्देश्यों के अनुरूप यात्रा लेखन के चार प्रकार किये जा सकते हैं। पर्यटन को उद्योग मानते हुए उसके बढ़ावे के लिए लिखा गया प्रचार साहित्य, व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन कहलाता है। पत्र-पत्रिकाओं में आमतौर पर सूचनापरक यात्रावृत्त लिखे जाते हैं। इतिहास, पुरातत्व, पर्यावरण आदि उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लिखा जाने वाला यात्रावृत्त विशिष्ट यात्रा लेखन की श्रेणी में आएगा। अंतिम श्रेणी साहित्यिक यात्रा लेखन की है जो साहित्यकारों द्वारा लिखे जाते हैं। आप इन विभिन्न यात्रा लेखों की विशेषताएँ बता सकते हैं।
- यात्रा लेखन की मुख्यतः तीन शैलियां हैं। वर्णनात्मक शैली का प्रयोग व्यवसायोन्मुख और सूचनापरक यात्रा लेखन के लिए किया जाता है। संस्मरणात्मक शैली और डायरी शैली का प्रयोग प्रायः साहित्यिक या विशिष्ट उद्देश्यों वाले यात्रावृत्त में किया जाता है। इकाई को पढ़कर आप यात्रा लेखन की इन विभिन्न शैलियों का अंतर बता सकते हैं और उनका लेखन में उपयोग कर सकते हैं।

12.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) i) भोजन एवं आवास के लिए
   ii) राज्य विस्तार के लिए
   iii) व्यवसाय के लिए

2) i) दुर्लभ यात्रा अनुभवों का आनंद लेने के लिए
   ii) ज्ञान का विस्तार करने के लिए

3) पढ़िए उपभाग 12.3.2

4) व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन पर्यटन उद्योग के बढ़ावे के लिए प्रचार साहित्य के रूप में लिखे जाते हैं। जबकि सूचनापरक यात्रा लेखन प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में पर्यटन के इच्छुक पाठकों के ज्ञानवर्द्धन के लिए लिखे जाते हैं।

5) i) यात्रा का यथातथ्य वर्णन
   ii) यात्रा में सहायक बातों का वर्णन
   iii) पर्यटन स्थल से संबंधित विभिन्न पक्षों का रोचक विवरण

6) साहित्यिक यात्रा लेखन प्रायः साहित्यकारों द्वारा लिखे जाते हैं जो अन्य बातों के अलावा लेखन की कलात्मक शैली और पर्यटन स्थल के सौंदर्यात्मक उद्घाटन के लिए पढ़े जाते हैं जबकि विशिष्ट यात्रा लेखन किसी विशिष्ट उद्देश्य को ध्यान में रखकर लिखे जाते हैं।

7) देखिए उपभाग 12.5.1

8) संस्मरणात्मक शैली में यात्रा का विवरण स्मृतियों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जबकि डायरी शैली में यात्रा का विवरण तारीखवार ढंग से यात्रा के दौरान उसी समय लिखा जाता है।

अभ्यास

1) एवं 2) अपने अनुभव के द्वारा उत्तर लिखिए

3) i) कब यात्रा करें?
   ii) कैसे पहुँचे?
   iii) क्या साथ ले जाएँ?
   iv) कहाँ ठहरें?
   v) कौन-कौन से स्थलों की यात्रा करें?
   vi) कहां से क्या-क्या खरीद सकते हैं?

4) साहित्यिक यात्रा लेखन है जो संस्मरणात्मक शैली में लिखा गया है। भाषा एवं प्रस्तुति की विशेषताओं पर ध्यान दें।

5) इकाई पढ़कर स्वयं उत्तर लिखिए।

इकाई 13 यात्रा लेखन : विषय का चयन और प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य
13.1 प्रस्तावना
13.2 यात्रा लेखक की योग्यता
13.3 यात्रा स्थल का चयन
13.3.1 रुचि एवं विशेषज्ञता
13.3.2 यात्रा की प्रासंगिकता और महत्व
13.4 सामग्री का संकलन
13.4.1 यात्रा-पूर्व अध्ययन
13.4.2 यात्रा की तैयारी
13.4.3 तथ्यों का संकलन
13.4.4 अन्य सामग्री
13.5 सामग्री का संयोजन एवं संपादन
13.6 यात्रा लेखन की प्रस्तुति
13.6.1 आरंभ
13.6.2 मध्य
13.6.3 अंत एवं शीर्षक
13.7 भाषा एवं शैली
13.8 सारांश
13.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर
13.10 उपयोगी पुस्तकें

13.0 उद्देश्य

फीचर लेखन से संबंधित इस 13वीं इकाई में आप यात्रा लेखन के व्यावहारिक पक्ष का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यात्रा लेखक के लिए आवश्यक योग्यता को समझ सकेंगे;
- सही यात्रा-स्थल का चयन कर सकेंगे;
- यात्रा के लिए आवश्यक तैयारी कर सकेंगे;
- यात्रा के दौरान एकत्र सामग्री का लेखन के लिए संयोजन और संपादन कर सकेंगे;
- यात्रावृत्त का लेखन कर सकेंगे; एवं
- इसके लिए उपयुक्त भाषा-शैली का प्रयोग कर सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन से संबंधित इस पाठ्यक्रम की यह 13वीं इकाई है। इससे पूर्व की इकाई में आपने यात्रा लेखन के महत्व एवं विविध प्रकारों का अध्ययन किया था। आपने यह भी जाना था कि यात्रा लेखन की कौन-सी प्रमुख शैलियाँ हैं और उनकी क्या विशेषताएँ हैं। इस इकाई का संबंध भी यात्रा लेखन से है। इसमें यात्रा लेखन के व्यावहारिक पक्ष का परिचय दिया गया है। सबसे पहले एक अच्छे यात्रा लेखक में क्या विशेषताएँ होनी चाहिए, इसके बारे में विचार किया गया है। उसके बाद अपनी रुचि, उद्देश्य और लेखन की प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए यात्रा स्थल का चयन कैसे किया जाए, इसका उल्लेख किया गया है। यात्रा आरंभ करने से पूर्व किस तरह का अध्ययन करना चाहिए, क्या-क्या तैयारी करनी चाहिए तथा क्या-क्या सामान साथ ले जाना चाहिए इसके बारे में भी बताया गया है। यात्रा के दौरान लेखन की पूर्व तैयारी के तौर पर क्या-क्या नोट करना चाहिए, इस पर भी विचार किया गया है।

यात्रा की समाप्ति के बाद अपनी समस्त सामग्री का संयोजन करने तथा लेखन के लिए संपादित करने के बारे में भी उल्लेख किया गया है। यात्रा लेख के आरंभ, मध्य और अंतिम भाग के लेखन के बारे में खोदाहरण विचार किया गया है। उपयुक्त भाषा शैली के बारे में भी बताया गया है। फोटो आदि के उपयोग का ढंग भी बताया गया है। आलेख

का आकर्षक शीर्षक कैसे दिया जाए, इस पर भी चर्चा की गई है। हमने कोशिश की है कि आपको यात्रा लेखन के सभी पक्षों के बारे में ठोस उदाहरणों द्वारा समझाएँ ताकि आपको लिखने में मदद मिल सके। बोध प्रश्नों एवं अभ्यासों द्वारा आप अपने लेखन कौशल का विकास कर सकेंगे।

13.2 यात्रा लेखक की योग्यता

यात्रा लेखक में कुछ विशेष तरह की योग्यताओं का होना आवश्यक है। सबसे पहले तो उसका सामान्य ज्ञान पर्याप्त रूप से विस्तृत होना चाहिए क्योंकि यात्रा के दौरान उसे बहुत सी ऐसी चीज़ें देखने जानने को मिल सकती हैं जिनकी पूर्व जानकारी के बिना वह उनका महत्व नहीं बता सकेगा। मसलन अलग-अलग क्षेत्रों की प्रकृति के अंतर के अनुसार वहाँ पैदा होने वाले पेड़-पौधे भी अलग-अलग होते हैं। यात्रा लेखक को प्रकृति के इन विभिन्न रूपों की जानकारी होनी चाहिए। पहाड़ों की यात्रा के दौरान भिन्न-भिन्न तरह के पेड़-पौधे मिलते हैं अगर हम उनके बारे में कुछ नहीं जानते तो उनका न तो वर्णन कर सकते हैं और न उनका महत्व बता सकते हैं। किसी ऐतिहासिक स्मारक की यात्रा के समय हमें उसके इतिहास के बारे में पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए।

दूसरी विशेषता यात्रा लेखक में यह होनी चाहिए कि वह वस्तुओं का सूक्ष्म पर्यवेक्षण (Observation) कर सके। प्रकृति का सौंदर्य, लोगों की स्वभावगत विशेषताएँ, स्मारकों की विशिष्टता की पहचान तभी संभव है जब आप में उनकी बारीकी से निरीक्षण करने की क्षमता हो। सामान्य आदमी के लिए सभी समुद्र एक से होते हैं परंतु प्रतिभाशाली लेखक उनके अंदर को न केवल आसानी से पहचान लेता है वरन् उनके फर्क को बहुत ही खूबसूरती के साथ शब्दों में बाँध भी देता है। यही नहीं यात्रा के दौरान मिलने वाले लोगों का भी सूक्ष्म अवलोकन कर उनका प्रभावशाली शब्द-चित्र प्रस्तुत करने से यात्रा वृत्तांत को उत्कर्ष बनाया जा सकता है।

> *जंगबहादुर का चेहरा भी अपने छोटेपन के प्रति इतना सतर्क था कि उसे देखकर किसी पौराणिक अनुज का स्मरण हो आता था। गोल-मटोल कुछ पुष्ट शरीर वाले धनिया की आकृति भी उसके स्वभाव के अनुरूप थी।। विरल भूरी भौहों की सरल रेखा और छोटी नाक की कुछ नुकीली नोंक उसकी सरलता का भी परिचय देती थी और तेजस्विता का भी। ओठों का दाहिना कोना कुछ ऊपर की ओर खिंचा-सा रहता था। जिससे उसके मुख का मुस्कुराने का भाव स्थायी हो गया था। रंग की स्वच्छता और त्वचा की चिकनाहट से प्रकट होता था कि कुली जीवन की सारी कठोरता उसने अभी नहीं झेली है। टाट के पुराने पैजामे और जीन के फटे कोट ने उसे पराजित सिपाही की भूमिका दे डाली थी जो उसके मुख के भाव के साथ विरोधाभास उत्पन्न करती थी।*
>
> (महादेवी वर्मा, पर्वत पुत्र)

यात्रा लेखक की स्मरण शक्ति भी तीव्र होनी चाहिए। दिन भर यात्रा के दौरान जो कुछ वह देखे-जाने उसे याद कर वह रात को सोने से पहले डायरी में यथावत् वर्णन कर ले। यह तभी संभव है जब सूक्ष्म अवलोकन की क्षमता के साथ उसकी स्मरण शक्ति भी अच्छी हो।

यात्रा लेखक को मिलनसार, विनम्र और तीव्र बुद्धिवाला होना चाहिए। यात्रा के दौरान भिन्न-भिन्न लोगों से मिलने-जुलने का अवसर मिलता है और इनसे वह कई महत्वपूर्ण बातें जान सकता है जिनका उपयोग वह यात्रा लेख में कर सकता है। लेकिन ऐसी बातें तभी प्राप्त की जा सकती है जब उसमें अपरिचितों के साथ शीघ्र संबंध बढ़ा सकने की क्षमता हो। उनसे सार्थक बातचीत कर सके तथा अपने सामान्य ज्ञान के आधार पर उनसे महत्वपूर्ण जानकारी हासिल कर सके।

यात्रा लेखक को साहसी और जोखिम में न घबराने वाला भी होना चाहिए तथा कठिन परिस्थितियों में भी वह अपनी यात्रा अनवरत जारी रख सके। इस तरह की कुछ योग्यताओं के बिना उसके लिए बेहतर यात्रा लेखन करना संभव नहीं होगा।

13.3 यात्रा-स्थल का चयन

यात्रा के लिए वैसे तो सभी जगहें उपयुक्त होती हैं क्योंकि यह लेखक पर निर्भर करता है कि वह अपनी यात्रा को कितना प्रासंगिक और महत्वपूर्ण बनाकर प्रस्तुत करता है। फिर भी यात्रा-स्थल का चयन करते हुए कुछ खास बातों को ध्यान में रखना चाहिए। आप जिनके लिए यात्रा लेखन कर रहे हैं उन पाठकों की रुचि किस स्थलों में ज्यादा होगी इस बात को अवश्य दृष्टि में रखना चाहिए। आमतौर पर लोग उन स्थानों के बारे में पढ़ना चाहते हैं जिनकी यात्रा करने की इच्छा तो वे रखते हैं परंतु यात्रा करने का अवसर अभी तक नहीं मिला है या फिर वे ऐसे यात्रा विवरणों को पढ़ना चाहते हैं जिसमें उन्हें साहसिक अभियानों का रोमांचकारी आनंद मिले। वे उन यात्राओं का भी विवरण पढ़ना चाहते हैं जो उनके लिए असंभव है। साहित्यिक यात्रावृत्तों में भिन्न तरह का आनंद मिलता है और उनके प्रति भी पाठकों की रुचि होती है। इस प्रकार यात्रा स्थल का चयन कई आधारों पर किया जा सकता है। फिर भी यात्रा स्थल का चयन करते हुए आप यात्रा की प्रासंगिकता और स्वयं अपनी रुचि एवं विशेषता का ध्यान रखें।

13.3.1 रुचि एवं विशेषज्ञता

यात्रा लेखन की ओर उन्हीं को प्रवृत्त होना चाहिए जिन्हें यात्राओं में आनंद आता हो। नयी-नयी जगह जाना, वहाँ के लोगों, रीति-रिवाजों, परंपराओं, प्रकृति के विविध रूपों आदि में रुचि रखने वाला व्यक्ति एक अच्छा पर्यटक हो सकता है और एक अच्छा पर्यटक ही एक अच्छा यात्रा लेखक बन सकता है। इसके अतिरिक्त यह भी ज़रूरी है कि यात्रा आप जिस उद्देश्य से प्रेरित होकर कर रहे हैं, उसके लिए आपमें पर्याप्त क्षमता और योग्यता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए आप विज्ञान, पर्यावरण या इतिहास संबंधी किसी विशेष उद्देश्य से यात्रा कर रहे हैं तो आपको उसको समझने की योग्यता होनी चाहिए। पिछली इकाई में हमने अंडमान की यात्रा के कुछ अंश उद्धृत किये थे। अंडमान में कुछ आदिवासी जातियाँ भी रहती हैं। उन जातियों की जीवन पद्धति भिन्न तरह की है। लेकिन इस भिन्नता को हम सही परिप्रेक्ष्य में तभी समझ सकते हैं जब हमें आदिवासी लोगों के रहन-सहन और आचार-विचारों का पर्याप्त ज्ञान हो। उक्त यात्रावृत्त का ही एक अंश यहां उद्धृत कर रहे हैं। आप स्वयं देखेंगे कि लेखक यह बात तभी लिख सका जब उसे इसका पूर्व ज्ञान था।

> *तमाम आदिम समाजों का अपना एक विज्ञान और चिकित्सातंत्र रहा है, जो हमें भले ही जड़ी-बूटी, झाड़-फूंक और अंधविश्वासों पर आधारित जान पड़े, पर उसकी पद्धति उनके अपने परिवेश से उपजी हुई होती है और वह अवैज्ञानिक नहीं होता। मसलन, निर्वसन रहने वाले ओंगी लोग मच्छरों और ज़हरीली मक्खियों से बचने के लिए अपने शरीर पर सफेद मिट्टी का लेप करते हैं, जो उनकी काली त्वचा और तीखी धूप के बीच एक कवच का भी काम करता है। शहद निकालने से पहले वे कुछ खास पत्तियाँ खाते हैं जिससे मधुमक्खियों का डंक बेअसर हो जाता है। बुखार और दर्द से छुटकारा पाने के लिए शरीर पर लाल मिट्टी का लेप किया जाता है।*
>
> (आधुनिक और आदिम समाज, मंगलेश डबराल, जनसत्ता 6 मई, 1990)

इस तरह की बातें पाठकों को कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ भी देती हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि लेखक का सामान्य ज्ञान बहुत विस्तृत हो, यात्राओं में उसकी गहरी रुचि हो, जिस उद्देश्य से प्रेरित होकर वह यात्रा कर रहा है, उसके अनुरूप उसमें क्षमता हो।

13.3.2 यात्रा की प्रासंगिकता और महत्व

यात्रा लेखन एक ऐसा विषय है जिसके बारे में लोग हमेशा पढ़ने को उत्सुक रहते हैं फिर भी लेखक को यात्रा स्थल चुनते हुए उसके महत्व और प्रासंगिकता का ध्यान रखना चाहिए। अनजानी और अपरिचित जगहों के बारे में पढ़ने के लिए पाठक प्रायः उत्सुक रहते हैं। जैसे यूरोप, अमरीका की यात्राओं के बारे में बहुत कुछ छप चुका है लेकिन अफ्रीका, एशिया, दक्षिण अमरीका आदि महाद्वीपों के छोटे-छोटे देशों की यात्राओं के बारे में अगर पढ़ने को मिले तो पाठक उत्सुकता से पढ़ेंगे। वहां की प्रकृति, लोग, इतिहास, संस्कृति आदि के बारे में अगर कोई संस्मरणात्मक यात्रावृत्त छपता है तो बहुत से लोगों के लिए वह बिल्कुल एक नया अनुभव होगा। इसी प्रकार से ऐसे प्रदेशों (जैसे दक्षिण ध्रुव या सहारा का रेगिस्तान) के बारे में पढ़ना भी कम रोचक नहीं होता है जहां की जलवायु और वातावरण नितांत भिन्न प्रकार के होते हैं। यात्रा लेखन के लिए ऐसे विषय भी लिये जा सकते हैं जो चिरपरिचित स्थलों के भी कुछ नये पक्ष उभार सकें। जैसे केरल के जलमार्गों को केंद्र में रखकर केरल की यात्रा का वृत्तांत लिखा जा सकता है। प्रसिद्ध कथाकार काशीनाथ सिंह ने अपनी जापान यात्रा का संस्मरण नितांत भिन्न रूप में लिखा था। औद्योगिक प्रगति और संपन्नता के सर्वपरिचित रूप से बाहर निकालकर जापान की बिल्कुल भिन्न तस्वीर उन्होंने पेश की थी।

> *"यहां से थोड़ी दूर पर एक पार्क है।" ओसाका पहुंचने पर हिंदी कथाकार और ओसाका में विज़िटिंग प्रोफेसर भाई लक्ष्मीधर मालवीय बोले, "बंधु! मैं चाहता था, आप वहां से जापान देखें। उस पार्क में हर सुबह दिहाड़ी मज़दूरों की भीड़ लगती है। सुबह छह बजे के आसपास। वहां ठेकेदार आता है। बंधुवर, आपने भारत में कसाइयों को बकरे खरीदते हुए देखा होगा। जिस तरह कसाई बकरे की रानें, पुट्ठे, सीना, ठोक कर, दबा कर, उठा कर वज़न लेकर गोश्त की कीमत लगाता है। उसी तरह ठेकेदार अपनी ज़रूरत के मज़दूर चुनता है। उसकी पसलियों में उंगली कोंच कर, कंधे ठोक कर, हाथ के पंजे और कलाइयां मसल कर। ठेकेदार बूढ़े, अधेड़, सुकुमार, साफ़-सुथरे तुंदियल लोगों को अलग छांटता जाता है और वे काम के लिए चिचियाते हैं, गिड़गिड़ाते हैं, झगड़ा करते हैं, मरने-मारने पर उतारू हो जाते हैं .....*
>
> (हर जापानी परेशान चुप उदास है — काशीनाथ सिंह रविवार, 15-21 अगस्त 1982)

इसलिए महत्वपूर्ण यह है कि आप यात्रा के लिए कोई भी जगह चुनें परंतु उसे रोचक, प्रासंगिक और उद्देश्यपूर्ण बनाकर प्रस्तुत करें।

बोध प्रश्न

1) यात्रा लेखक में कौन-कौन सी योग्यता होनी चाहिए? तीन योग्यताओं का नामोल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

2) यात्रा-स्थल के चयन के कुछ प्रमुख आधार बताइए। उत्तर तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

3) यात्रा लेखन को किस प्रकार महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है? उत्तर तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

अभ्यास

1) हिमालय के किसी क्षेत्र की यात्रा पर यात्रा लेखन के लिए आप किस विषय को महत्वपूर्ण समझते हैं और क्यों? उत्तर पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) अपने शहर की बस यात्रा का कोई रोचक संस्मरण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

13.4 सामग्री का संकलन

यात्रा लेखन के लिए यह जरूरी है कि आप यात्रा से पूर्व कुछ आवश्यक तैयारी करें तथा यात्रा के दौरान कुछ आवश्यक चीज़ें साथ रखें। जहाँ की यात्रा आप करेंगे, उसके बारे में आपको पहले से आवश्यक अध्ययन कर लेना चाहिए। नोटबुक, डायरी, कैमरा आदि चीज़ें साथ रखनी चाहिए। इन्हीं के बारे में हम इस भाग में विचार विमर्श करेंगे।

13.4.1 यात्रा-पूर्व अध्ययन

आपने जो स्थल यात्रा के लिए चुना है उसके बारे में पहले से पर्याप्त जानकारी एकत्र कर लेनी चाहिए। उस जगह की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, वहाँ का इतिहास, लोगों का रहन-सहन, वेशभूषा, भाषा, रीति-रिवाज, धर्म आदि के बारे में अगर आपने पहले से पढ़ रखा है तो आपको वहां की स्थितियों को समझने में काफ़ी मदद मिलेगी। कई बार इस तरह के अध्ययन से उस जगह की एक ख़ास तस्वीर हमारे दिमाग में पहले से बन जाती है। हम उसी के अनुकूल बातें वहाँ देखने की आशा रखते हैं लेकिन ऐसा हो ही यह ज़रूरी नहीं है। आप नितांत भिन्न बातें भी वहां पा सकते हैं जिन्हें आप यही परिप्रेक्ष्य में तभी समझ पायेंगे जब आपको उस जगह के बारे में पहले से बहुत-सी बातें मालूम हों। एक उदाहरण लें। हिंदी कथाकार भीष्म साहनी कुछ वर्ष पूर्व वियतनाम गये। वियतनाम ने कड़े संघर्ष के बाद

विदेशी हमलावरों से मुक्ति पाई थी। छोटा-सा देश होते हुए भी वियतनाम ने अमरीका जैसे शक्तिशाली देश को भागने के लिए मजबूर कर दिया था। जब भीष्म साहनी वियतनाम गये तो उनके दिमाग में वहाँ के लोगों की एक तस्वीर पहले से बनी हुई थी, लेकिन जब उन्होंने वहां के लोगों को देखा तो वे बिल्कुल भिन्न नज़र आए। इससे उन्हें कई नई बातें समझने को मिलीं —

मैं कुछ ठगा-ठगा सा महसूस करने लगा हूँ। यह वह वियतनाम तो नहीं जिनकी मैंने कल्पना की थी। ख्याल था लोग सैनिकों जैसे चुस्त-दुरुस्त होंगे, जगह-जगह उस लंबे युद्ध के घाव देखने को मिलेंगे, जिसमें देशवासी जूझते रहे हैं, एक तरह की मुस्तैदी और तनाव और कर्मठता देखने को मिलेगी। मुट्ठियां भींच कर काम करने वाले लोग मिलेंगे। पर यहाँ तो सब अलसाया-अलसाया सा है। जैसे हम लोग छुट्टी मनाने के लिए किसी सैरगाह में चले आए हों, कहीं कोई टूटी हुई इमारत नहीं देखी, किसी ने रास्ता भर किसी युद्ध के स्मारक की ओर इशारा नहीं किया। लगता है जैसे वहाँ पर कभी युद्ध हुआ ही नहीं हो।

(वियतनाम की यात्रा — भीष्म साहनी, साक्षात्कार, जनवरी-फरवरी, 1983)

13.4.2 यात्रा की तैयारी

यात्रा लेखक को यात्रा पर जाने से पूर्व पर्याप्त अध्ययन तो करना ही चाहिए साथ ही, उसे यात्रा के दौरान भी होने वाले अनुभवों को लिपिबद्ध करने के लिए डायरी अवश्य पास में रखनी चाहिए। डायरी में प्रकृति सौंदर्य, भौगोलिक स्थिति, लोगों की भाषा, वेशभूषा, खानपान, व्यवहार, लोककलाएँ, क्षेत्र का इतिहास, वर्तमान आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक दशा, लोगों से बातचीत का विवरण आदि तारीख वार नोट करने चाहिए ताकि जब यात्रा वृत्तांत लिखने बैठें तब आपके पास पर्याप्त सामग्री हो यात्रा में किसी तरह की कठिनाई न आए इसलिए यात्रा-मार्ग का नक्शा भी पास में होना चाहिए। यात्रा लेखन का महत्वपूर्ण अंग है छायाचित्र। इसके लिए आपके पास अच्छा कैमरा होना चाहिए जिसका बेहतरीन संचालन करना आना चाहिए। अगर कोई पेशेवर फोटोग्राफर आपका सहयात्री हो तो और भी अच्छा। पहाड़ या ठंडे प्रदेशों के लिए पर्याप्त गर्म कपड़े साथ में हों। आवश्यक दवाई भी रखें। लेकिन यह अवश्य ध्यान रखिए कि आपके पास इतना बोझ न हो जाए कि आपके लिए उसे उठाकर चलना मुश्किल हो जाए। अगर आप किसी ऐसे क्षेत्र की यात्रा कर रहे हैं जहाँ की भाषा आप न जानते हों तो आपको दुभाषिए की सहायता लेना चाहिए। ये कुछ आवश्यक बातें हैं जो आपको यात्रा आरंभ करने से पूर्व अवश्य ध्यान रखनी चाहिए।

13.4.3 तथ्यों का संकलन

यात्रा के दौरान आप अपनी डायरी में प्रत्येक दिन का पूर्ण विवरण नोट करें। विवरण नोट करते समय केंद्र में तो अपने उद्देश्य को रखिए परंतु यह भी ध्यान रखिए कि कोई महत्वपूर्ण बात छूट न जाए। यात्रा के दौरान आपको कई ऐसे अनुभव हो सकते हैं तो बहुत मामूली से लगते हों परंतु जिनका अर्थ महत्वपूर्ण हो। आमतौर पर एक अच्छा यात्रा लेखन वही माना जाता है जिसमें उस क्षेत्र के बारे में विविध तरह की सूचनाएँ भी दी गई हों। अंडमान से संबंधित जिस यात्रा वृतांत को हमने उद्धृत किया है उसमें लेखक ने अंडमान की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, प्रकृति सौंदर्य, इतिहास, वहां के आदिवासी, उनकी संस्कृति, वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक दशा आदि के बारे में भी लेखक बहुत सी बातें बताता है। इससे वह वृत्तांत हर दृष्टि से परिपूर्ण हो गया है। ये बातें हम तभी लिख सकते हैं जब हम यात्रा से पूर्व इनके बारे में अध्ययन करें और यात्रा के दौरान प्राप्त जानकारियों को लिपिबद्ध करते रहें।

13.4.4 अन्य सामग्री

यात्रा के दौरान लिये गये छायाचित्रों का अपना महत्व है। यात्रा के दौरान पड़ने वाले खूबसूरत स्थलों के चित्र लेने चाहिए। लोगों के चित्र जिनसे उनके रहन-सहन आदि का पता चल सके। ऐतिहासिक स्मारकों के चित्र तथा यात्रा लेखन के उद्देश्य पर प्रकाश डालने वाले पक्ष को उभारने वाले चित्र लिए जा सकते हैं। चित्र स्पष्ट और सुंदर हों तथा ऐसे कोण से खींचे जाएँ जो चित्र की सुंदरता को बढ़ाने वाला हो। यात्रा लेखन के साथ छायाचित्र का उपयोग बहुत सोच समझकर करना चाहिए। वह ऐसा होना चाहिए जिससे यात्रा वृतांत की सुंदरता और मूल्यवत्ता दोनों बढ़े। फोटो के अलावा कोई अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज़ आदि की फोटो प्रतिलिपि भी दी जा सकती है।

13.5 सामग्री का संयोजन एवं संपादन

यात्रा से पूर्व किये गये अध्ययन और यात्रा के दौरान लिये गये नोट, एकत्र की गई अन्य सामग्री के आधार पर आप अपनी यात्रा का वृत्तांत लिखिए। इसके लिए ज़रूरी है कि आप अपनी सामग्री का ठीक से अध्ययन करें और यात्रा लेखन की एक रूपरेखा बना लें। उसी के अनुसार अपना लेखन आरंभ करें। यात्रा लेखन में केवल तथ्यों का विवरण होगा तो वह कभी प्रभावशाली नहीं बनेगा। इसके लिए जरूरी है कि आप अपने विवरण को रोचक बनाएँ। एक तरीका तो यह है कि आप बस यह बताते रहें कि हम पहले अमुक जगह गये, फिर वहां से दूसरी अमुक जगह गये। वहाँ यह-यह देखा और इस तरह घूमते-घूमते हमने अपनी यात्रा समाप्त की। यात्रा की ऐसी विवरणिका कोई नहीं पढ़ना चाहेगा। लोग कुछ ऐसा जानना चाहते हैं जिसमें जीवन की धड़कनें हों, पढ़ते हुए पाठक को स्वयं ऐसा महसूस हो

जैसे वह खुद यात्रा कर रहा है। यात्रा के दौरान जो कुछ भी आपने अनुभव किया उसको कागज़ पर उतारते हुए स्वयं आपका व्यक्तित्व उसमें अभिव्यक्त होना चाहिए। यात्रा लेखन में तटस्थता और नीरसता से वर्णन शुष्क हो जाता है। यात्रा के रोचक वर्णन का एक उदाहरण देखिए —

सुंदरनगर एक प्रशस्त घाटी है चारों ओर पहाड़ों से घिरी। कई किलोमीटर का यह इलाका अपना ही इलाका लगता है। अपनी ही तरफ जैसे खेत, खलिहान, मकान, मैदान। कुछ फसलें कट चुकी हैं, कुछ कटने के लिए तैयार। कुछ खेत जुते हैं, कुछ जुतने के लिए तैयार। यह मिट्टी की महिमा है। वह जहां भी होती है बीज को धारण करती है। जन्म देती है वनस्पतियों को। हरियाली को विकसित करती है। धरित्री है वह। आनन्दा है। अन्नपूर्णा है। धरती मां का यह अन्नपूर्णा रूप शिखरों से ज्यादा खूबसूरत होता है जैसे स्त्री शरीर पुरुष शरीर से। यह मिट्टी जहां भी होगी धूल होगी वहां, कीचड़ होगी, गंदगी होगी लेकिन वहीं से फूटेंगे जीवन के अंकुए।"

(जो बह रही है जिजीविषा की तरह — विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साक्षात्कार, जनवरी-फरवरी, 1987)

बोध प्रश्न

4) यात्रा आरंभ करने के पूर्व अध्ययन करने से क्या लाभ है? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

5) यात्रा के दौरान लेखन में सहायक कौन-कौन सी सामग्री पास में रखनी चाहिए और क्यों?

.....

.....

.....

.....

.....

6) यात्रा लेखन के साथ छपा चित्र देने के लाभ बताइए।

.....

.....

.....

अभ्यास

3) कुल्लु-मनाली (हिमाचल प्रदेश के पर्यटन स्थल) की यात्रा के लिए अपनी तैयारी का विवरण तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) इस यात्रा के दौरान आप क्या-क्या बातें अपनी डायरी में नोट करना चाहेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

13.6 यात्रा लेखन की प्रस्तुति

यात्रा लेखन का उद्देश्य क्या है इसी से यह तय होगा कि यात्रा लेखन का स्वरूप क्या हो। अगर व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन करना चाहते हैं तो आपके लेखन का स्वरूप भिन्न होगा। वहां सूचनाओं का महत्व होगा साथ ही पर्यटकों को

आकृष्ट करने वाली बातें ही केंद्र में रहेंगी। सूचनापरक यात्रा लेखन का उद्देश्य पर्यटन स्थलों के बारे में पाठकों का ज्ञानवर्द्धन करना तथा साथ ही यात्रा के रोमांच और आनंद में पाठकों को भागीदार बनाना होता है इसलिए उसका लेखन भी अलग ढंग का होगा। विशिष्ट और साहित्यिक यात्रा लेखन भी अलग-अलग शैलियों में प्रस्तुत होंगे। आइए इन सब पर विचार करें।

13.6.1 आरंभ

व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन में सूचनाओं का केंद्रीय महत्व होता है लेकिन वे सूचनाएँ जो पर्यटकों को यात्रा में सहायता करें। यहां लेखन एक तरह से गाइड का काम करता है जो आपको पर्यटन स्थल के बारे में रोचक बातें बताकर आपका उत्साहवर्द्धन करता है। वह कोई नकारात्मक बात नहीं बताता। व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन में भी उद्देश्य पर्यटकों की सहायता करना होता है। वहां संक्षेप में सारी सामग्री प्रस्तुत करनी होती है, इसलिए लेखक को आरंभ में ही अपनी बात सीधे ढंग से रख देनी होती है।

सूचनापरक यात्रा लेखन का आरंभ भी सूचनाओं के साथ किया जा सकता है। आमतौर पर इस तरह के यात्रा वृत्तांत पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखे जाते हैं। इनमें आप आरंभ में यात्रा के आरंभ से ही शुरू कर सकते हैं —

मद्रास से करीब डेढ़ सौ किलोमीटर दूर फ्रांसीसी संस्कृति का केंद्र रही पांडिचेरी जाने का एक रास्ता पल्लव साम्राज्य के प्राचीन अवशेषों के किनारे से भी जाता है। समुद्र तट-से लगे सर्पिल रास्ते से गुज़रते हुए पल्लव साम्राज्य का बंदरगाह और द्रविड़ शैली के मंदिरों की बुनियाद माना जाने लगा। "महाबलीपुरम" यात्रियों के लिए पहला पड़ाव है।

(समुद्र तट पर शिल्प का एक नगर — अंबरीष कुमार, जनसत्ता, 2 सितंबर 1990)

कभी-कभी यात्रा लेखन का आरंभ पर्यटन स्थल के परिचय से भी दिया जाता है और यात्रा के आरंभ का विवरण उसके बाद प्रस्तुत होता है :

भारत की मुख्य भूमि के दक्षिण-पश्चिम कोने पर स्थित छोटे से राज्य केरल में प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत खज़ाना है। 38.863 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले इस प्रदेश को तीन भागों—उच्च भूमि, मध्य भूमि और निचली भूमि में बांटा जा सकता है।

इस छोटे प्रदेश की जनसंख्या 1981 की जनगणना के अनुसार दो करोड़ 54 लाख, 680 है। आबादी के घनत्व के हिसाब से यह 655 बैठता है अर्थात् प्रत्येक किलोमीटर पर सर्वाधिक लोग। इतनी आबादी के बावजूद यह प्रांत धरती पर स्वर्ग-सा लगता है, तो सिर्फ इसलिए कि प्रकृति ने यहां खुले हाथों से सुंदरता लुटाई है।

(हरियाली सिर्फ हरियाली केरल का पर्याय है — निशा श्रीवास्तव, नवभारत टाइम्स, 2 दिसम्बर, 1990)

यात्रा के आरंभ का पहला उदाहरण आप देखेंगे कि सीधे-सादे ढंग से पेश किया गया है लेकिन जब साहित्यकार यात्रा वृत्तांत आरंभ करता है तो उसकी प्रस्तुति में कलात्मकता स्वतः ही आ जाती है —

हवाई जहाज़ वियतनाम की ओर बढ़ रहा है। खिड़की के बाहर आकाश का असीम प्रसार, नीचे तैरते घुमड़ते बादल, कुछ भी कह पाना कठिन है कि हम कहाँ पर हैं किस देश की धरती के ऊपर से उड़ते जा रहे हैं।

(वियतनाम की यात्रा, भीष्म साहनी)

साहित्यकार अपने यात्रा वृतांत के लिए कई तरह की शैलियाँ अपनाता है, जिनमें से कुछ का परिचय हमने पिछली इकाई में दिया था। निम्नलिखित यात्रावृतांत को पत्र-शैली में लिखा गया है —

मनाली (हिमाचल प्रदेश)
16.10.1985

प्रिय चितरंजन जी,

जिस स्थान से आपको यह चिट्ठी लिख रहा हूँ वह भारत के सुंदरतम पर्वत स्थानों में से एक है। हमारे यहाँ "पहाड़ों की रानी" के नाम से कई स्थान मशहूर हैं जैसे मसूरी या नैनीताल या रानीखेत आदि। लेकिन मनाली को मैं "पहाड़ों की राजकुमारी" कहना चाहूँगा। हिमालय कन्या "विपाशा" बह रही है मेरे सामने। मेरे साथ। नहीं, मुझमें होकर बहर रही है ... नहीं मुझको छोड़कर बह रही है। धड़कती, खिलखिलाती भागी जा रही है समय की तरह ... अनंत की ओर ...

(जो बह रही है जिजीविषा की तरह
— विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साक्षात्कार, जनवरी-फरवरी, 1987)

कभी-कभी यात्रा लेखन का आरंभ किसी लेखक, कलाकार या महान व्यक्ति के उद्धरण से भी किया जाता है, कभी किसी सहयात्री के साथ बातचीत द्वारा विशिष्ट उद्देश्य से प्रेरित लेखन का आरंभ विषय के परिचय से किया जा सकता है —

ट्रैकिंग-आज से छह साल पहले तक यह शब्द भारतीय परंपरा और भारतीय परिवेश के लिए बिल्कुल नया था। लेकिन आज परंपरागत पर्यटन (अर्थात् साइट सीईंग) से हटकर साहसिक और रोमांचक किस्म के पर्यटन

के प्रति भारतीयों की बढ़ती रुचि ने बड़े ही कम समय देश के कोने-कोने में ट्रैकिंग को बेहद लोकप्रिय बना दिया है। गर्मियाँ आई नहीं कि हज़ारों की तादाद में युवक-युवतियाँ, बच्चे तथा बुजुर्ग पीठ पर "रकसैक" (ट्रैकिंग के लिए सामान ले जाने वाला एक खास थैला) लाद कर हज़ारों फुट ऊँचे पहाड़ों पर कूच करने लगते हैं — ट्रैकिंग के लिए।

(भुलाए नहीं भूलते वे मधुर रोमांचक क्षण
— जगजीत सिंह, नवभारत टाइम्स, 20 अप्रैल, 1991)

यात्रा वृत्तांत का आरंभिक अंश आप किसी भी रूप में शुरू कर सकते हैं परंतु यह अवश्य ध्यान रखिए कि आपके लेखन का आरंभ सूचनाप्रद और रोचक हो।

13.6.2 मध्य

यात्रा लेखन का आरंभ आप चाहे जिस शैली में करें आमतौर पर उसमें यात्रा के आरंभ का वर्णन होगा या फिर यात्रा स्थल से संबंधित कोई महत्वपूर्ण जानकारी। केवल साहित्यिक यात्रा वृत्तांत में ही आरंभिक अंश भिन्न-भिन्न तरह के होते हैं। लेकिन यात्रा लेखन के मध्य भाग में तो यात्रा के विवरण को ही प्रस्तुत किया जाता है। यह विवरण दो ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं। एक तरीका तो यह है कि आप यात्रा के क्रम से विवरण दें यानी यात्रा के आरंभ से अंत तक तारीखवार विवरण प्रस्तुत करते जाएँ यानी आपने यात्रा का आरंभ कैसे किया, फिर कहाँ गये, उसके बाद कहाँ और अंत में यात्रा की समाप्ति कैसे हुई। इस तरीके को आप सामान्य विवरणात्मक ढंग से, डायरी या पत्र शैली में भी प्रस्तुत कर सकते हैं। एक उदाहरण देखिए —

पहली नवंबर की शाम और जापान की धरती। हवाई अड्डे से कावासाकी के लिए रवाना होते समय श्री शिगेओ आरीकि ने कार में कहा, बरे (बड़े) भाई! भारत से जो भी आते हैं, भारतीयों को ढूँढ़ते हैं ... वातानुकूलित कार तेज़ी से भाग रही है। मैं खिड़कियों से अंधेरे में धरती पेड़, पहाड़, इमारतें देखने की कोशिश कर रहा हूँ। ...

यह नवंबर की दूसरी तारीख़ थी। तरीता हवाई अड्डे से "हीया प्लाज़ा होटल" तीन घंटे का रास्ता। सड़क के दोनों और दूर-दूर तक कोई आदमी नहीं। ...

रात भर महिला की बातें मेरे कानों में गूंजती रहीं। एक दिन बाद (4 नवंबर) कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन, जिसमें मुझे, फ्रैज़ अहमद फ्रैज़ (पाकिस्तान) और गूगी वा थियांग ओ (अफ्रीका) को "जन संस्कृतियों की सहखोज" पर भाषण देना था। ...

(हर जापानी परेशान चुप उदास है, काशीनाथ सिंह,
रविवार, 15—21 अगस्त 1982)

इससे भिन्न तरीका यह है कि आप पर्यटन स्थल के संबंध में एक-एक पक्ष के बारे में बताते चले जाएँ। जैसे वहां के इतिहास, संस्कृति, राजनीति, विकास आदि का विवरण प्रस्तुत करें। अंडमान से संबंधित यात्रा वृत्तांत इसी ढंग से लिखा गया है। लेखक ने आरंभ में अंडमान का भौगोलिक विवरण प्रस्तुत किया है, फिर उन द्वीपों का इतिहास, इसके बाद लेखक अंडमान द्वीप समूह के वर्तमान में प्रवेश करता है और वहां के लोगों और उनसे जुड़े विभिन्न पक्षों के बारे में रोचक ढंग से बताता चलता है।

इन दोनों तरीकों से भिन्न संस्मरणात्मक शैली का तरीका है जहां रचनाकार यात्रा के किसी एक पक्ष को उठाकर संस्मरण रूप में विवरण प्रस्तुत करता है। महादेवी वर्मा का "पर्वत पुत्र" यात्रा वृत्तांत या निर्मल वर्मा का "अंग्रेज़ों की खोज में" या श्रीकांत वर्मा का "मानवीय स्वतंत्रता की तलाश" इसी तरह के यात्रा वृत्तांत हैं।

अगर मैं लंदन में न आता, उसके साथ एक शहर में न रहता, तो शायद इन सब पहेलियों के बारे में कभी न सोचता। शायद इसमें मैं अकेला नहीं हूं। दूसरे भारतीय प्रवासी भी अपने-अपने ढंग से इसके बारे में सोचते हैं। इसका अनुभव कुछ दिन पहले हुआ जब एक भारतीय मित्र ने मुझे बताया कि लंदन आकर उन्होंने सबसे पहला काम जो किया, वह अपने जूते एक अंग्रेज़ मोची से साफ़ करवाना था। उनके लिए यह काफ़ी प्रीतिकर अनुभव था। मैं उनके संतोष और सुख को समझ सकता हूँ, क्यों जब तक "साहिब" मोची उनके जूतों पर पालिश करता रहा काफ़ी खुले और मुक्त भाव से उनके साथ बातचीत करता रहा। संभव है मेरे इस मित्र की हरकत के पीछे "बदला चुकाने की हास्यास्पद भावना रही हो, किंतु अंग्रेज़ मोची और हिंदुस्तानी जूते का दो मिनट का यह संबंध उन दो सौ वर्षों के "दफ्तरी संबंध से मुझे कहीं अधिक मानवीय और सहज जान पड़ा, जो अंग्रेज़ों और भारतवासियों के बीच रहा था।

(अंग्रेज़ों की खोज में — निर्मल वर्मा)

मध्य भाग को आप चाहे जिस शैली में लिखें परंतु वह हो रोचक और पठनीय। शुष्क सूचनाएँ और रेलवे टाइम टेबिल की तरह विवरण यात्रा वृत्तांत को अपठनीय और उबाऊ बना देता है। इससे हमेशा बचना चाहिए।

13.6.3 अंत एवं शीर्षक

यात्रा वृत्तांत के आरंभ की तरह उसका अंतिम भाग भी रोचक होना चाहिए। अगर यात्रा का तारीखवार विवरण दे रहे हैं तब तो अंतिम भाग में यात्रा की समाप्ति का उल्लेख किया जा सकता है। अंतिम भाग में यात्रा के कुल प्रभाव या यात्रा के अनुभव का निचोड़ या कोई अन्य महत्वपूर्ण बात प्रस्तुत की जा सकती है।

यात्रा के अंतिम चरण के वर्णन के साथ लेखन की समाप्ति

बहरहाल, स्लाइडिंग करते और सावधानी से बर्फ़ पर पाँव रखते हुए करीब डेढ़ बजे जब हमने सरपॉस पर कदम रखा, तो मंज़िल पा लेने की खुशी में किसी के मुंह से यूरेका (पा लिया) निकला, तो किसी के मुंह से "वी फॉर विक्टरी" शब्द निकले। सरपॉस पहुंच कर सभी ट्रैकर्स ने एक-दूसरे को बड़ी गर्मजोशी के साथ बधाई दी। किसी के पास मीठी गोलियाँ बची थी, सो उसने उन्हीं से दूसरों का मुंह मीठा करा दिया। खासकर बंबई से आई बेला तो इस मौके पर बहुत ही भाव विह्वल हो उठी थी। क्योंकि उसे खुद यकीन नहीं आ रहा था कि शुरू से ही ट्रैकिंग को कठिन और असंभव मानने के बावजूद वह इतनी ऊंचाई तक कैसे पहुंच गई। मगर वह अंततः पहुँची और यह उसकी हिम्मत, दृढ़ शक्ति तथा साथी ट्रैकर्स की सहयोग की भावना के कारण संभव हो पाया था।

(भुलाए नहीं भूलते वे मधुर रोमांचक क्षण, पूर्ववत)

यात्रा के प्रभाव का निचोड़

आधुनिक मनुष्य की तरह संचय करना और संपत्ति जोड़ना और व्यापार करना उन्होंने नहीं सीखा। तब सवाल उठता है कि सभ्य कौन है? सभ्यता का दावा करने वाला हमारा समाज या प्रकृति के साथ पूरे सामंजस्य से रह रही ये जातियां? पोर्ट ब्लेयर के एक मानवशास्त्री ए ऑस्टिन एक बुनियादी सवाल उठाते हैं कि सभ्यता क्या है। क्या खेती करना, पशु पालना, अपनी भाषा की लिपि तैयार करना, कपड़े और जूते पहनना ही सभ्यता है? क्या सभ्यता की परिभाषा नये सिरे से नहीं की जानी चाहिए।

("आधुनिक और आदिम समाज" — अंडमान पर मंगलेश डबराल का यात्रा वृत्तांत, जनसत्ता, 6 मई 1990)

यात्रा की तरह रोचक होना चाहिए यात्रा-लेखन का शीर्षक। यात्रा लेखन के शीर्षक बहुत सामान्य किस्म के भी हो सकते हैं जैसे "वियतनाम की यात्रा" या "आधुनिक और आदिम समाज"। ये शीर्षक सूचनात्मक और स्पष्ट हैं। कुछ सांकेतिक शीर्षक भी दिये जा सकते हैं जैसे "समुद्र में एक सभ्यता" या "नीलगिरि की खुशबू में नीला कैनवास।" पूरी तरह से प्रभावात्मक शीर्षक भी हो सकते हैं जैसे "भुलाए नहीं भूलते वे मधुर रोमांचक क्षण या "जो बह रही है जिजीविषा की तरह।" लेखक साहित्यकार वैचारिक किस्म के शीर्षक भी देते हैं जैसे "अंग्रेजों की खोज में" या "मानवीय स्वतंत्रता की तलाश" या "मध्य रात्रि का सूर्य" आदि। शीर्षक जो भी दें वह अर्थपूर्ण एवं प्रभावशाली हो। बहुत अधिक लंबे शीर्षक उपयुक्त नहीं होते।

13.7 भाषा एवं शैली

यात्रा लेखन की विभिन्न शैलियों का परिचय हम इकाई 12 में दे चुके हैं। उदाहरणों द्वारा हम उनकी विशेषताएँ भी समझा चुके हैं। आप उनमें से कोई भी शैली अपना सकते हैं या कोई अन्य शैली भी अपना सकते हैं जिसे आप लेखन के लिए उपयुक्त पाते हों। जहाँ तक भाषा का प्रश्न है व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन की भाषा अधिक अलंकारिक हो सकती है जबकि सूचनापरक यात्रा लेखन की भाषा वर्णनात्मक। परंतु दोनों में ही सरसता और सहजता अवश्य होनी चाहिए। साहित्यिक यात्रा वृत्तांत में भाषा संबंधी प्रयोग की गुंजाइश अधिक होती है। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले यात्रा लेखन की भाषा के भी कई रूप मिलते हैं। बहुत सामान्य किस्म की वर्णनात्मक भाषा का एक उदाहरण देखिए —

समुद्र के किनारे तक कैशुरीना के जंगल नज़र आते हैं। हालांकि यह जंगल पर्यटन विभाग ने खड़े किये हैं। कैशुरीना के दो-दो पेड़ों के बीच प्लास्टिक के जाली वाले लंबे-लंबे झूले डाले गये हैं। जिन पर बच्चों और जोड़ों को हर समय देखा जा सकता है। एक तरफ परंपरागत नाव खड़ी है तो दूसरी तरफ शिव मंदिर या तट मंदिर तक कुकुरमुत्ते की शक्ल में छोटी-छोटी झोपड़ियाँ बनाई गई हैं।

इससे भिन्न और अधिक प्रभावशाली भाषा निम्नलिखित उद्धरण में है, यद्यपि यह भी सूचनापरक यात्रा वृत्तांत का अंश है —

समुद्र स्नान में आपकी दिलचस्पी न हो, तो गीली रेत पर ही बैठिए, समुद्र की लहरों का आनंद लीजिए, लहरें गिनिए और बार-बार बनाइए व तोड़िए रेत के महल। अगर इससे भी दिल भर गया हो, तो आगे तक चहलकदमी करते निकल जाइए। सामने यात्री और बीच समुद्र में एक काली चट्टान है, जिस पर कुछ विदेशी, कुछ भारतीय कपड़े सुखाते-बतियाते, परिचय लेते-देते मिलेंगे। इधर बाईं ओर कुछ विदेशी किनारे रेत पर बैठे शतरंज खेलने में या "नावेल" पढ़ने में तल्लीन दिखाई देंगे।

आप स्वयं अनुभव करेंगे कि उपर्युक्त दोनों अंशों में से दूसरे अंश की भाषा में अधिक प्रभावोत्पादकता है। यहां वर्णन में लेखक ने पाठकों से संवाद स्थापित करने की कोशिश की है। निर्लिप्त वर्णन की बजाए आत्मीय संवाद के कारण यह अंश अधिक रोचक बन पड़ा है। अगर भाषा के स्तर को इससे भी ऊपर उठा दिया जाए और उसमें साहित्यिक

कलात्मकता लाई जा सके तो आपका यात्रा लेखन सर्जनात्मकता से पूर्ण हो जाएगा। पूर्व उद्धृत महादेवी वर्मा, भीष्म साहनी, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, काशीनाथ सिंह, निर्मल वर्मा आदि के यात्रा वृत्तांतों के अंशों को पढ़ने से आपको भाषा की उस ऊंचाई का आभास हो जाएगा। इस स्तर के यात्रा वृत्तांत आवश्यक नहीं कि भावात्मक या अलंकारिक हों। महत्वपूर्ण होता है वस्तुओं को देखने का उनका नज़रिया। वे यात्रा के दौरान होने वाले अनुभवों के आंतरिक अर्थ तक पहुँचते हैं और उसे पाठकों तक भी पहुँचाते हैं। साहित्यकार यात्रा के दौरान निर्जीव इमारतों या प्रकृति के सौंदर्य तक ही अपने को सीमित नहीं रखते वरन् वहां के लोगों के जीवन में भी गहरी दिलचस्पी लेते हैं और उनसे बातचीत द्वारा, उनसे संपर्क बढ़ाकर वे अपनी यात्रा को मनुष्य-मनुष्य के बीच रिश्ते का वाहक बनाते हैं। अपनी भाषा शक्ति द्वारा वे इस पहलू को भी पाठकों के समक्ष उजागर करते हैं। यात्रा लेखक की भाषा तभी रोचक बनती है जब भाषा यात्रा को चल-चित्र की तरह हमारे सामने पेश कर दे। पढ़ते हुए ऐसा लगे जैसे हम स्वयं अपनी आँखों से एक-एक दृश्य देख रहे हैं।

बोध प्रश्न

7) यात्रा लेखन के आरंभिक अंश को लिखने की कुछ प्रमुख विधियों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8) यात्रा लेखन के मध्य भाग में विवरण देने की दो प्रमुख विधियों का नामोल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

9) सूचनात्मक यात्रा वृत्तांत की भाषा में क्या-क्या विशेषताएँ होनी चाहिए?

.....

.....

.....

10) यात्रा लेखन का अंतिम भाग समाप्त करने का सबसे उचित तरीका आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

5) नीचे दो यात्रा लेखों के दो अंश दिये गये हैं, बताइए कि उक्त यात्रा लेख किस श्रेणी में आयेंगे और क्यों?

क) कोवलम तट पर पहुँच कर ही पता चलता है कि महानगरीय शहर और तट के बीच कितना बड़ा फर्क है। कहाँ तो सिर्फ 15 किलोमीटर दूर ही त्रिवेंद्रम शहर की भागमभाग की ज़िंदगी और पसीना निकाल देने वाली चिलचिलाती धूप और कहाँ नीले पानी, नर्म मुलायम रेत, शीतल छाया और हवा वाला ये तट। इस पर कहीं सात समुद्र पार से इस एक समुदर तट पर नर्म, मुलायम रेत पर धूप स्नान का आनंद लेते विदेशी सेलानी नज़र आएँगे, तो कहीं कुछ समुद्र की गिरती, उठती तेज़ लहरों के बीच समुद्र स्नान करते हुए दिखाई देंगे और दूर कहीं रोमांचक पर्यटन के शौकीन रंग-बिरंगी पाल नौका के साथ समुद्र के थपेड़ों से टक्कर लेते हुए दिखेंगे।

ख) हनुमान चट्टी से पाँच-छह मील की जो दुर्गम और विकट चढ़ाई आरंभ हुई थी, उसका अंत एक ओर नर और दूसरी ओर नारायण नाम के पर्वतों तथा उनकी असंख्य श्रेणियों से घिरी हुई समतल भूमि में हुआ। श्वेत कमल की पंखुरियों के समान लगने वाले पर्वतों के बीच में निरंतर कल-कल नादिनी अलकनंदा के तीर पर बसी हुई वह पुरी, हिमालय के हृदय में छिपी हुई इच्छा के समान जान पड़ी। वृक्ष, फूल और पत्तों का कहीं चिह्न भी नहीं था। जहाँ तक दृष्टि जाती थी निस्पंद समाधि में मग्न तपस्वनी जैसी आडंबरहीन सूनी पृथ्वी ही दिखाई देती

थी। और उतने ही निश्चल तथा उज्ज्वल हिमालय के शिखर ऐसे लगते हैं मानों किसी शरद् पूर्णिमा की रात्रि में पहरा देते-देते, चांदनी समेत जम कर जड़ हो गये हों।

.....

.....

.....

.....

.....

) उक्त दोनों की भाषा-शैली की विशेषताओं की तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

13.8 सारांश

- इस इकाई में आपने यात्रा लेखन के व्यवहारिक पक्ष का अध्ययन किया है। एक अच्छे यात्रा लेखक में क्या-क्या योग्यता होनी चाहिए इसके बारे में बताया गया है। यात्रा लेखक को अध्ययनशील होना चाहिए, उसमें यात्रा के प्रति गहरी रुचि, सूक्ष्म अवलोकन दृष्टि, अपरिचित लोगों से संपर्क बढ़ाने की क्षमता, तीव्र स्मरण शक्ति होनी चाहिए।

- यात्रा के उद्देश्य, महत्व और आपकी रुचि के अनुरूप ही यात्रा स्थल का चयन करना चाहिए। यात्रा आरंभ करने से पूर्व गंतव्य स्थल और उससे जुड़े क्षेत्र के बारे में पर्याप्त अध्ययन कर लेना चाहिए। यात्रा के दौरान नोट बुक पास में रखनी चाहिए ताकि यात्रा से प्रत्येक दिन का विवरण उसमें नोट किया जा सके। साथ में एक अच्छा कैमरा भी रखना चाहिए ताकि यात्रा के खूबसूरत दृश्यों को कैमरे में कैद करके उन्हें यात्रा लेख के साथ प्रस्तुत किया जा सके। यात्रा के दौरान ज्यादा से ज्यादा सूचनाओं को संकलित किया जा सके। इन सबको ध्यान में रखते हुए लेखन से पूर्व एक रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

- यात्रा लेखन के उद्देश्य के अनुसार शैली अपनाकर यात्रा वृत का लेखन आरंभ करना चाहिए। आरंभ में यात्रा का उद्देश्य या महत्व प्रस्तुत किया जा सकता है या यात्रा के आरंभ का अनुभव प्रस्तुत किया जा सकता है। मध्य भाग में यात्रा का रोचक वर्णन तारीखवार प्रस्तुत किया जा सकता है। यात्रा के इस भाग को विभिन्न पक्षों जैसे भौगोलिक स्थिति, प्रकृति, इतिहास आदि के रूप में भी पेश कर सकते हैं। अंतिम भाग में यात्रा की समाप्ति, यात्रा का प्रभाव या यात्रा के अनुभवों का निचोड़ प्रस्तुत करना चाहिए। शीर्षक यात्रा के किसी खास पहलू को उजागर करने वाला भी हो सकता है या पर्यटन स्थल के सौंदर्य पक्ष को उजागर करने वाला भी हो सकता है।

- यात्रा लेखन की शैली उद्देश्य के अनुसार वर्णनात्मक, संस्मरणात्मक, डायरी, पत्र आदि में से कोई भी शैली अपना सकते हैं। भाषा रोचक, सरल और यात्रा के दृश्यों को सुंदर चित्र की तरह स्पष्ट उभारने वाली हो। इस इकाई को पढ़कर आप अपना लेखन कौशल बढ़ा सकेंगे।

13.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

10) i) सूक्ष्म अवलोकन दृष्टि

ii) अपरिचितों से संपर्क बढ़ाने की क्षमता

iii) तीव्र स्मरण शक्ति।

2) i) विशिष्ट उद्देश्य जैसे ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, पर्यावरणीय अध्ययन के अनुरूप

ii) साहसिक एवं रोमांचकारी यात्रा के अनुरूप

iii) प्राकृतिक सौंदर्य के लिए

iv) ग्रीष्म काल बिताने आदि के लिए

v) ऐतिहासिक स्मारकों को देखने के लिए।

3) यात्रा लेखन का वर्णन इस ढंग से करना चाहिए कि पर्यटन स्थल के बारे में पाठकों का ज्ञान बढ़े। उनकी सौंदर्य दृष्टि विकसित हो, उन्हें यात्रा जैसा आनंद मिले या रोमांच का अनुभव हो।

4) देखिए उपभाग 13.4.1

5) नोट बुक एवं कैमरा अवश्य पास में रखना चाहिए। इनके अतिरिक्त यात्रा स्थल की जलवायु के अनुरूप सामान रखना चाहिए। बहुत अधिक बोझ यात्रा के लिए बेहतर नहीं है। कुछ जरूरी दवाइयाँ भी पास में होनी चाहिए। अपरिचित भाषा-क्षेत्र में दुभाषिया भी साथ में होना चाहिए।

6) i) इससे यात्रा लेख का महत्व बढ़ जाता है।

ii) लोग यात्रा स्थल के सौंदर्य का अनुमान लगा सकते हैं।

iii) लोगों की वेशभूषा, कला आदि का भी परिचय मिलता है।

7) देखिए उपभाग 13.6.1

8) देखिए उपभाग 13.6.2

9) देखिए भाग 13.7

10) सूचनापरक यात्रा लेखन में यात्रा से प्राप्त उपलब्धि या अनुभव का निचोड़ प्रस्तुत करना उत्तम तरीका है।

अभ्यास

1) हिमालय की यात्रा प्रकृति-सौंदर्य या पर्यावरणीय दृष्टि से की जा सकती है। इन दोनों उद्देश्यों को आपस में जोड़ा भी जा सकता है। पेड़ों के बड़े पैमाने पर काटे जाने से हिमालय के सौंदर्य पर बहुत बुरा असर पड़ा है। जलवायु में भी तबदीली आई है। इन बातों को केंद्र में रखकर अच्छा यात्रा वृत्तांत लिखा जा सकता है।

2) अगर आप दिल्ली, बंबई, कलकत्ता या अन्य किसी बड़े शहर के रहने वाले हैं तो स्थानीय बस सर्विस की कठिनाइयों से अवश्य परिचित होंगे। भीड़भाड़, धक्कामुक्की, घंटों इंतज़ार, बस की दुर्दशा आदि को ध्यान में रखकर आप एक छोटा यात्रा संस्मरण लिख सकते हैं। इसके लिए आप अपनी कल्पना शक्ति का भी उपयोग कीजिए।

3) यात्रा के लिए सामान्य तैयारी के अतिरिक्त पहाड़ी यात्रा के लिए अनावश्यक सामान साथ रखना चाहिए। लेकिन अधिक बोझ पहाड़ की यात्रा में परेशानी का बड़ा कारण बन जाता है।

4) i) प्रकृति सौंदर्य और उसमें आए परिवर्तन

ii) जलवायु और उसके परिवर्तन

iii) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

iv) स्थानीय संस्कृति एवं लोगों का व्यवहार

v) आर्थिक दशा एवं विकास

vi) राजनीति, शिक्षा आदि अन्य महत्वपूर्ण पक्ष

5) क) सूचनापरक वर्णनात्मक यात्रा लेखन

ख) साहित्यिक यात्रा लेखन,
क्यों का विश्लेषण स्वयं करने का प्रयास कीजिए।

6) i) वर्णनात्मक शैली — भाषा, सरल, वर्णनात्मक परंतु प्रभावशाली,

ii) संस्मरणात्मक शैली — भाषा भावात्मक एवं साहित्यिक उत्कर्षता लिए हुए।

13.10 उपयोगी पुस्तकें

- अज्ञेय : *अरे यायावर रहेगा याद*, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली।
- रांगेय राघव : *रांगेय राघव ग्रंथावली, भाग 8*, राजपाल एंड संज, दिल्ली।
- निर्मल वर्मा : *हर बारिश में*, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।

NOTES

NOTES

खंड

4

पुस्तक समीक्षा एवं साक्षात्कार

इकाई 14

समीक्षा की विशेषताएँ एवं समीक्षक 5

इकाई 15

पुस्तक समीक्षा : लेखन एवं प्रस्तुति 22

इकाई 16

साक्षात्कार की तैयारी 41

इकाई 17

साक्षात्कार : सामग्री का संपादन और संयोजन 63

इकाई 18

व्यक्ति-चित्र 81

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

श्री विष्णु प्रभाकर
दिल्ली
श्री गिरिराज किशोर
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर
श्री राजेन्द्र अवस्थी
संपादक, कादंबिनी, नयी दिल्ली
प्रो. इंद्रनाथ चौधरी
सचिव, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली
प्रो. चंद्रकांत बांदिवडेकर
बंबई विश्वविद्यालय, मुंबई
डॉ. असगर वजाहत
जामिया मिलिया इस्लामिया, नयी दिल्ली

सहयोग

प्रो. शिव के. कुमार
हैदराबाद
श्री ब्रजनारायण अग्रवाल
साप्ताहिक हिंदुस्तान, नयी दिल्ली
डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल
रीडर, हिंदू कालेज, दिल्ली

संकाय सदस्य

प्रो. बच्चीश सिंह
भूतपूर्व निदेशक, मानविकी विद्यापीठ
प्रो. वी.रा. जगन्नाथन (संयोजक)
डॉ. जवरीमल पारख
डॉ. रीतारानी पालीवाल
डॉ. शत्रुघ्न कुमार

सहयोग

डॉ. शशिप्रभा कामरा
डॉ. सुनयना कुमार

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक

डॉ. सत्यकाम
डॉ. जवरीमल पारख

सहयोग

श्री विनोद भारद्वाज
नवभारत टाइम्स,
नयी दिल्ली

पाठ्यक्रम संपादक

श्री राजेंद्र अवस्थी
संपादक, कादंबिनी, नयी दिल्ली

संकाय सदस्य

डॉ. सत्यकाम
डॉ. पूरन चंद टंडन
डॉ. नीलम फारूकी
श्रीमती विमल खांडेकर

डॉ. जवरीमल पारख
(खंड एवं पाठ्यक्रम संयोजक एवं संपादक)

सामग्री निर्माण

श्री बालकृष्ण सेल्वराज
कुलसचिव
मुद्रण एवं प्रकाशन प्रभाग
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

जून, 1992

© *इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1992*

ISBN-81-7263-099-9

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अनुमति से पुनः मुद्रित। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद की ओर प्रो. डॉ. जी. ए. शुक्ला, कुलसचिव द्वारा पुनः मुद्रित एवं प्रकाशित 2017
मुद्रक ; चन्द्रकला युनिवर्सल प्रा. लि. 42/7 जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद, 211002

खंड 4 का परिचय

सृजनात्मक लेखन पाठ्यक्रम के अंतर्गत फीचर लेखन का यह चौथा खंड है। इससे पहले के खंड में आपने यात्रा लेखन और रिपोर्ताज का अध्ययन किया था। इस खंड में हम आपको पुस्तक समीक्षा एवं साक्षात्कार के बारे में बतायेंगे। इस खंड की आरंभिक दो इकाइयों में समीक्षा के संबंध में विचार किया गया है। इकाई 14 में समीक्षा की विशेषताएं और समीक्षक के अपेक्षित गुणों के बारे में बताया गया है। इसके साथ ही पुस्तक समीक्षा और आलोचना में अंतर, पुस्तक समीक्षा के महत्व और उसके विभिन्न पक्षों पर भी प्रकाश डाला गया है। इकाई 15 में पुस्तक समीक्षा लेखन के व्यावहारिक पक्ष पर विचार किया गया है। पुस्तक समीक्षा कितने प्रकार की हो सकती है। समीक्षा लिखने से पूर्व क्या-क्या तैयारी करनी चाहिए एवं पुस्तक समीक्षा किस तरह लिखनी चाहिए–इन विभिन्न पक्षों का विवेचन किया गया है।

इकाई 16 और 17 में साक्षात्कार के संबंध में बताया गया है। इकाई 16 में साक्षात्कार की तैयारी पर विचार किया गया है और इकाई 17 में साक्षात्कार के संपादन, संयोजन और प्रस्तुति के बारे में। "साक्षात्कार की तैयारी" के अंतर्गत साक्षात्कार से पूर्व की तैयारी, साक्षात्कार लेने का ढंग, प्रश्नावली का निर्माण, साक्षात्कार की रिकार्डिंग आदि से संबंधित पक्षों को समझाया गया है। इसके अतिरिक्त इस इकाई में साक्षात्कार के महत्व और उसके प्रकार के बारे में भी बताया गया है। इकाई 17 का संबंध साक्षात्कार के लेखन से संबंधित है ताकि उसे प्रकाशन के लिए अंतिम रूप दिया जा सके।

इस खंड की अंतिम इकाई "व्यक्ति-चित्र" पर है। इसमें किसी उल्लेखनीय व्यक्ति के संबंध में प्रोफाइल तैयार करने के बारे में बताया गया है। प्रोफाइल के लिए कैसे तैयारी की जाए, उसके विभिन्न पक्ष कौन-कौन से हैं और व्यक्ति-चित्र कैसे लिखना चाहिए–इसके संबंध में बताया गया है।

उपर्युक्त इकाइयों में पुस्तक समीक्षा, साक्षात्कार और व्यक्ति-चित्र के उदाहरण भी दिये गये हैं ताकि सैद्धांतिक बातों के साथ-साथ व्यवहारिक पक्ष भी उजागर हो सकें। अभ्यास के द्वारा अपनी लेखन कुशलता का विकास भी कर सकेंगे।

इस खंड में साक्षात्कार के संबंध में एक वीडियो का निर्माण किया जा रहा है। उम्मीद है यह आपके लिए ज्ञानवर्धक साबित होगा।

आभार

जनसत्ता, नयी दिल्ली
नवभारत टाइम्स, नयी दिल्ली
हंस, नयी दिल्ली
समीक्षा, पटना
साक्षात्कार, भोपाल
कादम्बिनी, नयी दिल्ली
संडे मेल, (हिन्दी), नयी दिल्ली
इंडिया टुडे, (हिन्दी), नयी दिल्ली
सांचा, नयी दिल्ली
भाषा, नयी दिल्ली
आलोचना, नयी दिल्ली
समकालीन भारतीय साहित्य, नयी दिल्ली
दिनमान, नयी दिल्ली

PGDCWH-02/212

इकाई 14 समीक्षा की विशेषताएँ एवं समीक्षक

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य
14.1 प्रस्तावना
14.2 पुस्तक समीक्षा का अभिप्राय
  14.2.1 पुस्तक समीक्षा और आलोचना में अंतर
  14.2.2 पुस्तक समीक्षा का महत्व
14.3 पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्ष
  14.3.1 पुस्तक का परिचय
  14.3.2 विषय का महत्व
  14.3.3 आलोचनात्मक मूल्यांकन
  14.3.4 प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ
14.4 एक अच्छे समीक्षक के गुण
  14.4.1 विशेषज्ञता
  14.4.2 विस्तृत सामान्य ज्ञान
  14.4.3 पूर्वग्रहमुक्त
  14.4.4 दृष्टि सम्पन्न
  14.4.5 वस्तुनिष्ठ
  14.4.6 संतुलित लेखन
  14.4.7 सामाजिक दायित्व बोध
14.5 पुस्तक समीक्षा की विशेषताएँ
  14.5.1 वस्तुनिष्ठता
  14.5.2 पूर्वग्रहमुक्तता
  14.5.3 प्रासंगिकता
  14.5.4 केंद्रीय बिंदु की पहचान
  14.5.5 सोद्देश्यता
  14.5.6 निजता
  14.5.7 भाषा एवं शैलीगत विशेषताएँ
14.6 सारांश
14.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

फीचर लेखन के चौथे खंड की यह पहली इकाई है। इसमें आप समीक्षा और समीक्षक की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे। इसे पढ़ने के बाद आप :

- पुस्तक समीक्षा का अभिप्राय समझ सकेंगे;
- पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- एक अच्छे समीक्षक के गुणों पर प्रकाश डाल सकेंगे; और
- पुस्तक समीक्षा की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे।

14.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन पाठ्यक्रम की यह इकाई समीक्षा लेखन से संबंधित है। इस इकाई में समीक्षा लेखन के विभिन्न पक्षों एवं विशेषताओं का परिचय दिया गया है। समीक्षा लेखन आप अगली इकाई में सीखेंगे।

समीक्षा लेखन में गतिशील होने के पूर्व नवोदित समीक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह समीक्षा के विभिन्न पक्षों की जानकारी प्राप्त कर ले। इसी उद्देश्य से सबसे पहले समीक्षा का अर्थ स्पष्ट किया गया है। "समीक्षा" और "आलोचना" संज्ञा को लेकर विद्वानों में भी पर्याप्त मतभेद हैं। हमने उन विवादों में पड़े बिना यह स्पष्ट कर दिया है कि समीक्षा का अर्थ पुस्तक समीक्षा है और आलोचना का दायरा पुस्तक समीक्षा से विस्तृत है। एक अच्छा समीक्षक बनने के लिए समीक्षक के गुण और समीक्षा की विशेषताओं की जानकारी आपको अवश्य होनी चाहिए। इसी दृष्टि से इस इकाई में इन मुद्दों की चर्चा की गयी है। आप इन विशेषताओं को ध्यान में रखकर समीक्षा क्षेत्र में कदम रख सकते हैं।

आप ज्यादा से ज्यादा समीक्षाएँ पढ़ें और अच्छी समीक्षा और साधारण समीक्षा में अंतर स्पष्ट करने की कोशिश करें। आमतौर पर सभी पत्र-पत्रिकाओं में पुस्तक समीक्षा का स्तंभ होता है। हिंदी में एक दो पत्रिकाएँ ऐसी भी हैं जो पुस्तक समीक्षाएँ प्रमुखता से प्रकाशित करती हैं।

14.2 पुस्तक समीक्षा का अभिप्राय

समीक्षा का शाब्दिक अर्थ है: सम्यक् परीक्षा, सम्मति, अन्वेषण आदि। पुस्तक समीक्षा में किसी पुस्तक की सम्यक् परीक्षा और विश्लेषण किया जाता है। इस परीक्षा और विश्लेषण से पाठक को पुस्तक विशेष के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। पुस्तक समीक्षा में एक पुस्तक की पूरी छानबीन की जाती है। समीक्षक पाठक को पुस्तक से परिचित कराता है। इस क्रम में वह पुस्तक के लेखक, विषय-वस्तु, शिल्प, प्रकाशन स्तर आदि पर प्रकाश डालता है। इसके साथ ही साथ वह समग्र रूप में पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है। इस प्रकार पुस्तक विशेष के सम्बन्ध में समीक्षक अपनी राय भी व्यक्त करता है। अभिमन्यु अनत के उपन्यास "गांधी जी बोले थे" की समीक्षा यहां उद्धृत की जा रही है। समीक्षक हैं—डॉ. सुरेश चन्द्र त्यागी।

*मॉरिशस के अभिमन्यु अनत ने हिन्दी लेखक के रूप में भारत में विशेष ख्याति प्राप्त की है। उन्होंने अपनी रचनाओं में मॉरिशस की जनचेतना को बड़ी बारीकी से व्यक्त किया है। ··· "गांधी जी बोले थे" इन्हीं अभिमन्यु अनत की कथाकृति है जो आवरण की सूचना के अनुसार "लाला पसीना" की अगली कड़ी है। गिरमिटिया मजदूरों के रूप में जो भारतीय ग्रामीण एक सुखद भविष्य का स्वप्न संजोकर मॉरिशस गये थे, उन्हें वहाँ जाकर शोषण का भयावह रूप देखना पड़ा। ··· गांधी जी के इन सुझावों को साकार रूप देने के लिए अभिमन्यु अनत ने इस उपन्यास के नायक "परकाश" का चरित्र खड़ा किया है। वह है, नयी चेतना के प्रकाश का प्रतीक, मॉरिशस में रह रहे भारतीय जनों की जागरण कथा का नायक। विभिन्न परिस्थितियों को पकड़ने में अभिमन्यु अनत की भाषा सर्वथा समर्थ है। यह पूरा उपन्यास तीन भागों में विभाजित है जिनमें क्रमशः आठ, सात और पाँच परिच्छेद हैं। ··· क्रिओल या फ्रेंच भाषा का यत्रतत्र प्रयोग लेखक ने संवादों में किया है, जिन्हें हिन्दी पाठक समझ नहीं सकता। यदि यह प्रयोग अनिवार्य ही था तो पादटिप्पणी में इनका अनुवाद देना चाहिए था (**समीक्षा**, वर्ष 18 अंक 4)।*

इतना तो आप समझ गये होंगे कि पुस्तक का मूल्यांकन करना पुस्तक समीक्षा है। इसके माध्यम से पाठक पुस्तक की जानकारी प्राप्त करता है और उस पुस्तक के बारे में उसकी एक राय बनती है।

पुस्तक समीक्षा का पहला और प्राथमिक दायित्व पाठकों को पुस्तक से परिचित कराना है। लेकिन परिचय का अर्थ पुस्तक की विषय-वस्तु का सारांश कर देना नहीं है। निश्चय ही पुस्तक की विषय-वस्तु के बारे में जानने की उत्सुकता ही पाठक को पुस्तक समीक्षा पढ़ने के लिए प्रेरित करती है परंतु यह भी सही है कि वह समीक्षा के द्वारा पुस्तक की विषय-वस्तु, संरचना और भाषिक सर्जनात्मकता के सम्बंध में समीक्षक की विशेषज्ञतापूर्ण राय जानना चाहता है। वह समीक्षक से विश्लेषण और आलोचनात्मक विवेचन की भी अपेक्षा करता है। इसलिए समीक्षा लिखते समय समीक्षक को सतर्क रहना चाहिए कि उसकी समीक्षा पुस्तक का सारांश मात्र बनकर न रह जाए।

14.2.1 पुस्तक समीक्षा और आलोचना में अंतर

समीक्षा और आलोचना को आम तौर पर एक समझ लिया जाता है। लेकिन यहाँ हम इन्हें दो भिन्न अर्थों में प्रयुक्त कर रहे हैं। समीक्षा जिसे अंग्रेजी में Review कहा जाता है का प्रयोग पुस्तक समीक्षा (Book review) के अर्थ में किया गया है जबकि आलोचना (Criticism) अधिक व्यापक अर्थ वाला शब्द है।

वस्तुतः समीक्षा आलोचना विधा की एक शाखा या उपशाखा है। समीक्षा का तात्पर्य पुस्तक समीक्षा से है। निश्चित रूप से वह आलोचना के दायरे में आती है; पर आलोचना के दायरे में और भी बहुत कुछ आता है, जैसे किसी विधा, लेखक, प्रवृत्ति आदि का मूल्यांकन। पुस्तक समीक्षा में पुस्तक केन्द्र में होती है और आलोचना में विधा, लेखक और प्रवृत्ति। लेकिन ऐसा नहीं है कि पुस्तक समीक्षा में विधा, लेखक और प्रवृत्ति की चर्चा नहीं होती या आलोचना में किसी पुस्तक की चर्चा नहीं होती। होती है, पर सन्दर्भ के रूप में। किसी पुस्तक पर समीक्षा लिखते समय समीक्षक उस धारा या प्रवृत्ति और उस क्षेत्र के समकालीन लेखकीय रुझान की चर्चा करेगा या कर सकता है, पर चर्चा के केंद्र में वह पुस्तक ही रहेगी। इसी प्रकार किसी विषय विशेष पर विचार करते समय आलोचक विभिन्न पुस्तकों का सन्दर्भ के तौर पर उल्लेख कर सकता है, उन पर अपनी राय व्यक्त कर सकता है; पर केन्द्र में वह विषय विशेष ही रहेगा न कि कोई पुस्तक। मसलन, अगर कोई लेखक भीष्म साहनी के उपन्यास **मय्यादास की माड़ी** का विश्लेषण करता है, तो यह पुस्तक समीक्षा का उदाहरण होगा। और कोई साहित्यकार भीष्म साहनी के उपन्यास शिल्प का विश्लेषण करता है और इसके लिए वह संदर्भ के तौर पर **तमस और मय्यादास की माड़ी** का उपयोग करता है, तो वह आलोचना का उदाहरण होगा।

कभी-कभी पुस्तक समीक्षा आलोचना के दायरे में प्रवेश कर जाती है। जब पुस्तक समीक्षक पुस्तक के बहाने उस लेखक के सम्पूर्ण लेखन या पुस्तक के विषय को आधार बनाकर एक स्वतंत्र लेख लिख दे। उदाहरण के लिए, जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक **भारत एक खोज** की प्रसिद्ध इतिहासविद् दामोदर धर्मानंद कोसंबी द्वारा लिखित समीक्षा को सिर्फ पुस्तक समीक्षा नहीं कहा जा सकता। वह एक स्वतंत्र लेख की तरह महत्वपूर्ण है। इस प्रकार के आलोचनात्मक मूल्यांकन के माध्यम से लेखक पुस्तक समीक्षा करते हुए कुछ ऐसी महत्वपूर्ण स्थापनाएँ कर जाता है जो पुस्तक समीक्षा से अलग भी अपना महत्व रखती है। साहित्यिक विषयों पर लिखी समीक्षाओं में भी इसकी संभावना रहती है कि समीक्षक पुस्तक के बहाने रचनाकार के संपूर्ण लेखन या किसी खास प्रवृत्ति या उसके भाषिक और शैलीगत विशेषताओं का ऐसा मूल्यांकन प्रस्तुत करे जो उस "समीक्षा" को आलोचना के दायरे में पहुँचा दे।

एक बात आप अब तक समझ गये होंगे कि आलोचना का क्षेत्र समीक्षा से व्यापक होता है। यहाँ व्यापकता का अर्थ क्षेत्र विस्तार से नहीं, बल्कि विश्लेषण की व्यापकता से है। समीक्षा का दायरा छोटा होता है उसमें विश्लेषण किसी पुस्तक तक ही सीमित रहता है। यह विश्लेषण ही समीक्षा और आलोचना को एक दूसरे से जोड़ता है। दोनों में शोध-प्रवृत्ति भी होती है। किसी पुस्तक की समीक्षा करते समय समीक्षक तथ्यों की गहरी छानबीन करता है। आलोचना में खोजबीन का यह दायरा और भी व्यापक हो जाता है।

वस्तुतः समीक्षा और आलोचना एक दूसरे से जुड़े अवश्य हैं, पर एक नहीं है। समीक्षा आलोचना का एक अंग है, पर उसका अपना अस्तित्व है, उसकी एक अलग पहचान है। इसलिए आलोचना और समीक्षा को एक दूसरे का पर्याय नहीं समझना चाहिए।

14.2.2 पुस्तक समीक्षा का महत्व

अब यह सवाल उठता है कि पुस्तक समीक्षा क्यों? इसका उद्देश्य क्या है? ऐसे कुछ सवाल आपके दिमाग में पनप रहे होंगे। आइए, इन सवालों का हल ढूंढा जाए।

दरअसल, साहित्य में पुस्तक समीक्षा की अहम भूमिका है। समीक्षा पाठक और पुस्तक को एक दूसरे से जोड़ती है। पाठक के सामने बराबर यह समस्या रहती है कि वह कौन सी किताब पढ़े। उसका यह भार पुस्तक समीक्षा हलका कर देती है। इसके अलावा पाठक वर्ग

का एक हिस्सा ऐसा भी होता है जो पूरी किताब नहीं पढ़ना चाहता या उसके पास इतना समय नहीं है कि वह सभी पुस्तकों को पढ़े। यहां समीक्षा उनकी मदद के लिए पहुँचती है। इस प्रकार समीक्षा एक बार में पुस्तक को ढेर सारे पाठकों तक पहुँचा देती है। इससे दो फायदे होते हैं। एक तो पाठक को प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की जानकारी मिलती रहती है, दूसरे, वह नये लेखकीय रुझानों से भी परिचित होता चलता है। साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, समाज विज्ञान, खेलकूद आदि क्षेत्रों से सम्बद्ध पुस्तकों की जानकारी समीक्षा के माध्यम से पाठकों तक पहुँचती है।

पुस्तकों के इस व्यापक संसार में पाठको के लिए सही पुस्तक का चुनाव बड़ा मुश्किल काम है। समीक्षा उसकी इस मुश्किल को कम करती है। इसके अतिरिक्त वह लेखक को पाठक से जोड़ने का सामाजिक दायित्व भी निभाती है। साथ ही साथ इसकी मदद से पाठक किसी लेखक या कृति के बारे में अपनी समझ भी विकसित कर सकता है और अपनी राय भी बना सकता है।

बोध प्रश्न

1) पुस्तक समीक्षा में आप क्या समझते हैं? (तीन पंक्तियों में उत्तर दें।)

.....

.....

.....

2) पुस्तक समीक्षा और आलोचना में क्या अंतर है? (सही उत्तर के सामने √ निशान लगाएं।)

क) पुस्तक समीक्षा में सिर्फ पुस्तक का सारांश और आलोचना में आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाता है। ( )

ख) पुस्तक समीक्षा में पुस्तक केंद्र में होती है और आलोचना में पुस्तक का संदर्भ के रूप में उपयोग किया जाता है। ( )

ग) पुस्तक समीक्षा और आलोचना में कोई अन्तर नहीं है। ( )

घ) आलोचना का दायरा पुस्तक समीक्षा की अपेक्षा व्यापक होता है। ( )

3) पुस्तक समीक्षा का क्या महत्व है?
(पाँच पंक्तियों में उत्तर दें।)

.....

.....

.....

.....

.....

14.3 पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्ष

अब तक के विश्लेषण से आप समीक्षा के विभिन्न पक्षों का संकेत पा चुके हैं; मसलन पुस्तक का परिचय, विषय का प्रतिपादन और आलोचनात्मक मूल्यांकन। कुल मिलाकर पुस्तक समीक्षा इन्हीं पक्षों को समेट कर चलती है। समीक्षक पाठकों को पुस्तक से परिचित कराता है, उसमें वर्णित विषय पर प्रकाश डालता है और उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है। समीक्षा में पुस्तक के प्रकाशन से संबंधित सूचनाएँ भी दी जाती हैं। आइए, इन पर अलग-अलग विचार करें।

14.3.1 पुस्तक का परिचय

पुस्तक का सही परिचय प्रस्तुत करना समीक्षक का मुख्य दायित्व है। समीक्षा लिखते समय आरम्भ में पुस्तक की सामान्य जानकारी पाठक को दे देनी चाहिए। सामान्य जानकारी का तात्पर्य है पुस्तक के लेखक, उसकी विषय वस्तु के बारे में बताना, पुस्तक कब लिखी गई तथा किस विधा में लिखी गई है का भी उल्लेख करना। इससे पाठक को यह पता चल जाता है कि पुस्तक का विषय क्या है और लेखक ने इसे किस विधा में और कब लिखा है। इस तरह की सामान्य जानकारी से पाठक को यह तय करने में सुविधा रहती है कि प्रस्तुत पुस्तक उसकी अभिरुचि के क्षेत्र में आती है या नहीं। इस प्रारंभिक परिचय से ही वह समीक्षा पढ़ने की ओर आगे प्रवृत्त होता है। निम्नलिखित उदाहरण पुस्तक समीक्षा के परिचयात्मक अंश को उजागर करता है।

***बम भोलेनाथ** नागार्जुन के सन् 1945 से 1978 तक लिखे गये लेखों और निबंधों का संग्रह है। यद्यपि यह सही है कि इसमें नागार्जुन के लगभग 30-35 वर्ष पुराने लेख या निबंध संकलित हैं किन्तु वे अपनी भावना, संवेदना, विचारधारा और शैली में इतने ताजगी भरे हैं कि आज भी प्रासंगिक और अर्थवान् लगते हैं। मुख्य बात यह है इस संग्रह के निबंध विविध रंगी हैं—कुछ संस्मरण हैं, कुछ यात्रा-वृत्तान्त, कुछ समालोचनात्मक, कुछ परिचयात्मक और कुछ विश्लेषणात्मक। कुछ में ये सभी विशेषताएँ एक साथ मौजूद हैं। उनके निबंधों पर उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप है। जैसे नागार्जुन अक्खड़, फक्कड़ और मस्तमौला हैं वैसे ही उनके ये निबंध भी हैं।*

*(श्रीकृष्णचंद्र लाल लिखित नागार्जुन की पुस्तक "**बम बोलेनाथ**" की समीक्षा का एक अंश : **समीक्षा**, वर्ष 22 अंक 3)*

केदारनाथ सिंह के कविता संकलन "**आकलन में सारस**" पर डॉ रामवचन राय की समीक्षा—

*"**अकाल में सारस**' केदारनाथ सिंह की कविताओं का ताजा संग्रह है। इसकी कविताएँ 1983 से 87 के बीच लिखी गयी हैं। ये कविताएँ कवि के पिछले दो संग्रहों—"जमीन पक रही है" और "यहाँ से देखो"—की कविताओं की कड़ी में गिनी जाएँगी। केदारनाथ सिंह की कविताओं का एक खास आकर्षण है। आसपास की साधारण सी लगने वाली चीजें उनकी कविता के विषय हैं। कहने का लहजा बिल्कुल बोलचाल का, ऐसा कि कहीं से लगता नहीं कि कविताई कर रहे हैं।*

*(**समीक्षा**, वर्ष 23 अंक 1)*

उपर्युक्त दोनों अंशों में पुस्तक का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया गया है। इनके लेखन और प्रस्तुति का ढंग अलग-अलग हो सकता है, पर चार बातें कमोबेश दोनों में दृष्टिगोचर होती हैं। ये हैं—पुस्तक का सामान्य परिचय, लेखक का संक्षिप्त परिचय, लेखक के पूर्व संग्रहों का उल्लेख और पुस्तक की विषय वस्तु का संकेत।

उपर्युक्त चारों बातों से आरंभ में ही पाठक को लेखक, लेखक का रचनात्मक क्षेत्र, पुस्तक का विषय और उसकी विधा का परिचय मिल जाता है। इस परिचय से प्रेरित होकर वह पुस्तक समीक्षा को आगे पढ़ना जारी रखता है। स्पष्ट है कि पुस्तक समीक्षा पुस्तक के परिचय पर समाप्त नहीं होती वरन् उससे आरंभ होती है। वास्तविक "समीक्षा" तो इसके बाद आती है।

14.3.2 विषय का महत्व

पुस्तक का सामान्य परिचय प्राप्त कर लेने के बाद पाठक पुस्तक की विषय वस्तु से परिचित होना चाहता है। परिचय के क्रम में पाठक यह जानना चाहता है कि पुस्तक का सम्बन्ध ज्ञान के किस क्षेत्र से है : मसलन साहित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान, इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, खेलकूद आदि। विषय के परिचय के साथ उसकी प्रस्तुति की शैली की भी जानकारी आवश्यक है। अर्थात् पुस्तक निबंधात्मक, आत्मकथात्मक, डायरी, उपन्यास, कहानी, प्रश्नोत्तरी आदि किस विधा या शैली में लिखी गई है।

विषय के संबंध में तीसरी जानकारी यह आवश्यक है कि लेखक ने यह पुस्तक किन पाठकों के लिए लिखी है। यह जानना इसलिए आवश्यक है क्योंकि पाठक वर्ग की भिन्नता एक ही

विषय पर लिखी गयी पुस्तकों में बहुत बड़ा अंतर ला देती है। यह अंतर विषय की प्रस्तुति से लेकर भाषा और शैली के चयन तक नजर आता है।

उपर्युक्त बातों का उल्लेख करने के साथ ही विषय वस्तु के संबंध में विचार करना चाहिए। सर्वप्रथम यह देखना चाहिए कि पुस्तक की प्रासंगिकता क्या है? दूसरे, पुस्तक के विषय की प्रस्तुति किस रूप में है? क्या लेखक अपनी बात को प्रभावशाली रूप में रखने में सफल रहा है? तीसरे, लेखक ने विषय के किन-किन पक्षों को पेश किया है और ये पक्ष मूल विषय को स्पष्ट करने में कहाँ तक सहायक हुए हैं।

गिरिराज किशोर के उपन्यास **परिशिष्ट** पर समीक्षा लिखते हुए डॉ. गोपाल ने इसकी विषय वस्तु के महत्व और उसकी प्रासंगिकता को उजागर किया है।

गिरिराज किशोर ने अपने कथा संसार के केन्द्रीय मंच के रूप में एक आई.आई.टी. संस्थान को चुना है जहाँ अधिकतर उच्च वर्ण और सम्पन्न समाज के छात्र प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर प्रवेश पाते हैं। इनमें से अधिकतर छात्र वैसे पब्लिक और मिशनरी स्कूलों से आते हैं जहाँ न केवल अँगरेजी के माध्यम से शिक्षा दी जाती है, वरन् अंग्रेजी उनको घुट्टी में पिला दी जाती है। ये लड़के विलायती रहन-सहन, विलायती रीति-रिवाज, विलायती मैनर्स, विलायती लहजे, विलायती अनुभाव आदि के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाओं में बोलने, भारतीय ढंग से अभिवादन करने, भारतीय ढंग से कपड़े पहनने आदि में इन्हें शर्म आती है। इनके बीच आरक्षण के बल पर आये अनुसूचित जाति के छात्र अपने को अजनबी महसूस करते हैं। उच्च जाति और वर्ग के छात्र बहुमत में तो होते ही हैं, वे हरिजन छात्रों के प्रति आक्रामक भी होते हैं, ये उच्चवर्गीय छात्र हरिजन छात्रों को अवांछित और घुसपैठिया समझते हैं, जैसे मन्दिर के प्रांगण में दो चार सुअर घुस आये हों। इन पाँश संस्थाओं में रहन-सहन, खानपान, वेशभूषा, बातचीत वगैरह का ऐसा कृत्रिम ढाँचा बन गया है कि भारत का औसत किसान वहाँ पहुँच कर अनुभव करता है कि वह शायद अपने देश में नहीं है। हरिजन किसान-मजदूर के लिए तो वह दूसरी दुनिया ही है। इन संस्थानों के अधिकतर शिक्षक और उच्चवर्गीय छात्र आरक्षण की व्यवस्था के विरोधी हैं और वे इसका बदला अल्पसंख्यक हरिजन छात्रों से जातिभेद की नीति अपना कर करते हैं। कक्षाओं में, खेल के मैदान में, मेस में, छात्रावास में, अतिथि भवन में, सर्वत्र, उच्चवर्गीय छात्र अल्पसंख्यक हरिजन छात्रों का अपमान करते हैं, डराते धमकाते हैं और उत्तेजित होने पर मारपीट भी करते हैं। इन संस्थाओं की शिक्षा पद्धति भी इस ढंग की है कि आरक्षण पर आये छात्र आवधिक परीक्षाओं में उत्तीर्ण नहीं हो पाते, वे 'क्विज', 'मिड सेमिस्टर', 'सेमिस्टर' और 'बैक लॉग' की दुर्लंघ्य दीवारों को लाँघ नहीं पाते। सारी पढ़ाई अँगरेजी में होती है, अँगरेजी में ही बातचीत होती है, जिससे सामान्य स्कूलों से पढ़ कर आये छात्रों को न केवल पढ़ाई समझने में कठिनाई होती है वरन् फर्राटे से अँगरेजी न बोल सकने के कारण अपमानित भी होना पड़ता है। इस सबका परिणाम यह होता है कि तकनीकी संस्थाओं में एस.सी.सी.टी. कोटा के अधिकतर छात्र सफलतापूर्वक अपनी पढ़ाई सम्पन्न नहीं कर पाते; अनेक छात्र बीच में ही पढ़ाई छोड़ कर भाग आते हैं और कई तो आत्महत्या तक कर लेते हैं।

(समीक्षा, वर्ष 18 अंक 4)

निम्नलिखित उदाहरण में पुस्तक समीक्षा का आरंभ ही पुस्तक के विषय के महत्व को उजागर करने से हुआ है:

हिंदी में बच्चों के साहित्य की कमी की बात अक्सर सुनने में मिलती है। हिंदी की तमाम पत्र-पत्रिकाओं में बच्चों के लिए "सुरक्षित" पन्नों के बावजूद इस बात में बहुत सच्चाई नज़र आती है। तमाम बाल पत्रिकाओं और कॉमिक्सों में फैंटमों और स्पाइडर मैनों के अलावा रामायण, महाभारत और देशी-विदेशी लोक कथाओं (जो अधिकतर धार्मिक ही होती हैं) से ही ज्यादातर जगह घेरी होती है और इनके बाद जो थोड़ी बहुत जगह बच पाती है, उस पर नन्हें जासूसों का कब्जा है। यह सारी सामग्री बच्चों की रचनात्मकता को, उनकी सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने के बजाय कुंद ही करती है।

(सफदर हाशमी की कविता पुस्तकों पर प्रकाशित समीक्षा का आरंभिक अंश, समीक्षक: **सहीराम, सांचा, अगस्त-सित. 1989**)

14.3.3 आलोचनात्मक मूल्यांकन

किसी पुस्तक का सामान्य परिचय देने और उसकी विषय वस्तु पर प्रकाश डालने के बाद समीक्षक पुस्तक के आलोचनात्मक मूल्यांकन की ओर अग्रसर होता है। एक बात यहाँ ध्यान रखने की है कि आलोचनात्मक मूल्यांकन और परिचय को समीक्षा में अलग-अलग रखा जाए, यह आवश्यक नहीं है। बल्कि बेहतर यही है कि पुस्तक के परिचय में ही उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन भी निहित हो। यह इसलिए जरूरी है क्योंकि पुस्तक समीक्षा में इतना अवकाश हमेशा संभव नहीं होता कि दोनों कार्य स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत किये जा सकें।

किसी पुस्तक का मूल्यांकन समीक्षक को पूर्वाग्रह से मुक्त होकर करना चाहिए। यह पूर्वाग्रह लेखक के प्रति भी हो सकता है और उसके लेखन के प्रति भी। इससे हमेशा बचने की कोशिश करनी चाहिए। किसी पुस्तक का संतुलित मूल्यांकन समीक्षक की उस विषय पर पकड़, सामान्य ज्ञान की जानकारी और दृष्टि सम्पन्नता पर बहुत कुछ निर्भर करता है। पुस्तक के मूल्यांकन का काम उत्तरदायित्वपूर्ण होता है, क्योंकि इसके आधार पर पाठक वर्ग एक राय बनाता है। इस प्रकार इसके माध्यम से समीक्षक एक सामाजिक दायित्व का भी निर्वाह करता है। आइए, कुछ उदाहरणों के माध्यम से समीक्षा के आलोचनात्मक पक्ष पर नजर डालें।

गिरिराज किशोर के उपन्यास परिशिष्ट पर डॉ. गोपाल की समीक्षा के कुछ अंशों (विषय वस्तु से संबंधित) का आपने अवलोकन किया है। यहाँ समीक्षा का जो अंश प्रस्तुत किया जा रहा है, वह इस पुस्तक के आलोचनात्मक मूल्यांकन से सम्बद्ध है।

इसमें सन्देह नहीं कि इस उपन्यास के मूल में एक समस्या है। इस समस्या की भयावहता का बोध कराने के लिए भी यह उपन्यास लिखा गया है। पर रचना या कला की दृष्टि से समस्या की प्रमुखता कहीं बाधक नहीं बनी है। उपन्यासकार ने अपने कथा संसार के माध्यम से समस्या को "प्रस्तुत" ही किया है, "कहा" नहीं है। यहाँ जबकि उपन्यास के पात्र भी इस समस्या पर कहीं अपने विचार प्रस्तुत नहीं करते। कथा के पात्र इस समस्या के बीच से गुजरते हैं, इसे जीते हैं, भोगते हैं, अनुभव करते हैं। उपन्यास पढ़ने पर इस बात का बोध होता है कि उपन्यासकार को यह विज़न उसके चारों ओर की परिस्थितियों से प्राप्त हुआ है। ··· हम जानते हैं कि गिरिराज किशोर आई.आई.टी., कानपुर के एक पदाधिकारी हैं और इसलिए इस उपन्यास का कथा संसार अनुभव की प्राथमिकता से रहित नहीं हो सकता : पर यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि यह आई.आई.टी. कानपुर की "सत्यकथा" है। यह वस्तुतः उस मानसिकता के विरुद्ध अभियान है जिसके शिकार उच्च वर्ग के बहुसंख्यक लोग हैं। इस मानसिकता का एक रूप यह भी हो सकता है जो उपन्यास में प्रस्तुत है। यदि इस उपन्यास के आईने में हम अपने चेहरे देख सकें और उन्हें पहचान सकें तो सम्भवतः उपन्यास की यह सबसे बड़ी सफलता होगी।

हरिजनों की जिन्दगी पर आधारित एक महत्वपूर्ण उपन्यास, "नाच्यो बहुत गोपाल" आज से लगभग सात वर्ष पूर्व अमृतलाल नागर ने लिखा था। निस्संदेह इस जीवन यथार्थ की गहरी समझ, प्रामाणिक अनुभव, गहन अनुभूति, पात्रों और स्थितियों की जीवन्त सृष्टि, सही शिल्प प्रविधि के चुनाव और भाषा के सर्जनात्मक उपयोग की दृष्टि से "परिशिष्ट" "नाच्यो बहुत गोपाल" की अगली कड़ी है। इस उपन्यास के प्रकाशन के साथ गिरिराज किशोर हिन्दी की अगली पंक्ति के उपन्यासकारों के बीच अपनी स्थायी जगह बनाने में सफल हो गये हैं।"

(समीक्षा, वर्ष 18 अंक 4)

आलोचनात्मक मूल्यांकन और आलोचना को निषेधात्मक समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। आलोचनात्मक मूल्यांकन में पुस्तक की सीमा और विशेषता दोनों पक्षों का विश्लेषण करना चाहिए।

आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के क्रम में समीक्षक पुस्तक के केन्द्रीय विषय, शिल्प और भाषा की गहरी छानबीन करता है और अपनी राय देता है। इसके अतिरिक्त वह उस पुस्तक की तुलना उसी विषय पर लिखी गयी दूसरी पुस्तक से भी करता है। उदाहरण के लिए, डॉ. गोपाल ने "परिशिष्ट" का मूल्यांकन करते हुए "नाच्यो बहुत गोपाल" की भी

चर्चा की है। अन्त में समीक्षक मूल्यांकन संबंधी अपना निष्कर्ष भी प्रस्तुत करता है। कभी-कभी वह यह भार पाठकों पर भी छोड़ देता है।

14.3.4 प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ

पुस्तक के प्रकाशन स्तर और प्रकाशन संबंधी सूचनाओं से पाठक को अवगत कराना समीक्षा का एक महत्वपूर्ण दायित्व है। पुस्तक का प्रकाशन कैसा हुआ है? उसका मुद्रण का स्तर क्या है? प्रूफ संबंधी भूलें तो नहीं रह गयी हैं आदि बातों का उल्लेख समीक्षा लिखते समय किया जाना चाहिए। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि निम्न स्तरीय मुद्रण या प्रूफ संबंधी त्रुटियाँ पाठक को पुस्तक पढ़ने से विरक्त करती हैं। विश्वकोश आदि में तो ये गलतियाँ अक्षम्य हैं।

साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित भारतीय साहित्य के विश्वकोश की समीक्षा का निम्नलिखित अंश इस दृष्टि से उल्लेखनीय है :

पुनरावृत्ति के दोष से बचने के साथ ही साथ किसी विश्वकोश के संपादकों को यह भी देखना चाहिए कि उसमें प्रूफ रीडिंग की अशुद्धियाँ न रहने पायें। यह इसलिए भी आवश्यक है कि पाठक विश्वकोश का उपयोग सामान्यतः कोई सूचना प्राप्त करने के लिए करते हैं। अतः प्रूफ रीडिंग की छोटी से छोटी अशुद्धि भी कभी-कभी अर्थ का अनर्थ कर सकती है। पर यह देखकर खेद होता है कि यह विश्वकोश प्रूफ रीडिंग की अशुद्धियों से बच नहीं पाया है। पृष्ठ 895 पर एक लेखक का नाम खलील अली खान "अश्क" दिया हुआ है तो पृष्ठ 895 पर वही नाम खलील अली खां "अष्ठ" हो गया है। इन दोनों में से कौन सा नाम सही है? इसी प्रकार पृष्ठ 842 पर "दलुराय जी नागिरी" प्रविष्टि में राजा का नाम कहीं दलुराय लिखा है तो कहीं दलतूराय"।

(हंस में प्रकाशित समीक्षा का एक अंश : **हंस**, सितंबर, 1990)

पुस्तक के प्रकाशन स्तर के साथ-साथ प्रकाशन संबंधी जानकारी से भी पाठक को अवगत कराना चाहिए। इसके अन्तर्गत पुस्तक के लेखक का नाम, अगर अनूदित पुस्तक हो तो अनुवादक का नाम, प्रकाशक का नाम और पता, प्रकाशन वर्ष, पुस्तक का आकार, पृष्ठ संख्या और पुस्तक के मूल्य का प्रामाणिक ब्यौरा देना चाहिए। ये ब्यौरे पादटिप्पणी में दिए जाने चाहिए। कभी-कभी ये ब्यौरे समीक्षा के आरंभ में शीर्षक के साथ ही दे दिए जाते हैं। समीक्षा लेखन में दोनों ही विधियों का चलन है।

उदाहरणस्वरूप :

1 पहली विधि

पाद टिप्पणी

1) **परिशिष्ट; लेखक–गिरिराज किशोर : प्रकाशक–राजकमल प्रकाशन, 8, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली : प्रथम संस्करण–1984, आकार–डिमाई, पृ.सं. 308,** सजिल्द, मूल्य 50.00

2) दूसरी विधि
शीर्षक: वली मुहम्मद और करीमन की कविताएँ
लेखक अब्दुल विस्मिल्लाह : प्रकाशक–पराग प्रकाशन, 3/114, कर्ण गली, **विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली : प्रथम संस्करण 1988, आकार–डिमाई,** पृ.सं. 80, सजिल्द, मूल्य 30.00

पुस्तक के प्रकाशन संबंधी सूचना कहाँ दी जाए यह उतना महत्वपूर्ण सवाल नहीं है। यह पत्र-पत्रिका में स्थान और उसके गेटअप आदि पर निर्भर करता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ तथ्यात्मक और प्रामाणिक हों। विशेषकर, इसका महत्व शोधार्थियों के लिए अधिक है। अगर प्रकाशन संबंधी सूचना में भूल रह गयी और शोधार्थी ने उसे अपने शोध में शामिल कर लिया, तो शोध ग्रंथ त्रुटिपूर्ण हो जाएगा। समीक्षक को इस बात का खास ख्याल रखना चाहिए।

बोध प्रश्न

4) पुस्तक का परिचय देने के क्रम में किन-किन बातों का उल्लेख किया जाता है? किन्हीं तीन के बारे में बताएँ।

क) .....

ख) .....

ग) .....

5) विषय वस्तु का परिचय देते हुए किन-किन बातों का उल्लेख करना चाहिए? (कृपया पांच पंक्तियों में उत्तर लिखें)।

.....

.....

.....

.....

.....

6) पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। (पांच पंक्तियों में उत्तर दें।)

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

1) किसी पुस्तक का परिचय लिखिए जिनमें पुस्तक के लेखक, विषय और विधा का उल्लेख हो। (उत्तर लगभग दस पंक्तियों में लिखें।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) किसी पठित पुस्तक (जो आपके पास उपलब्ध हो) में दी गयी प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ नोट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

14.4 एक अच्छे समीक्षक के गुण

आपको एक अच्छा समीक्षक बनना है। इसके लिए ज़रूरी है कि आप यह जान लें कि एक अच्छा समीक्षक बनने के लिए किन-किन गुणों का होना अपरिहार्य है। एक अच्छा समीक्षक बनने के लिए जरूरी है कि आप उसी क्षेत्र या विधा की पुस्तक की समीक्षा करें जिस क्षेत्र या विधा से परिचित हों। समीक्षक का सामान्य ज्ञान भी विस्तृत होना चाहिए। समीक्षा लिखते समय समीक्षक को अपने को व्यक्तिगत और साहित्यिक पूर्वग्रहों से मुक्त रखना चाहिए। दृष्टि सम्पन्नता और वस्तुनिष्ठता भी समीक्षक का एक प्रमुख गुण है। उसका लेखन संतुलित होना चाहिए। सामाजिक दायित्व बोध से रहित व्यक्ति अच्छा समीक्षक नहीं हो सकता। आइए, समीक्षक के इन सभी गुणों पर संक्षेप में विचार करें।

14.4.1 विशेषज्ञता

एक अच्छे और निपुण समीक्षक की पहली शर्त यह है कि वह उन्हीं पुस्तकों की समीक्षा करे जिससे वह भलीभांति परिचित हो। अगर आपकी रुचि साहित्य में है तो आप साहित्य की ही समीक्षा में प्रवृत्त हों। अगर आप का क्षेत्र इतिहास है और आप विज्ञान संबंधी पुस्तक की समीक्षा लिखेंगे तो संभव है उस विषय के तकनीकी पक्षों की जानकारी न होने के कारण आप पुस्तक के वास्तविक महत्व को न पहचान पाएँ। इस प्रकार आपकी समीक्षा त्रुटिपूर्ण हो जाएगी और आप पुस्तक के साथ न्याय नहीं कर सकेंगे। इसी प्रकार अगर आपकी रुचि खेलकूद में है और आप कला से संबंधित पुस्तक की समीक्षा करने बैठ गये, तो आप गलत रास्ता अख्तियार करेंगे। एक उदाहरण से यह बात और स्पष्ट हो जाएगी। सुनील गावस्कर प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी और खेल विशेषज्ञ हैं। अगर वे क्रिकेट से संबंधित किसी पुस्तक की समीक्षा करेंगे, तो एक श्रेष्ठ समीक्षक के रूप में सामने आयेंगे, लेकिन अगर उन्होंने मकबूल फिदा हुसैन की चित्रकला पर लिखी गयी पुस्तक की समीक्षा की, तो वह असफल समीक्षक ही सिद्ध होंगे। इतना ही नहीं अगर वे फुटबाल या दूसरे किसी खेल पुस्तक पर समीक्षा लिखेंगे, तो भी उनकी पकड़ मजबूत नहीं हो सकेगी। अतः किसी पुस्तक की समीक्षा करने के पूर्व अपने आप को ठोक बजा कर देख लें कि आप उस विषय की जानकारी रखते हैं या नहीं। अगर आप उस विषय से भलीभांति परिचित हैं, तो बेहिचक समीक्षा कर्म में प्रवृत्त हों, इसके अभाव में असफलता ही आपके हाथ लगेगी।

14.4.2 विस्तृत सामान्य ज्ञान

किसी खास क्षेत्र में निपुण होने के साथ-साथ समीक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि उसका सामान्य ज्ञान भी विस्तृत हो। इससे समीक्षा समृद्ध होती है। मान लीजिए, आप खेलकूद के विशेषज्ञ हैं, लेकिन राजनीति की सामान्य जानकारी भी आपको नहीं है तो खेलों पर लिखी किसी पुस्तक में नस्लवाद, रंगभेद, खेलों का बहिष्कार आदि प्रसंग आने पर आप उनका महत्व नहीं समझ पायेंगे। इसी प्रकार भारत में जातिवाद पर लिखी किसी समाजशास्त्रीय पुस्तक का मूल्यांकन करने के लिए जाति प्रथा के "इतिहास" की जानकारी आवश्यक है। वास्तव में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र एक दूसरे से संबद्ध और परस्पर निर्भर होते हैं। इसलिए समीक्षक का सामान्य ज्ञान विस्तृत होना आवश्यक है।

14.4.3 पूर्वग्रहमुक्त

संतुलित और वैज्ञानिक समीक्षा लेखन के लिए समीक्षक का पूर्वग्रह मुक्त होना लाजिमी है। यह पूर्वग्रह व्यक्तिगत भी हो सकता है और विषयिगत भी। व्यक्तिगत पूर्वग्रह समीक्षा कर्म में बिल्कुल त्याज्य है। व्यक्तिगत दोस्ती और दुश्मनी का समीक्षा कर्म से कोई वास्ता नहीं होता। अगर आप किसी व्यक्ति को व्यक्तिगत कारणों से पसंद न करते हों और अगर उसकी पुस्तक प्रशंसनीय है, तो जानबूझकर प्रयत्नपूर्वक उसकी निंदा न करें; दूसरी तरफ आपके घनिष्ठ मित्र की पुस्तक आपकी नज़र में श्रेष्ठ नहीं है, तो आप बेहिचक उसकी खामियों की ओर इशारा करें। व्यक्तिगत पूर्वग्रह छोड़े बिना कोई भी व्यक्ति सफल समीक्षक नहीं बन सकता।

पूर्वग्रह का दूसरा पक्ष आपके निजी मत और मान्यता से संबंधित है। समीक्षा में बलपूर्वक अपनी मान्यता को लादने की कोशिश न करें। अगर कोई पुस्तक आपकी मान्यता के विपरीत हो, तो आप तर्कसंगत ढंग से उसका विवेचन करें। अगर लेखक की बातों में दम है, तो आप उस पर ढंग से विचार करें। समीक्षा कर्म के इसी क्षेत्र में अधिकांश समीक्षक फिसल जाते हैं।

14.4.4 दृष्टि सम्पन्न

समीक्षक की दृष्टि खुली होनी चाहिए; दृष्टिगत संकीर्णता समीक्षा को कमजोर बनाती है। दृष्टिगत संकीर्णता के मुख्यतः दो कारण होते हैं—अज्ञानता और किसी मतवाद विशेष के प्रति आग्रहशील होना। अज्ञानता किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण को स्वभावतः संकीर्ण बना देती है। वह अपने अल्प ज्ञान को ही सब कुछ समझता है, और उसकी स्थिति कुएँ के मेढक के समान हो जाती है। दूसरी ओर अगर कोई व्यक्ति किसी खास विचारधारा में विश्वास रखता है परंतु दूसरों की विचारधारा का सम्मान नहीं करता तो उसके लेखन में वैचारिक पूर्वग्रह उत्पन्न हो जाएगा। अतः यह आवश्यक है कि समीक्षक को अपना दृष्टिकोण रखते हुए भी उदार और पूर्वग्रह मुक्त होना चाहिए।

एक कुशल समीक्षक को वैचारिक संकीर्णताओं से मुक्त होना पड़ता है और दुनिया में घट रही घटनाओं पर व्यापक दृष्टि डालनी पड़ती है। उसे अपना एक तर्कसंगत दृष्टिकोण भी स्थापित करना होता है। व्यापक दृष्टिकोण को लेकर ही वह किसी पुस्तक की सम्यक् समीक्षा कर सकता है।

14.4.5 वस्तुनिष्ठ

एक अच्छे समीक्षक का दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठ होना चाहिए। अपने सभी दुराग्रहों और पूर्वाग्रहों को त्यागकर किसी भी पुस्तक का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करना समीक्षक का प्रमुख दायित्व है। वस्तुनिष्ठ समीक्षा में समीक्षक यथासाध्य पूर्णतया तटस्थ रहकर पुस्तक का मूल्यांकन करता है और अपने व्यक्तिगत रागद्वेष से उसे प्रभावित नहीं होने देता। वह पुस्तक के सभी पक्षों को उनके सही परिप्रेक्ष्य में जाँचता परखता है। उन पर आत्मनिष्ठ ढंग से विचार करने की बजाय उनके अपने महत्व के अनुसार उनका विश्लेषण करता है वस्तुनिष्ठता के बिना समीक्षक पुस्तक को सही परिप्रेक्ष्य में नहीं जाँच सकता। वस्तुनिष्ठ होकर ही वह पूर्वग्रहमुक्त और आत्मनिष्ठता से मुक्त हो सकता है।

14.4.6 संतुलित लेखन

समीक्षा में संतुलित लेखन का विशेष महत्व है। इसका संबंध भी पूर्वग्रहमुक्तता, दृष्टि सम्पन्नता और वस्तुनिष्ठता से है। किसी पुस्तक की अनावश्यक बड़ाई या निंदा से समीक्षा कर्म में बाधा उत्पन्न होती है। समीक्षक का यह दायित्व होता है कि वह निष्पक्ष रहकर पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें। अगर उसे पुस्तक का कोई पक्ष अच्छा लगता है या कोई बात उसे पसन्द नहीं आती है, तो बिना किसी हिचक के उसे तर्कपूर्ण एवं शिष्टता के साथ अपनी बात कहनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे पुस्तक के सभी पक्षों पर, जैसे विषय वस्तु भाषा, शिल्प आदि पर अपने मूल्यांकन को प्रस्तुत करना चाहिए। समीक्षक को कभी भी जानबूझकर यत्नपूर्वक किसी पुस्तक की निंदा या बड़ाई नहीं करनी चाहिए। पुस्तक का सम्यक् मूल्यांकन करना एक अच्छे समीक्षक का अपरिहार्य गुण है।

14.4.7 सामाजिक दायित्व बोध

समीक्षक समाज का एक अंग होता है। समाज के प्रति भी उसका दायित्व होता है। पुस्तकों से पाठकों को परिचित कराना एक सामाजिक कार्य है। इसके माध्यम से वह ज्ञान के क्षेत्र में होने वाली हलचलों से लोगों को परिचित कराता है और उन्हें उनमें शामिल होने के लिए प्रेरित करता है। पुस्तकों को पढ़ने की प्रवृत्ति किसी समाज के सभ्य और सुसंस्कृत होने की निशानी है। इसलिए पुस्तक समीक्षा लिखने वाले लेखक का दायित्व बढ़ जाता है। पुस्तकों का चयन करने से लेकर, समीक्षा लिखने तक उसे अपने कार्य के इस सामाजिक पहलू को ध्यान में रखना चाहिए। उसे यह विचार करना चाहिए कि समाज की उन्नति के लिए किस तरह की पुस्तकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पुस्तक की समीक्षा में कौन से पहलू

उभारे जाने चाहिए। पुस्तक के मूल्यांकन का आधार क्या होना चाहिए। बेगम अनीस किदवई की संस्मरणात्मक पुस्तक **आजादी की छाँव में** में स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद होने वाले दंगों से जुड़े संस्मरण प्रस्तुत किये गये हैं। इस पुस्तक के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए निम्नलिखित समीक्षा अंश में कहा गया है:

आजादी की छाँव में *में उस भयानक समय की विस्तृत और व्यक्तिगत डायरी है जब विभाजन के समय रोज नये-नये दल आकर दिल्ली ठहरते थे और आगे पाकिस्तान जाने की राह देखते थे—हर व्यक्ति या परिवार के पीछे आग, अगवा, लूटमार की पृष्ठभूमि थी—या थी वह दहशत जो उन्हें अपने नये शरणस्थल की ओर धकेल रही थी। उन्हीं राहत कैंपों को प्रामाणिक और झकझोर देने वाली ये डायरियाँ उस काल की विभीषिका का धड़कता दस्तावेज है।*

(हंस, अगस्त 1990 में प्रकाशित गिरिराज किशोर की समीक्षा से उद्धृत है।)

बोध प्रश्न

7) समीक्षक को समीक्षा के लिए अपनी विशेषज्ञता का क्षेत्र ही क्यों चुनना चाहिए? (तीन पंक्तियों में उत्तर दें।)

.....

.....

.....

8) समीक्षक के लिए आवश्यक प्रमुख गुणों का नामोल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

9) सही कथन के आगे √ का और गलत कथन के आगे × का चिह्न लगाएँ।

क) अपने पूर्वाग्रहों का त्यागकर समीक्षक कमजोर समीक्षा ही लिख सकता है। ( )

ख) समीक्षक की दृष्टि वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए। ( )

ग) सामान्य ज्ञान की जानकारी समीक्षा कर्म में बाधक होती है। ( )

घ) दृष्टिगत संकीर्णता समीक्षक की असफलता की कुंजी है। ( )

14.5 पुस्तक समीक्षा की विशेषताएँ

पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्षों और एक अच्छे समीक्षक के गुणों की चर्चा पहले की जा चुकी है। पुस्तक समीक्षा की विशेषताएँ इन्हीं से जुड़ी हुई हैं। पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्षों पर विचार करने के क्रम में आपने अच्छी पुस्तक समीक्षा के उदाहरण भी देखे हैं। एक अच्छे समीक्षक के गुणों का प्रतिफलन अच्छी समीक्षा में होता है। पुस्तक समीक्षा की विशेषताओं पर विचार करते समय आप यह महसूस करेंगे कि यहाँ बहुत सी बातें दुहराई गयी हैं, मसलन वस्तुनिष्ठ और पूर्वग्रहमुक्त जैसे गुणों की चर्चा एक अच्छे समीक्षक के गुण के अन्तर्गत भी हो चुकी है। इसका सहज कारण यह है कि एक अच्छे समीक्षक के प्रयत्नों का परिणाम समीक्षा में ही झलकता है। इसी कारण इन दोनों गुणों का उल्लेख समीक्षा की विशेषताओं में भी किया गया है।

14.5.1 वस्तुनिष्ठता

एक अच्छी समीक्षा की पहली शर्त है—वस्तुनिष्ठता। पुस्तक समीक्षा पढ़कर पाठक को यह महसूस होना चाहिए कि इसमें पुस्तक के साथ न्याय किया गया है और समीक्षक ने

अनावश्यक रूप से भर्त्सना या स्तुति नहीं की है। पुस्तक की समीक्षा करते हुए ध्यान रखना चाहिए कि आपकी समीक्षा कहीं पुस्तक का विज्ञापन तो नहीं बन रही है। केवल प्रशंसात्मक, प्रचारात्मक और परिचयात्मक लेखन समीक्षा को विज्ञापन का रूप दे देता है। समीक्षा व्यक्तिगत राग-द्वेष से मुक्त होनी चाहिए और उसमें निहित मूल्यांकन भी संतुलित होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर आप इस इकाई में दी गयी समीक्षाओं के अंशों को फिर से पढ़ सकते हैं।

14.5.2 पूर्वग्रहमुक्तता

पुस्तक समीक्षा की इस विशेषता का उल्लेख "एक अच्छे समीक्षक के गुण" के अन्तर्गत भी किया जा चुका है। पहले उसका उल्लेख समीक्षक के सन्दर्भ में किया गया, अब समीक्षा के सन्दर्भ में किया जा रहा है, हालाँकि दोनों एक दूसरे से अभिन्न हैं। आप जानते हैं कि पुस्तक समीक्षा वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए। यह वस्तुनिष्ठता तभी आ सकती है, जब समीक्षा पूर्वग्रहमुक्त हो। जैसा कि हम पहले चर्चा कर चुके हैं पूर्वग्रह समीक्षक के व्यक्तिगत और विषयिगत दोनों ही दृष्टिकोणों से प्रभावित हो सकता है। पाठक को यह नहीं महसूस होना चाहिए कि समीक्षा समीक्षक के पूर्वग्रहों से ग्रस्त है। समीक्षक को अपनी बात कहने का हक समीक्षा में है, पर उसे ऐसा तर्कसंगत और वैज्ञानिक विवेचन के आधार पर करना चाहिए।

14.5.3 प्रासंगिकता

समीक्षा की जीवंतता के लिए उसका प्रासंगिक होना जरूरी है। एक सजग पाठक लगातार नयी पुस्तकों की जानकारी प्राप्त करता रहना चाहता है। अतः नयी पुस्तकों की समीक्षा यथाशीघ्र होनी चाहिए। पुस्तकों की समीक्षा में विलंब होने से समीक्षा के अप्रासंगिक हो जाने का खतरा बना रहता है। देर से प्रकाशित समीक्षाओं में पाठक की रुचि नहीं रह जाती है, क्योंकि वह दूसरे स्रोतों से पुस्तक से परिचित हो जाता है। कभी-कभी कोई पुस्तक भी किसी काल खंड में ही प्रासंगिक रहती है। आपातकाल के समाप्त होते ही श्री शंकरदयाल सिंह ने पुस्तक 'इमरजेंसी : क्या सच क्या झूठ' लिखी थी। उस समय वह पुस्तक प्रासंगिक थी, आज उसकी प्रासंगिकता शायद उतनी नहीं है। इस पुस्तक पर उस समय लिखी समीक्षा भी प्रासंगिक थी और अब अगर उसी पुस्तक पर समीक्षा लिखी जाए तो वह उतनी प्रासंगिक नहीं होगी। कभी-कभी कोई पुस्तक काफी दिनों बाद भी खबरों में आ जाती है, मसलन पुस्तक विशेष पर कोई पुरस्कार प्राप्त हो या उस पर कोई विवाद उठ खड़ा हो। इस स्थिति में प्रकाशन के काफी बाद में की गई समीक्षा भी प्रासंगिक हो जाती है। वस्तुतः समीक्षा के प्रासंगिक होने का सूत्र पुस्तक की प्रासंगिकता से जुड़ा हुआ है।

14.5.4 केंद्रीय बिंदु की पहचान

समीक्षा का मुख्य उद्देश्य पाठक को पुस्तक के मूल कथ्य से परिचित कराना होता है। इसे केंद्रीय बिंदु, मुख्य विचार आदि भी कहते हैं। जैसा कि आपको पहले भी बताया जा चुका है कि पुस्तक का सिर्फ सारांश प्रस्तुत करना समीक्षा का उद्देश्य नहीं होता। उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक में वर्णित कथा सुनाना भी समीक्षा नहीं है। अच्छी समीक्षा में पुस्तक के केंद्रीय विषय को सहज रूप में उजागर कर दिया जाता है। परिशिष्ट की समीक्षा पढ़ते हुए आपने महसूस किया होगा कि समीक्षक ने उपन्यास में वर्णित समस्या की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है। उसने उपन्यास की कथा उठाकर समीक्षा में नहीं रख दी है। यह बात पहले भी कही जा चुकी है कि कोई भी पाठक सिर्फ पुस्तक का सार जानने के लिए समीक्षा नहीं पढ़ता। पाठक समीक्षा के द्वारा पुस्तक की विषय वस्तु के सम्बन्ध में समीक्षक की विशेषज्ञतापूर्ण राय जानना चाहता है। इसलिए अच्छी समीक्षा केंद्रीय बिंदु या केंद्रीय कथ्य को उभारने का कार्य करती है।

14.5.5 सोद्देश्यता

पुस्तक समीक्षा पुस्तक और पाठक के बीच पुल का काम करती है। पुस्तक समीक्षा पाठक को पुस्तक से जोड़ती है। पुस्तक समीक्षा के माध्यम से वह पुस्तक से पहला परिचय प्राप्त करता है। वह पुस्तक की विषय वस्तु से परिचित होता है उसके महत्व और प्रासंगिकता को जानकर यह तय करता है कि उसे यह पुस्तक पढ़नी चाहिए या नहीं। इसलिए यह जरूरी है कि समीक्षा सोद्देश्यपूर्ण हो। समीक्षा लिखते हुए समीक्षक को ध्यान रखना चाहिए

कि वह एक दायित्वपूर्ण कार्य कर रहा है। पुस्तक की समीक्षा इस प्रकार प्रस्तुत करनी चाहिए कि पाठक के सामने सारी तस्वीर स्पष्ट हो जाए। पाठक के मन में यह जिज्ञासा होती है कि पुस्तक का केंद्रीय कथ्य क्या है, इसकी भाषा और शैली कैसी है, लेखक का दृष्टिकोण क्या है आदि। समीक्षा पाठक की इन जिज्ञासाओं को ध्यान में रखकर लिखी जानी चाहिए। अन्यथा समीक्षा अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकेगी। पाठक समीक्षा से निराश होगा और उसकी उपयोगिता पर प्रश्न चिह्न लग जाएगा।

14.5.6 निजता

प्रत्येक समीक्षक का दृष्टिकोण और उसकी लेखन शैली अलग-अलग होती है; इसकी झलक समीक्षा में मिलती है। समीक्षक की विश्लेषण क्षमता के कारण भी समीक्षाओं का स्वरूप अलग-अलग होता है। लेखन की यह निजता समीक्षा का खास गुण है। प्रत्येक नये समीक्षक को अपने में यह गुण विकसित करना चाहिए। लेकिन निजता के नाम पर दुरूहता, अत्यधिक विद्वता या गुरुगम्भीर पाठक पसंद नहीं करता। समीक्षा में स्पष्टता और सहजता ही आमतौर पर पसंद की जाती है। पुस्तक समीक्षा आलोचना का प्रथम चरण है उसमें बहुत गुरु गंभीर होने या अपने मत को दृढ़तापूर्वक और विस्तार से प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए आलोचना या निबंध में ज्यादा अवकाश रहता है।

14.5.7 भाषा एवं शैलीगत विशेषताएँ

समीक्षा की भाषा सहज, सरल और सम्प्रेष्य होनी चाहिए। समीक्षा का उद्देश्य होता है, पाठकों को पुस्तक की जानकारी देना। इसलिए समीक्षा में भाषा का दुरूहपन क्षम्य नहीं है। कठिन और दुरूह भाषा में पाठक उलझकर रह जाता है और पुस्तक की सही जानकारी हासिल करने में उसे कठिनाई महसूस होती है। समीक्षा की भाषा के साथ-साथ उसकी शैली भी सुपाठ्य और आकृष्ट करने वाली होनी चाहिए। समीक्षा का लेखन और विश्लेषण इस ढंग का होना चाहिए कि पाठक शुरू से लेकर अंत तक समीक्षा पढ़ने को बाध्य हो जाए और पुस्तक की पूरी तस्वीर उसके सामने स्पष्ट हो जाए। लेखन शैली की यह परिपक्वता समीक्षक के लिए विस्तृत ज्ञान और प्रस्तुति की कुशल क्षमता पर निर्भर होती है। समीक्षक तर्कसंगत ढंग से, चरण दर चरण पुस्तक का विश्लेषण कर अपनी शैली को आकर्षक और सम्प्रेष्य बना सकता है। समीक्षा जितनी अधिक सहज और सम्प्रेष्य होगी, उसकी महत्ता उतनी ज्यादा होगी। भाषा और शैली की दुरूहता में जकड़ी समीक्षा कभी भी श्रेष्ठ समीक्षा की कोटि में नहीं आ सकती।

समीक्षा की भाषा-शैली का निम्नलिखित उदाहरण देखिए:

सत्येन के इन दोनों संग्रहों में दो तरह की कहानियाँ हैं—लंबी और छोटी। मुझे चार लंबी और चार छोटी कहानियाँ अच्छी लगी। लेकिन मैं चार लंबी और दो छोटी कहानियों का जिक्र करना चाहूँगा, इसलिए कि मैंने इन्हें एकाधिक बार पढ़ा है और मैं समझता हूं कि जो कहानी पाठक को याद रहती है या हांट करती है अथवा पुनः पढ़ने के लिए उकसाती है और दोबारा पढ़ने पर नया रस देती है, वही मूल्यवान् है। पचास साठ वर्षों से निरंतर कहानियाँ पढ़ते और उनमें रस पाते हुए बेमिनती कहानियों के नाम या कथानक मेरे दिमाग में सुरक्षित हैं। लेकिन ऐसी कहानियां बहुत ही कम हैं जिन्हें बार-बार पढ़ने की इच्छा हुई हो। सत्येन के यहां चंद ऐसी कहानियां हैं यह बात उसके कथाकार के सामर्थ्य की द्योतक है।

(सत्येन कुमार के दो कहानी संग्रहों पर लिखी उपेंद्रनाथ अश्क की समीक्षा का अंश, **हंस—जनवरी, 1989 से उद्धृत**)

बोध प्रश्न

10) एक अच्छी समीक्षा को वस्तुनिष्ठ और पूर्वग्रहमुक्त क्यों होना चाहिए? (सही उत्तर के सामने √ का चिह्न लगाएँ।

क) वस्तुनिष्ठ और पूर्वग्रहमुक्त हुए बिना भी अच्छी समीक्षा लिखी जा सकती है। ( )

ख) पुस्तक की संतुलित विवेचना हो, इसलिए समीक्षा का वस्तुनिष्ठ और पूर्वग्रह रहित होना जरूरी है। ( )

ग) वस्तुनिष्ठ और पूर्वग्रह रहित समीक्षा कमजोर समीक्षा मानी जाती है। ( )
घ) उपर्युक्त कोई उत्तर सही नहीं है। ( )

11) समीक्षा की प्रासंगिकता से आप क्या समझते हैं? (दो पंक्तियों में उत्तर दें)

.....

.....

12) केंद्रीय बिंदु की पहचान न कर पाने से समीक्षा में क्या खतरा रहता है? (सही उत्तर के सामने (√) का और गलत उत्तर के सामने (×) का चिह्न लगाएँ)।

क) समीक्षा पुस्तक का सारांश बन जाती है। ( )
ख) पुस्तक का सम्यक् मूल्यांकन हो जाता है। ( )
ग) समीक्षा में पुस्तक की विषय वस्तु का सही मूल्यांकन नहीं हो पाता है। ( )
घ) केंद्रीय बिंदु को पहचाने या न पहचानने से समीक्षा में कोई फर्क नहीं पड़ता है। ( )

13) समीक्षा की भाषा और शैली कैसी होनी चाहिए? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दें)

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

3) किसी पठित पुस्तक पर प्रकाशित समीक्षा को पढ़कर इकाई में बताई विशेषता के आधार पर उसका मूल्यांकन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) उपर्युक्त पुस्तक की समीक्षा स्वयं लिखने का प्रयास कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

14.6 सारांश

- इस इकाई में आपने समीक्षा के विभिन्न पक्षों की सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त की। अब आप समीक्षा का अर्थ, समीक्षा और आलोचना में अंतर, समीक्षा की विशेषताएँ और एक अच्छे समीक्षक के गुण से अवगत हो गये हैं।
- पुस्तक समीक्षा में पुस्तक का परिचय और मूल्यांकन प्रस्तुत किया जाता है। पुस्तक समीक्षा और आलोचना स्वभाव से अभिन्न हैं, पर परिभाषा की दृष्टि से उनमें अंतर है। पुस्तक समीक्षा और आलोचना का मूल अंतर यह है कि समीक्षा में जहाँ पुस्तक केंद्र में होती है, वहाँ आलोचना में पुस्तक संदर्भ के रूप में शामिल की जाती है।
- एक अच्छा समीक्षक अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में ही हाथ डालता है। उसका सामान्य ज्ञान विस्तृत होता है और वह दृष्टि सम्पन्न होता है। उसका लेखन संतुलित होता है, क्योंकि वह पूर्वग्रहग्रस्त नहीं होता और उसकी दृष्टि वस्तुनिष्ठ होती है।
- अच्छी समीक्षा के प्रमुख गुण हैं—वस्तुनिष्ठता, पूर्वग्रह रहित होना, प्रासंगिकता, केंद्रीय बिंदु को पहचानना और सरल भाषा तथा तार्किक शैली का प्रयोग। एक अच्छी समीक्षा को पुस्तक का विज्ञापन होने से बचना चाहिए।

14.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) पुस्तक समीक्षा में पुस्तक की विषय वस्तु का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसके विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया जाता है। (देखें 14.2)

2) क) × ख) √ ग) × घ) √

3) पुस्तक समीक्षा पाठक समुदाय से पुस्तक का परिचय कराती है। साथ ही यह पुस्तक का संक्षिप्त परंतु समग्र मूल्यांकन भी प्रस्तुत करती है। (देखें 14.2.2)

4) क) पुस्तक का सामान्य परिचय
ख) लेखक का संक्षिप्त परिचय
ग) पुस्तक की विषय वस्तु का संकेत

5) द्रष्टव्य, उपभाग 14.3.2 का प्रथम पैरा।

6) मूल्यांकन संतुलित हो, पूर्वग्रहमुक्त हो, तर्कसंगत हो आदि। (देखें 14.3.3)

7) समीक्षक अपनी विशेषज्ञता के आधार पर पुस्तक का सही मूल्यांकन कर सकता है। (देखें 14.4.1)

8) समीक्षक के गुण हैं–विशेषज्ञता, विस्तृत सामान्य ज्ञान, पूर्वग्रहमुक्त, दृष्टि सम्पन्न, वस्तुनिष्ठ आदि। (देखें 14.4.1)

9) क) × ख) √ ग) × घ) √

10) ख)

11) जो समीक्षा सही समय पर प्रकाशित होती है, उसी समीक्षा को प्रासंगिक माना जाता है। पुस्तक पुरानी पड़ने पर या उसका महत्व समाप्त होने पर की गयी समीक्षा अप्रासंगिक हो जाती है क्योंकि पाठक की उसमें रुचि नहीं रहती है। (देखें 14.5.3)

12) क) √ ख) × ग) √ घ) ×

13) भाषा सरल, सहज सम्प्रेष्य। भाषा दुरूह नहीं। तर्कसंगत और विश्लेषणात्मक शैली। (देखें 14.5.7)

अभ्यास

अभ्यासों के उत्तर इकाई **और** पढ़कर स्वयं लिखें और परामर्शक को दिखाएं।

इकाई 15 पुस्तक समीक्षा : लेखन एवं प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य
15.1 प्रस्तावना
15.2 पुस्तक समीक्षा के प्रकार
  15.2.1 परिचयात्मक समीक्षा
  15.2.2 विश्लेषणात्मक समीक्षा
  15.2.3 मूल्यांकनपरक समीक्षा
15.3 लेखन की तैयारी
  15.3.1 पुस्तक का अध्ययन
  15.3.2 तथ्यों की जाँच
  15.3.3 अन्य पुस्तकों का अध्ययन
  15.3.4 पुस्तक की प्रासंगिकता
15.4 पुस्तक समीक्षा का लेखन
  15.4.1 पुस्तक एवं लेखक का परिचय
  15.4.2 केंद्रीय भाव को उजागर करना
  15.4.3 विषय वस्तु का मूल्यांकन
  15.4.4 भाषा-शैली का मूल्यांकन
  15.4.5 प्रकाशन स्तर एवं मूल्य
15.5 पुस्तक समीक्षा की प्रस्तुति
  15.5.1 आरंभ
  15.5.2 मध्य भाग या मुख्य कलेवर
  15.5.3 अंतिम भाग
  15.5.4 भाषा-शैली
15.6 सारांश
15.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई "पुस्तक समीक्षा : लेखन एवं प्रस्तुति" इकाई 14 (समीक्षा की विशेषताएँ एवं समीक्षक) की अगली कड़ी है और दोनों इकाइयाँ एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- पुस्तक समीक्षा के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख कर सकेंगे;
- समीक्षा लेखन से पूर्व की जाने वाली तैयारियों के बारे में बता सकेंगे;
- पुस्तक समीक्षा के लेखन में प्रवृत्त हो सकेंगे; और
- पुस्तक समीक्षा की प्रस्तुति का ढंग बता सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई (इकाई 14) में आपने समीक्षा और समीक्षक की विशेषताओं की जानकारी प्राप्त की। अब समीक्षा का अर्थ आपके सामने स्पष्ट है और आप पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्षों (पुस्तक का परिचय, विषय वस्तु, मूल्यांकन, प्रकाशन आदि) की मूलभूत जानकारी हासिल कर चुके हैं। एक अच्छे समीक्षक और अच्छी समीक्षा का मानदंड भी आपके सामने स्पष्ट है।

अब इस इकाई में हम लेखन की ओर बढ़ेंगे। पर, लेखन शुरू करने से पहले पुस्तक समीक्षा के विभिन्न प्रकारों की जानकारी आपको दी जाएगी ताकि आप यह तय कर सकें कि किस प्रकार की समीक्षा लिखनी है। इसके बाद हम इस इकाई में यह बताएंगे कि समीक्षा लेखन से पहले किस प्रकार की तैयारी करनी पड़ती है। समीक्षा लिखने से पहले समीक्षक को समीक्ष्य पुस्तक गंभीरता से पढ़नी होती है, तथ्यों की जाँच करनी पड़ती है, पुस्तक की प्रासंगिकता पर विचार करना होता है आदि-आदि। इन सब बातों का उल्लेख इस इकाई के भाग 15.3 में हुआ है। इसके बाद समीक्षक समीक्षा लेखन की दिशा में प्रवृत्त होता है। अंत में हमने यह भी बताया है कि पुस्तक समीक्षा को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है।

इस इकाई में हम आपको समीक्षा लिखना सिखा रहे हैं। इसलिए हमने इस इकाई में ज्यादा से ज्यादा उदाहरण दिए हैं और आपके लिए जगह-जगह अभ्यास प्रश्न दिए गये हैं। आप अभ्यास कार्य मेहनत और लगन से करें। इससे आपके लेखन में सुधार आएगा। आप कोई पुस्तक पढ़ने बैठें तो यह कोशिश करें कि आपके भीतर बैठा हुआ समीक्षक सक्रिय रहे। आप जितना अधिक लिखने का अभ्यास करेंगे आपके समीक्षा-लेखन में उतना ही सुधार होगा। आप पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाली पुस्तक समीक्षाओं को ज्यादा से ज्यादा पढ़ें, इससे आपकी दृष्टि व्यापक होगी और आप समीक्षा लेखन में अधिक समर्थ हो सकेंगे।

15.2 पुस्तक समीक्षा के प्रकार

इकाई 14 मेंआप पढ़ चुके हैं कि पुस्तक समीक्षा में पुस्तक का सामान्य परिचय, विषय वस्तु, उसकी भाषा-शैली, उसके महत्व और प्रकाशन स्तर के बारे में बताया जाता है। यह भी आप जान चुके हैं कि पुस्तक समीक्षा का अर्थ पुस्तक का परिचय या उसकी विषय वस्तु का सार मात्र नहीं है बल्कि समीक्षक की आलोचनात्मक दृष्टि का भी महत्व होता है और वह पूरी पुस्तक पर अपना मूल्यांकन भी प्रस्तुत करता है। समीक्षा के उपर्युक्त सभी पक्ष समीक्षा में संतुलित रूप में मौजूद हों यह आवश्यक नहीं है। किसी समीक्षा में एक पक्ष पर अधिक जोर हो सकता है, तो दूसरे में दूसरे पर। इनके आधार पर हम पुस्तक समीक्षा को तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। 1) परिचयात्मक समीक्षा, 2) विश्लेषणात्मक समीक्षा, 3) मूल्यांकनपरक समीक्षा। **परिचयात्मक समीक्षा, जहाँ केवल पुस्तक के सामान्य परिचय तक सीमित होनी है, वहीं विश्लेषणात्मक समीक्षा में पुस्तक में वर्णित विषय का विश्लेषण भी होता है। मूल्यांकनपरक समीक्षा में आलोचनात्मक-तुलनात्मक मूल्यांकन** पर विशेष बल दिया जाता है और साथ ही साथ उसी विषय पर लिखी गयी दूसरी पुस्तक या पुस्तकों से तुलना भी की जाती है। आइए, इन तीनों प्रकार की समीक्षा पद्धति पर विचार करें।

15.2.1 परिचयात्मक समीक्षा

परिचयात्मक समीक्षा पद्धति समीक्षा लिखने की सरल और लोकप्रिय पद्धति है। इस प्रकार की समीक्षा में समीक्षक पुस्तक की विषय वस्तु और उसके महत्व से पाठक को परिचित कराता है तथा पुस्तक की आलोचना पर वह कम जोर देता है। इसी दृष्टि से इस प्रकार की समीक्षा का महत्व भी है।

समीक्षा का स्वरूप बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस प्रकार के पाठक वर्ग के लिए लिख रहे हैं। परिचयात्मक समीक्षा का पाठक वर्ग पुस्तकों की "सूचना" प्राप्त करने में विशेष दिलचस्पी रखता है ताकि वह अपनी मनपसंद पुस्तक का चुनाव कर सके। व्यवसायिक पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाली अधिकांश पुस्तक-समीक्षाएँ इसी प्रकार के पाठकों को संबोधित होती है।

अधिक से अधिक पाठकों तक पुस्तक को पहुँचाना इस प्रकार की पुस्तक समीक्षा का प्रमुख उद्देश्य होता है। वस्तुत: पुस्तक समीक्षा की यह अनिवार्य शर्त है कि वह पाठक को पुस्तक से परिचित कराए। "पुस्तक-परिचय" पुस्तक समीक्षा का अनिवार्य अंग है, जिसे परिचयात्मक समीक्षा में विशेष प्रमुखता दी जाती है।

परिचयात्मक समीक्षा में पुस्तक की विषय वस्तु से पाठक को अवगत कराया जाता है। इस प्रकार की समीक्षा में पुस्तक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, पुस्तक का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ हम **भाषा** में प्रकाशित डॉ. भक्तराम शर्मा की पुस्तक **नेहरू अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य** पर श्री अशोक जैन की समीक्षा का एक अंश उदाहरणस्वरूप पेश कर रहे हैं:

स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने भारत में ही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जितनी लोकप्रियता अर्जित की, वह दुर्लभ है। निःसंदेह वे बीसवीं शताब्दी के महानतम व्यक्तियों में से थे। विश्व के चोटी के नेताओं ने उन्हें संपूर्ण मानव जाति का नेता स्वीकार किया है। विश्व नागरिक के रूप में उनकी ख्याति लिंकन, चर्चिल तथा माओ के समान हुई।

विलक्षण बुद्धि के धनी जवाहरलाल नेहरू के चमत्कारी व्यक्तित्व ने समूची मानव जाति पर अपने आदर्शों, विचारों एवं कार्यों की ऐसी अमिट छाप छोड़ी है कि भारतीय एवं विदेशी विद्वानों, नेताओं, चिंतकों ने उनके प्रति अपार श्रद्धामय विचार व्यक्त किए हैं। डॉ. भक्त राम शर्मा की पुस्तक "नेहरू: अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य" इसी श्रृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। प्रस्तुत पुस्तक में नेहरू को विश्व मानव, विश्व शांति के अग्रदूत, भारतीय समाजवाद के जनक, लोकतांत्रिक परंपराओं के निर्माता, महान स्वतंत्रता सेनानी, विश्वव्यापी शाश्वत साहित्य के रचयिता, भारत-सोवियत मित्रता के प्रधान प्रवर्तक के रूप में पहचाना और उनकी उपलब्धियों को रेखांकित किया गया है। पुस्तक में अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में नेहरू की सफल भूमिका का मूल्यांकन किया गया है और अंत में उनके व्यक्तित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

(**भाषा**, वर्ष 29 अंक 1)

इसी प्रकार की परिचयात्मक समीक्षा के कुछ और उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं:

चाबू: *प्रस्तुत एकांकी संग्रह में बारह रचनाएँ संग्रहीत हैं। ये सभी एकांकी कमोबेश फैंटेसी हैं। वास्तविकता की भूमि पर ये रचनाएँ अवास्तव हैं, क्योंकि इनके चरित्र और प्रस्तुति का अंदाज बड़ा ही नाटकीय है, कहीं-कहीं तो विशुद्ध फिल्मी ढंग अपनाया गया है। इतना होते हुए भी ये एकांकी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनकी रचना में सधा हुआ हाथ है और कलागत ऊँचाई के लिए ये रचनाएँ किसी की मोहताज नहीं है।*
लेखक: बलवंत गार्गी, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, मूल्य: पैंसठ रुपये।

(**कादम्बिनी**, जुलाई, 1990 से उद्धृत)

उपर्युक्त उदाहरण परिचयात्मक समीक्षा के स्वरूप को उद्घाटित करते हैं। इन समीक्षाओं का मुख्य उद्देश्य है—पाठक को पुस्तक की संक्षिप्त जानकारी देना। इन सभी समीक्षाओं में "पुस्तक-परिचय" को महत्व दिया गया है, विश्लेषण और मूल्यांकन को नहीं। इन समीक्षाओं को पढ़ते वक्त आपने महसूस किया होगा कि ये समीक्षाएँ पाठक को पुस्तक के बारे में जानकारी देकर उन्हें पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

परिचयात्मक समीक्षा भी दो प्रकार की होती है। इसे विस्तृत परिचयात्मक समीक्षा और संक्षिप्त परिचयात्मक समीक्षा के खानों में विभक्त किया जा सकता है। "कादम्बिनी" से उद्धृत समीक्षा संक्षिप्त परिचयात्मक समीक्षा का उदाहरण है। इस प्रकार की समीक्षाओं में पुस्तक के कलेवर और विषय वस्तु का संकेत मात्र किया जाता है। इनमें विषय वस्तु का विस्तार से उल्लेख नहीं होता है। भाषा से उद्धृत समीक्षा विस्तृत परिचयात्मक समीक्षा का उदाहरण है। इस तरह की समीक्षा केवल पुस्तक के बारे में संकेत करके ही नहीं रह जाती है, बल्कि पुस्तक की विषय वस्तु की जानकारी विस्तार के साथ प्रस्तुत करती हैं। उद्धृत समीक्षा पुस्तक समीक्षा का आरंभ मात्र है। इसके बाद समीक्षक ने विस्तार के साथ पस्तक के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया है। आइए, **नेहरू: अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य** की समीक्षा के आगे के अंश पर नजर डालें।

पुस्तक में लेखक ने नेहरू जी के आदर्शों एवं विचारों को उनके ही भाषण के अंशों के माध्यम से रेखांकित किया है जो उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की झलक प्रस्तुत करते हैं।

उन्होंने "समाजवाद" पर अपने सुचिंतित विचार इस प्रकार व्यक्त किए थे—"मैं उस प्रकार के कट्टर राज्य-समाजवाद का समर्थन नहीं करता, जिसमें सरकार सर्व-शक्तिमान होती है और प्रायः सब कुछ उसकी इच्छा पर निर्भर करता है। मैं आर्थिक शक्ति का विकेंद्रीकरण चाहता हूं—निःसंदेह, हम लोहे, इस्पात और इसी प्रकार के बड़े उद्योगों का विकेंद्रीकरण नहीं कर सकते लेकिन अन्य छोटे-छोटे कारखाने रखे जा सकते हैं। जहाँ तक संभव हो, उन्हें सहकारिता के आधार पर रखा जाए और उन पर सरकार का नियंत्रण रहे। इस विषय में मैं रूढ़िवादी बिलकुल नहीं हूँ। हमें व्यावहारिक अनुभव से सीखना और अपने तरीके से "आगे बढ़ना" है।" (पृ. 52-53)

ऊपर के उदाहरण को आप ध्यान से पढ़ें। आप देख रहे हैं कि किस प्रकार पुस्तक में वर्णित नेहरू के विचारों को समीक्षक विस्तार के साथ पाठक के सामने रख रहा है। इसके लिए वह पुस्तक में संकलित नेहरू के विचारों को भी अपनी परिचयात्मक समीक्षा में उद्धृत कर रहा है। नेहरू के व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं पर भी पुस्तक पर विचार किया गया है, इसकी सूचना समीक्षक इस प्रकार देता है:

सन् 1951 ई. में राष्ट्र संघ में बोलते हुए उन्होंने कहा था—"मैं केवल प्रधानमंत्री नहीं हूँ, उससे कुछ ज्यादा हूँ। मैं आदमी हूँ, इन्सान हूँ। अक्सर मैं थोड़ी-सी रोशनी पाने के लिए मन ही मन संघर्ष किया करता हूँ। मेरी बेचैनी का सबब यह है कि मैं समझना चाहता हूँ कि इन्सान को, दरअसल होना कैसा चाहिए। मैं उस सत्य का रास्ता पाना चाहता हूँ।" (पृष्ठ 27)

पुस्तक में वर्णित अन्य पक्षों को विस्तार से पाठक के सामने रखता हुआ, समीक्षक अपना मत भी सामने रखता है:

"एकपक्षीय होते हुए भी यह पुस्तक नेहरू के बहुआयामी व्यक्तित्व की अंतर्राष्ट्रीय कार्य-शैली, सोच पर जो प्रकाश डालती है और विभिन्न संदर्भों को जितनी गहराई से छूती है, वह न केवल महत्वपूर्ण है बल्कि पुस्तक को पठनीय भी बनाती है।"

पुस्तक के कलेवर, विषय वस्तु और स्वरूप की जानकारी प्रदान करने के साथ-साथ पुस्तक समीक्षा में पुस्तक की प्रकाशन संबंधी सूचना भी अवश्य देनी चाहिए। इससे पाठक को पुस्तक प्राप्त करने में आसानी होगी। इस पक्ष पर हम आगे अलग से विचार करेंगे।

इस प्रकार परिचयात्मक समीक्षा में निम्नलिखित बातों का समावेश होता है:

1) पुस्तक का परिचय, यह संक्षेप में भी हो सकता है और विस्तार से भी। यह परिचयात्मक समीक्षा का केंद्रीय बिंदु है।

2) पुस्तक के महत्व का प्रतिपादन (इसमें पुस्तक की प्रासंगिकता का भी उल्लेख होना चाहिए)।

3) पुस्तक का संक्षिप्त मूल्यांकन (इसके अंतर्गत विषय, भाषा, शैली एवं प्रकाशन स्तर का मूल्यांकन संक्षेप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए)।

4) पुस्तक के प्रकाशन से संबंधित सूचनाएँ।

15.2.2 विश्लेषणात्मक समीक्षा

विश्लेषणात्मक समीक्षा में पुस्तक में वर्णित विषय, प्रस्तुति और भाषा-शैली का विश्लेषण किया जाता है। परिचयात्मक समीक्षा में जहाँ समीक्षक पुस्तक को पाठक के सामने रख भर देता है, वहीं विश्लेषणात्मक समीक्षा में वह पुस्तक के विभिन्न पहलुओं की छानबीन करता है। परिचयात्मक समीक्षा यदि पुस्तक का फोटो चित्र है, तो विश्लेषणात्मक समीक्षा उसका एक्सरे चित्र। वह पुस्तक के विषय, प्रस्तुति और भाषा की छानबीन एक सधे हुए वैज्ञानिक की तरह करता है और अपने इस विश्लेषण को पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर देता है।

इस प्रकार की समीक्षा का उद्देश्य पाठकों को पुस्तक की अधिक विस्तृत जानकारी देना है तथा उसकी मूल्यवत्ता से भी पाठकों को परिचित कराना होता है। इस समीक्षा का पाठक वर्ग पुस्तक-परिचय से संतुष्ट नहीं होता, बल्कि वह पुस्तक में लेखक के दृष्टिकोण, विषय

पर लेखक की पकड़, भाषा और प्रस्तुति के ढंग पर विस्तार से जानना चाहता है। इस प्रकार की समीक्षाएँ उन पाठकों के लिए होती हैं जो पुस्तक के एकेडमिक स्तर से भी परिचित होना चाहते हैं तथा समीक्षक के विचारों को भी जानना चाहते हैं। इस तरह की समीक्षा पाठकों द्वारा पुस्तक के पढ़े जाने के बाद भी मूल्यवान होती हैं, बल्कि कई बार ये समीक्षाएँ पठित पुस्तक को नयी दृष्टि से जानने-समझने का अवसर भी प्रदान करती हैं।

विश्लेषणात्मक समीक्षा में "परिचय" का अंश बिलकुल नहीं होता, ऐसी बात नहीं है। पर इस प्रकार की समीक्षा में पुस्तक का संक्षिप्त सा परिचय देता हुआ समीक्षक विश्लेषण की ओर अग्रसर हो जाता है। इस तरह की विश्लेषणात्मक समीक्षा का एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास **झीनी-झीनी बीनी चदरिया** पर परमानंद श्रीवास्तव द्वारा लिखित समीक्षा का एक अंश विश्लेषणात्मक समीक्षा को समझने में सहायक होगा:

परजीवी और मेहनतकश का संघर्ष **झीनी-झीनी बीनी चदरिया** की मुख्य कथा-भूमि हैं। इस *संघर्ष में जिंदगी की दूसरी सच्चाइयाँ गुम नहीं हो गयी हैं। यहाँ वे प्रेम प्रसंग भी हैं जो जिंदगी से लगाव और खुली जिंदगी की इच्छा या विकलता के हिस्से में आते हैं। मतीन के साथ नजबुनिया की कहानी भी अंत तक चलती है। लतीफ और कमरून, शरफुद्दीन और रेहनवाँ के संबंधों में जिंदगी से कभी महज तात्कालिक और कभी गहरा लगाव नज़र आता है। गिरस्तों के एकाधिकार को चुनौती देने के लिए शुरू से ही मतीन "सोसायटी" या संगठन को हथियार बनाना चाहता है पर अपने ही वर्ग से आये हनीफ़ जैसों के छल के कारण और गिरस्तों के साथ उनके हित-समीकरण के चलते "सोसायटी" कल्पना बनकर ही रह जाती है। मतीन और रऊफ चाचा जैसे लोग टूटते जाते हैं। फिर भी वे संघर्ष का रास्ता छोड़ते नहीं और जिंदगी के यथार्थ से उलझते रहते हैं, इसलिए भविष्य के लिए एक उम्मीद बनी रहती है। प्रकृति और मनुष्य के गहरे अंतर्संबंध के व्यंजक चित्र से उपन्यास शुरू ही नहीं होता, खत्म भी होता है।"*

(**आलोचना**-84, जनवरी-मार्च 1988, पृ. 88)

विश्लेषणात्मक समीक्षा में समीक्षक विषय वस्तु का विश्लेषण करते हुए उसकी विशेषताओं और सीमाओं को उजागर करता जाता है। अगर पुस्तक ज्ञान-विज्ञान के ऐसे क्षेत्र से संबंधित है जहाँ तथ्यों और आँकड़ों का महत्व होता है, वहाँ समीक्षक अपने स्रोतों से प्राप्त ज्ञान का उपयोग पुस्तक के विश्लेषण में करता है। पुस्तक का विश्लेषण करने के लिए उस क्षेत्र में स्वयं समीक्षक का पर्याप्त दखल होना जरूरी है। लेकिन यहाँ भी यह आवश्यक है कि वह अपने पूर्वग्रह और पसंद-नापसंद से मुक्त हो। साथ ही यह भी जरूरी है कि उसके पास गहरी अंतर्दृष्टि भी होनी चाहिए ताकि पुस्तक में कही गयी बातों के मर्म को वह समझ सके। विश्लेषणात्मक समीक्षा में समीक्षक को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि लेखक ने पुस्तक के कथ्य को किस रूप में प्रस्तुत किया है। क्या पाठकों तक लेखक का मंतव्य पहुँच पाएगा? भाषा और शैली के स्तर पर किसी तरह की कठिनाई तो नहीं होगी? इनको ध्यान में रखकर अगर वह पुस्तक के विश्लेषण की ओर प्रवृत्त होगा तो वह विश्लेषण के साथ-साथ पुस्तक का सम्यक् मूल्यांकन भी प्रस्तुत कर सकेगा।

15.2.3 मूल्यांकनपरक समीक्षा

मूल्यांकनपरक समीक्षा में समीक्षक एक कदम आगे बढ़ता है और पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है। इस मूल्यांकन के क्रम में वह उसी विषय पर लिखी गयी दूसरी पुस्तकों से तुलना भी करता है। इस प्रकार की समीक्षा में भी पुस्तक-परिचय का अंश होता है, पर इसका महत्व यहाँ गौण होता है। इसमें पुस्तक का विश्लेषण भी होता है, क्योंकि विश्लेषण के अभाव में किसी कृति का मूल्यांकन संभव नहीं है। पर इस प्रकार की समीक्षा में पुस्तक का मूल्यांकन हावी रहता है। इसके लिए समीक्षक उस पुस्तक में प्रासंगिकता, रचनाधर्मिता और मूल्यवत्ता की खोज करता है। पुस्तक में लेखक का उद्देश्य क्या है? क्या अपने उद्देश्य में वह सफल हुआ है? वस्तुतः इस प्रकार की समीक्षा में समीक्षक की दृष्टि व्यापक हो जाती है और इसी व्यापकता के कारण समीक्षा आलोचना क्षेत्र की सीमा को छूने लगती है। इस प्रकार की समीक्षा में आलोचना धर्म प्रमुख हो जाता है। पर पुस्तक समीक्षा लिखते समय समीक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि

उसकी समीक्षा पुस्तक केंद्रित रहे। मूल्यांकनपरक समीक्षा के कुछ उदाहरण हम आपके सामने रख रहे हैं, जिससे ऊपर कही गयी बातें और स्पष्ट हो जाएँगी। निदा फ़जली की कविता पुस्तक **मोरनाच** पर समीक्षा लिखते हुए विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं:

निदा फ़ाज़ली धीमी आवाज़ में बोलते हैं। वे शोर नहीं मचाते। कवि रूप में यह उनके आत्म-विश्वास का द्योतक है। इस तरह धीमे बोलने वाले एक ही समकालीन उर्दू कवि को जानता हूं—अख़्तर-उल-ईमान को। किसी और को नहीं। न हिन्दी में न उर्दू में। अख़्तर-उल-ईमान की ही तरह निदा फ़ाज़ली भी बच-बचाकर शायरी करते हैं। बच-बचाकर यानी जो पहले कह दिया गया है या जिसे और शायर कह रहे हैं उसे न कहकर, उससे बचकर कुछ अपना कहने की कोशिश। धीमी बात का असर ज़्यादा होता है।

(समकालीन भारतीय साहित्य, वर्ष 10 अंक 39)

उपर्युक्त उद्धृत पंक्तियों में निदा फ़ाज़ली की काव्य शैली का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। आगे इसी काव्य संग्रह की भाषा का मूल्यांकन करते हुए त्रिपाठी जी लिखते हैं:

उनकी भाषा को पढ़कर फ़िराक़ का कथन याद आता है कि हिन्दी वाले नहीं समझते कि प्रेमचंद की भाषा कितनी डि हिन्दी आइज्ड (अहिन्दी कृत) है और उर्दू वाले नहीं समझते कि उनकी भाषा कितनी डि उर्दू आइज्ड (अउर्दूकृत) है। निदा फ़ाजली वस्तुतः हिन्दी और उर्दू की कृत्रिम एवं संकीर्णतावादी सीमाएँ तोड़ते हैं। भाषा ही नहीं वे काव्यरूपों, शब्द-बन्धों और छन्दों की भी सीमाएँ तोड़ते हैं। उनके गीतों की लय हिन्दी कवियों की लय के समान है। ग़ज़लों में बेराहरवी नहीं लेकिन उनमें फ़ारसी ध्वनि-प्रवाह की अनुकूलता में प्रवाहित घुलावट नहीं इसी से उनकी पंक्तियाँ ग़ालिब, शोफ़्ता, इक़बाल की अपेक्षा वली और अमीर खुसरों की पंक्तियों से मिलती हैं जिनमें प्रवाहरुद्धता है। उनकी खड़ी बोली का खड़ापन बरकरार है। यह खड़ापन या खरखराहट रूढ़ि-विरोध का लय-संकेत है।

(समकालीन भारतीय साहित्य, वर्ष 10 अंक 39)

इसी प्रकार शमशेर के काव्य संग्रह **काल, तुझसे होड़ है मेरी** पर व्यापक दृष्टि डालते हुए विष्णु चंद्र शर्मा लिखते हैं:

निराला के बाद जो भी वास्तविक प्रेमी कवि रहे हैं, उनकी कविता में नारी का सुडौल बदन एक आबशार (जल-प्रपात) रहा है। शमशेर "प्रेयसी" कविता में उसे कोमल कांसे में ढला/गोलाइयों का आईना" कहते हैं। इस प्रेम-काव्य में अज्ञेय, नरेन्द्र शर्मा, शमशेर, फ़ैज और पाब्लो नेरूदा एक पंक्ति के आकर्षक और मोहक कवि हैं। शमशेर ने इसी प्रेम की स्वाभाविक चेतना को "व्यक्तित्व का अदृश्य सागर" कहा है। शमशेर इसी चेतना को कविता भी कहते हैं। कविता शमशेर के लिए जीवन का सुख है। व्यक्तित्व की समस्त कल्पना के पीछे का सत्य है। सही मानों में शमशेर इसी सुरुचिपूर्ण सरल, सहवास के सौंदर्य के बड़े आत्मीय कवि हैं।

(समकालीन भारतीय साहित्य, वर्ष 10 अंक 40)

मूल्यांकनपरक पुस्तक समीक्षा का तात्पर्य यह नहीं है कि समीक्षक पुस्तक पर न्यायाधीश की तरह निर्णय दें। इसके विपरीत वह पुस्तक का तर्कपूर्ण विवेचन करता हुआ उसके महत्व और योगदान के अनुसार अपना मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। इस तरह की समीक्षा लिखने वाले समीक्षक को अपने मूल्यांकन में निष्पक्ष, वस्तुपरक और सदाशय होना चाहिए। उसे यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि पुस्तक पर लिखी समीक्षा को पढ़ते हुए पाठक सिर्फ पुस्तक के बारे में ही निर्णय नहीं लेता, पुस्तक समीक्षा के स्तर के अनुसार वह स्वयं समीक्षक के बारे में भी एक धारणा बनाता है। उसे यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अंतिम निर्णायक तो पाठक ही है। वह आपके निर्णय से नहीं बल्कि आपकी विश्लेषण क्षमता और लेखकीय ईमानदारी से प्रभावित होगा। वह आपसे असहमत होते हुए भी आपकी समीक्षा को पसंद कर सकता है अगर आपने समीक्षा कर्म को गंभीरता से लिया हो और आपकी प्रतिभा, मेहनत और लगन समीक्षा में व्यक्त हो रही हो।

बोध प्रश्न

1) परिचयात्मक, विश्लेषणात्मक और मूल्यांकनपरक समीक्षा में क्या अंतर है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दें।)

.....

.....

.....

.....

.....

2) सही कथन के आगे √ का और गलत कथन के आगे × का निशान लगाएँ।

क) परिचयात्मक समीक्षा में विश्लेषण की प्रधानता होती है। ( )

ख) विश्लेषणात्मक समीक्षा में मूल्यांकन पर विशेष बल दिया जाता है। ( )

ग) परिचयात्मक समीक्षा का कोई महत्व नहीं है। ( )

घ) मूल्यांकनपरक समीक्षा में आलोचनात्मक मूल्यांकन हावी होता है। ( )

अभ्यास

1) आप प्रेमचंद का उपन्यास **निर्मला** पढ़ें और इसकी परिचयात्मक समीक्षा लगभग दस पंक्तियों में लिखें। अगर आपको यह पुस्तक न मिले तो किसी उपलब्ध पुस्तक की समीक्षा लिख सकते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

15.3 लेखन की तैयारी

अब तक आपने समीक्षा के सैद्धांतिक पक्ष का अध्ययन किया। इकाई 14 में पुस्तक समीक्षा के अभिप्राय, उसके विभिन्न पक्ष, अच्छे समीक्षक के गुण, पुस्तक समीक्षा की विशेषता संबंधी जानकारी प्राप्त की। प्रस्तुत इकाई में हमने अभी तक समीक्षा के विभिन्न प्रकारों की चर्चा की है। अब हम समीक्षा के व्यावहारिक पक्ष पर विचार करने जा रहे हैं। इस क्रम में हम पहले इस बात पर विचार करेंगे कि पुस्तक समीक्षा लिखने के पहले लेखक को क्या-क्या तैयारी करनी पड़ती है? पुस्तक समीक्षा लिखने के लिए सबसे पहले समीक्षक को गंभीरतापूर्वक पुस्तक का अध्ययन करना चाहिए, फिर उसे पुस्तक में वर्णित तथ्यों की जाँच करनी चाहिए। जिस पुस्तक की समीक्षा वह लिख रहा होता है, उससे संबंधित अन्य पुस्तकों का भी अध्ययन करने से वह तुलनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत कर सकता है। अन्त में उसे यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आज के संदर्भ में पुस्तक कितनी प्रासंगिक है। आइए, इन मुद्दों पर अलग-अलग विचार करें।

15.3.1 पुस्तक का अध्ययन

किसी पुस्तक की समीक्षा लिखने के पहले समीक्षक को पुस्तक का आद्योपान्त अध्ययन करना पड़ता है। यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि बिना पुस्तक को पढ़े समीक्षा लिखना

संभव ही नहीं है। कभी-कभी समीक्षक पुस्तक को उलट-पुलट कर देख लेते हैं और फ्लैप, भूमिका और निष्कर्ष में दी गयी सूचनाओं के आधार पर ही समीक्षा तैयार कर लेते हैं। यह समीक्षा लेखन का गलत और अवैज्ञानिक तरीका है। इसमें पुस्तक का सही मूल्यांकन तो दूर, पुस्तक का सही परिचय भी पाठक को नहीं मिल पाता। इससे पाठक गुमराह भी हो सकता है।

इस सन्दर्भ में दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि एक समीक्षक और एक साधारण पाठक के पुस्तक अध्ययन में अंतर होता है। एक पाठक किसी पुस्तक को लगातार पढ़ता चला जाता है। वह पुस्तक के विभिन्न पक्षों की जाँच-पड़ताल करने का प्रयत्न नहीं करता। वह कई स्थलों पर सरसरी निगाह डालता हुआ भी आगे बढ़ सकता है। पर समीक्षक को पुस्तक पढ़ते समय कई बाते ध्यान में रखनी होती है। पुस्तक को आरंभ करते समय उसके सामने एक उद्देश्य होता है। समीक्षक को हमेशा यह ध्यान रखना होता है कि उसे पाठक को पुस्तक के स्वरूप की सही जानकारी देनी है, उसका विश्लेषण और मूल्यांकन करना है। इस उद्देश्य को सामने रखते ही समीक्षक एक **सावधान पाठक** बन जाता है। वह पुस्तक की एक-एक पंक्ति को ध्यान से पढ़ता है और उसके मन में जो प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न होती हैं, उन्हें वह नोट करता चलता है।

अध्ययन के दौरान अलग कागज पर नोट लेना अपेक्षित होता है। इससे समीक्षा व्यवस्थित और सुगठित होती है। नोट न लेने की स्थिति में यह खतरा बराबर बना रहता है कि समीक्षा लिखते समय समीक्षक कुछ प्रमुख मुद्दों की चर्चा करना भूल जाए। पुस्तक पढ़ते समय बीच-बीच में जो सहज प्रतिक्रिया मन में उठती है, उसका उल्लेख नोट कर लेने से सुविधाजनक हो जाता है। इसके अतिरिक्त इससे समीक्षक के श्रम की भी बचत होती है। पुस्तक समाप्त करने के बाद वह अपने नोट की सहायता से समीक्षा को सिलसिलेवार ढंग से प्रस्तुत कर सकता है।

15.3.2 तथ्यों की जाँच

पुस्तक पढ़ने और उससे नोट्स लेने के तुरन्त बाद समीक्षक समीक्षा लिखने नहीं बैठ जाता, बल्कि वह पुस्तक में आये तथ्यों की जाँच करता है। कुछ तथ्यों की जाँच तो समीक्षक अपने सामान्य ज्ञान के आधार पर ही कर लेता है, पर जहाँ वह बहुत विश्वस्त नहीं होता, वहाँ वह विभिन्न स्रोतों की सहायता लेता है। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाएगी। मान लीजिए आपको भारत के किसी आदिवासी समुदाय पर लिखी पुस्तक की समीक्षा लिखनी है और आपको इस आदिवासी समुदाय के बारे में अधिक जानकारी नहीं है तो आप अपनी समीक्षा में पुस्तक पर न्याय नहीं कर सकेंगे। बेहतर होगा, यदि आप समीक्षा लिखने से पूर्व आदिवासी समुदाय के बारे में प्रामाणिक स्रोतों से तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त कर लें। इसके लिए आपको लायब्रेरी और सरकारी प्रकाशनों का सहारा लेना चाहिए। संभव हो तो उन लोगों से संपर्क करें जो उस आदिवासी समुदाय के बारे में प्रामाणिक जानकारी दे सकें। रचनात्मक साहित्य पर लिखते हुए बाह्य तथ्यों का ज्यादा महत्व नहीं होता। लेकिन कई बार लेखक ऐसी तथ्यात्मक भूलें कर जाता है जो रचना के आस्वादन में बाधा उत्पन्न करती हैं, तो समीक्षा लिखते हुए उनका उल्लेख किया जा सकता है। परंतु साहित्य में महत्व लेखक की सर्जनात्मक क्षमता, कल्पनाशीलता, कलात्मक उत्कर्षता और सोद्देश्यता का होता है। बाह्य तथ्य तो कच्चे माल की तरह इस्तेमाल होते हैं। उनके आधार पर जाँचने से हम साहित्यिक कृति का सही मूल्यांकन नहीं कर सकते।

लेकिन साहित्य और कला से इतर पुस्तकों में तथ्यों की जाँच समीक्षा की प्रमाणिकता के लिए आवश्यक है। अगर समीक्षक को ऐसा लगता है कि पुस्तक में गलत तथ्य रखा गया है या तथ्य को तोड़ने-मरोड़ने की कोशिश की गयी है, तो उसे पुष्ट प्रमाणों के आधार पर ही अपना विश्लेषण पाठक के सामने रखना चाहिए। केवल अनुमान के बल पर किसी तथ्य का विश्लेषण समीक्षा को अप्रामाणिक और संदिग्ध बना सकता है।

15.3.3 अन्य पुस्तकों का अध्ययन

किसी पुस्तक पर समीक्षा लिखने के क्रम में विवेच्य पुस्तक के विषय से संबंधित दूसरी पुस्तकें भी पढ़नी पड़ सकती हैं। इससे पुस्तक विशेष के सम्यक् मूल्यांकन में सुविधा होती

है। इसके अतिरिक्त पाठक को विषय-विशेष पर लिखी अन्य पुस्तकों की भी जानकारी हो जाती है। इससे पाठक को यह भी ज्ञात हो जाता है कि विषय-विशेष पर कौन-कौन सी पुस्तकें लिखी गयी हैं और विवेच्य पुस्तक का महत्व क्या है? क्या लेखक ने पहले कही गयी बातों को ही दुहराया है या नयी जानकारी और नये दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है? पहले से चले आ रहे विचारों को ही लेखक ने अपनी पुस्तक में आगे बढ़ाया है या पुराने मतों का खंडन करता हुआ नये मत की स्थापना की है? आदि-आदि। इस प्रकार के विवेचन से समीक्षा का फलक व्यापक होता है और समीक्षक खुली हुई दृष्टि से पुस्तक पर विचार कर पाता है। मसलन, हिंदी कविता, कहानी, नाटक, निराला, प्रेमचंद आदि पर अनेक पुस्तकें लिखी गयी हैं। अगर आपको इस प्रकार के किसी विषय पर लिखी गयी पुस्तक की समीक्षा लिखनी हो, तो आप इन विषयों पर अब तक लिखी महत्वपूर्ण पुस्तकों को अवश्य पढ़ें। मसलन, यदि निराला पर लिखी किसी पुस्तक की समीक्षा लिखनी हो, तो डा. रामविलास शर्मा की निराला पर लिखी पुस्तक **निराला की साहित्य साधना** अवश्य पढ़ी जानी चाहिए। इससे निराला पर लिखी गयी पुस्तक का महत्व रेखांकित करने में सुविधा रहेगी। यह प्रक्रिया कमोबेश सभी विषयों और विधाओं की पुस्तकों की समीक्षा करने के क्रम में अपनायी जानी चाहिए।

15.3.4 पुस्तक की प्रासंगिकता

पुस्तक समीक्षा की प्रासंगिकता पर विचार करते हुए इकाई 14 में बताया गया है कि समीक्षा के प्रासंगिक होने का सूत्र पुस्तक की प्रासंगिकता से जुड़ा हुआ है। समीक्षा की जीवंतता के लिए उसका प्रासंगिक होना जरूरी है। इसलिए किसी पुस्तक की समीक्षा लिखने से पहले समीक्षक को यह तय कर लेना चाहिए कि पुस्तक आज के सन्दर्भ में प्रासंगिक है।

प्रासंगिकता का सवाल पुस्तक के प्रकाशन से भी जुड़ा होता है। पाठक नव प्रकाशित पुस्तकों की जानकारी जल्द से जल्द प्राप्त करना चाहता है। अतः प्रकाशन के बाद यथाशीघ्र पुस्तक की समीक्षा प्रकाशित हो जानी चाहिए।

कभी-कभी कोई पुस्तक अपने प्रकाशन काल के काफी बाद फिर चर्चा के केंद्र में आ जाती है। मसलन हाल में उर्दू कथा लेखिका कुर्रतुल-एन-हैदर को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उनकी पुस्तक **आग का दरिया** का प्रकाशन काफी पहले हो चुका है। पर आज वह पुस्तक इस पुरस्कार के कारण फिर से चर्चित हो उठी है। अतः अगर आज कोई व्यक्ति इस पर समीक्षा लिखता है, तो उसकी समीक्षा भी प्रासंगिक होगी।

वस्तुतः प्रासंगिकता का सवाल बहुत कुछ जन रुचि के साथ भी जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार अगर किसी पुस्तक पर कोई विवाद खड़ा हो जाता है, तो वह अपने प्रकाशन के काफी दिनों बाद भी प्रासंगिक हो जाती है। इस तरह प्रासंगिकता का संबंध पाठक की जिज्ञासा और अभिरुचि से भी है। और इस जिज्ञासा को शांत करना पुस्तक समीक्षा का मुख्य दायित्व है।

बोध प्रश्न

3) सही और गलत कथन के आगे क्रमशः √ और × का निशान लगाएँ।
   क) बिना पुस्तक ध्यान से पढ़े भी अच्छी समीक्षा लिखी जा सकती है। ( )
   ख) पुस्तक पढ़ते समय समीक्षक के सामने यह उद्देश्य होता है कि उसे पाठक को पुस्तक की सही जानकारी देनी है। ( )
   ग) पुस्तक पढ़ते समय अलग से नोट लेते रहना चाहिए। ( )
   घ) समीक्षा लेखन में पुस्तक में वर्णित तथ्यों की जाँच जरूरी नहीं है। ( )

4) तथ्यों की जाँच की आवश्यकता क्यों होती है? (दो पंक्तियों में उत्तर दें)

.....

.....

5) नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। सही कथन पर √ का चिह्न लगाएँ।
   समीक्षा लिखने से पहले :

क) पुस्तक में वर्णित तथ्यों की जाँच कर लेनी चाहिए। ( )
ख) पुस्तक का गंभीर अध्ययन आवश्यक नहीं है। ( )
ग) समीक्ष्य पुस्तक से सम्बद्ध अन्य पुस्तकों को पढ़ने से उलझन होती है। ( )
घ) पुस्तक की प्रासंगिकता पर विचार करना जरूरी नहीं है। ( )

6) समीक्षा लिखने से पहले पुस्तक की प्रासंगिकता पर विचार करना क्यों जरूरी है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दें)

.....

.....

.....

.....

.....

15.4 पुस्तक समीक्षा का लेखन

लेखन के लिए पूरी तैयारी करने और इससे सम्बद्ध जानकारियाँ प्राप्त करने के बाद समीक्षक समीक्षा लिखने की ओर अग्रसर होता है। अपने लेखन के क्रम में वह पुस्तक और लेखक का परिचय देता है, केंद्रीय विषय को उजागर करता है, विषय वस्तु और भाषा-शैली का विश्लेषण और मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। वह प्रकाशन संबंधी सूचना भी पाठकों को देता है। पुस्तक समीक्षा लिखने का कोई बना-बनाया सूत्र नहीं है। उपर्युक्त पक्ष समीक्षा में किस क्रम से और कितने महत्व के साथ आने चाहिए वह कई बातों पर निर्भर करता है। आपकी समीक्षा का पाठक कौन है। पत्रिका में समीक्षा के लिए कितना स्थान निर्धारित है। पुस्तक का महत्व कितना है और आप किस प्रकार की समीक्षा लिखने जा रहे हैं अर्थात् परिचयात्मक, विश्लेषणात्मक या मूल्यांकनपरक। इसके साथ ही आपके लेखन की निजी विशिष्टता और आपकी अभिरुचि भी समीक्षा के स्वरूप को निर्धारित करेगी। हमें यहाँ समीक्षा लेखन के विभिन्न पक्षों पर विचार करते हुए उपर्युक्त बातों को भी दृष्टि में रखना होगा। आइए, समीक्षा लेखन के प्रमुख पक्षों पर एक-एक करके विचार करें।

15.4.1 पुस्तक एवं लेखक का परिचय

इकाई 14 में हम आपको बता चुके हैं कि पुस्तक और लेखक का परिचय पाठकों तक पहुँचाना समीक्षक और समीक्षा का पहला उद्देश्य है। समीक्षा लेखन के आरम्भ में समीक्षक पुस्तक और पुस्तक के लेखक का संक्षिप्त परिचय देता है। समीक्षक यह भी बताता है कि पुस्तक का संबंध किस विषय और विधा से है, अर्थात् पुस्तक समाजशास्त्र पर है या इतिहास पर या साहित्य पर। इसी प्रकार पुस्तक निबंधात्मक है या आत्मकथात्मक या प्रश्नोत्तर रूप में या कहानी, उपन्यास, कविता आदि में। इसके साथ ही समीक्षक यह भी बताता है कि पुस्तक किस तरह के पाठकों के लिए लिखी गई है। अर्थात् बालकों, किशोरों, विद्यार्थियों, सामान्य पाठकों, विद्वानों आदि में से किनके लिए लिखी गई है।

लेखक के बारे में बताते हुए यह विचार करना चाहिए कि पुस्तक समीक्षा के पाठक उस लेखक से पहले से परिचित हैं या नहीं। अगर पाठक अधिक परिचित नहीं है तो समीक्षक को चाहिए कि वह थोड़ा विस्तार से लेखक के बारे में लिखे। जैसे नये लेखक या दूसरी भाषाओं के लेखक के बारे में बताते हुए उसकी पूर्व रचनाओं का भी परिचय देना चाहिए। इससे लाभ यह होता है कि पाठक को लेखक के लेखन क्षेत्र की जानकारी हो जाती है और आवश्यकता पड़ने पर अन्य पुस्तकों को पढ़ने की ओर भी प्रेरित हो सकता है। लेखक परिचय के उपर्युक्त सभी पक्षों को समेटने वाली समीक्षा का उदाहरण हम नीचे दे रहे हैं।

परकाय प्रवेश तथा अन्य कहानियाँ शीर्षक पुस्तक की समीक्षा करते हुए समीक्षक हरिशंकर सक्सेना ने विस्तार के साथ कहानिकार का परिचय दिया है:

कर्नाटक के सुप्रसिद्ध लेखक मास्ति वेंकटेश अय्यंगार तमिल भाषी होते हुए भी आजीवन कन्नड़ भाषा की ही सेवा करते रहे और कन्नड़ कहानी के जनक कहलाये। उनकी पहली कहानी "रंगप्पा की शादी" सन् 1910 में प्रकाशित हुई थी।

कहानीकार के रूप में मास्ति जी की अन्तर्दृष्टि मूलतः नैतिक है। वह परम्परागत नैतिक मूल्यों के प्रति सचेत और संस्कृति के पोषक हैं। सांस्कृतिक जड़ों की गहराई में उनकी पूर्ण निष्ठा है।

लेखक का संक्षिप्त परिचय देने के बाद समीक्षक ने पुस्तक का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है।

समीक्ष्य संग्रह में मास्ति जी की सन् 1910 से 1984 तक की चुनी हुई कहानियों को संकलित किया गया है। ये कहानियाँ यथार्थ बोध और संवेदना के स्तर पर समृद्ध हैं और अनुभूति की प्रामाणिकता पर बल देती हैं।

(**समीक्षा**, वर्ष 20 अंक 4)

लेखक का परिचय देने के बाद समीक्ष्य पुस्तक के बारे में बताना चाहिए। पुस्तक का विषय, कुल अध्याय, अध्यायों के शीर्षक, अध्यायों में वर्णित विषय और उनके प्रमुख पक्षों का संक्षिप्त उल्लेख किया जा सकता है। पुस्तक समीक्षा के इस पक्ष को कितना विस्तार देना है या उसे कितने संक्षिप्त रूप में लिखना है यह समीक्षा के कुल कलेवर और पत्रिका में निर्धारित स्थान से तय होगा। लंबी पुस्तक समीक्षा में यह विस्तार से दिया जा सकता है। लंबी परिचयात्मक समीक्षा में समीक्षा का मुख्य कलेवर इसी पक्ष से निर्धारित होगा जबकि संक्षिप्त परिचयात्मक समीक्षा में इसे संक्षेप में ही प्रस्तुत करना चाहिए। विश्लेषणात्मक और मूल्यांकनपरक समीक्षा में इस पक्ष को आवश्यकतानुसार विस्तार दें। अगर इस विषय पर अन्य पुस्तकें भी लिखी गई हैं तो उनका भी विवरण दिया जा सकता है। यहाँ हम हंस (मार्च 1990) में प्रकाशित श्रवण कुमार गोस्वामी की जेल संस्मरण पर आधारित पुस्तक **लौह कपाट के पीछे** की संजीव की समीक्षा का आरंभिक अंश दे रहे हैं। इसे पढ़कर आप पुस्तक का परिचय कैसे दिया जाए और उसमें किन-किन बातों का उल्लेख किया जाए, यह समझ सकते हैं।

भारतीय जेलों पर अब तक काफी कुछ प्रकाशित हो चुका है—महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद जैसे दिग्गज नेताओं से लेकर जाने-माने साहित्यकारों और राजनीतिक बंदियों तक की। इनमें रामवृक्ष बेनीपुरी की "जंजीरें और दीवारें", माखनलाल चतुर्वेदी की कविता "कैदी और कोकिला", मेरी टायलर की अंग्रेजी पुस्तक "भारतीय जेलों में पाँच साल" और चारू चक्रवर्ती (जरासंध) जो स्वयं जेलर भी रह चुके थे, की बंगला पुस्तक "लौह कपाट" खासी ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं। इधर इसी क्रम में श्रवण कुमार गोस्वामी की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है "लौह कपाट के पीछे" जो एक विशेष जेल हजारीबाग केंद्रीय कारा को केंद्र में रखते हुए संस्मरणों, परिचयात्मक विवरणों और तीखी आलोचनात्मक टिप्पणियों का एक मिला-जुला आकलन है।

लोह कपाट के पीछे में हजारीबाग जेल के अपने सत्ताईस दिन के प्रवास के दौरान लेखक ने जो कुछ देखा, सुना, भोगा और महसूसा, उसे दर्ज करने की कोशिश है। 152 पृष्ठों की 21 परिच्छेदों में विभक्त यह पुस्तक उक्त जेल का परिचय उसके अलग-अलग विभाग, कैदियों का वर्गीकरण, विभागों के संबद्ध अधिकारियों और कर्मचारियों का इन अलग-अलग वर्ग के बंदियों के प्रति आचरण और कुछ विशिष्ट प्रकरण, कुछ विशिष्ट पुस्ताकांशों सूचनाओं के विश्लेषणात्मक अंदाज में समोती है।

15.4.2 केन्द्रीय भाव को उजागर करना

लेखक और पुस्तक का संक्षिप्त परिचय देने के बाद समीक्षक विषय के केंद्रीय भाव को उजागर करने का प्रयत्न करता है। प्रत्येक पुस्तक किसी न किसी निश्चित उद्देश्य को लेकर लिखी जाती है। उसको पहचान कर उसी के संदर्भ में पुस्तक के केन्द्रीय विषय को उजागर करना होता है। ऊपर हमने जिस पुस्तक का उल्लेख किया है उसकी समीक्षा में समीक्षक ने पुस्तक लिखने के पीछे छिपे लेखकीय उद्देश्य को पहचान कर निम्नलिखित शब्दों में पुस्तक के केंद्रीय भाव या विषय को उजागर किया है:

"लेखक की नजर में जेल एक शोषण गृह है—भोजन, आवास, शौच, चिकित्सा—सभी स्तरों पर, लेकिन मात्र भले और भोले लोगों के लिए, गुंडों और राजनीतिक बंदियों का दर्जा पाने वालों के लिए यह ऐशगाह है। जेलें अपराध की नर्सरीज हैं, जो मनुष्य में अपराधवृत्ति का उच्छेद नहीं करती बल्कि अपराधिकी का उद्रेक और संवृद्धि करती हैं।"

(हंस, मार्च 1990)

उपर्युक्त पंक्तियों में पुस्तक लिखने के लेखकीय उद्देश्य के संदर्भ में उसके विषय के महत्व को भी उजागर किया गया है। इसके बाद विषय वस्तु का विवेचन प्रस्तुत किया जा सकता है। यह विवेचन संक्षिप्त और विस्तृत दोनों रूपों में हो सकता है। यह पक्ष पुस्तक के केंद्रीय भाव को उजागर करने से पूर्व भी आ सकता है, बाद में भी। कभी-कभी समीक्षक विषय के विश्लेषण के बीच भी पुस्तक के केन्द्रीय भाव को उजागर कर देता है। यह समीक्षक पर निर्भर करता है कि वह कौन-सी विधि अपनाये।

विषय के विवेचन में यह ध्यान रखना चाहिए कि आपका विवेचन विषय को समझने में सहायक हो न कि बाधक। वह विषय वस्तु की शक्ति और सीमा को तो उजागर करे ही, साथ ही उसको समझने में भी सहायक हो। लेकिन यह कार्य करते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि स्वयं पाठक पुस्तक की विषय वस्तु से परिचित नहीं है। इसलिए आपका विवेचन इस रूप में प्रस्तुत होना चाहिए कि पाठक को विषय की जानकारी भी मिलती रहे। हिंदी कवि भारत भूषण अग्रवाल के काव्य रूपक **अग्निलीक** की प्रेमशंकर द्वारा लिखित समीक्षा के निम्नलिखित अंश में कथा का विवेचन भी है और उसका संकेत भी।

तीसरे और अंतिम दृश्य में वाल्मीकि से बातचीत करती हुई सीता के लंबे वक्तव्य हैं जहाँ उनके व्यक्तित्व के नये तेवर खुलते हैं। यहाँ भारत भूषण सीता को तर्क के स्तर पर रचते हैं और वे वाल्मीकि को भी नहीं बख्शतीं, कहती हैं: इस यंत्रणा को आप नहीं समझेंगे, आप भी तो पुरुष हैं—रामराज्य के चारण। सीता में आक्रोश है और वह स्वयं को भ्रमभंग की स्थिति में पाती हैं, उन्होंने वास्तविकता को जान लिया है। राम की महत्वाकांक्षा और रामराज्य का खोखलापन—इन मुद्दों पर सीता तीखे प्रहार करती हैं। राम के लक्ष्य हैं: राज्य, राजनीति, संग्राम और विजय। जिस समाज में जैसे तैसे सफलता को ही अंतिम लक्ष्य माना जाता है वहाँ मानवीय मूल्य सिर्फ बहस-मुबाहिमे का मुद्दा बनकर रह जाते हैं, उन्हें जिया नहीं जाता।

(आलोचना—44, जनवरी-मार्च 1978)

15.4.3 विषय वस्तु का मूल्यांकन

पुस्तक एवं लेखक का परिचय देने और विषय के केंद्रीय भाव को उजागर करने के बाद समीक्षक विषय वस्तु का मूल्यांकन करता है। मूल्यांकन का आधार पुस्तक के उद्देश्य से निर्धारित होगा। अगर लेखक अपने उद्देश्य में सफल रहा है तो हम पुस्तक का मूल्यांकन सकारात्मक रूप से करेंगे। उद्देश्य में सफलता की परीक्षा विषय वस्तु की प्रस्तुति, उसकी प्रासंगिकता से करनी चाहिए। यह संभव है कि किसी पुस्तक में सभी पक्ष स्तरीय न हों इसलिए मूल्यांकन भी दो स्तरों पर करना चाहिए। अलग-अलग पक्षों पर अलग-अलग मूल्यांकन प्रस्तुत करने के साथ-साथ पूरी पुस्तक का समग्र मूल्यांकन भी प्रस्तुत करना चाहिए।

विषय वस्तु की प्रस्तुति के मूल्यांकन का आधार विषय का महत्व, उसका वस्तु पक्ष, व्याख्या और विवेचन की शैली, प्रस्तुति का ढंग आदि होंगे। यह भी देखना होगा कि विषय वस्तु पाठक वर्ग को संप्रेष्य भी है या नहीं? क्या वह उनके लिए उपयोगी है? मूल्यांकन में लेखक की दृष्टि और उसकी लेखकीय क्षमता, उसकी प्रतिभा और श्रम का भी मूल्यांकन करना चाहिए। यह भी बताना चाहिए कि अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए लेखक कितना वस्तुपरक, निष्पक्ष और पूर्वग्रहमुक्त रहा है। लेकिन ऐसा करते हुए स्वयं समीक्षक को भी निष्पक्ष और पूर्वग्रहमुक्त होना चाहिए। यहाँ हम मराठी लेखक विश्वनाथ काशीनाथ राजवाड़े की पुस्तक **भारतीय विवाह संस्था का इतिहास** के हिंदी अनुवाद की समीक्षा का एक अंश प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें पुस्तक की विषय वस्तु का मूल्यांकन करते हुए उनकी प्रतिभा और श्रम का भी उल्लेख किया गया है:

राजवाड़े की दृष्टि बेहद यथार्थपरक, बेहद बेबाक है। यम-यमी प्रसंग हो या अश्वमेध यज्ञ के अंत में होने वाला कृष्ण यजुर्वेदी और शुक्ल यजुर्वेदी विलाप और विलास—वे प्राचीन बौद्धिक संस्कृति के अर्थ खोलते हुए उनके मांसल, ऐहिक दैहिक संदर्भ बेझिझक देखते हैं। नैतिक मूल्यों के क्रमशः विकास की उनकी धारणा अपने प्रत्यक्ष अनुभवों पर भी आधारित हैं—कन्नड़ प्रदेश के घट कंचुकी और पेशवाओं के इतिहास, ज्ञात मनोविनोदों, आम बोलचाल की अर्थच्छवियों के इतिहास और रीति-रिवाजों में प्राप्त अवशेषों में वे उनकी छाया खोजते हैं। छिटपुट रूप में, क्षेत्रीय और सीमित नृशास्त्रीय या पुरातात्विक अध्ययनों में से यहाँ उल्लिखित बहुत से तथ्य बिखरे मिल जायेंगे। पर कोई संबद्ध इतिहास (इन अंतर्दृष्टियों, तथ्यों और व्याख्याओं को समेटने वाला) शायद अभी भी नहीं लिखा गया है।

(गिरधर राठी द्वारा लिखित समीक्षा, **जनसत्ता**, 22 फरवरी 1987)

निम्नलिखित उदाहरण में लेखक की प्रस्तुति का मूल्यांकन किया गया है। डॉ. रामविलास शर्मा की इतिहास पुस्तक **मार्क्स और पिछड़े हुए समाज** की बनवारी द्वारा लिखी समीक्षा *का यह अंश इस दृष्टि से उल्लेखनीय है:*

यह किताब उनके इतिहास संबंधी सोच को एक जगह रखती है। पूरी किताब एक साथ परिकल्पित नहीं की गई है और एक सिरे में बैठकर नहीं लिखी गई। वह उनके समय-समय पर लिखे गए लेखों का संकलन है। इसलिए उनके लेखों को पढ़ते हुए प्रवाह बार-बार बाधित होता है और कहीं-कहीं मार्क्सवादी उद्धरण, तर्क और उदाहरण तो बहुत दिखाई देते हैं मगर निष्कर्ष या तो मिलता नहीं या बहुत ही कमजोर रूप में निकलकर आता है। फिर भी किताब के विषय में तारतम्यता है और पूरी किताब पढ़ कर इसके नौ अध्यायों में फैली हुई विषय वस्तु की एकसूत्रता समझ में आ सकती है।

(**जनसत्ता**, 23 फरवरी 1988)

पुस्तक के विभिन्न पक्षों का मूल्यांकन करने के बाद पूरी पुस्तक का समग्र मूल्यांकन भी प्रस्तुत करना चाहिए। अर्थात् समीक्षक को यह बताना चाहिए कि पुस्तक पठनीय है या नहीं उसकी दृष्टि में पुस्तक स्तरीय, श्रेष्ठ या साधारण है। लेकिन ऐसा निर्णय देने के लिए समीक्षा में पर्याप्त तर्क मौजूद होने चाहिए। निम्नलिखित अंश राजेन्द्र यादव के निबंधों की पुस्तक **प्रेमचंद की विरासत** का ऐसा ही मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

अपनी तमाम सीमाओं के बावजूद यह पुस्तक समकालीन इतिहास और साहित्य के तात्कालिक प्रश्नों के बारे में सोचने को विवश करती है। समाज के व्यापक संदर्भ में लेखकीय कर्म की प्रासंगिकता, राजनीति और बुद्धिजीवी के परस्पर संबंधों की व्याख्या, साहित्यिक आंदोलनों की भूमिका, लेखन और प्रकाशन, साहित्य में व्यक्ति पूजा, संपादकीय गद्दियों पर आसीन लेखकों का आचरण, लेखक और सिनेमा आदि प्रश्नों के बारे में लेखक ने नुकीले प्रश्न उभारे हैं और अपनी सुविधानुसार उत्तर भी दिये हैं।

(भीमसेन त्यागी द्वारा लिखित समीक्षा, **आलोचना**-45, अप्रैल-जून 1978)

15.4.4 भाषा-शैली का मूल्यांकन

विषय वस्तु के मूल्यांकन के बाद भाषा-शैली का विश्लेषण और मूल्यांकन भी अपेक्षित है। साहित्येत्तर विषयों पर लिखी पुस्तकों में भाषा-शैली का प्रश्न विषय की प्रस्तुति और संप्रेषणीयता से ही जुड़ा होता है जबकि साहित्यिक पुस्तकों में भाषा-शैली को रचनात्मक और कलात्मक उत्कर्षता के आधार पर भी विवेचित और मूल्यांकित किया जाना चाहिए। प्रख्यात न्यायविद वी.एम. तारकुंडे की अंग्रेजी पुस्तक के हिंदी अनुवाद मानवाधिकार: स्वातन्त्र्य और लोकतंत्र का दर्शन की भाषा पर टिप्पणी करते हुए निम्नलिखित समीक्षा में जो कहा गया है उतना कहना किसी साहित्यिक पुस्तक के लिए पर्याप्त नहीं है परंतु यहां सिर्फ संप्रेषणीयता ही प्रमुख प्रश्न है इसलिए निम्नलिखित टिप्पणी को पर्याप्त कहा जा सकता है:

वी.एम. तारकुंडे ने अपनी मूल किताब काफी सरल अंग्रेजी में लिखी थी। पर उसका अनुवाद काफी गूढ़ हिंदी में हुआ है। मूल किताब को पढ़ने के लिए शब्दकोश की जरूरत शायद ही पड़ेगी। लेकिन हिंदी अनुवाद को ठीक से पढ़ने के लिए इसकी जरूरत पड़ सकती है। उदाहरण के लिए "मानववाद यह प्रतिपादित करता है कि मानव का स्वातन्त्र्य के लिए

संघर्ष, जीव द्वारा अस्तित्व के लिए संघर्ष का मानवी स्तर पर सातत्य है तथा मानवी प्रगति की मूल कांक्षा उसकी स्वातन्त्र्य की खोज तथा सत्य का संधान करने की प्रवृत्ति में उत्प्रेरित है।'' पूरी किताब में ऐसे ही लंबे और बोझिल वाक्यों की भरमार है।

(**जनसत्ता**, 4 अक्टूबर 1987)

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों में भाषा सहज, सरल और संप्रेष्य होनी चाहिए। वाक्य भी छोटे और सीधे-सादे होने चाहिए ताकि पढ़ने वालों को पुस्तक का कथ्य समझ में आ सके। लेकिन साहित्यिक पुस्तकों की भाषा-शैली का विवेचन करते हुए उसकी साहित्यिक उत्कर्षता का ध्यान रखना होगा। संप्रेषणीयता का प्रश्न वहां भी महत्वपूर्ण होता है लेकिन किसी कहानी, कविता या नाटक में भाषा उसके कथ्य के साथ-साथ रचनाकार की शैलीगत विशिष्टता और भाषागत सौंदर्य से भी तय होती है। भाषा-शैली का विवेचन करते हुए उस साहित्यिक विधा की परंपरा के तब तक के विकास को भी ध्यान में रखना होता है। यहाँ उदाहरण के रूप में हरिवंशराय बच्चन की काव्य पुस्तक **मेरी श्रेष्ठ कविताएँ** की त्रिलोचन द्वारा लिखी समीक्षा के निम्नलिखित अंश को देखना उपयोगी होगा :

बच्चन की भाषा सरल कही जाती है। अनजाने और अपरिचित शब्दों का व्यवहार उनकी रचनाओं में नहीं मिलता। लेकिन भाषा में ऊबड़खाबड़पन दुर्लभ नहीं है। यह दोष उनकी अच्छी कविताओं की अच्छाई को भी ढँक लेता है। इसमें बच्चन का ही दोष नहीं है। उनके अग्रज कवियों की भाषा में यह ऊबड़खाबड़पन जगह-जगह मिलता है। बच्चन ने शायद इसे हिंदी कविता की पहचान मान लिया हो ऐसी स्थिति में भाषा का वह रूप बना ही रह जाएगा जो अच्छी कविता के बनने में बाधक है।

(**साक्षात्कार** 79-80, जून-जुलाई 1986 से उद्धृत)

15.4.5 प्रकाशन स्तर एवं मूल्य

किसी पुस्तक की समीक्षा लिखते समय उसके प्रकाशन से संबंधित सारे ब्यौरे पाठक तक पहुँचने चाहिए। मसलन, पुस्तक का मूल्य क्या है, यह कब और किस प्रकाशन से प्रकाशित हुई है, कौन सा संस्करण है आदि-आदि। ये जानकारियाँ फुटनोट में दी जा सकती हैं, या समीक्षा शुरू करते वक्त आरम्भ में इनका उल्लेख किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त समीक्षा के अन्त में प्रूफ और मुद्रण संबंधी त्रुटियों का भी उल्लेख किया जाना चाहिए। अगर जरूरी हो तो यह भी बताना चाहिए कि पुस्तक का प्रकाशन कैसा है। कागज का स्तर क्या है। कवर पर दिये गये चित्र पर भी टिप्पणी की जा सकती है। पुस्तक का मूल्य कई बार बहुत अधिक होता है और आम पाठक के लिए पुस्तक महत्वपूर्ण होते हुए भी खरीदना कठिन होता है। अगर आवश्यक समझें तो इसका उल्लेख करें। विज्ञान, इंजीनियरी, कला आदि से संबंधित पुस्तकों में दिये गये चित्रों, आरेखों आदि पर भी अपनी राय व्यक्त करनी चाहिए। पुस्तक की उपलब्धता के बारे में जानकारी हो तो वह भी बतायी जा सकती है।

15.5 पुस्तक समीक्षा की प्रस्तुति

अब तक पुस्तक समीक्षा के बारे में जितनी चर्चा हो चुकी है उससे आप यह तो समझ ही गये होंगे कि समीक्षा के महत्वपूर्ण पक्ष कौन-कौन से हैं। लेकिन समीक्षा लिखते हुए आपको यह भी विचार करना पड़ेगा कि आप इन पक्षों को अपनी समीक्षा में किस तरह प्रस्तुत करें। परिचयात्मक समीक्षा में प्रस्तुति की ज्यादा उलझन नहीं होती। वहाँ आप आरंभ में लेखक का परिचय, फिर पुस्तक का परिचय, उसके बाद विषय वस्तु का संक्षिप्त विवरण, कथ्य एवं प्रस्तुति का मूल्यांकन एवं अंत में प्रकाशन स्तर पर टिप्पणी करते हुए पुस्तक के महत्व के साथ समीक्षा समाप्त कर सकते हैं। संक्षिप्त और लंबी परिचयात्मक समीक्षा के अनुरूप आप इन पक्षों को घटा-बढ़ा सकते हैं। परंतु जब आप समीक्षा में पुस्तक के बारे में ''परिचय'' से कुछ अधिक कहना चाहते हैं तो आपको गंभीरता से विचार करना चाहिए कि

आप समीक्षा का आरंभ और अंत कैसे करें। आइए, इन पहलुओं पर थोड़ा विस्तार से विचार करें।

15.5.1 आरंभ

समीक्षा का आरंभ कैसे किया जाए इसका कोई बना-बनाया फार्मूला नहीं है। आमतौर पर आरंभ में लेखक और पुस्तक का परिचय प्रस्तुत किया जाता है। परंतु ऐसा करना अनिवार्य नहीं है। आप पुस्तक के केंद्रीय भाव को उजागर करते हुए भी समीक्षा की शुरुआत कर सकते हैं। आप पुस्तक के महत्व को स्थापित करते हुए भी समीक्षा की शुरुआत कर सकते हैं। आप पुस्तक में से कोई अंश उद्धृत करके भी समीक्षा आरंभ कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि समीक्षा की चाहे जिस ढंग से शुरुआत करें आपका "आरंभ" प्रभावशाली लगना चाहिए। हम यहाँ कुछ समीक्षाओं के आरंभिक अंश प्रस्तुत कर रहे हैं उनकी भिन्नताओं से आप समीक्षा की शुरुआत के भिन्न-भिन्न ढंग और उनकी विशेषताएँ पहचान सकते हैं।

केंद्रीय भाव को उजागर करते हुए:

उस चिड़िया का नाम छूटी हुई जगहों और छूटे हुए लोगों तक जाकर वापस लौट आने की एक विशिष्ट कहानी है। जाहिर है, इसे विशिष्ट बनाने वाली बात इसकी वस्तु नहीं क्योंकि अतीत के साथ आदमी का रिश्ता या कि उसका स्मृति जगत रचना का विषय बार-बार और कई प्रकार से बना है, बनता रहेगा। एक तरह से आदमी का समूचा अनुभव क्षेत्र ही उसका स्मृतिक्षेत्र है। आजकल जब "अपनी जड़ों की तलाश" आदमी के रचनात्मक सरोकारों में चिंता का प्रमुख विषय है तब तो खास तौर से कहा जा सकता है कि अतीतावलोकन वस्तु की हैसियत से विशिष्ट है या नहीं है। फिर भी निस्संदेह यह रचना विशिष्ट है।

(पंकज बिष्ट के उपन्यास "उस चिड़िया का नाम" की अर्चना वर्मा द्वारा लिखित समीक्षा का आरंभिक अंश, **हंस**, जुलाई 1990, पृ. 62)

पुस्तक से उद्धरण देते हुए:

मलयज की पुस्तक रामचंद्र शुक्ल की भूमिका के आरंभ में नामवर सिंह ने लिखा है "आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बारे में एक और किताब नहीं यह एक नई "रस-मीमांसा" है। मलयज के ही इस कथन का उल्लेख करते हुए "आज की रस मीमांसा कविता की पंक्तियों में लिखी जा रही" संघर्ष-मीमांसा है, नामवरसिंह ने आगे बढ़कर कहा है "आलोचना में यह मलयज की संघर्ष मीमांसा का खाका है।"

(मलयज की पुस्तक **रामचन्द्र शुक्ल** पर डॉ. परमानंद श्रीवास्तव द्वारा लिखित समीक्षा का आरंभिक अंश, **आलोचना**-85, अप्रैल-जून 1988, पृ. 102)

पुस्तक के महत्व की स्थापना द्वारा:

*मार्क्स और एंगेल्स ने जिस दृढ़ शक्ति और निरंतर खोज के बाद मार्क्सवादी सिद्धांतों की संपदा का विकास किया था, रामविलास शर्मा की पुस्तक **मार्क्स और पिछड़े हुए समाज** उसी समाज चिंतन का ऐतिहासिक ग्रंथ है। मार्क्स की मेधा, भावना और चरित्र की दार्शनिक पृष्ठभूमि एपिकुरूस और ईस्सखुलस की प्रेरणा से निर्मित हुई थी। रामविलास शर्मा यूरोप में, इटली, इंग्लैंड और फ्रांस के साथ तुलनात्मक दृष्टि से भारत और एशिया में यूनानी रोमन समाज और संस्कृति की जड़ें खोजते हैं।*

(डॉ. रामविलास शर्मा की पुस्तक, **मार्क्स और पिछड़े हुए समाज** की विष्णुचंद्र शर्मा द्वारा लिखित समीक्षा का आरंभिक अंश, **दिनमान** 12-18 अक्टूबर 1986)

लेखक परिचय से:

हिंदी में निबंध को नये विचारों और संदर्भों से जीवंत बनाने वाले निबंधकारों में रमेशचंद्र शाह एक उल्लेखनीय नाम है। उनके निबंधों का पहला संग्रह "रचना के बदले" 1965 में प्रकाशित हुआ था। व्यक्ति व्यंजक निबंधों से इस संग्रह में सांस्कृतिक बोध की बांसुरी सुनाई दी थी। फिर उनका दूसरा निबंध संग्रह "वागर्थ" साहित्य देवता की नई छवि का

विचार बिंब बना। इधर "सबद निरंतर" जैसे विशिष्ट निबंध संग्रह सामने आए हैं।

(रमेशचंद शाह के निबंध संग्रह **शैतान के बहाने** की डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल द्वारा लिखित समीक्षा का आरंभिक अंश, **इंडिया टुडे**, 31 जुलाई 1987)

उपर्युक्त कुछ उदाहरणों से स्पष्ट हो जाएगा कि समीक्षा का आरंभ कैसे किया जा सकता है। कई बार समीक्षक समीक्षा के आरंभ में गैर जरूरी बातों में उलझ जाता है जो पुस्तक को समझने में कोई मदद नहीं करती या फिर वह लेखक के बारे में या पुस्तक से संबंधित किसी एक बात को इतने विस्तार से लिख देगा कि पुस्तक के बारे में लिखने के लिए अधिक अवकाश नहीं रहेगा। इससे समीक्षा असंतुलित हो जाती है। इसलिए यह ध्यान रखना चाहिए कि पुस्तक समीक्षा "आरंभ" करने के बाद शीघ्र ही समीक्षक को समीक्षा के मुख्य कलेवर पर आ जाना चाहिए।

15.5.2 मध्य भाग या मुख्य कलेवर

मुख्य कलेवर में सामान्यतः पुस्तक की विषय वस्तु का विवेचन प्रस्तुत किया जाता है। इस अंश को लिखते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि आपकी बातें सुस्पष्ट, तर्कसंगत और बोधगम्य हों। पुस्तक को आप जितनी तन्मयता और गंभीरता से पढ़ेंगे उतने ही बेहतर ढंग से आप अपना विवेचन प्रस्तुत कर सकेंगे। वास्तव में, समीक्षा का यही अंश सबसे अधिक महत्व का होता है क्योंकि इसी से पाठक पर आपकी समीक्षा पद्धति की धाक जमेगी। पुस्तक समीक्षा लिखते हुए समीक्षक को चाहिए कि वह ऐसी बातों में अपने को न उलझाए जो किताब की विवेचना के लिए आवश्यक न हों। हाँ, विस्तृत समीक्षा में यह गुंजाइश होती है कि समीक्षक चाहे तो पुस्तक के किसी खास पक्ष को अधिक विस्तार दे और अपना मत भी विस्तार से प्रस्तुत करे। लेकिन इस स्तर की समीक्षा में समीक्षक को तभी प्रवृत्त होना चाहिए जब स्वयं समीक्षक उस क्षेत्र में विशेषज्ञता रखता हो। उदाहरण के लिए, एक लब्धप्रतिष्ठ इतिहासकार अगर किसी दूसरे महत्वपूर्ण इतिहासकार की पुस्तक की समीक्षा लिखेगा तो बहुत संभव है कि वह पुस्तक के किसी खास हिस्से पर ही अपनी समीक्षा को केंद्रित कर ले। लेकिन ऐसी समीक्षा का अपना महत्व होता है। नये समीक्षकों को लेखन का सामान्य प्रचलित तरीका ही अपनाना चाहिए। समीक्षक को चाहिए कि पुस्तक की विवेचना करते हुए जहाँ संभव हो अपने मत की पुष्टि में पुस्तक से उद्धरण देना चाहिए। इससे आपकी बात का वज़न बढ़ जाएगा। लेकिन समीक्षा के आकार का भी ध्यान रखना चाहिए। यह भी नहीं होना चाहिए कि आपका विवेचन मात्र उद्धरणों का मोहताज होकर रह जाए। पुस्तक का विवेचन किस ढंग से किया जाना चाहिए इसका एक उदाहरण हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं :

*भारत भूषण का **अग्निलीक** राम के नायकत्व की आदर्शवादी रेखाओं को तोड़ता है उन्हें मानवीय भूमि पर लाता है। यहाँ कवि सीता का पक्षधर है, पर भवभूति की करुणा के स्तर पर नहीं तर्क के धरातल पर। वाल्मीकि बराबर राम के नायकत्व की रक्षा करना चाहते हैं, पर भारत भूषण उनकी मानवीय कमजोरियाँ भी सामने लाते हैं, उन्हें सामयिक संदर्भों तथा आज के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हैं। राम आज के नायक हैं, अपनी सीमाओं से बंधे हुए लोलुप पंडितों, चाटुकारों से घिरे, बेलगाम महत्वाकांक्षाओं में कैद। यह निर्मम महत्वाकांक्षा सारे मानवीय रिश्तों को भुला देती है—उस प्रिय सीता को भी जो राम के साथ वन में गयी थीं। निष्कासित सीता सामान्य जन के प्रतिनिधि पात्र रथवान के माध्यम से राम को संदेश भिजवाती है : बनवास देते समय इतना तो सोचते कि जब उन्हें बनवास मिला था तो मैं उनके साथ गयी थी।*

(प्रेमशंकर द्वारा लिखित **अग्निलीक** की समीक्षा, **आलोचना**-44 जनवरी-मार्च 1987, पृ. 107)

15.5.3 अंतिम भाग

पुस्तक समीक्षा का अंत किसी भी ढंग से किया जा सकता है। पुस्तक का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करते हुए, पाठकों को पुस्तक के संबंध में मशविरा देते हुए, पुस्तक के विवेचन को पूरा करते हुए या प्रकाशन स्तर पर टिप्पणी करते हुए। यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए

कि जहाँ समीक्षा समाप्त हो वहाँ समीक्षा के अधूरेपन का अहसास नहीं होना चाहिए। आमतौर पर अंत में पुस्तक पर बहुत नकारात्मक टिप्पणी पसंद नहीं की जाती। अगर कोई ऐसी बात कहनी हो तो उसे समीक्षा के मध्य भाग में ही कहना चाहिए। अंत तो किसी न किसी सकारात्मक और उत्साहवर्द्धक टिप्पणी के साथ ही करना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि समीक्षक समझौतावादी रुख अपनाये। लेकिन यह सही है कि अगर कोई पुस्तक समीक्षा के योग्य समझी गई है तो फिर उसमें कुछ न कुछ सकारात्मक अवश्य होगा। उसे पहचान कर उसको रेखांकित करते हुए समीक्षा समाप्त करना ज्यादा उचित होगा। यहाँ समीक्षा की समाप्ति के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:

पुस्तक के समग्र मूल्यांकन के साथ:

कुल मिलाकर जंगल का दर्द कवि के विकास की ऊर्ध्वमुखी यात्रा के प्रति आश्वस्त करता है। निजी और सामाजिक दोनों ही प्रकार के संबंधों में यह एक नये भाव संसार की कवि की तलाश और नयी भाषिक रचना के विन्यास को रूपायित करता है:

ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमसे बड़ा हो
यदि हम कुछ भी छोटा न करना चाहते हों।

(सर्वेश्वर के काव्य संग्रह "जंगल का दर्द" की अर्चना वर्मा द्वारा लिखित समीक्षा का अंतिम पैरा, **आलोचना**, 46, जुलाई-सितंबर 1978, पृ. 89)

उपर्युक्त अंश में समीक्षक ने अपने कथन की समाप्ति पुस्तक की दो काव्य पंक्तियों के उद्धरण के साथ की है।

पुस्तक के महत्व का प्रतिपादन करते हुए:

इन सब कमियों के बावजूद कहा जा सकता है कि यह विश्वकोश सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य के संबंध में एक मानक संदर्भ ग्रंथ का काम करेगा। इसमें जो लेख दिये गये हैं और उनमें जितनी सूचनाएँ हैं, वे अब तक प्रकाशित किसी भी अन्य ग्रंथ में एक साथ एक ही जगह नहीं मिलेंगी। इस दृष्टि से विद्यार्थियों, विद्वानों, पत्रकारों, शोधकर्त्ताओं, पुस्तकालयों आदि के लिए इसकी उपयोगिता से इनकार नहीं किया जा सकता। साहित्य अकादमी के पास इस कोश के लिए पर्याप्त साधन हैं। इन साधनों का यदि उचित उपयोग किया जा सके तो कोई कारण नहीं कि आगे प्रकाशित होने वाले खंडों में कमियाँ बनी रहें।

(**एन्साइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन लिटरेचर** की डॉ. उर्मिला जैन की समीक्षा का अंतिम पैरा, **हंस**, सितंबर 1990 पृ. 66)

15.5.4 भाषा-शैली

पुस्तक समीक्षा के लेखन की भाषा-शैली इस बात से तय होगी कि आप किस तरह की समीक्षा और किस के लिए लिख रहे हैं। अगर समीक्षा, सामान्य पाठकों के लिए और परिचयात्मक स्तर की है तो आपकी समीक्षा विवरणात्मक होनी चाहिए तथा भाषा भी सरल, बोधगम्य और संप्रेष्य होनी चाहिए। लेकिन आप अगर किसी विशिष्ट क्षेत्र से जुड़े गंभीर पाठकों के लिए विश्लेषणात्मक या मूल्यांकनपरक समीक्षा लिख रहे हैं तो आपकी भाषा में कुछ हद तक गंभीरता और जटिलता आ सकती है। आपकी शैली भी उतनी सरल और विवरणपरक नहीं होगी। परन्तु ऐसी समीक्षा भी अगर क्लिष्टता उत्पन्न करे या उलझाव उत्पन्न करे तो समीक्षा अपने मकसद में असफल ही कहलाएगी। भाषा और शैली दोनों स्तरों पर समीक्षा पाठक में यह तो एहसास पैदा करे कि समीक्षक अपने समीक्षा कार्य के प्रति गंभीर है और उसे विषय की गहरी पकड़ है परंतु उस पर यह असर नहीं पड़ना चाहिए कि समीक्षक पुस्तक के मंतव्य को समझा ही नहीं है या वह स्वयं उलझा हुआ है। यहाँ हम परिचयात्मक और विश्लेषणात्मक समीक्षा की भाषा के दो उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। वैसे समीक्षा की भाषा-शैली के लिए इकाई 14 और इस इकाई में प्रस्तुत किये गये विभिन्न उदाहरणों को इस दृष्टि से पुनः पढ़ सकते हैं।

परिचयात्मक समीक्षा

प्रस्तुत पुस्तक यांत्रिक सभ्यता की अधुनातन पहचान से संबंधित है। इसमें यांत्रिक मानव की दार्शनिक व्याख्या या आर्थिक विवेचन अभिप्रेत नहीं। लेखक ने यंत्र मानव की संरचना, उसके विकास एवं उसकी क्षमता का विवेचन किया है। पुस्तक सरल भाषा में है।

(रोबोट, सी.एल. गर्ग की पुस्तक की **कादम्बिनी** में प्रकाशित समीक्षा, जुलाई, 1990)

विश्लेषणात्मक समीक्षा

झीनी-झीनी बीनी चदरिया *बनारस के साड़ी बुनकरों के कठिन संघर्ष का बयान है। इसमें एक पूरे वर्ग की जिंदगी की सच्चाइयाँ एक बड़े फलक पर व्यक्त होती हैं। उपन्यास का पहला ही वाक्य प्रकृति में धड़कते हुए वास्तविक जीवन का संकेत है—'जाड़े की धूप इस छत से उस छत तक पीले कतान की तरह फैली है।' इस छत पर अलीमुन एक ओर बने बावर्चीखाने में आग सुलगाने जा रही है तो उस छत पर कमरून कतान फेरने की तैयारी में है। यह हर दिन एक नयी जिंदगी की शुरुआत है। संघर्ष इस जिंदगी का अर्थ भी है, सौंदर्य भी। शोषण चक्र में निरंतर पिसते हुए भी यहाँ जिंदगी की लमक बनी रहती है। यहाँ छतें आपस में बतयाती हैं और जिंदगियाँ भी।*

(परमानंद श्रीवास्तव द्वारा अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास **झीनी-झीनी बीनी चदरिया** की समीक्षा का एक अंश, **आलोचना**-84, **जनवरी**-मार्च 1988, पृ. 88)

उपर्युक्त दोनों अंशों की भाषा की तुलना करने से आपको स्पष्ट हो जाएगा कि परिचयात्मक समीक्षा और विश्लेषणात्मक समीक्षा में भाषा का रूप क्या होना चाहिए।

अभ्यास

2 आप किसी भी पढ़ी हुई एक पुस्तक की समीक्षा लिखिए। पुस्तक का चुनाव करते समय उसकी प्रासंगिकता का ध्यान अवश्य रखें।

क) पुस्तक एवं लेखक का परिचय

.....

.....

.....

.....

.....

ख) विषय का केंद्रीय भाव

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ग) विषय वस्तु का विवेचन और मूल्यांकन

.....

.....

.....

.....

.....

घ) भाषा-शैली

.....

.....

ङ) प्रकाशन स्तर पर टिप्पणी

.....

.....

च) प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ

.....

.....

15.6 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपने समीक्षा लेखन करने की एक दिशा प्राप्त कर ली है। आप अपनी लगन और मेहनत से इस क्षेत्र में प्रवीण हो सकते हैं।

- आप जान गये हैं कि समीक्षा के तीन प्रकार होते हैं—परिचयात्मक समीक्षा, विश्लेषणात्मक समीक्षा और मूल्यांकनपरक समीक्षा। परिचयात्मक समीक्षा में जहाँ पुस्तक परिचय पर अधिक जोर होता है, वहाँ विश्लेषणात्मक और मूल्यांकनपरक समीक्षा में क्रमशः विश्लेषण और मूल्यांकन पर।
- समीक्षा लिखने के पहले समीक्षक को कुछ तैयारी करनी पड़ती है, मसलन उसे समीक्ष्य पुस्तक का गंभीरता से अध्ययन करना होता है, वर्णित तथ्यों की जाँच करनी होती है, समीक्ष्य पुस्तक के विषय से संबंधित दूसरी पुस्तकों का अध्ययन करना होता है और पुस्तक की प्रासंगिकता पर विचार करना होता है।
- इसके बाद समीक्षक पुस्तक की समीक्षा लिखता है। इसमें वह पुस्तक एवं लेखक का परिचय देता है, केन्द्रीय विषय को रेखांकित करता है, और विषय वस्तु तथा भाषा-शैली का मूल्यांकन करता है। इसके अतिरिक्त समीक्षक प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ भी देता है। और उनके स्तर पर भी टिप्पणी करता है।
- अन्त में, हमने इस बात पर भी विचार किया है कि समीक्षा का आरंभ कैसे किया जाए, मध्य और अंत में क्या-क्या सामग्री शामिल की जाए तथा उनका लेखन कैसे हो।

15.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) परिचयात्मक, विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक समीक्षा में क्रमशः पुस्तक का परिचय, विश्लेषण और मूल्यांकन पर बल होता है। देखें भाग 15.2

2) (क) × (ख) × (ग) × (घ) √

3) (क) × (ख) √ (ग) √ (घ) ×

4) समीक्षा की प्रामणिकता के लिए यह जरूरी है।
देखें 15.3.2

5) (क) √ (ख) × (ग) × (घ) ×

6) पुस्तक के प्रासंगिक होने पर ही उसकी समीक्षा भी प्रासंगिक होती है और पाठक उसे रुचि के साथ पढ़ता है। (देखें उपभाग 15.3.4)

अभ्यास

अभ्यासों के उत्तर इकाई पढ़कर स्वयं लिखने का प्रयास कीजिए।

इकाई 16 साक्षात्कार की तैयारी

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य
16.1 प्रस्तावना
16.2 साक्षात्कार का महत्व
16.3 साक्षात्कार के प्रकार
  16.3.1 व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार
  16.3.2 विषय-आधारित साक्षात्कार
16.4 साक्षात्कार की तैयारी
  16.4.1 व्यक्ति का निर्धारण
  16.4.2 पूर्वानुमति
  16.4.3 आवश्यक अध्ययन
16.5 प्रश्नावली का निर्माण
  16.5.1 प्रश्नों का लेखन
  16.5.2 मुख्य बातें
  16.5.3 आरंभिक प्रश्न
16.6 साक्षात्कार लेना
  16.6.1 सहज मनःस्थिति
  16.6.2 तादात्म्य
  16.6.3 आरंभिक चरण का महत्व
  16.6.4 अन्य जरूरी बातें
16.7 साक्षात्कार की रिकार्डिंग
  16.7.1 स्मरण-शक्ति
  16.7.2 नोट लेना
  16.7.3 टेप रिकार्डर का प्रयोग
16.8 सारांश
16.9 शब्दावली
16.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

16.0 उद्देश्य

फीचर लेखन के पाठ्यक्रम की यह सोलहवीं इकाई है। इस इकाई में आप "साक्षात्कार की तैयारी" के बारे में पढ़ेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- फीचर लेखन के क्षेत्र में साक्षात्कार का क्या महत्व है, यह बता सकेंगे;
- साक्षात्कार के प्रकार बता सकेंगे;
- साक्षात्कार के लिए आवश्यक तैयारी के संबंध में क्या-क्या बातें जानना जरूरी है, इसको समझा सकेंगे;
- साक्षात्कार के लिए **प्रश्नों का निर्माण कर सकेंगे;**
- साक्षात्कार ले सकने की क्षमता का विकास कर सकेंगे; और
- साक्षात्कार के लिए आवश्यक सामग्री का सही उपयोग कर सकेंगे।

16.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन के पाठ्यक्रम से संबंधित चौथे खंड की यह सोलहवीं इकाई है। इकाई 16 और 17 में आपको साक्षात्कार के संबंध में बताया जाएगा। साक्षात्कार पत्रकारिता की एक

प्रमुख विधा है। साक्षात्कार रेडियो एवं टी.वी. के लिए भी लिया जाता है। साक्षात्कार लेना और देना दोनों ही महत्वपूर्ण कार्य है। न साक्षात्कार लेना आसान है और न ही देना। इनके लिए व्यवसायिक कुशलता और निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है। इस इकाई का उद्देश्य आपको यह बताना है कि साक्षात्कार के लिए किस तरह की तैयारी आवश्यक है। साक्षात्कार केवल दो व्यक्तियों की निरुद्देश्य बातचीत नहीं है। साक्षात्कार के पीछे निश्चित उद्देश्य होता है। इस उद्देश्य के अनुसार ही प्रश्नों का निर्माण होता है। साक्षात्कार किससे लिया जाना है, कब लिया जाना है, किस पत्र-पत्रिका के लिए लिया जाना है, भेंटकर्ता कौन है, साक्षात्कार का विषय या क्षेत्र क्या है—ये सभी बातें महत्वपूर्ण होती हैं। जिनसे आप साक्षात्कार लेना चाहते हैं, वह महत्वपूर्ण व्यक्ति हो सकता है। हो सकता है उसके पास समयाभाव हो। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि आप पहले से समय तय कर लें। इसी तरह जिस व्यक्ति से आप मिलने जा रहे हैं, उसके बारे में आपको पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए। आपके प्रश्न सुविचारित होने चाहिए। आप में आत्म विश्वास होना चाहिए। आपके प्रश्न बुद्धिमतापूर्ण होने चाहिए। आपके पास साक्षात्कार के समय नोटबुक का होना आवश्यक है। आपको टेपरिकार्डर का सही इस्तेमाल करना आना चाहिए। साक्षात्कार से संबंधित इन सभी बातों पर इस इकाई में विस्तार से चर्चा की गयी है। उन्हें उदाहरणों द्वारा पुष्ट किया है। साथ ही बोध प्रश्नों द्वारा आप इकाई को कितना समझ रहे हैं, इसकी परीक्षा कर सकते हैं।

इकाई में बीच-बीच में अभ्यास दिये हैं। इनको करने से आपमें साक्षात्कार लेने की क्षमता का विकास होगा। आप अपने आस-पड़ोस या मित्रों से साक्षात्कार लें और अपने अभ्यास को बढ़ायें। सृजनात्मक लेखन का यह पाठ्यक्रम व्यवहारमूलक है, इसलिए व्यवहारिक कुशलता का विकास आवश्यक है। साक्षात्कार के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने के लिए एक वीडियो भी तैयार किया गया है। आप उसे अवश्य देखें। इससे आपको साक्षात्कार लेने में पर्याप्त मदद मिलेगी। आप पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाले साक्षात्कारों को ध्यान से पढ़ें और उनकी विशेषताओं और सीमाओं को नोट करें। इससे आपकी अपनी कुशलता का विकास होगा।

16.2 साक्षात्कार का महत्व

पत्र-पत्रिकाओं में फीचर लेखन का एक महत्वपूर्ण अंग है: साक्षात्कार। साक्षात्कार अर्थात् किसी अन्य व्यक्ति से मिलकर और उससे बातचीत कर किसी विषय विशेष के बारे में उससे उसका पक्ष जानना। आप पत्र-पत्रिकाओं में लगातार साक्षात्कार पढ़ते होंगे। राजनेताओं, मंत्रियों, अभिनेताओं, साहित्यकारों, कलाकारों आदि के साक्षात्कार प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं। उदाहरण के लिए, बजट के समय प्रमुख अर्थशास्त्रियों से साक्षात्कार कर उनकी राय ली जाती है। इसी प्रकार क्रिकेट टेस्ट मैचों के दौरान प्रसिद्ध खिलाड़ियों से साक्षात्कार लिये जाते हैं। साक्षात्कार हमेशा प्रतिष्ठित व्यक्तियों से ही नहीं लिये जाते, आम आदमी से भी साक्षात्कार लिये जाते हैं। उदाहरण के लिए, बजट के प्रभाव का जायजा लेने के लिए आप किसी गृहिणी, मजदूर, दूकानदार, सरकारी कर्मचारी आदि से साक्षात्कार ले सकते हैं। इस तरह के साक्षात्कार से आपको यह जानकारी मिलेगी कि जनता के विभिन्न हिस्से बजट के बारे में क्या सोचते हैं।

साक्षात्कार के संबंध में मुख्य बात यह है कि इससे हम उस व्यक्ति के विचार उसी के शब्दों में जान सकते हैं, जिससे हम साक्षात्कार लेते हैं। इससे विषय विशेष के संबंध में उस व्यक्ति के विचारों को जानने के बाद पाठक स्वयं अपना निष्कर्ष निकाल सकता है। उदाहरण के लिए, एक साक्षात्कार के निम्नलिखित अंश को देखिए:

प्रश्न : पहले की और आज की पत्रकारिता में आप क्या अंतर देखते हैं?
उत्तर : पत्रकारिता ज्यादा पेशेवर और व्यावसायिक होती गई है और होती जा रही है। शुरू के पत्रकार कुछ आदर्शवादी पत्रकार थे और अधिकतर संपादक और मालिक अलग नहीं थे। उनकी दृष्टि और आदर्श अलग-अलग नहीं थे। अब पत्रकार अधिकतर नौकरी करने वाले हैं। मालिक दूसरा है। मालिकों की दृष्टि व्यावसायिक होती है, पत्रकारों की

दृष्टि उन्हीं के अनुरूप हो जाती है। सभी पत्रों के लिए बिक्री बढ़ाना जरूरी है। लोगों का मत बदलना, इसका महत्व कम है। पत्र या पत्रिका बिके, इसका महत्व ज्यादा है। इसके जो परिणाम होते हैं वे पत्रकारिता में दीख ही रहे हैं।

(**अज्ञेय से साक्षात्कार,** जनसत्ता, 3 अप्रैल 1988 में प्रकाशित)

उपर्युक्त अंश में अज्ञेय ने पत्रकारिता के संबंध में जो विचार प्रस्तुत किये हैं उससे पाठक स्वयं निष्कर्ष निकाल सकता है कि वे पहले की पत्रकारिता और आज की पत्रकारिता में क्या अंतर करते हैं। पाठक अपने अनुभव द्वारा उनके विचारों की परीक्षा भी कर सकते हैं।

साक्षात्कार का लाभ यह भी है कि इसके माध्यम से किसी घटना या विषय-विशेष के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए "बजट" को लिया जा सकता है। बजट पर मिलने वाली प्रतिक्रियाएँ प्रायः अलग-अलग दृष्टिकोणों और हितों का प्रतिनिधित्व करती हैं। राजनीतिक दल अपनी दलीय नीति के अनुसार बजट का समर्थन और विरोध करते हैं। दुकानदार और व्यावसायिक हित को ध्यान में रखता है। नौकरी पेशा व्यक्ति को महँगाई और आयकर में छूट की ज्यादा चिंता होती है। गरीब तबकों को आम जरूरत की चीजों के दाम परेशान करते हैं। कहने का अर्थ यह है कि साक्षात्कार के द्वारा हम समाज के विभिन्न समूहों के विचारों से परिचित होते हैं और उन्हें समाज के अन्य समूहों तक पहुँचाते हैं।

साक्षात्कार और विचार-विमर्श में अंतर होता है। साक्षात्कार विचार-विमर्श नहीं है। इसलिए भेंटकर्ता (प्रश्नकर्ता) को अपने विचारों के प्रति आग्रही नहीं होना चाहिए। पाठक साक्षात्कारदाता के विचार जानना चाहता है न कि भेंटकर्ता के। इसलिए प्रश्नकर्त्ता को हमेशा सावधानीपूर्वक प्रश्न पूछने चाहिए और उस उद्देश्य को हमेशा सामने रखना चाहिए जिससे प्रेरित होकर उसने व्यक्ति विशेष से साक्षात्कार करने का निर्णय लिया है। निरुद्देश्य लिया गया साक्षात्कार आपसी बातचीत होकर रह जाता है और पाठक ऐसे साक्षात्कार से कुछ हासिल नहीं पर पाता। प्रश्नकर्त्ता को हमेशा साक्षात्कार को महत्वपूर्ण मानना चाहिए। यह समझना चाहिए कि वह साक्षात्कार के माध्यम से एक सामाजिक दायित्व पूरा कर रहा है। साक्षात्कार वस्तुतः एक पुल है जिससे व्यक्ति (जिससे साक्षात्कार लिया जा रहा है) और समाज को एक-दूसरे के नजदीक लाया जाता है। प्रश्नकर्त्ता के माध्यम से समाज ही उस व्यक्ति विशेष से संवाद स्थापित करता है इसलिए प्रश्नकर्त्ता का दायित्व व्यापक भी है और गंभीर भी। इसलिए प्रश्नकर्त्ता को साक्षात्कार लेने से पूर्व पूरी तैयारी करनी चाहिए और पूरी गंभीरता के साथ इंटरव्यू लेना चाहिए।

16.3 साक्षात्कार के प्रकार

साक्षात्कार के लिए व्यक्तियों का चयन किसी कारण विशेष से किया जाता है। उदाहरण के लिए, काश्मीर की समस्या पर गृह मंत्री का साक्षात्कार। यहाँ साक्षात्कार का उद्देश्य शंकर राव चव्हाण नामक व्यक्ति से उनका व्यक्तिगत परिचय प्राप्त करना नहीं है बल्कि उद्देश्य शंकर राव चव्हाण नामक व्यक्ति जो भारत का गृहमंत्री है उससे काश्मीर संबंधी समस्या पर बातचीत करना है। यहाँ साक्षात्कारदाता (अर्थात् जिसका साक्षात्कार लिया जाना है) गृहमंत्री के रूप में उत्तर देगा। इस तरह के इंटरव्यू किसी विषय-विशेष पर आधारित होंगे। अन्य उदाहरण लें, जैसे सुनील गावस्कर से क्रिकेट के बारे में बात करना, नागार्जुन से उनकी कविताओं या साहित्य के संबंध में बात करना या बाबा आमटे से पर्यावरण के बारे में बात करना—वस्तुतः विषय आधारित साक्षात्कार ही कहलायेंगे। यह भी संभव है कि आप किसी साहित्यकार से राजनीति के बारे में या किसी खिलाड़ी से सामाजिक हालात के बारे में बातचीत करें किन्तु यहाँ भी महत्व विषय का है इसलिए ऐसे इंटरव्यू भी विषय-आधारित इंटरव्यू कहलायेंगे।

लेकिन कुछ इंटरव्यू ऐसे भी होते हैं जिनमें किसी क्षेत्र विशेष में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व से परिचित कराना उद्देश्य होता है। उदाहरण के लिए, प्रसिद्ध चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन से उनके व्यक्तिगत जीवन, अभिरुचियों, कार्यों, विचारों तथा

मान्यताओं के संबंध में बातचीत करना। यहाँ उद्देश्य ही मकबूल फिदा हुसैन के व्यक्ति को उजागर करना है, इसलिए ऐसे साक्षात्कार व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार कहलायेंगे, न कि विषय-आधारित।

इस प्रकार हम साक्षात्कार के मोटे तौर पर दो भेद कर सकते हैं:

i) व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार; और
ii) विषय-आधारित साक्षात्कार

16.3.1 व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार

व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार में किसी व्यक्ति-विशेष का व्यक्तित्व केन्द्र में होता है। इस तरह के साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता आमतौर पर ऐसे प्रश्न पूछता है जो उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर करे। इस तरह के साक्षात्कार में व्यक्ति के निजी जीवन के बारे में भी सवाल पूछे जाते हैं। उसका कोई सीमित क्षेत्र नहीं होता। प्रश्नकर्त्ता को ही यह तय करना होता है कि वह उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के किन पहलुओं को और कितना उजागर करे और इसके लिए किस तरह के प्रश्न पूछे। इस प्रकार के इंटरव्यू में प्रश्नों का रूप कुछ इस तरह का होता है:

- *क्या आपको बचपन से ही क्रिकेट का शौक था?*
- *लिखने की प्रेरणा आपको किससे मिली?*
- *आपके व्यक्तित्व पर आपकी माता का असर अधिक है या पिता का?*
- *स्कूली शिक्षा के दौरान भी आप इतने ही गंभीर थे?*

उपर्युक्त प्रश्नों में हमें व्यक्ति-विशेष के निजी जीवन और उनकी अभिरुचियों-प्रवृत्तियों आदि का ज्ञान होता है और इससे हमें उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। इसी तरह के व्यक्ति-आधारित इंटरव्यू का एक अंश देखिए:

प्रश्न : आपके बारे में आमतौर पर कहा जाता है कि आपको बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है?

उत्तर : यह सही नहीं है। गुस्सा आता है, लेकिन तभी जब मैं कोई गलत काम होते देखता हूँ। आमतौर पर मेरी कोशिश होती है कि किसी के काम में दखल न दूँ। लेकिन जानते-बूझते गलत काम होने देना मेरी नैतिकता के खिलाफ है। इसी चीज का जब मैं दृढ़ता से विरोध करता हूँ तो लोग मुझे गुस्सैल और तुनक मिज़ाज कहने लगते हैं।

प्रश्न : लेकिन अगर आपका दृष्टिकोण सही है तो आपका समर्थन भी लोग करते होंगे?

उत्तर : निश्चय ही, जहाँ तक मेरा अनुभव है, आमतौर पर लोगों ने मेरा समर्थन ही किया है। विरोध तो केवल दो-चार स्वार्थी लोगों ने ही किया है।

उपर्युक्त साक्षात्कार से उस व्यक्ति के स्वभाव और रुझान का अनुमान लगाया जा सकता है। व्यक्ति-आधारित इंटरव्यू का एक स्वरूप यह भी हो सकता है कि इसमें किसी क्षेत्र विशेष में विशेष दक्षता-प्राप्त करने वाले व्यक्ति की मानसिक बुनावट को समझने का प्रयास किया जाए। उदाहरण के लिए, एक लेखक या खिलाड़ी से ऐसे आत्मीय और संवेदनात्मक प्रश्न पूछे जाएँ जिससे वह अपनी भावनाओं और अंतःप्रवृत्तियों को पाठकों के सामने खोलकर रख सके।

16.3.2 विषय-आधारित साक्षात्कार

विषय-आधारित साक्षात्कार में व्यक्ति नहीं बल्कि कोई विषय, घटना या विचार महत्वपूर्ण होता है। इस तरह के इंटरव्यू भी किसी व्यक्ति विशेष से ही लिये जाते हैं, लेकिन प्रायः उनसे निजी किस्म के प्रश्न नहीं पूछे जाते। दूसरे, इस तरह के इंटरव्यू में प्रश्नकर्त्ता के सामने निश्चित उद्देश्य होता है और आमतौर पर उसके प्रश्न उसी उद्देश्य के इर्द-गिर्द घूमते हैं। उदाहरणतः

प्रश्न : दूसरी बात जो आपने कही—जहाँ विचार-प्रधान हो वहाँ दूसरी तरह की कविता भी हो सकती है। तो ऐसा भी हो सकता है कि आपने कविता के माध्यम से कुछ विचार प्रेषित करना चाहा हो?

उत्तर : ऐसा है कि विचार जब आये तो हमने गद्य ही लिखा। ऐसा संयोग हुआ या उसमें जिज्ञासा इतनी थी, तर्क देना था तो जब विचार की बात आयी मैंने गद्य लिखा। दोनों चीजें थीं, समाधान भी, जिज्ञासा भी, तर्क भी, वह कविता में नहीं आता था। गीत में तो नहीं आ सकता। चाणक्य की नीति कवे गा तो नहीं सकते।

प्रश्न : लेकिन आपके गद्य में बहुत से ऐसे गुण हैं जो काव्य के माने जाते हैं। वैसे मानक गद्य है वह, लेकिन काव्यमय भी बहुत है। तो गद्य लिखने की ओर आपकी रुचि इसलिए हुई या बढ़ी, या अभी तक आप यही मानती हैं कि गद्य का क्षेत्र अलग है, काव्य का अलग है?

उत्तर : ऐसा मानती हूं अब भी। क्योंकि एक में हम बुद्धि को छूना चाहते हैं, जिज्ञासा जगाना चाहते हैं और चाहते हैं कि प्रश्न करे कोई। और एक में हम संप्रेषण चाहते हैं, एकदम एकता चाहते हैं। तो ऐसा होता है कि कविता में हम वहां ले जाते हैं—जिसको साधारणीकरण कहें या न कहें लेकिन वह हृदय को छूना चाहती है। तो भाषा का फर्क हो ही जाएगा। और एक में हम तर्क करना चाहते हैं, समाधान लेना या देना चाहते हैं। तो कविता में उसका विस्तार मुझे लगता है, नहीं है, महाकाव्य में हो सकता है।

प्रश्न : लेकिन संप्रेषण की बात या साथ ले चलने की बात गद्य के लिए भी उतनी ही आवश्यक है, वह बहा न भी ले चले।

उत्तर : लेकिन बुद्धि ग्रहण दूसरी तरह करती है, हृदय दूसरी तरह करता है। किसी को रोते देखें या कोई घटना देखें तो उसका प्रभाव बुद्धि पर दूसरा पड़ता है, हृदय पर दूसरा पड़ता है।

प्रश्न : तो क्या इष्ट यह नहीं हो सकता कि दोनों का सामंजस्य हो?

उत्तर : पूरी तरह नहीं होगा कभी सामंजस्य, ऐसा मुझको लगता है। गद्य रहेगा अपने ढंग से और शायद बहुत शक्तिशाली भी। जहाँ तक कविता का प्रश्न है वह प्रभाव छोड़ती है, संस्कार छोड़ती है और मैं समझती हूं कि अच्छी कविता आपको किसी समस्या में उलझा कर नहीं छोड़ेगी।....

(महादेवी वर्मा से अज्ञेय की बातचीत, **दिनमान** 4-10 दिसम्बर,' 83)

उपर्युक्त साक्षात्कार को देखें तो हम आसानी से समझ सकते हैं कि इसका एक निश्चित विषय क्षेत्र है और प्रश्नकर्ता ने अपने प्रश्न उस क्षेत्र के इर्द-गिर्द ही बुने हैं। ऐसे साक्षात्कार को हम विषय-आधारित साक्षात्कार कहेंगे।

विषय आधारित इंटरव्यू दो प्रकार के हो सकते हैं:

i) सूचनात्मक साक्षात्कार, और

ii) व्याख्यात्मक साक्षात्कार

i) सूचनात्मक साक्षात्कार : सूचनात्मक साक्षात्कार में मुख्य उद्देश्य पाठकों तक सूचना पहुँचाना है। किसी घटना के संबंध में उससे संबंधित किसी अधिकारी व्यक्ति या व्यक्तियों का साक्षात्कार लेकर लोगों के मन में उस घटना से उत्पन्न विभिन्न जिज्ञासाओं का समाहार करना होता है। उदाहरण के लिए, रेल दुर्घटना या बाढ़ या चीनी और तेल की बढ़ती किल्लत ऐसे किसी मुद्दे पर संबंधित अधिकारी से बात करके लोगों तक उससे संबंधित नवीनतम जानकारी पहुँचाई जा सकती है।

उदाहरण : रेल दुर्घटना पर रेल मंत्री से बातचीत

***प्रश्न** : इस दुर्घटना के पीछे आप क्या कारण मानते हैं?*

***उत्तर** : अभी निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है। हमने जाँच का आदेश दे दिया है। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष दुर्घटना के कारणों की जाँच करेंगे और अपनी रिपोर्ट एक माह के भीतर दे देंगे।*

***प्रश्न** : क्या आपको इस दुर्घटना के पीछे आतंकवादियों का हाथ लगता है?*

***उत्तर** : दुर्घटना से प्रभावित लोगों से बातचीत करने से मुझे ऐसा नहीं लगता। फिर भी जाँच के दौरान इस संभावना पर भी विचार किया जाएगा।*

प्रश्न : यात्रियों की सुरक्षा के लिए आप क्या कदम उठाने जा रहे हैं?
उत्तर: हमने रेलगाड़ियों में सुरक्षा बलों की संख्या में और वृद्धि करने का आदेश दिया है। रेल पटरियों की सुरक्षा के लिए भी और व्यापक प्रबंध किए जा रहे हैं। जनता से हमारी भी अपील है कि ऐसी वस्तु लेकर न चले जिससे किसी भयंकर दुर्घटना होने का अंदेशा हो। अगर कोई आपत्तिजनक वस्तु डिब्बों में दिखाई दे तो तत्काल पुलिस या रेल अधिकारी को सूचित करें।

इस तरह के साक्षात्कार में प्रश्नकर्ता के लिए यह जानना जरूरी है कि:
i) पाठक किन समस्याओं से उद्वेलित हैं?
ii) इनके संबंध में वे क्या जानना चाहते हैं?
iii) इनके बारे में अधिकतम और अधिकारिक सूचना कौन दे सकता है?

प्रश्नकर्ता को चाहिए कि वह समस्या से संबंधित सभी महत्वपूर्ण तथ्यों से स्वयं भी भलीभांति परिचित हो। उदाहरण के लिए, रेल दुर्घटना से संबंधित रेल मंत्री से साक्षात्कार का निम्नलिखित अंश देखिए:

प्रश्न : मंत्री जी, अभी तक आपने रेल दुर्घटना से प्रभावित लोगों के लिए सहायता राशि की घोषणा नहीं की है?
उत्तर : आपका यह कहना गलत है? दुर्घटना के तत्काल बाद ही मैंने सहायता राशि की घोषणा कर दी थी और यह रेडियो और टी.वी. दोनों से प्रसारित भी हुई थी।

इस तरह के प्रश्नोत्तर प्रश्नकर्त्ता की कमजोरी को दर्शाते हैं। इसके विपरीत अगर प्रश्नकर्त्ता को सही तथ्यों की पर्याप्त जानकारी होती तो वह अधिक सार्थक प्रश्न पूछ सकता था।

प्रश्न : आपने दुर्घटना से प्रभावित लोगों के लिए जो सहायता राशि की घोषणा की है, क्या वह पर्याप्त है?
प्रश्न : क्या आप इसे बढ़ाने पर विचार कर रहे हैं?

उपर्युक्त प्रश्नों से स्पष्ट है कि प्रश्नकर्त्ता को तथ्यों की सही जानकारी है और उसे यह भी मालूम है कि जनता क्या जानना चाहती है। इन प्रश्नों के उत्तर से स्वयं लोगों के मन में उठने वाले प्रश्नों का उत्तर मिल सकता है। इस तरह के इंटरव्यू में "टाइमिंग" एक महत्वपूर्ण पक्ष है। अगर साक्षात्कार सही समय और अवसर पर प्रकाशित नहीं हुआ तो वह अपेक्षित प्रभाव नहीं छोड़ेगा। इसलिए इस तरह के इंटरव्यू के लिए तत्काल तैयारी करनी चाहिए। कई बार तो ऐसे इंटरव्यू टेलीफोन द्वारा ही ले लिये जाते हैं।

ii) व्याख्यात्मक साक्षात्कार : इस तरह के साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्त्ता का उद्देश्य किसी समस्या या घटना विशेष के संबंध में ज्ञात तथ्यों के प्रकाश में व्यक्ति-विशेष के विचार जानना है। ऐसे साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता स्वयं तथ्य प्रस्तुत करता है और साक्षात्कारी से उनके संबंध में स्पष्टीकरण या उसके विचार पूछता है। इस तरह के साक्षात्कार का उद्देश्य यह है कि इससे लोगों को उत्तरदाता का पक्ष प्रामाणिक रूप में ज्ञात हो जाता है। इससे पाठक स्वयं सही-गलत का निर्णय ले सकता है। प्रश्नकर्त्ता को चाहिए कि वह ऐसे ही प्रश्न पूछे जो कथित घटना या समस्या के संबंध में उत्तरदाता के पक्ष में सभी पहलुओं को उजागर कर सके। इसलिए इस तरह के साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता को उत्तर के अनुसार प्रतिप्रश्न पूछने के लिए तैयार रहना चाहिए लेकिन यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कहीं वह उत्तरदाता से बहस में न उलझ जाए। प्रश्नकर्त्ता को चाहिए कि वह प्रश्न पूछते हुए सजग रहे। प्रश्न संक्षेप में परन्तु सधी हुई भाषा में पूछे। प्रश्न स्पष्ट हो जिसे समझने में कोई कठिनाई न हो। अन्यथा उत्तर अस्पष्ट और उलझा हुआ मिलेगा। जो भी उत्तर मिले उसके मंतव्य को समझते हुए अगर आवश्यक हो तो तत्काल प्रतिप्रश्न पूछना चाहिए।

प्रश्नकर्त्ता को इस तरह के साक्षात्कार में तथ्यों या सूचनाओं के बारे में पूछने से बचना चाहिए बल्कि तथ्यों या सूचनाओं को आधार बनाकर अपने प्रश्न पूछने चाहिए। उदाहरण के लिए, सरकार ने नयी शिक्षा नीति की घोषणा की है और इस संबंध में आप शिक्षा मंत्री से साक्षात्कार लेना चाहते हैं तो शिक्षा मंत्री से यह मत पूछिए कि नयी शिक्षा नीति क्या

है? इसकी जानकारी आपको पहले से होनी चाहिए। नयी शिक्षा नीति का अध्ययन कीजिए और उसके संबंध में स्पष्टीकरण या व्याख्या माँगिए।

निम्नलिखित प्रश्नोत्तर को देखिए, इससे स्पष्ट हो जाएगा कि व्याख्यात्मक साक्षात्कार में किस तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं:

प्रश्न : *नयी शिक्षा नीति की समीक्षा करते समय किन मुद्दों पर आप खास तौर से ध्यान देंगे।*

उत्तर : *इस बारे में संसद में दिया गया हमारा बयान एकदम स्पष्ट था कि यह कदम 1986 से लागू शिक्षा नीति का पुनरावलोकन है। अब सवाल यह उठता है कि किस बात की समीक्षा की जानी चाहिए? 1964 में पहली बार कोठरी आयोग द्वारा यह लक्ष्य निर्धारित किया गया था कि सकल राष्ट्रीय आय का 6% शिक्षा में व्यय किया जाए। इस लक्ष्य को बाद की सभी सरकारों ने अपनाया भी किन्तु इसको कभी पूरी तरह लागू नहीं किया जा सका। वर्तमान में यह 4.2% है, जो 1400 करोड़ होता है। हमने घोषणा-पत्र में वायदा किया था कि हम 6% के लक्ष्य को 1995 तक पा लेंगे। तकरीबन 42 करोड़ भारतीय अशिक्षित हैं। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों का दुगुना है। शिक्षा पा रही लड़कियों का प्रतिशत लड़कों की तुलना में काफी कम है। हरिजनों में शिक्षा का औसत 10% से भी कम है, जबकि शिक्षा का राष्ट्रीय औसत 36% से भी अधिक है।*

प्रश्न : *महिलाओं की शिक्षा के विषय में आप क्या सोचते हैं?*
उत्तर : *हमारा उद्देश्य है कि महिलाओं को ऐसी शिक्षा दी जाए....*

उपर्युक्त इंटरव्यू राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की इस घोषणा के बाद शिक्षा राज्य मंत्री चिमनभाई मेहता से लिया गया है कि सरकार नयी शिक्षा नीति की पुनर्समीक्षा करेगी। इसलिए इसके प्रश्नोत्तर इस घोषणा को विस्तार से स्पष्ट करते हैं और उन कारणों पर प्रकाश डालते हैं, जो नयी शिक्षा नीति की पुनर्समीक्षा के आधार हैं।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तर इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से मिलाइए।

1) निम्नलिखित में से सही कथन के आगे (√) का चिह्न लगाइए।

   i) साक्षात्कार दो व्यक्तियों की पारस्परिक बातचीत है। ( )

   ii) साक्षात्कार के माध्यम से किसी घटना या विषय के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया जा सकता है। ( )

   iii) साक्षात्कार में भेंटकर्त्ता का दृष्टिकोण प्रमुख रहता है। ( )

   iv) साक्षात्कार के द्वारा समाज व्यक्ति-विशेष से संवाद स्थापित करता है। ( )

2) सूचनात्मक साक्षात्कार और व्याख्यात्मक साक्षात्कार में मुख्य अंतर दो-तीन पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार की कोई दो विशेषताएँ बताइए।

.....

.....

.....

.....

4) सूचनात्मक साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता को किन प्रमुख बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5) व्याख्यात्मक साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता को किन प्रमुख बातों का ध्यान रखना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

1) निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर बताइए कि ये किस तरह के साक्षात्कार के लिए उपर्युक्त हैं?

i) मुख्यमंत्री महोदय, आप अपने मंत्रिमंडल का विस्तार कब कर रहे हैं?

(.....)

ii) रेल के यात्री किराये में वृद्धि करने के पीछे क्या विवशता रही है?

(.....)

iii) आपके उपन्यासों के नायक टूटे हुए, कुंठित और निराशावादी क्यों होते हैं?

(.....)

iv) पारिवारिक जीवन के दायित्व क्या आपके लेखन को प्रभावित नहीं करते?

(.....)

v) विश्व कप में भारतीय हॉकी टीम की पराजय के लिए आप किसे दोषी मानते हैं?

(.....)

2) अपने किसी मित्र से साक्षात्कार लेने के लिए आपके शहर में बढ़ते प्रदूषण के कारणों और उसके निवारण के उपायों पर प्रश्न तैयार कीजिए। प्रश्नों की संख्या पाँच से अधिक न हो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

16.4 साक्षात्कार की तैयारी

साक्षात्कार लेने से पूर्व साक्षात्कारकर्ता को यह अवश्य जान लेना चाहिए कि उसे इस साक्षात्कार के माध्यम से क्या लक्ष्य प्राप्त करना है अर्थात् साक्षात्कार का उद्देश्य क्या है।

क्या साक्षात्कार का उद्देश्य किसी समस्या के विभिन्न पक्षों को उजागर करना है या किसी क्षेत्र विशेष के संबंध में सूचनाएँ लोगों तक पहुँचाना है? आपके साक्षात्कार का उद्देश्य किसी घटना विशेष के संबंध में संबंधित विशेषज्ञों के विचारों को एकत्र करना है या आप किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के व्यक्तित्व से लोगों को परिचित कराना चाहते हैं? आपके साक्षात्कार का जो भी उद्देश्य हो, सबसे पहला प्रश्न यही उपस्थित होता है कि आप साक्षात्कार के लिए सही व्यक्ति का चुनाव कैसे करें।

16.4.1 व्यक्ति का निर्धारण

सही व्यक्ति के चुनाव के लिए आवश्यक है कि आपको स्वयं विषय-विशेष या घटना-विशेष से संबंधित तथ्यों की पर्याप्त जानकारी हो। यह कार्य बेहतर ढंग से तभी संभव है जब वह क्षेत्र विशेष आपकी अभिरुचि और विशेषज्ञता से संबंधित हो। उदाहरण के लिए, आप किसी क्रिकेट खिलाड़ी का साक्षात्कार लेना चाहते हैं परन्तु आपकी दिलचस्पी क्रिकेट के बारे में बिल्कुल नहीं है तो आप उत्तरदाता को अपने प्रश्नों से प्रभावित नहीं कर पायेंगे। हो सकता है आपकी अनभिज्ञता उत्तरदाता को असंतुष्ट कर दे।

जब क्षेत्र स्वयं आपकी दिलचस्पी और विशेषज्ञता का होगा तो आप अधिक बेहतर ढंग से अपने प्रश्नों का निर्माण कर सकेंगे। आपके समझदारीपूर्ण प्रश्नों से उत्तरदाता को भी इंटरव्यू देते हुए प्रसन्नता होगी। और यह भी संभव है कि वह ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने के **लिए भी तैयार हो जाए, जिस पर आमतौर पर वह अपना मत व्यक्त करने को तैयार नहीं होता**

सही क्षेत्र के निर्धारण के साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिस विषय पर आप इंटरव्यू लेना चाहते हैं उसकी प्रासंगिकता क्या है? अर्थात् क्या पाठक उस इंटरव्यू को दिलचस्पी के साथ पढ़ेगा? मान लीजिए आप किसी ऐसे विषय पर इंटरव्यू लेते हैं जिसमें उस पत्र-पत्रिका के पाठकों की कोई रुचि नहीं है तो आपका इंटरव्यू अनपढ़ा ही रह जाएगा।

अंत में, आपको यह विचार करना चाहिए कि इंटरव्यू के लिए हम किसका चयन करें। यह सोचिए कि उस क्षेत्र विशेष के लिए सही अधिकारी व्यक्ति कौन हो सकता है? क्या वह सरलता से इंटरव्यू देने के लिए तैयार हो जाएगा? क्या पाठक उस व्यक्ति के इंटरव्यू में दिलचस्पी लेंगे?

मान लीजिए, आप अपने शहर की बिजली-व्यवस्था के संबंध में इंटरव्यू लेना चाहते हैं तो कोशिश कीजिए कि बिजली-विभाग के सबसे बड़े अधिकारी से आप साक्षात्कार लें। विश्वविद्यालय में छात्रों के प्रवेश संबंधी कठिनाइयों के लिए आप कुलपति से बात करें। साथ ही आप बिजली समस्या पर बिजली उपभोक्ताओं का इंटरव्यू भी ले सकते हैं और प्रवेश के संबंध में छात्रों और उनके संरक्षकों आदि से भी बातचीत कर सकते हैं। इसलिए पहले आपको यह तय करना होगा कि आपको किन-किन से इंटरव्यू लेना है जिनके मतों को जानने में पाठकों की दिलचस्पी होगी।

शुरुआत के लिए आपको अपने आसपास के लोगों का इंटरव्यू लेकर अभ्यास करना चाहिए। आप अपने कॉलेज की फुटबाल टीम के कप्तान का इंटरव्यू ले सकते हैं। अपने मुहल्ले या कालोनी के किसी बुजुर्ग व्यक्ति से रिटायर्ड जीवन की मुश्किलों के बारे में बात कर सकते हैं?

16.4.2 पूर्वानुमति

जब आप यह तय कर लें कि आपको किसका इंटरव्यू लेना है तो सबसे पहले आपको उस व्यक्ति से संपर्क करके उससे इंटरव्यू के लिए अनुमति प्राप्त करनी चाहिए। यह कार्य आप व्यक्तिगत मुलाकात द्वारा, टेलीफोन द्वारा या पत्र द्वारा कर सकते हैं। अनुमति लेने के लिए आपको अपने इंटरव्यू का मकसद तथा विषय स्पष्ट करना चाहिए। यह बताना चाहिए कि इंटरव्यू का उद्देश्य प्राप्त करने में उत्तरदाता का योगदान क्यों महत्वपूर्ण है तथा किस पत्र-पत्रिका के लिए आप इंटरव्यू लेना चाहते हैं।

अनुमति मिल जाने पर आप इंटरव्यू के लिए दिन, समय और स्थान भी उत्तरदाता के साथ तय कर लीजिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि इंटरव्यू के लिए उत्तरदाता को पर्याप्त समय मिले। इंटरव्यू का स्थान निर्धारित करते हुए आप उत्तरदाता को अपने सुझाव दे सकते हैं, लेकिन निर्णय उनकी सुविधा को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए। इंटरव्यू के लिए जितना समय तय हो, आप अपने प्रश्नों को उसी समय अवधि के अनुसार तैयार कीजिए, लेकिन यह भी ध्यान रखिए कि अगर उत्तरदाता साक्षात्कार के दौरान ही अवधि बढ़ाने के लिए तैयार हो जाता है तो आपके पास साक्षात्कार आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त और महत्वपूर्ण प्रश्न होने चाहिए।

16.4.3 आवश्यक अध्ययन

इंटरव्यू पर जाने से पहले आपको संबंधित विषय की पर्याप्त जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए। तथ्यों की भी जाँच-परख कर लेनी चाहिए तथा उत्तरदाता के संबंध में भी आपको सही जानकारी होनी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि आपकी गलत जानकारी या अनभिज्ञता इंटरव्यू के दौरान हास्यास्पद स्थिति पैदा कर दे। विशेष रूप से उत्तरदाता के संबंध में आपका ज्ञान पूरी तरह से तथ्यों पर आधारित होना चाहिए। इंटरव्यू के दौरान वार्तालाप निम्नलिखित ढंग से नहीं चलना चाहिए।

प्रश्न : *आप लंबे समय तक लोकसभा के सदस्य भी रहे हैं इस नाते आप इस समस्या के बारे में क्या सोचते हैं?*

उत्तर : *मैं लोकसभा का सदस्य कभी नहीं रहा, सिर्फ एक अवधि के लिए राज्य सभा का सदस्य रहा हूं?....*

या

प्रश्न : *आपने जो कपड़ा नीति लागू की उसके बाद भी कपड़ा उद्योग में कोई सुधार नहीं आया है?*

उत्तर : *देखिए, अभी हमने नयी कपड़ा नीति लागू नहीं की है, अभी तो हम पूर्व सरकार की कपड़ा नीति की समीक्षा ही कर रहे हैं, उसके बाद ही कपड़ा नीति में परिवर्तन के संबंध में कुछ कहना संभव होगा।*

जब साक्षात्कार उपर्युक्त ढंग से चलता है तो पाठक की नज़र में साक्षात्कारकर्त्ता की प्रतिष्ठा कम हो जाती है? पाठक यह सोचने लगता है कि साक्षात्कारकर्त्ता अपने कार्य के प्रति गंभीर नहीं है। इसलिए जरूरी है कि साक्षात्कारकर्त्ता को साक्षात्कार से पूर्व आवश्यक अध्ययन और पर्याप्त जानकारी अवश्य प्राप्त कर लेनी चाहिए।

16.5 प्रश्नावली का निर्माण

साक्षात्कार से पूर्व सबसे महत्वपूर्ण काम है प्रश्नावली का निर्माण। साक्षात्कार सोद्देश्यपूर्ण बातचीत है। इसलिए प्रश्नकर्त्ता को प्रश्न निर्माण करते वक्त हमेशा साक्षात्कार का उद्देश्य अवश्य सामने रखना चाहिए। साक्षात्कारकर्त्ता जिस व्यक्ति से, जिस विषय में बातचीत करने जा रहा है, उसके संबंध में उसका ज्ञान पर्याप्त होता है, होना चाहिए। लेकिन इंटरव्यू के दौरान प्रश्नकर्त्ता की स्थिति सिर्फ श्रोता की होती है। उसे साक्षात्कारदाता से बहस करने से बचना चाहिए और अपनी राय या मत को इंटरव्यू पर हावी नहीं होने देना चाहिए। इससे इंटरव्यू का उद्देश्य ही खत्म हो जाएगा। लेकिन प्रश्नों में आपका ज्ञान और समझदारी अवश्य अभिव्यक्त होनी चाहिए।

16.5.1 प्रश्नों का लेखन

प्रश्न तैयार करने के दो आधार हो सकते हैं। जब प्रश्नकर्त्ता साक्षात्कारदाता से सिर्फ सूचनाएँ प्राप्त करना चाहता है तो उसके प्रश्नों का स्वरूप अलग होगा। ऐसे प्रश्न आमतौर पर कौन? कब? और कहाँ? के आधार पर निर्मित होंगे? जैसे:

- *नयी निर्यात नीति से भारतीय उद्योग को क्या लाभ होगा?*

- *क्रिकेट बोर्ड के इस निर्णय का औचित्य आप **कैसे** निर्धारित करेंगे?*
- *आप **क्यों** ऐसा मानते हैं कि नयी उद्योग नीति से निर्यात को बढ़ावा मिलेगा?*

उपर्युक्त सभी प्रश्नों में किसी ज्ञात तथ्य को आधार बनाकर साक्षात्कारदाता से उसका पक्ष जानने का प्रयास किया गया है।

प्रश्न बनाते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रश्न का उत्तर इतना संक्षिप्त न हो कि आगे प्रश्न पूछना ही संभव न लगे। उदाहरण के लिए, यह पूछने के बजाय कि "क्या आप ईश्वर में विश्वास करते हैं?" यह पूछना चाहिए कि "ईश्वर के संबंध में आपके क्या विचार हैं?" पहले प्रश्न का उत्तर "हाँ" या "नहीं" में होगा और अगर आप पहले से ऐसे उत्तर की आशा नहीं करते तो आप प्रतिप्रश्न नहीं पूछ पायेंगे और साक्षात्कार में अवरोध उत्पन्न हो जाएगा? दूसरे, बात आगे बढ़ाने के लिए अंततः फिर उसी प्रश्न पर आना होगा यानी आपको पूछना होगा कि "आपके विश्वास या अविश्वास का आधार क्या है?" इसलिए व्याख्या वाले प्रश्नों में हमेशा **क्यों** और **कैसे** की ध्वनि विद्यमान रहनी चाहिए अन्यथा उत्तर पूरे और स्पष्ट प्राप्त नहीं होंगे।

- *क्या आपकी पार्टी संसद में दल-बदल विधेयक का समर्थन करेगी?*

या

- *क्या आपकी पार्टी राष्ट्रीय मोर्चा सरकार में शामिल होगी?*

*इस तरह के प्रश्नों से जो उत्तर प्राप्त होंगे वे "हाँ" या साक्षात्कारदाता "टिप्पणी नहीं" कहेगा। लेकिन इतना तय है कि उत्तरदाता को **कोई न कोई** स्पष्ट अभिमत प्रकट करना होगा। अगर वह इसके बावजूद गोलमोल उत्तर देगा तो पाठकों के सामने उस नेता की "दुविधा" भी स्पष्ट हो जाएगी।*

16.5.2 मुख्य बातें

प्रश्नों की भाषा साक्षात्कारदाता के प्रति पूर्वग्रह से ग्रस्त नहीं होनी चाहिए। न उसे चुभने वाली और न अपमानित करने वाली बात कहनी चाहिए। हाँ, यह संभव है कि कभी-कभी इंटरव्यू के दौरान आप कुछ ऐसे तीखे प्रश्न पूछें कि उत्तरदाता कुछ सीमा तक उत्तेजित हो जाए। लेकिन ऐसे अवसरों पर भी आप में व्यक्तिगत दुराग्रह व्यक्त नहीं होना चाहिए और पाठक को यह महसूस होना चाहिए कि आपका उद्देश्य पाठकों तक सच्चाई पहुँचाना है। व्यक्तिगत जीवन से संबंधित ऐसे प्रश्न न पूछें जो साक्षात्कारदाता के लिए अपमानजनक हो। प्रश्न पूछते हुए साक्षात्कारदाता आमतौर पर प्रश्नकर्त्ता के पूर्वग्रह से चिढ़ सकते हैं जैसे ऐसे प्रश्न पूछना :

- *आपने ऐसी जगह से चुनाव लड़ने का **बचकाना** निर्णय क्यों लिया **जहाँ आपका कोई जनाधार नहीं था?***
- *भारतीय टीम में रोज-रोज नयी तब्दीली करने के इस **भौंडे नाटक** के संबंध में **क्या आप कुछ सफाई दे सकते हैं?***

आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं कि ये प्रश्न किसी को भी चुभ सकते हैं। प्रश्नों को हमेशा सही और तार्किक क्रम से पूछना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि आप पहले से प्रश्नों की रूपरेखा बना लें। आपको यह भी अनुमान लगाना चाहिए आपके प्रश्न का क्या उत्तर मिलने की संभावना है? इस "संभाव्यता" के आधार पर अगले प्रश्न तैयार कीजिए। अगर आपने उत्तरदाता के बारे में पर्याप्त अध्ययन कर लिया है तो एक हद तक उत्तर का अनुमान पहले से लगा सकते हैं।

अगर प्रश्न के उत्तर आपके अनुमान से अलग मिलते हैं तो आप अपने आगे के प्रश्नों को इंटरव्यू के दौरान ही परिवर्तित कीजिए। अपने तैयार प्रश्नों पर अड़े मत रहिए।

जितना संभव हो प्रश्नों को छोटा और स्पष्ट बनाइए। लंबे और अस्पष्ट प्रश्नों से बचिए। ऐसे प्रश्न उत्तरदाता को प्रेरित नहीं करेंगे। प्रश्न पूछते हुए आप अपने मत या दृष्टिकोण को विस्तार से बताने की कोशिश मत कीजिए। दो-तीन प्रश्न एक साथ मत पूछिए। एक बार में एक ही प्रश्न पूछिए।

'प्रश्न पूछते हुए यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि वह इतने खुले हुए भी नहीं होने चाहिए कि उसके उत्तर या तो देना ही संभव न हो या इतने लंबे हों कि उनको साक्षात्कार में समेटना कठिन हो जाए। उदाहरण के लिए, इस तरह के प्रश्न *"आप अपने बचपन के बारे में बताइए"* या *"आप कभी एक माह तक होनोलूलू में प्रवास करके लौटे हैं, उसके बारे में हमारे पाठकों को कुछ बताइए।"*

इंटरव्यू में प्रश्न पूछते हुए आप स्वयं उत्तर का सुझाव न दें। जैसे *"नयी शिक्षा नीति के बारे में आपका क्या विचार है? मेरे विचार में तो यह शिक्षा नीति शिक्षा के क्षेत्र में मूलभूत परिवर्तन का आधार बनेगी।"* प्रश्न पूछने का यह ढंग प्रश्नकर्त्ता की अपरिपक्वता को दर्शाता है।

प्रश्न पूछते हुए उत्तरकर्त्ता को अपनी ओर से उत्तर सुझाने में और भी खतरे हैं।

- *आपको इस बार लोकसभा का टिकट नहीं दिया गया है क्या आपको इसके योग्य नहीं समझा गया या आप स्वयं इच्छुक नहीं थे?*

इस तरह के प्रश्न में आपने अपनी तरफ से दो उत्तर दे दिये हैं। यह भी संभव है कि उत्तरदाता इन दोनों उत्तरों से सहमत न हो। और वह आपकी बात सिरे से ही काट दे। वह कोई तीसरा जवाब दे। इसलिए बेहतर यही है कि आप सीधे प्रश्न पूछें:

- *इस बार आपको लोकसभा का टिकट नहीं मिलने का क्या कारण है?*

इंटरव्यू के दौरान उत्तरदाता के दृष्टिकोण से भिन्न दृष्टिकोण या राय आपको ज्ञात हो तो उन्हें आधार बनाकर प्रतिप्रश्न पूछना इंटरव्यू को और अर्थवान् बनाता है। लेकिन ऐसे प्रश्न पूछते हुए आपकी वस्तुपरक निष्पक्षता अवश्य प्रतिबिंबित होनी चाहिए। ऐसे प्रश्न पूछने का सही ढंग यह होगा।

- *जो लोग यह मानते हैं कि नयी शिक्षा नीति वस्तुतः शिक्षा-विरोधी है, ऐसे मत के संबंध में आपकी क्या प्रतिक्रिया है....*
- *यह तर्क दिया जाता है कि....आप इस संबंध में क्या कहना चाहेंगे*

लेकिन ऐसे प्रश्न निम्नलिखित ढंग से कभी न पूछिए

- *लेकिन यह भी तो कहा जाता है कि....*
- *कुछ लोगों का यह मत है कि....*

यहाँ प्रश्न नहीं पूछे गये हैं बल्कि भिन्न मत प्रस्तुत कर दिये गये हैं। ऐसे कथन का उत्तर देना साक्षात्कारदाता के लिए आवश्यक नहीं है और ऐसी स्थिति में इंटरव्यू में अवरोध उत्पन्न हो सकता है।

16.5.3 आरंभिक प्रश्न

साक्षात्कार से पूर्व उसका उद्देश्य आपके मस्तिष्क में स्पष्ट होना चाहिए। आपने जिस व्यक्ति से साक्षात्कार लेने का निश्चय किया है, उसे पहले ही अपने उद्देश्य के संबंध में बता दीजिए। इस पर भी उसके साथ विचार कर लीजिए कि आप किस तरह के प्रश्न पूछेंगे और साक्षात्कार का आरंभ कैसे करेंगे।

आपके इंटरव्यू का उद्देश्य क्या है उसके अनुसार अपने प्रश्न बनाइए। अगर किसी दुर्घटना, यात्रा या उल्लेखनीय घटना के संबंध में जानना चाहते हैं तो आपके साक्षात्कार का लक्ष्य उस व्यक्ति की स्मृतियों को जगाना होना चाहिए। आप अगर किसी विशेषज्ञ से बात कर रहे हैं तो आपको उसके ज्ञान को सामने लाने की कोशिश करनी चाहिए। अगर आप किसी समस्या के संबंध में किसी अधिकारी से बात कर रहे हैं तो आप समस्या को आधार बनाकर प्रश्न पूछिए। किसी महत्वपूर्ण लेखक, खिलाड़ी या कलाकार से बात करते हुए उसके कार्यों और उसके व्यक्तित्व को उजागर करने की कोशिश कीजिए।

इंटरव्यू की शुरुआत महत्वपूर्ण होती है। आपका साक्षात्कार कैसे आरंभ हो, इस पर आगे की बातचीत निर्भर करेगी। पहले प्रश्न से आप भूमिका बाँधिए और उसके बाद लक्ष्य की ओर आगे बढ़िए।

उदाहरण के लिए, अगर किसी फिल्म अभिनेता से आप साक्षात्कार ले रहे हैं और इंटरव्यू से कुछ अरसे पूर्व उस अभिनेता को कोई पुरस्कार मिला है या उसकी कोई फिल्म रिलीज़ हुई है या किसी खास संदर्भ में उसकी चर्चा हुई है तो उल्लेख करते हुए बात शुरू कीजिए। अगर किसी प्रतियोगिता के आरंभ होने से पूर्व किसी संबंधित खिलाड़ी का इंटरव्यू लिया जाता है तो उसकी शुरुआत कुछ इस ढंग से की जा सकती है।

प्रश्न : *रिलायंस कप में भारत की संभावनाएँ क्या हैं?*

उत्तर : *मैं क्रिकेट खेलने का सिर्फ एक तरीका जानता हूँ और वह है, जीतने की कोशिश। मुझे पक्का यकीन है कि हम ही जीतेंगे।*

इंटरव्यू के आरंभ में पूछे गये प्रश्न दो काम करते हैं :

i) उत्तरदाता के साथ प्रश्नकर्ता अपना तादात्म्य स्थापित करता है।

ii) पाठकों को बातचीत की भूमिका स्पष्ट होती है। वे अनुमान लगा सकते हैं कि आगे की बातचीत की दिशा क्या होगी। इससे उनकी दिलचस्पी बढ़ती है।

लेकिन यह भी ध्यान रखिए कि आप महत्वपूर्ण प्रश्नों पर जल्दी ही आ जाएँ अन्यथा बाद में समय के अभाव में अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न छूट जायेंगे। या यह भी संभव है कि बात किसी अन्य दिशा की ओर मुड़ जाए जिसका अधिक महत्व न हो। तमस नामक टीवी सीरियल के प्रसारण के अवसर पर रविवार साप्ताहिक ने प्रख्यात कथाकार भीष्म साहनी का साक्षात्कार किया। यह सीरियल उन्हीं के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित था। इस साक्षात्कार का पहला प्रश्न औपचारिक है, लेकिन बातचीत शीघ्र ही अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होने लगती है। साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्नों से यह स्पष्ट है :

सवाल *(1) तमस के लेखक को अपनी रचना परदे पर देखकर कैसा महसूस हो रहा है?*

सवाल *(2) क्या ऐसा नहीं लगता कि यह धारावाहिक उन सभी लोगों को चेतावनी देता है, जो एक बार फिर मुल्क के बँटवारे की बात कर रहे हैं?*

सवाल *(3) किस ढंग से? आपके लिहाज से ऐसी कौन-सी बात तमस उन करोड़ों हिंदुस्तानियों तक पहुँचाता है जो इसे देख या पढ़ रहे हैं?*

बोध प्रश्न

6) साक्षात्कार के लिए सही व्यक्ति का निर्धारण कैसे किया जाना चाहिए? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

7) साक्षात्कारकर्त्ता को इंटरव्यू लेने से पूर्व किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? लगभग पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8) निम्नलिखित बातों/समस्याओं के लिए किन-किन व्यक्तियों से इंटरव्यू लेना चाहिए?

i) शहर में बढ़ते अपराधों के संबंध में

.....

ii) महँगाई की समस्या को उजागर करने के लिए

.....

iii) छात्रों के राजनीति में भाग लेने के संबंध में

.....

iv) प्रेमचंद के साहित्यिक अवदान पर

.....

9) साक्षात्कार से पूर्व साक्षात्कारकर्त्ता के लिए अध्ययन की क्यों आवश्यकता है? कोई दो कारण बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

10) प्रश्न पूछते हुए साक्षात्कारकर्त्ता को किन प्रमुख बातों का ध्यान रखना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

3) निम्नलिखित प्रश्नों के दो-दो रूप दिये गये हैं। इनमें से कौन-से रूप अधिक उचित हैं, उन पर √ का चिह्न लगाइए।

i) क) आप अज्ञेय को बड़ा कवि मानते हैं या मुक्तिबोध को? ( )

ख) कवि के रूप में आपको अज्ञेय और मुक्तिबोध में क्या समानता और विभिन्नता नजर आती है? ( )

ii) क) कुछ लोगों ने इस कांड के साथ आपके नाम को जोड़ने की कोशिश की है। आप है। आप इस संबंध में क्या कहना चाहेंगे? ( )

ख) इस घोटाले में क्या आपका भी हाथ है? ( )

iii) क) आपने इस फिल्म में काम करने से इसलिए इंकार किया क्योंकि निर्माता आपको मुँहमांगा पैसा नहीं दे रहा था? फिल्म की सफलता के बाद आपको आपको पछतावा नहीं हो रहा है? ( )

ख) इस फिल्म में काम करने से इंकार करने की क्या वजह थी? फिल्म की सफलता के बाद आप क्या अनुभव करते हैं? ( )

iv) क) इस टेस्ट श्रृंखला में आप इतना खराब क्यों खेले? ( )

ख) इस टेस्ट श्रंखला में आप अपने खेल का मूल्यांकन किस रूप में करते हैं?( )

4) अपने किसी मित्र से साक्षात्कार लेने के लिए कुछ प्रश्न लिखिए। विषय हो– कॉलेज में प्रवेश में आने वाली कठिनाइयाँ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

16.6 साक्षात्कार लेना

जब आप साक्षात्कार लेने जाएँ तो हमेशा समय पर पहुँचिए। देर से पहुँचने पर यह भी संभव है कि वह व्यक्ति आपकी प्रतीक्षा करके अन्य काम में व्यस्त हो गया हो। यह भी संभव है कि आपके देर से पहुँचने के कारण वह साक्षात्कार के लिए निर्धारित समय न दे

सके और यह भी संभव है कि आपके प्रति वह प्रतिकूल रुख अपना ले। ये तीनों स्थितियाँ साक्षात्कार के लिए उचित नहीं हैं। इसलिए बेहतर यही है कि आप समय पर पहुँचें ताकि साक्षात्कारदाता पर आपका प्रभाव अच्छा पड़े और आप उसका विश्वास जीत सकें।

16.6.1 सहज मनःस्थिति

अगर आप पहली बार साक्षात्कार लेने जा रहे हैं तो आपका घबराना स्वाभाविक है। इसलिए यह बेहतर है कि किसी पत्र-पत्रिका के लिए साक्षात्कार लेने से पहले आप अपने आसपास रहने वालों से इंटरव्यू लेने का अभ्यास कीजिए ताकि आपकी झिझक खत्म हो सके।

अगर आपने इंटरव्यू से पहले पर्याप्त तैयारी कर ली है तो आप निश्चय ही अपने अंदर विश्वास महसूस करेंगे। आप अपने प्रश्नों को एक बार अच्छी तरह से दोहरा लीजिए और प्रश्नों के लिखित रूप को इंटरव्यू के दौरान अपने सामने रखिए। अपनी वेशभूषा सलीकेदार रखिए ताकि साक्षात्कारदाता पर गंभीर प्रभाव पड़े। यह भी ध्यान रखिए कि आप किनसे मिलने जा रहे हैं। अगर आपकी वेशभूषा का साक्षात्कारदाता पर प्रतिकूल असर पड़ता है तो साक्षात्कार सुखद माहौल में नहीं हो सकेगा।

जब साक्षात्कार के लिए पहुँचे तो घबराइए मत। जल्दबाजी और हड़बड़ाहट की बजाय धीरे-धीरे सोच-समझकर अपनी बात आरंभ कीजिए। अगर आप किसी बड़े नेता, प्रख्यात अभिनेता या कलाकार से मिलने जा रहे हैं तो भी घबराइए मत। ये सभी लोग हमारी तरह सामान्य इंसान हैं। आमतौर पर इनका व्यवहार मित्रतापूर्ण और सौहार्दता से भरा होता है।

अगर आप भयभीत और संकोची रहेंगे तो अपनी बात ठीक से न रख सकेंगे और न ही साक्षात्कारदाता के उत्तर सुन पायेंगे। अगर आपके चेहरे पर घबराहट व्यक्त होगी तो साक्षात्कारदाता भी साक्षात्कार के दौरान सहज नहीं हो पाएगा।

इसलिए आप सहज होकर, पूरी तैयारी के साथ, पूरे आत्मविश्वास के साथ इंटरव्यू के लिए जाइए।

16.6.2 तादात्म्य

जब आप साक्षात्कार आरंभ करें तो अपने प्रश्नों पर आने से पूर्व साक्षात्कारदाता से तादात्म्य स्थापित करने की कोशिश कीजिए। साक्षात्कारदाता के महत्व और व्यस्तता की चर्चा करते हुए उसे बताइए कि यह साक्षात्कार किस उद्देश्य के लिए किया जा रहा है। साक्षात्कारदाता को यह भी बताइए कि इंटरव्यू के दौरान आप किस तरह के प्रश्न पूछना चाहते हैं। साक्षात्कारदाता अगर प्रश्नों के स्वरूप में या क्रम में परिवर्तन चाहता है या कुछ प्रश्न जोड़ना या हटाना चाहता है और इससे आपके उद्देश्य पर कोई प्रतिकूल असर नहीं पड़ता है तो आप साक्षात्कारदाता के कहे अनुसार परिवर्तन कर लीजिए। यदि साक्षात्कारदाता के सुझाव आपके उद्देश्य की प्राप्ति में बाधक है तो आप उसे अपना पक्ष ठीक से स्पष्ट कीजिए। निश्चय ही एक सफल साक्षात्कारकर्त्ता को अपना व्यवहार लचीला और विनम्र बनाना चाहिए।

16.6.3 आरंभिक चरण का महत्व

साक्षात्कार का आरंभिक चरण महत्वपूर्ण होता है। विषय पर आपकी दक्षता, आपकी गंभीरता, आपकी समझदारी और आपके कुशल व्यवहार का आरंभिक प्रभाव आगे के क्षणों में साक्षात्कारदाता के व्यवहार को तय करने में मदद करेगा। साक्षात्कारदाता पर अगर आपके व्यवहार का असर अच्छा पड़ता है तो वह आपको साक्षात्कार में पूर्ण सहयोग देगा। यदि उसे आपके व्यवहार में या इंटरव्यू लेने के तरीके में कोई बात खटकने वाली लगी तो उसका मूड बिगड़ सकता है। इसलिए यह ध्यान रखना चाहिए कि आरंभ से ही आपका समग्र प्रभाव साक्षात्कारदाता के लिए उत्साहवर्द्धक हो।

जिससे आप साक्षात्कार ले रहे हैं, वह अगर अधिक अनुभवी न हो या इंटरव्यू देने का यह उसके लिए पहला अवसर हो तो आपका व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण और मित्रवत् होना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के साथ आप औपचारिक साक्षात्कार आरंभ करने से पूर्व अनौपचारिक

बातचीत शुरू कीजिए। इसी प्रक्रिया में धीरे-धीरे आप अपने प्रश्नों पर आइए। इंटरव्यू का आरंभिक हिस्सा बाद में चाहें तो आप संपादित कर सकते हैं।

साक्षात्कार की जब औपचारिक शुरुआत हो तो आप साक्षात्कारदाता के उत्तर को ध्यान से सुनिए उन्हें नोट करते जाइए। अगर इंटरव्यू रिकार्ड नहीं हो रहा है और आप लिखने में पिछड़ रहे हैं तो साक्षात्कारदाता से विनम्रता से दोहराने के लिए कह दीजिए। कोशिश कीजिए कि आप साक्षात्कारदाता के बोलने के साथ-साथ लिख सकें। इसमें शार्टहैंड सहायक हो सकती है। अगर शार्टहैंड न भी आती हो तो आप स्वयं शब्दों, पदों या वाक्यों के संकेत विकसित कर सकते हैं जिन्हें पुनर्लेखन के दौरान विस्तार दे सकें।

साक्षात्कारदाता के बोलते समय आप उसकी बात को ध्यान से सुनिए। साक्षात्कारदाता को लगना चाहिए कि आप उसकी बात ध्यान से सुन रहे हैं। हाँ, यह अवश्य है कि "हा" "हूं" या "ठीक" "बहुत ठीक" आदि बोलकर उसके बोलने की लय को भंग मत कीजिए।

अगर साक्षात्कारदाता आरंभ में ही अपनी लय बैठा लेता है तो आपको एक अच्छा साक्षात्कार लेने का श्रेय मिल सकता है।

16.6.4 अन्य जरूरी बातें

साक्षात्कार आरंभ होने के बाद आपके आगे के प्रश्न पहले के प्रश्नों के जवाब में कही गयी बातों पर आधारित होने चाहिए। प्रश्नों में क्रमबद्धता और तार्किकता नजर आनी चाहिए। यह तभी संभव है, जब आप इंटरव्यू से पूर्व पर्याप्त तैयारी कर चुके हों और साक्षात्कारदाता से आरंभिक बातचीत कर चुके हों।

कई बार यह भी संभव है कि उत्तरदाता उत्तर देते हुए गैर जरूरी बातों में भटक जाए। ऐसे में आपका अगला प्रश्न भी आपके उद्देश्य से इतर हो सकता है या आप बातचीत के ऐसे बिंदु पर पहुँच सकते हैं जहाँ आगे बातचीत कैसे और किस दिशा में ले जायी जाए, यह निर्णय लेना कठिन हो जाए। ऐसी स्थिति में आपको अत्यंत सावधानी से बात को पुनः अपने लक्ष्य की ओर मोड़ने की कोशिश करनी चाहिए। आप साक्षात्कारदाता की बात के महत्व को स्वीकार करते हुए अपना प्रश्न दोहराइए या साक्षात्कारदाता के उत्तर में से ही कोई सूत्र पकड़ कर उसे वापस अपने उद्देश्य की ओर लाइए। इसके लिए आप अगला प्रश्न निम्नलिखित ढंग से पूछ सकते हैं।

- *आपने अत्यंत महत्वपूर्ण बात कही है। लेकिन इस संबंध में एक भिन्न दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया गया है.... आपका इस संबंध में क्या विचार है?*

या

- *आपने यह जो बात कही है उससे मैं समझता हूँ कि इस बात को इस नजरिए से भी देखा जा सकता है.... क्या आप अपने इस विचार को और स्पष्ट करेंगे?*

कई बार साक्षात्कारदाता उत्तर देते हुए पूरी तरह से खुलते नहीं। वे आधे अधूरे या टालने वाले उत्तर देकर चुप हो जाते हैं। आमतौर पर ऐसा रुख वे प्रायः विवादास्पद मुद्दों पर अपनाते हैं। जबकि ऐसे विवादास्पद मुद्दों पर उनका पक्ष विस्तार से जानने पर ही हमारे साक्षात्कार की सफलता निर्भर करती है। इसके लिए यह जरूरी है कि आप पहले साक्षात्कारदाता का पूरा विश्वास हासिल करें। विनम्रता के साथ प्रश्न पूछें। अगर उत्तर आपके अनुकूल न हो तो, न तो उत्तेजित हों न घबराएँ। आप अपनी बात को आगे बढ़ाएँ, और उसी प्रश्न को किसी भिन्न रूप में पूछें। अगर आप पूरी तैयारी के साथ गये हैं तो आप एक ही बात को कई ढंग से पूछ सकते हैं। धैर्य, विनम्रता और आपकी चतुराई से पूरी संभावना है कि साक्षात्कारदाता अंततः अपने मन की बात कह दे।

आप इंटरव्यू के लिए जितनी तैयारी के साथ जायेंगे आपको साक्षात्कार में भी उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी। अगर आपकी तैयारी ही अपूर्ण है तो आप प्रतिप्रश्न पूछने की क्षमता खो बैठेंगे और फिर आपको जो भी उत्तर मिलेगा उसी से आपको संतुष्ट होना पड़ेगा।

इंटरव्यू के दौरान आप ध्यान से उत्तर सुनिए और त्वरित गति से सोचिए कि अगला प्रश्न क्या पूछा जाना चाहिए। आपकी सजगता और समझदारी साक्षात्कार को जीवंत बनाएगी।

जब साक्षात्कार समाप्ति की ओर बढ़ने लगे या आप अंतिम प्रश्न पूछना चाहें तो अपना प्रश्न इस तरह से पूछें–

अंत में मैं यह जानना चाहूंगा''
''संक्षेप में क्या आप.....''

इससे साक्षात्कारदाता को अपनी बात का समाहार करने का अवसर मिल सकेगा। जब इंटरव्यू समाप्त हो तो साक्षात्कारदाता के प्रति आभार अवश्य व्यक्त कीजिए।

16.7 साक्षात्कार की रिकार्डिंग

इंटरव्यू प्रकाशित होने के बाद कई बार साक्षात्कारदाता उसमें कही गयी बात का खंडन कर देता है या यह भी कह देता है कि मैंने यह बात इस रूप में या इस संदर्भ में नहीं कही थी। इसलिए बेहतर यह है कि आप इंटरव्यू के दौरान पूरी सावधानी से नोट लें। अपनी स्मरण-शक्ति का भी पूरा उपयोग करें। अगर साक्षात्कारदाता अनुमति दे तो टेप रिकार्डर का प्रयोग करें। इंटरव्यू प्रकाशन के लिए भेजने से पहले अगर संभव हो तो साक्षात्कारदाता को दिखा दें ताकि विवाद की गुंजाईश न रहे।

16.7.1 स्मरण-शक्ति

इंटरव्यू के दौरान आपकी एकाग्रता और स्मरण-शक्ति का बहुत महत्व है। कई बार इंटरव्यू के समय साक्षात्कारदाता द्वारा कही गयी बातों को ठीक उसी रूप में लिख लेना संभव नहीं होता। अगर आपने पूरी एकाग्रता से साक्षात्कारदाता की बात सुनी है तो आपको बाद में साक्षात्कार का पुनर्लेखन करने में कठिनाई नहीं आएगी।

16.7.2 नोट लेना

इंटरव्यू के दौरान आप नोट अवश्य लीजिए। इसके लिए ऐसी नोट बुक का इस्तेमाल कीजिए जिसे सरलता से उपयोग में लाया जा सके। अपने लिखने की गति को बढ़ाइए। इसके लिए संकेतों का इस्तेमाल कीजिए। साक्षात्कारदाता की बात को यथासंभव उसी के शब्दों में लिखिए। लेकिन लिखते हुए अपना ध्यान साक्षात्कारदाता की ओर रखिए। अगर आपका ध्यान साक्षात्कारदाता की ओर नहीं होगा तो वह उपेक्षित महसूस कर सकता है। आपका ध्यान अगर साक्षात्कारदाता की ओर रहेगा तो आप प्रश्नों और उत्तरों के साथ उसके बदलते हाव-भाव को भी नोट कर सकेंगे। कई बार इंटरव्यू के दौरान शब्दों से अधिक महत्वपूर्ण साक्षात्कारदाता के हाव-भाव होते हैं। हँसना, मुस्कराना, उत्तेजना के साथ उत्तर देना या तत्काल उत्तर न देकर थोड़ी देर मौन रहकर उत्तर देना, धारा-प्रवाह बोलना या रुक-रुक कर बोलना–इन सब बातों का इंटरव्यू में महत्व हो सकता है। अगर आपने उत्तर के साथ-साथ इन बातों को भी नोट किया है तो आपका इंटरव्यू और अधिक जीवंत और सार्थक बन सकेगा।

16.7.3 टेप रिकार्डर का प्रयोग

साक्षात्कार के दौरान टेप रिकार्डर का प्रयोग करना इस दृष्टि से उचित है कि इससे साक्षात्कारदाता की बातों को उसी के शब्दों में प्रस्तुत किया जा सकता है। दूसरे, इससे साक्षात्कार के संबंध में उठने वाले विवाद से बचा जा सकता है। किन्तु टेप रिकार्डर का उपयोग साक्षात्कारदाता की अनुमति लेकर ही कीजिए। कई साक्षात्कारदाता टेप रिकार्डर के प्रयोग की अनुमति नहीं देते क्योंकि साक्षात्कार के दौरान अनजाने में साक्षात्कारदाता कुछ ऐसी बातें भी कह जाता है जिन्हें वह प्रकाशित नहीं करवाना चाहता। अगर ऐसी बातें टेप हो जाती हैं तो उनके उपयोग का खतरा बना रहता है।

टेप रिकार्डर का प्रयोग करते हुए यह ध्यान रखिए कि वह ठीक से काम करे। आरंभ में थोड़ी रिकार्डिंग करके सुन लीजिए। कहीं ऐसा न हो कि किसी खराबी के कारण साक्षात्कार रिकार्ड ही न हो। जहाँ तक संभव हो टेप रिकार्डर के लिए सेल का प्रयोग कीजिए ताकि बिजली के अभाव में भी रिकार्डिंग हो सके।

टेप रिकार्ड का प्रयोग करते हुए भी साथ-ही-साथ नोट बुक पर नोट अवश्य लीजिए। कई बार टेप रिकार्डर पर आवाज साफ नहीं सुनाई देती या कोई-कोई शब्द समझ में नहीं आता। ऐसे समय नोट उपयोगी साबित होते हैं।

बोध प्रश्न

11) साक्षात्कार लेने के समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। इनमें से कुछ बातें सही हैं, कुछ गलत। आप सही पर (√) का और गलत पर (×) का चिह्न लगाइए।

क) साक्षात्कार के लिए निर्धारित समय से पंद्रह मिनट देर से पहुँचिए ताकि आप साक्षात्कारदाता पर अपने महत्वपूर्ण व्यक्ति होने का प्रभाव जमा सकें। (सही/गलत)

ख) साक्षात्कार के लिए सहज होकर, पूरी तैयारी और आत्मविश्वास के साथ जाइए। (सही/गलत)

ग) आप वही प्रश्न पूछिए जो आप पूछना चाहते हैं, चाहे साक्षात्कारदाता पसंद करे या न करे। (सही/गलत)

घ) विनम्र और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से आप उत्तरदाता को अपने अनुकूल बना सकते हैं। (सही/गलत)

ङ) साक्षात्कार के लिए पर्याप्त तैयारी के साथ जाइए। (सही/गलत)

12) साक्षात्कारदाता के साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए क्या करना आवश्यक है? लगभग पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

13) एक नये साक्षात्कारदाता के साथ भेंटकर्त्ता का व्यवहार कैसा होना चाहिए? लगभग पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

14) उत्तरदाता अगर किसी विवादास्पद विषय पर स्पष्ट राय न देना चाहे तो भेंटकर्त्ता को क्या करना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

15) साक्षात्कार के दौरान नोट लेते वक्त किन-किन बातों की सावधानी अपेक्षित है?

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

5) पान लीजिए आपको अपने क्षेत्र के किसी राजनेता से क्षेत्र से संबंधित समस्याओं पर दस मिनट का साक्षात्कार लेना है। इसके लिए पूर्व तैयारी के तौर पर आप पाँच प्रश्न तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6) नीचे एक प्रश्न का उत्तर दिया गया है। यह **तमस** के संदर्भ में पूछे गये एक प्रश्न का भीष्म साहनी द्वारा दिया गया जवाब है। आप इसे पढ़कर प्रश्न की पुनर्रचना कीजिए।

जवाब : 1947 में मेरे अपने शहर रावलपिंडी में दंगे हुए थे। उसके कुछ दिन बाद देश के बँटवारे का फैसला हो गया। एक ऐसा बवंडर मचा, जिसमें लाखों लोग बेघर हुए और हजारों मारे गये। यह सब मैंने अपनी आँखों से देखा और खुद भी भोगा। ये तमाम तस्वीरें उन दिनों मेरे जेहन में थीं। देश आजाद हो गया। लेकिन सांप्रदायिक दंगे नहीं रुके। तब तो हम अंगरेज को दोष दे देते थे। अब सवाल यह पैदा होता है कि किसे दोष दिया जाये? 1974 में ऐसा ही एक दंगा हुआ। शायद भिवंडी में या कहीं और। उस समय मैं अपने आपको न रोक सका और यह उपन्यास लिखना शुरू कर दिया। उपन्यास लिखते वक्त मैंने इस बात की भरसक कोशिश की कि जो कुछ अपनी आँखों से देखा है, झेला है, और अनुभव किया है, उसे कागज पर उतार दूं और शायद बहुत कुछ ऐसा मैं कर सका। बस यही भावना थी मेरी। मैं लोगों को इस उपन्यास के जरिये चेतावनी देना चाहता था, उन्हें सचेत करना चाहता था।

.....

.....

.....

.....

.....

16.8 सारांश

- साक्षात्कार के लिए आवश्यक तैयारी के बारे में बताना इस इकाई का उद्देश्य रहा है। साक्षात्कार पत्रकारिता का महत्वपूर्ण अंग है। साक्षात्कार में किसी अन्य व्यक्ति से

बातचीत द्वारा उसके विचार जाने जाते हैं। यह बातचीत सोद्देश्य होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति विशेष के विचारों को उसी के शब्दों में प्रस्तुत किया जा सकता है। एक ही समस्या या विषय पर एक से अधिक दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया जा सकता है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप साक्षात्कार का महत्व बता सकते हैं।

- साक्षात्कार के उद्देश्य के आधार पर उसके दो भेद किये जा सकते हैं। अगर किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के व्यक्तित्व को उजागर करना साक्षात्कार का उद्देश्य है तो उसे हम व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार कहेंगे। यदि साक्षात्कार किसी समस्या या विषय-विशेष के संबंध में व्यक्ति-विशेष के विचार जानने के लिए लिया जाता है तो उसे विषय-आधारित साक्षात्कार कहेंगे। विषय-आधारित साक्षात्कार के भी दो भेद किये जा सकते हैं—सूचनात्मक और व्याख्यात्मक साक्षात्कार। सूचनात्मक साक्षात्कार में सूचना एकत्र करना उद्देश्य होता है जबकि व्याख्यात्मक साक्षात्कार में किसी ज्ञात तथ्य के संबंध में स्पष्टीकरण या पक्ष-विशेष को जानना उद्देश्य होता है। अब आप साक्षात्कार के उपर्युक्त भेदों को परिभाषित कर सकते हैं।
- साक्षात्कार की तैयारी के लिए सबसे पहले तो किस विषय पर, किस व्यक्ति से इंटरव्यू लेना है, इसकी क्या प्रासंगिकता है आदि प्रश्नों पर विचार करना होगा। इंटरव्यू के लिए निर्धारित व्यक्ति से पूर्वानुमति भी आवश्यक है तथा जिस विषय पर साक्षात्कार लेना है, उसके संबंध में आवश्यक अध्ययन भी करना होगा। इंटरव्यू से पूर्व इतनी तैयारी के बिना स्तरीय साक्षात्कार संभव नहीं है, इकाई पढ़ने के बाद आप इंटरव्यू लेते वक्त उक्त बातों का ध्यान रख सकते हैं।
- साक्षात्कार का सबसे महत्वपूर्ण अंग है—प्रश्नावली का निर्माण। साक्षात्कार से पूर्व प्रश्नों का सोच-विचारकर निर्माण करना चाहिए। आपके प्रश्न इंटरव्यू के उद्देश्य को फलीभूत करने वाले होने चाहिए। पहले से तैयार प्रश्नों से आपको इंटरव्यू लेने में सुविधा होगी। प्रश्न स्पष्ट और सरल भाषा में होने चाहिए। ताकि उत्तर भी सही और स्पष्ट मिलें। इकाई को पढ़ने के बाद साक्षात्कार के लिए प्रश्नों के निर्माण में आपकी कुशलता में वृद्धि हो सकेगी।
- साक्षात्कार पूर्ण तैयारी और आत्मविश्वास के साथ लीजिए। हड़बड़ी और घबराहट से आपको सफलता नहीं मिलेगी। उत्तरदाता से विनम्र व्यवहार कीजिए। उससे तादात्म्य स्थापित करने की कोशिश कीजिए। साक्षात्कार के लिए नोट बुक साथ ले जाइए। अगर अनुमति मिले तो टेप रिकार्डर का भी उपयोग कीजिए। परंतु अगर आप एकाग्रचित्त होकर उत्तर सुनेंगे और अपनी स्मरण-शक्ति पर भरोसा रखेंगे तो वह अधिक लाभप्रद होगा। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप साक्षात्कार के लिए अपने को तैयार कर सकते हैं।

16.9 शब्दावली

साक्षात्कारकर्ता : साक्षात्कार लेने वाला (Interviewer) व्यक्ति।

साक्षात्कारदाता : साक्षात्कार देने वाला व्यक्ति (Interviewee) अर्थात् जिससे साक्षात्कार लिया जाता है।

साधारणीकरण : काव्य या कला का आस्वादन करते हुए पाठक या प्रेक्षक का ऐसी स्थिति में पहुँचना जहाँ वह पूर्णतः रचना के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है।

16.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) i) × ii) √ iii) × iv) √

2) सूचनात्मक साक्षात्कार में व्यक्ति विशेष से किसी विषय के संबंध में जानकारी प्राप्त की जाती है जबकि व्याख्यात्मक साक्षात्कार में ज्ञात तथ्यों के संबंध में व्यक्ति विशेष का पक्ष या स्पष्टीकरण जाना जाता है।

3) i) व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व को उजागर करना।
ii) उसकी अभिरुचियों, प्रवृत्तियों और मानसिक बुनावट से साक्षात्कार कराना।

4) i) पाठक किन समस्याओं से उद्वेलित हैं?
ii) उनके संबंध में वे क्या जानना चाहते हैं?
iii) इनके बारे में अधिकारिक और अधिकतम सूचना कौन दे सकता है?

5) किसी ज्ञात तथ्य के संबंध में व्यक्ति-विशेष के पक्ष को प्रस्तुत करना और उससे स्पष्टीकरण प्राप्त करना इसका उद्देश्य है। इसके लिए समस्या के संबंध में भेंटकर्ता की पर्याप्त तैयारी होनी चाहिए। उसे प्रतिप्रश्न पूछने के लिए तैयार रहना चाहिए।

6) जिस क्षेत्र विशेष के लिए आप इंटरव्यू लेना चाहते हैं उसके लिए अधिकारी व्यक्ति कौन है? क्या वह सरलता से इंटरव्यू देने के लिए तैयार हो जाएगा क्या उस व्यक्ति से इंटरव्यू लेना प्रासंगिक है?

7) इंटरव्यू लेने से पूर्व आप जिस विषय पर इंटरव्यू लेना चाहते हैं, उसके संबंध में आवश्यक जानकारी अवश्य प्राप्त करें। साक्षात्कारदाता से पूर्वानुमति लें और उसके संबंध में भी आवश्यक जानकारी हासिल कर लें। साक्षात्कारदाता से समय निर्धारित करें। प्रश्न बना लें और यह भी विचार कर लें कि प्रश्नों को किस क्रम में पूछेंगे।

8) i) उच्च पुलिस अधिकारी या शहर प्रशासक से।
ii) गृहिणी, छोटा दुकानदार, नौकरीपेशा व्यक्ति, वित्तमंत्री से।
iii) छात्रों, अभिभावकों, अध्यापकों, नेताओं से।
iv) प्रेमचंद के पाठकों, रचनाकारों, समीक्षकों एवं प्रेमचंद पर शोध कार्य करने वालों से।

9) i) गलत जानकारी या अनभिज्ञता से हम गलत प्रश्न पूछेंगे जिनका साक्षात्कारदाता पर प्रतिकूल असर पड़ेगा।
ii) आवश्यक अध्ययन के बिना हमारे प्रश्न सामान्य स्तर के होंगे और प्रतिप्रश्न भी नहीं पूछ पायेंगे।

10) i) प्रश्नों की भाषा साक्षात्कारदाता के प्रति पूर्वग्रहयुक्त नहीं होनी चाहिए।
ii) चुभने वाली और तीखी भाषा के इस्तेमाल से बचना चाहिए।
iii) प्रश्न पूछते हुए अपनी ओर से उत्तर नहीं सुझाना चाहिए।

11) क) गलत ख) सही ग) गलत घ) सही ङ) सही

12) अच्छा साक्षात्कार लेने के लिए जरूरी है कि आप साक्षात्कारदाता से तादात्म्य स्थापित करें। इसके लिए सबसे पहले साक्षात्कारदाता के महत्व और व्यस्तता की चर्चा करें और समय देने के लिए उसके प्रति आभार प्रकट करें। उत्तरदाता से साक्षात्कार के उद्देश्य की चर्चा कीजिए। जो प्रश्न आप पूछना चाहते हैं उनके बारे में बताएँ और उससे सुझाव लें और यथासंभव प्रश्नों में परिवर्तन कर लें। आपका व्यवहार लचीला और विनम्र होना चाहिए।

13) नये साक्षात्कारदाता के साथ आपका व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण एवं मित्रवत् होना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के साथ साक्षात्कार से पूर्व मुद्दों पर अनौपचारिक बातचीत कर लीजिए। इसी प्रक्रिया में आप धीरे-धीरे अपने प्रश्नों पर आइए।

14) पहले साक्षात्कारदाता का विश्वास प्राप्त कीजिए। विनम्रता से प्रश्न पूछें। अगर उत्तर से आप संतुष्ट न हों तो आप बिना घबराए और उत्तेजित हुए भिन्न ढंग से उसी प्रश्न को पूछें। अगर आप पूरी तैयारी के साथ गये हैं तो आप अपने सवाल को कई तरीके से पूछ सकते हैं। धैर्य, विनम्रता और समझदारी के साथ आप अपने प्रश्न का उत्तर पा सकते हैं।

15) देखिए 16.7.2

अभ्यास

1) i) सूचनात्मक साक्षात्कार
   ii) व्याख्यात्मक साक्षात्कार
   iii) यह प्रश्न दोनों तरह के साक्षात्कार में शामिल किया जा सकता है
   iv) व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार
   v) व्याख्यात्मक साक्षात्कार

2) इस साक्षात्कार में आप निम्नलिखित विषयों पर प्रश्न पूछ सकते हैं:
   i) प्रदूषण के कारण; दोषपूर्ण सफाई व्यवस्था, कारखानों से निकलने वाले धुएँ और बढ़ते वाहन आदि।
   ii) प्रदूषण से बचने के उपाय:
      क) सफाई व्यवस्था कैसे सुधारी जाए।
      ख) कारखाने से निकलने वाले धुएँ और अपशिष्ट से फैलने वाले प्रदूषण से कैसे बचा जाए।
      ग) वाहनों से निकलने वाले धुएँ को कम करने के क्या उपाय हैं।

3) i) ख ii) क iii) ख iv) ख

4) प्रश्न बताते समय यह ध्यान रखिए कि एक प्रश्न से दूसरा प्रश्न परस्पर संबद्ध हो एवं सामान्यतः पहले प्रश्न के उत्तर से ही दूसरा प्रश्न बनना चाहिए।

5) सबसे पहले आप वह क्षेत्र निर्धारित कीजिए जिससे संबंधित प्रश्न आप पूछेंगे। मान लीजिए विषय है: शहर में बढ़ता साम्प्रदायिक तनाव। आप निम्नलिखित प्रश्न तैयार कर सकते हैं?
   i) हमारे शहर में सांप्रदायिक सद्भाव की लंबी परंपरा रही है, लेकिन पिछले कुछ समय से इस माहौल को बिगाड़ने की कोशिश की जा रही है, आप इसे किस रूप में लेते हैं?
   ii) जो ताकतें सांप्रदायिक तनाव बढ़ा रही हैं, उनके एकाएक पनपने का क्या कारण है?
   iii) क्या इसके लिए राजनीतिक पार्टियां और राजनेता भी दोषी नहीं हैं।
   iv) आप इस समस्या से निपटने के लिए क्या उपाय सुझाते हैं?
   v) जनता को सांप्रदायिकता के विरुद्ध कैसे एकयबद्ध करना चाहिए? क्या आप कुछ ठोस सुझाव देंगे?
   दिये गये उत्तर के अनुसार प्रश्नों में आप आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं।

6) **प्रश्न** : "तमस" लिखने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली? ऐसी कौन-सी बात थी, जिसने आपको इस विषय पर कलम उठाने के लिए मजबूर कर दिया?

इकाई 17 साक्षात्कार : सामग्री का संपादन और संयोजन

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य
17.1 प्रस्तावना
17.2 साक्षात्कार की सहायक सामग्री
17.3 साक्षात्कार को अंतिम रूप देना
  17.3.1 साक्षात्कार का आरंभ
  17.3.2 केन्द्रीय बिन्दु को उभारना
  17.3.3 संतुलन कायम करना
17.4 संशोधन एवं पुनर्लेखन
  17.4.1 भाषागत सुधार
  17.4.2 अस्पष्टता एवं उलझाव
17.5 साक्षात्कार का संरचनात्मक रूप
  17.5.1 साक्षात्कार के विभिन्न रूप
  17.5.2 साक्षात्कार लेख के रूप में
  17.5.3 प्रश्नोत्तर रूप में
  17.5.4 शीर्षक देना
17.6 साक्षात्कार का प्रकाशन
17.7 सारांश
17.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

17.0 उद्देश्य

इस खंड की इकाई 16 में आप साक्षात्कार की तैयारी के संबंध में अध्ययन कर चुके हैं। इस इकाई में आप साक्षात्कार की सामग्री के संपादन और संयोजन के संबंध में अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- साक्षात्कार को अंतिम रूप दे सकेंगे;
- साक्षात्कार में आवश्यक संशोधन और उसका पुनर्लेखन कर सकेंगे;
- साक्षात्कार को प्रकाशन योग्य रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे; और
- साक्षात्कार का उचित शीर्षक दे सकेंगे।

17.1 प्रस्तावना

सृजनात्मक पाठ्यक्रम (फीचर लेखन) की यह सत्रहवीं इकाई है तथा इस खंड की चौथी इकाई। इससे पहले की इकाई में हमने साक्षात्कार की तैयारी के संबंध में अध्ययन किया था। हमने बताया था कि साक्षात्कार के लिए किस तरह की तैयारी आवश्यक है। जिस व्यक्ति से साक्षात्कार लेना है और जिस विषय पर साक्षात्कार लेना है उनके संबंध में पहले पर्याप्त जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है। साक्षात्कार के लिए जाने से पूर्व उस व्यक्ति से समय निर्धारित कर लीजिए। साक्षात्कार आरंभ करने से पहले साक्षात्कार के विषय पर और पूछे जाने वाले प्रश्नों पर अनौपचारिक बातचीत कर लीजिए। पूरे आत्मविश्वास और विनम्रता के साथ साक्षात्कार आरंभ कीजिए। संभव हो तो साक्षात्कार को रिकार्ड कीजिए परंतु साथ ही नोट भी अवश्य लेते रहिए।

हमने इकाई 16 में इस पर भी विस्तार से विचार किया था कि साक्षात्कार के लिए प्रश्नों का निर्माण कैसे किया जाता है। प्रश्न पूछते हुए क्या सावधानी बरतनी चाहिए तथा

प्रति प्रश्न कब और कैसे पूछने चाहिए। इस प्रकार इकाई 16 में आप साक्षात्कार लेने के लिए आवश्यक कौशल से परिचित हो चुके हैं।

साक्षात्कार लेने के साथ साक्षात्कारकर्त्ता का कार्य समाप्त नहीं हो जाता। अब लिये गये साक्षात्कार का संपादन और संयोजन आवश्यक है ताकि उसे वह रूप दिया जा सके जिस रूप में उसे पत्र-पत्रिका में प्रकाशित होना है। इकाई 17 में इसी विषय पर विचार किया गया है। साक्षात्कार को अंतिम रूप देते वक्त किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, साक्षात्कार में आवश्यक संशोधन और सुधार कैसे करना चाहिए तथा उसको किस संरचनात्मक रूप में प्रस्तुत करना चाहिए इस पर भी इकाई में विस्तार से विचार किया गया है।

इस कार्य के व्यवहारिक ज्ञान के लिए हमने इकाई में पर्याप्त उदाहरण दिये हैं ताकि आप स्वयं यह समझ सकें कि साक्षात्कार को कैसे अंतिम रूप दिया जा सकता है। साक्षात्कार को अंतिम रूप देने के कार्य को आप स्वयं अभ्यासों के माध्यम से सीख सकते हैं। आप अपनी कुशलता बढ़ाने के लिए सिर्फ अभ्यासों तक ही अपने को सीमित न रखें वरन् अपने मित्रों, परिचितों आदि के इंटरव्यू लेकर आप अपने अभ्यास को लगातार माँजने की कोशिश कीजिए और इस तरह के प्रयास अपने परामर्शक को दिखाइए।

17.2 साक्षात्कार की सहायक सामग्री

साक्षात्कार के लिए नोट बुक, पेन या पैंसिल के अतिरिक्त मुख्य उपकरण टेप रिकार्डर है, जिसके प्रयोग के संबंध में हम पिछली इकाई में विचार कर चुके हैं। टेप रिकार्डर का प्रयोग करने से साक्षात्कार के दौरान कही गयी सभी बातें उसी रूप में रिकार्ड की जा सकती है। इससे इंटरव्यू के दौरान कही गयी बातों के खंडन से बचा जा सकता है। लेकिन टेप रिकार्डर पर पूरी तरह से निर्भर रहना उचित नहीं है। क्योंकि किसी यांत्रिक खराबी के कारण वह ऐन वक्त पर आपको धोखा भी दे सकता है। इसलिए बेहतर यही है कि आप टेप रिकार्डर के साथ-साथ नोट बुक पर नोट भी लेते रहें।

टेप रिकार्डर का प्रयोग करने से पहले उसकी अच्छी तरह से जाँच परख कर लीजिए। इंटरव्यू से पूर्व ऑडियो कैसेट को भी जाँच कर देख लीजिए तथा पर्याप्त मात्रा में खाली ऑडियो कैसेट अपने पास रखिए। रिकार्डिंग के लिए सेल (बैटरी) का प्रयोग कीजिए। लंबे इंटरव्यू के दौरान जब बीच में कैसेट बदलनी हो, अगर उस समय साक्षात्कारदाता से रुकने को कहा जाएगा तो इंटरव्यू में बाधा पड़ती है। इससे बचने के लिए संभव हो तो अपने साथ कोई सहायक ले जाइए जो टेप रिकार्डर का संचालन करे और आप इंटरव्यू के नोट लेते रहें।

टेप रिकार्डर के अतिरिक्त इंटरव्यू के साथ फोटो का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह फोटो साक्षात्कारदाता का हो सकता है या साक्षात्कार देते हुए साक्षात्कारदाता और साक्षात्कारकर्त्ता का हो सकता है। व्यक्तित्व उजागर करने वाले साक्षात्कार के साथ उस व्यक्ति के जीवन से संबंधित विभिन्न तस्वीरें दी जा सकती हैं। अगर खिलाड़ी है तो खेलते हुए, नेता है तो जनसभा को संबोधित करते हुए, साहित्यकार है तो लिखते हुए, साहित्यकार का फोटो दिया जा सकता है। किसी विषय या घटना विशेष के संबंध में लिए गए इंटरव्यू के साथ उनसे संबंधित चित्र दिये जा सकते हैं। जैसे रेल दुर्घटना या चित्रकला प्रदर्शनी के चित्र। फोटो का चयन करते वक्त यह ध्यान रखना चाहिए कि साक्षात्कार की अंतर्वस्तु के साथ उसका संबंध है या नहीं या साक्षात्कार के साथ उसका जाना औचित्यपूर्ण है या नहीं। इसके साथ ही फोटो के स्तर को भी ध्यान में रखना चाहिए। अगर फोटो स्पष्ट और दर्शनीय नहीं है तो उसे नहीं देना चाहिए। फोटो की साइज का भी ध्यान रखना चाहिए। फोटो की साइज पत्र-पत्रिका की साइज को ध्यान में रखकर तय करनी चाहिए। फोटो के द्वारा आप क्या व्यक्त करना चाहते हैं, इस बात को ध्यान में रखते हुए फोटो का इस्तेमाल करना चाहिए।

इंटरव्यू के साथ आवश्यक हो तो किसी दस्तावेज के महत्वपूर्ण अंश की फोटो प्रतिलिपि दी जा सकती है। किसी लेखक की रचना का अंश दिया जा सकता है, कलाकार की कृति की फोटो-प्रतिलिपि प्रस्तुत की जा सकती है। उपर्युक्त सभी सामग्री यथाशीघ्र जुटा लेनी चाहिए। इनके कारण इंटरव्यू के प्रकाशन में विलंब होने से हो सकता है वह समयोचित न रहे।

17.3 साक्षात्कार को अंतिम रूप देना

साक्षात्कार ले लेने के बाद प्रेस में देने से पहले उसे अंतिम रूप देना आवश्यक होता है। साक्षात्कार लेते वक्त आपने प्रश्नों का जो क्रम रखा हो, आवश्यक नहीं कि वही क्रम आप प्रकाश्य साक्षात्कार में भी रखें। मुख्य बात यह है कि आप यह देख लें कि इंटरव्यू में आप किस बात को उभारना चाहते हैं। इसके लिए प्रश्नों का कौन-सा क्रम सबसे अधिक प्रभावशाली होगा। अनावश्यक प्रश्नों और उत्तरों को आप हटा भी सकते हैं। अगर प्रश्नों के उत्तर अनावश्यक रूप से लंबे हैं या बातों को दोहराया गया है, तो आप उन्हें संक्षिप्त कर सकते हैं।

17.3.1 साक्षात्कार का आरंभ

साक्षात्कार का आरंभ महत्वपूर्ण होता है। आम तौर पर साक्षात्कार सीधे प्रश्नोत्तर से आरंभ नहीं होते। साक्षात्कार के पूर्व भेंटकर्ता अथवा संपादक साक्षात्कार और साक्षात्कारदाता के बारे में संक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणी देता है। इस टिप्पणी में वह साक्षात्कार के विषय और उद्देश्य के बारे में बताता है। अगर आवश्यक हो तो साक्षात्कारदाता के बारे में भी संक्षिप्त परिचय देता है और यह भी स्पष्ट करता है कि उक्त व्यक्ति से ही वह क्यों साक्षात्कार ले रहा है। इस तरह की टिप्पणी साक्षात्कार के आरंभ में भी दी जा सकती है और साक्षात्कार के साथ एक "बाक्स" में। यह आरंभिक अंश बहुत अधिक लंबा नहीं होना चाहिए। कभी-कभी जब साक्षात्कार के बारे में अलग से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होती तो एक-दो पंक्तियों में ही टिप्पणी दी जा सकती है। जैसे :

प्रसिद्ध जनकवि और साहित्यकार श्री केदारनाथ अग्रवाल को 1986 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से गत 23 फरवरी को नई दिल्ली में सम्मानित किया गया। प्रस्तुत है उनसे जया बतरा की अनौपचारिक बातचीत।

उपर्युक्त टिप्पणी छोटी अवश्य है परंतु इसमें आवश्यक सूचनाएँ सभी आ गयी हैं।

साक्षात्कारदाता का परिचय : प्रसिद्ध जनकवि और साहित्यकार श्री केदारनाथ अग्रवाल

साक्षात्कार का कारण : साहित्य अकादमी पुरस्कार

साक्षात्कार का अवसर : पुरस्कार प्राप्ति का अवसर

साक्षात्कारकर्त्ता : जया बतरा

कभी-कभी साक्षात्कारकर्त्ता साक्षात्कार से पूर्व उन स्थितियों का वर्णन भी करता है जिनके बीच साक्षात्कार संपन्न हुआ। इससे साक्षात्कार या साक्षात्कारदाता से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण पहलू प्रकाश में लाये जा सकते हैं। 22 मार्च 1987 को **नवभारत टाइम्स** ने हिंदी कवि नागार्जुन के साथ एक "बातचीत" प्रकाशित की। इसके आरंभ में भेंटकर्ता ने नागार्जुन जिस कालोनी में रहते हैं, उसका परिचय दिया और बातचीत के आरंभ के माहौल का वर्णन किया है। यह पूरा वर्णन अत्यंत रोचक, आत्मीय और साहित्यिक शैली में प्रस्तुत किया गया है :

महानगर की सपाट चिकनी चौड़ी सड़कों का सिलसिला दूर पीछे छूट गया है। बस भजनपुरा स्टाप से करावल नगर जाने वाली सड़क थामकर सादतपुर में दाखिल होती है। और अचकचाकर रुक जाती है। सादतपुर में कितने ही साहित्यकारों के घर हैं। रास्ते में कुछेक लोगों से बाबा का पता पूछने पर लोग उत्साह से बताते हैं, "वो पेड़ देख रहे हैं न, बस वहीं। अरहर के झाड़, बैंगन की पौध, मूली की क्यारियों के बीच बाबा धूप का

स्वागत कर रहे हैं।" मैं दाखिल होती हूँ, 'आ गई हो फिर से तंग करने।'
मैं मुस्कराती हूँ।

"मैं ज्यादा नहीं बोल सकता।" बाबा फिर मुझे बैठने का इशारा करते हुए बोलते हैं, "मेरा हाल तो तुम देख ही रही हो।" आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्द मन में कौंधते हैं "जिस व्यक्ति के सामने बैठकर आपको यह न लगे कि आप छोटे हैं तो वही व्यक्ति महान्।"

फिर मैं बिना देर किये अपनी जिज्ञासाएं बाबा के समक्ष उंडेलने लगती हूँ।

कभी-कभी महत्वपूर्ण व्यक्तियों से बातचीत का समय पाना बड़ा कठिन होता है। अत्यधिक व्यस्तता, अस्वस्थता या अन्य कारण से ऐसे व्यक्ति आमतौर पर साक्षात्कार देने के लिए तैयार नहीं होते। लेकिन इस स्थिति में भी अगर आप इंटरव्यू लेने में सफल हो जाते हैं तो आरंभिक टिप्पणी में इसका उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए। इससे पाठकों को यह मालूम हो सकेगा कि साक्षात्कार किन परिस्थितियों में लिया गया। 22 नवंबर, 1987 को **नवभारत टाइम्स** में हिंदी कवि हरिवंशराय बच्चन का साक्षात्कार प्रकाशित हुआ था। श्री बच्चन उस समय अस्वस्थ थे। फिर भी वे भेंटकर्ता श्री कन्हैयालाल नंदन को साक्षात्कार देने के लिए तैयार हो गये। इसकी चर्चा साक्षात्कार के साथ प्रकाशित संपादकीय टिप्पणी में दी गयी है :

बच्चन जी इस बार जब से अस्वस्थ हुए, काफी कुछ दिनचर्या में परिवर्तन हो गया। लोगों से मिलना-जुलना जो पहले से ही कम हो गया था, और कम हो गया। अशक्तता के कारण बोलने में भी कष्ट होने लगा, लिखने में हाथ का कंपन आड़े आने लगा····ऐसे में बच्चन जी ने मिलने का अवसर दिया, यह नवभारत टाइम्स के लिए गौरव की बात है। इसी 28 नवंबर को बच्चन जी अपने जीवन के 80 वर्ष पूरे कर रहे हैं। उस अवसर पर प्रस्तुत है, उनके नई दिल्ली स्थित गुलमोहर पार्क के निवास स्थान पर हुई यह बातचीत, जो अपने देश और परिवेश के प्रति बच्चन जी के मन-मस्तिष्क की सजगता का एक बिंब प्रस्तुत करती है। बातचीत के समय तेजी जी साथ बैठी रहीं और बराबर उनकी देखभाल पर पूरा ध्यान देती रहीं। बातचीत का दौर प्रारंभ हुआ उनके प्रति शुभकामना से।

साक्षात्कार में यह अत्यंत महत्वपूर्ण होता है कि पहला प्रश्न क्या पूछा जाए। पहला प्रश्न मात्र औपचारिक भी हो सकता है :

आपके अस्सी वर्ष के हो जाने पर हम हिंदी संसार की ओर से आपके शतायु होने की कामना भेंट करते हैं और यह जानना चाहते हैं कि आप इन दिनों में क्या सोचते रहते हैं, कैसा अनुभव करते हैं?

अक्सर देखा गया है कि साक्षात्कार का पहला प्रश्न बहुत साधारण होता है। जरूरी नहीं है कि शुरू में ही आप कोई बहुत गहरा या उत्तेजक प्रश्न कर दें? अगर आप टेप पर बातचीत रिकार्ड कर रहे हैं तो शुरू में इधर-उधर के सवाल करें। बातचीत जब अपने रंग में आ जाए, तभी टेप ऑन करें।

कभी-कभी आप यह भी महसूस कर सकते हैं कि भेंटवार्ता की किसी दिलचस्प या चौंकाने वाली बात शुरू में ही रख दी जाये ताकि पाठक तुरंत पढ़ने के प्रति आकर्षित हों। इन दिनों अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में इस तरह की भेंटवार्ताएँ लोकप्रिय हो रही हैं। लेकिन अगर आप किसी गंभीर साहित्यिक पत्रिका, पुस्तक या अकादेमिक के लिए भेंटवार्ता लिखने जा रहे हैं, तो शुरू में ही विवादास्पद या चौंकाऊ बात से भरसक बचें। पत्रिका में प्रकाशित भेंटवार्ता में जो सवाल शुरू में अच्छा लगेगा वह गंभीर साहित्यिक पत्र में खराब भी लग सकता है।

कोई ऐसा सवाल शुरू में नहीं रखिए जो व्यक्ति को नाराज कर दे या उसका मूड बिगाड़ दे। शुरू में हमेशा "नर्म" सवाल रखिए। "गर्म" सवालों के लिए पहले सही माहौल बनाइए। मौका पड़ने पर उन्हें भी पूछिए। बाद में लिखते वक्त आप स्वतंत्र हैं कि प्रश्नों का क्रम थोड़ा आपकी सुविधानुसार उलट-पुलट दें। लेकिन लंबी बातचीत में तथाकथित गर्म सवाल बाद में रखिए। भारतीय संगीत में विलंबित से द्रुत में जाने का क्रम इस तरह

की बातचीत के लिए श्रेष्ठ है। लेकिन छोटे साक्षात्कार में आप पश्चिमी शास्त्रीय संगीत की तरह तेज गति से शुरू होकर फिर धीमी गति में आ सकते हैं।

मिसाल के तौर पर एक लेखक से "आपने लिखना कब शुरू किया" सरीखा, सीधा और बुनियादी सवाल आप एक लंबी बातचीत में शुरू में ही रख सकते हैं। पर एक छोटी बातचीत में आपको साक्षात्कार के मूल मंतव्य से ही आरंभ करना होगा।

17.3.2 केन्द्रीय बिन्दु को उभारना

साक्षात्कार आरंभ होने के बाद प्रश्नों का सही सिलसिला बनाते हुए अपनी बात आगे बढ़ाइए। आपके प्रश्न एक दूसरे से जुड़े हुए और उस केंद्रीय बिंदु को उभारने वाले होने चाहिए, जिसे उभारना आपके साक्षात्कार का उद्देश्य है। लंबी बातचीत का दायरा विस्तृत होता है इसलिए यह संभव है कि वहाँ किसी एक क्षेत्र या विषय पर ही आप प्रश्न न पूछें। लेकिन ऐसी बातचीत में भी यह पूर्व निश्चित कर लेना चाहिए कि आप किन-किन विषयों पर क्या-क्या पूछना चाहेंगे। छोटी बातचीत तो किसी भी स्थिति में निरुद्देश्य नहीं होनी चाहिए। आपके प्रश्न सधे हुए और सीधे होने चाहिए। उदाहरण के लिए 1987 में आयोजित रिलायंस कप (क्रिकेट प्रतियोगिता) के अवसर पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने विभिन्न क्रिकेट खिलाड़ियों के इंटरव्यू प्रकाशित किये। ये इंटरव्यू "रिलायंस कप" प्रतियोगिता के अवसर पर लिये गये थे, इसलिए प्रश्न भी प्रायः उसी से संबंधित पूछे गये। नीचे कपिल देव (**इंडिया टूडे**, 15 अक्टूबर 1987) से पूछे गये कुछ प्रश्नों को देखकर आप समझ सकते हैं :

- *रिलायंस कप में भारत की संभावनाएँ क्या हैं?*
- *कौन-सी टीम प्रमुख प्रतिद्वंद्वी साबित होगी?*
- *क्या आपके आत्मविश्वास का कारण भारत को पाकिस्तान या वेस्टइंडीज की तुलना में आसान पूल मिलना भी है।*
- *आप कहते हैं एक दिन के क्रिकेट में कुछ भी हो सकता है। फिर भारत की जीत का इतना भरोसा कैसे?*

उपर्युक्त प्रश्नों से ही स्पष्ट है कि भेंटकर्ता का उद्देश्य रिलायंस कप के संदर्भ में प्रमुख भारतीय खिलाड़ी कपिलदेव से भारत की जीत की संभावनाओं का पता लगाना है। शुरू के इन चार प्रश्नों से ही स्पष्ट है कि सारी बातचीत इसी उद्देश्य के इर्द-गिर्द हुई। कभी-कभी किसी खास अवसर पर लेखक से लंबी बातचीत भी आयोजित की जा सकती है। जैसे भीष्म साहनी के उपन्यास तमस पर इसी नाम से टी.वी. सीरियल दूरदर्शन से प्रसारित हुआ। तो उस समय जो विवाद उठा था, उस संदर्भ में भीष्म साहनी, निर्देशक गोविंद निहलानी और सीरियल से जुड़े अन्य कलाकारों के इंटरव्यू भी प्रकाशित हुए। हिंदी साप्ताहिक **रविवार** ने भी भीष्म साहनी, निर्देशक गोविंद निहलानी के इंटरव्यू प्रकाशित किए थे। भीष्म साहनी से लंबा इंटरव्यू लिया गया, लेकिन पूरा इंटरव्यू सिर्फ "**तमस**" सीरियल के बारे में ही था। सारे प्रश्न उसी से संबंधित पूछे गये थे।

17.3.3 संतुलन कायम करना

इंटरव्यू असंतुलित नहीं होना चाहिए। साक्षात्कार लेते समय यह अवश्य ध्यान रखें कि कोई महत्वपूर्ण पहलू छूट न जाए। ऐसा तभी संभव होता है जब निर्धारित समय के अनुसार हम प्रश्नों का निर्धारण करने में असफल होते हैं या भेंटवार्ता एक ही बिंदु पर अटक जाती है, या गैर जरूरी बातचीत में अधिकांश समय निकल जाता है। अगर इंटरव्यू में गैर जरूरी वार्तालाप भी शामिल है तो आप लिखते समय ऐसी बातचीत को हटा दीजिए। इंटरव्यू में प्रश्नों और उत्तरों को सही सिलसिला दीजिए और किस विषय को कितना अंश दिया जाना आवश्यक है, यह तय करके पूरे इंटरव्यू में संतुलन कायम कीजिए। अगर एक ही विषय के विभिन्न पक्षों को छुआ गया है तो उसे तार्किक क्रम दीजिए ताकि पूरी बातचीत असंबद्ध न लगे। अगर कई विषयों को बातचीत में समेटा गया है तो एक विषय से दूसरे विषय में प्रवेश करते वक्त उनमें संबंध स्थापित करने की कोशिश कीजिए। या सभी विषयों और क्षेत्रों को किसी एक उद्देश्य के अंतर्गत रखने की कोशिश कीजिए ताकि साक्षात्कार बिखरा-बिखरा न लगे।

"इंटरव्यू के अंतिम प्रश्न का अपना महत्व होता है। आपकी बातचीत किस बिंदु पर खत्म हो, यह आप ही तय कर सकते हैं। अंतिम प्रश्न से ऐसा नहीं लगना चाहिए कि बातचीत अधूरी रह गयी है। जिस तरह से कुछ कहानीकार आखिरी वाक्य में ही कहानी के सारे तनाव को समेट लेते हैं, उसी तरह से भेंटवार्ता में भी आखिरी सवाल कभी भी नीरस नहीं होना चाहिए। वास्तविक भेंटवार्ता का अंत कैसे भी हुआ हो पर उसको लिखते समय अंत का चुनाव आप ध्यान से करें। साक्षात्कार के अंत तक पहुंचते-पहुंचते पाठक को यह अनुभव होना चाहिए कि साक्षात्कार पढ़ने से उसे नयी जानकारी, नया दृष्टिकोण प्राप्त हुआ है। एक तरह का संतोष उसे अनुभव होना चाहिए। इसलिए पूरे इंटरव्यू की योजना और उसकी प्रस्तुति सोच-समझकर, बुद्धिमत्ता के साथ करनी चाहिए।

बोध प्रश्न

1) साक्षात्कार के साथ दी जाने वाली तस्वीरों के संबंध में क्या-क्या बातें ध्यान में रखनी चाहिए?

.....

.....

.....

2) प्रकाशन से पूर्व साक्षात्कार में निम्नलिखित परिवर्तन किये जा सकते हैं। इनमें से सही परिवर्तन के आगे √ और गलत के आगे × का चिह्न लगाइए।

क) प्रश्नों का क्रम बदल सकते हैं। ( )

ख) जो बात आपको अनुचित लगे उसे हटा सकते हैं। ( )

ग) दोहराई गयी बातों को संपादित कर सकते हैं। ( )

घ) संक्षेप में कही गयी बातों को आप अपने ढंग से विस्तार दे सकते हैं। ( )

ङ) कुछ नये प्रश्न जोड़ सकते हैं। ( )

3) साक्षात्कार के आरंभ में दी जाने वाली संक्षिप्त टिप्पणी में किन बातों को शामिल करना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

4) आरंभ में ही "गर्म" सवाल पूछने से क्यों बचना चाहिए?

.....

.....

अभ्यास

1) "परिवार में कामकाजी महिला की स्थिति" विषय पर अपने आसपास रहने वाली किसी कामकाजी महिला से साक्षात्कार लीजिए और साक्षात्कार के आरंभ में उसकी दिनचर्या का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) उपर्युक्त साक्षात्कार के आरंभ में आप जो प्रश्न पूछना चाहेंगे उनको प्रस्तुत कीजिए।

1. .....

.....

2. .....

.....

3. .....

.....

3) आप अपनी उक्त बातचीत किस प्रश्न पर समाप्त करना चाहेंगे, उसे लिखिए।

.....

.....

17.4 संशोधन एवं पुनर्लेखन

जब आप साक्षात्कार का लेखन आरंभ करें तो उसे कई स्तरों पर आपको सुधारना और संवारना होगा। सबसे पहले तो आपको यह तय करना होगा कि आप साक्षात्कार को कैसे प्रस्तुत करेंगे। आप अपनी बातचीत के आधार पर लेखनुमा साक्षात्कार तैयार कर सकते हैं या फिर प्रश्नोत्तर को प्रश्नोत्तर के रूप में ही रख सकते हैं।

इसके बाद आपको अपने उद्देश्य के अनुरूप साक्षात्कार को संशोधित करना होगा। आपके इंटरव्यू का मूल मंतव्य उजागर हो ऐसे प्रश्नों और उनके उत्तरों को आपको प्रमुखता देनी होगी। अनावश्यक प्रश्नोत्तर को छाँट देना होगा। पत्र-पत्रिका में जो स्थान उक्त साक्षात्कार के लिए निर्धारित है अर्थात् जितने शब्दों में इंटरव्यू प्रकाशित होना है, उसके अनुसार प्रश्नोत्तर को संपादित करना होगा। अगर प्रश्न लंबे हैं तो उन्हें छोटा करना होगा। उत्तर में भी अनावश्यक बातें हटानी होंगी। लेकिन यह ध्यान रखना होगा कि बातचीत का अर्थ और संदर्भ न बदले। एक अच्छा सम्पादक साक्षात्कार में व्यर्थ के दोहराव के प्रति बहुत सजग होता है। अक्सर ऐसा देखा गया है कि जिन साक्षात्कारों को पाँच पृष्ठों में छापना चाहिए था वे दस पेज की जगह घेरते हैं। इससे पाठक पर साक्षात्कार का प्रतिकूल असर पड़ता है।

दुर्भाग्यवश आज महावीर प्रसाद द्विवेदी सरीखे संपादक भी नहीं हैं जो आपकी भेजी हुई सामग्री पर काफी काम करें। उसका पुनर्लेखन करें। आप जो भेजते हैं अक्सर वही ज्यों का त्यों छप जाता है। इसलिए जरूरी है कि आप बहुत निर्मम होकर लिखित सामग्री का संपादन स्वयं करें। बहुत सी बातें बातचीत में अच्छी लगती हैं पर छपने पर वे अब ऊब पैदा करती हैं। लिखे, छपे और बोले हुए वाक्यों के बारीक भेद के प्रति आप सजग रहिए। साक्षात्कार में यह सजगता आवश्यक हो जाती है।

17.4.1 भाषागत सुधार

साक्षात्कार में भाषागत सुधार आवश्यक है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि आप साक्षात्कारदाता की भाषागत विशिष्टता को बदल दें। साहित्यकार, कलाकार आदि बातचीत में भी भाषा का विशिष्ट ढंग से प्रयोग करते हैं। उनकी बातचीत की इस विशिष्ट शैली को साक्षात्कार में सुरक्षित रखने की कोशिश करनी चाहिए। विवरण के 4-10

दिसंबर, '83 के अंक में अज्ञेय द्वारा महादेवी वर्मा से लिये गये साक्षात्कार में महादेवी की भाषा की विशिष्टता को स्पष्ट पहचान सकते हैं।

इस पर सोचा नहीं। परिवर्तन आना है, आया, भाषा में भी आया, छंद में भी आया, लेकिन संस्कार पुराना ही रहा होगा क्योंकि फिर गीत लिखने का लोभ तो था ही और गीत में छंद न हो, गुनगुनाया न जाए, गाया न जाये तो किसी काम का नहीं होगा। लंबी कविताएँ कम हैं मेरी जो है गीत में है। बहुत विस्तार हो भी नहीं सकता। और क्योंकि भावाकुलता कुछ क्षणों में रहती है हमेशा नहीं रह सकती। तो जो कविता वैचारिक है उसके लिए तो वह समय है, लेकिन गीत के लिए भाव में तीव्रता है, और कुछ तो है नहीं।

साहित्यकारों के अतिरिक्त भी अन्य विशिष्ट लोगों के शब्द प्रयोग या वाक्य रचना या किसी जुमले का उसी रूप में प्रयोग करना चाहिए जिस रूप में कहा गया था, यदि उनको बदलने से बात का अर्थ या प्रभाव बदलता है। लेकिन इन बातों के अतिरिक्त अन्य स्तर पर भाषा में बदलाव किया जा सकता है। जैसे अनावश्यक विस्तार को कम करने के लिए, चुस्त वाक्य रचना के लिए, भाषा में उलझाव और अस्पष्टता समाप्त करने के लिए, अंग्रेजी या क्षेत्रीय शब्दों का अनावश्यक प्रयोग कम करने के लिए भाषा में सुधार आवश्यक है।

भाषा में सुधार करते हुए साक्षात्कारदाता की बातों में अल्पमात्र का भी हेरफेर नहीं करना चाहिए। उन शब्दों को नहीं बदलना चाहिए, जिसे साक्षात्कारदाता ने बल देते हुए प्रयोग किया है। भाषा में व्याकरणगत त्रुटियों को दूर कर लेना चाहिए। वाक्य-विन्यास को चुस्त-दुरुस्त कर लेना चाहिए। बातों के अनावश्यक विस्तार और दोहराव वाले वाक्यों और शब्दों को काट-छाँट देना चाहिए।

भेंट के समय कही गयी सभी बातों को साक्षात्कार लिखते समय शामिल करना आवश्यक नहीं है। जैसे इस तरह के वाक्य *डॉक्टर साहब मुझे आपसे बातचीत करते हुए खुशी हो रही है। या प्रश्नों का अनावश्यक विस्तार "आपने तमस उपन्यास लिखा। स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि में सांप्रदायिकता की समस्या को आधार बनाकर लिखे गये इस उपन्यास में आपने विभिन्न सांप्रदायिक ताकतों की घिनौनी भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला है। अब इस उपन्यास को सीरियल के रूप में दूरदर्शन के परदे पर प्रस्तुत किया गया है। आप बतायेंगे कि आपको कैसा महसूस हो रहा है।" लिखते समय प्रश्न को इतने विस्तार से प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। केवल इतना भर कहना पर्याप्त है, "तमस" को परदे पर देखकर आपको कैसा महसूस हो रहा है?" इस प्रश्न के उत्तर में लेखक द्वारा कही गयी बात ही प्रश्न को और अधिक स्पष्ट कर देगी।*

इसी प्रकार किसी प्रश्न के उत्तर में उत्तरदाता अपनी बात विस्तार से कह सकता है, लेकिन साक्षात्कार में संशोधन करते समय आप उसे संक्षिप्त कर सकते हैं।

प्रश्नों को लिखते समय क्रमबद्धता का ध्यान अवश्य रखें। जैसे अंतिम सवाल के बाद बातचीत समाप्त हो जानी चाहिए लेकिन उसके बाद भी दो-तीन प्रश्न पूछे जाते हैं तो लिखित रूप में यह सावधानी अवश्य रखें कि साक्षात्कार के बीच में कहीं "अंतिम प्रश्न" न आ रहा हो।

17.4.2 अस्पष्टता एवं उलझाव

साक्षात्कार के प्रश्नोत्तरों में कई बार उलझाव और अस्पष्टता बनी रहती है, इससे पाठकों को साक्षात्कार में कही गयी बात को समझने में कठिनाई महसूस होती है। जैसे निम्नलिखित अंश को देखिए:

जहाँ तक कविता का प्रश्न है वह प्रभाव छोड़ भी सकती है नहीं भी छोड़ सकती है परंतु मैं सोचता हूं शायद छोड़ सकती है या कहना चाहिए छोड़ती है। प्रभाव छोड़ने के साथ-साथ संस्कार भी छोड़ती है। संस्कार और प्रभाव दोनों छोड़ती है। मैं समझता हूँ अच्छी कविता तो अवश्य प्रभाव छोड़ेगी यद्यपि यह आप पर निर्भर करेगा कि आप पर कितना प्रभाव पड़ा है और इस प्रभाव का स्वरूप क्या है और प्रकृति क्या है और रूपरेखा क्या है। कहने का अर्थ यह है कि कविता प्रभाव तो छोड़ेगी परंतु किस रूप में कुछ निश्चयपूर्वक कहना कठिन है।

उपर्युक्त उत्तर में उत्तरदाता की भाषा सरल है परंतु प्रश्न का क्या उत्तर दिया जाय यह स्पष्ट न होने के कारण उसने अपनी बात को उलझाकर रख दिया है। यह भेंटकर्ता (या संपादक) का दायित्व है कि वह उत्तर में कही गयी बात के मर्म को समझकर उसका स्पष्ट भाषा में पुनर्लेखन करे। जैसे उपर्युक्त अंश को निम्नलिखित रूप में संपादित किया जा सकता है :

जहाँ तक कविता का प्रश्न है वह प्रभाव भी छोड़ती है और संस्कार भी छोड़ती है, लेकिन प्रभाव का ग्रहण पाठक की क्षमता पर निर्भर करेगा।

कभी-कभी दुरुहता विचारों में नहीं भाषा में होती है जैसे निम्नलिखित अंश को देखिए :

रचना की विश्वसनीयता ***व्योम*** *और काल के* ***निर्देशांकन*** *के* ***सुस्थापन*** *में अपनी इयत्ता को नहीं विलीन करती। जिनके* ***व्योमकाल निर्देशांकन आग्रह सर्वातिशायी हैं*** *वे भी जिस एक स्तर पर इसे स्वीकार करने को सर्वथा विवश है, वह है भाषा का स्तर।*

उपर्युक्त भाषा में प्रयुक्त अप्रचलित और संस्कृतनिष्ठ शब्दों से अर्थ समझने में कठिनाई आई है। ऐसी कठिनाई अत्यधिक अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से भी आ सकती है। उन्हें आवश्यकतानुसार हिंदी शब्दों में बदलकर प्रस्तुत करना चाहिए। लेकिन उत्तरदाता की भाषिक विशिष्टता को भी सुरक्षित रखना चाहिए। मान लीजिए आपने सुप्रसिद्ध चित्रकार मकबूल फिदा हुसेन से बातचीत की। उन्होंने अंग्रेजी के शब्दों का खूब इस्तेमाल किया। खिचड़ी भाषा में बातचीत हुई। अब यह आप पर निर्भर है कि मूल बातचीत के स्वाद को बचाने के लिए कहीं-कहीं तो खिचड़ी भाषा को भी ज्यों का त्यों इस्तेमाल कर लें। पर अगर आप भेंटवार्ता हिंदी में रिपोर्ट कर रहे हैं तो बहुत से शब्दों का अनुवाद करें। व्यक्ति की बातचीत के अंदाज की रक्षा भी जरूरी है पर उसमें आवश्यक फेरबदल भी जरूरी है।

बोध प्रश्न

5) साक्षात्कार को संशोधित करने के कुछ प्रमुख कारणों को बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

6) साक्षात्कार की भाषा में सुधार करते हुए निम्नलिखित में से किन-किन में सुधार आवश्यक है। "हाँ" या "नहीं" में उत्तर दीजिए।

क) भाषागत विशिष्टता (हाँ/नहीं)

ख) ढीले-ढाले वाक्य (हाँ/नहीं)

ग) भाषागत उलझाव (हाँ/नहीं)

घ) व्याकरणगत त्रुटि (हाँ/नहीं)

ङ) खास अर्थ में प्रयुक्त शब्द (हाँ/नहीं)

7) किसी विशिष्ट व्यक्ति की बातचीत को संपादित करते हुए उसकी भाषा में किस तरह के परिवर्तन किये जाने चाहिए और किस तरह के नहीं?

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

4) निम्नलिखित गद्यांश में साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्न का उत्तर है। इसकी भाषा में आवश्यक सुधार और संशोधन कीजिए।

आप का सोचना सही हो सकता है। बट आई थिंक, हमें इस इस्यू पर जनता के दृष्टिकोण से भी विचार करना चाहिए। उन पर इसका क्या इफेक्ट पड़ेगा, किस रूप में वे इसे लेंगे, कहाँ तक वे इससे प्रभावित होंगे। जब तक हम जनता को इसमें इन्वाल्व नहीं करेंगे, उन्हें अपने साथ नहीं लायेंगे, तब तक आइं डाउट, हमें सफलता मिल सकेगी।

.....

.....

.....

.....

.....

5) निम्नलिखित कथन की भाषा में भोजपुरी का अत्यधिक प्रभाव है। आप इसे परिनिष्ठित हिंदी में बदलिए।

हमर विचार से इ दंगा-फसाद के जड़ में पोलिटिसीयन बाड़े स। इ हमन सब के प्राब्लम नइखे। हमार गाँव में मुसलमान आ हिंदू सब एक साथ रहेला। हमरा बीच केइसनो झगरा नइखे। लेकिन बेर-बेर ई पालिटिसीयन लोग हमरा बीच में झगरा करावे के हमेसा कोसीस करेले।

.....

.....

.....

.....

.....

17.5 साक्षात्कार का संरचनात्मक रूप

पश्चिम में कुछ समीक्षकों ने आलोचक की भूमिका एक "दाई" के रूप में परिभाषित की है। लेकिन भेंटवार्ता के संदर्भ में हम देखें, तो भेंटवार्ताकार की भूमिका भी एक दाई की ही तरह होती है। उसे खुद बच्चा नहीं पैदा करना है पर बच्चा पैदा कराने में उसकी बड़ी महत्वपूर्ण और केन्द्रीय भूमिका है। भारत में खास तौर पर हिंदी में अभी साक्षात्कार विधा बहुत विकसित नहीं है। इसके अनेक कारण हैं। मिसाल के लिए भारत में अभी पश्चिम की तरह जीवनी और आत्मकथा सरीखी विधाएँ बहुत विकसित नहीं है। एक वजह यह भी है कि हम अपने बारे में निर्मम होने की क्षमता बहुत कम रखते हैं। अपनी गलतियों, अपराध भावनाओं, कुंठाओं, सीमाओं आदि से हम साक्षात्कार नहीं कर पाते हैं। अपने को एक आदर्श रूप में ही हम रखना चाहते हैं। इस वजह से हमारे यहाँ साक्षात्कार विधा का भी पूर्ण विकास नहीं हो पाता है।

कहा जाता है कि अच्छी और गहरी भेंटवार्ता के लिए वार्ताकार को "वकील, जासूस और संवाददाता" की मिलीजुली भूमिका निभानी होती है। जाहिर है कि यह एक बहुत मुश्किल भूमिका है। इन गुणों में एक गुण मनोविश्लेषक का भी है। एक अच्छा मनोविश्लेषक "रोगी" को कोच पर बैठा कर उसे अपनी बात कहने का पूरा मौका देता है। कभी वह उसे टोकता है, रोकता है, कभी प्रोत्साहित करता है। इसलिए वकील, जासूस, संवाददाता और मनोविश्लेषक की मिलीजुली भूमिका साक्षात्कार विधा को अत्यंत सार्थक रूप दे सकती है।

साक्षात्कार की सफलता के लिए यह भी जरूरी है कि हम यह समझें कि साक्षात्कार का उद्देश्य क्या है और इसके लिए कितना समय निर्धारित हुआ है। इसी से साक्षात्कार के

स्वरूप का निर्धारण होगा। साक्षात्कार के उद्देश्य और स्वरूप के संबंध को समझने से हम साक्षात्कार को बेहतर ढंग से नियोजित कर सकते हैं।

17.5.1 साक्षात्कार के विभिन्न रूप

विषय की बेहतर और बारीक समझ के लिए हम भेंटवार्ताओं का एक विभाजन इस तरह से भी कर सकते हैं।

- संक्षिप्त और सीधा साक्षात्कार
- बातचीत
- मुलाकात (विजिट के अर्थ में)
- विस्तृत और व्यक्तित्व उद्घाटक साक्षात्कार
- खोजी साक्षात्कार

संक्षिप्त और सीधा साक्षात्कार : साक्षात्कार का यह सबसे प्रचलित रूप है। अगर आप किसी अखबार में रिपोर्टर हैं, या आप किसी विषय पर शोध कर रहे हैं तो इस तरह के साक्षात्कार की जरूरत पड़ती है। दैनिक पत्र के रिपोर्टर को इस तरह के साक्षात्कार पर काफी निर्भर करना पड़ता है। किसी पत्रिका में परिचर्चा के दौरान भी इस तरह के "स्नैप इंटरव्यू" की बहुत उपयोगिता है। महत्वपूर्ण व्यक्तियों के पास अक्सर वक्त बहुत कम होता है। वे आसानी से आपको भेंटवार्ता की अनुमति नहीं देंगे। इसलिए संक्षिप्त और सीधे साक्षात्कार के लिए तैयार रहना बहुत जरूरी होता है। इन दिनों अक्सर इस तरह की भेंटवार्ताएँ टेलीफोन पर भी ली जाती हैं। खासतौर पर सुविधा संपन्न अखबार और पत्रिकाएँ संस्थान के नाम के बल पर ही टेलीफोन पर सवाल-जवाब कर लेती है। "आवाज" सबसे अधिक प्रामाणिक मानी जाती है। लेकिन छपी हुई भेंटवार्ता में भी अगर आप यह जानकारी पाठक को देते हैं कि यह बातचीत टेलीफोन पर की गयी है, तो उसकी प्रामाणिकता बढ़ जाती है। संक्षिप्त बातचीत में प्रश्न तैयार होने चाहिए और दनादन सवालों का सिलसिला बना रहना चाहिए।

बातचीत : बातचीत से हमारा आशय उस साक्षात्कार से है जब भेंटवार्ताकार भी अपने क्षेत्र का विशेषज्ञ हो। जाहिर है कि "बातचीत" में एक व्यक्ति पर ज्यादा फोकस हो सकता है और अक्सर होता भी है। लेकिन "बातचीत" में भेंटवार्ताकार भी अक्सर अपनी बात, राय या टिप्पणी थोड़ा विस्तार से रख सकता है। **दिनमान** के 4-10 दिसंबर 1983 के अंक में हिंदी कवि अज्ञेय से महादेवी वर्मा की बातचीत प्रकाशित हुई थी। अज्ञेय और महादेवी वर्मा दोनों ही हिंदी के महान् रचनाकार हैं। इस बातचीत में अज्ञेय ने साहित्य के संबंध में महादेवी से विभिन्न प्रश्न पूछे। परन्तु उन प्रश्नों को पढ़ने से ही स्पष्ट हो जाएगा कि ये साधारण किस्म के प्रश्न नहीं हैं बल्कि एक रचनाकार के दृष्टिकोण की झलक भी उसमें दिखाई देती है। इस बातचीत में कई बार अज्ञेय के प्रश्न लंबे और महादेवी के उत्तर छोटे नजर आते हैं। इसका कारण यही है कि यह "साक्षात्कार" कम "बातचीत" अधिक है।

प्रश्न : तो स्वयं अपनी रचना में आपने लक्ष्य किया कि किस तरह का परिवर्तन आता है?

उत्तर : इस पर सोचा नहीं। परिवर्तन आना है, आया। भाषा में भी आया, छंद में भी आया, लेकिन संस्कार पुराना ही रहा होगा क्योंकि फिर गीत लिखने का लोभ तो था ही और गीत में छंद न हो, गुनगुनाया न जाये, गाया न जाये तो किसी काम का न होगा। लंबी कविताएँ कम हैं मेरी, जो है गीत में है। बहुत विस्तार हो भी नहीं सकता। और क्योंकि भावाकुलता कुछ क्षणों में रहती है, हमेशा नहीं रह सकती। तो जो कविता वैचारिक है उसके लिए तो वह समय है, लेकिन गीत के लिए भाव में तीव्रता है, और कुछ तो है नहीं।

प्रश्न : यह तो ठीक है, लेकिन यह जो कविता में परिवर्तन आया, दो उदाहरण लूं दिनकरजी लिखते थे, पहले बंधे हुए छंद में लिखते थे, बच्चन जी वैसा ही करते थे और वह कविता उनकी लोकप्रिय भी हुई। उधर तो कोई कारण नहीं था कि वह मुक्त छंद में लिखने लगें, दूसरी तरह के कारण हो सकते हैं लेकिन दोनों ने ही छंद छोड़कर दूसरी तरह की भाषा, दूसरी तरह की प्रक्रिया अपना ली और मुझको लगता है दोनों ही उसमें सफल नहीं हुए क्योंकि उनका संस्कार वही है बंधे हुए छंद का और वाचिक परंपरा का। दूसरी भाषा उन्होंने अपनायी, लेकिन वह छंद उनसे सधा नहीं। आपकी तो कभी मुक्त छंद की तरफ प्रवृत्ति नहीं हुई?

उत्तर : मुक्त छंद दो चार लिखे होंगे, लेकिन भूल भी गयी हूं और वह संग्रह मिलता भी नहीं। बहुत कविताएँ खोयी हैं मेरी। लेकिन एक दो बार प्रयत्न किया है मैंने। लेकिन मुझको आनंद इसी में मिलता है क्योंकि मैं गुनगुनाती हूं।

प्रश्न : लेकिन जो प्रयत्न किया तो क्यों?

उत्तर : प्रयत्न यह देखने के लिए कि कैसा लगता है। कभी-कभी मन ऐसा होता है कि लिख कर देखें, लेकिन संतोष नहीं हुआ उस पर।

उपर्युक्त साक्षात्कार को हम साधारण अर्थ में "साक्षात्कार" नहीं कह सकते। यह बुनियादी रूप से एक बातचीत है क्योंकि महादेवी वर्मा से साक्षात्कार लेने वाला व्यक्ति स्वयं हिंदी का लब्धप्रतिष्ठ कवि है। इस तरह से यह साक्षात्कार महादेवी वर्मा पर केन्द्रित होने के बावजूद एक बहस-बातचीत का रूप ले लेता है। अज्ञेय ने अपने को ज्यादा आरोपित नहीं किया है। पर उनके प्रश्न कभी-कभी अपनी स्वतंत्र सत्ता बनाने में सफल नजर आते हैं।

बातचीत केवल दो व्यक्तियों में ही हो यह आवश्यक नहीं है। दो से अधिक कभी-कभी चार-पाँच व्यक्ति भी इसमें शामिल हो सकते हैं। आमतौर पर ये सभी व्यक्ति एक ही क्षेत्र से संबद्ध होते हैं, और आपस में किसी एक विषय पर अपना-अपना मत उजागर करते हैं। कभी-कभी यह भी संभव है कि एक ही विशेषज्ञ से उसी क्षेत्र के दो-तीन व्यक्ति मिलकर साक्षात्कार लें।

मुलाकात : "मुलाकात" या "विजिट" में सवाल-जवाब लंबे समय तक फैले हुए हो सकते हैं। अक्सर इसमें टेपरिकार्डर या कापी-कलम के इस्तेमाल से बचा जाता है। आप किसी राजनेता, फिल्म निर्देशक या लेखक के घर जाते हैं। व्यक्ति-विशेष के साथ आप एक घंटे से लेकर एक सप्ताह का समय बिता सकते हैं। फिर लौटकर आप उस मुलाकात का विवरण संस्मरण और भेंटवार्ता के मिले-जुले रूप में करते हैं। सुप्रसिद्ध हिंदी लेखक मनोहरश्याम जोशी ने एक बार स्व. हजारी प्रसाद द्विवेदी से इस प्रकार का एक अच्छा साक्षात्कार लिया था। द्विवेदीजी उन दिनों चंडीगढ़ में रहते थे। मनोहरश्याम जोशी दिल्ली में थे। "आलोचना" पत्रिका के लिए मनोहरश्याम जोशी ने द्विवेदी जी से चंडीगढ़ जाकर एक मुलाकात की। इस साक्षात्कार को हिंदी के अच्छे साक्षात्कारों में गिना जाना चाहिए। साक्षात्कार के अंत में जोशी जी की टिप्पणी गौर करने लायक है :

जब यह बगैर लिया हुआ इंटरव्यू प्रकाशित हो गया तब हजारी प्रसाद जी बहुत चकित हुए। उनका यही कहना था कि निश्चय ही आपके पास कोई छिपा हुआ टेपरिकार्डर रहा होगा। मैंने उनसे निवेदन किया कि लोगों की बातचीत बहुत ध्यान से सुनने की, उनका लहजा और अंदाजेबयां याद रखने की, हमारे परिवार में परंपरा-सी है। हम सब माहिर नक्काल हैं। सुनकर वह बहुत हँसे। **बातों-बातों में** (पृ. 31)

इस प्रकार की मुलाकात को साक्षात्कार में बदलने के लिए आत्मविश्वास, स्मरण-शक्ति, "माहिर नक्काली" के अलावा निरीक्षण शक्ति भी बहुत ऊंचे दर्जे की होनी चाहिए। ये गुण अगर आप में कम हैं, तो इस प्रकार के साक्षात्कार से जूझने की कोशिश नहीं कीजिए। हर आदमी "माहिर नक्काल" नहीं होता और बड़े-बड़े नक्काल भी धोखा खा जाते हैं।

विस्तृत और व्यक्तित्व उद्घाटक साक्षात्कार : विस्तृत और व्यक्तित्व उद्घाटक साक्षात्कार की चर्चा हम इकाई 16 में कर चुके हैं। हिंदी में इस तरह के साक्षात्कार ज्यादा नहीं हैं। पश्चिम में तो जाने-माने विशेषज्ञों, कलाकारों, चिंतकों, वैज्ञानिकों, फिल्मकारों से पुस्तक रूपी साक्षात्कार लेने की बड़ी पुरानी परंपरा है। ये साक्षात्कार कई बैठकों में लिये जाते हैं। "द पेरिस रिव्यू" ने लेखकों के लंबे साक्षात्कारों का अनोखा सिलसिला शुरू किया था जो विश्वप्रसिद्ध हो चुका है। बल्कि आप अगर "द पेरिस रिव्यू" के साक्षात्कारों की पुस्तकें ध्यान से पढ़ें तो आप भेंटवार्ता की सभी संभावनाओं, बारीकियों, सीमाओं, उपलब्धियों आदि से परिचित हो सकते हैं।

खोजी साक्षात्कार : खोजी साक्षात्कार दरअसल खोजी पत्रकारिता के कारण लोकप्रिय हुए हैं। वैसे तो हर साक्षात्कार अपनी प्रकृति में खोजी ही होता है। पर खोजी साक्षात्कार में

जासूस और वकील छवि का महत्व बढ़ जाता है। आप चाहें तो व्यक्ति को बातों-बातों में "एक्सपोज" करें या फिर टेढ़े और चतुर सवाल करके सच्चाई की तहों में प्रवेश करें। खोजी साक्षात्कार में दूसरा व्यक्ति सजग नहीं होना चाहिए वैसी स्थिति में अच्छे जवाब नहीं मिलते।

साक्षात्कार के इन विभिन्न रूपों को आप प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत करना चाहते हैं या लेख रूप में, यह भी विचारणीय है। सामान्यतः साक्षात्कार को प्रश्नोत्तर के रूप में ही प्रस्तुत किया जाता है परन्तु कभी-कभी लेख रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है आगे इन दोनों रूपों पर विचार किया गया है।

17.5.2 साक्षात्कार लेख रूप में

ऊपर "बातचीत" के जिस रूप की चर्चा की गई है, उस बातचीत को आप लेख का रूप भी दे सकते हैं। लेकिन लेख के रूप में साक्षात्कार का प्रयोग सर्वाधिक उपयुक्त वहाँ है जहाँ सारी बातचीत किसी एक विषय पर केन्द्रित होती है और प्रश्नों को उद्धृत किये बिना विशेषज्ञ के विचारों को लेख का रूप दिया जा सकता है। व्यक्तित्व उद्घाटक साक्षात्कार को भी लेख के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है, विशेष रूप से तब जब प्रश्नों के उत्तर अनुभवपरक और संस्मरणात्मक हो। साक्षात्कार को लेख का रूप देते वक्त भाषा में काफी बदलाव करना पड़ सकता है। उत्तरों को सही क्रम में रखना होता है तथा एक बात और दूसरी बात के बीच के "गेप" को भरना पड़ता है। लेख का रूप देने का लाभ यही है कि विशेषज्ञ की बातचीत पूर्ण और निर्बाध रूप में सामने आती है। साक्षात्कार अगर विचारप्रधान है तो लेख में भेंटवार्ता की उपस्थिति खटक सकती है, लेकिन संस्मरणात्मक और व्यक्तित्वपरक साक्षात्कार में "भेंटवार्ता" की उपस्थिति लेख के महत्व को बढ़ा सकती है। नीचे इसी तरह के एक साक्षात्कार का अंश दिया जा रहा है। यह साक्षात्कार फिल्म निर्देशक बासु भट्टाचार्य से लिया गया था और **संडे मेल** (हिंदी साप्ताहिक) में लेख रूप में प्रकाशित हुआ था :

बासु भट्टाचार्य से मुलाकात दिल्ली में महादेव रोड पर फिल्म प्रभाग के सभागार के बाहर हुई। अपनी अब तक की ताजा फिल्म "पंचवटी" को लेकर वे यहाँ आये थे। "पंचवटी" को बने तीन साल होने को आये हैं लेकिन अब तक यह फिल्म व्यवसायिक प्रदर्शन के लिए रिलीज नहीं की जा सकी है। "क्यों" से बातचीत शुरू की तो बासु ने जैसे फिल्म वितरण व्यवस्था की सामान्य समस्या ही सामने रख दी, 'अच्छी' फिल्में देखता ही कौन है? खरीदने की बात तो इसके बाद ही होगी। "पंचवटी" कितनी अच्छी है, अच्छी है भी या नहीं, यह बासु के दर्शकों पर छोड़ देना बेहतर है। आखिर वे ही कहते हैं कि वे खास दर्शक को लक्ष्य करके ही फिल्म बनाते हैं और उनके पास ऐसे दर्शक हैं भी जो उनकी फिल्मों में छिपे "ब्रिलिएंट आइडियाज" को भी ढूँढ निकालते हैं। "पंचवटी" के बारे में यहाँ दो चार मुख्तसर बातें कहना ही अपेक्षित होगा। बासु ने "मेल फीमेल" के रिश्तों की रोशनी में ही पूरी फिल्म के "कथ्य" को "फोकस" किया है और यह फिल्म भारत और नेपाल के सहयोग से बनने वाली पहली फिल्म है।

(संडे मेल, 11 फरवरी 1990)

17.5.3 प्रश्नोत्तर रूप में

साक्षात्कार को प्रश्नोत्तर रूप में प्रस्तुत करना सामान्य चलन है। लेकिन प्रश्नोत्तर को किस सीमा तक संयोजित और संपादित करना चाहिए, इसकी चर्चा विस्तार से की जा चुकी है। जहाँ साक्षात्कारदाता की कही हुई बात को उसके अपने शब्दों में प्रस्तुत करना अनिवार्य हो वहाँ प्रश्नोत्तर रूप को ही अपनाना चाहिए। इसी तरह जहाँ प्रश्न क्या और किस रूप में पूछा गया है यह जानना या बताना आवश्यक हो, वहाँ भी प्रश्नोत्तर शैली ही उचित है। जब भेंटकर्ता प्रश्नोत्तर के बीच-बीच अपनी टिप्पणी भी देना चाहता है तो लेख शैली का प्रयोग उचित होता है अन्यथा प्रश्नोत्तर शैली उचित है। इसमें अधिक वस्तुपरक और कुशल होने का परिचय देना होता है। यह भेंटकर्त्ता पर ही निर्भर करता है कि वह लेख रूप में साक्षात्कार प्रस्तुत करना चाहता है या प्रश्नोत्तर रूप में।

17.5.4 शीर्षक देना

साक्षात्कार के संपादन की प्रक्रिया में शीर्षक का चुनाव एक प्रमुख समस्या है। अक्सर किसी चौंकाने वाले उद्धरण से साक्षात्कार का शीर्षक दिया जाने लगा है। पर हर साक्षात्कार के साथ इस तरह के शीर्षक अच्छे नहीं लगते हैं। सरल और केन्द्रीय बिंदु को उभारने वाला शीर्षक ज्यादा प्रभावशाली हो सकता है। इसके लिए आप साक्षात्कारदाता के कथन को भी शीर्षक के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।

17.6 साक्षात्कार का प्रकाशन

जहाँ तक साक्षात्कार के प्रकाशन का प्रश्न है अक्सर किसी संपादक से पूर्व स्वीकृति के बाद ही किसी से साक्षात्कार का समय लेना चाहिए। इससे समय मिलने में भी आसानी रहती है। और डेड लाइन का भी अंदाजा रहता है। पर इसे बिल्कुल नियम में न बदलिए। कभी कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति आपको अचानक आसानी से लंबे समय के लिए उपलब्ध हो जाये, तो बातचीत को टालिए नहीं। बाद में सुविधानुसार अखबार या पत्रिका का चुनाव हो सकता है।

मिसाल के लिए आप शिमला में छुट्टियां बिता रहे हैं। अचानक आपको पता चलता है कि आपके होटल में एक बहुत नामी संगीतकार ठहरे हुए हैं। अगर आप उनसे लंबी बातचीत करने में सफल हो जायें, तो प्रकाशन की चिंता बाद में कीजिएगा। प्रसिद्ध व्यक्तियों से अंतरंग और लंबी बातचीत छापने के लिए सभी पत्र-पत्रिकाएँ उत्सुक रहती हैं।

साक्षात्कार का कापीराइट (स्वात्वाधिकार) भेंटवार्ताकार का ही होता है। हिंदी में कुछ लेखक अपनी भेंटवार्ताओं का संकलन खुद ही छपवा लेते हैं। यह सोचकर कि आखिर विचार तो मेरे हैं। पर इसके लिए भेंटवार्ताकार से पूर्वानुमति जरूरी है। हाँ, साक्षात्कार से पहले संबद्ध व्यक्ति फीस मांग सकता है। पश्चिम में अनेक नामी लोग साक्षात्कार में बैठने की बाकायदा फीस मांगते हैं। सौभाग्यवश अभी भारत में यह परंपरा प्रचलित नहीं है।

बोध प्रश्न

8) संक्षिप्त और सीधा साक्षात्कार कब लिया जाता है?

.....

.....

9) "बातचीत" और "साक्षात्कार" में अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

10) लेख रूप में साक्षात्कार तैयार करते हुए किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

6) निम्नलिखित साक्षात्कार को लेख रूप में परिवर्तित कीजिए।
श्रीमान "क" से बातचीत

प्रश्न : *सांप्रदायिकता की समस्या को आप किस रूप में लेते हैं?*

उत्तर : *मेरे विचार में सांप्रदायिकता की समस्या सबसे भयावह समस्या है। यह सिर्फ विभिन्न समुदायों के बीच घृणा और द्वेष ही नहीं फैलाती वरन् देश की एकता को तोड़ने के लिए जमीन भी तैयार करती है। यह लोगों को आपस में बाँटती है और हमारी विकास प्रक्रिया को अवरुद्ध करती है?*

प्रश्न : *सांप्रदायिकता से आपका क्या तात्पर्य है?*

उत्तर : *आप जानते हैं हमारे देश में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं—हिंदू, मुसलमान, सिख, इसाई, बौद्ध, जैन आदि। इनके धार्मिक विश्वास अलग-अलग हैं परंतु सभी भारतीय हैं। भारत के संविधान के अनुसार प्रत्येक भारतीय को समान अधिकार दिये गये हैं और धर्म के आधार पर उनके साथ किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जाएगा, इसका वचन दिया गया है। लेकिन जब व्यवहार में विभिन्न धर्मावलम्बियों के बीच भेदभाव किया जाता है या जब कुछ राजनीति और धार्मिक संगठन निहित स्वार्थों के लिए एक धार्मिक समुदाय को दूसरे धार्मिक समुदाय के विरुद्ध भड़काने या उकसाने का काम करते हैं तो इससे सांप्रदायिकता का जन्म होता है।*

प्रश्न : *सांप्रदायिकता अलगाववाद की ओर कब बढ़ती है?*

उत्तर : *जब विभिन्न समुदाय अपने को असुरक्षित समझने लगते हैं और यह महसूस करते हैं कि वर्तमान राजनीतिक ढाँचे में उनके हितों और अधिकारों जिनमें धार्मिक भी शामिल हैं कि रक्षा संभव नहीं है तो उन समुदायों में पृथक्ता का अंकुर फूटने लगता है। किसी अल्पसंख्यक समुदाय में अलगाववाद का आरंभ कई बार बहुसंख्यक सांप्रदायिकता के बढ़ते दबाव का नतीजा भी होता है इसलिए हर तरह की सांप्रदायिकता वस्तुतः अलगाववाद को बढ़ावा देती है।*

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7) अपने किसी मित्र से ऐसे विषय पर बातचीत कीजिए जिनमें आप दोनों की अभिरुचि हो। आप अपनी बातचीत को लगभग 100 शब्दों के लेख रूप में लिखिए और शीर्षक भी दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

) किसी बुजुर्ग व्यक्ति का साक्षात्कार लीजिए और उससे ऐसे प्रश्न पूछिए जिससे उसके व्यक्तित्व पर प्रकाश पड़ता हो। इस साक्षात्कार का उचित शीर्षक भी दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

17.7 सारांश

- साक्षात्कार की तैयारी के बाद महत्वपूर्ण है, साक्षात्कार लेना। लेकिन साक्षात्कार लेने के बाद भी आप अपनी बातचीत को प्रकाशन के लिए उसी रूप में प्रस्तुत नहीं कर सकते। इसके लिए साक्षात्कार का संशोधन और पुनर्लेखन आवश्यक है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप लिये गये साक्षात्कार को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप दे सकते हैं।
- साक्षात्कार को अंतिम रूप देने के लिए तीन बातें ध्यान रखना आवश्यक है। साक्षात्कार का आरंभ कैसे किया जाये, केन्द्रीय बिंदु को कैसे उजागर करें तथा पूरे साक्षात्कार में संतुलन कैसे स्थापित करें—अगर इन तीन बातों को हम ठीक से कर लेते हैं तो प्रकाशन हेतु साक्षात्कार को अंतिम रूप देना आसान होगा। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप साक्षात्कार का प्रभावशाली आरंभ कर सकते हैं, उसमें निहित केंद्रीय बिंदु को उजागर कर सकते हैं तथा पूरे साक्षात्कार में संतुलन कायम कर सकते हैं।
- साक्षात्कार के लेखन के समय भाषागत सुधार भी आवश्यक हैं वैचारिक उलझाव और अस्पष्टता दूर करने के लिए भाषा में आवश्यक परिवर्तन करना जरूरी है। इसी तरह ढीले-ढाले वाक्य, अंग्रेजी या देशज शब्दों का अत्यधिक प्रयोग जैसे दोषों को दूर कर लेना चाहिए। लेकिन साक्षात्कार देने वाले की भाषा की कोई खास विशिष्टता जिसे साक्षात्कार में सुरक्षित रखना आवश्यक हो तो उसे नहीं बदलना चाहिए। इन बातों को ध्यान में रखकर आप साक्षात्कार की भाषा में आवश्यक सुधार कर सकते हैं।

- साक्षात्कार के कई रूप हो सकते हैं। तात्कालिक आवश्यकता को ध्यान में रखकर सीधे और संक्षिप्त साक्षात्कार, एक या अधिक लोगों की आपसी बातचीत, किसी विशिष्ट व्यक्ति से "मुलाकात", व्यक्तित्व को उद्घाटित करने वाला विस्तृत साक्षात्कार तथा खोजी साक्षात्कार। आप इन साक्षात्कारों के संबंध में जान चुके हैं। अलग-अलग उद्देश्यों के अनुसार आप इनमें से किसी भी रूप में साक्षात्कार का आयोजन कर सकते हैं।
- साक्षात्कार को प्रश्नोत्तर रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है और लेख रूप में भी। लेख रूप में प्रायः उसी साक्षात्कार को पेश किया जाता है जिसमें व्यक्ति से एक ही विषय पर विस्तार से बातचीत की गयी हो। इस इकाई में आपको साक्षात्कार का शीर्षक कैसे दिया जाता है, यह भी बताया गया है। आप इकाई पढ़ने के बाद साक्षात्कार को लेख रूप में या प्रश्नोत्तर रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

17.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) साक्षात्कार की अंतर्वस्तु के साथ उसका संबंध होना चाहिए। साक्षात्कार के साथ उसका जाना औचित्यपूर्ण हैं या नहीं इस पर विचार कर लेना चाहिए। फोटो अस्पष्ट और दर्शनीय हो तथा फोटो का साइज पत्र-पत्रिका की साइज़ को ध्यान में रखकर तय करनी चाहिए।

2) क) √ (ख) × (ग) √ (घ) × (ङ) ×

3) 1) जिससे साक्षात्कार लेना है उसका वह **परिचय** जिसके कारण आप उसका साक्षात्कार ले रहे हैं।
   2) साक्षात्कार का कारण।
   3) साक्षात्कारकर्त्ता का उल्लेख।

4) "गर्म" सवाल के लिए पहले माहौल बनाने की आवश्यकता है। आरंभ में गर्म सवाल पूछने पर व्यक्ति का मूड बिगड़ सकता है जिससे इंटरव्यू को जारी रखने में बाधा आ सकती है।

2) 1) साक्षात्कार को एक निश्चित स्वरूप देने के लिए।
   2) अपने उद्देश्य के अनुरूप प्रस्तुति के लिए।
   3) मूल मंतव्य को उजागर करने के लिए।
   4) पत्र-पत्रिका में नियत स्थान के लिए।
   5) भाषागत त्रुटियाँ दूर करने के लिए।

6) क) नहीं ख) हाँ ग) हाँ घ) हाँ ङ) नहीं

7) उस व्यक्ति की भाषा की विशिष्टता की रक्षा करनी चाहिए तथा किसी खास अर्थ में कोई शब्द प्रयुक्त हुआ है तो उसे नहीं बदलना चाहिए। किंतु भाषागत अन्य त्रुटियाँ जैसे व्याकरणगत दोष, या अनावश्यक दोहराव या अन्य भाषाओं के शब्दों या पदों का अनावश्यक प्रयोग, दूर किये जाने चाहिए।

8) संक्षिप्त और सीधा साक्षात्कार आमतौर पर समाचार पत्रों की रिपोर्टिंग के लिए आवश्यक होता है।

9) "बातचीत" में दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी विषय पर आपस में सोद्देश्यपूर्ण वार्तालाप करते हैं और ये सभी उस क्षेत्र से संबद्ध होते हैं। जबकि साक्षात्कार में साक्षात्कर्ता का उस क्षेत्र से संबद्ध होना अनिवार्य नहीं है। बातचीत में प्रश्नकर्ता का दृष्टिकोण भी महत्व के साथ व्यक्त होता है जबकि साक्षात्कार में प्रश्नकर्ता का दृष्टिकोण या मत का महत्व नहीं होता और न ही वह अपना मत प्रस्तुत करता है।

10) देखिए 17.5.2

अभ्यास

1) उदाहरण: श्रीमती कमला सबरवाल, दिल्ली प्रशासन के स्कूल में पढ़ाती हैं। आपके पति बैंक में अधिकारी हैं। दो बच्चों की माता कमला पिछले बारह साल से नौकरी और घर दोनों का बोझ ढो रही हैं। सुबह पाँच बजे से रात ग्यारह बजे तक घर और स्कूल के बोझ तले दबी कमला सबरवाल महसूस करती हैं कि सैंतीस साल की उम्र में ही वे थक चुकी हैं। आइए, कामकाजी महिलाओं की समस्याओं पर उनके विचार जानें।

2) काम का बोझ, बाहर के काम में आने वाली कठिनाइयों और घर के काम में पति की मदद आदि के संबंध में सवाल पूछे जा सकते हैं।

3) अंतिम प्रश्न में आप समस्या के समाधान के लिए सुझाव माँग सकते हैं।

4) आपका सोचना सही हो सकता है। परंतु मेरे विचार में, हमें इस मसले पर जनता को भी ध्यान में रखना चाहिए। उन पर इसका क्या प्रभाव होगा। जब तक हम जनता को इसमें "इन्वाल्व" नहीं करेंगे, तब तक हमें सफलता नहीं मिलेगी।

5) मेरे विचार में इन दंगा फसाद की जड़ में राजनीतिज्ञ होते हैं। यह हमारी समस्या नहीं है। हमारे गाँव में मुसलमान और हिंदू एक साथ रहते हैं। हमारे बीच किसी तरह का झगड़ा नहीं है। लेकिन बार-बार ये राजनीतिज्ञ हमारे बीच झगड़ा कराने की कोशिश करते हैं।

6) सांप्रदायिकता आज हमारे देश की सबसे विकट समस्याओं में से एक है। इससे राष्ट्रीय एकता के सामने गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। सांप्रदायिकता क्यों पनपनी है और इससे अलगाववाद को कैसे बढ़ावा मिलता है इन मसलों पर हमने प्रख्यात विचारक श्रीमान "क" से बातचीत की। श्रीमान् "क" सांप्रदायिकता के मुद्दे पर लगातार लिखते रहे हैं। उनका विचार है कि सांप्रदायिकता आज सबसे भयावह समस्या है। यह सिर्फ विभिन्न समुदायों के बीच घृणा और द्वेष ही नहीं फैलाती वरन् देश की एकता को तोड़ने के लिए जमीन भी तैयार करती है। यह लोगों को आपस में बाँटती है और हमारी विकास प्रक्रिया को अवरुद्ध करती है।

   हमारे देश में विभिन्न धर्मावलंबी रहते हैं—हिंदू, मुसलमान, सिख, इसाई, बौद्ध, जैन आदि। इनके धार्मिक विश्वास अलग-अलग हैं—परंतु ये सभी भारतीय हैं। भारत के संविधान में जहाँ एक ओर धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी दी गई है वहीं धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं किये जाने का वचन दिया गया है। श्रीमान "क" का मानना है कि संविधान की ये बातें जब व्यवहार के धरातल पर नहीं उतरती और व्यवहार में विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच भेदभाव किया जाता है या जब कुछ राजनीतिक और धार्मिक संगठन निहित स्वार्थों के लिए एक धार्मिक समुदाय को दूसरे धार्मिक समुदाय के विरुद्ध भड़काने या उकसाने का काम करते हैं तो इससे सांप्रदायिकता का जन्म होता है।

   सांप्रदायिकता अलगाववाद की ओर कैसे बढ़ती है, इस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्रीमान "क" कहते हैं कि जब विभिन्न समुदाय अपने को असुरक्षित समझने लगते हैं और यह महसूस करते हैं कि वर्तमान राजनीतिक ढाँचे में उनके हितों और अधिकारों, जिनमें धार्मिक हित और अधिकार भी शामिल हैं—सुरक्षित नहीं है तो उस समुदाय में पृथकता का अंकुर फूटने लगता है। अल्पसंख्यक समुदाय में अलगाव की भावना के पनपने के पीछे बहुसंख्यक सांप्रदायिकता का दबाव भी काम करता है। इसलिए हर तरह की सांप्रदायिकता अलगाववाद को बढ़ावा देती हैं।

7) खेलकूद, साहित्य, किसी सामाजिक समस्या आदि पर आप बातचीत कर सकते हैं।

8) बुजुर्ग व्यक्ति, उसके जीवन के अनुभव और उनसे निकलने वाली शिक्षा, अभिरुचि और वर्तमान में उनकी जीवन शैली पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं। प्रश्नोत्तर के आधार पर ही आप शीर्षक तय करें।

इकाई 18 व्यक्ति-चित्र

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य
18.1 प्रस्तावना
18.2 व्यक्ति-चित्र से अभिप्राय
18.3 व्यक्ति-चित्र का उद्देश्य और महत्व
18.4 व्यक्ति के चयन का आधार
18.5 लेखन की तैयारी
  18.5.1 आवश्यक अध्ययन
  18.5.2 साक्षात्कार
  18.5.3 अन्य सामग्री का चयन
18.6 व्यक्ति-चित्र के विभिन्न पक्ष
  18.6.1 जीवन परिचय
  18.6.2 कार्य-क्षेत्र
  18.6.3 उपलब्धि एवं योगदान
  18.6.4 प्रासंगिकता और महत्व
18.7 व्यक्ति-चित्र का लेखन
  18.7.1 व्यक्ति-चित्र का आकार
  18.7.2 व्यक्ति-चित्र की शैली
  18.7.3 व्यक्ति-चित्र की भाषा
  18.7.4 व्यक्ति-चित्र का शीर्षक
18.8 सारांश
18.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

18.0 उद्देश्य

फीचर लेखन से संबंधित सृजनात्मक पाठ्यक्रम की यह अठारहवीं इकाई है। इस इकाई में व्यक्ति-चित्र के लेखन के संबंध में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- व्यक्ति-चित्र के अभिप्राय और महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे;
- व्यक्ति-चित्र के लेखन के लिए उपयुक्त व्यक्ति का चयन कर सकेंगे;
- लेखन के लिए आवश्यक तैयारी कर सकेंगे;
- व्यक्ति-चित्र के लेखन से संबंधित विभिन्न पक्षों को बता सकेंगे; और
- व्यक्ति-चित्र का लेखन कर सकेंगे।

18.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन से संबंधित सृजनात्मक पाठ्यक्रम के अंतिम खंड की यह अंतिम इकाई है। इसी खंड की इकाई 16 और 17 में आपने साक्षात्कार के संबंध में अध्ययन किया था। हमें उम्मीद है कि इससे आपको साक्षात्कार लेने में और साक्षात्कार को प्रकाशन योग्य स्वरूप देने में मदद मिलेगी।

इस इकाई में हम आपको व्यक्ति-चित्र के लेखन के बारे में बतायेंगे। व्यक्ति-चित्र जिसे अंग्रेजी में "प्रोफाइल" कहते हैं, फीचर लेखन का महत्वपूर्ण अंग है। प्रोफाइल का संबंध केवल व्यक्तियों से ही नहीं होता, परंतु हमने यहाँ ऐसे प्रोफाइल की ही चर्चा की है जिनमें किसी व्यक्ति को ही केन्द्र में रखा जाता है। इसीलिए प्रोफाइल को व्यक्ति-चित्र नाम दिया है।

आपने अनुभव किया होगा कि संचार माध्यमों के द्वारा जो घटनाएँ हमारे सम्मुख उपस्थित होती हैं, उनसे कुछ लोग जुड़े होते हैं। जैसे पूर्वी यूरोप और सोवियत संघ में हाल में होने वाले परिवर्तन इनसे सोवियत राष्ट्रपति गोर्बाचेव का नाम अनिवार्य रूप से जुड़ा है। नर्मदा परियोजना से संबंधित आंदोलन से बाबा आमटे का नाम जुड़ा है। इस तरह जब हम मीडिया के माध्यम से घटनाओं से जुड़ते हैं तो उनके साथ ही उनसे संबंधित लोगों के बारे में भी हमें जानने की उत्सुकता बढ़ती है। व्यक्ति-चित्र इसी उत्सुकता का समाधान करता है। राजनेता, वैज्ञानिक, खिलाड़ी, शिक्षाविद्, लेखक, कलाकार अपने कार्यों से चर्चित होते हैं। व्यक्ति-चित्रों के माध्यम से हमें उनके बारे में और अधिक जानने का अवसर प्राप्त होता है। इन "व्यक्ति-चित्रों" के ही लेखन के बारे में इस इकाई में बताया गया है।

"व्यक्ति-चित्र" केवल व्यक्ति का सामान्य परिचय नहीं यद्यपि उसमें व्यक्ति के जीवन के संबंध में जानकारी भी दी जाती है। खास बात यह है कि व्यक्ति-चित्र के माध्यम से उस व्यक्ति-विशेष का एक ऐसा चित्र प्रस्तुत किया जाता है कि पाठकों का उसके व्यक्तित्व से नये रूप में साक्षात्कार हो सके।

इस इकाई में हमने व्यक्ति-चित्र लेखन के लिए की जाने वाली तैयारियों, व्यक्ति-चित्र के विभिन्न पक्षों तथा व्यक्ति-चित्र के लेखन के संबंध में व्यवहारिक जानकारी दी है। हमने विभिन्न उदाहरणों द्वारा अपनी बातें समझाने का प्रयास किया है। इनके साथ ही हमने जो अभ्यास दिए हैं उनको करने से आपमें स्वयं व्यक्ति-चित्र के लेखन की कुशलता का विकास हो सकेगा।

इस इकाई को पढ़ने के अलावा आप पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित व्यक्ति-चित्रों को ध्यान से पढ़िए। उनकी विशेषताओं और कमजोरियों को पहचानिए। इसके बाद आप किसी चर्चित व्यक्ति का व्यक्ति-चित्र स्वयं लिखने की कोशिश कीजिए। इसके लिए आप पुस्तकों, समाचार पत्रों आदि का अध्ययन कीजिए। इस तरह के अभ्यास से आपको व्यक्ति-चित्र लिखने में काफी मदद मिलेगी।

18.2 व्यक्ति-चित्र से अभिप्राय

पत्रकारिता के क्षेत्र में "व्यक्ति-चित्र" का भी महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति-चित्र जिसे अंग्रेजी में PROFILE कहते हैं, फीचर लेखन का एक अंग है। "प्रोफाइल" का शब्दिक अर्थ है—पार्श्वचित्र (Side View), रेखा-चित्र (Sketch) आदि। यह पार्श्वचित्र या रेखाचित्र किसी व्यक्ति का भी हो सकता है और किसी वस्तु का भी। फीचर लेखन के क्षेत्र में "प्रोफाइल" एक ऐसे आलेख को कहेंगे जिसमें किसी व्यक्ति-विशेष का संक्षिप्त परिचय दिया गया हो या किसी वस्तु-विशेष का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया हो। यहाँ वस्तु का अर्थ व्यापक है वह कोई संस्था, कोई गतिविधि भी हो सकती है। उदाहरण के लिए, महान् क्रिकेट खिलाड़ी सुनील गावस्कर या भारत में मछली उद्योग पर प्रोफाइल तैयार किया जा सकता है। यहाँ हमने "प्रोफाइल" को व्यक्ति-चित्र इसलिए कहा है क्योंकि हम इस इकाई में व्यक्ति-विशेष का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत करने वाले "प्रोफाइल" की ही मुख्य रूप से चर्चा करेंगे। विषय आधारित विभिन्न प्रकार के फीचर लेखन के संबंध में आप विस्तृत अध्ययन आगे की इकाइयों में करेंगे ही। प्रोफाइल केवल मुद्रित मीडिया का ही अंग नहीं है। रेडियो और टी.वी. के लिए भी प्रोफाइल तैयार किये जा सकते हैं। लेकिन इस इकाई में हम पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले प्रोफाइल पर ही विचार करेंगे।

व्यक्ति-चित्र का अर्थ सिर्फ जीवन परिचय नहीं है। आपने अक्सर पाया होगा कि समय-समय पर घटने वाली घटनाओं के कारण कुछ लोगों की चर्चा विशेष रूप से होने लगती है। जैसे सोवियत संघ के राष्ट्रपति गोर्बाचेव ने "ग्लासनोस्त" और "पैरेस्त्रोइका" के माध्यम से सोवियत समाज में आमूल परिवर्तन लाने का अभियान आरंभ किया तो उनकी चर्चा सब जगह होने लगी। जाहिर है, उस समय हर कोई गोर्बाचेव के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानने को उत्सुक था। ऐसे समय विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने गोर्बाचेव के

कई व्यक्ति-चित्र प्रकाशित किये। इसी प्रकार किसी राष्ट्र स्तरीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता के दौरान उभरने वाला कोई खिलाड़ी, किसी लेखक की नयी पुस्तक के चर्चित होने पर, किसी विवादास्पद घटना से जुड़े होने पर, किसी पुरस्कार या किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति की मृत्यु के मौके पर भी पत्र-पत्रिकाएँ व्यक्ति-चित्र प्रकाशित करती हैं।

इन व्यक्ति-चित्रों में उस व्यक्ति का जीवन-परिचय, उसका कार्य-क्षेत्र, उसकी उपलब्धियाँ और उनके विचारों की संक्षिप्त झांकी प्रस्तुत की जाती है ताकि लोगों को उस व्यक्ति के बारे में आवश्यक जानकारी मिल सके। जाहिर है व्यक्ति-चित्र बहुत विस्तृत नहीं होता। व्यक्ति-विशेष की समग्र जीवन कथा प्रस्तुत करना इसका उद्देश्य नहीं है। व्यक्ति-चित्र को परिपूर्ण बनाने के लिए उस व्यक्ति का चित्र, उसके कार्य से संबंधित छायाचित्र, दस्तावेज के अंश आदि भी व्यक्ति-चित्र के साथ प्रस्तुत किये जा सकते हैं। व्यक्ति-चित्र को प्रामाणिक बनाने के लिए संभव हो तो उस व्यक्ति से साक्षात्कार भी लिया जा सकता है। इस प्रकार **व्यक्ति-चित्र वस्तुतः व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व की एक रूपरेखा हमारे सामने प्रस्तुत** करता है। यह व्यक्ति कोई भी हो सकता है। विशिष्ट भी और सामान्य भी। लेकिन उस व्यक्ति-चित्र की प्रासंगिकता अवश्य होनी चाहिए।

18.3 व्यक्ति-चित्र का उद्देश्य और महत्व

व्यक्ति-चित्र आमतौर पर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। समाचार पत्रों में तरह-तरह के समाचार प्रकाशित होते हैं, नयी-नयी घटनाओं और समस्याओं से लोगों का परिचय होता है। जिन घटनाओं और समस्याओं के प्रति पाठकों की उत्सुकता बढ़ती है, उनके संबंध में वे और अधिक जानना चाहते हैं। उनसे संबंधित लोगों के बारे में जानने की उत्कंठा लोगों में बढ़ जाती है। अपने पाठकों की जिज्ञासा को शांत करने का दायित्व भी पत्र-पत्रिकाओं पर ही है। इसलिए वे ऐसे लोगों का व्यक्ति-चित्र प्रकाशित करती हैं। प्रसिद्ध टेनिस खिलाड़ी बोरिस बेकर जब पहली बार विंबलडन चैंपियन बने, तब उनकी उम्र महज सत्रह वर्ष की थी। खेल की दुनिया में वह लगभग अपरिचित थे। इतनी बड़ी जीत से उनका नाम सारी दुनिया में फैल गया। स्वाभाविक था कि खेल प्रेमी बेकर के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानने को उत्सुक होते। अब अगर उस समय मीडिया बेकर के बारे में लोगों की जिज्ञासाओं को शांत नहीं करता तो पत्रकारिता के मूल उद्देश्य को ही आघात लगता।

जब कोई राजनेता, कलाकार, लेखक, अभिनेता, खिलाड़ी, विद्वान, अपने कार्यों से समाज को प्रभावित करता है तो स्वाभाविक रूप से उसकी ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट होता है। उसके प्रति लोगों की उत्सुकता और आकर्षण बढ़ता है और लोग उसके बारे में जानना चाहते हैं। अगर किसी व्यक्ति ने किसी क्षेत्र-विशेष में उल्लेखनीय कार्य किया है लेकिन उसका कार्य या उसका नाम अभी तक आम लोगों तक नहीं पहुँचा है, तो इस दायित्व को मीडिया पूरा करता है। यह आवश्यक नहीं कि व्यक्ति-चित्र किसी उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति पर ही हो। किसी साधारण व्यक्ति का असाधारण संघर्ष या किसी साधारण व्यक्ति की कोई असाधारणता या किसी भी समुदाय या वर्ग के प्रति समाज की उपेक्षा आपको व्यक्ति-चित्र लिखने की ओर प्रेरित कर सकती है। उदाहरण के लिए, सर्कस में जोकर बनकर लोगों को हंसाने वाले व्यक्ति के जीवन के दुख-दर्द आपको उस पर "व्यक्ति-चित्र" लिखने के लिए प्रेरित कर सकती है। आपके मुहल्ले में रेहड़ी पर सब्जी बेचने वाले बूढ़े बाबा के हँसमुख चेहरे में उसके संपूर्ण जीवन का संघर्ष आपको झलकता दिखाई दे और आप यह चाहें कि इस व्यक्ति के इस "असाधारण" व्यक्तित्व को आप हजारों लोगों तक पहुँचाएँ। इस तरह के व्यक्ति-चित्र लोगों को अपने समाज की वास्तविकताओं से परिचय कराते हैं। उन्हें संवेदनशील और मानवीय बनने की ओर प्रेरित करते हैं। व्यक्ति-चित्र किसी काल्पनिक कहानी से अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं।

कोई भी व्यक्ति-चित्र चाहे वह विशिष्ट व्यक्ति पर आधारित हो, चाहे साधारण जन पर, लेकिन उसकी प्रासंगिकता आवश्यक है। जैसे जब किसी व्यक्ति की चर्चा हो रही है, तब उसका व्यक्ति-चित्र प्रकाशित होना प्रासंगिक है। लेकिन अन्य कई अवसर भी विशिष्ट

व्यक्तियों के व्यक्ति-चित्र के लिए प्रासंगिक हो सकते हैं जैसे उनका जन्म-दिवस, पुण्य-तिथि, पुरस्कार प्राप्ति या अन्य प्रकार की उपलब्धि के अवसर पर भी व्यक्ति-चित्र प्रकाशित हो सकते हैं। साधारण जन पर लिखे जाने वाले व्यक्ति-चित्र भी प्रासंगिक हो तो अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में कई बार किसी विषय पर फीचर तैयार कराये जाते हैं। उसके एक अंग के रूप में भी व्यक्ति-चित्र तैयार किये जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, बुनकरों पर तैयार किया जाने वाला फीचर तब और प्रभावशाली हो सकता है, जब उसके साथ किसी बुनकर का व्यक्ति-चित्र भी दिया जाए। या विश्व फुटबाल कप के अवसर पर आयोजित विशेषांक में पेले या अन्य प्रसिद्ध खिलाड़ी का व्यक्ति-चित्र दिया जा सकता है। हाकी पर आयोजित अंक में हाकी के जादूगर ध्यानचंद पर व्यक्ति-चित्र दिया जा सकता है।

व्यक्ति-चित्र भी सोद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। अनुल्लेखनीय व्यक्ति के जीवन परिचय को जानने में लोगों की कोई दिलचस्पी नहीं होती चाहे वह कितना ही अमीर हो, या कितने ही बड़े पद पर क्यों न बैठा हो। लेकिन यह व्यक्ति-चित्र लिखने वाले पर भी निर्भर करता है कि वह उसे कितना सोद्देश्यपूर्ण और प्रभावशाली बना पाता है।

18.4 व्यक्ति के चयन का आधार

व्यक्ति-चित्र के लिए किसी व्यक्ति के चयन के कई आधार हो सकते हैं। लेकिन मुख्य बात यह है कि वह व्यक्ति आपकी रुचि के क्षेत्र से संबंधित हो। जिस व्यक्ति का भी आप चयन करें, उसके बारे में आपको पर्याप्त और यथातथ्य जानकारी हो। अगर ऐसी जानकारी आपको नहीं है तो पहले उसे हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। गलत या भ्रमपूर्ण जानकारी के आधार पर लिखा गया व्यक्ति-चित्र प्रभावशाली नहीं होता। आपके लिखे व्यक्ति-चित्र में दिये गये तथ्यों पर लोग भरोसा करेंगे। अगर उन्हें किसी अन्य स्रोत से मालूम होगा कि आप द्वारा प्रदत्त जानकारी असत्य है तो आपके लेखन का प्रतिकूल असर पड़ेगा।

व्यक्ति-चित्र के लिए निम्नलिखित आधार पर व्यक्तियों का चयन हो सकता है।

1) उल्लेखनीय घटनाओं के आधार पर
2) उल्लेखनीय उपलब्धियों के आधार पर
3) जन्म दिवस या पुण्य दिवस या मृत्यु के अवसर पर
4) आम आदमी पर

उल्लेखनीय घटनाओं के आधार पर

व्यक्ति-चित्र लिखने का यह आम आधार है। राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में कुछ-न-कुछ ऐसा घटित होता रहता है कि उनसे संबंधित लोगों की विशेष चर्चा होने लगती है। जब भारत ने विभिन्न देशों में बड़े-बड़े महोत्सव आयोजित किये और उनकी चर्चा होने लगी, तब इन उत्सवों से जुड़े एक नाम—पुपुल जयकर की ओर भी लोगों का ध्यान गया। स्वाभाविक था कि लोग उनके बारे में और ज्यादा जानने को उत्सुक हुए। ऐसा व्यक्ति "व्यक्ति-चित्र" का विषय बन सकता है। चिपको आंदोलन के कारण पर्यावरणवादी सुंदरलाल बहुगुणा चर्चित हुए। कभी-कभी असामाजिक कार्यों के कारण भी लोग चर्चित हो जाते हैं और वे "व्यक्ति-चित्र" के विषय बन जाते हैं। जैसे चार्ल्स शोभराज या जे.के.एल.एफ. से संबद्ध अमानुल्ला खां।

इस तरह के व्यक्ति-चित्र तभी लिखे जाते हैं जब उनसे संबंधित कोई-न-कोई घटना चर्चा के केंद्र में हो। लोग उसी समय उनके बारे में जानना चाहते हैं। चर्चा समाप्त हो जाने के बाद उनसे संबद्ध व्यक्तियों में भी पाठकों की दिलचस्पी समाप्त हो जाती है। इस तरह के व्यक्ति-चित्र में संबद्ध घटना का संक्षिप्त उल्लेख भी आवश्यक होता है और यह भी बताना चाहिए कि इस घटना से पूर्व उस व्यक्ति की भूमिका क्या रही है। उस व्यक्ति का संक्षिप्त आत्म परिचय तो आवश्यक है ही।

उदाहरण के लिए, अप्रैल-मई (1990) में जब गुजरात और मध्यप्रदेश में सरदार सरोवर और नर्मदा घाटी परियोजना के तहत बनने वाले बड़े बाँधों के विरोध में आंदोलन की गूँज सारे देश में सुनाई दे रही थी, उस समय उसका नेतृत्व करने वाले बाबा आमटे की भी चर्चा हर कहीं हो रही थी। **जनसत्ता** के 27 मई, 1990 के अंक में बाबा आमटे का व्यक्ति-चित्र प्रकाशित हुआ। इसके आरंभ में ही बाबा आमटे के इस आंदोलन का परिचय दिया गया था :

यह करिश्मा मुरलीधर देवीदास आमटे ही कर सकते थे। बीमार होते हुए भी मई की चिलचिलाती धूप में वे नई दिल्ली में गोलमेथी चौक पर धरने पर बैठे। दो हजार आदिवासियों के साथ उन्होंने दो बाँधों के फेर में विस्थापित होने जा रहे दस लाख लोगों की तकलीफें दिल्ली दरबार को बताईं।

गुजरात और मध्य प्रदेश में सरदार सरोवर और नर्मदा घाटी परियोजना के तहत बनने वाले बड़े बाँधों से विस्थापन, वन का विनाश और भारी खर्च से थोड़ा ही लाभ ऐसे अहम मुद्दे थे जिनकी वजह से बाबा आमटे को इस आंदोलन का नेतृत्व संभालना पड़ा। मध्य प्रदेश के हरसूद में मेधा पाटकर और दूसरे लोगों द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन को बाबा आमटे ने एक नई गहराई दी। इसमें अलग-अलग क्षेत्रों के जाने-माने लोग मसलन शिवराम कारंत, सुंदरलाल बहुगुणा, शबाना आजमी आदि की भी हिस्सेदारी रही।

इसी व्यक्ति-चित्र में आगे बाबा आमटे के पूर्व कार्यों का भी परिचय दिया गया है :

1950 में महाराष्ट्र के चंदनपुर जिले के वरोरा गाँव के असर में उन्होंने आनंदवन खोला था। आनंदवन कोढ़ियों और शारीरिक तौर पर विकलांग लोगों के लिए कर्म का एक आश्रम था।

पचास एकड़ की पथरीली जमीन पर बने इस आनंदवन में तब सिर्फ छह कोढ़ी थे और पूँजी महज 14 रुपए लगी थी। आज इसका सालाना बजट 80 लाख रुपए से भी ज्यादा का है। यह एक समन्वित संस्था है जो ग्रामीण विकास कार्य, कृषि स्कूल, गूंगे-बहरों का स्कूल, अनाथालय, अस्पताल, बुजुर्गों के लिए आश्रम स्थल, बैंक और लाभ कमाने वाली हथकरघा दुकानें चलाती हैं।

उनके जीवन का संक्षिप्त परिचय देते हुए व्यक्ति-चित्र उनके कार्यों के सामाजिक महत्व को भी उजागर करता है।

उल्लेखनीय उपलब्धियों के आधार पर

व्यक्ति-चित्र लिखने का यह दूसरा महत्वपूर्ण आधार है। पुरस्कार प्राप्ति, जीतने, रिकार्ड बनाने, मंत्री या ऐसा ही उच्च पद प्राप्त होने, पुस्तक प्रकाशित होने, सम्मानित होने आदि—ये कुछ कारण हैं जब संबंधित व्यक्ति पर व्यक्ति-चित्र लिखा जाय। ऐसे व्यक्ति-चित्रों में उपलब्धि की चर्चा भी जरूरी है। साथ ही उक्त उपलब्धि से पूर्व के कार्यों का संक्षिप्त उल्लेख भी करना चाहिए। उस व्यक्ति की उपलब्धि का महत्व क्या है, इसका उल्लेख करने से व्यक्ति-चित्र का महत्व बढ़ जाता है। क्षेत्र-विशेष में महत्वपूर्ण कार्य करने वाले लोगों पर व्यक्ति-चित्र प्रकाशित होते हैं। लेखक, कलाकार, खिलाड़ी, राजनेता आदि के बारे में व्यक्ति-चित्र प्रकाशित होते हैं। यह हमेशा आवश्यक नहीं है कि उस समय उनकी चर्चा किसी प्रसंग विशेष में होना आवश्यक हो। लेकिन व्यक्तित्व ऐसा अवश्य होना चाहिए जिसके बारे में लोग पढ़ना और जानना चाहते हों। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, मेजर ध्यानचंद, कुंदनलाल सहगल, लता मंगेशकर, सत्यजित राय, सुनील गावस्कर, प्रेमचंद, रवींद्रनाथ ठाकुर, अमृता शेरगिल आदि कुछ ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनके बारे में हमेशा लोग कुछ-न-कुछ जानना चाहते हैं। इन पर व्यक्ति-चित्र कभी-भी लिखा जा सकता है। लेकिन यह भी आवश्यक है कि इनमें कुछ नयापन अवश्य हो। अगर वही पुरानी, घिसी-पिटी बातें दुहराई जाएँगी तो व्यक्ति-चित्र प्रभावशाली नहीं होगा।

प्रख्यात पार्श्वगायिका लता मंगेशकर को जब दादा साहब फालके पुरस्कार देने की घोषणा की गयी तो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने लता मंगेशकर के व्यक्तित्व पर लेख और संस्मरण प्रकाशित किये। लता मंगेशकर पर प्रकाशित ऐसे ही एक व्यक्ति-चित्र के निम्नलिखित अंश में उनके योगदान को रेखांकित किया गया है :

दरअसल लता जी उन कलाकारों में से हैं, जिन्होंने भारतीय संगीत को न सिर्फ लोकप्रियता प्रदान की, वरन् उसमें मूल शास्त्रीय तत्व को भी नष्ट नहीं होने दिया। सुर पर पूर्ण नियंत्रण के साथ लता ने फिल्म संगीत को अद्भुत लय प्रदान की तथा करोड़ों श्रोताओं की भावनाओं को अपने स्वर की गहराई से छुआ। उनकी गायन शैली गीत की विशेषताओं को भली-भाँति उभारकर पेश करती है।

(संडे मेल, 6 मई, 1990)

इनमें उनके जीवन-संघर्ष की झांकी भी प्रस्तुत की गयी है:

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के समय अभिनेता-गायक दीनानाथ मंगेशकर की पुत्री लता कोल्हापुर पहुँची, जहाँ उसे अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए मराठी फिल्मों में काम करने पर मजबूर होना पड़ा। किशोरी लता को गाने का शौक था, लेकिन उसे अभिनय करने पर मजबूर होना पड़ा। ....परिवार के गुजारे के लिए वे तीन सौ रुपये माहवार पर नौकरी करने लगीं और यहीं से लता की फिल्मी यात्रा शुरू हुई।

(संडे मेल, 6 मई, 1990)

जन्म-दिवस, पुण्य-दिवस या मृत्यु पर

किसी विशिष्ट व्यक्ति की जयन्ती और बरसी के अवसर पर भी व्यक्ति-चित्र प्रकाशित किये जाते हैं। जब कोई बड़ा लेखक साठ वर्ष, सत्तर वर्ष या पिचहत्तर वर्ष पूरा करता है तब पत्र-पत्रिकाएँ उस पर व्यक्ति-चित्र प्रकाशित करती हैं। जन्म शताब्दी के अवसर पर भी व्यक्ति-चित्र प्रकाशित होते हैं। किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु के अवसर पर भी व्यक्ति-चित्र प्रकाशित होते हैं। ऐसे व्यक्ति-चित्र में उस व्यक्ति के योगदान की चर्चा अवश्य होनी चाहिए। मृत्यु के अवसर पर प्रकाशित व्यक्ति-चित्र "श्रद्धांजली" की तरह हो सकते हैं। परंतु "श्रद्धांजली" और व्यक्ति-चित्र में मुख्य अंतर यही है कि व्यक्ति-चित्र में उस व्यक्ति के जीवन परिचय की प्रमुखता रहती है जबकि "श्रद्धांजली" में उसकी मृत्यु का उल्लेख और विभिन्न शोक-संदेश रहते हैं।

कभी-कभी ऐसे विस्मृत होते जा रहे व्यक्ति का भी व्यक्ति-चित्र लिखा जा सकता है जिसने किसी समय अपने कार्यों से समाज और देश को प्रभावित किया था। 22 जून, 1990 को शहीद ऊधम सिंह पर **नवभारत टाइम्स** में एक व्यक्ति-चित्र प्रकाशित हुआ इसका आरंभ निम्नलिखित ढंग से किया गया था:

12 जून को ऊधम सिंह के बलिदान के पचास वर्ष पूरे हुए। लेकिन हमारे संचार माध्यमों, सामाजिक संगठनों, बुद्धिजीवियों या सरकार को यह अवसर इतना महत्वपूर्ण नहीं लगा कि उस शहीद को याद किया जाए। याद करते भी क्यों? न तो ऊधम सिंह का नाम कभी सत्ता की कुर्सियों से जुड़ा था, न ऊधम सिंह किसी तोपनुमा हस्ती की संतान थे और न आसपास कोई चुनाव होने जा रहे हैं कि ऊधम सिंह पर आँसू बहाकर वोट बटोरे जाएँ। जबकि 1940 में ऊधम सिंह की शहादत भारत में आजादी की तड़प को तीव्र बना गई थी। उनके बलिदान ने भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को नई ऊँचाई दी थी।

इस व्यक्ति-चित्र में उनका जीवन परिचय भी दिया गया था:

26 दिसम्बर, 1899 के पटियाला जिले के सुनाम कस्बे में एक रेलवे चौकीदार के घर में ऊधम सिंह जन्मे थे। कच्ची उम्र में ही माँ-बाप का साया सर से उठ गया। जिस भाई के साथ अमृतसर के यतीमखाने में प्रताड़ित बचपन भोगा, उसकी मृत्यु के बाद ऊधम सिंह का आगे नाथ न पीछे पगहा जैसा हाल हो गया। भगत सिंह और चन्द्रशेखर आजाद के समकालीन ऊधम सिंह ने कांग्रेस के कार्यकर्ता के रूप में भी कार्य किया। जलियाँवाला बाग की दुर्घटना उनके जीवन का निर्णायक मोड़ बन गई।

अपने इरादों को अंजाम देने के उद्देश्य से वे अफ्रीका और अमेरिका भी भटके। लेकिन 1923 में उन्हें भगत सिंह के आग्रह पर भारत लौटना पड़ा। अवैध रिवाल्वर रखने के जुर्म में दंडित होकर वे सन् 1928 से 1932 तक मुल्तान और रावलपिंडी के जेलों में रहे। 1932 में जेल से छूटने के बाद ऊधम सिंह गुप्त रूप से लंदन पहुँचे और रोजी-रोटी की तलाश में एक कारखाने में नौकरी की।

ऊधम सिंह अपने जिस कार्य के कारण अमर शहीदों की श्रेणी में उल्लिखित किये गये, उसको इस व्यक्ति-चित्र में निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया गया है।

13 अप्रैल, 1919 की बैशाखी की याद ने उन्हें सदैव बेचैन रखा, जब पशुबल से प्रेरित ब्रिटिश साम्राज्य की संगीनों ने जलियाँवाला बाग को लाशों से पाट दिया था। इस सभा में ऊधम सिंह एक स्वयंसेवक के रूप में शामिल थे और जघन्य कत्लेआम से उनकी आत्मा तड़प उठी। एक शहीद की लाश को घर पहुँचाते हुए उन्होंने अपनी एक मुँहबोली बहन (अत्तरा कौर) के सामने अंग्रेजों से बदला लेने का प्रण लिया। समय, जो बड़े-बड़े घाव भर देता है, ऊधम सिंह के प्रतिशोध की आग को मंदा न कर पाया। इस नरसंहार के कर्त्ताधर्त्ता जनरल डायर और तत्कालीन पंजाब के गवर्नर माइकल ओडायर की मौत ऊधम सिंह के जीवन का मकसद बन गई। इक्कीस वर्ष बाद इंग्लैंड जाकर ऊधम सिंह ने राष्ट्रीय अपमान का बदला लेकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

13 मार्च, 1940 को लंदन के कैक्सटन हॉल में ईस्ट इंडिया एसोसिएशन और रॉयल सेंट्रल एशियन सोसायटी द्वारा आयोजित एक समारोह में भूतपूर्व गवर्नर माइकल ओडायर को उनकी सत्सेवाओं के लिए बीस हजार पौंड की राशि देकर सम्मानित किया जाना था। भारत मंत्री लार्ड जिटलैंड भी उपस्थित थे। ज्योंही सभा समाप्त होने को थी, ऊधम सिंह के रिवॉल्वर से निकली गोलियों ने 21 वर्ष पुराना अपना हिसाब चुक्ता किया। माइकल ओडायर वहीं ढेर हो गए और लार्ड जिटलैंड घायल हो गए।

यह व्यक्ति-चित्र ऊधम सिंह को फाँसी दिये जाने (12 जून, 1940) के पचास वर्ष पूरे होने पर प्रकाशित हुआ था।

आम आदमी के आधार पर

मामूली से मामूली आदमी के जीवन में भी कुछ-न-कुछ ऐसा अपूर्व और उल्लेखनीय अवश्य होता है जिसे अगर उजागर किया जाए तो वह लोगों के लिए प्रेरणास्पद, ज्ञानवर्धक और रोचक हो सकता है। कई बार पत्र-पत्रिकाओं में साधारण जीवन जीने वाले लोगों के जीवन के भी प्रभावशाली व्यक्ति-चित्र प्रकाशित होते हैं। 26 मई, 1990 के **नवभारत टाइम्स** में लक्ष्मण राव नाम के एक व्यक्ति का व्यक्ति-चित्र प्रकाशित हुआ। यह व्यक्ति दिल्ली में राउज एवेन्यू के पास पान-सिगरेट की दुकान करता है। कुछ साल पहले घर से भागकर नये जीवन की तलाश करने वाले इस व्यक्ति के मन में लेखक बनने की तमन्ना है और हर तरह का संघर्ष उठाते हुए उसने अपनी इस आकांक्षा को पूरा भी किया है। उसकी पुस्तकें प्रकाशित भी हुई हैं।

इस तरह के व्यक्तियों पर लिखते हुए मुख्य चीज है उनका जीवन संघर्ष, उनका साहस और लगन और उनके जीवन के करुण पक्ष। अगर हम इस व्यक्ति-चित्र का जायजा लें तो हमें ये सभी विशेषताएँ मिल सकती हैं। लेखक ने सबसे पहले उसके जीवन के अंतर्विरोध को व्यक्त किया है :

वह घटना उसने बचपन में सुनी थी और तभी से वह रात-दिन यही सोचता रहता था कि रामदास कैसे मरा, आखिर जीवन क्या है, क्या इंसान को समाज के लिए कुछ किए बगैर मर जाने का अधिकार है। इन सवालों ने छोटी-सी उम्र में ही उसके दिमाग में बावलापन पैदा कर दिया। लिखने की एक ललक, एक लालसा जागृत कर दी।

उसकी ये ललक, ये बावलापन आज पूरा हो गया क्योंकि आज वह एक लेखक है, एक प्रकाशक है और अपनी पुस्तकों का विक्रेता भी वह स्वयं ही है। परन्तु विडम्बना तो यह है कि लोग उसे पानवाले के रूप में ज्यादा और लेखक के रूप में कम जानते हैं।

रामदास की मौत उसके जीवन को एक राह तो दिखा गई, लेकिन इसके लिए उसे जीवन के कठिनतम रास्तों से होकर गुजरना पड़ा। पत्थर ढोने पड़े, मजदूर बनना पड़ा, ढाबों पर बर्तन मांजने पड़े, सड़क पर सोना पड़ा, यहाँ तक कि अपने पिता से झूठ बोलकर घर से भागने को मजबूर होना पड़ा।

फिर उसे लिखने की प्रेरणा कैसे मिली यह बताया गया है :

उसका नाम लक्ष्मण राव है। राउज एवेन्यू में कई सरकारी दफ्तर हैं। उन्हीं दफ्तरों के पास एक पेड़ के नीचे लक्ष्मण का पान-सिगरेट का एक छोटा-सा खोखा है। जहाँ पर बैठकर वह पान-सिगरेट बेचता है और खाली समय में कुछ-न-कुछ पढ़ता रहता है।

लक्ष्मण राव महाराष्ट्र में अमरावती जिले के एक छोटे-से गाँव (तड़ेगाँव दशासर) का रहने वाला है। उसी गाँव में रामदास नाम का एक लड़का भी रहता था। एक बार छुट्टियों में रामदास अपने मामा के गाँव गया। कुछ दिनों बाद जब वह वापिस घर आ रहा था तो रास्ते में पड़ती एक स्वच्छ जल भरी नदी में उसका नहाने को मन हुआ। अपनी इस इच्छा को पूरी करने के लिए रामदास कपड़े उतार कर नदी में कूद गया, लेकिन उसमें से वह जिन्दा बाहर नहीं निकल पाया। गाँव वाले उसकी लाश को निकाल कर बाहर लाए। बचपन में सुनी साधारण-सी लगने वाली इस घटना ने लक्ष्मण के अंदर एक लेखक पैदा कर दिया। सातवीं कक्षा में पहुँचते-पहुँचते लक्ष्मण ने लघुकथाएँ लिखनी शुरू कर दी थी। आज उसकी दो पुस्तकें "नई दुनिया की नई कहानी" (सामाजिक उपन्यास) और "प्रधानमंत्री" (नाटक) प्रकाशित हो चुके हैं। कुल मिलाकर अब तक वह ग्यारह उपन्यास लिख चुका है। "रामदास" उसका पहला उपन्यास था।

बाद में विस्तार से लेखक ने लक्ष्मण राव का जीवन परिचय दिया है। इस तरह के व्यक्तित्व उनकी जीवन शैली और उनकी अभिरुचियों, उनके संघर्ष और सफलताएँ-असफलताएँ हमें बहुत कुछ सिखाती हैं और बताती हैं। हमेशा महान् व्यक्ति ही हमारे शिक्षक नहीं होते। साधारण लोग भी हमें बहुत कुछ सिखा सकते हैं।

बोध प्रश्न

1) प्रोफाइल शब्द से क्या अभिप्राय है? लगभग पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) व्यक्ति-चित्र क्यों प्रकाशित किये जाते हैं? लगभग पाँच पंक्तियों में उत्तर कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) क्या आम आदमी पर भी व्यक्ति-चित्र लिखा जा सकता है? अगर "हां" तो कारण स्पष्ट कीजिए। उत्तर लगभग तीन पंक्तियों से अधिक में न हो।

.....

.....

.....

4) व्यक्ति-चित्र लिखने के लिए व्यक्तियों का चयन किन आधारों पर किया जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

1) पत्र-पत्रिकाओं में से कोई व्यक्ति-चित्र चुनिए और उसको पढ़कर बताइए कि इसे प्रकाशित करने का उद्देश्य क्या था? अपना उत्तर लगभग पांच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किन्हीं दो व्यक्ति-चित्रों की परस्पर तुलना कीजिए। एक ही व्यक्ति पर लिखे दो व्यक्ति-चित्रों की तुलना के लिए चुनना बेहतर होगा। उत्तर लगभग दस पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

18.5 लेखन की तैयारी

व्यक्ति-चित्र के लिए लेखक को पहले पूर्ण तैयारी कर लेनी चाहिए। अगर आप पत्रकारिता के पेशे में हैं तो आप को तरह-तरह के क्षेत्रों के लोगों पर व्यक्ति-चित्र लिखना पड़ सकता है और इसकी तैयारी के लिए आपको आवश्यक समय भी न मिले। इसलिए यह जरूरी है कि आप अपना सामान्य ज्ञान विस्तृत बनाएँ। नये से नये क्षेत्रों और विषयों के बारे में आप अपना ज्ञान बढ़ायें। उन पर प्रकाशित सामग्री की जानकारी रखें और उनका संग्रह करें या उन पर नोट लेते रहें ताकि समय पर आप उनका उपयोग कर सकें।

18.5.1 आवश्यक अध्ययन

व्यक्ति-चित्र के लिए अध्ययन आवश्यक है। कई बार आपको ऐसे व्यक्ति पर लिखना पड़ सकता है, जिसके बारे में आपको लायब्रेरी में जाकर पुस्तकों की छानबीन करनी पड़े। हो सकता है आपको इस व्यक्ति के बारे में सामान्य जानकारी तो हो, लेकिन अगर पर्याप्त अध्ययन के बाद व्यक्ति-चित्र लिखेंगे तो आप कुछ नयी और महत्वपूर्ण जानकारी पाठकों को दे सकेंगे।

व्यक्ति-चित्र में तथ्यों और आँकड़ों का सही होना आवश्यक है। इसलिए आप अपने लेख में जो भी तथ्य और आँकड़े दें, उन्हें सत्यापित कर लें कि वे सही हों। तारीखें, नामों और अन्य तथ्यों को भी सावधानी से इस्तेमाल करें। इसके लिए जरूरी है कि आप प्रामाणिक पुस्तकों और स्रोतों से ही तथ्य लें। सही तथ्य नहीं दिये जाने से भ्रम उत्पन्न हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, प्रख्यात बंगला कवि और फिल्म अभिनेता हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय की मृत्यु (23 जून, 1990) के अवसर पर प्रकाशित एक व्यक्ति-चित्र में लिखा गया था कि वे पहली लोकसभा में गुंटूर (आन्ध्र प्रदेश) से चुने गये थे जबकि सत्य यह है कि वे गुंटूर से नहीं वरन् विजयवाड़ा से चुने गये थे।

लगातार 48। घंटे तक डिस्को करके गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराने वाले युवक वरांगर राममूर्ति पट्टाभिरमन पर नवभारत टाइम्स में प्रकाशित व्यक्ति-चित्र में निम्नलिखित आँकड़े भी दिये गये थे:

रमन को लगभग 20 हजार दर्शकों ने तालियाँ बजा-बजाकर प्रोत्साहित किया। 8,600 आगंतुकों ने रजिस्टर में अपनी टिप्पणियाँ लिखीं। लगभग 150 कैसेटों ने 600 वॉट के स्पीकरों पर माइकल जैक्सन, मेडोना आदि के गीत व अन्य धुनें बिखेरीं। रमन ने हर पाँच घंटे के बाद 25 मिनट तक थकान मिटाई। नियमानुसार वे प्रत्येक घंटे के बाद पाँच मिनट का विश्राम कर सकते हैं या पाँच घंटे बाद इकट्ठा आराम भी किया जा सकता है।

(न.भा.टा., 1 जुलाई, 1990)

उक्त आँकड़ों के लिए आपको तथ्यों की सही जानकारी होना आवश्यक है। इसके लिए सही स्रोतों से सही जानकारी प्राप्त करनी होती है।

18.5.2 साक्षात्कार

व्यक्ति-चित्र को और प्रभावशाली बनाया जा सकता है, साक्षात्कार के माध्यम से। अगर व्यक्ति जीवित है और उससे मुलाकात संभव है तो अवश्य मिलना चाहिए। ऐसे साक्षात्कार से जो जानकारी प्राप्त होगी, उससे व्यक्ति-चित्र अधिक सार्थक और सोद्देश्यपूर्ण बनाया जा सकता है। लक्ष्मण राव नामक जिस व्यक्ति के व्यक्ति-चित्र का उदाहरण पीछे दिया गया है, उस व्यक्ति-चित्र में स्वयं लक्ष्मण राव के कथन उद्धृत किये गये हैं।

"इस घिसटती जिंदगी को जीते-जीते मुझे यह अहसास हो गया कि इस तरह मेरा लेखक बनने का सपना कभी पूरा नहीं हो सकता। सो लेखक बनने की बात अधूरी रह गई। एक दिन कुछ शुभ चिंतकों की राय और सहायता से मैंने राउज एवेन्यू में एक पेड़ के नीचे मिट्टी और ईंट का एक छोटा-सा चबूतरा बनाया और पान-सिगरेट बेचने लगा। ...."

साक्षात्कार संभव न होने पर या जिस व्यक्ति पर व्यक्ति-चित्र लिख रहे हैं उसके उपलब्ध न होने पर अन्य संबंधित व्यक्ति/व्यक्तियों से भी उसके बारे में साक्षात्कार लिये जा सकते हैं या उस व्यक्ति विशेष के संबंध में अन्य व्यक्तियों के कथन का इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, हॉलीवुड की प्रख्यात अभिनेत्री ग्रेटा गार्बो का 15 अप्रैल, 1990 को 85 वर्ष की उम्र में देहांत हो गया। नवभारत टाइम्स में उस समय लिखे गये एक व्यक्ति-चित्र में गार्बो के बारे में कई लोगों के कथन उद्धृत किये गये थे जो गार्बो के व्यक्तित्व के भिन्न-भिन्न पक्षों को उजागर करते थे।

पूर्व उद्धृत लता मंगेशकर के व्यक्ति-चित्र में फिल्म अभिनेता दिलीप कुमार का निम्नलिखित कथन भी उद्धृत किया गया था जो उन्होंने लता मंगेशकर को दादा साहब फालके पुरस्कार मिलने पर कहे थे:

लता जी का व्यक्तित्व सादगी व विविधता का प्रतिरूप है। उन्होंने भारतीय संगीत को ऐतिहासिक गरिमा प्रदान की है। उन्हें पुरस्कृत कर उनके प्रति दरअसल कृतज्ञता और श्रद्धा व्यक्त की गयी है।

18.5.3 अन्य सामग्री का चयन

व्यक्ति-चित्र के साथ प्राय: व्यक्ति का चित्र दिया जाता है। लेकिन अन्य प्रकार के चित्र भी दे सकते हैं। जैसे लक्ष्मण राव वाले व्यक्ति-चित्र के साथ दी गयी फोटो में लक्ष्मण राव को अपनी छोटी-सी टिन की दुकान में पान बेचते दिखाया गया है, ग्रेटा गार्बो वाले व्यक्ति-चित्र के साथ उसके कुछ भावपूर्ण चित्र दिये गये हैं। विश्व बुक का रिकार्ड बनाने वाले युवक रमन की नृत्य मुद्रा में तस्वीर दी गयी है। कलाकारों पर लिखे गये व्यक्ति-चित्रों के साथ प्राय: उनके चित्रों या मूर्तियों की तस्वीर अवश्य दी जानी चाहिए। उक्त चित्रों से व्यक्ति-चित्र प्रभावशाली हो जाते हैं। बड़े समाचार पत्र प्राय: विशिष्ट व्यक्तियों से संबंधित तस्वीरों के केटलॉग रखते हैं। ऐसी सामग्री की खोजबीन करके व्यक्ति-चित्र के साथ दी जानी चाहिए। व्यक्ति-चित्र के साथ कोष्ठक में उस व्यक्ति का महत्वपूर्ण कथन या अन्य किसी व्यक्ति का कथन उद्धृत किया जा सकता है।

18.6 व्यक्ति-चित्र के विभिन्न पक्ष

व्यक्ति-चित्र का लेखन कैसे किया जाए, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि आप व्यक्ति-चित्र किस पर और किसके लिए तैयार कर रहे हैं। व्यक्ति-चित्र लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं है। यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि व्यक्ति-चित्र में किन-किन बातों का उल्लेख आवश्यक है। व्यक्ति-चित्र चाहे जिस पर लिखा जाए निम्नलिखित बातों का अवश्य उल्लेख हो:

i) जीवन परिचय
ii) कार्य-क्षेत्र
iii) उपलब्धि एवं योगदान
iv) प्रासंगिकता और महत्व

18.6.1 जीवन परिचय

व्यक्ति-चित्र में 'व्यक्ति' का संक्षिप्त जीवन परिचय अवश्य दिया जाना चाहिए। अगर व्यक्ति अपरिचित है तो जीवन परिचय कुछ विस्तार से भी दिया जा सकता है। लेकिन व्यक्ति-चित्र का आकार ही जीवन परिचय के विस्तार को तय करेगा। अगर व्यक्ति-चित्र 400-500 शब्दों में ही प्रस्तुत किया जाना है तो जीवन परिचय भी 100-125 शब्दों से अधिक में नहीं होना चाहिए।

जीवन परिचय के अंतर्गत पूरा नाम, जन्मतिथि, आयु, जन्म स्थान, शिक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमि, बाह्य व्यक्तित्व, स्वभावगत विशिष्टता आदि का उल्लेख किया जाता है। इनमें से जो तथ्य उपलब्ध न हो, उन्हें छोड़ा जा सकता है, परंतु कोशिश करनी चाहिए कि जीवन के संबंध में सभी मुख्य सूचनाएँ व्यक्ति-चित्र में दी जा सके। ग्रेटा गार्बो के व्यक्ति-चित्र में उसका जीवन-परिचय निम्नलिखित शब्दों में दिया गया है:

स्टॉकहोम (स्वीडन) में 1905 में जन्मी गार्बो का पूरा नाम था—ग्रेटा लोविसा गुस्ताफसन। एक मजदूर की बेटी ग्रेटा के बचपन की स्मृतियाँ सुखद नहीं थीं। गार्बो ने कभी विवाह नहीं कराया। "मैं अकेलापन चाहती हूं" गार्बो ने 'ग्रैंड होटल' फिल्म में यह संवाद बोला था। 1941 के बाद पचास सालों तक गार्बो ने अकेला जीवन ही जिया।

उपर्युक्त विवरण में गार्बो की जन्म तिथि, जन्म स्थान, पूरा नाम व पारिवारिक पृष्ठभूमि का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है। अगर आपने ध्यान दिया हो तो आप पाएँगे कि पारिवारिक पृष्ठभूमि को इस रूप में प्रस्तुत किया गया है जिससे गार्बो के व्यक्तित्व की विशिष्टता को समझा जा सके।

बाबा आमटे के व्यक्ति-परिचय में भी उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि का उल्लेख इसी ढंग से किया गया है:

सीधे-सरल और मेहनती बाबा आमटे वर्धा जिले के हिंगाघाट के ब्राह्मण जागीरदारों के परिवार में जन्मे थे। उन्होंने वकालत पास की और वरोरा में वकील का पेशा अपना लिया। एक बार अपनी जमीन जायदाद का जायजा लेने अपने गाँव गये। वहाँ उन्होंने किसानों की गरीबी देखी, जुलाहों, मेहतरों, भंगियों को मेहनत करते और बदहाल जिंदगी जीते देखा। उन्हें लगा कि इस जिंदगी को सुधारने के लिए कुछ किया जाए। उन्होंने गोबर को उठाया और पाखना शुरू किया। एक बार उन्होंने एक कोढ़ी को नाली में कराहता देखा। पहले वे उसे छोड़कर आगे बढ़ गये, फिर लौटे। उन्होंने उसे उठाया और डाक्टरों के सहयोग से उसकी देखभाल की।

जीवन परिचय के जिस पहलू का संबंध उस व्यक्ति के कार्य-क्षेत्र से हो उसका उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए ताकि उसके कार्य के महत्व को सही संदर्भ में समझा जा सके।

18.6.2 कार्य-क्षेत्र

व्यक्ति-चित्र का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है कार्य-क्षेत्र। कार्य-क्षेत्र दो तरह के हो सकते हैं। एक तो जीविकोपार्जन के लिए किया जाने वाला कार्य। दूसरा, अभिरुचि का वह क्षेत्र

जिसके कारण व्यक्ति को ख्याति प्राप्त हुई है। जैसे एक साहित्यकार पेशे से वकील, अध्यापक या दूकानदार भी हो सकता है। खिलाड़ी किसी बैंक में अधिकारी हो सकता है। पूर्व उद्धृत पट्टाभिरमन के व्यक्ति-चित्र में बताया गया है कि वह पेशे से इंजीनियर है और एअर फोस में नौकरी करता है। लक्ष्मण राव पान की दुकान चलाता है और उपन्यास और नाटक भी लिखता है।

व्यक्ति-चित्र लिखते हुए कार्य के इन दोनों क्षेत्रों का उल्लेख किया जाना चाहिए। लेकिन मुख्य चर्चा उस क्षेत्र की होनी चाहिए जिसके कारण वह व्यक्ति "उल्लेखनीय" बन सका है। बाबा आमटे पेशे से वकील थे, लेकिन यह बात कितनों को मालूम है। आज उनकी ख्याति उनके सामाजिक कार्यों के कारण है। बाबा आमटे के गाँव की जिस घटना का उल्लेख ऊपर किया गया है उसने उनके जीवन की दिशा ही बदल डाली और उन्होंने अपना कर्म क्षेत्र कोढ़ियों की सेवा को बना लिया। व्यक्ति-चित्र में इसका उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में किया गया है :

इस घटना के बाद उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी कोढ़ियों की देख-रेख में लगा दी। उन्होंने कुष्ठधाम खोला और खुद कलकत्ता से ट्रॉपिकल मेडिसिन में एक विशेष कोर्स किया। इसी दौरान आनंदवन, हमालकसा में आदिवासियों के लिए एक परियोजना शुरू की। आनंदवन एक कम्यून की तरह खुला। बाबा सिर्फ कोढ़ियों को ठीक करने में नहीं, बल्कि उन्हें जिंदगी जीने की नई रोशनी देने में भी कामयाब रहे। उन्होंने आदिवासियों को उनके अधिकार दिलाने के लिए भी संघर्ष किया।

कार्य-क्षेत्र के अंतर्गत व्यक्ति की ऐसी अभिरुचियों का भी उल्लेख किया जा सकता है जो उसके बहुआयामी व्यक्तित्व को उजागर करे। बाबा आमटे वाले व्यक्ति-चित्र में यह भी बताया गया है "*बाबा की दिलचस्पी हिंदुस्तानी और पश्चिमी संगीत, साहित्य में भी है। वे खुद कवि हैं।*" पूर्व उद्धृत पट्टाभिरमन पेशे से इंजीनियर, शौक से नर्तक और साथ ही एथलीट भी हैं। इस तरह की सूचनाओं से व्यक्ति-चित्र को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

18.6.3 उपलब्धि एवं योगदान

व्यक्ति-चित्र का तीसरा महत्वपूर्ण पक्ष है—उपलब्धियों एवं योगदान का उल्लेख। व्यक्ति का जो भी कार्य-क्षेत्र है उसमें उसकी उपलब्धियाँ ही उसे उल्लेख के योग्य बनाती हैं। यह उपलब्धियाँ पुरस्कार और सम्मान के रूप में ही हो यह आवश्यक नहीं है, बल्कि लोकप्रियता, पद और प्रतिष्ठा भी उपलब्धियाँ ही हैं। उपलब्धियाँ वस्तुतः व्यक्ति के योगदान को व्यक्त करती हैं। इसलिए इन सभी का उल्लेख व्यक्ति-चित्र में किया जाना चाहिए। बाबा आमटे ने सामाजिक सेवा (कोढ़ियों की सेवा) का जो महान् अभियान चलाया उसके कारण उन्हें लोकप्रियता भी मिली और पुरस्कृत भी किया गया। पूर्व उद्धृत व्यक्ति-चित्र में बाबा आमटे की उपलब्धियों का उल्लेख भी किया गया है :

मानवता की खातिर त्याग और मेहनत की तस्वीर पेश करने के लिए बाबा आमटे को 1985 में रेमन मेगासेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार की राशि को उन्होंने आनंदवन के ही काम में लगा दिया। 1979 में उन्हें जमनालाल बजाज पुरस्कार मिला था। पद्मश्री से वे 1971 में अलंकृत हुए थे। वे राष्ट्रीय एकता परिषद के भी सदस्य रहे हैं।

व्यक्ति के योगदान के कई रूप होते हैं। एक लेखक अपनी रचना में नये प्रयोग करके साहित्य में योगदान करता है। वह अपने कार्य द्वारा साहित्य को नयी दिशा भी देता है और सम्मानित भी होता है। ऐसे लेखक पर लिखते हुए उसको प्राप्त पुरस्कारों के साथ-साथ उसके साहित्य के इस पक्ष का भी उल्लेख अवश्य करना चाहिए। इसी प्रकार किसी खिलाड़ी के खेल की अपनी विशिष्ट शैली का उल्लेख भी करना चाहिए ताकि उसके योगदान और उपलब्धियों को सही परिप्रेक्ष्य में समझा जा सके।

18.6.4 प्रासंगिकता और महत्व

व्यक्ति-चित्र में व्यक्ति के महत्व का उल्लेख अवश्य होना चाहिए। विशेष रूप से तत्कालीन स्थितियों में उस व्यक्ति के महत्व को रेखांकित किया जाना चाहिए क्योंकि

व्यक्ति-चित्र की तात्कालिकता का कारण वही होगा। यह महत्व उसके कार्य के मूल्यांकन द्वारा हो सकता है। इसके लिए किसी अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति के कथन को भी उद्धृत कर सकते हैं।

लता मंगेशकर पर लिखे गये व्यक्ति-चित्र में उनके महत्व को लेखक ने निम्नलिखित शब्दों में प्रस्तुत किया है :

दरअसल लता भी कुछ उन कलाकारों में से हैं जिन्होंने भारतीय संगीत को न सिर्फ लोकप्रियता प्रदान की, वरन् उसमें मूल शास्त्रीय तत्व को भी नष्ट नहीं होने दिया। सुर पर पूर्ण नियंत्रण के साथ लता ने फिल्मी संगीत को अद्‌भुत लय प्रदान की तथा करोड़ों श्रोताओं की भावनाओं को अपने स्वर की गहराई से छुआ। उसकी गायन शैली गीत की विशेषताओं को भली भांति उभार कर पेश करती है।

(संडे मेल, 6 मई 1990)

इसी में उनके गायन की प्रासंगिकता को भी रेखांकित किया गया है :

अपने चालीस वर्ष के लंबे कैरियर में उनसे टक्कर लेने वाली कोई गायिका सामने नहीं आयी। आज जब वे अपनी प्रतिभा के चरम बिंदु पर पहुंच चुकी हैं और अनेक पार्श्वगायिकाएँ उनके आशीर्वाद से इस क्षेत्र में आगे बढ़ने लगी हैं, फिर भी हिंदी फिल्में पार्श्व संगीत और पार्श्व संगीत लता मंगेशकर के बिना अधूरा है''''

उपर्युक्त व्यक्ति-चित्र में फिल्म निर्देशक गुलजार और अभिनेता दिलीप कुमार के कथन भी उद्धृत किये गये हैं जिनसे लता मंगेशकर की गायन शैली के महत्व को उजागर किया गया है।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त व्यक्ति-चित्र में व्यक्ति के विचार और दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत करना चाहिए। इससे उसके सोच की दिशा और उसकी वैचारिक क्षमता को भी पहचाना जा सकता है।

बोध प्रश्न

5) व्यक्ति-चित्र के लेखन के लिए अध्ययन की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6) व्यक्ति-चित्र में व्यक्ति के किन-किन पक्षों को प्रस्तुत करना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

7) कार्य-क्षेत्र के अंतर्गत किन-किन बातों का उल्लेख किया जाना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

3) पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री के आधार पर प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी सुनील गावस्कर का जीवन परिचय लिखिए। यह जीवन परिचय व्यक्ति-चित्र के एक अंग के

रूप में लिखा जाना चाहिए। जीवन परिचय पाँच पंक्तियों से अधिक में न हो।

.....

.....

.....

.....

.....

4) एक क्रिकेट खिलाड़ी के रूप में सुनील गावस्कर के योगदान पर पाँच पंक्तियों में प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5) अपने पड़ोस में रहने वाले किसी ऐसे व्यक्ति से मिलिए जो सामाजिक कार्यों में गहरी रुचि रखते हैं। अपनी मुलाकात के आधार पर लगभग 15 पंक्तियों में उनका एक व्यक्ति-चित्र लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

18.7 व्यक्ति-चित्र का लेखन

व्यक्ति-चित्र के जिन विभिन्न पक्षों की चर्चा की गयी है उन्हीं से मिलकर व्यक्ति-चित्र का निर्माण होता है। प्रश्न यह है कि इन पक्षों को किस क्रम में रखा जाए तथा प्रत्येक पक्ष को कितना स्थान दिया जाए। इन बातों को तय करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि "व्यक्ति-चित्र" के लिए पत्र-पत्रिका में कितना स्थान निर्धारित है और आपका पाठक वर्ग कौन-सा है।

18.7.1 व्यक्ति-चित्र का आकार

अगर व्यक्ति-चित्र निबंध के आकार में लिखा जाना है अर्थात् 400-500 शब्दों से लेकर लगभग 2000 शब्दों तक--तो निश्चय ही उपर्युक्त सभी पक्षों को विस्तार दिया जा सकता है। लेकिन कई बार व्यक्ति-चित्र 80-150 शब्दों तक में भी लिखा जाता है, वहाँ व्यक्ति-

चित्र के लिए आवश्यक सभी पक्षों को समेटना संभव नहीं है। वहाँ अत्यंत संक्षेप में बहुत कम सूचनाओं के साथ व्यक्ति-चित्र लिखना होता है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित व्यक्ति-चित्र को देखिए :

दुबले-पतले और मृदुभाषी लक्ष्मीचंद जैन सरकार की आर्थिक नीतियों पर चर्चा छिड़ने पर जहर उगलने लगते हैं तो एकबारगी अचंभित हो जाना पड़ता है। लेकिन जनसेवा के लिए 1989 का रेमन मैगसेसे पुरस्कार पाने वाले इस 64 वर्षीय अर्थशास्त्री और सामाजिक कार्यकर्त्ता की आस्था गांधी की अवधारणा के अनुरूप आत्मनिर्भर गांव बनाने की जो है। वे करघा उद्योग के लिए भी मदद चाहते हैं, "योजना आयोग लाखों करघा मजदूरों के फायदे के लिए कुछ करता तो यही मेरे लिए पुरस्कार होता।"

यह लगभग 80 शब्दों में लिखा गया व्यक्ति-चित्र है जो 31 अगस्त, 1989 के हिंदी **इंडिया टूडे के स्तंभ "चर्चित चेहरे" में प्रकाशित हुआ था। लेखक ने इतने कम शब्दों** में व्यक्ति-चित्र के लिए आवश्यक प्रायः सभी महत्वपूर्ण सूचनाएँ देने की कोशिश की है।

जीवन परिचय :	लक्ष्मीचंद जैन (नाम) 64 वर्षीय (आयु), दुबले-पतले मृदुभाषी (बाह्य व्यक्तित्व एवं स्वभाव), गांधीवादी (दृष्टिकोण)
कार्यक्षेत्र :	अर्थशास्त्री और सामाजिक कार्यकर्ता
उपलब्धि एवं योगदान :	1989 में रेमन मेगसेसे पुरस्कार से सम्मानित, आत्मनिर्भर गाँव बनाने के लिए जनसेवा
प्रासंगिकता और महत्व :	सरकार की आर्थिक नीतियों की आलोचना और वैकल्पिक अवधारणा पेश करना।

उपर्युक्त सूचनाओं को अत्यंत संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। इस संक्षिप्त व्यक्ति-चित्र की विशेषता यही है कि इसे परिपूर्ण व्यक्ति-चित्र बनाने की कोशिश की गयी है। यहाँ तक कि व्यक्ति-चित्र को और अधिक प्रामाणिक और सार्थक बनाने के लिए उसमें लक्ष्मीचंद जैन के एक कथन को उन्हीं के शब्दों में उद्धृत किया गया है। पत्रिका में साथ में उनकी फोटो भी दी गयी है।

संक्षिप्त व्यक्ति-चित्र लिखते हुए हमें इन्हीं बातों का ध्यान रखना चाहिए। अत्यंत आवश्यक सूचनाओं को संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए हमें व्यक्ति-चित्र तैयार करना चाहिए।

18.7.2 व्यक्ति-चित्र की शैली

अपेक्षाकृत बड़े व्यक्ति-चित्र में शैली का प्रश्न उपस्थित होता है। विभिन्न पक्षों को समेटते हुए व्यक्ति-चित्र कैसे लिखें, उसका कोई निश्चित फार्मूला नहीं है। बेहतर यही रहता है कि व्यक्ति-चित्र का आरंभ उस व्यक्ति से जुड़े उस प्रसंग से किया जाए जिसके कारण वह चर्चा का विषय बना है। इससे सुविधा यह रहती है कि आरंभ में ही पाठक को यह स्पष्ट हो जाता है कि इस व्यक्ति की चर्चा किस संदर्भ में की जा रही है। बाबा आमटे पर लिखे गये व्यक्ति-चित्र का आरंभ इसी ढंग से हुआ है:

यह करिश्मा मुरलीधर देवीदास आमटे ही कर सकते थे। बीमार होते हुए भी मई की चिलचिलाती धूप में वे नई दिल्ली में गोलमेथी चौक पर धरने पर बैठे। दो हजार आदिवासियों के साथ उन्होंने दो बाँधों के फेर में विस्थापित होने जा रहे दस लाख लोगों की तकलीफें दिल्ली दरबार को बताईं।

गुजरात और मध्य प्रदेश में सरदार सरोवर और नर्मदा परियोजना के तहत बनने वाले बड़े बाँधों से विस्थापन, वन का विनाश और भारी खर्च से थोड़ा ही लाभ ऐसे अहम् मुद्दे थे जिनकी वजह से बाबा आमटे को इस आंदोलन का नेतृत्व संभालना पड़ा। मध्य प्रदेश के हरसूद में मेधा पाटकर और दूसरे लोगों द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन को बाबा आमटे ने नई गहराई दी।

मृत्यु के बाद लिखे गये व्यक्ति-चित्र में मृत्यु का उल्लेख किया जाता है, विशेष रूप से तब जब वह व्यक्ति कम परिचित हो। लेकिन लोकप्रिय व्यक्ति पर लिखे जाते वक्त आरंभ में इसका उल्लेख आवश्यक नहीं है। ऐसे में व्यक्ति-चित्र को उस व्यक्ति के किसी ऐसे पहलू

से आरंभ कर सकते हैं जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो। उदाहरण के लिए, गार्बो के जिस व्यक्ति-चित्र का उल्लेख पहले कर आये हैं, उसका आरंभ लेखक विनोद भारद्वाज ने ग्रेटा गार्बो के "चेहरे" की चर्चा से किया है जिसे वे गार्बो के व्यक्तित्व का सर्वाधिक उल्लेखनीय पहलू मानते हैं:

ग्रेटा गार्बो के चेहरे पर एक अनोखी चमक थी, एक डर, एक अकेलापन, एक जादू और आशंका का भी एक अद्वितीय आलोक। सिनेमा के इतिहास में शायद किसी अभिनेत्री को इस तरह से याद नहीं किया जाएगा। गार्बो का चेहरा ही जैसे एक संपूर्ण शरीर था। इस चेहरे की न जाने कितनी व्याख्याएँ की जा चुकी हैं।

कभी व्यक्ति-चित्र का आरंभ उस व्यक्ति के कथन से भी किया जा सकता है:

"इस पुरस्कार के साथ मुझ पर महिलाओं के लिए कुछ सकारात्मक कार्य करने का दाय (जिम्मेदारी) आ पड़ा है। इसीलिए मैंने फैसला किया है कि देश में और खासकर देश की राजधानी दिल्ली में बलात्कार, महिलाओं और युवतियों को छेड़छाड़ जैसी घिनौनी हरकतों से बचाने के लिए कदम उठाऊँ। मैं अपनी संस्था "रक्षक" (जिसकी स्थापना शीघ्र होगी) के जरिए लड़कियों को आत्मरक्षा करना सिखाऊँगी। इस संस्था के लिए समाजसेवी और शहरी नागरिकों से सलाह मशविरा किया जा रहा है।" 23 साल की मनीषा वर्मा ने राष्ट्रपति से शौर्यचक्र पाने के बाद अपनी यह राय जाहिर की।

(**जनसत्ता**, 29 अप्रैल 1990)

मनीषा वर्मा पर लिखे इस व्यक्ति-चित्र का आरंभ उसी के एक कथन से किया गया है। कहने का अर्थ यही है कि व्यक्ति-चित्र का आरंभ किसी भी तरीके से कर सकते हैं, केवल यह ध्यान रखना जरूरी है कि आरंभ से ही पाठक के सामने स्पष्ट हो कि इस व्यक्ति की चर्चा क्यों की जा रही है।

व्यक्ति-चित्र का शेष कलेवर पूरा करते हुए अन्य पक्षों को सही क्रम में और परस्पर संबद्धता बनाये रखकर लिखिए। हरके पक्ष आवश्यक नहीं कि एक ही स्थान पर उल्लिखित हो बल्कि जहाँ उल्लेख सबसे आवश्यक हो वहीं उन्हें प्रस्तुत करना चाहिए।

व्यक्ति-चित्र सीधे-सीधे वर्णनात्मक रूप में भी लिखा जा सकता है, परंतु व्यक्ति-चित्र को अधिक प्रभावशाली तभी बनाया जा सकता है जब उसे रचनात्मक रूप दिया जाए। बेहतर हो कि सूचनाओं के उल्लेख और अपनी बात को वर्णनात्मक रूप में रखने की बजाए उन्हें रोचक, नवीन और कल्पनाशील ढंग से कहें। फिर, बाबा आमटे वाली व्यक्ति-चित्र का उदाहरण लें। बाबा आमटे के कार्यों में उनकी पत्नी का सहयोग भी रहा। इस बात को व्यक्ति चित्र में निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया था:

बाबा आमटे ने जो कुछ किया वह शायद संभव नहीं होता अगर उनके साथ उनकी पत्नी साधन ताई न होती। ताई के नाम से हर किसी की जुबान पर हमेशा छाई रहने वाली "ताई" ने बाबा आमटे को समझा और उनके काम में पूरा सहयोग दिया।

उपर्युक्त बात निम्नलिखित रूप में लिखने पर मात्र तथ्य का उल्लेख होकर रह जाती:

बाबा आमटे को अपने कार्यों में पत्नी साधन ताई का भी सहयोग मिला।

दोनों तरह की प्रस्तुति का अंतर आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं। अपनी शैली को जटिल और अलंकारिक भी न बनाइए। जटिलता से व्यक्ति-चित्र में रोचकता खत्म होगी और अलंकारिकता से लोग आपकी बात के मर्म तक नहीं पहुंच पायेंगे।

अपने व्यक्ति-चित्र को समाप्त भी रोचक ढंग से कीजिए। व्यक्ति के महत्व को उजागर करते हुए, उसके योगदान को रेखांकित करते हुए या उस व्यक्ति के संबंध में किसी अन्य के कथन को उद्धृत करते हुए या स्वयं उस व्यक्ति के कथन को उद्धृत करते हुए व्यक्ति-चित्र को समाप्त किया जा सकता है। व्यक्ति-चित्र जहाँ भी खत्म करें वहाँ वह अधूरा नहीं लगना चाहिए। नकारात्मक कथन के साथ भी समाप्त नहीं करना चाहिए। व्यक्ति-चित्र को खत्म करते हुए पाठक को यह संतोष मिलना चाहिए कि उस "व्यक्ति" के

संबंध में उसे कुछ "नया" जानने को मिला है "नया" का अर्थ नवीन सूचनाओं और तथ्यों से ही नहीं है वरन् नये दृष्टिकोण और नये ढंग की प्रस्तुति से भी है।

18.7.3 व्यक्ति-चित्र की भाषा

व्यक्ति-चित्र की भाषा समाचार लेखन की भाषा से भिन्न होनी चाहिए। न तो तथ्यों का कथन मात्र व्यक्त करने वाली सरल और सपाट भाषा होनी चाहिए, नही निबंध की तरह गूढ़ और जटिल। बल्कि उसे संस्मरण और रेखाचित्र की तरह सहज, रोचक और रचनात्मक होना चाहिए। व्यक्ति-चित्र लिखते हुए लेखक संस्मरण और रेखाचित्र वाले लेखक की तरह "इन्वाल्व" तो नहीं हो सकता परंतु उसे इतना निर्लिप्त भी नहीं होना चाहिए कि वह व्यक्ति के व्यक्तित्व को ठीक से समझ ही न सके। व्यक्ति-चित्र का मुख्य उद्देश्य "व्यक्ति" को अन्य लोगों से परिचित कराना है इसलिए भाषा में कुछ सीमा तक वस्तुपरकता आवश्यक है। लेकिन यह "परिचय" किस स्तर पर कराया जा रहा है व्यक्ति-चित्र की भाषा इस बात पर निर्भर करेगी। अति विशिष्ट और लोकप्रिय व्यक्ति को सामान्य अर्थों में परिचित नहीं कराया जा सकता। यहाँ तो उनके व्यक्तित्व के कुछ नये पहलू उजागर करने होंगे। अगर उन्हें प्रभावशाली ढंग से नहीं रखा जाता है तो व्यक्ति-चित्र की सार्थकता नहीं रहेगी। व्यक्ति-चित्र की भाषा सामान्य बोलचाल के नजदीक होनी चाहिए। नितांत किताबी भाषा निबंध की तरह जटिल हो सकती है। भाषा सहज और प्रवाहमय हो। तथ्यों को भी रोचक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करें। न भाषा अधिक भावनाप्रद और न ही शुष्क हो। वाक्य छोटे और स्पष्ट अर्थ देने वाले हों। पूर्व में उद्धृत व्यक्ति-चित्रों के अंशों की भाषा का अवलोकन करने पर आप समझ सकते हैं कि व्यक्ति-चित्र के लिए किस तरह की भाषा उपयुक्त है।

18.7.4 व्यक्ति-चित्र का शीर्षक

छोटे व्यक्ति-चित्रों में प्रायः शीर्षक की आवश्यकता नहीं होती परंतु बड़े व्यक्ति-चित्र में शीर्षक अवश्य दिये जाते हैं। शीर्षक पत्रिका का संपादकीय विभाग भी निर्धारित करता है।

शीर्षक लंबे भी हो सकते हैं और छोटे भी। परंतु उन्हें सहज और आकर्षक होना चाहिए। शीर्षक में व्यक्ति के नाम का उल्लेख होना अनिवार्य भी नहीं है। कभी उस व्यक्ति का कथन का उपयोग किया जाता है। कभी व्यक्ति के महत्व को उजागर करने वाला शीर्षक दिया जाता है। पूर्व उद्धृत व्यक्ति-चित्रों के शीर्षक नीचे दिये जा रहे हैं। आप विचार करके देख सकते हैं कि ये शीर्षक व्यक्ति के किसी-न-किसी महत्वपूर्ण पक्ष को उजागर करते हैं:

बाबा आमटे : *इस समाज में अब भी बाबा आमटे हैं*
मनीषा वर्मा : *आत्म-रक्षा दिलाती है सम्मान*
ग्रेटा गार्बो : *आध्यात्मिक ग्लैमर की रोशनी और अँधेरा*
लक्ष्मण राव : *अंततः लक्ष्मण राव का सपना साकार हुआ*
लता मंगेशकर : *लता मंगेशकर : ये संगीत की "दादा साहब फालके" हैं*

आप देखेंगे कि कुछ शीर्षकों में नाम का इस्तेमाल किया गया है। लता मंगेशकर और बाबा आमटे वाले शीर्षक उनके महत्व को उजागर करते हैं तो मनीषा वर्मा और लक्ष्मण राव के शीर्षक उनके कार्य की सफलता को। ग्रेटा गार्बो का शीर्षक वैचारिक अधिक है और वह ग्रेटा के व्यक्तित्व के विश्लेषण से उपजी वैचारिक टिप्पणी के रूप में है।

सदैव सोच-विचारकर और सर्वाधिक उपयुक्त और प्रभावशाली शीर्षक दीजिए।

बोध प्रश्न

8) संक्षिप्त व्यक्ति-चित्र में क्या विशेषताएँ होनी चाहिए। लगभग पाँच पंक्तियों में उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

9) व्यक्ति-चित्र के आरंभ में किस पक्ष को लेना चाहिए और क्यों?

10) व्यक्ति-चित्र की भाषा की क्या विशेषताएँ होनी चाहिए? लगभग पाँच पंक्तियों में उत्तर लिखिए।

अभ्यास

6) मुंशी प्रेमचंद पर एक व्यक्ति-चित्र लिखिए जिसमें निम्नलिखित पक्ष प्रस्तुत हों :

प्रेमचंद का जीवन परिचय
कार्य-क्षेत्र
साहित्यिक योगदान
महत्व

यह व्यक्ति-चित्र लगभग 200 शब्दों में हो तथा प्रत्येक पक्ष संतुलित हो। इसके लिए आवश्यक सामग्री हेतु आप पुस्तकालयों का प्रयोग करें और व्यक्ति-चित्र के अंत में अपने स्रोत का हवाला दें।

7) उपर्युक्त व्यक्ति-चित्र को 60-80 शब्दों में संक्षिप्त कीजिए किंतु उनमें उपर्युक्त सभी पक्ष समेटे जा सकें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8) उपर्युक्त व्यक्ति-चित्र के कम-से-कम दो शीर्षक दीजिए।

.....

.....

.....

.....

18.8 सारांश

- फीचर लेखन से संबंधित सृजनात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में आपने व्यक्ति-चित्र लेखन के बारे में अध्ययन किया है। व्यक्ति-चित्र फीचर लेखन का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। व्यक्ति-चित्र का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का परिचय देना है जो अपने कार्यों द्वारा उल्लेख योग्य हों। व्यक्ति-चित्र का उद्देश्य ऐसा परिचय प्रस्तुत करना है जिसके माध्यम से व्यक्ति विशेष की एक नयी पहचान कायम हो सके। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप व्यक्ति-चित्र के महत्व और उद्देश्य पर प्रकाश डाल सकते हैं।
- व्यक्ति-चित्र के लेखन के लिए व्यक्ति विशेष के संबंध में पर्याप्त और सही जानकारी आवश्यक है। तथा इसके लिए अध्ययन, साक्षात्कार आदि जरूरी हो सकते हैं। व्यक्ति-चित्र के साथ प्रकाशन हेतु फोटो-चित्र आदि भी दिये जा सकते हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप व्यक्ति-चित्र के लेखन के लिए आवश्यक तैयारी कर सकते हैं।
- व्यक्ति-चित्र के चार प्रमुख पक्ष हैं: जीवन परिचय, कार्य-क्षेत्र, उपलब्धि एवं योगदान तथा प्रासंगिकता और महत्व। व्यक्ति-चित्र लेखन के लिए इन चारों पक्षों को संतुलित ढंग से प्रस्तुत करना होता है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप व्यक्ति-चित्र के लेखन के चारों पक्षों को समुचित ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं।
- व्यक्ति-चित्र की भाषा समाचार लेखन से किंचित् भिन्न परंतु निबंधों की भाषा से अधिक सरल होनी चाहिए। उसमें सहजता के साथ रोचकता भी होनी चाहिए। उसकी शैली विवरणात्मक नहीं होनी चाहिए न ही लेखन की तरह सपाट होनी चाहिए। व्यक्ति-चित्र में व्यक्ति का एक ऐसा रेखा-चित्र प्रस्तुत होना चाहिए जो संक्षिप्त तो हो परंतु आकर्षक और ज्ञानवर्धक भी हो। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप व्यक्ति-चित्र का लेखन आरंभ कर सकते हैं।

18.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) प्रोफाइल का अर्थ है पार्श्वचित्र या रेखाचित्र। यह पार्श्वचित्र किसी व्यक्ति का भी हो सकता है और किसी वस्तु का भी। फीचर लेखन के क्षेत्र में प्रोफाइल ऐसे आलेख को कहेंगे जिसमें किसी व्यक्ति विशेष का संक्षिप्त जीवन-परिचय दिया गया हो या किसी वस्तु विशेष का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया हो।

2) समाचार पत्रों में तरह-तरह के समाचार प्रकाशित होते हैं, नयी-नयी घटनाओं और समस्याओं से लोगों का परिचय होता है। इनके प्रति पाठकों की उत्सुकता बढ़ती है। वे उनके संबंध में और अधिक जानना चाहते हैं। उनसे संबंधित लोगों के बारे में वे जानना चाहते हैं। अपने पाठकों की इसी जिज्ञासा को शांत करने के लिए समाचार पत्र और पत्रिकाएँ व्यक्ति-चित्र प्रकाशित करती हैं।

3) मामूली-से-मामूली आदमी के जीवन में कुछ-न-कुछ ऐसा अपूर्व और उल्लेखनीय अवश्य होता है जिसे उजागर किया जाए तो वह लोगों के लिए प्रेरणास्पद, ज्ञानवर्धक और रोचक हो सकता है।

4) i) उल्लेखनीय घटनाओं के आधार पर
ii) उल्लेखनीय उपलब्धियों के आधार पर
iii) जन्म दिवस, पुण्य दिवस या मृत्यु के अवसर पर
iv) आम आदमी के जीवन पर

5) व्यक्ति-चित्र के लिए अध्ययन आवश्यक है क्योंकि जिस व्यक्ति पर व्यक्ति-चित्र लिखना है उसके बारे में पर्याप्त और सही जानकारी होना आवश्यक है। अध्ययन के बाद लिखने पर यह भी संभव है कि उस व्यक्ति के बारे में कोई नयी और महत्वपूर्ण जानकारी आप पाठकों को दें।

6) i) जीवन परिचय
ii) कार्य-क्षेत्र
iii) उपलब्धि एवं योगदान
iv) प्रासंगिकता और महत्व

7) i) जीविकोपार्जन के लिए किया जाने वाला कार्य।
ii) अभिरुचि का वह क्षेत्र जिसमें उल्लेखनीय उपलब्धि के कारण वह चर्चा के योग्य बना है।

8) संक्षिप्त व्यक्ति-चित्र 80 से 150 शब्दों के बीच लिखा जा सकता है। इन व्यक्ति-चित्रों में व्यक्ति-चित्र के सभी पक्षों को समेटना संभव नहीं होता। परंतु यह प्रयास अवश्य रहता है कि उल्लेखनीय सभी बातें संक्षेप में आ जाएँ।

9) व्यक्ति-चित्र के आरंभ में उस प्रसंग का उल्लेख होना चाहिए जिसके कारण वह व्यक्ति चर्चा का विषय बना है। इससे यह लाभ है कि आरंभ में ही पाठक को यह स्पष्ट हो जाता है कि इस व्यक्ति की चर्चा किस संदर्भ में की जा रही है।

10) देखिए उपभाग 18.7.3

अभ्यास

1 एवं 2 स्वयं कीजिए। अगर आपने इकाई को ध्यान से पढ़ा है तो आप आसानी से बता सकते हैं कि व्यक्ति-चित्र क्यों लिखा गया है तथा आप व्यक्ति-चित्रों की पारस्परिक तुलना भी कर सकते हैं। तुलना में व्यक्ति-चित्र के उद्देश्य एवं महत्व पर ध्यान केंद्रित कीजिए।

3) इसमें सुनील गावस्कर का जन्म वर्ष, जन्म स्थान, क्रिकेट जीवन का आरंभ, क्रिकेट में खास-खास उपलब्धियाँ, मुख्य उल्लेखनीय घटना का उल्लेख कर सकते हैं।

4) इसमें सुनील गावस्कर की बल्लेबाजी और कप्तानी पर प्रकाश डालना चाहिए।

5) आप व्यक्ति के जीवन का संक्षिप्त परिचय दें। उसके सामाजिक कार्यों के क्षेत्र का महत्व बताएँ। उसकी गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण दें। उसके व्यक्तित्व की कोई उल्लेखनीय विशेषता बताएँ तथा उसका कोई महत्वपूर्ण कथन उद्धृत करें।

6, 7 एवं 8 स्वयं कीजिए। इसके लिए अपने आस-पास के पुस्तकालय से प्रेमचंद के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

खंड 4 के लिए उपयोगी पुस्तकें

चतुर्वेदी, प्रेमनाथ : *फीचर लेखन*, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नयी दिल्ली।

शुक्ल, विष्णुदत्त : *पत्रकार कला*, सहयोगी प्रकाशन, कानपुर।

दीक्षित, प्रवीण : *जन माध्यम और पत्रकारिता*, सहयोगी साहित्य संस्थान, कानपुर।

चौहान, कर्णसिंह (संपादक) : *साक्षात्कार : डा. रामविलास शर्मा से बातचीत*, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।

जोशी, मनोहरश्याम : *बातों-बातों में*, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।

NOTES

NOTES

NOTES